

वाचकवर-भगवदार्यश्यामाचार्यविरचित

प्रज्ञापना सूत्र

द्वितीय भाग पद ६-२०

मूल तथा

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविरचित

टीकाना अनुवाव सहित

अनुवावक बने संशोधक-पण्डित भगवानदास हर्यचन्द्र

सपत् १९९१

मूल्य ५-८-०

प्रत ५००

इदं पुस्तकं अमदावाद जैनगोसायनीस्थितश्रीशारदासुद्रणालये तद-
धिपतिना सुश्रावक-द्वयचन्द्रालजेन पं. भगवानदासेन सुद्विताम् ।

प्रज्ञापनासूत्र द्वितीय भाग-अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
३ व्युत्क्रान्ति पद वतरकगति, तिर्यङ्गपति, मनुष्यगति अने देवगतिको उपपातविषय अने उद्धर्तनाविषयकाळ	६१५-६७१ ६१६-२०
रत्नप्रभा धारण सप्तम पृथिवीना नैरयिको, असुरकुमारो अने पृथिवीकायिको उपपात विषयकाळ	६२०-२१
बोधनिद्रयादि, सत्यंछिम यथेन्द्रिय तिर्यङ्ग अने संमूर्छिम मनुष्यो उपपात विषयकाळ	६२२
गर्भज मनुष्यो, ध्यन्तरो, ज्योतिष्को अने वैमानिको उपपात विषयकाळ	६२३-२४
सिद्धोत्तो सिद्धिनो विषयकाळ	६२५
रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको उपपात असुररोपपातिको उद्धर्तना विषयकाळ	६२६
नैरयिको, तिर्यङ्गो, मनुष्यो अने देवो लो सान्तर अने निरन्तर उत्पाद	६२६-२७

विषय	पृष्ठ
रत्नप्रभादिना नैरयिको, असुरकुमारपति, पृथिवीकायिकायि, बोधनिद्र- यो, यापत् पचेन्द्रिय तिर्यङ्गो, मनुष्यो, ध्यन्तर, ज्योतिष्को अने वैमानिको लो सान्तर अने निरन्तर उत्पाद	६२७-२८ ६२९
सिद्धोत्तो सान्तर के निरन्तर सिद्धि	६२९
नैरयिकादि बोधीश दबकने आशयी सातर अने निरन्तर उद्धर्तना	६२९
नैरयिकादि बोधीश उद्धर्तने आशयी पक समये उत्पत्ति	६२९-३१
सिद्धोत्तो पक समये सिद्धि	६३१
नैरयिकादि बोधीश दबकने आशयी पक समये उद्धर्तना	६३२
नैरयिको तथा रत्नप्रमाना नैरयिकोनी कयाथी आथी उत्पत्ति थाय ? प संवन्धे विचार	६३३-४२
शकंप्रभाविना नैरयिकोनी कयाथी आथी उत्पत्ति थाय ?	६४२-४५
असुरकुमारविनी कयाथी आथी उत्पत्ति थाय ?	६४५-४६

८ संज्ञीपद

६८२-६८९

संज्ञाना प्रकार अने नैरयिकादि चोवीश वंडकने आश्रयी संज्ञां प्रतिपादन ६८२-८४
नैरयिकादि चोवीश वंडकने आश्रयी संज्ञानो उपयोग अने तेओनुं अल्पवहुत्व ६८४-८९

९ योनिपद

६८९-७००

योनिना शीतादि त्रण प्रकार, अने चोवीश वंडकनी अपेक्षाप शीतादि योनिनुं प्रतिपादन ६९०-९४
शीत, उष्ण अने शीतोष्णयोनिवाळा अने योनिरहित जीवोनुं अल्पवहुत्व ६९४-९५

योनिना सचित्तादि त्रण प्रकार, नैरयिकादि वंडकने आश्रयी तेओनुं प्रतिपादन अने अल्पवहुत्व ६९५-९७
योनिना संद्युतादि त्रण प्रकार, तेओनुं नैरयिकादि चोवीश वंडकने आश्रयी प्रतिपादन अने तेओनुं अल्पवहुत्व ६९७-९९
योनिना कूर्मोन्नता, श्लावता अने वंशीपत्रा ए त्रण प्रकार अने तेमां कोने कई योनि द्वाय छे ए संबन्धे कथन ६९९-७०१

पृथिवीकायिकादि तथा वेदन्द्रियादिनी क्यांथी आची उत्पत्ति थाय ? ६४६-५१
पंचेन्द्रियतिर्यञ्चो अने मनुष्योनी क्यांथी आची उत्पाद थाय ? ६५१-५३
व्यन्तर, ज्योतिष्को अने वैमानिकोनी क्यांथी उत्पाद थाय ? ६५४-५८

नैरयिको अने अक्षुरकुमारादि मरण पामीने क्यां जाय ? ६५८-६१
पृथिवीकायिको, यावत् मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिको मरण पामीने क्यां जाय ? ६६१-६४
नैरयिकादि चोवीश वंडकने आश्रयी जीवोने परभवना आयुपनी बन्ध क्यारे थाय ? ६६५-६७

आयुपना बन्धना प्रकार ६६७-६८
जातिनामनिधत्तायुष वगरे केटला आकर्ष वडे बांधे ? ६६९-७०
पक, वे त्रण इत्यादि आकर्षवडे जातिनामनिधत्तायुष वगरे बांधता जीवोनुं अल्पवहुत्व ६७०-७१

७ उच्छ्वास पद ६७२-६८१
नैरयिकादि चोवीश वंडकने आश्रयी उच्छ्वास लेवा मूकवानो काल ६७३-८१

१० चरमाचरमपद ७०२-७५४
 पृथिवीभोना आठ प्रकार अने तेने आश्रयी १ चरम, २ अचरम,
 ३ य घ चरम, ४ अचरम, ५ चरमान्त प्रदेशरूप अने अचरमान्त
 प्रदेशरूप सत्यचे प्रश्न अने उत्तर ७०२-५
 रत्नप्रमादि, सौधर्म, लोक, अलोक अने लोकालोकना अचरम
 त्पण्ड, चरमान्त प्रदेशो अने अचरमान्त प्रदेशोनु
 द्रव्यार्थ, प्रदेशार्थ अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व ७०६-११
 परमाणुप्रल सत्यचे चरम, अचरम अने अथक्तव्यता मार्गा ७१२-१४
 द्विप्रवेशिकादि यावत् अष्टप्रवेशिक स्वरूपा चरम, अचरम अने
 अवक्तव्यता भागा ७१५-३८

सस्थानना प्रकार, परिगण्डलादि सस्थाननी संख्या, तेभोना प्रवेशो,
 अघणाहना तथा सख्यातप्रदेशिक अने सख्यात प्रदेशायागाढ
 परिगण्डलादि संत्यचे चरम अने अचरमादिनो विचार ७३९-४२
 असख्यात प्रदेशिक अने सख्यात प्रदेशावगाढ परिगण्डलना अचरम
 त्पण्ड, चरम त्पण्डो, चरमान्त प्रदेशो अने अचरमान्त प्रदेशोनु
 द्रव्यार्थ, प्रदेशार्थ अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थरूपे अल्पबहुत्व ७४३-४५
 प प्रमाणे असख्यातप्रदेशिक, अतन्तप्रदेशिक अने संख्यात

प्रदेशावगाढ परिगण्डल यावत् आयतनु अल्पबहुत्व ७४५-४७
 जीवादि वैश्वकने विशे गत्याविषये चरम अने अचरमनो
 विचार ७४७-५४

११ मायापद ७५५-८३०

माया अघधारणी सत्यचे प्रश्न अने उत्तर ७५५-५७
 अघधारणी मायाना सत्य, असत्य, सत्यासत्य अने असत्यामृष्या
 प चार प्रकार ७५८-६०

गो वगेरे जातिप्रतियादक, स्त्रीलिंगादि प्रतिपादक, स्त्रीभाषापनी
 वगेरे स्त्रीप्रज्ञापनी वगेरे माया प्रज्ञापनी छे ? प संत्यचे प्रश्न
 अने उत्तर ७६१-६५

जातिमां स्त्रीलिंगादियाचक, जातिमा स्त्रीआज्ञापनी वगेरे, जातिमां
 स्त्रीप्रज्ञापनी वगेरे माया प्रज्ञापनी कष्टेयाय ? प सत्यचे प्रश्न अने
 उत्तर ७६६-७९

आयन्त तागो कुमार के कुमारिका, उट, घळद वगेरे 'हु घोतु
 शु' पम उपयोग-पूर्वक घोले ? प संत्यचे प्रश्न अने उत्तर ७६९-७१
 पकवचन, चहुघचन, स्त्रीलिंग, पुलिंग, नपुसकयाची संत्यचे प्रश्न
 अने उत्तर ७७२-७७

जीवो भाषाणे केवा प्रकारना द्रव्यो ग्रहण करे छे ते संवन्धे
विचार ७९३-८०५
जीवो भिन्न-भेदायेलां भाषाद्रव्यो चक्षार काढे छे के नहि
भेदायेलां भाषाद्रव्यो वक्षार काढे छे प संवन्धे विचार ८०६-०७
द्रव्योनी पांच प्रकारनी भेद अने तेनुं अल्पवहुत्व ८०८-११
भाषाद्रव्यो केवी रीते ग्रहण करे छे प संवन्धे जीवादि वंडकने
आश्रयी विचार ८११-१४
वचनना सोळ प्रकार अने ते प्रकारे वोळतो प्रज्ञापनी भाषा
चोळे ? प संवन्धे प्रश्न अने उत्तर ८१४-१५
प चारे भाषा वोळनार आराधक के विराधक होय ? प संवन्धे
प्रश्न अने उत्तर ८१५
सत्यादि चारे प्रकारनी भाषा वोळनाचुं अल्पवहुत्व ८१५-१६
भाषापद परिशिष्ट ८१७-३० घ.
१२ शरीरपद ८३१-८६४
शरीरना भेदो अने असुरकुमारादि चोवीश वंडकने आश्रयी
तेनो विचार ८३१-३३
औदारिक शरीरना वक्ष अने मुक्त भेदो ८३४-४२

पृथिवी स्त्रीवाची, आउ (अण्) पुल्लिंगवाची, धान्य नपुंसकवाची
प प्रमाणे स्त्रीआज्ञापनी, पुरुषआज्ञापनी, नपुंसकआज्ञापनी, स्त्री
प्रज्ञापनी, पुरुषप्रज्ञापनी, नपुंसकप्रज्ञापनी प भाषा प्रज्ञापनी अने
आराधनी कहेवाय प संवन्धे प्रश्न अने उत्तर ७७७-७९
भाषाचुं कारण, भाषा शाथी उत्पन्न थाय छे, तेनो आकार, अने
तेना अन्त संवन्धे विचार ७८०-८१
भाषाना पर्याप्ता अने अपर्याप्ता प वे प्रकार ७८२
पर्याप्ता सत्य भाषाना जनपद सत्यादि वस प्रकार ७८२-८४
पर्याप्ता मृगभाषाना क्रोधनिश्चिंतादि वस प्रकार ७८५-८६
अपर्याप्ता भाषाना वे प्रकार ७८६
अपर्याप्ता सत्यमृग भाषाना वस प्रकार ७८६-८७
अपर्याप्ता असत्यामृग भाषाना चार प्रकार ७८७-८८
जीवादि वंडकने आश्रयी भाषक अने अभाषक प वे प्रकार अने
तेनो हेतु ७८८-९०
भाषाना चार प्रकार अने जीवादि वंडकने आश्रयी भाषाना
प्रकाचुं प्रतिपादन ७९१-९२

नैरेयिकादि चोपीय दृढकने आश्रयी औदारिकादि यच्च अने मुक्त
शरीरेणो विचार ८४३-६४

१३ परिणामपद ८६५-८८१

परिणामना प्रकार, जीवपरिणामना गतिपरिणामादि वस प्रकारानो
विचार ८६६-६७

गतिपरिणामना चार प्रकार, इन्द्रियपरिणामना वे प्रकार, कपाय
परिणामना चार प्रकार, छेदया परिणामना छ प्रकार, योग
परिणामना त्रण प्रकार, उपयोग परिणामना वे प्रकार, फल
परिणामना पाच प्रकार, बसाल परिणामना त्रण प्रकार, दर्शन
परिणामना त्रण प्रकार, अने चारित्र परिणामना पाच प्रकारानु
वर्णन ८६८-७१

नैरेयिकादि चोपीय दृढकने आश्रयी गतिपरिणामाविने

विचार ८७१-७६

अजीवपरिणामना वस प्रकार ८७६-७७

यथनपरिणामना स्निग्ध यथनपरिणाम अने रुक्ष यथनपरिणाम
प वे प्रकार ८७८

गतिपरिणामना प्रकार, स्पृशप्रतिपरिणाम अने असृशप्रतिपरिणाम
धरोरे ८७९

सस्यानपरिणाम, मेघ परिणाम, वर्षादि परिणाम धरोरेना
प्रकार ८७९-८१

१४ कपाय पद ८८२-९१

कपायना प्रकार अने क्रोधादि कोने किंशो प्रतिष्ठित छे ? ८८२-८४
प्रोध, माल, माया अने लोभनी उत्पत्तिना स्थान, तेना प्रकार
अने नैरेयिकादि दृढकने आश्रयी क्रोधादिनो विचार ८८५-८६
क्रोधादिना अन्य चार प्रकार, आठ कर्म प्रवृत्ति थाघधाना तथा
चय, उपचय धरोरेना स्थान अने नैरेयिकादि दृढकने आश्रयी
विचार ८८७-९१

१५ इन्द्रिय पद-प्रथम उद्देशक ८९२-९३४

इन्द्रियोना प्रकार, संस्थान, धाहल्य-आडाण, तेना प्रवेशो, अने
अयगाहनातु निरूपण ८९२-९८

पाच इन्द्रियोतु अयगाहनार्थ, प्रवेशार्थ अने अयगाहना-प्रवेशार्थ
दढे अल्पबहुत्व ८९८-९००

इन्द्रियोना कर्कश, गुरु, मृदु અને लघुगुणो અને तेओनुं अल्प-
वहुत्व. १००-१०३
नैरयिको અને असुरकुमारोने आश्रयो इन्द्रियो અને संस्थानुं
निरूपण १०३-१०४
पृथिवीकायिकादि, वेदन्द्रियादि, यावत् वैमानिकोने आश्रयो
इन्द्रियो, संस्थान वगैरे द्वारोनुं निरूपण. १०५-१०९
स्पृष्ट शब्द सांभले के अस्पृष्ट शब्द सांभले-इत्यादि संबन्धे प्रश्न
अने उत्तर १०९-११०
इन्द्रियोना विषयना परिमाणनुं निरूपण १११-११६
भावितात्मा अनगारना चरमसमय भावी निर्जरा पुद्गलोनुं सूक्ष्म-
पणुं અને तेओनुं परस्पर भिन्नपणुं प छमस्थ जाणे के नहि प
संबन्धे प्रश्न અને उत्तर तथा चोनीश दंडकने आश्रयी तेवा
प्रकारना प्रश्न અને उत्तर. ११७-१२४
आरीसो जोनार मनुष्य आरीसो जुए छे, पोताने जुए छे के
पोतानुं प्रतिबिंब जुए छे इत्यादि प्रश्न અને उत्तर १२५-१२६
संकेलेनुं बख जेटला आकाश प्रवेशने स्पंशे, तेज पद्मोळुं कर्युं त्यारे
तेटलाज प्रदेशोने स्पंशे इत्यादि संबन्धे प्रश्न અને उत्तर १२७

आकाशधिगल-लोक कोनाथी स्पंशे करायेलो छे इत्यादि प्रश्न
अने उत्तर १२८-१३४.

१५ इन्द्रिय पद-द्वितीय उद्देशक १३५-१३७.
इन्द्रियोपचय, इन्द्रियोनी निर्वर्तना (उत्पत्ति), तेनो काल, इन्द्रि-
योनी लब्धि, तेना उपयोगनो काल अने प्रत्येक इन्द्रियना उप-
योगना कालनुं अल्पबहुत्व १३५-४०
इन्द्रियोनो अवग्रह, अणाय अने ईहा, अवग्रहना वे भेद व्यंज-
नावग्रह अने अर्थवग्रहना भेदोनुं निरूपण तथा नैरयिकादि दंड-
कने आश्रयी विचार १४०-१४४
इन्द्रियोना प्रकार, द्रव्येन्द्रियना आठ प्रकार, अने नैरयिकादि
दंडकने आश्रयी निरूपण १४५-१४६
एक एक नैरयिकादि दंडके द्रव्येन्द्रियो संबन्धे अतीत, वर्त-
मान अने अनागत कालने आश्रयी चिन्तार. १४६-१५०
एक एक नैरयिकने यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचने नैरयिकादिपणामां
अतीत, वर्तमान अने भविष्य कालने आश्रयी द्रव्येन्द्रियोनो
विचार १५१-१५५
एक एक मनुष्यने यावत् सवार्थसिद्धने नैरयिकादिपणामां अतीत,

नैरयिको समान आहारवाळा, समान शरीरवाळा, समान उच्छ
वास-निग्वासवाळा, समानकर्मवाळा, समानवेदनावाळा, समा
नमायुष्यावाळा अने समानपणे उत्पन्न थयेला होय प सयन्धे प्रश्न
अने उत्तर १०११-१०२१

असुरकुमारादि समानआहारावाळा, समानकर्मवाळा, समानवर्णवाळा
अने समान लेश्यावाळा होय प सयन्धे प्रश्न अने उत्तर,
१०२२-१०२८

पृथिवीकायिको, वेगन्ध्रियादि, अने पचेन्द्रिय तिर्येचो सयन्धे
आहार, घर्ण, लेश्या, वेदना अने क्रिया सयन्धे प्रश्न अने
उत्तर १०२९-१०३१

मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिष्क अने धैमानिकोने आहारादि संवन्धे
प्रश्न अने उत्तर १०३२-१०३६

लेश्यासहित नैरयिकादि चोयीश वडकने आश्रयी आहारादि
सयन्धे प्रश्न अने उत्तर १०३७-१०४१

१७ लेश्या पद-द्वितीय उद्देशक १०४२-१०७०
लेश्याना प्रकार, नैरयिकादि चोयीश वडकने आश्रयी लेश्या,
अने लेश्या सहित जीवोतु अल्पबहुत्व १०४२-१०४५

घर्तमान अने मयिष्य फालमा प्रत्येन्द्रियने आश्रयी विचार
१५५-१६०

नैरयिकोने यावत् सर्वार्थसिद्ध वेदोने नैरयिकपणामा प्रत्येन्द्रि-
योने विचार १६०-६३

माधेन्द्रियना प्रकार, एक एक नैरयिकने यावत् सर्वार्थसिद्धने
अतीत, घर्तमान अने अनागत माधेन्द्रियनो विचार १६३-६७

१३ प्रयोगपद १६८-१००८

प्रयोग-योगना पदर प्रकार अने तेनो जीयादि वडकने आश्रयी
विचार ११८-१२

गतिप्रपातना भेद, प्रयोग गतिना पदर प्रकार, ततगति अने
तेना भेद, वन्धछेदनगति, उपपातगति अने तेना भेवोतु यावत्
१९३-१६

धैवसेत्रोपपात गतिनु निरूपण १९६-१९९

सिद्धशेत्रोपपात गतिनु निरूपण १९९-१००८

भयोपपातगति, नोभवोपपातगति अने विद्यायोगतिना सत्तर
प्रकार १००९-१०४१

१७ लेश्यापद-प्रथम उद्देशक १००९-१०११
लेश्यातु स्वरूप

कृष्णलेश्यावाळा. नीललेश्यावाळा अने फापोतलेश्यावाळा नैरयि-
कोनुं अल्पवहुत्व, कृष्ण, नील, फापोत अने तेजोलेश्यावाळा
पंचेन्द्रियो, पृथिवीकायिकादि तथा वेदन्द्रियादिनुं अल्पवहुत्व
१०४६-१०४९.

कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा १ पंचेन्द्रिय, तिर्यचो,
२ संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यचो, ३ गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो, ४
तिर्यच स्त्रीओ, ५ संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने गर्भजांचे-
न्द्रियतिर्यचो, ६ संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने तिर्यच स्त्रीओ,
७ गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने तिर्यच स्त्रीओ, ८ संमूर्छिम
पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने गर्भज तिर्यच स्त्रीओ, ९ पंचेन्द्रिय तिर्यचो
अने तिर्यच स्त्रीओ अने १० तिर्यचो अने तिर्यच स्त्रीओनुं अल्प-
वहुत्व
१०५०-१०५५

कृष्णलेश्यावाळा, यावत् शुक्ललेश्यावाळा १ देवो, २ देवी, ३
देवो अने देवीओ, पम ७-९ व्यन्तरो १०-१२ ज्योतिष्को अने
१३-१५ चैमानिकोना अल्पवहुत्व
१०५६-६१

कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा भवनवासी, व्यन्तर,
ज्योतिष्क अने चैमानिक देवोनुं तथा देवीओनुं अल्पवहुत्व.

भवनवासी यावत् चैमानिक देवो अने देवीओनुं अल्पवहुत्व
१०६२-१०६६
कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा अल्पवहुत्व अने मह-
द्विक जीवो, नैरयिको, तिर्यचो, एकेन्द्रियो, पृथिवीकायिकादि,
पंचेन्द्रिय तिर्यचो, तिर्यच स्त्रीओ, संमूर्छिमो यावत् चैमानि-
कोनुं अल्पवहुत्व
१०६६-१०७०

१७ लेश्या पद-तृतीय उद्देशक
१०६८-१०८५
नैरयिक नैरयिकमां उत्पन्न थाय के तेथी अन्य जीवो नैरयि-
कमां उत्पन्न थाय ? नैरयिक नैरयिकथी उद्धर्त के तेथी अन्य
नैरयिकथी उद्धर्त ? प प्रमाणे चोवीश दंडकने आश्रयी प्रश्न
अने उत्तर
१०६८-१०७०

कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न
थाय, अने कृष्णलेश्यावाळो धरने उद्धर्त ? प प्रमाणे नीलले
श्यावाळा अने फापोतलेश्यावाळा संबन्धे प्रश्न अने उत्तर. पम
असुरकुमारादि, पृथिवीकायिकादि, यावत् चैमानिक संबन्धे
प्रश्न अने उत्तर
१०७१-१०७३

छप्प, नील अने कापोतलेइयावाळो नैरयिक छुणा, नील अने
कापोतलेइयापळासा उपजे ? इत्यादि असुरकुमापदि घाघए
धैमानिक सुधी प्रश्न अने उत्तर १०७४-७७
छप्पलेइयादिवाळा नैरयिकता अर्थविज्ञान अने वर्तमाना विषयतुं
सारतम्य १०७८-८२
कयी लेइया केटला ज्ञानोभां होय प सवन्धे प्रश्न अने उत्तर
१०८३-८५

१७ लेइयापद-व्यतुर्थ उद्देशक १०८६-१११९
लेइयाओना प्रकार अने सेनो मन्य लेइयाने पामीने मन्यलेइयापणे
घर्णादि परिणाम १०८६-९१
लेइयाओनो यर्ण अने कयी लेइयाओनो कया घर्णयहे व्ययहार
थाय छे ? प संवन्धे कथन १०९२-११००
लेइयाओनो रस-मास्याद ११०१-०७
दुर्भिमगन्धवाळी अने सुर्भिमगन्धवाळी, अशुद्ध अने विशुद्ध,

अप्रशस्त अने प्रशस्त, संकिल्लए अने असंकिल्लए, शीत-ऊस
अने स्निग्धोष्ण तथा दुर्यतिगामिनी अने सुगतिगामिनी लेइया
ओनो विभाग ११०७-०९

छप्पादिलेइयानो परिणाम केटला प्रकारनो थाय छे, ते केटला प्रवे
शथाळी छे अने सेनी घर्णणामो केटली छे प प्रश्न अने उत्तर
१११०-११

छप्पादिलेइयाना स्थानो अने तेओतुं प्रव्यार्थ, प्रवेद्यार्थ अने
प्रव्यार्थ-प्रवेद्यार्थने आधयी अस्यवदुत्व १११२-१९

१७ लेइयापद पंचम उद्देशक १११९-११२४
लेइयाओनो वेच अने नैरयिकीने आधयी वैदूर्यमणिना वृष्टान्तयी
परिणाम १११९-२४

१७ लेइयापद छट्टो उद्देशक ११२४-११२८
लेइयाना प्रकार, मनुष्य, मनुष्यजी, कर्मभूमिज मनुष्य अने
मनुष्य जी, भयत, अरायत घगेरे क्षेत्रीना मनुष्यो अने मनु-
ष्यजीओने लेइया ११२४-२६

कृष्णादिलेश्यावाळा मनुष्य अने मनुष्यस्त्री केवा प्रकारनी लेश्या-
वाळा गर्भने उत्पन्न करे ? कृष्णादिलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णा-
दिलेश्यावाळी स्त्रीमां कृष्णादिलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ?
पम कर्मभूमिना क्षेत्रने आश्रयी प प्रश्न अने उत्तर ११२६-२८

१८ कायस्थिति पद ११२९-११८३

जीव, नैरयिक, तिर्यंच, तिर्यंचस्त्री, मनुष्य, मानुषी, देव, देवी
अने सिद्धनी कायस्थिति-ते ते पर्यायरूपे स्थिति ११२९-३२
अपर्याप्त नैरयिक यावत् अपर्याप्त देवी, नैरयिक पर्याप्त, यावत्
पर्याप्त देवीनी स्थिति ११३२-३७
सेन्द्रिय, एकेन्द्रिय, द्वेन्द्रियादि, पंचेन्द्रिय, अनिन्द्रिय, अने
सेन्द्रियादि अपर्याप्त अने पर्याप्तनी कायस्थिति ११३८-४१
सकायिक, अकायिक, सकायिक अपर्याप्त यावत् प्रसकायिक
अपर्याप्त, पृथिवीकायिक, यावत् वनस्पतिकायिक, पृथिवी-
कायिक पर्याप्त यावत् वनस्पतिकायिक पर्याप्त, अने प्रसकायिक
पर्याप्तानी कायस्थिति ११४१-४६

सूक्ष्म, सूक्ष्मपृथिवीकायिकादि, सूक्ष्म निगोद, सूक्ष्म अपर्याप्त,
सूक्ष्मपृथिवीकायिकादि अपर्याप्ता अने पर्याप्ता, चादर, चादरपृ-
थिवीकायादि, प्रत्येकशरीर चादर वनस्पतिकायिक, निगोद,
चादरनिगोद, चादर प्रसकायिक, प वथा अपर्याप्ता, चादर पर्याप्ता,
चादर पृथिवीकायिकादि पर्याप्ता, निगोद पर्याप्ता, चादर निगोद
पर्याप्ता अने चादर प्रसकायिक पर्याप्तानी कायस्थिति
११४७-५१

सत्योगी, मनयोगी, वचनयोगी, काययोगी अने अयोगीनी काय-
स्थिति ११५१-५३

सवेदी, स्त्रीवेदी पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी अने अवेदीनी काय-
स्थिति. ११५४-५८

सफरायी, ज्योथकफरायी, मानकफरायी, मायाकफरायी, लोभकफरायी
अने अकफरायीनी कायस्थिति ११५९-६०
लेश्यावाळा, कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळानी काय-
स्थिति ११६०-६३

सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टिनो स्थिति ११६३-६६
 प्राणी, आत्मिनियोधिकज्ञानी, यावत् केवलप्राणी, असानी, मति-
 अशानी, यावत् विमग्नानीनी कायस्थिति ११६६-६९
 चक्षुर्बुद्धी, यावत् केवलबुद्धीनी कायस्थिति ११६९-७२
 संसृत, असंसृत अने संसृतासंसृतनी कायस्थिति ११७३-७४
 साकार उपयोगथाळा अने अनाकार उपयोगथाळांनी स्थिति ११७४
 आहारक अने अनाहारकनी स्थिति ११७४-७७
 मायक, अमायक, परिच अने अपरिचनी कायस्थिति ११७८-८०
 पर्याप्त, अपर्याप्त, नोपर्याप्त-नोअपर्याप्त, एहम्, अने यादृरनी काय
 स्थिति ११८०-८१
 सत्तो, असत्तो, नोसत्तो-नोअसत्तो, भवसिद्धिक, अमयसिद्धिक,
 नोअमयसिद्धिक-नोअमयसिद्धिकनी स्थिति ११८१-८२
 धर्मास्तिकाय, यावत् अन्दासमय, चरम-भय्य अने अवरम-
 अमय्यनी कायस्थिति ११८३

१९ सम्यक्त्व पद ११८४-११८५
 जीवो सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि होय? नैर-
 यिकादि बोधीश वृद्धकने आश्रयी सम्यग्दृष्टि यगेरेलो विचार ११८४-८५

२० अन्तक्रिया पद ११८६-११९८
 जीव अन्तक्रिया (मोक्ष) प्राप्त करे? ए सवन्धे नैरयिकादि बोधीश
 वृद्धकने आश्रयी प्रश्न अने उत्तर ११८६-८७

नैरयिकादि अन्तप्रागत (अन्तर सिवाय पछीना भयमां आयेळा)
 अन्तक्रिया करे के परंपरागत अन्तक्रिया करे ए प्रश्न अने उत्तर ११८८-८९

अन्तप्रागत नैरयिकादि एक समयमा केवळा अन्तक्रिया करे
 ए प्रश्न अने उत्तर ११९०-९२
 नैरयिक नैरयिकधी नीकळी तुरत पया उत्पन्न थाय अने केवल-
 प्राणीए कहेला धर्मंतु श्रयण करे? इत्यादि प्रश्न अने उत्तर ११९२-९७

असुरकुमार. असुरकुमारथी नीकळीने फ्यां जाय अने केवलशा-
नीप कढेला धर्मनुं श्रवण करे, इत्यादि यावत् वैमानिक संवन्धे
प्रश्न अने उत्तर ११७-०२

रत्नप्रभापृथिवीनो नैरयिक त्यांथी नीकळी तीर्थकरणुं पासे के
यावत् सप्तम पृथिवीनो नैरयिक तीर्थकरणुं पासे ? ए प्रमाणे
असुरकुमार यावत् सर्वार्थसिद्धयेच संवन्धे प्रश्न अने उत्तर
१२०३-०६

रत्नप्रभा पृथिवी वगैरेनो नैरयिक त्यांथी नीकळी पळीना भवमां
चक्रवर्तीणुं वगैरे पासे ? ए संवन्धे प्रश्न अने उत्तर १२०७-०९

असंयत भय प्रलय देवो, जेणे संयमनी विराधना करी नथी
पवा, जेणे संयमनी विराधना करी छे पवा, जेणे देशविर-
तिनी विराधना करी नथी पवा, जेणे देशविरतिनी विराधना
करी छे पवा, असंती, तापस, कावर्षिक, चरक परियाजक,
क्रिस्तियिक, तिर्यंचो, आजीवको, अभियोगिको समयदर्शनर-
हित स्वलिगी ए वधानी उत्पत्ति संवन्धे प्रश्न अने उत्तर
१२०९-१६

असंशी आयुपना प्रकार, तेओनी स्थिति अने तेओनुं अल्पव-
पुत्र १२१७-१८

છટું વર્ષક્રમીપયં ।

૧. ધારસ ઘડવીસાદું સઅંતરં યગસમય કસ્તી ય । ઉબ્ઘદ્ઘણ પરમ્બિયાડયં ઘ અદ્ઘેઘ આગરિસા ॥૧॥

છદ્ઘુ ઘ્યુલ્કાન્તિ પદ.

૧ ધાર મુહૂર્ત અને ૨ ચોવીશ મુહૂર્તનો ઉપપાત અને ઉર્વર્તના-મરણને આથી વિરહકાલ, ૩ સાન્તર-સાન્તર ઉત્પન્ન થાય કે નિરંતર ઉત્પન્ન થાય ? ૪ એક સમય-એક સમયમાં કેટલા ઉપજે અને મરણ પામે, ૫ કયાંથી આવીને ઉપજે ? ૬ ઉર્વર્તના-મરણ-પામીને કયાં ઉત્પન્ન થાય ? ૭ પરમ્બિકાચૂર-પરમ્બવંતું આયુષ કયારે થયાય ? ૮ અને આયુષના પંચ સંબંધે આઠ આકર્ષો-૯ આઠ દ્વાર આ છઠ્ઠા પદમાં કહેવાના છે.

૧ પાંચમા પદની ધ્યાન્યા કરી, હવે છઠ્ઠા પદનો પ્રારંભ થાય છે. તેનો આ પ્રમાણે સંકલ્પ છે-પૂર્વના પદમાં ઔદ્યિક, ક્ષાયોપચા મિક અને ક્ષાયિક માપને આધારી યર્મયોના પરિમાણનો નિર્ણય કર્યો, અને આ પદમાં ઔદ્યિક અને ક્ષાયોપચામિક માપ સવન્ધી પ્રાણીભોના ઉપપાતવિષ્ણાદિનો વિચાર કરાય છે. તેમાં પ્રારંભમાં આ અધિકારોના સંપ્રદારૂપ આ શરણાયા છે — 'ધારસ ઘડવીસાદું' ક્ષાયાદિ પ્રથમ પ્રત્યેક ગતિભોમા સામાન્યતાઃ ઉપપાતવિષ્ણ અને ઉર્વર્તનાવિષ્ણનો કાલ યાદ મુહૂર્તન પ્રમાણ કહેવાનો છે. ૨ ત્યાર પછી ગતિભોમાં વિશેષતાઃ નૈર્યિકાદિ પ્રત્યેક ભેદોને આધારી પ્રારંભમાં ઉપપાતવિષ્ણ અને ઉર્વર્તનાવિષ્ણનો કાલ ચોવીશ મુહૂર્ત પ્રમાણ કહેવાનો છે. ૩ તે પછી નૈર્યિકો સાન્તર ઉત્પન્ન થાય છે કે નિરંતર ઉત્પન્ન થાય છે-૪ ત્યાર યાદ એક સમયે નૈર્યિકાદિ પ્રત્યેક કેટલા અપ્પ્ર યાદ છે અને કેટલા મરણ પામે છે તે વિચારવાનું છે. ૫ પછી નારકાદિ કયાથી આવીને ઉત્પન્ન થાય છે-૬ અને વિષ્ણાદિ કરવાનો છે. ૬ પછી નૈર્યિકાદિ મરણ પામી કયાં ઉત્પન્ન થાય છે ૭ ત્યાર યાદ અનુભવાતા ઘર્તમાન

१. निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्को-
सेणं बारस सुहुत्ता । तिरियगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एणं स-
मयं, उक्कोसेणं बारस सुहुत्ता । मणुयगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जह-
न्नेणं एणं समयं, उक्कोसेणं बारस सुहुत्ता । देवगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गो-
यमा ! जहन्नेणं एणं समयं, उक्कोसेणं बारस सुहुत्ता । सिद्धिगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया सिद्धिगणाए

प्रथम द्वार.

१. हे भगवन् ! नरकगति केटला काळ सुधी नारक जीवोनी उत्पत्ति रहित कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने
उत्कृष्ट वार मुहूर्त कही छे. हे भगवन् ! तिर्यचगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित कहेली छे ? हे गौतम ! जघन्यथी
एक समय अने उत्कृष्टथी वार मुहूर्त कही छे. हे भगवन् ! मनुष्यगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित छे ? हे गौतम !
जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी वार मुहूर्त छे. देवगति केटला काळ सुधी जीवोनी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी

भवना आयुगनो केटलामो भाग चाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप चांधे छे प कहेद्यानुं छे अने ८ उत्कर्षथी केटला आफर्यो वडे
आयुगनो वन्ध करे छे प विचारमां आठ आकर्ष कहेयाना छे. प संप्रहणीगाथानो संक्षेपार्थ फणो.

१-२. प पूर्वोक्त द्वागेनुं अनुक्रमे वियरण करयानी इच्छायाला सूत्रकार प्रथम गतिसंबन्धे कहे छे- 'निरयगई णं भंते ! केवइयं कालं
उववाएणं विरहिया पन्नत्ता' इत्यादि. हे भदन्त-भगवन् ! नरकगति केटला काळ सुधी उपपात-उत्पत्ति वडे रहित होय छे ?

પણતા ? ગોયમા ! જહલ્લેનં ળગં સમયં, ઉચ્ચકાસણ છમ્માસા ।

૨. નિરયગઈં ણં ંતે ! કેવઈયં કાલં ચિરહિયા ઉચ્ચહણાણ પન્નતા ! ગોયમા ! જહલ્લેનં ળગં સમયં, ઉચ્ચકોસેણં ધારસ સુહુતા । તિરિયગઈં ણં ંતે ! કેવઈયં કાલં ચિરહિયા ઉચ્ચહણાણ પન્નતા ? ગોયમા ! જહલ્લેનં ળગં સમયં, ઉચ્ચકોસેણ ધારસ સુહુતા ! મણુયગઈં ણં ંતે ! કેવઈયં કાલં ચિરહિયા ઉચ્ચહણાણ પન્નતા ? ગોયમા ! જહલ્લેનં

એક સમય અને ઉત્કર્ષથી ધાર સુહૃત્ત્વં હોય છે. હે ભગવન્ ! સિદ્ધિગતિ કેટલા કાલ સુધી જીવોની સિદ્ધિ વહે રહિત હોય છે ? હે ગૌતમ ! જયન્યથી એક સમય અને ઉત્કર્ષથી છ માસ હોય છે.

૨. હે ભગવન્ ! નરકગતિ કેટલા કાલસુધી ઉત્તર્વર્તના-મરણ વહે રહિત હોય છે ? હે ગૌતમ ! જયન્યથી એક સમય અને ઉત્કર્ષથી ધાર સુહૃત્ત્વં સુધી હોય છે. હે ભગવન્ ! તિર્યચગતિ કેટલા કાલ સુધી મરણ વહે રહિત હોય છે ? હે ગૌતમ ! જયન્ય એક સમય અને ઉત્કર્ષથી ધાર સુહૃત્ત્વં હોય છે. હે ભગવન્ ! મનુષ્યગતિ કેટલા કાલ સુધી ઉત્તર્વર્તના રહિત હોય છે ? હે ગૌતમ ! જયન્ય

નરકગતિ ય નરકગતિનામફર્મના ઉચ્ચથી ઉત્પન્ન થયેલો જીવનો ઔચ્ચિક માથ છે અને તે એક માથ સાતે નરક પૃથિવીબ્યાપી છે, તેથી એકચત્ર છે અને સાતે નરકપૃથિવીઓને પ્રદણ કરવાની છે 'મદન્ત' ય પરમગુચ્ચુ સંયોધન છે, યટલે પરમકલ્યાણના યોગવાલા હે પ્રમો ! નરકગતિ કેટલા કાલ સુધી અન્યગતિના જીવોના નારકપણે ઉત્પન્ન થવારૂપ ઉપપાત યહે શૂન્ય-રહિત આપે તયા અન્ય ક્ષપમાવિ તીર્થકરોષ કહેલી છે ? યટલે નરકગતિમા નારકપણે કેટલા કાલસુધી ઉત્પન્ન ન યાય ? એમ ગૌતમસ્વામીપ પ્રશ્ન કર્યો યટલે મગવાન્ ઉચ્ચર આપે છે—'હે ગૌતમ ! જયન્યથી એક સમય અને ઉત્કર્ષથી ધાર સુહૃત્ત્વં સુધી નરકગતિ ઉપપાતશૂન્ય

एगं समयं, उक्कोसेणं बारस सुहुत्ता । देवगई णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा !
जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस सुहुत्ता । ? वारं ।

एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! देवगति केटला काल सुधी उद्वर्तना-मरण रहित होय छे ?
हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट बार मुहूर्त सुधी होय छे.

कहेली छे. अहीं मूढ पूर्वपक्षी शंका करे छे—आगळ एक पण नरकपृथिवीमां उपपातविरह काल बार मुहूर्तनो कहेवानो नथी, अने चोवीश मुहूर्तादि प्रमाण काल तो आगळ कहेवानो छे, तो वधी पृथिवीना समुदायने विषे बार मुहूर्त प्रमाण काल केम घटे ? कारण के 'प्रत्येकनी अंदर न होय तो समुदायनी अंदर पण न होय'—एवो न्याय छे. ते अयुक्त छे. कारण के अहीं वस्तुतत्त्वनुं आशान छे. जो के रत्नप्रभादि एक एक पृथिवीना नामनो निर्वेश करी चोवीश मुहूर्तादिप्रमाण उपपातविरह कहेवानो छे, तो पण ज्यारे वधी साते पृथिवीओनी अपेक्षाए उपपातविरह कालनो विचार थाय त्यारे तो बार मुहूर्तनोज उपपातविरह काल होय छे. बार मुहूर्त पछी कोइ पण एक पृथिवीमां अवश्य उत्पन्न थाय छे, कारण के केवलदानीए ते प्रमाणे जाणेनुं छे. 'जे प्रत्येकमां न होय ते समुदायमां पण न होय, ते न्याय कारणकार्यना धर्मना विचारमां घटे छे, बीजे घटतो नथी, माटे अहीं बीप नथी. जेम नरकगति उत्कर्षथी बार मुहूर्त सुधी उपपात घटे रहित छे एम तिर्यंच, मनुष्य अने देवगति जाणवी. सिद्धिगति उत्कर्षथी छ मास सुधी उपपातरहित होय छे. ए प्रमाणे उद्वर्तना पण जाणवी. परन्तु सिद्धो मरण पामता नथी, कारण के तेओ शाश्वत होयाथी सादि अनन्त काल सुधी सिद्धि उद्वर्तनारहित होय छे.

३. रयण्यमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समं, उक्कोसेण चउब्बीसं सुहुत्ता । सकरप्पमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समं, उक्कोसेणं सत्तराईदियाणि । बालुय्यमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जह्णेण एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धमासं । पंक्क्यमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मास । धूसय्यमापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं दो मासा ।

द्वितीय द्वार.

३. हे भगवन् ! स्लममापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीज सुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! शर्कप्रमापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे उत्कर्षथी चोवीज सुहूर्त सुधी होय छे. हे भगवन् ! बालुकाप्रमापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अर्थ मास. हे भगवन् ! पंक्क्यमापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक मास. हे भगवन् ! धूसप्रमापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट एक मास. हे भगवन् ! धूसप्रमापुढविनेरइया णं भंते केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं मास ।

३-११ हये चोवीज सुहूर्त सयन्ने योजु द्वार फहे छे--'एण्यमापुढविनेरइया णं भंते केवइयं कालं विरहिया उववाणं पन्नत्ता' ? स्लममापुथिबीना नैरयिको केटला फाल सुधी उत्पत्ति रहित होय छे-इत्यादि सब पाठसिद्ध छे, परन्तु अही उत्कृष्ट

समयं; उस्कोसेणं चउब्बीस सुहुत्ता । एवं सुवन्नकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्निकुमाराणं दीवकुमाराणं दिसि-
कुमाराणं उवदिक्कुमाराण वाउकुमाराणं थणियकुमाराण य पत्तेयं जहन्नेणं एणं समयं, उक्कोसेणं चउब्बीसं
सुहुत्ता ।

५. पुढविकाइया णं भंते ! केवइयं कालं विरदिया उववाणं पन्नत्ता ! अणुसमयमविरहिय उव-
वाण पन्नत्ता । एवं आउकाइयाणवि तेउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि अणुसमय अविर-
दिया उववाणं पन्नत्ता ।

ए प्रमाणे सुवर्णकुमारो, विदुत्कुमारो, अग्निकुमारो, द्वीपकुमारो, दिक्कुमारो, उदधिकुमारो, वायुकुमारो अने त्तनितकुमारो प्रत्येक
जपन्त्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश सुहूर्त सुधी उत्पत्ति रहित होय छे.

५. ह भगवन् ! पृथिवीकायिको केंदला फाल मुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हं गौतम ! प्रतिसमय उत्पत्तिधी अविरहित छे.
एदले प्रतिममय निरतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे अप्कायिको, तेजस्कायिको, वायुकायिको अने वनस्पतिकायिको एण प्रतिसमय
निरतर उत्पन्न थाय छे.

सुहूर्तने छे समूर्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्यो अने गार्भजे चोवीश अणुअने चोवीश अने यार सुहूर्तने छे एदले समूर्छिम मनुष्यो चोवीश सुहूर्तने
अने गर्भज मनुष्यो यार सुहूर्तने छे इत्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान कल्पमा प्रत्येकने चोवीश सुहूर्तो, सन्नकुमार कल्पमा नव
विषय अने वीश सुहूर्त, माहेन्द्रमा यार विषय अने दस सुहूर्त, ब्रह्मलोकमा सार्वी चोवीश विषय, काल्पकमा पीसतालीश विषय,

६. वेइंदिया णं भंते ! केवइयं कालं चिरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं तेइंदियचउरिंदिया ।

७. समुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवइयं कालं चिरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । गम्भवक्कतियपंचिदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! केवइयं कालं चिरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चारस सुहुत्ता ।

८. समुच्छिमसमणुस्सा णं भंते ! केवइयं कालं चिरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं,

६. हे भगवन् ! वेइन्द्रियो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा.

७. हे भगवन् ! समुच्छिम पंचेन्द्रिय तियंचो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. हे भगवन् ! गर्भज तियंच पंचेन्द्रियो केटला काळ सुधी उत्पत्ति रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चार सुहूर्त.

८. हे भगवन् ! समुच्छिम मनुष्यो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी महाशुक्रमां पंशी दिवस, सहस्रास्मां सो दिवस, त्यार पछी आनन अने प्राणत प वे देवलोकमां संख्याता मास अने आरण अच्युत प उपराना वे देवलोकमां संख्याता वरस. नीचेना त्रण, मध्यम त्रण अने उपराना त्रण त्रण गैयैयकमां अनुक्रमे संख्याता सैंकडो, संख्याता

उक्कोसेण चउब्बीसं सुहुत्ता । गग्भवर्षातियमणुस्साणं भंते । केवइयं कालं विरहिया उचवाणं पन्नत्ता ! गो-
यमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चारस सुहुत्ता ।

९. बाणमंतराणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एग समयं, उक्कोसेणं चउब्बीस सुहुत्ता । ओइसियाणं पुच्छा ।
गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउब्बीसं सुहुत्ता । सोहम्मो कल्पे देवा णं भंते ! केवइयं कालं विरहिया
उचवाण पत्तत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउब्बीसं सुहुत्ता । ईसाणे कल्पे देवाणं पुच्छा ।
गोयमा ! जहन्नेण एगं समयं, उक्कोसेणं चउब्बीसं सुहुत्ता । सणकुमारो कल्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण

चोवीश सुहूर्तं हे भगवन् ! गर्भज मनुष्यो केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चार सुहूर्त.

९. व्यन्तरो संबंधे पृच्छा हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश सुहूर्त. ज्योतिषिक देवो संबन्धे पृच्छा.
हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश सुहूर्त. हे भगवन् ! मौर्य कल्पमां देवी केटला काळ सुधी उत्पत्तिरहित होय
छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी चोवीश सुहूर्त. ईशान कल्पमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक
समय अने उत्कृष्ट चोवीश सुहूर्त. सनत्कुमार कल्पमा देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट नव रात्रिदिवस
अने वीश सुहूर्त. माहेन्द्र कल्पमा देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चार रात्रिदिवस अने दस सुहूर्त.

इजाट अने संख्याता लाल धर्येनो उत्कृष्ट विरहकाळ जाणवो धिअयावि चार मनुस्तरमां भसस्य काळ तथा सर्वार्थे सिद्धमा पल्योगमनो
संख्यातमे माग उपपत्तविरह जाणवो धीशु धार ममास

एगं समयं, उक्कोसेणं णव राईदियाई वीसाइ सुहुताई । माहिंदे कल्पे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं बारस राईदियाई दस सुहुताई । बंभलोए देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अद्धतेवीसं राईदियाई । लंतगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पणतालीसं राईदियाई । महासुक्कदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असीई राईदियाई । सहस्सारे देवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं आणयदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा । पाणयदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखेज्जा मासा । आरणदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जा वासा । अच्चुयदेवाणं पुच्छा । गोयमा !

ब्रह्मलोकमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट साडीवावीश रात्रिदिवस. लांतकमां देवो संबन्धे पृच्छां. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पीसतालीश रात्रिदिवस. महाशुक्रमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक दिवस अने उत्कृष्ट एंशी रात्रिदिवस. महस्सारमां देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट सो रात्रिदिवस. आनत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता मास. प्राणत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता मास. आरण देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता वरस. अच्युत देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता वरस. नीचेना त्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता सैंकडो वरस. मध्यम त्रैवेयक देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक

जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जा वासा । द्विट्ठिमगेविज्जाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जाइ वाससयाई । मडिअमगेविज्जाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एग समयं, उक्कोसेण संखिज्जाइ वाससहस्ताई । उवरिमगेविज्जाणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं संखिज्जाइ वाससयसहस्ताइ । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाण पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एग समय उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । सब्वट्टसिद्धगवेवाण भंते । केवलियं कालं विरहिया उववाएणं पन्त्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समय, उक्कोसेण पलिओ-यमत्स संखिज्जाइभागं ।

१० सिद्धा णं भंते । केवइयं कालं विरहिया सिज्जाणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं छम्मासा ॥

समय अने उत्कृष्ट संग्याता हजार परम. उपरना प्रेयक देवो सबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट संख्याता लाल चर्प. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अयराजित देवो सपन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट असंख्यात काळ. सर्वार्थसिद्ध देवो संघन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पल्योपमनो संख्यातमो भाग.

१०. हे भगवन् ! सिद्धो केटला काळ सुधी सिद्धि वडे विरहित छे-केटला काळ सुधी सिद्ध यता नयी ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट छ मास.

११. रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते ! केवइयं कालं चिरहिया उव्वट्टणाए पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं चउव्वीसं सुहुत्ता । एवं सिद्धवज्जा उव्वट्टणावि भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं जोइसियवेमाणिएसु 'चयणं'ति अहिलावो कायव्वो ॥ २ दारं ॥

१२. नेरइया णं भंते ! किं संतरं उव्वज्जंति, निरंतरं उव्वज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उव्वज्जंति, निरंतरंपि उव्वज्जंति । तिरिखवज्जोणिया णं भंते ! किं संतरं उव्वज्जंति, निरंतरं उव्वज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उव्वज्जंति

११. रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको केटला काल सुधी उद्वर्तना—मरण रहित होय छे ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट चोवीश सुहूर्त. ए प्रमाणे सिद्ध सिवाय बाकीना जीवोनी उद्वर्तना पण यावत् अनुत्तरोपपातिक सुधी कहेवी. यावत्—ज्योतिषिक अने वैमानिकोने उद्वर्तनाना बदले ज्यवन संबन्धे पाठ कहेवो.

तृतीय द्वार.

१२. हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर (अन्तर सहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तर रहित) उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे, हे भगवन् ! तिर्यचयोनिको सान्तर उपजे छे के निरन्तर उपजे छे ? हे गौतम ! सान्तर पण उपजे छे अने निरन्तर पण उपजे छे, हे भगवन् ! मनुष्यो सान्तर उपजे छे के निरन्तर उपजे छे ? हे गौतम ! सान्तर

१२—१८. हवे त्रीजुं द्वार कहे छे— हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे—इत्यादि सूत्र पूर्वोक्त सूत्रार्थना अनुसारे भावार्थ प्रसिद्ध होवाथी पाठसिद्ध जाणुं. त्रीजुं द्वार समाप्त.

જ્ઞાંતિ, નિરંતરપિ ઉવચ્છંતિ । મણુસ્સા ણં ંતે । કિં સંતરં ઉવચ્છંતિ, નિરતર ઉવચ્છંતિ ? ગોયમા । સંતર-
રપિ ઉવચ્છંતિ નિરતરપિ ઉવચ્છંતિ । દેવા ણં ંતે । કિં સંતર ઉવચ્છંતિ, નિરતર ઉવચ્છંતિ ? ગોયમા । સત-
રંપિ ઉવચ્છંતિ, નિરતરપિ ઉવચ્છંતિ ।

૧૩. રયણપ્પમાણુથિનેરશ્યા ણં ંતે । કિં સતર ઉવચ્છંતિ, નિરતરં ઉવચ્છંતિ ? ગોયમા । સતરપિ ઉવચ-
્છંતિ, નિરતરપિ ઉવચ્છંતિ । ઇવં જાવ અહેસત્તમાણ સતરપિ ઉવચ્છંતિ, નિરંતરપિ ઉવચ્છંતિ ।

૧૪. અસુરકુમારા ણં દેવા ણં ંતે । કિં સંતર ઉવચ્છંતિ, નિરતર ઉવચ્છંતિ ? ગોયમા । સંતરપિ ઉવચ્છંતિ,
નિરતરંપિ ઉવચ્છંતિ । ઇવં જાવ યણિયકુમારા સંતરંપિ ઉવચ્છંતિ, નિરંતરંપિ ઉવચ્છંતિ ।

પણ ઉપજે છે અને નિરંતર પણ ઉપજે છે. હે ભગવન્ ! દેવો સાન્તર ઉત્પન્ન થાય છે કે નિરતર ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! દેવો
સાન્તર પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને નિરતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે.

૧૩. હે ભગવન્ ! રત્નપ્રમા પૃથિવીના નેરિયિકો સાન્તર ઉત્પન્ન થાય છે કે નિરતર ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! સાન્તર પણ
ઉત્પન્ન થાય છે અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે. એ પ્રમાણે યાવત્ અષઃસપ્તમ પૃથિવી સુધી જાણવું.

૧૪. હે ભગવન્ ! અસુરકુમાર દેવો સાન્તર ઉત્પન્ન થાય છે કે નિરતર ઉત્પન્ન થાય છે ? હે ગૌતમ ! સાન્તર પણ ઉત્પન્ન થાય છે
અને નિરંતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે એ પ્રમાણે યાવત્ સ્ત્રિતિકુમારો પણ સાન્તર પણ ઉત્પન્ન થાય છે અને નિરતર પણ ઉત્પન્ન થાય છે.

१५. पुढविकाइया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति । बेइदिया णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति । एवं जाव पंचिदियतिरिक्कजोणिया ।

१६. मणुस्सा णं भंते ! किं संतरं उववज्जंति, निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति, निरंतरंपि उववज्जंति । एवं वाणमंतरा जोइसिया सोहम्मीसाणसणंक्कुमारमाहिंदवंभलयलंतगमहासुक्कसहस्सारआणय-
पाणयआरणच्चुयहिट्टिमगेविज्जगमड्झिमगेविज्जगउवरिमगेविज्जगविजयवेजयंतजयंतअपराजितसञ्चट्टिसिद्धदेवा

१५. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर उत्पन्न थाता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्-वनस्पतिकायिको सान्तर उत्पन्न थाता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. हे भगवन् ! बेइन्द्रियो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्-पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको सुधी जाणवुं.

१६. हे भगवन् ! मनुष्यो सान्तर उत्पन्न थाय के निरंतर उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सान्तर पण उत्पन्न थाय अने निरंतर पण उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लान्तक, महाशुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत, नीचेना त्रण त्रैवेयक, मध्यम त्रण त्रैवेयक, विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित अने सर्वा-

य संतरंपि उच्यवञ्जंति ।

१७. सिद्धा णं भंते ! किं संतरं सिञ्जंति, निरंतरं सिञ्जंति ? गोयमा ! संतरंपि सिञ्जंति, निरंतरंपि सिञ्जंति ।
१८. नेरइया णं भंते ! किं संतर उच्यवदंति निरंतर उच्यवदंति ? गोयमा ! संतरपि उच्यवदंति, निरंतरपि उच्यव-
दति । एवं जहा उचवाओ भणिओ तथा उच्यवदणापि सिद्धयञ्जा भाणियन्वा जाय वेमाणिया, नवरं जोइसिय-

वेमाणियसु 'चयण'ति अहिलाओ कायन्वो ॥ ३ धारं ॥

१९. नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उच्यवञ्जंति ? गोयमा ! जइन्नेणं एको वा दो वा, उओसेण

थंसिद्ध देवो सान्तर पण उपजे अने निरंतर पण उपजे.

१७. हे भगवन् सिद्धो सान्तर सिद्ध थाय छे के निरंतर सिद्ध थाय छे ? हे गौतम ! सान्तर पण सिद्ध थाय छे अने निरंतर
पण सिद्ध थाय छे.

१८ हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर उदरें छे-मरण पामे छे के निरंतर उदरें छे ? हे गौतम ! सान्तर पण उदरें छे अने निरंतर
पण उदरें छे. ए प्रमाणे जेम उपपात कसो तेम उदरेंना पण सिद्ध सिवाय यावत् वैमानिको सुधी कहेवी. परन्तु ज्योतिषिक अने
वैमानिकोने विषे व्यवन संबन्धे पाठ कहेवो.

चतुर्थे द्वार.

१९. हे भगवन् ! नैरयिको एक समयमां केटला उत्सन्न थाय ? हे गौतम ! जयन्यथी एक वे के श्रण अने उत्कर्षथी संख्याता

संखेजा वा असंखेजा वा उववज्जंति, एवं जाव अहेसत्तमाए ।

२०. असुरकुमारा णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेजा वा असंखेजा वा । एवं नागकुमारा जाव थणियकुमारावि भाणियञ्च्वा ।

२१. पुढविकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहियं असंखेजा उववज्जंति; एवं जाव वाउकाइया । वणस्सइकाइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! सट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया अणंता उववज्जंति, परट्ठाणुववायं पडुच्च अणुसमयं अविरहिया असंखेजा उववज्जंति । वेइंदिया णं भंते ! केवया एगसमएणं उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगो वा दो वा के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् अद्यःसत्तमं पृथिवी सुधी जाणहुं.

२०. हे भगवन् ! असुरकुमारे एक समयमां केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कर्षथी संख्याता के असंख्याता उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे नागकुमारे यावत् सन्नितकुमारे सुधी जाणहुं.

२१. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! प्रतिसमय अविरहितपणे असंख्याता उत्पन्न थाय-छे. ए प्रमाणे यावत् वायुकायिक सुधी जाणहुं. हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सस्थान संबंधी उपपातने आश्रयी प्रतिसमय निरंतर अनन्ता उत्पन्न थाय छे अने परस्थान संबंधी उपपातने आश्रयी निरंतर असंख्याता

१९-२३. हत्थे चोयुं द्धार कहे छे—हे भगवन् ! नैरयिको एक समये केटला उत्पन्न थाय छे-इत्यादि सूत्रपाठमात्रथी सिद्ध छे,

तिन्नि वा, उफोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा । एवं तेइविया चउरिंविषया । संशुच्छिमपंचिवियतिरिक्ख
जोगिया गन्भवकंतिपंचिवियतिरिक्खजोगिया संशुच्छिममशुत्सा वाणमंतरजोइसियसोहन्मीसाणसणंकुमा-
रमाहिदयंमलयंतगमहासुक्कससहस्सारकप्पेवा एते जहा नेरइया । गन्भवकंतियमणूसआणयपाणयआर-
णयच्छुअगेवेज्जगअणुत्तरोवयाइया य एते जहन्नेणं इक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेण सखिज्जा उववज्जंति,
न असंखेज्जा उववज्जंति ।

२२. सिद्धा णं भंते । एगसमणं केवइया सिज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उ-
क्कोसेणं अइसयं ।

उत्पन्न थाय छे. हे भगवन् ! वेइन्द्रियो एक समये केटला उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जघन्यधी एक, वे के श्रण अने उत्कर्षधी
सख्याता के असख्याता उत्पन्न थाय छे ए श्रमणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय संबधे जाणथु. समूछिम पंचेन्द्रिय तिर्यचो, गर्भज
पञ्चेन्द्रिय तिर्यचो समूछिम मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिषिक, सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लोतक, महाशुक अने
सहस्सार कल्पना देवो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. गर्भज मनुष्यो; आनत, प्राणत; आरण, अच्युत, प्रवैयक; अने अने अनुत्तरोपपत्तिक
देवो जघन्यधी एक, वे के श्रण अने उत्कर्षधी रोग्याता उत्पन्न थाय छे, पण असख्याता उत्पन्ना नथी:

२२. हे भगवन् ! सिद्धो एक समये केटला सिद्ध थाय छे ? हे गौतम ! जघन्यधी एक, वे के श्रण अने उत्कर्षधी एकतो आठ सिद्ध थाय छे.

पर ३ पनस्सतिसहर्मा 'सहाणुपणय पइय मणुसमयमविपेइया भणता'; स्वस्थान संकथी उपपत्तने आथयी प्रतिसमय निरंतर भणन्ता

२३. नेरइया णं भंते ! एगसमएणं केवइया उव्वटंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्को-
सेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उव्वटंति, एवं जहा उववाओ भणिओ तथा उव्वट्टणावि सिद्धज्जा भाणियन्वा
जाव अणुत्तरोचवाइया, णवरं जोइसियवेमाणियाणं चयणेणं अहिलावो कायन्वो । ४ दारं ।

२३. हे भगवन् ! नैरयिको एक समये केटला उट्ठेँ छे-मरण पामे छे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, वे के त्रण अने उत्कर्षथी
संख्याता के असंख्याता मरण पामे छे. ए प्रमाणे जेम उपपात कळो तेम उद्वर्तना पण सिद्ध सिवाय यावत्-अनुत्तरोपपातिक सुधी
कहेवी. परन्तु ज्योतिषिक अने वैमानिकोने च्यवन वडे पाठ कहेवो.

उत्पन्न थाय छे. सजातीय पोताना पूर्वना वनस्पतिरूप भवथी नीकळी वनस्पतिमां उत्पन्न थाय ते स्वस्थान संवन्धी उपपात कहे-
वाय छे. तेने आश्रयी प्रतिसमय अचिरहितपणे सधेवा अनन्ता उत्पन्न थाय छे, कारण के दरेक निगोदलो असंख्यातमो भाग निरंतर
उत्पन्न थाय छे, अने मरण पामे छे. 'परदृष्टाणुववाइयं पशुच अणुसमयमचिरदिया असंखेज्जा'-परस्थान संवन्धी उपपातने आश्रयी
प्रतिसमय निरन्तर असंख्याता उगजे छे. विजातीय पृथिव्यादि परभवथी आवी वनस्पतिमां उत्पन्न थाय ते परस्थान संवन्धी
उपपात कहेवाय छे, तेने आश्रयी प्रतिसमय असंख्याता जीवो निरन्तर उत्पन्न थाय छे. गर्भज मनुष्यो उत्कृष्टपणे पण संख्याता ज
होय छे पण असंख्याता नथी होता. तेथी तेना सूत्रमां उत्कर्षथी संख्याता उत्पन्न थाय छे तेम कहेवुं. आगतादि देवलोकां मनुष्यो
ज उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यंचो उत्पन्न थता नथी, अने मनुष्यो संख्याता ज छे माटे आगतादि देव संवन्धी सूत्रोमां संख्याता ज
उत्पन्न थाय छे, पण असंख्याता उत्पन्न थता नथी. सिद्धिगतिमां उत्कर्षथी एक समये एकसो आठ सिद्ध थाय छे. ए प्रमाणे
उद्वर्तना सूत्र पण जाणवुं. परन्तु ज्योतिषिक अने वैमानिकोने च्यवनो पाठ कहेवो, कारण के ज्योतिषिक अने वैमानिकोना स्वभवथी थतां

२४. नेरइया णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति ! किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति । जइ तिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति किं प-
गिणियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, वेइदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, तेइदियतिरिक्खजोगिणए-

पांचसुं द्वार.

२४. हे भगवन् ! नेरयिको क्याथी आवीने उत्पन्न थाय छे ? शु नेरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, मनुष्योथो आवी उत्पन्न थाय के देवोथी आवी उत्पन्न थाय ! नेरयिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, तिर्यंचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे, देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी. जो तिर्यंचयोनिकोथी उद्पत्तन-भरणे व्ययन कहेथाय छे कारण केसेवा प्रफारनी भनावि फालनी प्रसिद्धि छे तेथी तेना सूत्रमां व्ययननो पाठ कहेयो ते आ प्रमाणे—‘ओइसिया ण भते ! पगलमये ण केवइया व्ययति ? गोयमा ! जइणेण पणो या दो धा’-इत्यादि हे भगवन् ! ज्योति-
यिको एक समये केटला व्यये ? हे गौतम ! जअण्यथी एक वे के प्रण भने उरुएयी सख्याता के भसंख्याता व्यये छे

२४—३०. चतुर्थे द्वार समाप्त थयु, हवे पांचमा द्वार सबन्धे कहे छे—‘नेरइया ण भते ! कजोहिंतो उववज्जंति’-हे भगवन् ! नेर-
यिको क्याथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे पण तेनो सदेपथी आ अर्थ छे—‘नामान्य रीते नेरयिकोनी उत्पत्तिना विचारमां
भने रत्ताप्रमा नरकना नेरयिकोनी उत्पत्तिना विचारमां देव, नाएक, पृथिव्यादि पांच इथापर विकलेन्द्रियप्रिफ भने असत्त्व धरतना
आयुयाळा चतुष्पद् भने खेचरेतेनो, भने बीजा पण भण्यांता तिर्यंच पचेन्द्रियो, समूहिय मनुष्यो, गर्भज छना पण अन्नमंभूमिना,

हिंतो उववज्जंति, चउरिंदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, पंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो एगिंदिय०, नो वेइंदिय०, नो तेइंदिय०, नो चउरिंदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, पंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति । जइ पंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, थलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, खहयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, थलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति, खहयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जंति ।

आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, वेइन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, तेइन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, चउरिन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय के पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रिय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय, स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय के खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जलचर, स्थलचर अने खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय.

अन्तरद्वीपना, कर्मभूमिना छतां असंख्याता वरसना आयुपवाळा, अने संख्याता वरसना आयुपवाळा छतां अपर्याप्ताओनो प्रतिषेध समजवो अने वाकीनांउं विधान जाणवुं. पटले वाकीना वधा नेरथिकोमां उत्पन्न थाय छे. शार्कराप्रभामां समूह्छिमोनो पण प्रतिषेध जाणवो.

२५. जइ जलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति किं संसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति, गग्भवकंतिपजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति ? गोयमा ! संसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति, गग्भवकंतिपजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति । जइ संसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति किं पज्जत्तयसंसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति, अपज्जत्तसंसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयसंसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिण्हितो उववज्जंति, नो अपज्जत्तगसंसुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजो-

२५. जो जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय तो शु समूच्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंवयोनिक्कोधी आवी उत्पन्न थाय ! हे गौतम ! संसूच्छिम अने गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आपी उत्पन्न थाय. जो संसूच्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय तो शु पर्याप्त समूच्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्त समूच्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय. जो गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त समूच्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय तो शु पर्याप्त गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्त गर्भज जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंयोधी आवी उत्पन्न थाय !

पट्टे समूच्छिम मनुष्य अने तिर्दंको शकंराप्रमामां उत्पन्न यता नधी बालुकाप्रमामां भुजपरिमणो, एकप्रमामा खेचणेनो, धूमप्रमामां धनुष्यणेनो, समप्रमामा उत्पारसणो अने सातमी नत्क पृथिवीमां खीणोने पण प्रतिषेध समज्जे

णिण्ङितो उववज्जंति । जइ गबभवक्कंति यजलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति किं पज्जत्तगग्गभव-
क्कंति यजलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति, अपज्जत्तयगग्गभवक्कंति यजलयरपंचिदियनिरिक्ख-
जोणिण्ङितो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तयगग्गभवक्कंति यजलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति,
नो अपज्जत्तगग्गभवक्कंति यजलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति ।

२३. जइ थलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति किं चउप्पयथलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो
उववज्जंति, परिसप्पयथलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पयथलयरपंचिदियनिरि-
क्खजोणिण्ङितो उववज्जंति, परिसप्पयथलयरपंचिदियनिरिक्खजोणिण्ङितो उववज्जंति । जइ चउप्पयथलयर-
हे गौतम ! पर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त गर्भज जलचरथी आवी न उत्पन्न थाय.

२६. जो स्थलचर पंचेन्द्रिय तियंनोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय के परिसर्प स्थलचरथी
आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय अने परिसर्प स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो
चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संमूच्छिमथी आवी उत्पन्न थाय के गर्भजवी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
संमूच्छिम चतुष्पद स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय अने गर्भज चतुष्पद स्थलचरथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो संमूच्छिम
चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आनी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आनी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
पर्याप्त संमूच्छिम चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्त संमूच्छिम चतुष्पद स्थलचरथी आवी उत्पन्न न थाय. जो

पंचदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति किं संमुच्छिमेहितो उववञ्जति, गन्भवकंतिगृहितो उववञ्जति गोयमा ! संमुच्छिमचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो वि उववञ्जति, गन्भवकंतिपचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो वि उववञ्जति किं पञ्चत्तगसमुच्छिमचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति, अपञ्चत्तगसंमुच्छिमचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति ! जइ संमुच्छिमचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति, नो अपञ्चत्तगसमुच्छिमचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति । जइ गन्भवकंतिपचउप्पयथलपरंपंचिदियतिरिक्त्वजोगिणहृतो उववञ्जति किं संलेज्जवासाउअगन्भवकंतिपचउप्पयथलपरंपंचि-

गर्मज चतुष्पद स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यचथी आवी उत्पन्न थाय तो सख्याता वरसना आयुपवाळाधी आवी उत्पन्न थाय के असख्यात वरसना आयुपवाळाधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुपवाळाधी आवी उत्पन्न थाय, पण असख्य वरसना आयुपवाळाधी आवी न उत्पन्न थाय. जो सख्याता वरसना आयुपवाळा गर्मज चतुष्पद तिर्यचथी आवी उत्पन्न थाय तो पर्यासाधी आवी उत्पन्न थाय के अपर्यासाधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासाधी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्यासाधी आवी न उत्पन्न थाय. जो परिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यचथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय के मुजपरिसर्पधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं समूछिम उरपरिसर्पधी आवी उत्पन्न थाय के गर्मज उरपरिसर्पधी आवी उत्पन्न थाय ! समूछिम अने गर्मज

दियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति, असंखेज्जवासाउयगग्गभवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति, नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति । जइ संखेज्जवासाउयगग्गभवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगग्गभवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति, अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगग्गभवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तेहिंतो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जन्ति । जइ परिसप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिंतो उववज्जन्ति किं उरपरिसप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिन्तो उववज्जन्ति, सुयपरिसप्पयथलयरपंचिदियतिरिक्खजोगिणएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जन्ति । जइ उरपरिसप्पयथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोगिणएहिन्तो उववज्जन्ति किं संसुच्छिमउरपरिसप्पयथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोगिणएहिन्तो उववज्जन्ति, गग्गभवक्कंतियउरपरिसप्पयथलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोगिणएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संसुच्छिमेहिंतो उववज्जन्ति, गग्गभवक्कंतिएहिंतोवि उवव-

वन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो संमूळिम उरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्यासा के अपर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासा संमूळिम उरपरिसर्पथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्यासा संमूळिम उरपरिसर्पथी आवी न उत्पन्न थाय. जो गर्भजउरपरिसर्प स्थलचरथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय पण अपर्यासाथी आवी उत्पन्न न थाय. जो भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्य-

ज्जन्ति । जइ संसुच्छिमउरपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति; अपज्जत्तगेहिन्तो उववज्जन्ति ! गोयमा ! पज्जत्तगसंसुच्छिमहेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तगसंसुच्छिमउरपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हित्तो उववज्जन्ति । जइ गम्भयकंतियउरपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ! गोयमा ! पज्जत्तगम्भयकंतिण्हिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तगम्भयकंतियउरपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति । जइ सुयपरिसप्पथलयरपन्चियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति किं संसुच्छिमसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति, गम्भयकंतियसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति ! दोहिन्तोयि उववज्जन्ति । जइ संसुच्छिमसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तयससुच्छिमसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तयसंसुच्छिमसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरिक्खजोगिण्हित्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ गम्भवक्कतियसुयपरिसप्पथलयरंपंचिन्दियतिरि-

चोधी आवी उत्तन्न थाय तो समूच्छिमधी आवी उत्तन्न थाय के गर्भजधी आवी उत्तन्न थाय ? हे गौतम ! वन्नेथी आवी उत्तन्न थाय. जो समूच्छिम सुजपरिसर्प स्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यचोधी आवी उत्तन्न थाय तो शुं पर्यासाधी आवी उत्तन्न थाय के अपर्यासाधी आवी उत्तन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासाधी आवी उत्तन्न थाय, एण अपर्यासाधी आवी उत्तन्न न थाय. जो गर्भज सुज-

खलजोणिएहितो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहितो उववज्जन्ति अपज्जत्तएहितो उववज्जन्ति ? गोयमा । पज्जत्तए-
हितो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जन्ति ।

२७. जइ खहयरपंचिदियतिरिखलजोणिएहितो उववज्जंति किं संसुच्छिमखहयरपंचिदियतिरिखलजोणिए
हितो उववज्जंति, गभभवकंतियखहयरपंचिन्दियतिरिखलजोणिएहितो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहितोवि उव-
वज्जन्ति ! जइ संसुच्छिमखहयरपंचिन्दियतिरिखलजोणिएहितो उववज्जंति किं पज्जत्तएहितो उववज्जन्ति, अप-
ज्जत्तएहितो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहितो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जंति । जइ पज्जत्तगगभ-
वकंतियखहयरपंचिन्दियतिरिखलजोणिएहितो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहितो उववज्जंति, असंखेज्जवा-

परिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे
गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय.

२७. जो खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संसूछिम के गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न
थाय ? हे गौतम ! वन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. जो संसूछिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी
उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय पण अपर्याप्ताथी आवी न उत्पन्न थाय.
जो पर्याप्ता गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुपवाळाथी आवी उत्पन्न थाय के
असंख्याता वरसना आयुपवाळाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुपवाळाथी आवी उत्पन्न थाय, पण असं-

साउपहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! सरिज्जयासाउपहिन्तो उववज्जन्ति, नो असंखिज्जयासाउपहिन्तो उववज्जन्ति ।
जइ संखिज्जयासाउयगग्भवक्कंतियत्तहयत्तपंचिन्वियत्तिरियत्तजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उवव-
ज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ।
२८. जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं समुच्छिममणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, गग्भवक्कन्तिमणुस्सेहिन्तो उव-
वज्जन्ति ? गोयमा ! नो समुच्छिममणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, गग्भवक्कन्तिमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति । जइ ग-
ग्भवक्कन्तिमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं कम्मभूमिगग्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति अकम्मभूमिग-
ग्भवक्कन्तिमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, अंतरदीवगग्भवक्कन्तिमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! कम्म-

ख्याता वत्सना आयुषवाळाधी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वत्सना आयुषवाळा गर्भज खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोधी आवी
उत्पन्न थाय तो शु पर्याप्ताधी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताधी आवी उत्पन्न थाय,
एण अपर्याप्ताधी आवी उत्पन्न न थाय.

२८. जो मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो शु समूच्छिम मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न
थाय ? हे गौतम ! समूच्छिम मनुष्योधी आवी न उत्पन्न थाय, एण गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय. जो गर्भज मनुष्योधी आवी
उत्पन्न थाय तो शु कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अंतरदीपना गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कर्मभूमिना गर्भज
मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय, एण अकर्मभूमिना के अंतरदीपना गर्भज मनुष्योधी आवी न उत्पन्न थाय. जो कर्मभूमिना गर्भज

भूमिगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अकम्मभूमिगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अंतरदीवगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति । जइ कम्मभूमिगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगर्भवक्कन्तियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, नो असंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति । जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगर्भवक्कंतियमणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तेहिन्तो उववज्जन्ति । एवं जहा ओहिया उववाइया तथा रयणप्पभापुढविनेरइयाचि उववाएयन्वा ।

२९. सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गोयमा ! एतेवि जहा ओहिया तहेवोववाएयन्वा, नवरं संसुच्छि-

मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुपवाळा के असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थायं. जो संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्यासाथी आवी उत्पन्न न थाय. ए प्रमाणे जेम सामान्य नैरयिकोनो उपपात कखो तेम रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकोनो पण उपपात कहेवो.

२९. शर्कराप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबंधे पुच्छा. हे गौतम ! जेम सामान्य नैरयिकोनो उपपात कखो तेम उपपात कहेवो. परंतु

भेदित्तो । पडिसेहो कयबन्वो ॥ बालुयप्पमापुढविनेरइयाणं भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जहा
सककप्पमापुढविनेरइया, क्वरं सुयपरिसप्पेत्तिन्तो पडिसेहो कायब्वो । पंकप्पमापुढविनेरइयाणं पुच्छा । गो-
यमा ! जहा बालुयप्पमापुढविनेरइया, नवर त्वपरेहिन्तो पडिसेहो कायब्वो । धूमप्पमापुढविनेरइयाणं पुच्छा ।
गोयमा ! जहा पंकप्पमापुढविनेरइया, नवर धउप्पयहिन्तोवि पडिसेहो कायब्वो । तमापुढविनेरइया ण भंते !
कओहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जहा धूमप्पमापुढविनेरइया, नवर धलयरेहिन्तोवि पडिसेहो कायब्वो । इमेण
अभिलायेणं जइ पंचिन्दियनिरिक्खजोणिगहिन्तो उववज्जन्ति, किं जलयरपंचिद्विदहिन्तो उववज्जन्ति, धलयर-
पंचिन्दियनित्तो उववज्जन्ति, बहयरपंचिन्दियगहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! जलयरपंचिन्दियगहिन्तो उववज्जन्ति,

संमृष्टिमनो निषेध करवो. एटले के समृष्टिममांधी आवी उत्पन्न थता नथी. हे भगवन् ! बालुकाप्रमा पृथिवीना नैरयिको क्योपी
आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! जेम शर्कसप्रमा पृथिवीना नैरयिको कखा तेम कहेवा. परतु सुजपरि सपौनो प्रतिषेध करवो अर्थात्
शुनपरिसपोथी आवी अर्ही उपजता नथी. पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको संचे पृच्छा. हे गौतम ! बालुकाप्रभापृथिवीना नैरयिको पेटे
जागवा. परंतु खेबरोथी आवी उत्पन्न थता नथी. धूमप्रमा पृथिवीना नैरयिको संचे पृच्छा. हे गौतम ! पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको
संचे कपुं तेम कहेवु, परंतु चतुस्पदोनो प्रतिषेध करवो, एटले त्याथी आवी उत्पन्न थता नथी हे भगवन् ! तमापृथिवीना नैर-
यिको क्योपी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जेम धूमप्रमा पृथिवीना नैरयिको कखा तेम कहेवा. परतु स्थलचरोथी आवी उत्पन्न
थता नथी. तेम आ अभिलाप पडे प्रतिषेध करवो—“जो पंचेन्द्रियविर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु जलचर पचेन्द्रियोथी, स्थ-

नो थलयरेहिन्तो, नो खयरेहिन्तो उववज्जन्ति ।

३०. जइ मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति किं कम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अकम्मभूमिएहिन्तो उववज्जन्ति, अंतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! कम्मभूमिंएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अकम्मभूमिंएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अंतरदीवएहिन्तो उववज्जन्ति किं संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, असंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति, नो असंखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ संखेज्जवासाउएहिन्तो उववज्जन्ति किं पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ पज्जत्त-

लचर पंचेन्द्रियोथी के खेचर पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जलचर अने खेचर पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थता नथी.

३०. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अन्तरद्दीपना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय, पण अकर्मभूमिना के अन्तरद्दीपना मनुष्योथी आवी न उत्पन्न थाय. जो कर्मभूमिना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय के असंख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय, पण असंख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी न उत्पन्न थाय. जो संख्याता वरसना आयुषवाळाथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी न उत्पन्न थाय. जो पर्याप्ता संख्याता

गंसरोज्जवासाउयकरुभभूमिपहिन्तो उववज्जन्तो इत्थिएहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुंसपहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! इत्थीहिन्तो उववज्जन्ति, पुरिसेहिन्तो उववज्जन्ति, नपुंसपहिन्तोवि उववज्जन्ति । अहेंसत्तमापुढविनेरइया ण भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! एवं चेध, नवरं इत्थीहिन्तो प-
डिसेहो कायन्वो । “अस्तस्मी खलु पढम दोधंपि सिरीसथा तइय पक्खी । सीहा जन्ति चउत्थि उरगा पुण पंचमिं पुढविं । छट्ठिं च इत्थियाओ मच्छा मणुया य सत्तमिं पुढविं । एसो परमोवाओ बोद्धञ्चो नरगपुढवीर्ण” ॥

३१. असुरकुमारा ण भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएहिन्तो उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणि-
वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना मनुष्योयी आवी उत्पन्न थाप तो शु स्त्रीओ, पुरुषो के नपुंसकोधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
स्त्रीओ, पुरुषो के नपुंसकोधी पण आवी उत्पन्न थाय. हे मगवन् ! अघःसप्तमी नरकघृथिबीना नैरयिकोमां क्यांथी आवी उत्पन्न
थाय ? हे गौतम ! एसज जाणवुं. परंतु स्त्रीनो प्रतिपेध करवो. एटले स्त्रीथी आवी उत्पन्न थता नथी. असप्पी प्रथम नरक
पर्यंत, सरीसृपो-सुअपरिसर्पं बीवी सुयो, पक्षीओ व्रीजी नरक सुधी, सिंहो चोथी नरक सुधी, उरःपरिसर्पो पांचमी नरक सुधी, स्त्रीओ
छट्ठी नरक सुधी अने मत्स्यो तथा मनुष्यो सातमी नरक सुधी जाय छे. आ नरकघृथिबीओनो उत्कृष्ट उपपात जाणवो.”

३१. हे मगवन् ! असुक्कुमारो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोधी आवी उत्पन्न थता नथी, तिर्यंचो
३१-४० मयनवासी देवोना उपपातना विचारमां देवो, नाएको, पुथिय्यादि पाच स्यावर, चिकलेन्नियत्रिक, अपर्यांत तिर्यंच पचेन्द्रिय,
समृद्धिम अने अपर्यांत गर्भज मनुष्योको प्रतिपेध जाणवो पाकीनाउ विधान समजुधु पृथिवी, अप अने धनस्पतिने विक्खे सफल नैरयिको

एहिंतो उववज्जन्ति, मणुस्सेहिंतो उववज्जन्ति, नो देवेहिंतो उववज्जन्ति । एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाओ तेहिंतो असुरकुमाराणवि भाणियब्बो, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगमणुस्सतिरिक्खजोणिएहिन्तोवि उववज्जन्ति, सेसं तं चेव । एवं जाव थणियकुमारा भाणियब्बा ।

३२. पुढविकाइया णं भंते ! कतोहिन्तो उववज्जन्ति ? किं नेरइएहिन्तो जाव देवेहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएहिन्तो उववज्जन्ति, तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, मणुस्सेहिन्तो उववज्जन्ति, देवेहिन्तोवि उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं एगिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, जाव पंचिन्दि-
अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे ज्यांथी आवी नैरयिकोनो उपपात थाय छे त्यांथी आवी असुरकुमारोनो पण उपपात कहेवो. परंतु असंख्यात वरसना आयुपमाळा अकर्मभूमिना के अन्तरद्वीपना मनुष्यो अने तिर्यंचोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे. वाकी वधुं तेमज जाणधुं. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमार सुधी कहेधुं.

३२. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी न उत्पन्न थाय, पण तिर्यंचो, मनुष्यो के देवोथी आवी उत्पन्न थाय. जो तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थायंती शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-पंचेन्द्रिय तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय ?

अने सनत्कुमारादि देवोनो, तेजस्वायु, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां सर्वं नारको अने सर्वदेवनो, तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां आनत देवनो, मनुष्योमां आतेमी भरकृथिचीना नारक, तेजस् अने वायुनो, व्यन्तरोमां वेध, नारक, पृथिव्यादि पांच, विकलेन्द्रियत्रिक,

किं पञ्जराएहिन्तो उववज्जन्ति, अपञ्जराएहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा । दोहिन्तोवि उववज्जन्ति, एवं जाव वणस्स-
काइया चउक्कएणं भेदेण उववाएब्बा ।

३३. जइ बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं पञ्जरावेइंदिएहिन्तो उववज्जन्ति, अपञ्जरायवेइंदिए-
हिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! दोहिन्तोवि उववज्जन्ति । एवं तेइंदियचउरिन्दिएहिन्तोवि उववज्जन्ति । जइ पंचि-
न्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति किं जलयरपंचिन्दियतिरिक्खजोणिएहिन्तो उववज्जन्ति, एवं जेहिन्तो नेर-
इयाणं उववाओ भणिओ तेहिन्तो एतेसिंषि भाणियब्बो, नवरं पञ्जरागअपञ्जरागेहिन्तोवि उववज्जन्ति, सेसंतं च्वेव ।
शुं पर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्यासाथी आवी उत्पन्न थाय । हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे यावत्-वन-
स्पतिकायिको सुथी (सूक्ष्म, वादर, पर्यासा अने अपर्यासा ए) चार भेदो वडे उपपात कहेवो.

३३. जो बेइन्द्रिय तिर्यचयोनिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्यास बेइन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्यास बेइन्द्रियोथी
आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेथी आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे तेइन्द्रियो अने चउरिन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो
पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी आवी उत्पन्न थाय ?—इत्यादि जेओथी नैरयिकोनो
उपपात कह्यो छे तेओथी ए पृथिवीकायिकोनो पण उपपात कहेवो. परंतु एटली विशेषता छे के पर्यासा अने अपर्यासा बन्नेथी आवी
सन्तुमारथी मांडी सहस्रार देवलोक सुधी अकर्मभूमिजोनो पण प्रतिषेध जाणवो. आनतादिने विषे तिर्यच पंचेन्द्रियोनो अने
विजयादिने विषे मिथ्यादृष्टि मनुब्योनो पण प्रतिषेध जाणवो. पंचमद्वार समाप्त.

३४ जइ मणुस्सेहिनतो उववज्जंति किं संशुच्छिमणुस्सेहिनतो उववज्जंति, गन्भवकंतिमणुस्सेहिनतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिनतोवि उववज्जंति । जइ गन्भवकंतिमणुस्सेहिनतो उववज्जंति किं कम्ममूमगगन्भवकंतिमणुस्सेहिनतो उववज्जंति, अकम्ममूमगगन्भवकंतिमणुस्सेहिनतो उववज्जंति ? सेसं जहा नेरइयाण, नवर अपज्जत्तएहिनोवि उववज्जति ।

३५. जइ देवेहिनतो वि उववज्जंति किं भवणवासियाणमंतरजोइसवेमाणिणहिनतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासिदेवेहिनतोवि उववज्जंति, जाव वेमाणियदेवेहिनतोवि उववज्जंति । जइ भवणवासिदेवेहिनतो उववज्जति किं असुरकुमारदेवेहिनतो, जाव थणियकुमारदेहिनतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमारदेवेहिनतोवि उववज्जति ।

३४. जो मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं समुच्छिम मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बन्नेधी आवी उत्पन्न थाय. जो गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कर्मभूमिना मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय के अकर्मभूमिना गर्भज मनुष्योधी आवी उत्पन्न थाय—इत्यादि बाकी बधुं नैरधिको संबन्धे कहुं तेम कहेवुं. परन्तु अपर्याप्ताधी पण उत्पन्न थाय छे.

३५. जो देवोधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी, ब्यन्तर, ज्योतिषिक, के वैमानिक देवोधी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! भवनवासी देवोधी पण आवी उत्पन्न थाय, यावद्वैमानिक देवोधी पण आवी उत्पन्न थाय. जो भवनवासी देवोधी आवी

ववज्जंति, जाव थणियकुमारदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ चाणमंतरदेवेहिन्तो उववज्जंति किं पिसाएहिंतो जाव गंधव्वेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहिंतोवि, जाव गंधव्वेहिंतो वि उववज्जंति । जइ जोइ-सियदेवेहिंतो उववज्जंति किं चंदविमाणेहिंतो उववज्जंति, जाव ताराविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जइ वेमाणिय-देवेहिंतो उववज्जंति किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति, कप्पातीतवेमाणियदेवेहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति, नो कप्पातीतवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति । जइ कप्पोवग-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति किं सोहम्ममेहिंतो, जाव अच्चुएहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! सोहम्मभीसाणेहिं-

उत्पन्न थाय तो शुं असुक्खमारोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-स्तनितकुमारोथी आवी उत्पन्न थाय ! हे गौतम ! असुक्खमार देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्-स्तनितकुमार देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो व्यन्तर देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पिशाचोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-गांधर्वोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पिशाचोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्-गांधर्वोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो ज्योतिषिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं चन्द्रविमानना देवोथी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-ताराविमानना देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! चन्द्रविमानना ज्योतिषिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्-ताराविमानना ज्योतिषिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय के कल्पातीत वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कल्पोप-

तो उववज्जंति, नो सणंकुमार जाव अच्युपहितो उववज्जंति । एवं आउकाइयावि । एवं तेउवाउकाइयावि, नवरं देववज्जेहितो उववज्जति । थणस्सइकाइया जहा पुढविकाइया । चेइविया तेइविया चउरिदिया एते जहा तेउवाउ देववज्जेहितो भाणियव्या ।

३६. पविंदियतिरिक्खज्जेणिया णं भंते ! कओहितो उववज्जंति ? किं नेरइएहितो उववज्जंति जाव, देवे-
हितो उववज्जन्ति ? गोयमा ! नेरइएहितोचि, तिरिक्खज्जेणिएहितोचि, मणुस्सेहितोचि, देवेहितोचि उववज्जन्ति ।
जइ नेरगहितो उववज्जंति किं रयणप्पमापुढविनेरइएहितो जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहितो उववज्जंति ? गोयमा ।

पन्न वैमानिक देवोधी आधी उत्पन्न थाय, पण कल्यातीत वैमानिक देवोधी आवी उत्पन्न न थाय. जो कल्पोपपन्न वैमानिक देवोधी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सौधर्मधी आवी उत्पन्न थाय के यावत्-अच्युतधी आवी उत्पन्न थाय ! हे गौतम ! सौधर्म अने ईशा-
नधी आवी उत्पन्न थाय, पण सनत्कुमार, यावत्-अच्युतधी आवी उत्पन्न न थाय. ए प्रमाणे अक्कायिको पग जाणना. तेगस्कायिको अने वायुकायिको पण एमज जाणवा. परन्तु तेओ देव सिंघाय नाकीना जीवोधी आवी उत्पन्न थाय छे. वनस्पतिकायिको पृथिवी-
कायिकोनी पंठे जाणवा. वेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने चउन्द्रियो तेजस्काय अने वायुकायनी पंठे देव सिंघायना जीवोधी आवी उत्पन्न थाय छे एम कहेंदु.

३६. हे भगवन् ! पवेन्द्रिय तिर्यंचो क्याधी आवी उत्पन्न थाय छे ? शुं नैरयिकोधी यावत्-देवोधी आनी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोधी, तिर्यंचोधी, मनुष्योधी अने देवोधी पण आवी उत्पन्न थाय छे. जो नैरयिकोधी आनी उत्पन्न थाय तो शुं

रयणप्पभापुढविनेरएहिंतोवि उववज्जंति, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतोवि उववज्जंति । जइ तिरिक्खजोणि-
एहिन्तो उववज्जंति किं एगिंदिएहिंतो उववज्जंति, जाव पंचिंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदिएहिंतोवि
उववज्जन्ति, जाव पंचिंदिएहिंतोवि उववज्जंति । जइ एगिंदिएहिंतो उववज्जंति किं पुढविकाइएहिंतो उवव-
ज्जन्ति-एवं जहा पुढविकाइयाणं उववाओ भणिओ तहेव एएसिंपि भाणियब्बो, नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सार-
कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जंति, नो आणयकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो जाव अब्बुएहिंतोवि उववज्जंति ।

३७. मणुस्सा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गो-
रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी यावत्-अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथिवीना नैर-
यिकोथी, यावत्-अधःसप्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो तिर्यंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रियोथी
आवी उत्पन्न थाय के यावत्-पंचेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोथी पण आवी उत्पन्न थाय, यावत्-पंचेन्द्रि-
योथी पण आवी उत्पन्न थाय. जो एकेन्द्रियोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पृथिवीकायिकोथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम
पृथिवीकायिकोनो उपपात कह्यो तेम ए पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो पण कह्यो, परन्तु विशेष ए छे के तेमां देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे,
यावत् सहस्रार कल्पोपपन्न वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे, पण आनत कल्पोपपन्न देवोथी यावत् अब्युत कल्पोपपन्न देवो-
थी आवी उत्पन्न थता नथी.

३७. हे भगवन् ! मनुष्यो क्यांथी आरी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी, यावत् देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !

यमा ! नेरइएहिलोचि उववज्जंति, जाव देवेहिलोचि उववज्जंति । जइ नेरइएहिलो उववज्जंति किं रयणप्पभापु-
द्विनेरइएहिलो उववज्जंति, किं सक्करप्पभापुद्विनेरइएहिलो उववज्जंति, किं बालुयप्पभापुद्विनेरइएहिलो,
किं पंकप्पमानेरइएहिलो, किं धूमप्पमानेरइएहिलो, किं तमप्पमानेरइएहिलो, किं अहेसत्तमापुद्विनेरइएहिलो
उववज्जंति ? गोपमा ! रयणप्पभापुद्विनेरइएहिलोचि, जाव तमापुद्विनेरइएहिलोचि उववज्जंति, जो अहेसत्त-
मापुद्विनेरइएहिलो उववज्जंति । जइ तिरिक्खजोणिएहिलो उववज्जंति किं एगिदियतिरिक्खजोणिएहिलो उ-
ववज्जंति-एवं जेहिलो पंघिदियतिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिलो मणुस्साणवि निरवसेसो भाणि-
यब्बो, नवरं अहेसत्तमापुद्विनेरइएहिलो तेउवाउकाइएहिलो ण उववज्जंति । सब्बदेवेहिलो य उथयाओ कायब्बो

नैरयिकोथी, यावत् देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय छे. जो नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु रत्नप्रमा पृथि-
वीना नैरयिकोथी, दुर्कराममा पृथिवीना नैरयिकोथी यावत् अघःसत्तम पृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
रत्नप्रमा पृथिवीना नैरयिकोथी, यावत् तमापृथिवीना नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे. परन्तु अघःसत्तम पृथिवीना नैरयिकोथी
आवी उत्पन्न यता नथी. जो तियंचोथी आवी उत्पन्न थाय तो शु एकेन्द्रिय तियंचोथी आवी उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम जे जीवोथी
आवी पचेन्द्रिय तियंचोनो उपपात कखो छे तेम ते जीवोथी आवी मनुष्योनो पण सर्व प्रकारे उपपात कहेवो. परन्तु अघःसत्तम
नरकपृथिवीना नैरयिकोथी तथा वेजस्काय अने वायुःकायथी आवी मनुष्यो उत्पन्न यता नथी. तथा सर्व देवोथी उपपात कहेवो,
यावत्-कस्पातीव वैमानिक सर्वार्थसिद्ध देवोथी पण उपपात कहेवो.

जाव कप्पातीतवेमाणियसब्बद्वसिद्धदेवेहिंतोचि उववज्जावेयन्वा ।

३८. वाणमंतरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो, तिरिक्खजोणिएहिंतो, मणुस्सेहिंतो, देवेहिन्तो उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिन्तो असुरकुमारा उववज्जन्ति तेहिन्तो वाणमन्तरा उववज्जाएयन्वा ।

३९. जोइसिया देवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! एवं चेव, नवरं संसुच्छिमअसंखिज्जवासाउ-यखहरपंचिदियतिरिक्खजोणियवज्जेहिंतो अंतरदीवमणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयन्वा ।

४०. वेमाणिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो, किं तिरिक्खजोणिएहिंतो, किं मणुस्सेहिंतो किं देवेहिंतो उववज्जन्ति ? गोयमा ! णो णेरइएहिंतो उववज्जंति, पंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति,

३८. हे भगवन् ! व्यन्तर देवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिको, तिर्यंचो, मनुष्यो के देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ज्यांथी आवी असुरकुमारी उत्पन्न थाय छे त्यांथी आवी व्यन्तरो उत्पन्न थाय छे एम कहेहुं.

३९. हे भगवन् ! ज्योतिषिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! एमज जाणहुं. परन्तु समूछिम (तिर्यंच पंचेन्द्रिय) अने असंख्याता वरसना आयुष्याळा खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचो तथा अन्तर द्वीपना मनुष्यो सिवाय वीजा जीवोथी आवी उत्पन्न थाय छे एम कहेहुं.

४०. हे भगवन् ! वैमानिको क्यांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? शुं नैरयिको, तिर्यंचो, मनुष्यो अने देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. देवोथी आवी उत्पन्न

मणुस्सेहितो उचयज्जंति, णो देवेहितो उचयज्जंति । एवं सोहम्मीसाणगवेवा वि भाणियब्बा । एवं सणंकुमार देवावि भाणियब्बा, नवरं असखेब्बायासाउयअकम्मभूमगवज्जेहितो उचयज्जंति । एवं जाय सहस्सारकण्णोवग-
वेमाणियवेवा भाणियब्बा । आणयदेया णं भंते ! कओहितो उचयज्जंति ? किं नेरइयहितो, किं पंचिदियतिरि-
फवजोणियेहितो, मणुस्सेहितो, देवेहितो उचयज्जति ? गोयमा ! णो गेरइयहितो उचयज्जति, नो तिरियखजोणि-
णहितो उचयज्जंति, मणुस्सेहितो उचयज्जंति, णो देवेहितो उचयज्जंति । णड मणुस्सेहितो उचयज्जंति किं सं-
मुच्चिममणुस्सेहितो, गम्भयक्कतियमणुस्सेहितो उचयज्जंति ? गोयमा ! गम्भयक्कतियमणुस्सेहितो, नो ससु-
च्चिममणुस्सेहितो उचयज्जंति । जइ गम्भयक्कतियमणुस्सेहितो उचयज्जंति किं कम्मभूमिगेहितो, अकम्मभू-

यता नथी. ए प्रमाणे सौघर्म अने ईशान देवो पण कहेया. सनत्कुमार देवो संबंधे पण एमज कहेहुं, परलु असख्याव वरसना
आयुपवाब्बा अकर्मभूमि सिवापना पीजा (पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्योथी) आवी उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत्—सहसार
कल्पोपपन्न वैमानिक देवो सुधी कहेहु. हे भगवन् ! आनत देवो कयांथी आवी उत्पन्न थाय छे ? शुं नेरयिकोथी, पंचेन्द्रिय तिर्य-
चोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! नेरयिकोथी, तिर्यचोथी के देवोथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण
मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शु संमूछिम मनुष्योथी के गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न
थाय छे ? हे गौतम ! संमूछिम मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण गर्भज मनुष्यथी आवी उत्पन्न थाय छे. जो गर्भज मनुष्योथी
आवी उत्पन्न थाय तो शु कर्मभूमिना, अकर्मभूमिना के अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम !

मिगेहितो, अंतरदीवगेहितो उववज्जंति ? गोयमा ! नो अकम्मभूमिगेहितो, णो अंतरदीवगेहितो उववज्जंति, कम्मभूमिगगभवक्कंतियमणुस्सेहितो उववज्जंति । जइ कम्मभूमगगभवक्कंतियमणुस्सेहितो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहितो, असंखेज्जवासाउएहितो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहितो, नो असंखिज्जवासाउएहितो उववज्जंति । जइ संखिज्जवासाउयकम्मभूमगगभवक्कंतियमणुस्सेहितो उववज्जंति किं पज्जत्तएहितो उववज्जंति अपज्जत्तएहितो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहितो उववज्जन्ति, नो अपज्जत्तएहितो उववज्जंति । जइ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगभवक्कंतियमणुस्सेहितो उववज्जन्ति किं सम्मदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगेहितो उववज्जन्ति, मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगेहितो उववज्जन्ति, सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगेहितो उववज्जन्ति ?

अकर्मभूमिना के अतरदीपना मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे, जो कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संख्याता वरसना आयुपवाळा के असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे ? हे गौतम ! संख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय छे, पण असंख्याता वरसना आयुपवाळा मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी. जो संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय के अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं पर्याप्ताथी आवी उत्पन्न थाय, पण अपर्याप्ताथी आवी उत्पन्न न थाय. जो पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं सम्यग्दृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय, सम्यग्धिग्दृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय के मिथ्यादृष्टिथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! सम्यग्दृष्टिथी के मिथ्यादृष्टिथी

गोयमा । सम्मषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति, मिच्छषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जन्ति, णो सम्मामिच्छषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति किं संजतसम्मषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति ? गोयमा ! तीहितोवि उववज्जन्ति । एवं जाव असज्यासंजयसम्मषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति । एवं जहेव गोविज्जगदेवा षडुगो कप्पो । एवं धेव गोविज्जगदेवायि, भवर असजतसजतासजता एते पडिसेहेयञ्चा । एवं जहेव गोविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयायि, एवर इमं नाणत्तं सजया चेव । जइ सम्मषिट्टिसंजतपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति किं पमत्तसंजयसम्मषिट्टिपञ्चत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगग्भवकंतिपमणूसेहितो उववज्जन्ति, अपमत्तसजपसम्मषिट्टिपञ्चत्त-

आवी उत्पन्न थाय, एण मय्यग्गिअयादट्टिथी आवी उत्पन्न न थाय. जो सम्मगदट्टि पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्म भूमिना गर्भज्ज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं संपत्त सम्मगदट्टिथी, असंयत्त सम्मगदट्टिथी के संपत्तासंयत्त सम्मगदट्टिथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! व्रणेथी आवी उत्पन्न थाय, ए प्रमाणे अच्युत्त कल्प सुधी जागयु. त्रैवेयक देवो एण एसज जाणवा. परतु सम्मगदट्टि असंयत्त अने संपत्तासयत्तनो त्रैविपेय करवो. जेम त्रैवेयक देवो कखा तेम अनुत्तरोपपातिक देवो एण समजवा. परतु

१ त्रैवेयकमा सम्मगदट्टि अमंयत्त-अचिरति अने संपत्तामंयत्त-देशचित्तिनो प्रतिपेय करवो, एट्ठे तेमा मिप्यादट्टि द्रव्यसपत्त अने सम्मगदट्टि सपत्त आवीने उपजे छे, अने अनुत्तरोपपातिकमा केवळ सपत्त ज उत्पन्न थाय छे, त्या मिप्यादट्टि द्रव्यसपत्त उत्पन्न गत्ता नगी, एण केवळ अप्रमत्त मावसपत्त आवीने उत्पन्न थाय छे

एहिन्तो उववज्जन्ति ? गोयमा ! अपमत्तसंजयपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति, नो पमत्तसंजयपज्जत्तएहिन्तो उववज्जन्ति । जइ अपमत्तसंजएहिन्तो उववज्जन्ति किं इट्ठिपत्तअपमत्तसंजएहिन्तो, अणिट्ठिपत्तअपमत्तसंजएहिन्तो ? गोयमा ! दोहिन्तो उववज्जन्ति । ५ दारं ।

४१. नेरइया णं भंते ! अणंतरं उव्वट्ठिता कहिं गच्छन्ति, कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जन्ति, तिरिक्खज्जोणिएसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, देवेषु उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जन्ति,

एटलो विशेष छे के अहीं संयतो ज आवी उपजे छे. जो सम्यग्दृष्टि संयत पर्यप्ता संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं प्रमत्त संयतथी के अग्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! अग्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय, परंतु प्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न न थाय. जो अग्रमत्त संयतथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं ऋद्धिप्राप्त (लब्धिप्राप्त) संयतथी आवी उत्पन्न थाय के ऋद्धि अमाप्त (लब्धिने नहि प्राप्त थयेला) संयतथी आवी उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! वनेथी आवी उत्पन्न थाय. पंचम द्वार समाप्त.

पष्ठ द्वार.

४१. हे भगवन् ! नैरयिको उद्वर्तना करी-मरण पामी तुस्त क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां, तिर्यंचोमां,

४१-४४. 'हे भगवन् ! नैरयिको उद्वर्तना-मरण पामी क्यां जाय छे, क्यां उत्पन्न थाय छे'-इत्यादि पाठसिद्ध छे. परंतु अहीं पण संक्षेपमां आ अर्थ कहेवालो छे-नैरयिको स्वमवथी मरण पामी संख्याता वरसना आयुपवाळा गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने

तिरिक्खजोगिणसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, नो देवेषु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोगिणसु उववज्ज-
त्ति किं पग्गिदिणसु उववज्जन्ति, जाव पंचिदिपतिरिक्खजोगिणसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! णो पग्गिदिणसु, जाव
नो चउरिदिणसु उववज्जन्ति, एव जेहिल्लो उववाओ भग्गिओ तेसु उव्वदृणावि भाणियव्वा, नवरं ससुच्छिमेसु
न उववज्जन्ति । एवं सब्बपुदवीसु भाणियव्वं, नवर अहेसत्तमाओ मणुस्सेसु ण उववज्जन्ति ॥

४२. असुरकुमारा ण भत्ते ! अणंतर उव्वद्विटा कर्हि गच्छन्ति, कर्हि उववज्जन्ति ? किं नेरइणसु, जाव देवे-
सु उववज्जन्ति ? गोयमा ! नो नेरइणसु उववज्जन्ति, तिरिक्खजोगिणसु उववज्जन्ति, मणुस्सेसु उववज्जन्ति, णो
मनुष्योमां के देवोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय, तियचोमां अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने देवोमां न
उत्पन्न थाय. ओ तिर्यचोमां उत्पन्न थाय तो शु एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय के यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
एकेन्द्रियोमा न उत्पन्न थाय, यावत्-चउरिन्द्रियोमां न उत्पन्न थाय-इत्यादि ज्याथी आधी नारकोनो उपपात कखो छे तेने विज्ञे
उव्वर्तना पण कहेवी. परन्तु संमूछिमोमां उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे सर्वे नरकश्रयिणीओमां कहेयु. पण सातमी नरकश्रयिणीवी
नीकळी मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी.

४२. हे भगवन् ! असुरकुमारो उव्वर्तना करी क्या जाय क्या उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां, यावत् देवोमां उत्पन्न थाय ?

मनुष्योमा उत्पन्न थाय छे परन्तु सातमी नरक श्रयिणीना नारको संख्याता घरसना आयुषवाळा गर्भज तिर्येच पंचेन्द्रियोमा ज उपजे
छे असुरकुमारानि भवतपति, च्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशान देवो शत्रु पर्याप्त श्रयिणी, अप, प्रत्येक वनस्पति, गर्भज संख्याता

देवेषु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति किं एगिन्दिएसु उववज्जन्ति, जाव पंचिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! एगिन्दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति, नो बेइदिएसु, जाव नो चउरिदिएसु उववज्जन्ति, पंचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति । जइ एगिन्दिएसु उववज्जन्ति किं पुहविकाइयएगिन्दिएसु, जाव वणस्सइकाइयएगिन्दिएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! पुहविकाइयएगिन्दिएसु, आउकाइयएगिन्दिएसु, वि उववज्जन्ति, नो तेउकाइएसु, नो वाउकाइएसु उववज्जन्ति, वणस्सइकाइएसु उववज्जन्ति । जइ पुहविकाइएसु उववज्जन्ति किं सुहुमपुहविकाइएसु उववज्जन्ति, बायरपुहविकाइएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! बायरपुहविकाइएसु

हे गौतम ! नैरयिकोमां उपजता नथी, तिर्यचो अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. अने देवोमां उत्पन्न थता नथी. जो तिर्यचोमां उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रिय के यावत्-पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे, परन्तु बेइन्द्रियो, यावत्-चउरिन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी, अने पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय छे. जो एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय तो शुं पृथिवीकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय के यावत्-वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ! हे गौतम ! पृथिवीकायिक एकेन्द्रियोमां अने अप्कायिक एकेन्द्रियोमां पण उत्पन्न थाय छे, पण तेजस्कायिक अने वायुकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी. अने वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय छे. जो पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय तो शुं सूक्ष्म पृथिवीकायिकमां उत्पन्न थाय के

वरसना आयुषवाळा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. पृथिवी, अप्, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो तिर्यञ्चगति अने मनुष्यगतिमां तथा तेजस् ने वायु, तिर्यञ्च गतिमां उपजे छे. तिर्यञ्च पंचेन्द्रियो नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य अने देवगतिमां

उच्यन्ति, नो सुहृमपुढविकाइएसु उच्यन्ति । जइ धायरपुढविकाइएसु उच्यन्ति किं पञ्चतगयायरपुढविकाइएसु उच्यन्ति, अपञ्चतयायरपुढविकाइएसु उच्यन्ति ? गोयमा ! पञ्चतएसु उच्यन्ति, नो अपञ्चतएसु उच्यन्ति । एव आउचणस्सइसुवि भाणियन्व । पचिन्दियतिरिक्खजोणियमणूसेसु य जहा नेरइयाणं उच्यन्ति ससुच्छिमवज्जा तथा भाणियन्वा । एवं जाव थणियकुमार ।

४३ पुढविकाइया ण भंते ! अणंतर उच्यन्ति किं गच्छन्ति, किं उच्यन्ति ? किं नेरइएसु जाव देवेसु ? गोयमा ! नो नेरइएसु, तिरिक्खजोणियमणूसेसु उच्यन्ति, नो देवेसु उच्यन्ति, एवं जहा एतेसिं धेव उच्यन्ति

बादर पृथिवीकायिकमा उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! बादर पृथिवीकायिकमा उत्पन्न थाय, पण एस्म पृथिवीकायिकमा न उत्पन्न थाय. जो बादर पृथिवीकायिकमा उत्पन्न थाय तो शुं पर्यासा बादर पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय के अपर्यासा बादर पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! पर्यासा उत्पन्न थाय, पण अपर्यासा न उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकने पण कहेयु. पंचेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्योने विद्ये जेम नैरयिकोनी संयुच्छिम सिवाय अन्यमा उच्यन्ति कही तेम असुरकुमारोनी पण कहेयी. ए प्रमाणे स्वनितकुमार सुधी जाणयु.

४३. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको उच्यन्ति कही-मरण पामी तुस्त क्या उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां के यावत् देवोमां उत्पन्न उत्पन्न थाय हे, परंतु तेथो धैमानिकमा सहकार पर्यंत उत्पन्न थाय हे. मनुष्योने सर्व स्थानोमां, सनकुमारथी माडी सहकार सुधीना देवोने सख्याता धरन्ना आयुग्घाळा गर्भेज तिर्यच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय हे तथा आनतादि देवोने

तद्वा उच्चदृणावि देवज्जा भाणियन्वा । एवं आउवणस्सइवेइंदियतेइंदियचउरिन्दियाधि । एवं तेउ० वाउ०,
नवरं मणुस्सवज्जेसु उववज्जन्ति । पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया णं भंते । अणंतरं उव्वट्टिता कहिं गच्छंति, कहिं
उववज्जन्ति ? गोयमा ! नेरइएसु जाव देवेसु उववज्जन्ति । जइ नेरइएसु उववज्जन्ति किं रयणप्पभापुढविनेरइएसु
उववज्जन्ति, जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति, जाव
अहेसत्तमापुढविनेरइएसु उववज्जन्ति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जन्ति किं एगिन्दिएसु, जाव पंचिन्दिएसु
उववज्जन्ति ? गोयमा ! एगिन्दिएसु, जाव पंचिन्दिएसु उववज्जन्ति । एवं जहा एतेसिं चैव उववाओ उव्वट्टणावि
तद्देव भाणियन्वा, नवरं असंखेज्जवासाउएसुवि एते उववज्जन्ति । जइ मणुस्सेसु उववज्जन्ति किं संसुच्छिममणु-

थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय, तिर्यचयोनिक अने मनुष्योमां उत्पन्न थाय, अने देवोमां न उत्पन्न थाय. जेम पृथिवी-
कायिकोनो उपपात क्खो छे तेम उद्वर्तना पण देवसिवाय क्खेवी. ए प्रमाणे अप्काय, वनस्पतिकाय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने
चउरिन्द्रियो पण क्खेवा. तेजस्काय अने वायुकाय माटे एमज जाणुं. परन्तु मनुष्य सिवाय बीजाने विशेषे उत्पन्न थाय. हे भगव-
न् ! पंचेन्द्रिय तिर्यचो मरीने तुरत क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां उत्पन्न थाय.
जो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय तो शुं रत्नप्रभामां उत्पन्न थाय के यावत् सातमी नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! रत्नप्रभामां
पण उत्पन्न थाय, यावत् सातमी नरकपृथिवीमां पण उत्पन्न थाय. जो तिर्यचोमां उत्पन्न थाय तो शुं एकेन्द्रियोमां के यावत्-पंचे-

गर्भज संख्याता चरत्तना आयुग्गवाला मनुष्योमां ज उपपात थाय छे. पच्छ दार समाप्त.

स्तेषु उववञ्चन्ति, गन्भवकृतियमणूसेषु उववञ्चन्ति ? गोयमा । दोसुधि । एवं जहा उववाओ तहेव उववदृणावि
भाणियव्या, नवर अकम्मभूमग-अंतरदीवगगन्भवकृतियमणूसेषु असलेखवासाउपसुधि एते उववञ्चन्ति ति भा-
णियव्वं । जइ देवेषु उववञ्चन्ति किं भवणवईसु उववञ्चन्ति, जाव किं वेमाणिएसु उववञ्चन्ति ? गोयमा । सन्वे-
सु चेव उववञ्चन्ति । जइ भवणवईसु किं असुरकुमारेसु उववञ्चन्ति जाव धणियकुमारेसु उववञ्चन्ति ? गोयमा ।
सन्वेसु चेव उववञ्चन्ति । एवं धाणमतरोइसियवेमाणिएसु निरतर उववञ्चन्ति जाव सहस्सरो कल्पो स्ति ॥

४४. मणुस्सा णं भत्ते ! अणंतर उव्वद्वित्ता कहिं गच्छति कहिं उववञ्चन्ति ? किं नेरइणसु उववञ्चन्ति, जाव

न्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! एकेन्द्रियोमा उत्पन्न थाय, यावत्-पवेन्द्रियोमां. पण उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम एवोनो उपपात
कवो छे तेम उव्वर्तना पण ऋहेवी. परन्तु एओ असंख्यात वरसना आयुपवाळा तिर्यचोमां पण उत्पन्न थाय छे. जो मनुष्योमां
उत्पन्न थाय तो शु समूच्छिम मनुष्योमां उत्पन्न थाय के गर्भज मनुष्योमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! वन्नेमां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे
जेम उपपात कवो छे तेम उव्वर्तना पण कहेवी. परन्तु अकर्मभूमिना अने अन्तर द्वीपना असख्यात वरसना आयुवाळा मनुष्योमां
पण उत्पन्न थाय छे एम कहेउ. जो देवोमां उत्पन्न थाय तो शु भवनपतिमां उत्पन्न थाय के यावत् वैमानिकोमां उत्पन्न थाय ? हे
गौतम ! यधामां उत्पन्न थाय. जो भवनपतिमां उत्पन्न थाय तो शु अणुकुमारोमां उत्पन्न थाय के, यावत्-स्तानितकुमारोमां उत्पन्न
थाय ? हे गौतम ! यधामां उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे व्यन्तर, उयोत्तिक अने वैमानिकोमां सहस्राकल्प सुधी निरतर उत्पन्न थाय छे.

४४ हे मगवन् ! मनुष्यो मरण पामी तुत्त क्यां जाय, क्यां उत्पन्न थाय, क्यां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां

देवेषु उच्यन्ति ? गोयमा ! नेरइणसुवि उच्यन्ति, जाव देवेषुवि उच्यन्ति । एवं निरंतरं सन्वेसु ठाणेसु पु-
च्छा । गोयमा ! सन्वेसु ठाणेसु उच्यन्ति, न कहिं च पडिसेहो कायन्वो, जाव सन्वट्टसिद्धदेवेषुवि उच्यन्ति,
अथेगतिया सिज्झंति, बुज्झंति, सुचंति, परिनिन्वार्यंति, सन्वट्टवखाणं अंतं करेति । वाणमंतरजोइसियवेमाणि-
यसोहम्मीसाणा य जहा असुरकुमारा, नवरं जोइसियाण य वेमाणियाण य चयंतीति अभिलावो कायन्वो ।
सणकुमारदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा असुरकुमारा, नवरं पुग्गिदिणसु ण उच्यन्ति । एवं जाव सहस्सारग-
देवा । आणय-जाव अणुत्तरोववाइया देवा एवं चैव, नवरं नो तिरिक्खजोणिणसु उच्यन्ति, मणुस्सेसु पज्जत्तसं-
खेज्जवासाउयकम्मभूमगगवभवककतियमणूसेसु उच्यन्ति । ६ द्वारं ।

उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! नेरयिकोमां पण उत्पन्न थाय, यावत् देवोमां पण उत्पन्न थाय. एम निरंतरं यथा स्थानको संबन्धे पृच्छा
करवी. हे गौतम ! यथा स्थानकोमां उत्पन्न थाय छे. कोइ पण स्थानो प्रतिपेध न करवो. यावत्-सर्वार्थसिद्ध देवोमां पण
उत्पन्न थाय छे. कोइक तो सिद्ध, बुद्ध अने मुक्त थाय छे, निर्वाण पामे छे अने सर्व दुःखोनी अन्त करे छे. व्यन्तर, ज्योतिष्क,
वैमानिक सौधर्म अने ईशान देवो जेम असुरकुमारी कथा तेम कहेवा. परंतु ज्योतिष्क अने वैमानिको 'व्यवे छे' एवो पाठ कहेवो.
सनत्कुमार देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जेम असुरकुमारी कथा तेम कहेवा, परंतु एकेन्द्रियोमां उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे
सहस्वार देवो सुधी जाणवा. आनत्, यावत् अनुत्तरोपपातिक देवो संबन्धे एमज जाणुं, परंतु तेओ तिर्यचोमां उत्पन्न थता नथी.
मनुष्योमां पण पर्याप्ता संख्याता वरसना आयुपवाळा कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योमां उत्पन्न थाय छे. ७ठ द्वार समाप्त.

४५. नेरइया ण भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति ? गोयमा ! नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं । एवं असुरकुमारा चि, एवं जाव धणियकुमारा । युढविकाइया णं भंते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति ? गोयमा ! युढविकाइया बुधिहा पन्नत्ता, तंजहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य । तत्थ णं जे ते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति । तत्थ णं जे ते सोवक्कमाउया ते सिय तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति, सिय तिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति, सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति । आउतेउवाउवणप्फइकाइ-

सातसुं द्वार.

४५. हे भगवन् ! नेरयिको आयुपनो केटलो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप बांधे छे ? हे गौतम ! छ मास आयुप बाकी होय त्यारे अवश्य परभवनुं आयुप बांधे छे. ए प्रमाणे असुरकुमारो, यावद् स्तनितकुमारो जाणवा. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको आयुपनो केटलो भाग बाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप बांधे छे ? हे गौतम ! पृथिवीकायिको बे प्रकारना कळा छे. ते आ प्रमाणे—सोपक्रमआयुपवाळा अने निरुपक्रमआयुपवाळा. तेमां जे निरुपक्रमआयुपवाळा छे तेओ अवश्य वर्तमान आयुपनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु आयुप बांधे छे. तेमां जे सोपक्रमआयुपवाळा छे तेओ कदाच आयुपनो त्रीजो भाग बाकी होय त्यारे परभवनु

४५-४६ इये सातसुं द्वार कहे छे. तेनो पूर्वना द्वारनी साथे आ संवग्घ छे—जे जीवोनो गारकादि गतिबोसां विविध प्रकारनो उपपात कळा छे, ते जीवोप पूर्व भवे आयुप बांधेनु छे अने पछीयो तेनो उपपात पयेले छे, कारण के आयुपनो यथ यथा सिखाय

याणं वेद्दियतेद्दियचउरिन्दियाणवि एवं चेव ।

४६. पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं भन्ते ! कतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति ? गोयमा ! पंचिन्दियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संखेज्जवासाउया य असंखेज्जवासाउया य । तत्थ णं जे ते असंखेज्जवासाउया ते नियमा छम्मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति । तत्थ णं जे ते संखिज्जवासाउया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोवक्कमाउया य निरुक्कमाउया य । तत्थ णं जे ते निरुक्कमाउया ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरंति । तत्थ णं जे ते सोवक्कमाउया ते णं सिय तिभागे परभवियाउयं पकरंति, आयुप वांधे छे. कदाच आयुपना त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (नवमो भाग) वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप वांधे छे. कदाच आयुपना त्रीजा भागना त्रीजा भागनो त्रीजो भाग (सत्यावीशमो भाग) वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप वांधे छे. अप् तेजस्, वायु, वनस्पति, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने पण एमज जाणनुं.

४६. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यचो आयुपनो केटलो भाग वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप वांधे ? हे गौतम ! पंचेन्द्रिय तिर्यचो वे प्रकारना कहा छे, ते आ प्रमाणे—संग्याता वरसना आयुपवाळा अने असंख्याता वरसना आयुपवाळा, तेमां जे असंख्यात उपपात थतो नथी. तेमां 'केटलुं पूर्य भवनुं आयुप वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप वांधे' प प्रमाणे संशयने प्राप्त थयेला भगवान् गौतम पूछे छे—'हे भगवन् ! नेरयिको आयुपनो केटलो भाग वाकी होय त्यारे परभवनुं आयुप वांधे छे' ? इत्यादि पाठसिद्ध छे. स्मातनुं छार समाप्त.

સિય તિમાગતિમાગે પરમવિયાહયં પકરંતિ, સિય તિમાગતિમાગતિમાગાયસેસાહયા પરમવિયાહય પકરંતિ।
एवं मणूसा वि । धाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया । ६ धार ।

૪૭. કદ્ધિહે ણં મત્તે ! આહયયંથે પન્નસે ? ગોયમા ! છઠ્ઠિવહે આહયયંથે પન્નસે, તેજહા—? જાતિનામનિ-
हृत्ताउए, २ गतिनामनिहृत्ताउए, ३ त्रितीणामनिहृत्ताउए, ४ ओगाहणनामनिहृत्ताउए, ५ पणसनामनिहृत्ताउए,

ચરસના આયુષવાલા છે તે પોતાનુ છમાસનુ આયુષ વાકી હોય ત્યારે અવશ્ય પરમવતું આયુષ વાંધે છે. અને જે સલ્યાતા ચરસના
आयुषवाळा છે તે વે પ્રકારના છે, તે આ પ્રમાણે-સોપક્રમઆયુષવાલા અને નિરુપક્રમઆયુષવાલા. તેમાં જે નિરુપક્રમઆયુષવાલા છે
તે પોતાના આયુષનો ત્રીજો માગ વાકી હોય ત્યારે અવશ્ય પરમવતું આયુષ વાંધે છે, અને જે સોપક્રમઆયુષવાલા છે, તેઓ કદાચ
ત્રીજો માગ વાકી હોય ત્યારે પરમવતું આયુષ વાંધે છે, કદાચ ત્રીજા માગનો ત્રીજો માગ (નવમો માગ) વાકી હોય ત્યારે પરમવતુ
આયુષ વાંધે છે, અને કદાચ ત્રીજા માગના ત્રીજો માગ (સત્યાવીશમો માગ) વાકી હોય ત્યારે પરમવતુ આયુષ વાંધે છે.
ए प्रमाणे मनुष्यो ण ज्ञाणवा. व्यन्तरो, ज्योतिष्को अने वैमानिको नैरयिको प्रमाणे ज्ञाणवा. सातथु द्वार समाप्त

આઠમુ દ્વાર.

૪૭. હે મગવન્ ! આયુષનો બંધ કેટલા પ્રકારનો કહો છે ? હે ગૌતમ ! છ પ્રકારનો આયુષનો બંધ કહેલો છે. તે આ પ્રમાણે-

૪૭ ए प्रमाणे वर्तमान भवना आयुषनो केटलामो माग वाको होय त्यारे परमवतु आयुष वाधि तेनु प्रतिपादन कर्तुं, हये जे
પ્રકારે આયુષનો યથ કરે તે પ્રકાર નૈરયિકાદિ વડકના ક્રમથી પ્રતિપાદન કરે છે-નૈરરયાણ મત્તે ! કદ્ધિહે આહયયથે પન્નસે ?
हे मगवन् । नैरयिकोने केटला प्रकारनो आयुषनो बध कहेलो छे-एत्यादि 'जातिनामनिहृत्ताउए' । जातिनामनिघत्तायुष, जाति

६ अणुभावनामनिहत्ताउए । नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउयबंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पन्नत्ते, तंजहा-जातिनामनिहत्ताउए, गतिणामनिहत्ताउए, ठितीणामनिहत्ताउए, ओगाहणणामनिहत्ताउए, पदेसणामनिहत्ताउए, अणुभावणामनिहत्ताउए, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१ जातिनामनिधत्तायुप, २ गतिनामनिधत्तायुप, ३ स्थितिनामनिधत्तायुप, ४ अवगाहनानामनिधत्तायुप, ५ प्रदेशनामनिधत्तायुप अने ६ अनुभावनामनिधत्तायुप. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनो आयुपबंध कळो छे ? हे गौतम ! छ प्रकारनो आयुपबंध कळो छे. ते आ प्रमाणे-१ जातिनामनिधत्तायुप, यावत् ६ अनुभावनामनिधत्तायुप. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

पकेन्द्रियजाल्यादि, तेना प्रांच प्रकार छे, अने ते ज नाम-नामकर्मनी उत्तरप्रकृतिविशेषरूप . ते जातिनाम, तेनी साथे निधत्त-निधेक ने प्राप्त थयेल जे आयुप-पटले जातिनामकर्म चिधिण आयुपनो बन्ध ते जातिनामनिधत्तायुप, निधेक-कर्मपुद्गलोने भोगववा माटे रचना, ते आ प्रकारे छे—

“मोक्षूण सगमत्राहं पढमाए ठिईए बहुतरं दब्बं । सेसे विसेहोणं जाबुद्धोसं ति सव्वेसि ॥” (कर्मप्रकृतिप्रदेशबन्ध गा. ८२)

“पोतानो अवाधाकाळ छोडीने प्रथम स्थितिमां घणां पुद्गलद्रव्यो होय छे, अने पछीनी स्थितिमां विशेष न्यून न्यून पुद्गलो होय छे, यावत् उत्कृष्ट स्थितिमां-छेह्ला समयनी स्थितिमां सौधी न्यून पुद्गलो होय छे.” तात्पर्य ए छे के बधा य कर्म बंधाता होय छे त्यारे पोतपोतानो अवाधाकाळ छोडीने चाकीना स्थितिकाळमां निधेक-वृत्तिकरचना थाय छे, तेमां प्रथम समये पटले अवाधाकाळ पछीना प्रथम समयमां घणा वृत्तिको होय छे, बीजा समये विशेषदीन वृत्तिको होय छे, तेथी बीजा समये विशेषदीन वृत्तिको होय छे, तेथी चोथा समये विशेषदीन वृत्तिको होय छे. एम अबुक्के विशेषदीन विशेषदीन त्यां सुधी कहेवुं यावत् उत्कृष्ट स्थिति-छेह्ला समयनी स्थितिमां

४८. जीवा ण भंते ! जातिनामनिहत्ताज्यं कतिहिं आगरिसेहिं पगरंति ? गोयमा ! जहन्नेण एक्केण वा दोहिं
४८. हे भगवन् ! जीवो जातिनामनिघत्तायुष केटला आकर्षं वडे वाधे ? हे गौतम ! जयन्यधी एक, वे के के ऋण जने उत्कर्षधी

विशेषरहीन दृष्टिको द्योप छे २ 'गतिनामनिघत्तायुष' नरकगत्यादिना भेदधी गति चार प्रकारे छे, ते गतिनामनी साथे निघत्त-नियेक-दृष्टिकार-
चनाने प्राप्त थयेलु आयुष ते गतिनामनिघत्तायुष, ३ स्थिति-ते भयमा स्थिति यवी-उदयमां भाषणु, पटले जे नाम कर्म जे भवमा उदयमां
साथे ते गति, जाति अने पाच शरीरपदि सिवाय स्थितिनाम कर्म जाणणु गत्यादिने यजन करवावु कारण प छे के तेओनु 'गतिनामनिघत्तायुष'
इत्यादि स्वप्नदोषडे प्रहण करेलु छे ते स्थितिनामनी साथे निघत्त-नियेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते स्थितिनामनिघत्तायुष ४ 'अयगा-
इते यस्या' जेने विशेषे जीव रहै ते अयगाहना-औदारिकादि शरीर जाणया, तेनु कारणभूत जे औदारिकादिशरीरनामकर्म से
अवगाहनानाम, तेनी साथे नियेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते अयगाहनामनिघत्तायुष ५ 'प्रवेशनामनिघत्तायुष' प्रदेश-कर्मपरव्या-
णुओ, ते प्रदेशो स्तिशुक सक्रमधी एण अनुभवाता द्योप ते प्रहण करया, ते प्रधान जेमा छे एषु नामकर्म ते प्रदेशनाम तात्पर्य प
छे के जे, भयमा जे प्रदेशधी भोगवाय ते प्रदेशनाम अथी विपकोदयने नहि प्राप्त थयेलु एण नामकर्म प्रहण करखु ते प्रदेशनामनी
साथे नियेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते प्रदेशनामनिघत्तायुष 'अनुभावनामनिघत्तायुष' जे भयमां जे तीमः विपाकयालु नामकर्म वेवाय,
जेमके नारकायुपना उदयमा अशुभ धर्म, गन्ध, रस, स्पर्श, उपधात, अनादेय, दुःस्वर, अयशम्कीति घगेरे नामकर्म, तेनी साथे जे
नियेकने प्राप्त थयेलु आयुष ते अनुभावनामनिघत्तायुष (२०)—शा माटे जात्यादिनामकर्म आयुपना विशेषण तरीके आपयामा
आवेत्तं छे ? (३०)-आयुपकर्मनी प्रधानता बतायवा माटे छे ते आ प्रमाणे-नारकादिना आयुपनो उदय थया पठी जात्यादि नामकर्मनो
उदय थाय छे, ते सिवाय धतो नथी, माटे आयुपनी प्रधानता छे

४८-४९. हवे जात्यादिनामकर्मविशिष्ट आयुष केटला भाक्यों धटे वाधे छे ! प प्रमाणे जिञ्जासु शिष्य पछे छे—“जीवाण मते !

वा तीर्हिं वा उक्कोसेणं अट्टहिं । नेरइया णं भंते ! जातिनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पगरंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीर्हिं वा, उक्कोसेणं अट्टहिं । एवं जाव वेमाणिया । एवं गतिनामनिहत्ताउएवि, ठितीणामनिहत्ताउएवि, ओगाहणानामनिहत्ताउएवि, पदेसनामनिहत्ताउएवि, अणुभावनामनिहत्ताउएवि ।

४९. एतेसि णं भंते ! जीवाणं जातिनामनिहत्ताउयं जहन्नेणं एक्केण वा दोहिं वा तीर्हिं वा उक्कोसेणं अट्टहिं

आठ आकर्षवडे बांधे. ए प्रमाणे यावत्-वैमानिक सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे गतिनामनिधत्तायुष, स्थितिनामनिधत्तायुष, अवगाहना-नामनिधत्तायुष, प्रदेशनामनिधत्तायुष अने अनुभावनामनिधत्तायुष संबंधे पण जाणवुं. हे भगवत् ! नैरयिको जातिनामनिधत्तायुषने केटला आकर्ष वडे बांधे ? हे गौतम ! जघन्य एक, वे के त्रण आकर्ष वडे अने उत्कृष्ट आठ आकर्ष वडे बांधे छे. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. एम गतिनामनिधत्तायुष, स्थितिनामनिधत्तायुष, अवगाहनामनिधत्तायुष, प्रदेशनामनिधत्तायुष अने अनुभावनाम-निधत्तायुष संबंधे पण जाणवुं.

४९. हे भगवन् ! जातिनामनिधत्तायुषने जघन्यथी एक, वे के त्रण आकर्ष वडे अने उत्कर्षथी आठ आकर्ष वडे बांधता ए जातिनामनिहत्ताउयं कइहिं आगरिसेहिं पगरंति" ? 'हे भगवन् ! जीवो केटला आकर्ष वडे जातिनामनिधत्तायुष बांधे-इत्यादि. 'आकर्ष पटले तेवा प्रकारना प्रयत्नथी कर्मपुद्गलोलुं ग्रहण करवुं. जेम गाय पाणी पीती भयवडे चारंवार आहुंअवळुं जोती पाणी

१. कर्मबंधने योग्य प्रयत्नविशेषरूप अध्यवसायनी धाराने आकर्ष कहे छे, ज्यारे आयुषकर्मना बंधने योग्य अध्यवसायनी धारा तीव्र होय छे त्यारे ते एक धारा वडे अन्तर्मुहूर्त पर्यंत आयुषनो बंध थाय छे. ज्यारे मन्द धारा होय छे त्यारे वच्चे अन्तर पडी जाय छे एटले

आगरिसिंहि पकरेमाणार्णं कतरे कतरेहिन्तो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्व-
त्थोया जीवा जालियामनिहत्ताउयं अट्टहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा,सत्तहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा,
छट्ठिं आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा, एवं पचहिं संखिज्जगुणा, चउहिं संखिज्जगुणा, तीहिं संखिज्जगुणा,
दोहिं संखिज्जगुणा, ण्णगेणं आगरिसेणं पणरेमाणा संखेज्जगुणा ! एवं पतेण अभिलायेणं जाय अणुभागनामनि-

जीवोमां कोण कोनाथी अब्ब, यदु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! जातिनामनिघचायुपने आठ आकर्षं वडे बांधता
जीवो सौथी बोडा छे, तेथी सात आकर्षं वडे बांधता जीवो संख्यातगुणा छे. तेथी छ आकर्षं वडे बाधता जीवो संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे
पाच आकर्षं वडे बांधता संख्यातगुणा, तेथी चार आकर्षं वडे बांधता संख्यातगुणा, तेनाथी ण्ण आकर्षं वडे बाधता संख्यातगुणा,
तेथी वे आकर्षं वडे बांधता संख्यातगुणा अने तेथी एक आकर्षं वडे बाधता संख्यातगुणा छे. ए प्रमाणे आ अभिलाप-पाठ वडे

पीर छे ए प्रमाणे जीव पण ज्यारे तीप्र आयुपण्यथा अथ्यवसाय वडे जातिनामविशिष्ट आयुय के धीजु गत्याविशिष्ट आयुय
बाधे छे त्यारे एक आकर्षं वडे, मन्द होय तो वे के ण्ण आकर्षं वडे मन्तर श्रेय तो चार के पाच आकर्षं वडे अने मन्तम होय

अन्तमुद्धर्तनी कच्चेना पाठ्ठा आयुपलो वध धतो अट्ठो जाय छे, एट्ठे कच्चे खाचो पडो जाय छे त्यारे वे आकर्षं वडे आयुपलो कच थाय छे
ज्यारे तेणो एण अथ्यवसायनी मन्द धारा होय छे, त्यारे कच्चे वच्चे वे चार आयुपलो वध धतो नथी एट्ठे ण्ण आकर्षं वडे आयुपलो
कच थाय छे, जेम जेम अथ्यवसायघातानी मन्तता तेम तेम वधारे आकर्षं कखा पडे छे एम वधारेमां वधारे आठ आकर्षं वडे आयुपलो
वध थाय छे. जेम गाय पाणी पीतो होय त्यारे पाणी पीतां कच्चे भयथी थाहुं अब्बुं जोतो पाणी पीतो वध पडो जाय छे तेम

हत्ताडयं, एवं एते छप्पिय अप्पाबहुदंडगा जीवादीया भाणियन्वा ।

इति पन्नवणाए भगवईए वक्कंतियपयं छंडुं समत्तं ६ ।

यावत्-अनुभागनामनिधत्तायुप जाणतुं, ए प्रमाणे जीवादि छ अल्पबहुत्वना दंडको कहेवा.

प्रधापना सूत्रमां पठ व्युत्क्रान्ति पद समाप्त.

तो छ, सात के आठ आकर्षवडे बांधे छे. अहीं जात्यादि कर्मना आकर्षनो नियम आयुपनी साथे वंधातां होय त्यार समजवो. बाकीना काळने विशेषे नियम नथी. कारण के केटलीक प्रकृतिओ ध्रुवबन्धिनी होवाथी अने बीजी प्रकृतिओ परावर्तमान (चिरोधिनी) होवाथी घणा काळ सुधी बन्धनो संभव होवाने लीधे तेमां आकर्षतुं नियतपणुं होतुं नथी.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां छट्टुं व्युत्क्रान्ति पद समाप्त.

आयुपकर्मनी बन्ध वच्चे अटकी जाय छे अने त्यारे आकर्ष वडे पुनः आयुपनो बन्ध थाय छे. आ आकर्षनो नियम आयुपकर्ममा अने आयुपकर्मनी साथे वंधातां जात्यादि नामने लागु पडे छे. जे प्रकृतिओ ध्रुवबन्धिनी छे तेथी अथवा तो परावर्तमान प्रकृतिओ होय छे के जेनो बन्ध लात्रा काळ सुधी चालु छे, जेमके ज्ञानावर्णीयादि ध्रुवबन्धीनी प्रकृतिओ छे, अथवा तो देवगत्यादि परावर्तमान प्रकृतिओ छे अने तेनो घणा काळ सुधी बन्ध थया करे छे, त्यां आकर्षनो नियम नथी.

सत्तमं ऊत्सासपयं ।

१ नेरइया णं भंते ! केवत्तिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊत्ससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! सततं

सातसुं उच्छ्वास पव.

१. हे भगवन् ! नेरयिको केटला फाले उच्छ्वास ले अने मूके ! हे गौतम ! सतत अने निरंतर उच्छ्वास ले अने मूके.

१. छद्दा पवनी व्याख्या करी, इये सातमा पदो भारम करण्य छे तेनो संख्य आ प्रमाणे छे—अहीं पूर्वना पदमा जीवोना उपपत्तविरहादि कथा अने आ पदमा नारकादिपणे उत्पन्न थयेला अने भ्वासोच्छ्वास पर्याप्ति घटे पर्याप्ता नारकादि जीवोना यथासंभव उच्छ्वास-निश्वास क्रियाना विरहकाल अने अविच्छेदकालतु परिमाण कहेवानु छे, आ संख्य घटे प्राप्त थयेला आ पदतु आ प्रथम सूत्र छे—नेरइयाण भंते ! इत्यादि हे भगवन् ! नारको 'केवइय कालस्स' फियत्कालेन-केटला फाले अहीं 'ण' यास्यालङ्कारमा धरणाय छे प्राकृत शैलीपी पञ्चमी अथवा तृतीया विभक्तिना अर्थमा छद्दी विभक्ति छे तेथी 'केटला काल पछी अथवा केटला फाले 'आणमति' आनन्ति-श्वास ले छे, तेमा 'अन्' धातु प्राणन-श्वास लेवाना अर्थमा छे अने मकार अलासिणिक-नियम विरह आवेल्ले छे, ए प्रमाणे धीजे खल्ले पण यथासमय जाणी लेयु तेवी रीसे 'पाणमति पा' प्राणन्ति या-अहीं वा इन्द्र समुच्च-वार्थक छे ए वधे पयोना अर्थ अनुक्रमे स्पष्ट करे छे 'उत्ससति वा नीससंति वा' 'आणमति' आनन्ति पटले 'ऊत्ससंति' उच्छ्वसन्ति श्वास ले छे अने 'पाणमति' प्राणन्ति पटले 'निससति' नी श्वसन्ति-श्वास मूके छे अथवा 'आणमन्ति प्राणमन्ति' अहीं नम् धातु नमवाना अर्थमा छे, अने धातुना अनेक अर्थो धत्ता होयाथी तेनो श्वसन क्रिया रूप अर्थे थवामा विरोध नथी. धीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—“आणमन्ति पाणमन्ति” ए घटे आन्तर उच्छ्वास अने निश्वास क्रिया प्रहण करयी अने 'ऊत्ससति नीससति'

संतयामेव आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ॥

२. असुरकुमारा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं, सत्तपहं श्रोचाणं उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ॥ नागकुमारा णं भंते !

२. हे भगवन् ! असुरकुमारो केटला काळे उच्छ्रवास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य सात स्तोके अने उत्कर्षथी कंडूक अधिक पखवाडीए उच्छ्रवास ले अने मूके. हे भगवन् ! नागकुमारो केटला काळे उच्छ्रवास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी सात

ए वडे वाह्य उच्छ्रवास जने निःश्वास क्रिया ग्रहण करवी. ए प्रमाणे गौतम स्वामीए प्रश्न कर्यो पटले भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! नैरयिको 'सततं संतयामेव आणमंति वा' सतत-निरंतर श्वास ले छे अने मूके छे. कारण के नैरयिको अत्यन्त दुःखी होय छे अने दुःखीने निरंतर उच्छ्रवास-निःश्वास होय छे. ए प्रमाणे लोकमां देगाय छे. ते सततपणुं प्रायः-घणा अंशे पण होय ए माटे वीजुं विशेषण आपे छे- 'संतयामेव'-सततमेव-निरंतर ज ले अने मूके छे, एक पण समयनुं अन्तर पडतुं नथी. अहीं दीर्घपणुं प्राकृत होवाथी थयेल छे. उत्तर आपवामां 'आणमंति' इत्यादिनुं पुनः उच्चारण शिष्यना वचनतो आदर रताववा माटे छे, कारण के गुरुओ जो शिष्यना वचनतो आदर करे तो तेओ संतुष्ट थाय छे, अने वारंवार प्रश्न, श्रवण अने अर्थना निर्णयविमां प्रयत्नशील थाय छे. अने तेओनुं वचन लोकमां मान्य थाय छे. ए प्रमाणे घणा भय्य जीवोनो उपकार अने तीर्थनी अभिनृद्धि थाय छे.

२. असुरकुमारना मूद्यमां उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स' उत्कृष्टथी उच्छ्रवास-निःश्वास करक अधिक एक पलवाडीए होय छे एम काणं छे. अहीं देवोमां जेओनी जेटला सागरोपमनी स्थिति होय तेवोनो तेटला पलवाडीया जेटलो उच्छ्रवास-निःश्वास क्रियानो विरहकाळ होय छे. असुरकुमारोनी उत्कृष्ट स्थिति करक अधिक एक सागरोपमनी छे. कारण के 'चमर-यलिसारमहियं'

केचिदकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा नीससंति वा ? गोयमा जहन्नेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसे-
णं मुहुत्तपुहुत्तस्स, एवं जाव थणियकुमारारणं ॥

३. पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! वेमायाण आणमंति
वा जाव नीससंति वा । एवं जाय मणूसा । वाणमंतरा जहा नागकुमारा ॥

स्तोकं अने अने उतरुर्थी सुहूर्तपृथक्त्वे-वेधी नव ग्रहूर्तं उच्छ्वास ले अने मूके. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणयुं.

३. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! अनियतपणे उच्छ्वास ले अने मूके. ए प्रमाणे
यावत्-प्रनुष्यो सुधी जाणतु. व्यन्तरो नागकुमारोनी पेटे जाणवा.

घमरती एक सागरोपम अने घलीन्द्रनी फरक अधिक एक सागरोपमनी स्थिति छे-पु शास्त्रु यचन छे माटे तेमो एक अधिक एक
परावाहीमा पठी श्वास ले छे अने मूके छे

३. पृथिवीकायिकना सूत्रमा तेमो 'वेमायाय' यिमात्रया-थियमयणे अनियमितपणे उच्छ्वास-निश्वास ले छे अर्थात् तेमोनी
उच्छ्वास-निश्वास क्रियानो विरहकाळ अनियत होय छे वेयोमा जे जेटला मोटा आयुष्यालो होय छे ते तेटलो सुधी होय छे,
अने सुधीने उचरोत्तर उच्छ्वास-निश्वास क्रियानो घणो विरहकाळ होय छे, कारण के उच्छ्वास-निश्वासिया दुखरूप छे ते
माटे तेस जेम आयुर्मा सागरोपमनी घृष्टि थाय तेम तेम उच्छ्वास-निश्वास क्रियाना विरहकाळता प्रमाणमां पण परवाहीमांनी
घृष्टि थाय छे

प्रज्ञापना टीकाणा अनुवादमां सातसुं उच्छ्वासपद समाप्त

३. जोइसियाणं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि सुहुत्तपुहुत्तस्स जाव नीससंति वा ॥

५. वेमाणिया णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ॥

६. सोहम्मदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं दोणहं पक्खाणं जाव नीससंति वा । ईसाणगदेवा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सातिरेगस्स सुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं सातिरेगाणं दोणहं पक्खाणं जाव नीस-

४. हे भगवन् ! ज्योतिषिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी सुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी पण सुहूर्त-पृथक्त्वे यावत्-उच्छ्वास ले अने मूके.

५. हे भगवन् ! वैमानिको केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी सुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी तेत्रीया पखवाडीए यावत्-उच्छ्वास मूके.

६. हे भगवन् ! सौधर्म देवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी सुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी वे पखवाडीए यावत्-उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! ईशानदेवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्यथी कंइक अधिक सुहूर्तपृथक्त्वे अने उत्कर्षथी कंइक अधिक वे पखवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! सनत्थुमार देवो केटला काळे

संति वा । सणंक्रुमारदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं दोणहं पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । माहिंदगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेण साइरेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । यंमलोगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं दसणं पक्खाणं जाव नीससति वा । लंतगदेवा ण भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं चउदसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । माहिसु-
क्खेदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउदसण्हं पक्खाणं, उ-

उच्छ्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी वे पलवाडीए अने उत्कर्षथी सात पलवाडीए यावत् उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! माहेन्द्र देवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके ! हे गौतम ! जयन्यथी काक अधिक वे पलवाडीए अने उत्कर्षथी काक अधिक सात पलवाडीए उच्छ्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! ब्रह्मलोकदेवो केटला काळे उच्छ्वास ले अने मूके. हे गौतम ! जयन्यथी सात पलवाडीए अने उत्कर्षथी दस पलवाडीए उच्छ्वास ले अने मूके हे भगवन् ! लांतरु देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी दस पलवाडीए अने उत्कर्षथी चउद पलवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! महाशुकदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी चौद पलवाडीए अने उत्कर्षथी सत्तर पलवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! सहस्रारकल्पना देवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी मत्तर पलवाडीए अने उत्कर्षथी अठार

छोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । सहस्सारगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स आणमंति वा जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं अट्टारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंति वा । आणयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्टारसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं एगूण-वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । पाणयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । आरणदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एगवीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । अच्चुयदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं वावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।

७. हिट्ठिमहिट्ठिमगेचिज्जगदेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं वावीसाए पखवाडीए श्वास ले अने सूके. हे भगवन् ! आनतदेवो केटला काले श्वास ले अने सूके ? हे गौतम ! जघन्यथी अठार पखवाडीए अने उत्कर्षथी ओगणीश पखवाडीए श्वास ले अने सूके. हे भगवन् ! प्राणतदेवो केटला काले श्वास ले अने सूके ? हे गौतम ! जघन्यथी ओगणीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी वीश पखवाडीए श्वास ले अने सूके. हे भगवन् ! आरणदेवो केटला काले श्वास ले अने सूके ? हे गौतम ! जघन्यथी वीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी एकवीश पखवाडीए श्वास ले अने सूके. हे भगवन् ! अच्चुत देवो केटला काले श्वास ले अने सूके ? हे गौतम ! जघन्यथी एकवीश पखवाडीए अने उत्कर्षथी चावीश पखवाडीए श्वास ले अने सूके.

पयवाणं, उक्कोसेणं तेवीसाण पयवाणं जाय नीससंति वा । विट्ठिममज्झिमगेविज्जगवेवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाय नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं तेवीसाए पयवाणं जाय नीससंति वा । विट्ठिमउवरिमगेविज्जग णं देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाय नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउथीसाण पयवाणं, उक्कोसेणं पणवीसाण पयवाणं जाय नीससति वा । मज्झिमविट्ठिमगेविज्जग णं देवा णं भंते ! केव-
इकालस्स जाय नीससति वा ? गोयमा ! जहन्नेण पणवीसाए पयवाणं, उक्कोसेणं छब्बीसाण पयवाणं जाय नीससति वा । मज्झिममज्झिमगेविज्जग णं देवा णं भंते ! केवइकालस्स जाय नीससति वा ? गोयमा ! जह-

७. हे भगवन् ! नीचेनी त्रिकना नीचेना त्रैवेयकंदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी चावीश पलवाडीए अने उत्कर्षथी तेवीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! नीचेनी त्रिकना मध्यम त्रैवेयकंदेवो केटला पलवाडीए श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी तेवीश पलवाडीए अने उत्कर्षथी चावीश पलवाडीए अने उत्कर्षथी चावीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. हे भगवन् ! जयन्यथी चावीश पलवाडीए अने उत्कर्षथी चावीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी नीचेना त्रैवेयकंदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्यथी चावीश पलवाडीए अने उत्कर्षथी चावीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी मध्यना त्रैवेयकंदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्य छठीश पलवाडीए अने उत्कट सत्यावीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. मध्यम त्रिकनी उपरना त्रैवेयकंदेवो केटला काळे श्वास ले अने मूके ? हे गौतम ! जयन्य सत्यावीश पलवाडीए अने उत्कट अत्यावीश पलवाडीए श्वास ले अने मूके. उपरनी त्रिकनी

न्नेणं छत्वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । मज्झिमउवरिमगेविज्जागा णं देवा णं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तावीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं अट्टावीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जागा णं देवा णं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्टावीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एगुणतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । उवरिममज्झिमगेविज्जागा णं देवा णं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगुणतीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं तीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा । उवरिमउवरिमगेविज्जागा णं देवा णं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ! जहन्नेणं तीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एक्कतीसाए पक्खाणं जाव नीससंति वा ।

८. विजयविजयंतजयंतअपराजितविमाणेसु णं देवा णं भंते ! केवतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा ? नीचेना त्रैवेयकदेवो केटला काले थास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य अट्टावीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट ओगणत्रीश पखवाडीए थास ले अने मूके. उपरनी त्रिकना मध्यम त्रैवेयकदेवो केटला काले थास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य आंगत्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट त्रीश पखवाडीए थास ले अने मूके. उपरनी त्रिकना उपरना त्रैवेयकदेवो केटला काले थास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य त्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट एकत्रीश पखवाडीए थास ले अने मूके.

८. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित निमानोमां देवो केटला काले थास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य एकत्रीश पखवाडीए अने उत्कृष्ट तेत्रीश पखवाडीए थास ले अने मूके. सर्वार्थसिद्ध देवो केटला काले थास ले अने मूके ? हे गौतम ! जघन्य

जहन्नेणं गणकतीसाण पम्ब्याण, उक्कोसेणं तेत्तीसाण पक्खाणं जाव नीससंति घा । सव्वट्ठगसिद्धदेयाणं भंते !
केयतिकालस्स जाव नीससंति वा ? गोयमा । अजहन्मणुक्कोसेण तेत्तीसाण पक्खाणं जाव नीससंति घा ।
॥ इति पन्ववणाए भगवर्षेए सत्तमं ऊत्तासपयं समत्तं ७ ॥

अने उच्छ्र मिषाय तेयीअ पल्लवाहीए भास ले अने मूके.

प्रजापना भगवणीमां मातसु उच्छ्रयास एव समास ।

अटुमं सन्नापर्यं ।

१. कइ णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-आहारसन्ना, भयसन्ना, मेहुणसन्ना, परिग्गहसन्ना, कोहसन्ना, मायासन्ना, माणासन्ना, लोहसन्ना, लोयसन्ना, ओघसन्ना ।

आठसुं संज्ञा पद.

१. हे भगवन् ! केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे, ते आ प्रमाणे—१ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मैथुनसंज्ञा, ४ परिग्रहसंज्ञा, ५ क्रोधसंज्ञा, ६ मानसंज्ञा, ७ मायासंज्ञा ८ लोभसंज्ञा, ९ लोकसंज्ञा अने १० ओघसंज्ञा.

१. ए प्रमाणे सातमा पदनी व्याख्या करी, हवे आठमा पदने प्रारंभ कराय छे, तेनो संवन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वना पदमां जीवोनी उच्छ्वासपर्यासिनामकर्म अने योगने आश्रित उच्छ्वासक्रिया-तेना विरहकाल अने अविरहकालना प्रमाण वडे कही, हवे वेदनीय अने मोहनीयना उदयने आश्रित तथा ज्ञानावरण अने दर्शनावरणना क्षयोपशमजन्य आत्मपरिणामने आश्रयी प्रअसूत्र कहे छे—‘कई णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ’ ?-हे भगवन् ! केटली संज्ञाओ कही छे ? संज्ञानं संज्ञा, पटले आमोग, उपयोग, अथवा ‘संज्ञायते अत्तया’ जे वडे ‘आ जीव छे’ एम ओळखाय ते संज्ञा. आ वने न्युत्पत्तिमां वेदनीय अने मोहनीयना उदयने आश्रित अने ज्ञानावरण अने दर्शनावरण कर्मना क्षयोपशमने आश्रित विचित्र आहारादि प्राप्त करवानी क्रिया ते संज्ञा कहेवाय छे. ते संज्ञा उपाधिना (विशेषणना) भेदथी दस प्रकारनी छे, ते प्रकारे भगवान् उत्तर आपे छे—‘हे गौतम ! संज्ञा वस प्रकारनी कही छे.’ तेना दस प्रकार नामना उच्चारपूर्वक जणावे छे—‘आहारसन्ना’ इत्यादि. तेमां १ क्षुधा वेदनीयना उदयथी जे कवलादि आहारने माटे तेवा प्रकारना पुद्गलोने ग्रहण करवानी क्रिया ते आहारसंज्ञा, कारण के ते आहारसंज्ञा इच्छारूप होवाथी आमोग-उपयोगरूप छे. अथवा

२. नैरङ्ग्याणं भंते ! कति सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! दस सन्नाओ पन्ताओ, तंजहा-आहारसन्ना, आव औघसन्ना ! असुरकुमाराणं भंते ! कइ सन्नाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-

२. हे मगवन् ! नैरङ्गिकोने केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे, ते आ प्रमाणे—आहारसंज्ञा, यावत्-
ओपसंज्ञा हे मगवन् ! असुरकुमारोने केटली संज्ञाओ कही छे ? हे गौतम ! दस संज्ञाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—आहारसंज्ञा,

‘संघापत्तेऽनया’ जे घटे जीय मोळजाय, आहार ग्रहण करवानी क्रिया घटे जीय मोळजाय छे माटे ते सत्ता कहेयाय छे आ प्रमाणे
घटे स्थळे पिचार करयो २ भयलोहनीयना उदयथी भयभीत यवेला प्रालीनी दृष्टि अने सुखला विकार, तथा दोमल्य शयाकर्य जे
क्रिया ते मयससा ३ पुण्यवेदना उदयथी मैथुलने माटे स्त्रीदर्शन, यवनी प्रसङ्गता, उगनु स्तमन अने कप प्रमुञ्ज जे क्रिया ते
मैथुनससा ४ लोभना उदयथी संसारला प्रधान कारणभूत रागपूर्पक सचेतन अने भवेतन द्रव्यने ग्रहण करवानी क्रिया ते परिग्रहसंघा
५ प्रीथवेदनीयना उदयथी मोघना आयेरगमित पुरुयना मुख, नेत्र, अने होठना स्फुरण-कप धगेरेनी क्रिया ते प्रीथसंसा ६ मालना
उदयथी अहंकाररूप गर्पाविनी परिणाम ते मालसंसा ७ मायावेदनीय घटे अनुम सक्केशधी असत्य भायणाविरूप क्रिया ते मायाससा
छोमयेदनीयना उदयथी लालचघटे सचेतन अने भवेतन द्रव्यनी इच्छा ते लोभसंसा ९ मतिमानाचरण कर्मना श्रयोपश्रमधी शब्द-रूपादि
अर्थपरिवक सामान्य अययोधनी क्रिया ते भोयससा ९ अने तेना विशेष अययोधनी क्रिया ते लोकसंसा ५ रीते श्रुतौपयोग प
ओपससा अने ज्ञानोपयोग ५ लोकसंसा कहेयाय छे आ सण्धे धीजा आचार्यो कहे छे के-“सामान्य प्रवृत्ति ते भोयसंसा जेम
वेलनु घाट उपर चढनु धगेरे लोकनी जे त्यात्य प्रवृत्ति ते लोकससा” प प्रमाणे आ संज्ञाओने स्पष्टरूपे मुग्गपूर्पक बोध थयाने माटे
पचेन्द्रियोने आधयी स्वाभ्या करी पकेन्द्रियोने आ संज्ञाओ अव्यक्तरूपे जाणयी

आहारसन्ना, जाव ओघसन्ना, एवं जाव थणियकुमारणं। एवं पुढविकाइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं नेतब्बं।
३. नेरइयाणं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिगहसन्नोवउत्ता? गो-
यमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च भयसन्नोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिगहसन्नोवउ-
यावत्-ओघसंज्ञा. ए रीते स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. एम वृथिवीकायिकोथी आरंभी वैमानिको पर्यन्त जाणवुं.

३. हे भगवत् ! नैरयिको आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा के परीग्रहसंज्ञाना
उपयोगवाळा होय ? गौतम ! बाह्य कारणने आश्रयी बहुधा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा अने संततिभाव-आंतरिक अनुभवने आश्रयी

३. नैरयिकना सूत्रमां 'ओसन्नं कारणं पडुच्च भयसन्नोवउत्ता' तेमां ओसन्नशब्द वाहुल्यवाची छे. कारणशब्द वडे बाह्य कारण
लेवुं. तेथी तेनो आ प्रमाणे अर्थ थाय छे-बाह्य कारणने आश्रयी नैरयिको बहुधा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. ते आ प्रमाणे-
तेओनी चोतरफ घणा भयने उत्पन्न करणार परमाधार्मिक, लोहनी कचल्ली (शस्त्रविशेष), शक्ति, भाला वगैरे होय छे. 'संतइभावं
पडुच्च' अहीं आन्तर अनुभवभावने संततिभाव कहेवामां आवे छे. तात्पर्य ए छे के जे बाह्य कारण सापेक्ष न होय, पण आन्तरिक
अनुभव सापेक्ष होय ते सततपणे होवाथी संततिभावने आश्रयी कहेवाय छे. तेथी आन्तरिक अनुभवनी अपेक्षाए नैरयिको आहार-
संज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यांचद् परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा नैरयिको
मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. कारण के तेओ चक्षुना निमित्तमात्र काल पण सुखी नथी, परंतु निरंतर अतिप्रबल दुखाग्निथी
संतत शरीरवाळा होय छे. कहां छे के—

“अच्छिनिमीलणमेत्तं नत्थि सुहं दुक्खमेव पडिबहं । नए नेरइयाणं अहोमिसं पचमाणानं” ॥

સાધિ ! ત્વસિ ણ ંતે ! નેરહયાણં આહારસન્નોવત્તાણં મયસન્નોવત્તાણં મેહુણસન્નોવત્તાણં પરિગ્ગહસન્નો-
વત્તાણ ય કયરે કયરેહિતો અપ્પા વા વહુયા વા તુલ્લા વા વિસેસાધિયા વા ? ગોયમા ! સબ્બત્થોવા નેરહયા મે-
હુણસન્નોવત્તા, આહારસન્નોવત્તા સંલિઙ્ગુણા, પરિગ્ગહસન્નોવત્તા સલિઙ્ગુણા, મયસન્નોવત્તા
સલિઙ્ગુણા !

આહારસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા, યાવત્-પરિપ્રહસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા હોય છે. હે ભગવન્ ! આહારસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા, મયસંજ્ઞાના ઉપ-
યોગવાળા, મૈયુનસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા અને પરિપ્રહસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા એ નૈરયિકોમાં કોણ કોનાથી અલ્પ, વધુ, તુલ્ય કે વિશેષા-
ધિક હોય ? હે ગૌતમ ! સૌથી ઘોડા નૈરયિકો મૈયુનસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા હોય છે. તેથી આહારસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા સલ્પયાતગુણા
છે, તેથી પરિગ્ગહસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા સલ્પયાતગુણા છે, અને તેથી મયસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા સલ્પયાતગુણા છે.

"નરકમાં રાત્રિચિત્ત પલ્ચમાન-દુઃખ પામતા નૈરયિકોને અશ્કિન્તુ નિમીલન થાય તેટલો કાલ પણ સુપ નથી માત્ર યુદ્ધ જ
પ્રતિપદ્ધ-લાગેલું છે' માટે મૈયુનની રૂઝા તેઓને હોતી નથી પણ જો કોઈ કાલે કોઈને થાય તોપણ તે ઘોડા કાલની હોય છે માટે
પ્રશ્ન સમયે મૈયુન મસાના ઉગયોગવાળા ઘોડા હોય છે તેથી સલ્પયાતગુણા આહારમસાના ઉપયોગવાળા હોય છે, કારણ કે ઘણા
યુદ્ધી પ્રાણીઓને ઘણા કાલ સુધી આહારની રૂઝા થતી હોવાથી પ્રશ્ન સમયે અત્યન્ત ઘણા આહારમસાના ઉપયોગવાળાનો સમ્મય
છે તેથી સમ્પયાતગુણા પરિપ્રહસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા છે આહારની રૂઝા શરીરને માટે હોય છે અને પરિપ્રહની રૂઝા તો શરીર અને
તે સિવાય ધીજી શક્તિ યસ્તુને વિધે હોય છે, અને ઘણા કાલ સુધી અવસ્થિત હોય છે, તે માટે પ્રશ્ન સમયે અત્યન્ત ઘણા પરિપ્રહ
સંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા પ્રશ્ન થાય છે માટે પૂર્વ કરતા મદ્ધયાતગુણા છે તેથી મયસંજ્ઞાના ઉપયોગવાળા સમ્પયાતગુણા છે, કારણ કે

४. तिरिक्खज्जोणियाणं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च आहारसन्नोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि । एएसि णं भंते ! तिरिक्खज्जोणियाणं आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा तिरिक्खज्जोणिया परिग्गहसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, भयसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, आहारसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा ।

४. हे भगवन् ! तिर्यचयोनिको शुं आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! वाह्य कारणने आश्रयी प्रायः आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने संततिभाव-आंतरिक अनुभवने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा, ए तिर्य-चोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! तिर्यचो सौथी थोडा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे अने तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे.

नरकमां नैरयिकोने चारे तरफ मरणान्त भय होय छे. माटे प्रश्न समये अत्यन्त घणा भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे.

४. तिर्यश्च पंचेन्द्रियो पण राद्य पदार्थने जोवा वगरे वाह्य कारणने आश्रयी वहुधा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, पण बाकीनी संज्ञाना उपयोगवाळा नथी. कारण के आ वाचन प्रत्यक्षथी ज जणाय छे. अन्तरना अनुभवरूप संततिभावने आश्रयी

५. मनुस्सा णं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च मेहुणसन्नोवउत्ता, सततिमावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि । एएसि णं भंते ! मणुस्साण आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहितो अस्पा या बहुया वा तुल्ला वा

५ हे भगवन् ! मनुष्यो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे के यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! याह कारणने आश्रयी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने सततिभावने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा मनुष्योमां आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अने यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अत्यथदुत्थना विचारमा सौधी घोडा परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे, कारण के परिग्रहसंज्ञानो काळ घोडो होयायी प्रश्न समये घोडा ज प्राप्त थाय छे तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा सत्य्यतगुणा छे, कारण के मैथुनसंज्ञाना उपयोगतो तेथी घणो काळ छे तेथी पण मयसंज्ञाना उपयोगवाळा सत्य्यतगुणा छे, कारण के तेने समानजातिवाळा के विजातीय तरफुयी भयतो समय छे अने मयतो उपयोगकाळ घणो घघारे छे, माटे प्रश्न समये मयसंज्ञाना उपयोगवाळा भति घणा होय छे तेथी संस्थानगुणा आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के प्रायः यथाने निरंतर आहारलो समय छे

६. मनुष्यो पण बाह्य कारणने आश्रयी यदुया मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, अने वाकीनी सज्ञाना उपयोगवाळा घोडा होय छे अन्तरा मनुभवभावकरूप संततिभावने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अत्यथदुत्थना विचारमां सौधी घोडा मयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के घोडा जीवोने अने घोडा काळ सुधी

विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा मणूसा भयसन्नोवउत्ता, आहारसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, परिग्गह-
सन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता संखिज्जगुणा ।

६. देवा णं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता, जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! ओसन्नं कारणं पडुच्च परि-
ग्गहसन्नोवउत्ता, संततिभावं पडुच्च आहारसन्नोवउत्तावि, जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि। एएसिणं भंते ! देवाणं
आहारसन्नोवउत्ताणं जाव परिग्गहसन्नोवउत्ताण य कयरे कयरेहिंत्तो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसा-
कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? गौतम ! सौथी थोडा मनुब्यो भयसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, तेथी
आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, अने तेथी मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा
संख्यातगुणा होय छे.

६. हे भगवन् ! देवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! प्रायः बाह्य कारणने
आश्रयी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे अने संततिभावेने आश्रयी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा अने यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयो-
भयसंज्ञानो सम्भव छे. तेथी आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा होय छे. कारण के आहारसंज्ञानो उपयोग घणा काल सुधी
होय छे. आ ज हेतुधी पटले परिग्रहसंज्ञानो घणो काल होवाथी परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा छे. तेथी मैथुनसंज्ञाना
उपयोगवाळा सङ्ख्यातगुणा छे, कारण के मैथुनसंज्ञा अति घणा काल सुधी होवाथी प्रश्न समये तेओ अति घणा प्राप्त थाय छे.

६. बाह्य कारणने आश्रयी देवो घणा भागे परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा होय छे, कारण के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगमां कारणभूत

दिया वा ? गोयमा ! सन्वत्योवा देवा आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता संव्विज्जगुणा, मेहुणसन्नोवउत्ता संव्वेज्जगुणा ।

प्रज्ञापना
सनुवाद

॥६८९॥

इति पन्वणए भगवईए अट्टमं सन्नापदं समचं ।

गवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! आहारसज्ञाना उपयोगवाळा, यावत्-परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा देवोमां कोण कोनायी यावत्-अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौयी थोडा देवो आहारसज्ञाना उपयोगवाळा होय छे. तेथी संख्यातगुणा मयस-ज्ञाना उपयोगवाळा, तेथी संख्यातगुणा मैथुनसज्ञाना उपयोगवाळा अने तेथी संख्यातगुणा परिग्रहसज्ञाना उपयोगवाळा होय छे.

प्रज्ञापना भगवतीमा आठसु सन्नापदं ममात्त

मणि, सुवर्ण अने रत्नादि हमेशां तेओनी पासे होय छे अने उक्त स्वरूप मत्ततिभावने आधयी तेओ आहारसज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे, यावत्-परिग्रहसज्ञाना उपयोगवाळा पण होय छे अल्पयदुषणा विचारमा सौयी थोडा आहारसज्ञाना उपयोगवाळा होय छे कारण के आहारनी इच्छानो विरहकाळ भत्यन्त घणो होयायी अने आहारसज्ञानो उपयोगकाळ भत्यन्त थोडो होयायी प्रश्न समये तेओ मीथी थोडा प्राप्त घाय छे तेथी मयसज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, कारण के मयसज्ञा घणा जीवोने अने घणा काळ सुयी होय छे, तेथी पण मैथुनसज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे, तेथी परिग्रहसज्ञाना उपयोगवाळा संख्यातगुणा छे. जीवोनी अपेक्षाए यहू जीवो कया छे ते कडेबाहु हंतुं अने तेओनो ते प्रकारे विचार कर्यो छे

श्रीमद्वाचार्थमल्यगिरिचित्त प्रज्ञापनाटीकाना अनुवादमा आठसु सन्नापदं समाप्त

॥६८९॥

नमसं त्रैणिपयं ।

१. कृतिविद्या गं भंते त्रैणी पन्नचा ? गोयमा ! त्रिविला त्रैणी पन्नचा । संतादा-मीया त्रैणी, उमिणा त्रैणी,
सीनोमिणा त्रैणी ।

नमसुं योनिपद.

१. हे भगवन् ! योनि वेदना वसुधनी हवीं त्रै ? त्रैणी पय प्रसादीं त्रै. त्रै या वसुधनी-१ त्रैणी-१ त्रैणी-१ त्रैणी-१
योनि अने त्रैणी-१ त्रैणी-१

२. नैरद्वयानं भंते ! किं सिता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीताचि जोणी, उसिणाचि जोणी, जो सीतोसिणा जोणी । असुरकुमारारणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ?

२. हे भगवन् ! शुं नैरद्विकोने शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि अने उष्णयोनि होय छे, एण शीतोष्णयोनि होती नथी. हे भगवन् ! असुरकुमारोने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम !

शीत अने उष्ण उभय स्पर्शना परिणामवाळी शीतोष्ण योनि कहेयाय छे तेमा नैरद्विकोने के प्रकाली योनि होय छे-शीत अने उष्ण योनि एण तेओने शीतोष्ण योनि होती नथी फइ नरक पृथिवीमा फइ योनि होय छे ? ते कहे छे-रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, अने पालुकाप्रभामां जे नैरद्विकोना उपजयाना क्षेत्रो छे ते वधां शीतस्पर्शना परिणामवाळा छे, अने उपजयाना क्षेत्र सिचायु वक्की यशु प अने नरकपृथिवीमां उष्णस्पर्शना परिणामवाळु छे, तेथी त्याना शीतयोनिवाळा नैरद्विको उष्ण वेदना अनुभवे छे पद्मप्रभामा घणां उपपात क्षेत्रो शीतस्पर्शना परिणामवाळा छे अने थोडां उष्णस्पर्शना परिणामवाळां छे जे प्रस्तटोमां (पायडामां) अने जे नरकायासोमां शीतस्पर्शना परिणामवाळां उपपातक्षेत्रो छे तेमा उपपातक्षेत्र सिचाय यशु उष्णस्पर्शना परिणामवाळु छे जे प्रस्तटोमां अने जे नरका-

वली कन्धे जाड, देव नारक अने तिर्यच पचेन्द्रियनी चार चार जाड अने मनुष्योनी चौद जाड योनि होय छे. सर्व मळीने चौराशो जाड योनि थाय छे यद्यपि व्यक्तिभेदनी अपेक्षाए अनन्त जीवो होयाथो अनन्त योनि थाय, तो एण समान वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्शोवाळी घणी योनि छटां एण सामान्यणे जातिरूपे एक योनि तरीके गणाय छे, माटे चौराशो जाड ज योनि थाय छे, यशुं छे के-

“ समग्रणासमेया बहवोवि दु जोणिभेअल्लखा उ । सामाना चेष्वति इ एकजोणीए गहणेणं ” ॥
समानवणादिसहित घणा जाड योनिना भेदो थाय छे तो एण सामान्यणे एक योनिना ग्रहण वदे प्रहण कराय छे

गोयमा ! नो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सितावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । एवं आउवाउवणस्सइहंदिद्यतेइंदिद्यचउरिंदियाणवि पत्तेयं भाणियच्चं । तेउवकाइयाणं णो

तेओने शीतयोनि के उष्णयोनि नथी, पण शीतोष्णयोनि होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणहुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने शुं शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि होय छे. ए प्रमाणे अचक्राय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, वैइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय प्रत्येकने कहेहुं. तेजस्कायिकोने शीत अने शी-

वासोमां उष्णस्पर्शना परिणामवाळां उपपातक्षेत्रो छे तेमां ते सिवाय वंधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळां छे, तेथी त्यांना घणा शीतयोनि वाळा नैरयिको उष्ण वेदना अनुभवे छे अने थोडा उष्णयोनिवाळा शीतवेदना अनुभवे छे. धूमप्रभामां णणां उपपात क्षेत्रो उष्णस्पर्शना परिणामवाळां छे अने थोडां शीतस्पर्शना परिणामवाळां छे. जे प्रस्तटोमां अने जे नरफावासोमां उष्णस्पर्शनां परिणामवाळां उपपात क्षेत्रो छे तेओमां ते सिवाय वंधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळां छे, जेओमां शीतस्पर्शनां उपपातक्षेत्रो छे तेमां वंधुं उष्णस्पर्शनां परिणामवाळां छे, तेथी त्यांना घणां उष्णयोनिवाळा नारको शीतवेदना अनुभवे छे, अने थोडा शीतयोनिवाळा नारको वेदनाओ अनुभव करे छे. तमःप्रभामां अने तमःतमःप्रभामां वथां उपपातक्षेत्रो उष्णस्पर्शना परिणामवाळां छे अने ते सिवाय वाकी वंधुं शीतस्पर्शना परिणामवाळां छे, तेथी त्यांना उष्णयोनिवाळा नारको शीतवेदना अनुभवे छे. भवनवानी, गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च, गर्भज मनुष्यो, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने दैमानिकोना उष्णतक्षेत्रो शीत अने उष्ण उभय स्पर्शवाळां छे, तेथी तेओनी योनि उभय स्वभाववाली छे, पण केवल शीत के उष्ण नथी. अष्कायिक सिवाय वथा पकेन्द्रियो, वैइन्द्रियो, तेइन्द्रियो, चउरिन्द्रियो, संसृष्टिम

सीता, उसिणा, जो सीउसिणा । पंचिदियतिरिक्खजोगियाणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, उसिणा जोणी, सीता जोणी, सीयावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । संसुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोगियाणवि एवं चेव । गंभक्कंनियपंचिदियतिरिक्खजोगियाण भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! जो सीता जोणी, नो उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी । मंणुस्साण भंते ! किं सिता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीयावि जोणी, उसिणावि जोणी, सीतोसिणावि जोणी । संसुच्छिममणुस्साणं भंते ! किं सीता जोणी, उसिणा जोणी, सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! तिविहा जोणी ।

तोष्णयोनि नथी, परंतु उष्णयोनि छे. हे भगवन् ! पचेन्द्रियं तिर्यचोने शु शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे ? हे गौतम ! शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे समूच्छिम पचेन्द्रिय तिर्यचोने पण एमल जाणनु. हे भगवन् ! गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यचोने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! शीतयोनि नथी, उष्णयोनि नथी, पण शीतोष्णयोनि होय छे. हे भगवन् ! मनुष्योने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीतयोनि, उष्णयोनि अने शीतोष्णयोनि छे. हे भगवन् ! समूच्छिम मनुष्योने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने प्रणे प्रका-रणी योनि होय छे. हे भगवन् ! गर्भज मनुष्योने शु शीतयोनि, उष्णयोनि के शीतोष्णयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने शीत अने

तिर्यञ्च पचेन्द्रियो अने समूच्छिम मनुष्योना उपपातस्सालो शीतस्संघाळा, उष्णस्संघाळा अने उभयस्संघाळां पण होय छे, माटे तेओनी प्रणे प्रका-रणी योनि होय छे, तेजस्सालिको उष्णयोनिवाळा अने अस्सालिको शीतयोनिवाळा प्रत्यक्ष जणाय छे

ગર્ભભવન્કંતિયમણુસ્સાણં મંતે ! કિં સીતા જોળી, ઉસિણા જોળી, સીતોસિણા જોળી ? ગોયમા ! જો સીતા, જો ઉસિણા, સીતોસિણા । વાંણમંતરદેવાણં મંતે ! કિં સીતા જોળી, ઉસિણા જોળી, સીતોસિણા જોળી ? ગોયમા ! જો સીતા, જો ઉસિણા, સીતોસિણા જોળી । જોહસિયવેમાણિયાણવિ एवं ચેવ ।

૩. ઇણસિ ણં મંતે ! સીતજોણિયાણં ઉસિણજોણિયાણં સીતોસિણજોણિયાણં અજોણિયાણ ય કયરે કયરે-હિંતો અપ્પા વા, बहुया वा, उल्ला वा, विसेसाहिया वा ? गौयमा ! सबत्थोवा जीवा सीतोसिणजोणिया, उसि-

उण्योनि नथी ण शीतोण्योनि होय છે. हे भगवन् ! वानव्यन्तर देवोने शुं शीतयोनि, उण्ययोनि કે શીતોણ્યયોનિ હોય છે ? हे गौतम ! तेओने शीत अने उण्योनि नथी, ण शीतोण्योनि होय છે. જ્યોતિષિક અને વૈમાનિકોને ण एमज जाणवुं.

૩. हे भगवन् ! शीतयोनिवाळा, उण्ययोनिवाळा, शीतोण्ययोनिवाळा अने योनिरहित जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय છે ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो शीतोण्ययोनिवाळा होय છે, તેથી उण्ययोनिवाळा असंख्यातगुणा છે, તેથી

૩. અલ્પયથુલ્વના ચિત્તારમાં સૌથી થોડા શિતોણ્પરુપ ઉમયયોનિવાલા જીવો હોય છે, કારણ કે મવનવાસી, ગર્ભજ તિર્યજ પંચેન્દ્રિય, ગર્ભજ મનુષ્ય, વ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને વૈમાનિકોની ઉમયરુપ યોનિ છે. તેથી મંસ્યાતગુણા ઉમયયોનિવાલા છે, કારણ કે સુક્ષ્મ અને વાદર વાન્ને પ્રકારના તેજસ્ક્રાથિકો, ઘણા ધૈરયિકો અને કેટલાક પૃથિવી, પાણી, વાયુ અને પ્રત્યેક વનસ્પતિ ઉણ્યયોનિવાલા છે. તેથી યોનિરહિત અનન્તગુણા છે, કારણ કે સિન્તો અન્ત છે. તેથી શીતયોનિવાલા અન્તગુણા છે. કારણ કે વધા અન્તક્રાથિકો શીતયોનિવાલા છે. અને તેઓ મિન્દોથી અન્તગુણા છે.

ગજોગિયા અસલેહગુણા, અજોગિયા અર્ણતગુણા, સીતજોગિયા અર્ણતગુણા ।

૪. કતિચિદ્વા ણં મંતે ! જોળી પન્નત્તા ! ગોયમા ! તિચિદ્વાજોળી પન્નત્તા, તંજહા-સચિત્તા, અચિત્તા, મીસિયા ।
૫. નેરંદ્યાણં મંતે ! કિં સચિત્તા જોળી, અચિત્તા જોળી મીસિયા જોળી ? ગોયમા ! નો સચિત્તા જોળી, અ-

યોનિપદિત અન્તગુણા છે અને તેથી શીતયોનિવાલા અન્તગુણા છે.

૪. હં મગવન્ ! યોનિ ફેટલા પ્રકારની કહી છે ? હં ગૌતમ ! યોનિ ત્રણ પ્રકારે કહી છે. તે આ પ્રમાણે-સચિત, અચિત અને મિશ્ર યોનિ.

૫. હં મગવન્ ! નેરંદિકોને શુ સચિત્તયોનિ, અચિત્તયોનિ કે મિશ્રયોનિ હોય છે ? હં ગૌતમ ! તેઓને સુનિત અને મિશ્રયોનિ

કહે શીજા પ્રકારે યોનિનુ પ્રતિપાદન કરે છે--'હે મગવન્ ! યોનિ ફેટલા પ્રકારની છે' ! સચિત્ત-શીયપ્રવેશના સંયથપાલી, અચિત્ત-મયંથા સીપરદિત, અને મિશ્ર-મચ્ચતા સીયપ્રવેશદિત-પમ ત્રણ પ્રકારે છે. તેમાં નેરંદિકોનુ જે અપ્પાતરંચ છે તે જોર પણ સીયે શરૂરરુવે પ્રહણ કરેલુ નથી માટે તેઓની અચિત્ત યોનિ છે. પરંતુ સુદુમ વકેન્દ્રિયો સકાન લોકવ્યાપી છે તો પણ તેના આત્મપ્રવેશો સાથે અપ્પાતરચાનના પુલ્લો પરસ્પર અમેદાલક સવધયાલા નથી, પરંતુ તે સીયોપ અપ્પાતરચાના પુલ્લો પરસ્પરે પ્રાણ કરેલા નથી, માટે તેઓની અચિત્ત યોનિ છે. ૫ પ્રમાણે અપુલ્કુમાપદિ મનનપતિઓની, તથા દ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને વિમાનિઓની અચિત્ત યોનિ જાણવી વૃષિર્ષીકાયિકથી માઠી સંમૂર્ઠિમ મનુષ્ય પર્યન્ત સીયોનુ અપ્પાતરંચ મન્ય સીયોપ પ્રહણ કરેલુ હોય છે. અન્યથા પ્રાણ કરેલું હોતું નથી અને અચ્ચતા પ્રહણ કરેલુ થતું હોય તો અચ્ચતા પ્રહણ કરેલુ અમય સ્વમાલયાલુ પણ હોય છે માટે તેઓની અલે પ્રગાપની યોનિ શિ. ગર્ભજ તિવેન પ્વેચ્ચિય થતે ગર્ભજ મનુષ્યોની જ્યાં અપ્પાતર યાવ છે ત્યાં અચેતન પણ શુક અને સોગિતના પુલ્લો હોય છે માટે તેઓની મિશ્ર યોનિ હોય છે.

चित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी । असुरकुमाराणं भंते ! किं सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, नो मीसिया जोणी, एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढवीकाहयाणं भंते ! किं सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी ? गोयमा ! सचित्ता जोणी, अचित्ता जोणी, मीसिया जोणी, एवं जाव चउरिंदियाणं । संमुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साण य एवं च्चेव । गवभवकंतियपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं गवभवकंतियमणुस्साण य नो सचित्ता, नो अचित्ता, नो मीसिया जोणी ।

नथी, पण अचित्तयोनि छे. हे भगवन् ! असुरकुमारोने शुं सचित्तयोनि अचित्तयोनि के मिश्रयोनि होय छे ? हे गौतम ! सचित्त अने मिश्रयोनि नथी, पण अचित्तयोनि होय छे. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने शुं सचित्त, अचित्त के मिश्रयोनि होय छे ? हे गौतम ! सचित्त, अचित्त अने मिश्र त्रणे प्रकारे योनि होय छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं. संमूच्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने संमूच्छिम मनुष्योने एमज जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने गर्भज मनुष्योने सचित्त अने

५. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा जीवो मिश्रयोनिवाळा छे, कारण के गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने मनुष्योनीज मिश्र योनि छे. तेथी अचित्तयोनिवाळा असंख्यातगुणा छे, कारण के नारको, देवो अने केटलाफ, पृथिवी, अप तेजस, वायु, प्रत्येक वनस्पति, नेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, संमूच्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने संमूच्छिम मनुष्योनी अचित्त योनि छे. तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो अनन्त छे. तेथी सचित्तयोनिवाळा अनन्तगुणा छे. कारण के निगोदना जीवोनी सचित्त योनि छे अने तेओ सिद्धो करतां पण अनन्तगुणा छे.

वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमारारणं ।

६ एतेसि ण भंते । जीवाणं सच्चित्तजोणीण अचित्तजोणीणं मीसजोणीणं अजोणीण य कयरे कयरेहिंलो अत्था वा बह्नुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्वत्थोवा जीवा मीसजोणिया, अचित्तजोणिया असखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सच्चित्तजोणिया अणंतगुणा ।

७. कहविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा । तिविहा जोणी पन्नत्ता ? तंजहा—संबुडा जोणी, वियडा

अचित्त योनि नथी, पण मिथयोनि होय छे. वानव्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुखमारोनी पेटे जाणवुं.

६. हे भगवन् ! सच्चिचयोनिवाळा, अचित्तयोनिवाळा, मिथयोनिवाळा अने योनिरहित ए जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो मिथयोनिवाळा होय छे, तेथी अचित्तयोनिवाळा असंख्यात्तगुणा छे, तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे अने तेथी सच्चिचयोनिवाळा अनन्तगुणा छे.

७. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी योनि कही छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनी योनि कही छे. ते आ प्रमाणे—सधृतयोनि, विधृत

६-७ हवे फरी पण प्रकापन्तरथी योनिनु प्रतिपादन करे छे—हे भगवन् ! केटला प्रकारनी योनि कही छे ? तेमां नारकोनी संबृत योनि छे, कारण के नारकोनी उत्पत्तिना स्थानरूप नारकनिष्फुटो बंध करेला गवाक्ष जेवा छे, तेमां उत्पन्न थयेला नैतयिको बुद्धि पामता तेकोनी अदरथी बहार पडे छे शीत उपपातस्थानोथी उष्ण क्षेत्रमा अने उष्ण उपपात स्थानोथी शीत क्षेत्रमां पडे छे भवजपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोनी पण संबृत योनि होय छे, कारण के तेको वेवदूप्य थसथी टकायेल वेवगय्यामा

जोणी, संघुडचियडा जोणी ।

८. नेरइयाणं भंते ! किं संघुडा जोणी, वियडा जोणी, संघुडवियडा जोणी ? गोयमा ! संघुडजोणी, नो वियडजोणी, नो संघुडवियडजोणी । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । वेइवियाणं पुच्छा । गोयमा ! नो संघुडजोणी, वियडजोणी, नो संघुडवियडजोणी । एवं जाव चउरिंदियाणं । संघुच्छिमपंचिदियतिरिखजोणियाणं संघुच्छिमयोनि अने संघुतविघुतयोनि.

८. हे भगवन् ! नैगयिकोने शुं संघुतयोनि, विघुतयोनि के संघुतविघुतयोनि होय छे ? हे गौतम ! तेओने संघुतयोनि होय छे, पण विघुतयोनि अने संघुतविघुतयोनि होती नथी. ए प्रमाणे यावत्-वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. वेइन्द्रियो संवन्धी पृच्छा. हे गौतम ! तेओने संघुत के संघुतविघुतयोनि नथी, पण विघुतयोनि होय छे. एम यावत्-चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. संघुच्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने संघुच्छिम मनुष्योने एमज जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने गर्भज मनुष्योने संघुत अने विघुतयोनि

उत्पन्न थाय छे. "देवस्यणिज्ञांसि देवदूतंस्तरिप अंगुलासंग्रेजभ्रभागभेत्ताप सरीरोगाहणाप उधवज्जर" । देवदूच्य चरणी आच्छावित देवशय्यामां अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाण शरीरली भवगाहना चउे उत्पन्न थाय छे-पहुं शारप यजन छे. पंचेन्द्रियो पण संघुतयोनिवाळा छे, कारण के तेओनी योनि स्पष्ट जणाती नथी. वेइन्द्रियथी आरंभी चउरिन्द्रिय सुधीना जीवो, संघुच्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने संघुच्छिम मनुष्योनी विघुत योनि होय छे. कारण के तेओनुं उत्पत्तिस्थान जलाशयादि स्पष्ट जणाय छे. गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने गर्भज मनुष्योनी संघुतविघुत योनि छे. कारण के गर्भ संघुत अने विघुतरूप छे. गर्भ अंशुरथी जणातो नथी, अने वारणी उदरनी वृत्ति थया वगेरे कारणोथी जणाय छे.

मणुस्साण य एवं वेव । गन्भव क्तंति य पंचि वि पतिरि क्ख ज्जो गियाणं गन्भव क्तंति य मणुस्साण य नो संबुढा जोणी,
नो वियडा जोणी, संबुढवियडा जोणी । याणमंतरजोइसियवेमाणियाण जहा नेरइयाणं ।

१. एतेसि णं भते ! जीवाण संबुढजो गियाणं वियडजो गियाणं संबुढवियडजो गियाण अजो गियाण य कयरे
कयरेहितो अप्पा घा पट्टमा वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! संबवथोवा जीवा संबुढवियडजो गिया,
वियडजो गिया असम्बिज्जगुणा, अजो गिया अणंतगुणा, संबुढजो गिया अणंतगुणा ।

१० कइविहा ण भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा । तिविहा जोणी पन्नत्ता, तंजहा—कुम्भुणया, संव्वावत्ता,

वथी, पण सवृतविष्टतयोनि होय छे, वानच्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिकोने नैरयिको पंठे जाणयुं,

१. हे भगवन् ! संवृतयोनिवाळा, विष्टतयोनिवाळा, सवृतविष्टतयोनिवाळा अने योनिरहित ए जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु,
तुल्य के विज्ञेयाधिक छे ? हे भगवन् ! सौथी थोडा जीवो सवृतविष्टतयोनिवाळा छे, तेथी विष्टतयोनिवाळा असल्यावगुणा छे, तेथी
योनिरहित अनन्तगुणा छे अने तेथी सवृतयोनिवाळा अनन्तगुणा छे.

२. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा सवृतविष्टतयोनिवाळा छे, कारण के गर्भज तिर्येच पचेन्द्रिय अने मनुष्योनी सवृत-वि-
ष्टतयोनि होय छे तेथी विष्टतयोनिवाळा असल्यावगुणा छे, कारण के धेन्द्रियथी भारती चउरिन्द्रिय सुधीना जीवो, समृद्धिम तिर्येच
पचेन्द्रिय अने समृद्धम मनुष्योनी विष्टत श्रोत्रि छे, तेथी योनिरहित अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो भवतगुणा छे तेथी संवृतयो-
निवाळा अन्तगुणा छे, कारण के एतस्युक्तिनी सवृत योनि छे, अने तेको तिमोथी पण अनन्तगुणा छे ।

વંસીપત્તા । કુમ્ભુણયા પં જોણી ઉત્તમપુરિસમાહુજં । કુમ્ભુણયાએ પં જોણીએ ઉત્તમપુરિસા ગભ્ભે વક્કમંતિ, તંજહા—અરહંતા, ચક્કવટ્ટી, વલદેવા, વાસુદેવા । સંભાવત્તા પં જોણી ર્હત્થીરયણસ્સ, સંભાવત્તાએ જોણીએ મહ્ભવે જીવા ય પોગ્ગલા ય વક્કમંતિ વિહક્કમંતિ ચયંતિ ઉવચયંતિ । વંસીપત્તા પં જોણી

૧૦. હે મગવન્ ! કેટલા પ્રકારની યોનિ કહેલી છે ? હે ગૌતમ ! ત્રણ પ્રકારની યોનિ કહેલી છે. તે આ પ્રમાણે—કૂર્મોન્વતા, શંભાવર્તી અને વંશીપત્રા, કૂર્મોન્વતા યોનિ ઉત્તમ પુરુષોની હોય છે. કૂર્મોન્વતા યોનિના ગર્ભમાં ઉત્તમ પુરુષો ઉત્પન્ન થાય છે. તે આ પ્રમાણે—અરિહંતી, ચક્રવર્તી, વલદેવો અને વાસુદેવો. શંભાવર્તી યોનિ સ્ત્રીરત્નને હોય છે. શંભાવર્તી યોનિમાં ઘણા જીવો અને પુદ્ગલો આવે છે અને ગર્ભરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, ચય પામે છે અને ઉપચય પામે છે, પરન્તુ નિષ્પન્ન થતા નથી. વંશીપત્રા યોનિ સામાન્ય મનુ-

૧૦. હવે મનુલ્લ્યયોનિના વિશેષ-ભેદનું પ્રતિપાદન કરે છે—‘હે મગવન્ ! યોનિ કેટલા પ્રકારની છે’ ર્હત્યાદિ. કાચવાની પીઠ જેવી ડંચી હોય તે કૂર્મોન્વતા, શંખની પેઠે આવર્તવાહી તે શંભાવર્તી અને સંયુક્ત શ્રેવાંસના પાંદડાના આકારવાહી વંશીપત્રા યોનિ કહેવાય છે, વાકી વંધુ સુગમ છે. પરન્તુ શંભાવર્ત યોનિમાં ઘણા જીવો અને જીવની સાથે સંવંધવાલા પુદ્ગલો આવે છે અને ગર્ભરૂપે ઉત્પન્ન થાય છે, સામાન્યતઃ ચય-વૃદ્ધિ પામે છે અને વિશેષતઃ ઉપચયને પ્રાપ્ત થાય છે. પરન્તુ ‘અતિ પ્રવલ કામાગ્નિના પરિતાપવહે નાશ થવાથી ગર્ભની નિષ્પત્તિ થતી નથી’ એવો વૃદ્ધાચાર્યોનો પ્રવાવ છે.

પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુવાદમાં નવમું પદ સમાપ્ત.

पिडुजणस्स, वंसीपत्ताए णं जोणीए पिडुजणे गग्गे वक्कमंति ।
। ; इदि, पन्नवणाए मगवईए नवमं जोणीपद समत्तं ९ ।

प्योनी होय छे. वंशीपत्रा योनिमां सामान्य मत्तुप्यो गर्भमां आवे छे.

प्रज्ञापना मगवतीमा नवमु योनिपद समास

दसमं चरमाचरमपर्यं ।

१. कति णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अट्ट पुढवीओ पन्नत्ताओ, तंजहा—रयणप्पमा, सक्कर-
प्पमा, वाल्ढयप्पमा, पंकप्पमा, धूमप्पमा, तमप्पमा, तमत्तमप्पमा, ईसीपब्भारा ।
२. इमा णं भंते ! रयणप्पमा पुढवी किं चरमा, अचरमा, चरमाइं, अचरमाइं, चरमंतपदेसा, अचरमंतपदेसा ?

दशसुं चरमाचरम पद.

१. हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे ? हे गौतम ! आठ पृथिवीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभा, २ शर्करा प्रभा,
३ वालुकाप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धूमप्रभा, ७ तमःप्रभा, ७ तमःतमःप्रभा, ८ इत्यत्रागभारा.
२. हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी सुं चरम (पर्यंतवर्ती) छे १, अचरम (मध्यवर्ती) छे २, (बहुवचन विशिष्ट) चरम छे ३,

१. ए. प्रमाणे नवमा पदनी व्याख्या करी, हवे दसमा पदने प्रारंभ कराय छे. तेतो संबन्ध आ प्रमाणे छे—अहाँ पूर्वना पदमां
प्राणीओनी योनिओनुं प्रतिपद्धत कर्युं अने आ पदमां प्राणीओना उपातनुं क्षेत्र रत्नप्रभादि छे, ते चरम अने अचरम विभाग वटे
बतावाय छे. तेमां आ आदि सूत्र छे—कति णं भंते पुढवीओ पत्ताओ—हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे—इत्यादि पाठ सुगम
छे. परंतु इत्यत्रागभारा ५ पीसताळीश लाल योजन लायी अने पद्दोळी शुद्ध स्फटिकना जेची सिद्धशिला पृथिवी छे.

२. 'इमा णं भंते ! रयणप्पमा पुढवी किं चरमा, अचरमा—हे भगवन् ! आ रत्नप्रभा पृथिवी सुं चरम छे ते अचरम छे—इत्यादि
प्रश्न छे. तेमां चरम अने अचरमनी परिभाषा आ प्रमाणे छे—चरम पटले पर्यंतवर्ती, छेल्ले रहेछुं, ते चरमपणुं बीजानी अपेक्षाप होय

गोयमा । इमा णं रयणप्पभा पुढवी नो चरमा, नो अचरमा, नो चरमात्ति, नो अचरमात्ति, नो चरमंतपदेसा, नो अचरमतपदेसा, नियमाअचरमं चरमाणि य, चरमंतपदेसा य अचरमंतपदेसा य, एवं जाव अघेसत्तमा पुढवी, सो-
हम्माती जाव अणुत्तरविमाणण एवं चेव, ईसीपन्मारावि एवं चेव, लोणेवि एवं चेव, एवं अलोणेवि ।

अचरम छे ४, चरमान्तप्रदेशरूप छे ५, के अचरमान्तप्रदेशरूप छे ६ । हे गौतम ! आ रत्नप्रमा पृथिवी चरम नथी, अचरम नथी, बहुवचनान्त चरम अने अचरम नथी, चरमान्तप्रदेशरूप नथी, तेम अचरमान्तप्रदेशरूप पण नथी, पण अक्कय अचरम, अने बहुवचनान्त चरमरूप छे, तथा चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप छे. ए प्रमाणे यावत् नीचेनी सातमी नरक पृथिवी सुधी जाणवु. सौधर्मथी मांडी यावत्-अनुत्तर विमान सुधी तथा ईपत्त्राभारा पृथिवी संबंधे पण ए प्रमाणेज समजवु. अने लोक अने अलोक संबंधे पण एमज जाणवु.

छे तेथी ते सापेक्ष छे जेम्के पूर्वना शरीरनी अपेक्षाए चरम शरीर कहेयाए छे चरम-पर्यंतयतीं न होय, पण मध्यवतीं होय ते अचरम ते पण चरमनी अपेक्षाए होयाथी सापेक्ष छे. जेम्के तेवा प्रकाला मन्थ शरीरनी अपेक्षाए मध्यशरीर अचरमशरीर कहेयाए छे ए प्रमाणे चरम अने अचरम सम्यन्धी पक्कवचनान्त प्रश्न कर्को, हवे यदुवचनान्त प्रश्न करे छे 'चरमार अचरमार' पटले वपुण्यमान्त चरम छे के अचरम छे । मा चार प्रश्नसुत्रो तेवा प्रकाला पक्कवपणिणामयाळा द्रव्य सङ्घन्धे कर्को, हवे प्रवेशोने भाषाथी वे प्रश्न करे छे- 'चरमतपपसा य अचरमतपपसा य'-चरमरूप अने अते रहेला होयाथी अन्तवतीं वडो चरमान्तो कहे याए छे, तेमां रतेला प्रवेशो ते चरमान्तप्रवेशो कहेयाए छे कोइनी पण अपेक्षाए अन्ते नहि रहेला होयाथी अचरमरूप-मध्यवतीं मंड अचरमागत कहेयाए छे, तेमां रहेला प्रवेशो ते अचरमान्तप्रवेशो कहेयाए छे ए प्रमाणे गौतम स्वामीए छ प्रश्नो कर्को हवे

भगवान् तेनो उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! ते रत्नप्रभा पृथिवी चरम नथी, केमके चरमपणुं वीजी वस्तुनी अपेक्षाप छे, अने अहीं अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु नथी, कारण के अहीं मात्र अन्य वस्तुनी अपेक्षा सिवाय केवल रत्नप्रभानो ज प्रश्न कर्यों छे. आ ज कारणथी अचरम पण नथी. ते आ प्रमाणे-अचरमपणुं पण अन्य वस्तुनी अपेक्षाप छे, अहीं अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु विवक्षित नथी, भावार्थ ए छे के-आ रत्नप्रभा पृथिवी चरम नथी, तेम मध्यवर्ती पण नथी, कारण के चरमपणुं अने अचरमपणुं अन्य वस्तुनी अपेक्षाप होय छे अने अपेक्षा राखवा योग्य अन्यनी विवक्षा करी नथी. आ कारणथी 'चरमणि'-बहुवचनान्त चरम पण नथी, केमके अपेक्षा राखवा योग्य अन्य वस्तु विवक्षित नहि होवाथी तेवा प्रकारना व्यवहारनो ज असम्भव छे, तेथी बहुवचनान्त चरमपणानो पण असम्भव छे. ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते रत्नप्रभाना चरमपणानो व्यवहार ज उपर कहेली युक्तिथी घटनो नथी ल्यारे ते मग्न्ये बहुवचनान्त चरम-पणुं शी रीते घटे? ए प्रमाणे बहुवचनान्त अचरमभङ्गनो पण प्रतिषेध करयो. कारण के उपर कहेली युक्तिथी अचरमपणाना व्यव-हारनो पण असम्भव छे. तेमज ते चरमान्तप्रदेशरूप-प्रान्त भागमां रहेला प्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप-मध्यभागमां रहेला प्रदेशरूप पण नथी. कारण के पूर्वोक्त युक्तिघटे चरमपणानो अने अचरमपणानो अस्मभव होवाथी तेना प्रदेशनी कल्पनानो पण असम्भव छे. जो एम छे तो ते रत्नप्रभा केवा स्वरूपवाली छे? तेना उत्तरमां कहे छे के-ते 'अवश्य' अचरम-एकवचनान्त अचरम अने 'चरमणि'-बहुवचनान्त चरमरूप छे. तेनो भावार्थ आ छे—जो आ रत्नप्रभाने अगंडरूपे विवक्षा करीने पूछीए तो पूर्वोक्त भङ्गोमांथी एक पण भङ्गवडे तेनो व्यवहार शनो नथी, पण जो ते अमङ्गुगतप्रदेशावगाढ होवाथी अनेक अवयवोना विभागरूपे तेनी विवक्षा करीए तो ते पूर्व कहेला उत्तरनो विषय थाय छे. ते आ प्रमाणे-रत्नप्रभा पृथिवी आ प्रकारे रहेली छे अने ए प्रमाणे रहेली रत्नप्रभाना प्रान्त भागने विषे रहेला जे लोकान्तनिकृटरूप गंडो छे ते प्रत्येक तथाविध विशिष्ट एकरूप परिणाम वडे परिणत छे माटे ते 'चरमणि' बहुवचनान्त चरमरूप छे. अने जे प्रान्त भागना गंडो सिवायना मध्य भागमां रत्नप्रभानो मोटो गंड छे, ते तथा-विध एकरूप परिणामवालो होवाथी तेनी एकरूपे विवक्षा करी छे, माटे ते 'अचरम' एकरूपे अचरमरूप छे. आ रत्नप्रभा मध्य-

यतीं पद अने प्रान्तभागमां रहेला खडो प उभयना समुदायरूप छे जो पम न होय तो एतप्रमाना समाथनो प्रसंग प्राप्त थाय प प्रमाणे अवयव अने अवयवीरूपे विचार करता 'अवयव' एकवचनान्त अवयवरूप अने 'चरमणि' बहुवचनान्त चरमरूप पम अपठ एक उत्तरना विरयरूपे एतप्रमानु प्रतिपादन कर्युं हवे ज्यारे प्रवेशरूपे विचार करीय त्यारे तेनो आ प्रमाणे उत्तर छे- 'चरमान्तप्रवेशाख अवचरमान्तप्रवेशाख'-बहुवचनान्त चरमान्तप्रवेशरूप अने अवचरमान्तप्रवेशरूप छे ते आ प्रमाणे-लोकान्तनिष्कुरूप बहाराणा मंडोमा जे प्रदेशो रहेला छे ते चरमान्तप्रवेशो अने मध्यवर्ती एक खडमा जे प्रदेशो रहेला छे ते अवचरमान्तप्रवेशो छे अन्य भाषायां आ प्रमाणे व्याख्या करे छे- 'चरमणि' तथाविध प्रविष्ट-अवचर गयेलाथी इतर-प्रान्त भागमा एक प्रदेशानी श्रेणिना समुदायरूप बहुवचन विशिष्ट चरम खडो अने तेनो मध्यवर्ती भाग ते अवचरम पठ कहेयाप छे, ते पण निर्दोष होयाथी योग्य छे यथोक्त स्वरूप प्रान्त भागनी एक श्रेणिना समुदायमां रहेला प्रदेशो 'चरमान्तप्रवेशा' चरमान्तप्रवेशो अने तेना मध्य भागमा रहेला 'अवचरमान्तप्रवेशा' अवचरमान्तप्रवेशो कहेयाप छे एकान्त दुर्नयनो निरोध करयामा प्रधान आ उत्तरस्वरु पढे एतप्रभाविक वस्तु अवयव अने अवयवीरूप छे, अने ते अवयव अने अवयवीनो कथचिद् अमेव छे पम जणाब्यु ते अवयव अने अवयवी स्वरूप वस्तु मानयामा जे प्रकारे बीजाप आपेला वृत्तनो अवकाश नथी ते प्रकारे 'धर्मसंप्रहणीनी टीकामां याख वस्तुनु स्थापन करयाना प्रसंगे प्रतिपादन कर्युं छे, ते त्याथी जाणी लेखु 'प प्रमाणे यापनू नीचेनी मातमी गरकपृथिवी सुधी जाणथु' इत्यादि जेम एतप्रमा पृथिवीनु स्वरूप प्रश्न अने उत्तर घडे कालु तेम शकंत्प्रमादि पृथिवीमो स्वीयमदि अनुस्तर विमान पर्यन्त यिमांते, ईयत्प्रमाप पृथिवी अने लोक सयधे जाणथु सूत्रपाठ पण सुगम होयाथी स्वय चिन्तारी लेखो ते आ प्रमाणे- 'हे मगधन! शकंत्प्रमा पृथिवी नु चरम, अवचरम, प प चरम, प प अवचरम छे' ? इत्यादि पाठ कहेयो प प्रमाणे अलोक संयधे सूत्रपाठ पण कहेयो ते आ प्रमाणे- 'हे मगधन! अलोक थुं चरम छे के अवचरम छे' इत्यादि प्रश्नस्वरु अने तेथी रीते उत्तरस्वरु कहे छे- 'हे गौतम ! ते अच-

धर्मसंप्रहणीसटीक. आ स गा ६३७ प २३०-२

૩. ઇમીસે ણં મંતે ! રયણપ્પમાણ પુઠ્ઠવીણ અચરમસ્સ ય ચરમંતપણ ય અચરમંતપણ ય વ્ઠ્ઠયાણ પણસદ્ધયાણ વ્ઠ્ઠપણસદ્ધયાણ કયરે કયરેહિંતો અપ્પા યા વહુયા યા તુહા યા વિસેસાહિયા યા ? ગો-
ચમા ! સન્વત્થોવે ઇમીસે રયણપ્પમાણ પુઠ્ઠવીણ વ્ઠ્ઠયાણ ણો અચરમે, ચરમાઈ અસંલિજ્જગુણાઈ, અચરમં ચ ચર-
માણિ ય વોચિ વિસેસાહિઆ, પણસદ્ધયાણ સન્વત્થોવા ઇમીસે રયણપ્પમાણ પુઠ્ઠવીણ ચરમન્તપદેસા, અચરમંતપ-
દેસા અસંલિજ્જગુણા, ચરમંતપદેસા ય અચરમંતપદેસા ય વોચિ વિસેસાહિઆ, વ્ઠ્ઠપણસદ્ધયાણ સન્વત્થોવે ઇ-
મીસે રયણપ્પમાણ પુઠ્ઠવીણ વ્ઠ્ઠયાણ ણો અચરમે, ચરમાઈ અસંલિજ્જગુણાઈ, અચરિમં ચરમાણિ ય વોચિ વિસે-

૩. હે ભગવત્ ! આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના અચરમ સંહ, ચરમ સંહો, ચરમાન્તપ્રદેશોમ્ દ્રવ્યાર્થરૂપે, પ્રદેશાર્થરૂપે
અને દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થરૂપે કોણ કોનાથી અલ્પ, વદ્ધ, તુલ્ય કે વિશેષાધિક છે ? હે ગૌતમ ! સૌથી થોડો આ રત્નપ્રભા પૃથિવીનો દ્રવ્યાર્થ-
પણે એક અચરમ સંહ છે, તેથી ચરમસંહો અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી અચરમ સંહ અને ચરમ સંહો વન્ને મઠ્ઠીને વિશેષાધિક છે.
પ્રદેશાર્થપણે સૌથી થોડા આ રત્નપ્રભા પૃથિવીના ચરમાન્તપ્રદેશો છે, તેથી અચરમાન્તપ્રદેશો અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી ચરમાન્તપ્રદેશો
અને અચરમાન્તપ્રદેશો વન્ને મઠ્ઠીને વિશેષાધિક છે. દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થરૂપે-સૌથી થોડો આ રત્નપ્રભા પૃથિવીનો દ્રવ્યાર્થરૂપે એક અ-

ચરમ, વ. વ. ચરમ, ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્ત પ્રદેશરૂપ છે. તેમાં જે મંહો લોભનિપ્પુટ્ટમાં રહેલા છે તે ય. વ. ચરમ, વાકીહું
વહું અચરમ જાણવું. ચરમગંઠમાં રહેલા ચરમાન્ત પ્રદેશો અને અચરમગંઠમાં રહેલા અચરમાન્તપ્રદેશો જાણવા.

૩. હવે આ રત્નપ્રભાદિ પ્રત્યેકને વિશે ચરમ અને અચરમાદિ સંબંધી અલ્પયતુલ્ય કહેવાની રચ્છાયાલા સ્વકાર કહે છે- 'ઈમીસેણ

સાહિબાઈ, પપ્પસદ્યાગ ચરમંતપણસા અસંલેખ્યગુણા, અચરમંતપણસા અસંલેખ્યગુણા, ચરમંતપણસા ય અચરમંત-
પણસા ય દોચિ ચિસેસાહિઆ । ણ્યં જાવ અહેસત્તમાપ, સોહમ્મસ્મ જાવ લોગસ્સ ઇવં ચેવ ।

ચરમ લઈ છે, તેથી ચરમલહો અસંલેખ્યગુણા છે, તેથી અચરમલહ અને ચરમ લહો યલ્ને મલી વિશેષાધિક છે, તેથી પ્રદેશાર્થપણે
ચરમાન્તપ્રદેશો અસંલેખ્યગુણા છે, તેથી અચરમાન્તપ્રદેશો અસંલેખ્યગુણા છે. તેથી ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્તપ્રદેશો યલ્ને
મલીને વિશેષાધિક છે. ૫ પ્રમાણે યાવત્-નીચેની સાવત્રી નરકયુથિવી સુધી જાણ્યુ. સૌધર્મ-યાવત્-લોક સયથે પણ ૫મલ સમજવું.

રણણમાપ પુઢવીપ અચરમસ્સ ય ચરમણ ય'-આ રાજ્યમા પૃથિવીના અચરમ રાહ, ચરમલહો-ર્યાદિ પ્રમત્તજ સુગમ છે ઉચર
મ્મજમાં મીથી અલ્ય પ્રવ્યાર્થરૂપે આ રાજ્યમા પૃથિવીનો અચરમલહ છે ઘાથી ! કારણ કે તે પક છે. અહીં હેતુના અર્થમા પ્રથમા
વિમલ્કિ છે "નિમિત્ત કારણદેતુ સયાંસા વિમ્મન્નીનાં પ્રાયો દર્શનમ્" કારણ કે નિમિત્ત, કારણ અને હેતુનાં સર્વ વિમલ્કિઓ થાય છે
તેથી તેનો આ અર્થ છે-જેથી તથાવિધ પક સ્કન્ધના પરિણામ વઢે પરિણત છે માટે તે પક છે અને તેથી સૌથી અલ્ય છે તેથી જે
ચરમ મહો છે તે અસંલેખ્યગુણા છે કારણ કે તે અસંલેખ્યગુણા છે હવે અચરમલહ અને ચરમલહો યલ્ને મલી ચરમલહોનો તુલ્ય છે કે વિશે-
યાધિક છે? ૫ શકાના ઉત્તરમા કહે છે કે અચરમલહ અને ચરમલહો યલ્ને મલી વિશેષાધિક છે, કારણ કે જે અચરમલહ ચરમ
પ્રવ્યોમા નાલીપ પઢેલે ચરમ મલહોથી પક સલ્યા પઢે અધિક ઘણાથી સમુદાય વિશેષાધિક ઘાય છે પ્રદેશાર્થરૂપે વિચાર કરતાં સૌથી
ધોડા ચરમાન્તપ્રદેશો છે, કારણ કે ચરમલહો મલ્યમ ડહનત કરલો ઘણા સુદ્ધો છે, તેથી તેઓ અસંલેખ્યગુણા છતા તેઓના જે પ્રદેશો
છે તે મલ્ય લહના પ્રદેશો કરતા યાદુ ધોડા છે તે માટે અચરમલહો અસંલેખ્યગુણા છે કારણ કે અચરમ લણ્ડ મલ છે, તો પણ
ચરમ મલ્લના સમુદાયની અપેક્ષાપ ક્ષેત્રથી અમલ્લપાતગુણ છે અચરમાન્તપ્રદેશો કરતા ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્તપ્રદેશો
યલ્ને સમુદાય વિશેષાધિક છે કારણ કે અહીં ચરમાન્તપ્રદેશો અચરમાન્તપ્રદેશોની અપેક્ષાપ અસંલેખ્યગુણા માગમણ છે તેથી

४. अलोगस्स णं भंते ! अचरमस्य य चरमाण य चरमन्तपदेसाण य अचरमन्तपदेसाण य दब्बट्टयाए पए-
सट्टयाए दब्बट्टपएसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सब्ब-
त्थोवे अलोगस्स दब्बट्टयाए एगे अचरमे, चरमाई असंखिज्जगुणाई, अचरमं चरमाणि य दोचि विसेसाहियाई,
पएसट्टयाए सब्बत्थोवा अलोगस्स चरमन्तपदेसा, अचरमन्तपएसा अणन्तगुणा, चरमन्तपदेसा य अचरमन्त-

४. हे भगवन् ! अलोकना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्य-प्र-
देशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडो अलोकनो द्रव्यार्थपणे एक अचरम खंड छे, तेथी
चरम खंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो वन्ने मळीने विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडा अलोकना चर-
मान्तप्रदेशो छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो वन्ने मळीने विशेषाधिक छे. द्रव्यार्थ-

अचरमान्तप्रदेशोमां चरमान्तप्रदेशोको प्रक्षेप करीए पट्टले तेओ अचरमान्तप्रदेशोथी विशेषाधिक ज थाय. द्रव्यार्थप्रदेशार्थना
विचारमां 'अचरमं चरमाणि य दोचि विसेसाहियाई, चरमन्तपएसा असंखेज्जगुणा' चरमखंडो करतां अचरमखंड अने चरमखंडो
बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. पट्टले अचरम खंड अने चरम खंडोना समुदायथी चरमान्त प्रदेशो
असंख्यातगुणा छे. कारण के अहीं जे अचरम मंड छे ते असंख्यात प्रदेशावगाढ छतां एण द्रव्यार्थपणे एक छे, चरम खंडोमां तो
प्रत्येकना असंख्याता प्रदेशो छे, माटे चरम अने अचरम द्रव्यना समुदायथी चरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे. तेथी अचरमान्तप्रदेशो
असंख्यातगुणा छे, तेथी यंत चरम अने अचरम खंडना प्रदेशो मळी असंख्यातगुणा छे-इत्यादि बंधु पूर्वनी पेटे जाणवुं.

४. अलोकसूत्रमां प्रदेशार्थपणे सौथी थोडा अलोकना चरमान्तप्रदेशो छे, कारण के लोकना निफुट्टेने विपे ज तेओनो अन्त

પરેસા ય દોવિ વિસેસાહિયા; દબ્બટપ્પસટ્ટયાપ સન્બત્થોવે અલોગસ્સ પ્પી અચરમે, ચરમાઈ અસલેહ્હગુણાઈ, અ-
ચરમં ચ ચરમાણિ ય દોવિ વિસેસાહિયાઈ, ચરમન્તપ્પસા અસલેહ્હગુણા, અચરમન્તપ્પસા અપાન્તયુણા, ચરમન્ત-
પ્પાસા ય અચરમન્તપ્પસા ય દોવિ વિસેસાહિયા ।

૬. લોગાલોગસ્સ ણં મંતે ! અચરમસ્સ ય ચરમાણ ય ચરમન્તપ્પસાણ ય અચરમન્તપ્પસાણ ય દબ્બટ્ટયાપ
પ્પાસટ્ટયાપ દબ્બટ્ટપ્પસટ્ટયાપ ફપ્પરે કપ્પરેહિતો અપ્પા વા વહુયા વા, તુહ્હા વા વિસેસાહિયા વા ? ગોપમા ! સ-
પ્રદેશાર્થપ્પે-સૌથી થોહો અલોકનો એક અચરમ સંઠ છે, તેથી ચરમ સહો અસલ્યાત્તગુણા છે, તેથી અચરમ સંઠ અને ચરમ સંઠો
વચ્ચે મઠ્ઠી વિશેષાધિક છે, તેથી ચરમાન્તપ્રદેશો અસલ્યાત્તગુણા છે, તેથી અચરમાન્તપ્રદેશો અન્તવયુણા છે. તેથી ચરમાન્તપ્રદેશો અને
અચરમાન્તપ્રદેશો વચ્ચે મઠ્ઠી વિશેષાધિક છે.

૫ હે મગવન્ ! લોક અને અલોકના અચરમ સંઠ, ચરમ સંઠો, ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્તપ્રદેશોમાં દ્રવ્યાર્થરૂપે, પ્રદેશાર્થરૂપે અને
દ્રવ્યાર્થપ્રદેશાર્થરૂપે કોણ કોનાથી અલ્પ, વહુ, તુલ્ય કે વિશેષાધિક છે ? હે ગૌતમ ! સૌથી થોહો લોક અને અલોકનો દ્રવ્યાર્થરૂપે એક
હોય છે. તેથી અચરમાન્તપ્રદેશો અન્તવયુણા છે કારણ કે અલોક અન્ત છે તેથી સ્મુચિત્ત ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્તપ્રદેશો
વિશેષાધિક છે કારણ કે ચરમાન્તપ્રદેશો અચરમાન્તપ્રદેશોની અવેક્ષાપ્પ કલ્લમ્મા મલા જેટલા છે તેથી તેમીલો અચરમાન્તપ્રદેશપાશિમા
પ્રદેશ કરીય પટ્ટહે તેઓ અચરમાન્ત પ્રદેશોથી વિશેષાધિક જ થાય છે

૬. હચે લોક અને અલોકના સમુદાય વિષે પ્રશ્નસૂદ કરે છે—લોગાલોગસ્સ ણ મંતે ! અચરમસ્સ ય ચરમાણ ય-હે મગવન્ !

व्यत्योवे लोगालोगस्स दब्बट्टयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरमाइं विसे-
साहियाइं, लोगस्स य अलोगस्स य अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, पएसट्टयाते सब्बत्थोवा लो-
गस्स चरमन्तपदेसा, अलोगस्स चरमन्तपदेसा विसेसाहिया, लोगस्स अचरमन्तपएसअसंखेज्जगुणा, अलोगस्स
अचरमन्तपएसअणन्तगुणा, लोगस्स य अलोगस्स य चरमन्तपदेसा य अचरमन्तपदेसा य दोवि विसेसाहिया।
दब्बट्टपएसट्टयाए सब्बत्थोवे लोगालोगस्स दब्बट्टयाए एगमेगे अचरमे, लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलो-

एक अचरम खंड छे, तेथी लोकना चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना चरम खंडो विशेषाधिक छे, तेथी लोकनो अने अलोकनो
अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थरूपे सौथी थोडा लोकना चरमान्तप्रदेशो छे, तेथी अलोकना चरमान्त-
प्रदेशो विशेषाधिक छे, तेथी लोकना अचरमान्तप्रदेशो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे, तेथी लोकना
अने अलोकना चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. द्रव्यार्थप्रदेशार्थरूपे-सौथी थोडो लोक अने अलोकनो
द्रव्यार्थरूपे एक एक अचरम खंड छे, तेथी लोकना चरमखंडो असंख्यातगुणा छे, तेथी अलोकना चरम खंडो विशेषाधिक छे, तेथी

लोक अने अलोकना अचरमखंड, चरमखंडो इत्यादि संबंधे प्रश्नसूत्र सुगम छे. हवे तेनो उत्तर आपे छे—'हे गौतम' ! इत्यादि. लोकनो
अने अलोकनो एक एक अचरम-मध्यवर्ती गंड छे ते एक गोचाथी सौथी अल्प छे. तेथी लोकना चरमखंड द्रव्यो असंख्यातगुणा छे.
कारण के ते असंख्याता छे. तेथी अलोकना चरमखंडो विशेषाधिक छे. तेनुं कारण ए छे के अली यद्यपि लोकना चरमखंडो वास्त-
विक रीते असंख्याता छे, तो पण पूं वतावेळ पृथिवीनो स्थापनानी कल्पनाथी एक एक चार दिशाए अने एक एक चार विदिशामां

ગસ્ત ચરમાદં વિસેસાહિયાદં, લોગસ્ત ય અલોગસ્ત ય અચરમં ચરમાણિ ય દોવિ વિસેસાહિયાદં, લોગસ્ત ચર-
મન્તપદેસા અસંલેઙ્ગગુણા, અલોગસ્ત ય ચરમન્તપરસા વિસેસાહિયા, લોગસ્ત અચરમન્તપરસા અસંલેઙ્ગગુણા,
અલોગસ્ત અચરમંતપરસા અર્ણતગુણા, લોગસ્ત ય અલોગસ્ત ય અચરમન્તપરસા ય અચરમન્તપરસા ય દોવિ
વિસેસાહિયા, સન્ધવન્ધ્યા વિસેસાહિયા, સન્ધવપરસા અર્ણતગુણા, સન્ધવપ્જ્ઞવા અર્ણતગુણા ।

લોકના અને અલોકના અચરમ સ્વહ અને ચરમ સંહો વન્ધે મઢી વિશેષાધિક છે, તેથી લોકના ચરમાન્તપ્રદેશો અસંલ્યાતગુણા છે. તેથી
અલોકના ચરમાન્તપ્રદેશો વિશેષાધિક છે, તેથી લોકના અચરમાન્તપ્રદેશો અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી અલોકના અચરમાન્તપ્રદેશો અન-
ન્તગુણા છે, તેથી લોકના અને અલોકના ચરમાન્તપ્રદેશો અને અચરમાન્તપ્રદેશો વન્ધે મઢી વિશેષાધિક છે, તેથી સર્વ દ્રવ્યો વિશેષા-
ધિક છે, તેથી સર્વ પ્રદેશો અનન્તગુણા છે અને તેથી સર્વ પર્યાયો અનન્તગુણા છે.

પરમ માઠ કર્મણા અલોકના ચરમસંહો તેની સ્થાપનાની કર્મણાથીપક પક ચાર વિશામં અને વન્ધે ચાર વિશામં અને વન્ધે ચાર વિશામં એમ ચાર કર્મણા
ચાર માઠથીવમણાનથી, એમ વ્રણગુણાનથી, પરંતુ વિશેષાધિક છે તે અલોકના ચરમસંહોથીલોક અને અલોકના અચરમસંહો અને ચરમસંહો વન્ધે
મઢીને વિશેષાધિક છે, તે આ પ્રમાણે—લોકના ચરમસંહો પૂર્વે કહેલી કર્મણાથી માઠ અને પક અચરમસંહો વન્ધે મઢી નવ ધાય છે,
અલોકના ચરમસંહો ચાર અને પક અચરમસંહો મઢીને તેર ધાય છે લોક અને અલોક વન્ધેના પકઠા કર્મણાથી યાથીચ ધાય છે અને
તે ચારથી વમણા નથી, વ્રણગણા નથી, પરંતુ વિશેષાધિક છે માટે અલોકના ચરમસંહોથી સ્મુવિત લોકાલોકના ચરમાચરમ પંદ્રો
વિશેષાધિક છે પ્રવેશાર્થપણાના વિચારમા સૌથી યોઠા લોકના ચરમાન્તપ્રદેશો છે, કારણ કે માઠ સંહના જ પ્રવેશો હોય છે, તેથી
અલોકના ચરમાન્તપ્રદેશો વિશેષાધિક છે, તેથી પણ લોકના અચરમાન્તપ્રદેશો અસંલ્યાતગુણા છે, કારણ કે ક્ષેત્ર અતિચય ઘણુ હોવાથી

६. परमाणुपोगले णं भंते ! किं चरिमे १, अचरिमे २, अवत्तव्वए ३, चरमाइं ४, अचरमाइं ५, अवत्तव्व-
६. हे भगवन् ! परमाणुपुद्गलं एक. व. चरम १, ए. व. अचरम २, ए. व. अवत्तव्व ३, व. व. चरम ४, व. व. अचरम ५,

तेना प्रदेशो पण अतिशय घणा छे. तेथी पण अलोकना अचरमान्तप्रदेशो अनन्तगुणा छे. कारण के क्षेत्र अनन्तगुण छे. तेथी पण लोकना चरमान्तप्रदेशो, अचरमान्तप्रदेशो, अलोकना चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो मळी विशेषाधिक छे, कारण के अही अलोकना अचरमान्तप्रदेशराशिमां लोकना चरमाचरमान्तप्रदेशो अने अलोकना चरमान्तप्रदेशो नांखीए अने तेओ वधा मळीने पण असंख्याता थाय, अने ते अनन्त राशिनी अपेक्षाए अत्यन्त थोडा छे, माटे तेने नांखवा छतां पण अलोकना अचरमान्तप्रदेशोथी विशेषाधिक ज थाय. पने अबुसारे द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थना विचारनुं सूत्र स्वयं विचारुं. पण लोकालोकना चरमाचरम तंडोथी लोकना चरमान्तप्रदेशो असंख्यातागुणा छे. कारण के लोकना चरमखंडो आठ कहपेला छे. अने एक एक खंडमां असंख्याता प्रदेशो छे. लोकालोकना चरमाचरमखंडो मळी वाचीश कहपेला छे, माटे लोकालोकना चरमाचरम रंडोथी लोकना चरमान्तप्रदेशो असंख्यातागुणा छे. बाकीना पदनी भावना पूर्वनी पेटे जाणवी. तेथी 'सब्वद्व्या विसैसाहिया' सर्वं द्रव्यो विशेषाधिक छे. एटले लोकालोकना चरमाचरमान्त-प्रदेशो करतां सर्वं द्रव्यो विशेषाधिक छे. कारण के अनन्तान्त जीवो, तथा परमाणुथी मांडी अनन्त परमाणु सुधीना प्रत्येक अनन्त स्कन्धो भिन्न भिन्न द्रव्यरूप छे. तेथी सर्वं प्रदेशो अनन्तगुणा छे, अने तेथी सर्वं पर्यायो अनन्तगुणा छे. कारण के दरेक प्रदेशे स्वपर्यायो अने परपर्यायो अनन्त छे. ए प्रमाणे चरम अने अचरमना मेदथी रत्नप्रभादिनो विचार कयों.

६. हवे परमाणु आदिनो विचार करे छे—'परमाणु पोगले ण भंते !'-हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल-इत्यादि आ प्रश्नसूत्रमां छव्वीश भांगा छे. ते आ प्रमाणे—चरम, अचरम अने अवत्तव्व ए व्रण पदो छे. तेओमां एक एकना संयोगे एकवचनना व्रण भांगा थाय छे. जेमके—१ चरम, २ अचरम, ३ अवत्तव्व. अने व्रणवचनना पण व्रण भांगा थाय छे. जेमके—१ व. व. चरम, २ व. व.

याई ६, उदाहृ चरिमे य अचरिमे य ७, उदाहृ चरमे य अचरमाई ८, उदाहृ चरमाई अचरमे य ९, उदाहृ चर-
माई च अचरमाई च १०, पदमा चउमंगी । उदाहृ चरिमे य अवत्तव्वए य ११, उदाहृ चरमे य अवत्तव्वयाई च
१२, उदाहृ चरमाई च अवत्तव्वए य १३, उदाहृ चरमाई च अवत्तव्वयाई च १४, पीया चउमंगी । उदाहृ अच-
रिमे य अवत्तव्वए य १५, उदाहृ अचरमे य अवत्तव्वयाई च १६, उदाहृ अचरमाई च अवत्तव्वए य १७, उदाहृ
अचरमाई च अवत्तव्वयाई च १८, तइया चउमंगी । उदाहृ चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, उदाहृ चरमे

अने व. व. अवक्तव्य छे ६ । अथवा ए. व. चरम अने ए. व. अचरम ७, अथवा ए. व. चरम अने व. व. अचरम ८, अथवा व. व. चरम
अने ए. व. अचरम ९, अथवा व. व. चरम अने व. व. अचरम छे १० । प्रथम चार मागा थया. अथवा ए. व. चरम अने ए. व.
अवक्तव्य ११, अथवा ए. व. चरम अने व. व. अवक्तव्य १२, अथवा व. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य १३, अथवा व. व. चरम
अने व. व. अवक्तव्य १४ छे । वीजी चउमंगी. अथवा ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १५, अथवा ए. व. अचरम अने व. व.
अवक्तव्य १६, अथवा व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १७, अथवा व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य छे १८ । वीजी चौमंगी

अचरम, ३ य थ अवक्तव्य यथा मळीने एक सयोगना छ मागाभो यथा ह्वे चरम, अचरम अने भवक्तव्य पदना त्रण द्विकसंयोगो
थाय छे जेमके—१ चरम अने अचरम पदतो प्रथम चरम अने अथस्तव्य पदतो वीजो, अचरम अने अथस्तव्य पदतो वीजो अने
तेमाला एक एक द्विकसंयोगना घाट मागाभो थाय छे तेमां प्रथम द्विकसंयोगना आ प्रमाणे मागाभो थाय छे-१ ए य चरम अने
ए. य अचरम, २ ए य चरम अने य थ अचरम, ३ य च चरम अने ए य अचरम, ४ य च चरम अने य च अचरम

य अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २०, उदाहु चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१, उदाहु चरमे य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२, उदाहु चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वए य २३, उदाहु चरमाइं च अचरमे य अवत्तव्वयाइं च २४, उदाहु चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५, उदाहु चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । एते छब्बीसं भंगा । गोयमा ! परमाणुपोगले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अवत्तव्वए, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ।

अथवा ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य १९, अथवा ए. व. चरम, ए. व. अचरम, अने व. व. अवक्तव्य २०, अथवा ए. व. चरम, व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २१, अथवा ए. व. चरम, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य २२, अथवा व. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २३, अथवा व. व. चरम ए. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य २४, अथवा व. व. चरम, व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य २५, अथवा व. व. चरम, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य २६ ? ए छब्बीश भांगा थाय छे. हे गौतम ! परमाणु पुद्गल चरम नथी, अचरम नथी पण अवश्य अवक्तव्य छे. बाकीना भांगाओनो प्रतिषेध करवो.

ए प्रमाणे चरम अने अवक्तव्य पदना चार भांगा अने अचरम अने अवक्तव्य पदना पण चार भांगा करवा. सर्व मळी द्विकसंयोगना चार भांगाओ थाय छे. त्रिकसंयोगना एकवचन अने बहुवचनने आश्रयी आठ भांगाओ थाय छे. सर्व मळीने छब्बीश भांगाओ थाय छे. अर्ही भगवाच् उत्तर आपे छे-‘परमाणुपोगले नो चरमे, नो अचरमे, नियमा अक्तव्वएय’ इत्यादि. परमाणु-पुद्गल चरम नथी. कारण के चरमपणुं बीजानी अपेक्षाए होय छे, परंतु अपेक्षा राखवा योग्य अन्य पदार्थनी विवक्षा नथी, वळी परमाणु सांश-अवयववाळो

३. गुणप्रसिद्धि नं भंते । स्वधे गुञ्जा । गोयसा । गोयसा ! सुययसिद्धि संधे सिद्धि चरमे, नो अचरमे, सिद्धि अयसस्यया ।

तेसा भंगा पदितेदेयञ्जा ।

७. हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्वल्प संपन्नो प्रभ. हे गौतम ! द्विप्रदेशिक स्वल्प पदान ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय ३, पदान ए. व. अस्फलय्य होय ३. पाकीना भोगाओंनो प्रतिषेध करयो।

होय ३, पदान ए. व. अस्फलय्य होय ३. पाकीना भोगाओंनो प्रतिषेध करयो।

कभी, त्रैकी अस्फलय्यी भंगेसाए तेऽ चरमण्यु वस्ती उक्ताए. माटे परमाणु मायययहित होयायी चरम कभी, तेम अचरम एण कभी काण के न अयययहित होयायी तेनुं अययण्यु कभी, यंत्रु अस्फलय्य है, पाण के चरम के अचरम व्ययकारु काण गति होयायी परमशास्त्री के अस्फलय्यणी तेमो व्ययकार एवो अस्फलय्य है जे अस्फलय्ये कभी उक्ताए ते एस्फलय्य, एण जे चरमण्यु के अचरम अस्फलय्ये पोलयोगाना प्रवृत्तिनिमित्त गहित होयायी कभी न उक्ताए ते अस्फलय्य कहेयाए है पाकीना भोगाओंनो प्रतिषेध करयो काण के परमाणुमां तेभांते अस्फलय्य ३ व कभे कहेयासां आपते के 'परमाणुमि ए तारमो-परमाणुमां त्रीजो भंगो होय है एलो अर्थ ए है के परमाणुना विचारमां त्रीजो भंगो प्राण है, पाकीना भोगाओं अययययहित होयायी प्रतिषेधयोग्य है

७ 'दुष्कर्मिण ए भंते'-हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्वल्प '-एयादि प्रभगुन पूर्वयत् जानु हरे उक्त कहे है-'सिय चरमी, जो अचरमे, सिय अस्फलय्य' चरण चरम होय, अचरम न होय, चरण अस्फलय्य होय-एयादि द्विप्रदेशिक स्वल्प चरायित् चरम होय, हेकी हीने होय ! उक्ता-एयादे द्विप्रदेशिक स्वल्प समधेसिद्धि एवेना ये आराशयदेसोमां रहेलो होय है, व्याना-०० एयादे एक चरमाणु बीजा परमाणुनी अस्फलय्य चरम है, धने बीजो एण बीजा परमाणुनी अस्फलय्य चरम है, माटे 'करायित् चरम होय अचरम जालो कभी, चरण के गर्भ दुष्कर्मो एण केवल अचरमाणु होतु कयो एयादे द्विप्रदेशिक स्वल्प एक आराशयदेसोमां रहे है एयादे न तथाविध वक्य एणिनामापदे गणिता एयेते होयायी परमाणुनी पेडे चरम धने अचरमना व्ययकाराना कारणो

८. तिपएसिणं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! तिपएसिणं खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अव्वत्त-
व्वाए ३, नो चरमाइं ४, नो अचरमाइं ५, नो अवत्तव्वयाइं ६, नो चरमे य अचरमे य ७, नो चरमे य अचरमाइं
८, सिणं चरमाइं च अचरमे य ९, नो चरमाइं च अचरमाइं च १०, सिय चरमे य अवत्तव्वए य ११. सेसा भंगा
पडिसेहेयव्वा ।

८. हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम
न होय २, कदाच ए. व. अवक्तव्य होय ३, व. व. चरम न होय ४, व. व. अचरम न होय ५, व. व. अवक्तव्य न होय ६,
ए. व. चरम अने ए. व. अचरम न होय ७, ए. व. चरम अने व. व. अचरम न होय ८, कदाच व. व. चरम अने ए. व. अचरम
होय ९, व. व. चरम अने व. व. अचरम न होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवक्तव्य होय ११. वाकीना भांगाओनो
प्रतियेध करवो.

अमाव होवाने लीधे तेनो चरम शब्द वडे के अचरम शब्द वडे व्यग्रहार करवो अशक्य छे. ते सिवाय वाकीना
भांगाओनो प्रतियेध करवो. ए संबन्धे आगळ कहेवामां आचरो के 'पढमो तइओ य होइ दुपणसे'. पहिलो अने त्रीजो भांगो छिप्रदेशिकमां
होय छे. तेनो अर्थ आ छे—छिप्रदेशिक स्कन्धमां पहिलो भांगो 'चरम' अने त्रीजो भांगो 'अवस्तव्य' होय छे, अने वाकीना भांगाओ
असंभविता होवाथी नियोध करवा योग्य छे, अने तेनो असंभव सुप्रसिद्ध छे.

८. 'तिपएसिणं भंते'—हे भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध इत्यादि प्रश्नसुत्र पूर्वनी पठे जाणुं. उत्तर—'गोयमा ! सिय चरमे'-
हे गौतम ! कदाच चरम होय-इत्यादि. त्रिप्रदेशिक स्कन्ध ज्यारे समश्रेणिप रहेला ते आकाश प्रदेशमां अयगाढ-रहेलो होय छे.

स्थापना-००.०। त्पारे ते चरम होय छे तेना चरमपणानो विचार द्विप्रदेशिक स्कन्धनी घंटे जाणवो अचरमपणानो प्रतिवेध पूर्वनी घंटे जाणवो. 'स्याद् अवस्तव्य' कदाच अवक्तव्य होय ज्यारे ते त्रिप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे त्पारे परमाणुनी घंटे चरम के अचरमना व्यवहारानु कारण नहि होवायी चरम के अचरम शब्द घटे व्यवहार करवो अशक्य होयाने लीये अवक्तव्य छे कोयायी माडी आठमा सुधीना भागाओ प्रतिवेध करवा योग्य छे कारण के तेओनो अस्तंभ छे, अने ते अस्तंभ प्रबिद्ध होवायी स्वय विचारीने कहेओ भवमो भांगो ग्रहण करयो, ते कहे छे- 'सिय चरमादे अचरमे य' कदाचित् य प चरम अने प प अचरम होय प्राकृत भाषामा ये संख्या होय त्या पण शब्दचन पपराय छे तेथी तेनो आ अर्थ थाय छे- स्यात्-कदाचित् ये चरम होय अने एक अचरम होय ज्यारे त्रिप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिय रहेला प्रण आकाशप्रदेशोमा रहे छे, स्थापना-००० त्पारे आविनो अने अन्तनो एक एक परमाणु अन्ते होवायी 'चरमो'-ये परमाणुओ चरम छे, अने घञ्चेनो परमाणु मध्यमा रहेलो होवायी अचरम छे वलमो भांगो प्रतिवेध करवा योग्य छे कारण के स्कन्ध त्रिप्रदेशिक होवायी चरम अने अचरम शब्दमा शब्दचनना कारणनो अस्तंभ छे अगियारमो भांगो ग्रहण करवा योग्य छे ते कहे छे- 'सिय चरमे य अवस्तव्य य'-कदाच चरम अने अवक्तव्य भग होय तेमां ज्यारे त्रिप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणिय आ प्रमाणे रहेलो होय छे, स्थापना ००० त्पारे ये परमाणु समश्रेणिय रहेला होवायी त्रिप्रदेश्यावगाढ द्विप्रदेशिक स्कन्धनी घंटे चरमव्यपदेशानु कारण होवायी 'चरम' चरम छे अने एक परमाणु विश्रेणिमा रहेल्ये छे, तेथी तेनो चरम के अचरम शब्द घटे व्यवदेश-व्यवहार करवो अशक्य होवायी अवक्तव्य छे घाकीना यथा भागाओनो प्रतिवेध करयो ते संख्ये इमणाज कहेयामा आवशे के 'पढमो तइमो नवमो इककारममो य तिपपत्ते' त्रिप्रदेशिक स्कन्धमां पहेलो, त्रीजो, नवमो अने अगिया-रमो भांगो होय छे पढले प्रथम भग 'चरम' त्रीजो 'अवक्तव्य' नवमो 'चरमो च अचरमद्य' ये परमाणुओ चरम अने एक अचरम अने अगियारमो 'चरम अने अवक्तव्य' प भागाओ घंटे छे वाकीना भांगो घटता नथी

૧. ચડપણસિં ણં મંતે ! લંધે પુચ્છા ! ગોયમા ! ચડપણસિં ણં લંધે સિય ચરમે ૧, નો અચરમે ૨, સિય અવત્તવ્વણ ૩, નો ચરમાઈ ૪, નો અચરમાઈ ૫, નો અવત્તવ્વયાઈ ૬, નો ચરમે ય અચરમે ય ૭, નો ચરમે ય અ-

૧. હે ભગવન્ ! ચતુઃપ્રદેશિક સ્કન્ધ સંવન્ધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! ચતુઃપ્રદેશિક સ્કન્ધ કદાચ એ. વ. ચરમ હોય ૧, એ. વ. અચરમ ન હોય ૨, કદાચ એ. વ. ચરમ ન હોય ૩, વ. વ. અચરમ ન હોય ૪, વ. વ. અચરમ ન હોય ૫, વ. વ. અવક્તવ્ય ન હોય

૧. 'ચડપણસિં ણં મંતે ! લંધે'—હે ભગવન્ ! ચતુઃપ્રદેશિક સ્કન્ધ' इत्यादि प्रश्नस्य पूर्ववत् जाणुं इवे उत्तर कहे छे—'हे गौतम ! कदाच चरम होय' इत्यादि. अहीं पहिलो, त्रीजो, नवमो, दसमो, अगियारमो, बारमो अने त्रेवीशमो—ए सात भंगा ग्रहण करवा अने वाकीनानो प्रतिषेध करवो. तेमां पहिलो भंग आ छे—'स्याचरम' इति—कदाचित् चरम होय. ज्यारे चतुःप्रदेशिक स्कन्ध सम-श्रेणिप रहेला वे आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहेलो होय, स्थापना—'००००' त्यारे चरम भंग होय छे. अने ते चरमणानो विचार समश्रेणिप रहेला वे आकाशप्रदेशमां अवगाढ छिप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे जाणवो. त्रीजो भंग—'स्याव्यक्तव्यः' इति—कदाचित् अव्यक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे—ज्यारे तेज चतुष्पदेशिक स्कन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे, स्थापना—'००००' त्यारे परमाणुनी पेठे अव्यक्तव्य छे. नवमो भंग—'स्यात् चरमौ चाचरमश्च' वे परमाणुओ चरम अने एक अचरम होय. ते आ प्रमाणे—ज्यारे तेज चतुष्पदेशिक स्कन्ध त्रण आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना—'००००' त्यारे प्रथम अने अन्तिम प्रदेशमां अवगाढ 'चरमौ' वे परमाणुओ चरम अने मध्य प्रदेशमां अवगाढ परमाणु अचरम होय छे. दसमो भंग—'स्याद् चरमौ च अचरमौ च' वे परमाणुओ चरम होय अने वे अचरम होय. तेमां ज्यारे चतुष्पदेशिक स्कन्ध समश्रेणिप रहेला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे. स्थापना—'००००' त्यारे आविना अने अन्तना वे प्रदेशमां रहेला 'चरमौ' वे परमाणुओ चरम अने मध्यना वे आकाश प्रदेशमां रहेला 'अचरमौ' वे परमाणुओ अचरम

ચરમાઈં ચ ૮, સિય ચરમાઈં અચરમે ય ૬, સિય ચરમાઈં ચ અચરમાઈં ચ ૧૦, સિય ચરમે ય અવત્ત્વ્વપ ય ૧૧,
સિય ચરમે ય અવત્ત્વ્વપાઈં ચ ૧૨, નો ચરમાઈં ચ અવત્ત્વ્વપ ય ૧૩, નો ચરમાઈં ચ અવત્ત્વ્વપાઈં ચ ૧૪, નો
અચરમે ય અવત્ત્વ્વપ ય ૧૫, નો અચરમે ય અવત્ત્વ્વપાઈં ચ ૧૬, નો અચરમાઈં ચ અવત્ત્વ્વપ ય ૧૭, નો અ-
૬, ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૭, ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૮, કદાચ ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ
હોય ૯, કદાચ ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ હોય ૧૦, કદાચ ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ હોય ૧૧, કદાચ ઇ. વ. ચરમ
અને ઇ. વ. અવત્ત્વ. હોય ૧૨, ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૧૩, ઇ. વ. ચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૧૪,
ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૧૫, ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્ત્વ ન હોય ૧૬, ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ.

હોય છે યગિયારમો મજ્ઞ-‘સ્યાત્ ચરમ્ અથસ્તવ્યઃ’-કર્તાચિત્ ચરમ અને અથસ્તવ્ય હોય તે આ પ્રમાણે-જ્યારે ચતુષ્પવેદિક
સ્વરૂપ ત્રણ આકાશપ્રવેશોમાં સમથેણિ અને વિથેણિ વડે આ પ્રમાણે રહે છે; સ્થાપના-૦૦૦૦ ત્યારે સમથેણિમાં રહેલા ૧ બે આકાશ-
પ્રવેશમાં અપગાઢ ત્રણ પરમાણુઓ બે આકાશપ્રવેશમાં રહેલા દ્વિપવેદિક સ્વરૂપની વેટે ચરમ-૦૧ હોય છે, અને એક વિથેણિમાં રહેલો
પરમાણુ ચરમ અને અવત્ત્વ શબ્દ વડે સ્વપદેશ કરવાને અગત્ય હોવાથી પરમાણુની વેટે અપક્તવ્ય છે ચારમો-મગ-‘ચરમઃ અપક્ત-
વ્યો ચ’ એક ચરમ અને બે અવત્ત્વ હોય તે આ પ્રમાણે-જ્યારે તે ચતુષ્પવેદિક સ્વરૂપ ત્રણ આકાશપ્રવેશમાં આથી રીતે રહે છે-
સમથેણિય રહેલા બે આકાશપ્રવેશમાં બે પરમાણુઓ, અને વિથેણિય રહેલા બે આકાશપ્રવેશમાં બે પરમાણુઓ, સ્થાપના-૦૧૦૧ ત્યારે
સમથેણિય રહેલા બે પરમાણુ બે આકાશપ્રવેશમાં રહેલા દ્વિપવેદિક સ્વરૂપની વેટે ચરમ છે અને વિથેણિયા રહેલા બે ૦૧૦૧ પરમાણુ
કેવલ પરમાણુની વેટે ચરમ અને અવત્ત્વ શબ્દ વડે સ્વપદેશ કરવાને અગત્ય હોવાથી અથસ્તવ્ય છે ત્રેવીશમો મગ-‘સ્યાત્ ચરમો ચ

चरमाईं च अवत्तव्वयाईं च १८, नो चरमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्व-
याईं च २०, नो चरमे य अचरमाईं च अवत्तव्वए य २१, नो चरमे य अचरमाईं च अवत्तव्वयाईं च २२, सिय
चरमाईं च अचरिमे य अवत्तव्वए य २३ । सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ।

१०. पंचपएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा । गोयमा ! पंचपएसिए खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अव-
अवक्तव्य न होय १७, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय १८, ए. व. चरम, अचरम अने अवक्तव्य न होय १९, ए. व.
चरम, अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय २०, ए. व. चरम, व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय २१, ए. व. चरम,
व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय २२, कदाच व. व. चरम, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य होय २३. वाकीना
भांगाओनो प्रतिपेघ करवो.

१०. हे भगवन् ! पंचप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! पंचप्रदेशिक स्कन्ध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम न होय
अचरमअथ अवक्तव्यश्च' वे चरम, एक अचरम अने एक अवक्तव्य. केवी रीते छे ? आ प्रमाणे छे-त्यारे चतुष्पदेशिक स्कन्ध चार आ-
काशप्रवेशमां आ प्रमाणे रहे छे-समथेणि रहेला न्नण आकाशप्रवेशमां न्नण परमाणुओ, अने विथेणि रहेला एक आकाशप्रवेशमां
एक परमाणु. स्थापना- | ० | त्यारे समथेणि रहेला न्नण परमाणुमां प्रथम अने अन्तिम परमाणु अन्ते रहेला होवाथी 'चरमो'-अने
परमाणुओ चरम, मध्यम, ०, ०, ० | परमाणु अचरम अने विथेणिमां रहेलो एक परमाणु अवक्तव्य होय छे. ए संबन्धे कदेवामां आवशे के-

“ पढमो तरुओ नवमो दसमो इकारत्तो य वारसमो । भग्ना चउपपसे तेवीसमो य वोद्धव्यो ”
चतुष्पदेशिक स्कन्धमां पहेलो त्रीजो, नवमो, दसमो, अगियारमो, वारमो अने त्रेशवीमो-ए सात भंगो जाणवा.

राव्यए ३, जो चरमाई ४, जो अचरमाई ५, जो अवत्तव्ययाई ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, जो चरमे य अ-
चरमाई च ८, सिय चरमाई च अचरमाई च ९, सिय चरमाई च अचरमाई च १०, सिय चरमे य अवत्तव्यए य
११, सिय चरमे य अवत्तव्ययाई च १२, सिय चरमाई च अवत्तव्ययाई च १३, जो चरमाई च अवत्तव्ययाई च १४,
२, कदाच ए. य. अवक्तव्य होय ३, य. व. चरम न होय ४, य. व. अचरम न होय ५, य. व. अवक्तव्य न होय ६, कदाच ए. य. चरम
अने ए. य. अचरम होय ७, ए. व. चरम अने य. व. अचरम न होय ८, कदाच य. व. चरम अने ए. य. अचरम होय ९, कदाच य. व.
चरम अने य. व. अचरम होय १०, कदाच ए. य. चरम अने ए. य. अवक्तव्य होय ११, कदाच ए. य. चरम अने य. व. अवक्तव्य होय १२,
चरमे अने य. व. अचरम होय १३, कदाच ए. य. चरम अने ए. य. अवक्तव्य होय १४, कदाच ए. य. चरम अने ए. य. चरमे

१० पंचपसिप ण मते'। हे मगवत्! पंचप्रदेशिक स्कन्ध इत्यादि प्रश्नश्च पूर्वैयत् जाणशु उत्तर कष्टे छे-हे गौतम! 'सिय चरमे'
कदाचित् चरम होय' इत्यादि अही पहेळो, त्रीजो, सातमो, नवमो, वसमो, अगियारमो, धारमो, तेरमो, त्रेवीशमो, सोवीशमो अने
पचीशमो—ए अगियार भागा ग्रहण करया अने याकीनानो प्रतिषेध फरयो प संयधे कहेहो के-

“पढमो तरमो सचमनयवसराकारात्तेरसमो। तेवीसचउचीसा पणवीसामो य पचमप”

तेमां आ पहेलो मङ्ग छे—'स्यात् चरम' कदाचित् चरम होय ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समर्थेणिए रहेला ते आकाशप्रदेशमां
आ रीते रहे छे-त्रण परमाणुमो एक आकाशप्रदेशमां अने बे, परमाणुमो बीजा आकाशप्रदेशमां, स्यापत्—००००००, स्यारे धे प्रवेशमां
रहेला द्विप्रदेशिक स्कन्धनी पेटे चरम मङ्ग थाप छे त्रीजो अयक्तव्य मङ्ग छे ते आ प्रमाणे-ज्यारे ते पंचप्रदेशिक स्कन्ध एक आकाश-
प्रदेशमा आ प्रमाणे रहे छे, स्यापत्—०००००० स्यारे ते परमाणुनी पेटे अयक्तव्य छे सातमो मङ्ग-चरमम्य ० अचरमम्य' चरम अने
अचरम होय ते आ प्रमाणे-ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध पाच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे स्यापत्—०००००० स्यारे पर्यन्तवर्ती
चार परमाणुमो एक स्कन्ध संयन्धी परिणामयठे परिणत होवाची अने एक पण, एक रस अने एक समान ०। स्पंशंवाला हो-

नो अचरमे य अवत्तव्वए य १५, नो अचरमाई च अवत्तव्वयाई च १६, नो अचरमाई च अवत्तव्वए य १७, नो अचरमाई च अवत्तव्वयाई च १८, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरमे य अचरमे य अवत्तव्वयाई च २०, नो चरमे य अचरमाई च अवत्तव्वयाई च २१, नो चरमे य अचरमाई च अवत्तव्वयाई च २२, सिय

कदाच व.व. चरम अने ए.व. अवक्तव्य होय १३, व.व. चरम अने व.व. अवक्तव्य न होय १४, ए.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १५, ए.व. अचरम अने व.व. अवक्तव्य न होय १६, व.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १७, व.व. अचरम अने व.व. अवक्तव्य न होय १८, ए.व. चरम ए.व. अचरम अने ए.व. अवक्तव्य न होय १९, ए.व. चरम, ए.व. अचरम अने व.व. अवक्तव्य न होय २०, ए.व. चरम व.

वाथी एकत्वनी व्यवहार थाय छे माटे 'चरम' अने मध्य परमाणु वळचे रहिलो होवाथी 'अचरम' कहेवाय छे. नवमो भङ्ग-चरमो च अचर-मध्य'-वे चरम अने एक अचरम. ते आ प्रमाणे-तेमां ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणि रहेला त्रण आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-प्रथम आकाशप्रदेशमां वे परमाणुओ, अन्तिम आकाशप्रदेशमां वे परमाणुओ अने वळचे एक परमाणु, स्थापना ००|०|०० ज्यारे प्रथम आकाशप्रदेशमां रहला वे परमाणु चरम अने छेला आकाशप्रदेशमां रहला वे परमाणुओ चरम पम 'चरमो' वे चरम अने मध्य परमाणु वळचे रहिलो होवाथी अचरम कहेवाय छे. दसमो भङ्ग-चरमो च अचरमो च-वे' चरम अने वे अचरम होय. तेमां ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समश्रेणिप रहला चार आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-त्रण आकाशप्रदेशमां त्रण परमाणुओ अने एक आकाशप्रदेशमां वे परमाणुओ, स्थापना-०|०|०|०० ज्यारे प्रथम प्रदेशमां रहेनार परमाणु चरम, अने छेला प्रदेशमां रहेनार वे परमाणुओ चरम पम वे चरम अने वे मध्यमां रहला होवाथी वे अचरम कहेवाय छे. अगियारमो भङ्ग-चरममध्य अवक्तव्यश्च'-चरम अने अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशात्मक स्कन्ध समश्रेणि अने विश्रेणि रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां आ प्रमाणे रहे छे-

ચરમાઈં ચ અચરમે ય અવત્તવ્વયાઈં ચ ૨૩, સિય ચરમાઈં ચ અ-
ચરમાઈં ચ અવત્તવ્વપ્ ય ૨૫, નો ચરમાઈં ચ અચરમાઈં ચ ૨૬ ।

વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય ન હોય ૨૧, ઇ. વ. ચરમ વ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય ન હોય ૨૨, કદાચ વ. વ. ચરમ
ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય હોય ૨૩, કદાચ વ. વ. ચરમ ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય હોય ૨૪, કદાચ વ. વ.
ચરમ ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય હોય ૨૫, વ. વ. ચરમ વ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય ન હોય ૨૬.

ચરમ ઇ. વ. અચરમ અને ઇ. વ. અવત્તવ્ય હોય છે, સ્થાપના—૦૦૦૦ ત્યારે ચાર પરમાણુઓ
સમથ્રેણિ રહેલા છે આકાશપ્રવેશમા યલ્લે પરમાણુ અને ઇક પરમાણુ વિથેણિમા હોય છે, સ્થાપના—૦૦૦૦ વિથેણિમા રહેલો પરમાણુ
વે આકાશપ્રવેશમા રહેલા હોવાથી વે પ્રવેશમાં રહેલા ક્ષિપ્રવેશિક સ્કન્ધની વેટે ચરમ અને ઇક
અવત્તવ્ય હોય છે યારો મજ્જ-ચરમઘ અવત્તવ્યો ઘ' ચરમ અને ઇક અવત્તવ્ય હોય તેમાં જ્યારે તે પદ્મપ્રવેશિક સ્કન્ધ સમથ્રેણિ
કે વિથેણિમાં રહેલા ચાટ આકાશપ્રવેશમાં આ રીતે રહે છે—સમથ્રેણિ રહેલા છે આકાશપ્રવેશમાં ૦ વે પરમાણુઓ, ઇક વિથેણિમા
રહેલા આકાશપ્રવેશમાં, અને વિથેણિમાં રહેલા અન્ય આકાશપ્રવેશમા વે પરમાણુઓ, સ્થાપના—૦૦ ત્યારે સમથ્રેણિપ રહેલા હોવા
જુદા આકાશપ્રવેશમાં વે પરમાણુ વે આકાશપ્રવેશમા રહેલા ક્ષિપ્રવેશિક સ્કન્ધની વેટે ચરમ ૦૦ અને વિથેણિમા રહેલા હોવા
આકાશપ્રવેશમાં ઇક અને ઇક વે પરમાણુઓ 'અવત્તવ્યો ઘ' વેટે અવત્તવ્ય છે તેઓ મજ્જ-ચરમો ઇક અવત્તવ્યઘ' વે
જુદા ઇક ઇક આકાશપ્રવેશમાં અલગ ઇક અને ઇક વે પરમાણુઓ આ પ્રમાણે રહે છે—વે પરમા
ચરમ અને ઇક ઇક અવત્તવ્ય હોય તેમા જ્યારે પદ્મપ્રવેશલગદ પદ્મપ્રવેશિક સ્કન્ધ પાચ આકાશપ્રવેશમાં આ પ્રમાણે રહે છે—વે પરમા
ણુઓ સમથ્રેણિ રહેલા, ડપરના વે આકાશપ્રવેશમા રહેલા છે અને તે જ પ્રમાણે નીચેના વે આકાશપ્રવેશમા વે પરમાણુઓ છે અને
મધ્યની સમથ્રેણિમા ઇક છેલ્લો પરમાણુ છે, સ્થાપના—૦૦૦૦ ત્યારે વે ડપરના પરમાણુઓ વે પ્રવેશમા રહેલા ક્ષિપ્રવેશિક સ્કન્ધની

११. छप्पएसिए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा । छप्पएसिए णं खंधे सिय चरमे १, नो अचरमे २, सिय अवत्त-
११. हे भगवन् ! छप्रदेशिक स्कंध संवन्धे पृच्छा. हे गौतम ! छप्रदेशिक स्कंध कदाच ए. व. चरम होय १, ए. व. अचरम

पेठे चरम अने नीचेना वे परमाणुओ चरम वद्वे मळी 'चरमो' वे चरम अने एक केवल परमाणुनी पेठे अवक्तव्य छे. चोवीशमो भङ्ग-चरमो च अचर-
मध्य अवक्तव्यश्च'-वे चरम, अचरम अने अवक्तव्य. ते आ प्रमाणे छे. ज्यारे पञ्चप्रदेशिक स्कन्ध समथ्रेणि अने चित्रेणिमां रहेला चार आकाशप्रदे-
शमां आ प्रमाणे रहे छे-समथ्रेणिए रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां प्रथम आकाशप्रदेशने विषे एक परमाणु, मध्य आकाशप्र [०]देशमां वे परमा-
णुओ, त्रीजा आकाशप्रदेशमां एक परमाणु अने चित्रेणिमां रहेला चोथा आकाशप्रदेशमां एक परमाणु छे, स्थापना-[०|००|०] त्यारे त्रण
आकाशप्रदेशमाना आवि अने अन्तना आकाशप्रदेशमां रहेला वे परमाणुओ 'चरमो' वे चरम, मध्यप्रदेशावगाढ वे परमाणुओनो समूह
मध्यवर्ती होवाथी अचरम अने चित्रेणिमां रहेलो एक परमाणु अवक्तव्य छे. चोवीशमो भङ्ग-चरमो च अचरमध्य अवक्तव्यो च'
वे चरम, एक अचरम अने वे अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशिक स्कन्ध समथ्रेणि अने चित्रेणिथी रहेला पांच
आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे-समथ्रेणिए [०] रहेला त्रण आकाशप्रदेशोमां त्रण परमाणुओ अने चित्रेणिमां रहेला वे
आकाशप्रदेशमां वे परमाणुओ, स्थापना-[०|०|०] त्यारे त्रण आकाशप्रदेशोमाना प्रथम अने अन्तिम प्रदेशमां रहेनार 'चरमो'-वे
परमाणुओ त्रे चरम, मध्य अचरम अने चित्रे- [०] णिमां रहेला वे परमाणुओ 'अवक्तव्यो' यन्ने अवक्तव्य होय छे. पचीशमो भङ्ग-चरमो
च अचरमो च अवक्तव्यश्च.' वे चरम, वे अचरम अने एक अवक्तव्य होय. ते आ प्रमाणे-ज्यारे पंचप्रदेशिक स्कन्ध समथ्रेणि अने
चित्रेणिमां रहेला पांच आकाशप्रदेशमां आ रीते रहे छे-समथ्रेणिए [०] रहेला चार आकाशप्रदेशोमां चार परमाणुओ अने
चित्रेणिमां रहेल एक आकाशप्रदेशमां एक परमाणु, स्थापना-[०|०|०] त्यारे चार आकाशप्रदेशोमां आविना अने अन्तना
आकाशप्रदेशमां रहेनार वे परमाणु 'चरमो' यन्ने चरम, मध्यवर्ती 'अचरमो' वे अचरम अने चित्रेणिमां रहेल एक अवक्तव्य होय छे.

११. 'छप्पएसिए णं भंते' !—हे भगवन् ! छ प्रदेशिक स्कन्ध-इत्यादि प्रश्नस्य पूर्ववत् जाणयं. उत्तर- 'हे गौतम ! 'सिय चरमे'

व्यप ३, नो चरमाई ४, नो अचरमाई ५, नो अवस्तव्याई ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय चरमे य अव-
रमाई च ८, सिय चरमाई च अचरमाई च ९, सिय चरमाई च अचरमाई च १०, सिय चरमे च अवस्तव्य अ
११, सिय चरमे य अवस्तव्याई च १२, सिय चरमाई च अवस्तव्या अ १३, सिय चरमाई च अवस्तव्यायाई च
१४, नो अचरमे य अवस्तव्य य १५, नो अचरमे य अवस्तव्यायाई च १६, नो अचरमाई च अवस्तव्य य १७,

न होय २, कदाच ए. व. अवस्तव्य होय ३, य. व. चरम न होय ४, य. व. अचरम न होय ५, य. व. अवस्तव्य न होय ६, कदाच ए.
व. चरम अने ए. व. अचरम होय ७, कदाच ए. व. चरम अने व. व. चरम अने ए. व. अचरम होय ८,
कदाच व. व. चरम अने व. व. अचरम होय १०, कदाच ए. व. चरम अने ए. व. अवस्तव्य होय ११, कदाच ए. व. चरम अने
व. व. अवस्तव्य होय १२, कदाच व. व. चरम अने ए. व. अवस्तव्य होय १३, कदाच व. व. चरम अने व. व. अवस्तव्य होय

कदाचित् चरम होय इत्यादि नही वीजो, जोयो, पाचमो, छटो, पदमो, सोळमो, सत्तमो, अठारमो, वीणमो, एकवीणमो अने वा-
चीणमो एम मगियार भांगा छोढी देवा व संख्ये कडेवागा आकरो—

विचउत्यपचछं पन्तरसोळ सत्तरद्वारं । वीसेकवीस वायीसग च पज्जेळ छट्ठमि ॥”

“वीजो, जोयो, पाचमो, छटो, पदमो, सोळमो, सत्तमो, अठारमो, वीणमो एकवीणमो अने वाचीणमो व भागाथो छप्पवेद्याळा
स्कन्धमा वईवा वाकीला प्रथमादि भागाओ घटता होवाथी प्रहण फरवा तेमा जे रीते वीजा इत्यादि भागाथो 'घटता नथी, अने
प्रथमादि भागाओ घटे छे ते रीते विचार कराय छे अही ज्यारे छप्पवेद्याळो स्कन्ध समथेणि र्हेला वे आकाशप्रवेद्यामां वा प्रमाणे

नो अचरमाईं य अवत्तव्वयाईं च १८, सिय चरमे य अचरमे य अवत्तव्वए य १९, नो चरमे य अचरमे य अव-
१४, ए. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय १६, व. व. अचरम अने ए. व.

रहे छे—एक आकाशप्रदेशमां त्रण परमाणुओ अने बीजाभां त्रण परमाणुओ, स्थापना—[००००००] त्यारे वे प्रदेशमां अवगाढ
द्विप्रदेशिक स्क्रन्धनी पेटे चरम भंग घटे छे, बीजो अचरम भंग घटतो नथी. कारण के वन्ने तरफ चरमरहित केवलने अचरम
भंगनो असंभव छे. केमके वन्ने वाजु अन्तना अभावमां मध्य होतुं नथी ए विचारुं. बीजो अवक्तव्य भंग छे—ज्यारे छप्रदेशवालो
स्क्रन्ध एक आकाशप्रदेशमां रहे छे. स्थापना—[००००००] त्यारे परमाणुनी पेटे तेनो चरम के अन्तरम शब्द वडे व्यवहार करवो
अशक्य होवाथी अवक्तव्य छे. चौथो भंग 'चरमणि' वे चरम, पांचमो 'अचरमणि' वे अचरम, छट्टो 'अवक्तव्यानि' वे
अवक्तव्य, पंदरमो 'अचरमश्च अवक्तव्यश्च' अचरम अने अवक्तव्य, सोळमो 'अचरमश्च अवक्तव्यानि च' एक अचरम अने वे अवक्तव्य,
सत्तरमो 'अचरमणि च अवक्तव्यश्च' वे अचरम अने एक अवक्तव्य अने अठारमो 'अचरमणि च अवक्तव्यानि च'-वे अचरम
अने एक अवक्तव्य-ए सात भंगा सामान्यतः संभवता ज नथी. कारण के तेवा प्रकारना द्रव्यनो असंभव छे. केमके जगतमां एवा प्रका-
रना केवल चरमादि द्रव्यो होता नथी. तेओनो असंभव पूर्वं कहेल विचारने अनुसारे सुगम होवाथी स्वयं जाणवो. सातमो भंग-
'चरमश्च अचरमश्च' चरम अने अचरम रूप छे, ते आ प्रमाणे-- ज्यारे ते छ प्रदेशवालो स्क्रन्ध एक आकाशप्रदेशने चोतरफ वीटिने
रहेला पांच आकाशप्रदेशमां आ प्रमाणे रहे छे, स्थापना— [०] वे परमाणुओ मध्यप्रदेशमां अने चाकीना प्रदेशमां एक एक परमाणु.
त्यारे ते चार परमाणुओ एक मध्य आकाशप्रदेशवर्ती परमा- [००००] णुना संवन्धी परिणामवडे परिणत थयेला होवाना लीधे अने
एक वर्ण, एक गंध, एक रस अने एक स्पर्शवाळा होवाथी [०] एकाणनो व्यवहार थाय छे. अने एकाणनो व्यवहार थवाथी
'चरम' कहेवाय छे, जे वच्चे वे परमाणु छे ते एकत्व परिणाम वडे परिणत थयेला होवाथी 'अचरम' कहेवाय छे. आठमो भंग-

‘चरमश्च अचरमौ च’ चरम अने ये अचरम होय तेमां ज्यांचे तेज छत्रदेश्याळी स्वरूप एक भाकाशप्रवेशने चोतराक वीदीने रचेल
अने एक अधिक एम छ भाकाश प्रवेशमां भा प्रमाणे रचे छे, स्थापना— [६] त्यांचे अन्ते चोतराक वीदीने रचेल अचर चार चरमा-
जुमो पूर्वे कटेली युक्तिची मर्यादतीं ये परमाणुना सवधी परिणाम पडे [७००] परिणत घयेल दोगाची अने एक-समाल पूर्ण, गंध,
रस अने स्वांषाळी दोगाची एक चरम अने यच्च्ये ये भाकाशप्रवेशमां रचेल ये [९] परमाणुमो ‘अचरमौ’ ये चरमकर छे अन्य भाषायीं
एव रुदे छे के वयंलायतीं याट परमाणुमोने वीजा भाकाशप्रवेशीं अन्तर दोगाची तेमां एकएणलो परिणाम घतो ‘अपी अने तेमा
अभाषयी भा भाडमो मङ्ग पटी शकतो अपी, तेंथी तेमो मृत्तमां प्रतिवेश कर्यो छे, कारण के ए संकरो भागळ कहेपामां आपरो के ‘वि-
वराय-यश्-छट्ट’ ए प्राण नैलीपी ‘छट्ट-अट्ट’ ए ये पत्तो निर्देश कर्यो छे तेथी तेमो अर्थ भा प्रमाणे पाय छे-छट्टो अने भाडमो मङ्ग
छोडीने वीजा भागा जाणया जो आपो मग होय तो मावी रीते जाणयो-एक परमाणुने वीदीने रचेल निरंतर जे घाट परमाणुमो
छे ते तेमा प्रकारा प्रकार्य परिणामवदे परिणत घयेल होयाने तीचे चरम छे तेथी अधिक परमाणु छतां एव तेमो समथेणियेजे ज
संख्य दोगाची सुरो अपी, माटे ते अधिक परमाणु एव ते ज चरममां गणयो एम एक चरम घाय छे पळी जे अधिकला मर्यामां
रचेलो छे ते मर्यातीं दोगाची अने अनेकरूपे परिणामी दोगाची परलुत अचरम छतां एव पूर्वोक्त हेतुपी ‘अचरमौ’ ये अचरम होय-
पयो मग घाय छे अती एव फर विशेष नथी अही मत्त येयलजानी मत्त छे. मयमो मग-‘अरमौ च अचरमण’ ये चरम अने
एक अचरम होय ज्यांचे तेज छत्रदेश्याळी स्वरूप समथेणियी रचेल जण भाकाशप्रवेशमां भा प्रमाणे रचे छे-एक एक भाकाशप्रवेशमां

१ यथानि जा यमिनि तरुतो मुदिन अने शक्तिमागला भंडाली प्रतिमां ‘चक्षुर्ना परमाणुना क्षेत्रप्रदेशा तल्पद्वितागिह्यवशिणामो न
अचरि’—एवो पाठ मळे छे, परलु तेमो अर्थ मङ्गत त्तो नथो, जो-‘क्षेत्रप्रदेशान्तल्पद्वितायादेवशक्तिणामो न अचरि’ एवो पाठ
होय तो अर्थ मङ्गत पाय छे तेथी ए पाठ कृत्वी उग्र प्रमाणे अर्थ कर्यो छे.

‘ચરમૌ ચ અચરમશ્ચ અવક્તવ્યશ્ચ’ વે ચરમ, એકઅચરમ અને એકઅવક્તવ્યરૂપ છે, તે આ પ્રમાણે—જ્યારે તે છપ્રવેશિક સ્કન્ધ ચાર આકાશપ્રવેશોમાં આવી રીતે રહે છે. વચ્ચે પરમાણુ વે [૦] આકાશપ્રવેશમાં, એક તેઓની સમથ્રેણિમાં રહેલ ત્રીજા આકાશપ્રવેશમાં અને એક વિશ્રેણિ સ્થિત આકાશપ્રવેશમાં, સ્થાપના—[૦][૦][૦] ત્યારે પ્રથમ આકાશ પ્રવેશમાં રહેલા વે પરમાણુચરમ, ત્રીજા પ્રવેશમાં અવગાઢ એક પરમાણુપણચરમ પમ વે ચરમ, ત્રીજા પ્રવેશમાં અવગાઢ વે પરમાણુ અચરમ અને વિશ્રેણિ સ્થિત પરમાણુ અવક્તવ્યરૂપ હોય. ચોવીશમો ભંગ-‘ચરમૌ ચ અચરમશ્ચ અવક્તવ્યૌ ચ’—વે ચરમ એક અચરમ અને વે અવક્તવ્ય. જ્યારે તે છપ્રવેશી સ્કન્ધ પાંચ આકાશપ્રવેશમાં સમથ્રેણિ અને વિશ્રેણિથી આ પ્રમાણે રહે છે—સમથ્રેણિપ રહેલા ત્રણ આકાશપ્રવેશમાં પ્રથમ આકાશપ્રવેશમાં એક, ત્રીજામાં વે અને વિશ્રેણિ રહેલા વે પ્રવેશમાં એક, સ્થાપના— [૦] ત્યારે આદિ અને અન્તના પ્રવેશમાં રહેલા પરમાણુઓ વે ચરમ, મધ્યપ્રવેશમાં રહેલ અચરમ અને વિશ્રેણિના વે આકાશ પ્રવેશમાં રહેલા વે પરમાણુઓ વે અવક્તવ્યરૂપ છે. પચીશમો ભંગ-‘ચરમૌ ચ અચરમૌ ચ અવક્તવ્યશ્ચ’ વે ચરમ વે અચરમ અને એક અવક્તવ્ય. તે આ પ્રમાણે—જ્યારે છપ્રવેશિક સ્કન્ધ પાંચ આકાશપ્રવેશમાં સમથ્રેણિ અને વિશ્રેણિથી આ પ્રમાણે રહે છે—સમથ્રેણિપ રહેલા ચાર આકાશપ્રવેશમાં પ્રથમના ત્રણ આકાશપ્રવેશમાં એક એક, ચોથામાં વે અને વિશ્રેણિ રહેલા પાંચમા આકાશપ્રવેશમાં એક પરમાણુ હોય છે, સ્થાપના— [૦][૦][૦][૦] ત્યારે પ્રથમ અને અન્તિમ પ્રવેશમાં રહેનાર વે ચરમ, મધ્યના વે પ્રવેશમાં રહેનાર વે અચરમ અને વિશ્રેણિ સ્થિત [૦][૦][૦][૦] આકાશપ્રવેશમાં એક અવક્તવ્ય હોય છે. છવીશમો ભંગ-‘ચરમૌ ચ અચરમૌ ચ અવક્તવ્યૌ ચ’ વે ચરમ, વે અચરમ અને વે અવક્તવ્ય. તે આ પ્રમાણે—જ્યારે છપ્રવેશી સ્કન્ધ સમથ્રેણિ અને વિશ્રેણિપ રહેલા છ આકાશપ્રવેશમાં આ પ્રમાણે રહે છે, સ્થાપના— [૦][૦][૦][૦] અને અન્તના વે પ્રવેશમાં અવગાઢ વે પરમાણુઓ વે ચરમ, મધ્યપ્રવેશમાં અવગાઢ વે પરમાણુઓ વે અચરમ અને રહેલા વે પ્રવેશમાં અવગાઢ વે પરમાણુઓ વે અવક્તવ્ય હોય છે. [૦][૦][૦][૦] ત્યારે આદિ વિશ્રેણિ ર-

स्तव्याहं च २०, नो चरमे य अचरमाहं च अवस्तव्याहं च २२,
सिय चरमाहं च अचरमे य अवस्तव्याहं च २३, सिय चरमाहं च अचरमे य अवस्तव्याहं च २४, सिय चरमाहं
च अचरमाहं च अवस्तव्याहं च २५, सिय चरमाहं च अचरमाहं च अवस्तव्याहं च २६ ।

१२. सत्तपसिह गं मते ! खधे पुञ्जा । गोयमा ! सत्तपसिह गं खधे सिय चरिमे १, जो अचरिमे २,
सिय अवस्तव्याहं ३, जो चरिमाहं ४, जो अचरिमाहं ५, जो अवस्तव्याहं ६, सिय चरमे य अचरमे य ७, सिय

अवस्तव्य न होय १७, व. व. अचरम अने व. व. अवस्तव्य न होय १८, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अव-
स्तव्य होय १९, ए. व. चरम ए. व. अचरम अने व. व. अवस्तव्य न होय २०, ए. व. चरम, व. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य न
होय २१, ए व चरम व. व. अचरम अने व. व. अवस्तव्य न होय २२, कदाच व. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य
होय २३, कदाच व. व. चरम ए. व. अचरम अने व. व. अवस्तव्य होय २४, कदाच व. व. चरम व. व. अचरम अने ए. व.
अवस्तव्य होय २५, कदाच व. व. चरम व. व. अचरम अने व. व. अवस्तव्य होय २६.

१२. हे भगवन् ! सातप्रदेशवाळा स्तव्य सधे प्रश्न. हे गौतम ! सातप्रदेशवालो स्तव्य कदाच चरम होय १, अचरम न होय २,

१२. 'सत्तपसिह गं मते ! खधे'-हे भगवन् ! सात प्रदेश वाळो स्तव्य कदाच चरम होय, अचरम न होय-
इत्यादि प्रश्नसुद्ध पृथक्पृथक् आण्डु हवे उत्तर फांटे छे-'सत्तपसिह गं खधे सिय चरमे, नो अचरमे'-हे गौतम ! सातप्रदेशी
स्तव्य कदाचिह चरम होय, अचरम न होय-इत्यादि अर्ही बीजो, जोयो, पावलो, छट्टे, पदलो, लोळलो, सत्तलो, कडालो मने

ચરમે ય અચરમાઈં ચ ૮, સિય ચરમાઈં ચ અચરમાઈં ચ ૧૦, સિય ચરમાઈં ચ અચરમાઈં ચ ૧૦, સિય ચરમે ય અવ-
ત્તવ્વણ ય ૧૧, સિય ચરમે ય અવત્તવ્વયાઈં ચ ૧૨, સિય ચરમાઈં ચ અવત્તવ્વણ ય ૧૩, સિય ચરમાઈં ચ અવ-
ત્તવ્વયાઈં ચ ૧૪, ણો અચરમે ય અવત્તવ્વણ ય ૧૫, ણો અચરમે ય અવત્તવ્વયાઈં ચ ૧૬, ણો અચરમાઈં ચ અવ-
ત્તવ્વણ ય ૧૭, ણો અચરમાઈં ચ અવત્તવ્વયાઈં ચ ૧૮, સિય ચરમે ય અચરમે ય અવત્તવ્વણ ય ૧૯, સિય ચરમે

કદાચ અવક્તવ્ય હોય ૩, વ. વ. ચરમ ન હોય ૪, વ. વ. અચરમ ન હોય ૫, વ. વ. અવક્તવ્ય ન હોય ૬, કદાચ એ. વ. ચરમ
અને એ. વ. અચરમ હોય ૭, કદાચ એ. વ. ચરમ અને વ. વ. અચરમ હોય ૮, કદાચ વ. વ. ચરમ અને એ. વ. અચરમ હોય
૯, કદાચ વ. વ. ચરમ અને વ. વ. અચરમ હોય ૧૦, કદાચ એ. વ. ચરમ અને એ. વ. અવક્તવ્ય હોય ૧૧, કદાચ એ. વ. ચરમ
અને વ. વ. અવક્તવ્ય હોય ૧૨, કદાચ વ. વ. ચરમ અને એ. વ. અવક્તવ્ય હોય ૧૩, કદાચ વ. વ. ચરમ અને વ. વ. અવક્તવ્ય
હોય ૧૪, એ. વ. અચરમ અને એ. વ. અવક્તવ્ય ન હોય ૧૫, એ. વ. અચરમ અને વ. વ. અવક્તવ્ય ન હોય ૧૬, વ. વ. અચરમ

વાવીશમો-પ નવ ભાંગા યાજ્ય છે અને વાકીના ગ્રહણ કરવા યોગ્ય છે. પ સંવન્ધે કહેવામાં આવશે કે 'વિચરત્યપંચછટ્ટં પન્નરસોલં ચ
સત્તરદ્દારં । વલ્લિય વાવીસશ્મં સેસા ભંગા ૩ સત્તમપ ॥' ત્રીજો, ચોથો, પાંચમો, છટ્ટો, પંદરમો, સોલમો, સત્તરમો, અઢારમો અને
વાવીશમો-પ ભાંગા વર્જનિ વાકીના ભાંગાઓ સાતપ્રદેશવાલા સ્કન્ધને વિશે જાણવા. તેમાં ત્રેશી માંડી અઢાર સુધીના ભાંગાઓના
નિવેધનું કારણ પૂર્વે કહેલું છે તે જાણવું, અને તે કેવલ આજ ભાંગાઓમાં નહિ પણ પછીના વીજા વધા સ્કન્ધોમાં જાણવું, અને જે
વાવીશમો ભંગ છે તે આઠ પ્રદેશવાલા સ્કન્ધને વિશે જ ઘટે છે, સાતપ્રદેશવાલા સ્કન્ધને વિશે ઘટતો નથી, પ પૂર્વે કહ્યું છે. તેથી
તેનો અહીં પ્રતિવેધ કર્યો છે. વાકીના પ્રથમથી આરંભી છવીશ સુધીના સત્તર ભાંગા છપ્રદેશી સ્કન્ધની પેઠે જાણવા. કેવલ શિષ્યના

य अचरमे य अयत्तव्ययाईं च २०, सिय चरमे य अचरिमाईं च अवत्तव्यव अ २१, णो चरिमे य अचरिमाईं च अवत्तव्ययाईं च २२, सिय चरमाईं च अचरमे य अवत्तव्यव य २३, सिय चरमाईं च अचरमे य अयत्तव्ययाईं च २४, सिय चरमाईं च अचरमाईं च अवत्तव्यव य २५, सिय चरमाईं च अचरमाईं च अवत्तव्ययाईं च २६ ।
अने ए. व. अवस्तव्य न होय १७, य. व. अचरम अने य. व. अवस्तव्य न होय १८, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य होय १९, कदाच ए. व. चरम ए. व. अचरम अने य. व. अवस्तव्य होय २०, कदाच ए. व. चरम य. व. चरम य. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य होय २१, ए. व. चरम य. व. अचरम अने य. व. अवस्तव्य न होय २२, कदाच य. व. चरम ए. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य होय २३, कदाच य. व. अचरम अने य. व. अवस्तव्य होय २४, कदाच य. व. चरम य. व. अचरम अने ए. व. अवस्तव्य होय २५, कदाच य. व. चरम, य. व. अचरम अने य. व. अवस्तव्य होय २६.

अनुप्रवृत्त मटे स्थापना मात्र घटे अर्ही घटाकीय छीय प्रथम 'चरम' चरम भग—

०	०	०	०
०	०	०	०

 श्रीजो 'अयक्तव्या' अवत्तव्य भग—

०	०	०	०
०	०	०	०

सातमो 'चरमद्यात्तव्यव्य'—चरम अने अचरम भग—

०	०	०	०
०	०	०	०

 आठमो भग 'चरमद्यात्तव्यव्य' च' चरम अने ये अचरम—

०	०	०	०
०	०	०	०

नवमो 'चरमो चात्तव्यव्य' ये चरम अने एक अचरम—

०	०	०	०
०	०	०	०

 दसमो भग 'चरमो चात्तव्यव्य' च' ये चरम अने ये अचरम—

०	०	०	०
०	०	०	०

अगियारमो—'चरमद्यात्तव्यव्य' चरम अने अयक्तव्य—

०	०	०	०
०	०	०	०

 यारमो 'चरमद्यात्तव्यव्य' च' चरम अने ये अवत्तव्य—

०	०	०	०
०	०	०	०

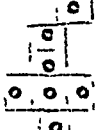
तेरमो 'चरमौ चावक्तव्यश्च' वे चरम अने एक अवक्तव्य—



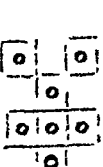
चौदमो 'चरमौ चावक्तव्यौ च' वे चरम अने वे अवक्तव्य—



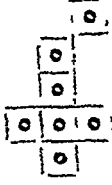
ओगणीशमो—'चरमश्चा चरमश्चावक्तव्यश्च' चरम, अचरम
अने अवक्तव्य—



वीशमो 'चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यौ च'
चरम, अचरम अने वे अवक्तव्य—



एकवीशमो चरमश्चा चरमौ चावक्त-
व्यश्च एक चरम, वे अचरम अने
एक अवक्तव्य—



त्रेवीशमो 'चरमौ चाचरमश्चावक्तव्यश्च' वे चरम एक
अचरम अने एक अवक्तव्य—

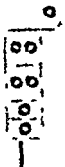


चोवीशमो 'चरमौ चाचरमश्चावक्तव्यौ च'-वे चरम एक अचरम अने वे अवक्तव्य—



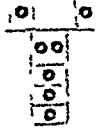
पचीशमो चरमौ चाचरमौ चावक्तव्यश्च'

वे चरम वे अचरम अने एक अवक्तव्य—



अने छत्रीशमो भंग 'चरमौ चाचरमौ चावक्तव्यौ च' वे चरम वे अचरम अने

वे अवक्तव्य—



कारण के अर्धी सातप्रवेशी सप्त्य एक, ये, द्रण यावत् सात आकाशप्रवेशीं रहे छे मटे प प्रकारना
भगाओ संभवे छे.

त्त्वयाईं च १४, णो अचरिमे य अवत्तव्वए य १५, णो अचरिमे य अवत्तव्वयाईं च १६, णो अचरिमाईं च १७, णो अचरिमे य अवत्तव्वए य १८, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वए य १९, सिय चरिमे य अचरिमे य अवत्तव्वयाईं च २०, सिय चरिमे य अचरिमाईं च अवत्तव्वए य २१, सिय चरिमे य अचरिमे य अचरिमाईं च अवत्तव्वयाईं च २२, सिय चरिमाईं च अचरिमे य अवत्तव्वए अ २३, सिय चरिमाईं च अचरिमे कदाच ए. व. चरम अने व. व. अवक्तव्य होय १२, कदाच व. व. चरम अने व. व. अवक्तव्य होय १३, कदाच व. व. चरम अने व. व. अवक्तव्य होय १४, ए. व. अरचम अने अवक्तव्य न होय १५, ए. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय १६, व. व. अचरम अने ए. व. अवक्तव्य न होय १७, व. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य न होय १८ कदाच ए. व. चरम, ए. व. अचरम अने ए. व. चरम, ए. व. चरम, ए. व. अचरम अने व. व. अवक्तव्य

“एष वल्लिय भंगा तेण परमवट्टिया सेसा” । ए भांगाओ दर्जनि तेथी आगळना वाकीना भांगा अवस्थित-एक ज प्रकारना जाणावा. प्रथमथी आरंभी छवीश सुधीना अडार भांगाओ विचारणाथी अने स्थापनाथी पूर्वनी पंठे विचारवा. पंतु ‘चरमश्च अचरमो च अवक्तव्यो च’ एक चरम, वे अचरम अने वे अवक्तव्य-ए प्रकारनो वावीशमो भांगो स्थापना वडे आ प्रमाणे छे-

०	०	०	०
०	०	०	०

 (प्र०)—द्विप्रदेशादि स्कन्धमां ‘अवक्तव्यो’ वे अवक्तव्यरूप छटा भांगानो केम निषेध करो छो ? कारण के ते

०	०	०	०
०	०	०	०

 युक्तिथी संभवे छे. ते आ प्रमाणे-ज्यारे एक परमाणु एक आकाशप्रदेशमां अने बीजो विश्रेणिमां रहेला बीजा आकाशप्रदेशमां होय, स्थापना—

०	०	०	०
०	०	०	०

 त्यारे एक अवक्तव्य अने बीजो एण अवक्तव्य—एम ‘अवक्तव्यो’ वे अवक्तव्यरूप छट्टो भंग संभवे छे, त्रिप्रदेशिक स्कन्धना

०	०	०	०
०	०	०	०

 विचारमां एक प्रदेशमां एक परमाणु अने विश्रेणिमां रहेला बीजा प्रदेशमां

०	०	०	०
०	०	०	०

 वे, एम चतुःप्रदेशिक स्कन्धना विचा-

य अवस्तव्याइं च २४, सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवस्तव्या य २५, सिय चरिमाइं च अचरिमाइं च अवस्तव्याइं च २६ संखेज्जपएसिए अंसंखेज्जपएसिए अणंतपएसिए खंधे जहेव अट्टपएसिए तहेव पत्तेयं भाणियन्वं ।

परमाणुमि य तइओ पढमो तइओ य होति दुपएसे । पढमो तइओ नवमो एककारसमो य तिपएसे ॥१॥
पढमो तइओ नवमो वसमो एककारसो य धारसमो । भंगा चउप्यएसे तेवीसइमो य वोद्धन्वो ॥२॥

होय २०, कदाच ए. व. चरम घ. घ अचरम अने ए. व. अवस्तव्य होय २१, कदाच ए व चरम व व अचरम अने व व. अवस्तव्य होय २२, कदाच घ व चरम ए घ अचरम अने ए. व अवस्तव्य होय २३, कदाच घ व. चरम ए व अचरम अने व व अवस्तव्य होय २४, कदाच घ व. चरम घ व अचरम अने ए व. अवस्तव्य होय २५, कदाच घ घ चरम घ. व. अचरम अने च घ अवस्तव्य होय २६. जेम आठप्रदेशिक स्कंध सवधे कसुं तेम सख्यातप्रदेशिक, अंसंख्यातप्रदेशिक अने अणंत-प्रदेशिक प्रत्येक स्कंध सयन्धे कहेइं.

“ परमाणुमां त्रीजो, द्विप्रदेशिक स्कंधमां पहलो अने त्रीजो अने त्रिप्रदेशिक स्कंधमां पहलो, नवमो अने अग्निआरमो

रमा प्रत्येकमां यन्धे परमाणुओ होय, ०००००० (३०)--तारी शडा यरोवर छे, परतु जगतमा एया प्रकारा पुत्रल द्रव्यो मयी (प्र०)--रम शयी जानी शकाय ? (३०)--आ मज्जेनो मतिपेच करपायी अ जानी शकाय छे जो तेया प्रकारा द्रव्यो होत तो आचार्य तेनो विरोध न करत अथवा तेवा प्रकारा द्रव्यनो संसघ होय तो मागाओनो ज्ञातिपाची निर्देष होवायी तेओनो त्रीजा

पढमो तइओ सत्तमनवदसइक्कारवारतेरसमो । तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमो य पंचमए ॥३॥
विचउत्थपंचछट्टं पनरस सोलं च सत्तरट्टारं । वीसेक्कवीसवावीसगं च वज्जेज्ज छट्टंमि ॥४॥
विचउत्थपंचछट्टं पण्णर सोलं च सत्तरट्टारं । बावीसइमविह्णुणा सत्तपदेसंमि खंधम्मि ॥५॥
विचउत्थ पंचछट्टं पण्णर सोलं च सत्तरट्टारं । एते वज्जिय भंगा सेसा सेसेसु खंधेसु ।

भंग होय छे. १. चतुःप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो, त्रीजो, नवमो, दसमो, अगिआरमो, वारमो अने त्रेवीसमो भंग जाणवो. २. पंचप्रदेशिक स्कंधमां पहेलो, त्रीजो, सातमो, नवमो, दसमो, अगिआरमो, वारमो, तेरमो, तेवीशमो, चोवीशमो अने पचीशमो भंग जाणवो. ३. छप्रदेशिक स्कंधमां बीजो, चोथो, पांचमो, छट्टो, पंदरमो, सोळमो, मत्तरमो, अठारमो, चीशमो, एकवीशमो अने बावीसमो भंग छोडी देवो. ४. सातप्रदेशाळा स्कंधमां बीजा, चोथा, पांचमा छट्टा, पंदरमा, सोळमा, सत्तरमा, अठारमा, अने वावीशमा भंग सिवाय बाकीना भंगो जाणवा. ५. बाकीना स्कंधोने विपे बीजा, चोथा, पांचमा, छट्टा, पंदरमा, सोळमा, सत्तरमा, अने अठारमा भांगाने छोडीने बाकीना भांगाओ जाणवा.

भांगामां ज अन्तर्भाव जाणवो.

जेम आठप्रदेशी स्कन्धना भांगाओनो प्रतिषेध कर्यो अने तेओनुं विधान फर्थुं तेम प्रत्येक संख्यातप्रदेशी अने असंख्यात-प्रदेशी स्कन्धना भंगो कहेवा. ते आ प्रमाणे कहे छे-‘संखेज्जापसिण’ असंखेज्जापसिण’-संख्यातप्रदेशी अने असंख्यातप्रदेशी-इत्यादि पाठसिद्ध छे. परंतु वधेय स्थले आ विचार जाणवो-एकादि आकाशप्रदेशमां आठ प्रदेशी वगैरे स्कन्धो रती शके छे. माटे उपर

१४. कइ णं भंते ! संठाणा पन्नत्ता ! गोथमा ! पंच संठाणा पन्नत्ता, तंजहा--परिमंडले, घडे, तंसे, चउरसे,

१४. हे भगवन् ! केटलां सस्थानो कक्षां छे ? हे गौतम ! पांच सस्थानो कक्षां छे, ते आ प्रमाणे--१ परिमंडल, २ दृष्ट, ३

कहेला यथाय मागामो घटे छे (प्र०)--हे भगवन् ! असंस्थातप्रवेशी स्क्न्धो एक आकाशप्रवेशमा केम रही शके ? (उ०)--तेया प्रकारनी शक्तिथी रही शके छे आ घात अयुक्त नथी, पण युक्तिथी समये छे ते आ प्रमाणे-अनन्तान्त द्विप्रवेशिक स्क्न्धो, यावत्-अनन्तान्त सस्थातप्रवेशिक स्क्न्धो, अनन्तान्त असंस्थातप्रवेशिक स्क्न्धो अने अनन्तान्त अनन्त प्रवेशिक स्क्न्धो छे अने लोक यथो मळीने पण असंस्थातप्रवेशिक स्क्न्धो छे ते यथा स्क्न्धो लोकमां ज रहेला छे, अलोक्तमां नथी, तेथी निश्चय थाय छे के एक आकाशप्रवेशमा धणा परमाणुओ, घणा द्विप्रवेशिक स्क्न्धो, यावत्-घणा अनन्तप्रवेशिक स्क्न्धो रहेला छे. बाहीं पूर्वाचार्यो प्रदीपु दृष्टत धर्मये छे--जेमके घरमा सळगावेला एक वीथाना प्रकाशना यथा अणुओ घरमा व्यात थाय छे, तेथी रीते इजार प्रदीप कयां होय तो ते प्रत्येकना प्रकाशना अणुओ व्यात थाय छे, यळी वरेक प्रदीपना प्रकाशना परमाणुओ शुद्धा नथी एम नथी, पण अवश्य शुद्धा छे कारण के घरमां रहेला पुरुगने वरेक प्रदीपनी छाया धगेरे देखाय छे माटे जेम स्थूल छत्ता प्रदीपना प्रकाशना परमाणुओ एक ज आकाशना प्रवेशमां रही शके छे, तेम परमाणु आवि पण रही शके छे तेमां फंरपण योय नथी कारण के आकाशनो अवकाश आपदानो स्वभाव होयाथी अने यस्तुओनो विचित्र परिणमन स्वभाव होयाथी तेमां विरोध आयतो नथी इये परमाणु आविमा जे मागामो ग्रहण करया योग्य छे तेने सप्रह करनार संस्रहणी गाथा कहे छे--'परमाणुमि तरओ' इत्यादि पाठसिद्ध छे, कारण के तेना अर्थनो पूर्व विचार कयां छे परंतु छ्यप्रवेशिक स्क्न्धना विचारमा प्रतिषेध करवा योग्य मागामो होयाथी तेमोनो ज सप्रह कयां छे

१४ 'कइ ण भंते ! संठाणा पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! केटला सस्थानो कक्षां छे ! इत्यादि पाठ सुगम छे कारण के परि-

आयते य !
१५. परिमंडला णं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा, असंखेज्जा, अगंता ? गोयमा ! नो संखिज्जा, नो असंखेज्जा,

ज्यस, ४ चतुरस, अने ५ आयत.

१५. हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानो शुं संख्याता, असंख्याता के अनन्ता चे ? हे गौतम ! संख्याता के असंख्याता नथी, पण अनन्ता छे. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थानो सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! परिमंडल संस्थान शुं संख्यातप्रदेशवाळुं, असंख्यातप्रदेशवाळुं के मंडलादिक संस्थानोनुं स्वरूप प्रथम पदमां ज. मविस्तर निरूपण करेलुं छे. चाफी वधुं पाठसिद्ध छे. परंतु 'परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेजाणप.सिए कि संखेजाणप.सोगाडे' इत्यादि. हे भगवन् ! संख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं संख्याता प्रदेशोमां प्रदेशोमां संख्याता प्रदेशोमां रहेलुं होय छे, परंतु असंख्याता के अनन्ता प्रदेशोमां रहेलुं होतुं नथी. रहेलुं छे ? इत्यादि प्रश्न. हे गौतम ! संख्याता प्रदेशोमां रहेलुं होय छे, परंतु असंख्याता के अनन्ता प्रदेशोमां रहेलुं होतुं नथी. कारण के तेना संख्याता ज प्रदेशो छे, तो असंख्याता के अनन्ता प्रदेशोमां सी रीते रहे ? असंख्यातप्रदेशवाळुं के अनन्तप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान संख्याता के असंख्याता प्रदेशोमां रहे छे, कारण के तेमां विरोध नथी, पण अनन्त प्रदेशोमां रहेलुं नथी फारण के असंख्यात प्रदेशवाळा सफुधनी अनन्त प्रदेशोने विषे अवगाहानाओ. विरोध छे. अनन्तप्रदेशवाळानी पण अनन्तप्रदेशोने विषे अवगाहानाओ विरोध ज छे. कारण के लोक पण असंख्य प्रदेशात्मकज छे, अने लोक सियाय चीने पुहुलेनी गतिनो असंभव छे. तेथी परिमंडल संस्थान अनन्त प्रदेशवाळुं छतां पण संख्याता के असंख्याता प्रदेशोमां रहे छे पण अनन्ता प्रदेशोमां रहेलुं नथी. ए प्रमाणे युत्तादि प्रत्येक संस्थानो विचार करवो. संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनन्तप्रदेशिक परिमंडलादि संस्थानना चरम अने अचरमादिना विचारमां उत्तरसूत्रो स्तप्रमानी पंठे जाणवा. अनेक अवयवना अधिकभागी विवशामां अचरम संड चने नरमसंडो होय छे अने प्रदेश विवशामां चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो होय छे.

अणता । एवं जाव आयता । परिमंडले णं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपएसिए, असंखेज्जपदेसिए, अणंतपदेसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसिए, सिय असंखेज्जपएसिए, सिय अणंतपदेसिए । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेज्जपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! संखेज्जपएसोगाढे, नो असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे, सिय असंखेज्जपएसोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे अणंतपएसिए किं संखेज्जपएसोगाढे, असंखेज्जपएसोगाढे, अणंतपएसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसोगाढे, सिय असंखेज्जपएसो-

अनन्तप्रदेशवालुं छे ? हे गौतम ! कदाचित् संख्यातप्रदेशवालुं, कदाच असंख्यात प्रदेशवालु अने कदाचित् अनंत प्रदेशवालुं होय. एम आयत संस्थान सुधी जाणथुं. हे भगवन् ! संख्यातप्रदेशवालुं परिमंडल संस्थान थुं संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां अवगाढ-रहेलुं होय ? हे गौतम ! संख्यात प्रदेशमां अवगाढ होय, पण असंख्याता के अनन्त प्रदेशमां अवगाढ न होय. हे भगवन् ! असंख्यातप्रदेशवालु परिमंडल संस्थान थु संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां रहेलुं होय ? हे गौतम ! कदाचित् संख्याता प्रदेशमां के कदाचित् असंख्याता प्रदेशमां रहेलुं होय, पण अनन्त प्रदेशमां रहेलुं न होय. ए प्रमाणे यावत्-आयत संस्थान सुधी जाणथुं. हे भगवन् ! अनन्त प्रदेशवालुं परिमंडल संस्थान थु संख्यात प्रदेशमां, असंख्यात प्रदेशमां के अनन्त प्रदेशमां रहेलुं होय ? हे गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेशमां रहेलु होय, कदाचित् असंख्यात प्रदेशमां रहेलुं होय, परन्तु

सोगाढे, नो अणंतपएसोगाढे । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे संखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरमे, अचरमे, चरमाई, अचरमाई, चरमंतपएसा, अचरमंतपएसा ? गोयमा ! परिमंडले णं संठाणे संखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे नो चरमे, नो अचरमे, नो चरमाई, नो अचरमाई, नो चरमंतपएसा, नियमं अचरमं चरमाणि य चरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे किं चरमे० पुच्छा । गोयमा ! असंखेज्जपएसिए संखेज्जपएसोगाढे जहा संखेज्जपएसिए । एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते ! संठाणे असंखेज्जपएसिए किं चरमे० पुच्छा । गोयमा ! असंखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे नो चरमे, जहा संखेज्जपएसोगाढे, एवं जाव आयते । परिमंडले णं भंते !

अनन्त प्रदेशमां रहेलुं न होय. एम यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां रहेलुं अने संख्याताप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं चरम छे, व. व. चरम छे, व. व. चरम छे, चरमान्तप्रदेशरूप छे अने अचरमान्त प्रदेशरूप छे ? हे गौतम ! संख्याता प्रदेशमां रहेलुं अने संख्याताप्रदेशवाळं परिमंडल संस्थान चरम नथी, अचरम नथी, व. व. चरमरूप नथी, व. व. अचरमरूप नथी, चरमान्तप्रदेशरूप नथी, अने अचरमान्तप्रदेशरूप नथी, पण अवश्य ए. व. अचरम, व. व. चरमरूप, चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्त प्रदेशरूप छे. ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशवाळं अने असंख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान शुं चरम छे-इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! संख्याताप्रदेशवाळं असंख्यातप्रदेशवाळुं परिमंडल संस्थान संख्याताप्रदेशवाळानी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे आयत संस्थान सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! असंख्यातप्रदेशवाळं

संठाणे अणंतपपसिपु संलिङ्गपणसोगाढे किं चरमे० पुळ्ळा । गोपमा ! तरेव जाव आयते । अणंतपपसिपु अस-
रोङ्गपणसोगाढे जहा संलिङ्गपणसोगाढे, एव जाव आयते ।

१६. परिमंडलस्त णं भंते ! संठाणस्त संलिङ्गपणसियस्त अचरिमस्त य चरिमाण य चर-
मतपवेसाण य अचरमंतपणसाण य षब्धट्टयाण पपसट्टयाण षब्धट्टपएसट्टयाण कयरे कपरेहितो अप्पा चा यहुया

असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थान शुं चरम छे-इत्यादि प्रश्न. हे गौतम ! असंख्याताप्रदेशावगाढ असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल
संस्थान चरम नयी-इत्यादि संख्याताप्रदेशावगाढनी पेटे जाणुं. एव यावत् आयत सुधी समजुं. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां
रहेलु अंतप्रदेशिक परिमंडल संस्थान शुं चरम छे-इत्यादि प्रश्न. हे गौतम ! उपर कक्षा प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणुं.
असंख्याता प्रदेशमां रहेलु अंतप्रदेशिक परिमंडल संस्थान संख्याता प्रदेशमां रहेला परिमंडल संस्थाननी पेटे जाणु. ए प्रमाणे
यावत् आयत संस्थान सुधी समजु.

१६. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां रहेला संख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम लढ, चरम लंडो, चरमान्तप्रदेशो अने

११ संख्याता प्रदेशानी भयगाहनावाळा संख्यातप्रदेशिक यत्थिइलादि संस्थानना चरम अने अचरमादि सयन्थो अस्यणुत्थ फहे
छे-परिमंडलस्त ण भंते- हे भगवन् ! परिमंडल संस्थानना-इत्यादि पाठ सुगम छे. परंतु द्रव्यार्थपणाना विचारमां चरमपडो
संख्यातगुणा छे, कारण के परिमंडल संस्थानना पथा मळीने संख्याता प्रदेशो छे असंख्यात प्रदेशानी भयगाहनावाळा असंख्यात
प्रदेशिक परिमंडल संस्थाननु अने असंख्यप्रदेशनी भयगाहनावाळा अन्तप्रदेशात्मक परिमंडलसंस्थाननु पण अस्यणुत्थ एतप्रमाणनी पेटे

વા તુલ્યા વા વિસેસાહિયા વા ? ગોયમા ! સન્વત્થોવે પરિમંડલસ્સ સંઠાણસ્સ સંઘેજ્જપણ્ણસોગા-
હસ્સ દઞ્ચદ્ધયાણ્ણ એગે અચરિમે, ચરિમાઈં સંઘેજ્જગુણાંઈં, અચરમં ચરમાણિ ય દોઽવિ વિસેસાહિયાત્તિં, પદેસદ્ધયાણ્ણ
સન્વત્થોવા પરિમંડલસ્સ સંઠાણસ્સ સંઘેજ્જપણ્ણસોગાહસ્સ ચરમંતપણ્ણસા, અચરમન્તપણ્ણસા સં-
ઘેજ્જગુણા, ચરમન્તપણ્ણસા ય અચરમન્તપણ્ણસા ય દોઽવિ વિસેસાહિયા, દઞ્ચદ્ધપણ્ણસદ્ધયાણ્ણ સન્વત્થોવે પરિમંડલ-
સ્સ સંઠાણસ્સ સંઘેજ્જપણ્ણસોગાહસ્સ દઞ્ચદ્ધયાણ્ણ એગે અચરિમે, ચરિમાઈં સંઘેજ્જગુણાત્તિં, અચરમં

અચરમાન્તપ્રદેશોમાં દ્રવ્યાર્થપણે અને દ્રવ્યાર્થપ્રદેશાર્થપણે કોણ કોનાથી અલ્પ, વહુ, તુલ્ય, કે વિશેષાધિક છે ? હે
ગૌતમ ! સૌથી થોડો સંખ્યાતા પ્રદેશમાં રહેલ સંખ્યાતાપ્રદેશિક પરિમંડલ સંસ્થાનનો દ્રવ્યાર્થપણે એક અચરમખંડ છે, તેથી ચરમ ખંડો
સંખ્યાતાગુણા છે, તેથી અચરમખંડ અને ચરમખંડો બન્ને મલીને વિશેષાધિક છે. પ્રદેશાર્થપણે સંખ્યાતા પ્રદેશમાં રહેલા સંખ્યાતાપ્ર-
દેશિક પરિમંડલ સંસ્થાનના ચરમાન્ત પ્રદેશો સૌથી થોડા છે. તેથી અચરમાન્તપ્રદેશો સંખ્યાતાગુણા છે, તેથી ચરમાન્તપ્રદેશો અને
અચરમાન્તપ્રદેશો બન્ને મલીને વિશેષાધિક છે, દ્રવ્યાર્થપ્રદેશાર્થપણે સંખ્યાતા પ્રદેશમાં રહેલા સંખ્યાતા પ્રદેશિક પરિમંડલ સંસ્થાનનો

જાણું. 'નવરં સંક્રમે અનન્તગુણાઃ' પરંતુ "સંક્રમમાં અનન્તગુણા કહેવા" પટલે ક્ષેત્રના વિચારથી જ્યારે દ્રવ્યના વિચારું સંક્રમણ
થાય છે ત્યારે ચરમખંડો અનન્તગુણા કહેવા. તે આ પ્રમાણે—સૌથી થોડો એક ચરમખંડ છે અને તેથી ચરમખંડો ક્ષેત્રથી અસંખ્યાતા-
ગુણા છે અને દ્રવ્યથી અનન્તગુણા છે. તેથી અચરમખંડ અને ચરમખંડો વચ્ચે મલી વિશેષાધિક છે. ૫ પ્રમાણે સંસ્થાનોનો પણ ચરમ
અને અચરમાદિના વિભાગવહે વિચાર કર્યો.

च चरमाणि य दोवि विसेसाहियति, चरमन्तपएसा संखेज्जगुणा, अचरिभन्तपएसा संखेज्जगुणा, चरिभन्तपएसा य अचरमन्तपएसा य दोवि विसेसादिया । एवं यद्वर्तसचउरंसायएसुवि जोएयव्वं ।

१७. परिमण्डलस्स णं भंते । संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स चरमाण य चर-
मन्तपएसाण य अचरमन्तपएसाण य ढव्वट्टयाए पएसट्टयाए ढव्वट्टपएसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४ ।
गोयमा । सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसिअस्स संखेज्जपएसोगाढस्स ढव्वट्टयाए एगे अचरमे,
चरमार्ति संखेज्जगुणाति, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहियति, पदेसट्टयाते सव्वत्थोवा परिमंडलसठा-
णस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स चरमंतपएसा, अचरमंतपएसा संखिज्जगुणा, चरमंतपएसा य

द्रव्यार्थपणे सौथी थोडो एक अचरम खड्ड छे, तेथी चरम खड्डो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमखंड अने चरमखंडो वन्ने मळीने विदो-
याधिक छे, तेथी प्रदेशार्थपणे चरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने
अचरमान्तप्रदेशो वन्ने मळीने विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे इत्त, अस्स, चतुरस्स, अने आपत संस्थानने विपे ण योजना करवी.

१७. हे भगवन् ! संख्याता प्रदेशमां र्हेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खड्डो, चरमान्तप्रदेशो अने अच-
रमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थप्रदेशार्थ पणे कोण कोनाथी अट्ट, एड्ड, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! संख्या-
ता प्रदेशमां र्हेल असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो द्रव्यार्थपणे सौथी थोडो एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खड्डो संख्यातगुणा छे,
तेथी अचरमखड्ड अने चरमखड्डो वन्ने मळी विशेषाधिक छे. प्रदेशार्थपणे संख्याता प्रदेशमां र्हेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल

अचरमंतपएसा य दोवि विसेसाहिया, दब्बट्टपएसट्टयाए-सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दब्बट्टयाए एणे अचरिमे, चरमार्तिं संखेज्जगुणात्तिं, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहियात्तिं, चरमंतपएसा संखेज्जगुणा, अचरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य अचरमंतपएसा य दोवि विसेसाहिया । एवं जाव आयते । परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स असंखेज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स चरमाण य चरमंतपएसाण य दब्बट्टयाए पएसट्टयाए दब्बट्टपएसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा० ४ ! गोयमा ! जहा रयणप्पभाए अप्पाबहुयं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, एवं जाव आयते ।

१८. परिमंडलस्स णं भंते ! संठाणस्स अणंतपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स अचरिमस्स य चरमाण य चरमंतपएसाण य अचरमंतपएसाण य दब्बट्टयाए पएसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा०

संस्थानना चरमान्तप्रदेशो सौथी थोडा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपणे-सौथी थोडो संख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थाननो द्रव्यार्थपणे एक अचरम खंड छे, तेथी चरम खंडो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरम खंड अने चरम खंडो बन्ने मळी विशेषाधिक छे, तेथी प्रदेशार्थपणे चरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी अचरमान्तप्रदेशो संख्यातगुणा छे, तेथी चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्त प्रदेशो बन्ने मळी विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे यावत् आयत् संस्थान सुधी जाणवुं.

१८. हे भगवन् ! असंख्याता प्रदेशमां रहेला असंख्यातप्रदेशिक परिमंडल संस्थानना अचरम खंड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो

४ ? गोपयमा ! जहा संलेखपणसिअस्त संलेखपणसोगाढस्स, नवर संक्रमेणं अणंतगुणा, एवं जाव आयए । परिमं-
डलस्स णं भंते ! संठाणस्स अणंतपणसियस्स असलेखपणसोगाढस्स अचरमस्स य ४ जहा रयणण्णभाए, नवर
संक्रमे अणंतगुणा, एव जाव आयते ।

१९ जीवे णं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोपयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । नेरइण णं भंते !

अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे, अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनायी अत्य, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ?
हे गौतम ! जेम रत्नप्रमानु अल्पबहुत्व कसुं तेमव यथु कहेयु. ए प्रमाणे यावत् आयत सस्थान सुधी जाणथु. हे भगवन् ! संख्याता
प्रदेशमां रहेला अनन्तप्रदेशिक परिमंडल सस्थानना अचरम खड, चरम खंडो, चरमान्तप्रदेशो अने अचरमान्तप्रदेशोमां द्रव्यार्थपणे,
प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनायी अत्य, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम संख्याता प्रदेशमां
रहेला संख्यातप्रदेशिक परिमंडल सस्थान संबंधे कथु छे तेम कहेयु. परंतु सक्रममां-द्रव्यादिना विचारना सक्रममां अनंतगुणा जाणवा.
ए प्रमाणे यावत् आयत संस्थान सुधी जाणथुं. हे भगवन् ! असंख्याता प्रदेशमां रहेला अनन्त प्रदेशिक परिमंडल सस्थानना अचरम
खड-इत्यादि अल्पबहुत्व जेम रत्नप्रमा सबन्धे कसुं छे तेम कहेयु, परन्तु सक्रम-द्रव्यादिना विचारमां अनन्तगुणा कहेवा. ए प्रमाणे
आयत सस्थान सुधी कहेयु.

१९. हे भगवन् ! जीव गतिचरम बडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम होय अने कदाचित् अचरम होय.

१९ हचे जीवादि बडकने भाधयी चरम अने अचरमना विभाग पढे विचार करे छे-—'अथि णं भंते ! गत्तरमे ण किं चरमे-हे

गतिचरमेणं किं चरिमे, अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! गतिचरमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! ठितीचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! ठितीचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि, अचरमावि, एवं निरंतरं जाव

हे भगवन् ! नैरयिक शुं गतिचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम होय अने कदाचित् अचरम होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिकी गतिचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिकी सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिक स्थितिचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम होय अने कदाच अचरम होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकी सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिकी

भगवन् ! जीव गतिचरम वडे शुं चरम छे ?—इत्यादि. गतिपर्यायरूप चरम ते गतिचरम, ते वडे विचार कस्तां जीव चरम छे के अचरम छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! कोइक चरम होय अने कोइक अचरम होय. तेमां जे प्रश्नसमये गतिपर्यायमां अर्थात्-मनुष्यगति पर्यायमां वर्ततो पछीथी कोइपण गतिपर्यायिने पासक्षे नहि पण सुवत्त थशे ते गतिचरम अने बाकीना अगतिचरम. 'नेरइए णं भंते गइचरमेणं'-हे भगवन् ! नैरयिक गतिचरम वडे चरम होय ? इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिक गतिचरम वडे पटले अर्थात् नरकगतिरूपचरम पर्याय वडे चरम छे के अचरम छे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! कोइक चरम होय अने कोइक अचरम होय. जे नरक-गतिरूप पर्यायथी नीकळी फरीवार नरकगतिनो अनुभव नहि करे ते चरम अने बाकीना अचरम. ए प्रमाणे चोवीश दंडकना क्रमथी

वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! भवचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! भवचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! भासाचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइया णं भंते ! भासाचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं जाव गिदियवज्जा निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमे अचरमे ?

स्मिचिचरम वढे शु चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरतर यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक भवचरम वढे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम पण होय अने कदाचित् अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको भवचरम वढे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिक भवचरम वढे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! नैरयिको भवचरम वढे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाचित् चरम पण होय अने कदाचित् अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरतर

निरतर वैमानिक-वैमानिकसूत्र पर्यंत कष्टेषु यद्व्यचनदङ्कना सूत्रमां उत्तर-‘चरमा वि अचरमा वि’—केटलाक चरम होय छे अने केटलाक अचरम होय छे प्रभ्रलमये जे कोइ नैरयिको होय तेभोमा केटलाक भवइय नरकगतिपर्याय वढे चरम होय छे अने यीजा भवचरम होय छे, तेथी भहीं एक ज उत्तर होय छे ‘चरम पण होय अने अचरम पण होय’ एथी रीते ते ते गतिने आधार

भौवचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिप । नेरइया णं भंते ! भावचरमेण किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि । एवं निरतर जाव वेमाणिया । नेरइए णं भंते ! धण्णचरमेणं किं चरमे अचरमे ! गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिप । नेरइया णं भंते ! धण्णचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि । एवं निरंतर जाव वेमा-

रम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरतर यावत् वैमानिक सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैर यिको भावचरम वडे चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी समजुं. हे भगवन् ! नैरयिक र्णचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरतर यावत् वैमानिक सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिको र्णचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरतर यावत् वैमानिको सुधी जाणु. हे भगवन् ! नैरयिक र्णचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत्

केटलाक चरम होय अने केटलाक अचरम पण होय, भही जेमो प्रश्नसमये स्थितिना छेहा समये यत्ते छे तेनो भही विचार छे पम नथी, जो पम होय तो नारकोमां उद्धर्तना-भरणना विरहणो समय होचाथी घळी पफायि जीयोनी पण उद्धर्तना घती होवाथी 'चरमा वि मचरमा वि' केटलाक चरम पण होय छे अने केटलाक अचरम पण होय छे, भा यद्ये स्थले पण मयक्षय यदुपचन यदे आप्णो उत्तर नहि घटी शके, परतु प्रश्नसमये जे नारको छे ते अनुक्रमे पोतपोतानी स्थितिना चरम समयने प्राप्त धयेला ते रूपे ते

णिया । नेरइए णं भंते ! गंधचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं निरंतरं
जाव वेसाणिए । नेरइया णं भंते ! गंधचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि, अचरमावि । एवं निरं-
तरं जाव वेसाणिया । नेरइए णं भंते ! रंसचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय अचरमे । एवं
वैमानिक सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिको गंधचरमवडे शुं चरम छे के अचरम छे ? हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच
अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिक रंसचरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे ?
हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी समजुं. हे भगवन् !
'चरम के अचरम छे-ए' विचारवडे उपर फहेलो उत्तर घटी शके छे. भवचरमसूत्र गतिचरमसूत्रनी पेटे जाणुं. 'नेरइए णं भंते !

१. स्थितिचरम संबन्धे बहुचरमना दंडकमां केटला एक स्थितिचरम वडे चरम होय अने केटलाक अचरम होय छे. अहाँ जे नैरयिको
स्वस्थिताना चरम समयने प्राप्त थयेला होय ते चरम अने बीजा अचरम एम न समजुं, जो एम मानीए तो उत्तर सूत्रमां 'केटला एक 'चरमा'
चरम होय अने केटला 'अचरमा:' अचरम होय' ए बहुचरम घटी शक्यो नहि, कारण के नैरयिकोमा उद्वर्तनाथिरहनी उद्वट काळ वार मुहूर्तनो कस्यो
छे, एटले ते दरम्यान कोइ नैरयिक व्यक्तो ननौ, तेमज कदाचित् एकादि नैरयिकनी पण उद्वर्तना होय छे एटले प्रश्नसमये ज्यारे एक पण
नैरयिक स्थिताना चरम समयने न प्राप्त थयेलो होय, अथवा एक के नैरयिक प्राप्त थयेला होय ज्यारे 'केटलाक चरम होय अने केटलाक
अचरम होय' ए उत्तर घटी शके नहि, माटे प्रश्नसमये जे नैरयिको छे तेमां केटलाक चरमस्थितिने प्राप्त थयेला होय के अनुक्रमे थवाना
समयनो अनुभव करशे ते अचरम जाणना—अनुवादक.

निरंतरं जाय वेमाणिण । नेरइया णं भंते ! रेसचरमेणं किं चरमा, अचरमा ? गोयमा ! चरमावि, अचरमावि ।
 ण्यं निरंतरं जाय वेमाणिया । नेरइण णं भंते ! फासचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे, सिय
 अचरमे । ण्वं निरतरं जाय वेमाणिण । नेरइया णं भंते ! फासचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि,
 अचरमावि । ण्यं जाय वेमाणिया । संगहणिगाहा—

“गतिठिइमये य भासा आणापाणुचरमे य बोद्धब्बा । आहारभावचरमे वण्णरसे गंधफासे य” ॥

इति पल्लवणाए भगवईए दसम चरमपदं समचं ।

नैरयिको स्मचरम बडे शुं चरम छे के अचरम छे! हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर
 यावत् वैमानिको सुधी जाणुं. हे भगवन् ! नैरयिक स्मचरम बडे शुं चरम छे के अचरम छे! हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने
 कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिक सुधी जाणु. हे भगवन् ! नैरयिको स्मचरम बडे शुं चरम छे के
 अचरम छे ! हे गौतम ! कदाच चरम पण होय अने कदाच अचरम पण होय. ए प्रमाणे निरंतर यावत् वैमानिको सुधी समजुं.

मासाचरमेण' इत्यादि 'हे भगवन् ! नैरयिक मासाचरम पडे चरम छे के अचरम छे ! मासाचरम-छेत्ता भाषा, तेथी सूत्रनो भा अर्थ
 पाय छे-हे भगवन् ! नैरयिक चरममाया बडे चरम छे के अचरम छे ! याली यडु सुगम छे यडुचनसुदरमा प्रहसनो मायार्थ भा
 प्रमाणे छे-प्रसससमये जे माएको छे तेजो फाल्कने चरममायाने प्राप्त पाय छे, तेजो हे चरममाया पडे चरम छे के अचरम छे ?

संग्रहणी गाथानो अर्थ—

“ गति, स्थिति, भव, भाषा, श्वासोच्छ्वास, आहार, भाव, वर्ण, रस, गंध, अने स्पर्श संघन्ये चरमादि ज्ञापना. ”

प्रज्ञापना सूत्रना अनुवादमां दससुं चरम पद समाप्त,

तेथी उत्तरसूत्र पण वदे छे, ए प्रमाणे उच्छ्वास अने आहारसूत्रनो पण चिन्तार करवो. भावचरममां औदयिकभाच लेवो. चाकी वधुं सुगम छे.

श्रीमद्वाचाचार्यमल्ल्यगिरिनिरचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां दससुं चरमपद समाप्त.

एकारसं भासापयं ।

१. से णूनं भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चित्तेमीति ओहारिणी भासा, तह चित्तेमीति ओहारिणी भासा, तह चित्तेमीति ओहारिणी भासा ?

प्रमाण
पानुवाद.

॥७५५॥

अगिआरसुं भासापद

१. हे भगवन् ! हुं एम अवश्य मानुं छु के भाषा अवधारिणी-अर्थनो घोष करनारी छे, हुं एम चिन्तन करं छुं-बिचारं छुं के भाषा अवधारिणी छे. हुं एम मानु के भाषा अवधारिणी छे ? हु एम चिन्तन करं के भाषा अवधारिणी छे ! हु ते प्रकारे मनन

१ प प्रमाणे दुसमा पदनी व्याख्या करी, हवे अगिआरमा पदको प्रारंभ रूपय छे, तेको सवन्ध भा प्रमाणे छे-गही पूयंजा पदको प्रणीकोना नान्यमादि उपपातशेय छे, तेना चरम भने अचरम विभागनु प्रतिपादन करुं अही भाषापयसिचये पर्यासाकोमी त्तयादि भाषाकोनो विभाग सतायाय छे, तेमां भा प्रथम सूत्र छे-‘से नून भते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा’ हे भगवन् ! हु अवश्य मानुं छु के भाषा अवधारिणी छे’ इत्यादि से शय्य अथ शय्यना प्रारंभमा ययराय छे ‘नूनम्’ अथय

१ हे भगवन् ! भाग त्रिविध माने छो के भाषा अवधारिणी-अर्थनो निधय करनारी छे, अथ चिन्तने छो के भाषा अवधारिणी छे ! भाग जे प्रकारे माने छो के भाषा अवधारिणी छे, भाग जे प्रकारे चिन्तने छो के भाषा अवधारिणी छे ते प्रकारे हुं मानुं के भाषा अवधारिणी छे, ते प्रकारे हुं चिन्तने के भाषा अवधारिणी छे. हुं जे प्रकारे हुं मानुं के भाषा अवधारिणी छे, हुं जे प्रकारे मानुं के भाषा अवधारिणी छे, हुं जे प्रकारे चिन्तने के भाषा अवधारिणी छे, ते प्रकारे हुं चिन्तने के भाषा अवधारिणी छे अही मूळ प्रमाणे ‘मत्तन्धि’ एते पाठ छे, तथी त्तो प्रतिद अर्थ हुं मानुं छुं’ एते पाठ छे, पल्लु टीकाकर कर्णारे छ क “मत्तन्धि इत्यादीनि प्रियायानि प्राण्येत्वा

हंता गीयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ।

करं के भाषा अवधारिणी छे ? हुं ते प्रकारे चिन्तन करं के भाषा अवधारिणी छे ? हा गौतम ! तुं एम मान के भाषा अवधारिणी छे, तुं एम विचार कर के भाषा अवधारिणी छे. तुं ते प्रकारे मनन कर के भाषा अवधारिणी छे, तुं ते प्रकारे चिन्तन कर के भाषा अवधारिणी छे, ते प्रकारे मनन अथवा चिन्तन कर के भाषा अवधारिणी छे.

उपमान, अवधारण, तर्क, प्रश्न अने हेतुना अर्थमां वपराय छे. अहीं अवधारण अर्थमां छे 'भंते' भदन्त प आमन्त्रण छे. 'मन्ये' मांहुं छुं, जाणुं छुं के 'इति' प प्रमाणे 'अवधारिणी'-अवधार्यते अर्थोऽनया-जे वडे अर्थनो निश्चय थाय ते अवधारिणी अर्थात्-अर्थना अवबोधनुं कारणभूत, भाव्यते-बोलाय ते भाषा, पटले भाषाने योग्य होवाथी परिणमन करेला अने छोडी वीधेला भाषावर्गणा द्रब्यनो समुदाय. आ पदनों अर्थ छे. वाक्यनो अर्थ आ प्रमाणे छे-हे भगवन् ! तुं एम मांहुं छुं के भाषा अवश्य अवधारिणी-अर्थावबोधना

छान्दस्तात्राय युष्पदर्थेऽपि प्रयुज्यन्ते." 'मन्नामि' इत्यादि त्रिषापदो प्राकृतशैलीधी अने सूत्रनी रचना दोनागी 'युष्मद्' शब्दना अर्थमां पण प्रयोजाय छे. वळी "प्रहस्रो च मन्योपपदे मन्यतेरुक्तम णत्तत्र" (१. ४. १०६.) एवं पाणिनीय सूत्र छे. तेनो अर्थ आनो थाय छे—प्रहस्रम-हास्य गम्यमान होय ल्यारे मन् धातु जेनी समीपवर्ती होय एवा धातुधी मध्यम पुरुष अने अने 'मन्' धातुधी उत्तम पुरुषनो प्रत्यय लागे छे, अने ते एकत्रचनमां मूकवागां आवे छे. जेमेक 'एहि मन्ये रयेन यास्यसि, न यास्यसि, यातस्ते पिता'. आव, तुं माने छे के रथमां वेसीनि हुं जइश, पण तुं नहि जइशके, कारण केतारो पिता (रथमां वेसीनि) गयो. अही 'मन्ये' नो अर्थ 'लं मन्यते' तु माने छे एवो अर्थ थाय छे. जो के अही प्रहस्रा नथी, तोपण मन् धातुधी युष्मद् शब्दना अर्थमां उत्तम पुरुषनो प्रयोग थाय छे एम मानवानं कारण छे, तेथी अहीं ते नून भंते ! 'मन्नामी'ति अप नूनं भदन्त ! लं मन्यते—हे भगवन् ! तमे मानो छो के 'नूनम्' अवश्य भाषा अवधा-

कारणभूत है, आ विचार्यों विषय पकघार मानु छु एम नथी, एण चिन्तयाभि' युक्तिद्वारा चिन्तनु छु, विचारु छु के भाषा अवधारिणी छे एम गौतम स्वामी पोतानो अभिप्राय भगवन्तने निवेदन करी प्रस्तुत अर्थमा निश्चय निमित्ते आपमाणे भगवन्तने पूछे छे-अह मण्णामीति ओद्धारिणी भासा'-अथशब्द प्रक्रिया, प्रश्न, आनन्तर्ध-पछी, मगल, उपन्यास-प्रारंभ, प्रतिवचन अने समुच्चयना अर्थमा छे अही प्रश्नना अर्थमा छे फाकु (प्रश्नार्थक ध्वनि) घडे आ सूत्रनो पाठ फहेयो. तेथी आ अर्थ थाय छे अथ-हे भगवन् ! हुं एम मानु, मनन फर के भाषा अवधारिणी छे ? बीजा अभिप्रायना निवेदनने आधारि प्रश्न फरे छे-हु एम चिन्तन करं के भाषा अवधारिणी छे ? आ मारी मान्यता निर्दोष छे ? हवे प्रश्न समयनी पूर्व जेम मनन अने चिन्तन करुं हतु, तेम अत्यारे प्रश्न समये एण मनन अने चिन्तन फर ? अन्य प्रकारे नहि ! ए प्रमाणे भगवन्तना शान्ती साये सचाव-सेठ करधानी इच्छावाळा गौतम स्वामी पूछे छे-तह यत्तामीति ओद्धारिणी भासा' तह चिन्तेमीति ओद्धारिणी भासा' तथा शब्द समुच्चय, निवेद्य, अवधारण, सादृश्य अने प्रश्नना अर्थमा छे अही निवेद्य अर्थमा छे फाकु-प्रश्नार्थक ध्वनिये आ सूत्रनो एण पाठ फहेयो तेथी प्रश्नार्थनो स्थल आवे छे हे भगवन् ! जेम पूर्व मान्तो हतो तेम अत्यारे एण हु मानु के 'ए प्रमाणे अवधारिणी भाषा छे' ? ए प्रश्ननो अभिप्राय छे तात्पर्य ए के हे भगवन् ! माए अत्यारना मननमा अने पूर्वना मननमा फरण विशेष नथी, जेम में पूर्व चिन्तयु हतु तथा-ते प्रकारे अत्यारे चिन्तनु के भाषा अवधारणी छे ? ए बरोबर छे ? ए प्रमाणे गौतम स्वामीए पोताना अभिप्रायना 'निवेदनरूप प्रश्न फरौ पटले भगवन् फहे छे-हन्ता गोयमा ! यत्तामीति ओद्धारणी भासा' हन्त-सप्रेषण, प्रत्यवधारण-स्वीकार अने विषादना अर्थमा छे अही प्रत्यवधारण अर्थमा जाणयो 'मन्नाभि' इत्यादि प्रियापदोनो प्रकृत शैलिधी के छान्वस-सूत्रनी रचनाने लीये युष्मद्-तमे' ना

रिणी छे ! ए एक प्रश्न छे, अने अह यत्तामीति ओद्धारिणी भासा, तह यत्तामीति ओद्धारिणी भासा' अही 'अह' वषा--जे प्रकारे आप मानो छे के भाषा अवधारिणी छे 'वह' वषा--ते प्रकारे हु मानु ! ए बीजो प्रश्न छे अने ते बनेमा कमल उत्तरो आपवामा आम्मा छे. टीकाकारे आ सूत्रनी व्याख्या करी छे तेल अनुगरी उपर मूळना अनुवादनो अर्थ आयो छे. ते विषय बीजी रीये एण आ सूत्रनो अर्थ बढ छे अने ते एण मन्त्र होवापी अही आपवामा आयो छे

आशा करवी वगेरे जेनो विषय छे पवी भाषा असत्यामृषा कहेवाय छे. कह्युं छे के—

“सच्चा हिया सयामिह सन्तो मुणयो गुणा पयथा वा । तद्विवरिया मोसा जा तदुभयसहात्रा ॥ अणहियाया तीसु वि सहो क्षिय केवलो असच्चमुसा ।”

सत् पटले मुनिओ, गुणो, अने पदार्थो: सतने द्विकारक ते सत्य. तेथी विपरीत ते मृषा. उभय स्वभाववाली ते मिश्रित भाषा, त्रणेने विरो जेनो अधिकार नथी अने जे शब्दव्यवहाररूप होय ते असत्यामृषा भाषा कहेवाय छे. हवे भगवान् उत्तर कहे छे—गोयमा ! ‘सिय सच्चा’ इत्यादि. हे गौतम ! कदाञ्च सत्य पण होय, कदाचित् असत्य होय, कदाचित् सत्यमृषा होय अने कदाचित् असत्यामृषा होय. अहाँ आ संबन्धे प्रश्न करे छे—‘से केणट्टेणं भंते !’ ‘हे भगवन् एम शा हेतुथी कहो छो’ ? इत्यादि पाठ सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! ‘आराधनी सत्यभाषा छे. अहाँ विवादना विषयमां वस्तुनुं स्थापन करवानी बुद्धिथी जे सर्वदना मतने अनुसरी बोलाय, जेमके आत्मा छे अने ते सत्, असत्, नित्य, अनित्य आदि अनेक धर्मयुक्त छे—इत्यादि यथावस्थित वस्तुने कहेवावाली ‘आराध्यते मोक्षमार्गोऽनया’ जेनाथी सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गनुं आराधन थाय पवी आराधनी भाषा कहेवाय छे, अने आराधनी होवाथी ते सत्यभाषा कहेवाय छे. विराधनी-विराध्यते मुक्तिमार्गोऽनया—जे वडे मुक्तिमार्गनी विराधना थाय ते, पटले सम्यग्दर्शनादि मोक्षमार्गने प्रतिकूल होय ते मृषाभाषा कहेवाय छे. विवादना विषयमां वस्तुनुं स्थापन करवानी आशयथी सर्वदना मतथी प्रतिकूलपणे जे बोलाय, जेमके ‘आत्मा नथी, अथवा ते एकात्मनित्य छे’—इत्यादि ते असत्य भाषा छे, तथा सत्य छतां वीजाने पीडा उत्पन्न करवारी विपरीत वस्तुना कथनथी, परने पीडानो हेतु होवाथो, के मुक्तिमार्गनी विराधना फलार होवाथी विराधनी अने विराधकभाववाली होवाथी मृषाभाषा कहेवाय छे. कोइ नगर के पत्तनने उद्देशी पांच बाळकोनो जन्म थयो होय त्यारे एम कहेवाय के अहाँ दसनो जन्म थयो छे, ते स्थूलव्यवहारगयना मतथी आराधनी-विराधनी कहेवाय छे, कारण के पांच बाळकोनो जन्म थयो छे तेपले अंशे यथार्थपणानो संभव छे मोटे आराधनी, ‘दस पूरा नथी’ पटला अंशे अयथार्थपणानो संभव होवाथी विराधनी, ए रीने आराधनी विराधनी होवाथी सम्यमृषा कहेवाय छे. जे तेनुं लक्षण नछि होवाथी आराधनी नथी, तेम विपरीत वस्तुना कथनना अभावथी

૩ અહ મંતે ! ગાઓ મિયા પસૂ પવ્લ્હી પળવળી ણં ત્સા ખાસા, ણ ત્સા ખાસા મોસા ? હંતા ગોયમા !
જા ય ગાઓ મિયા પસૂ પવ્લ્હી પળવળી ણં ત્સા ખાસા, ણ ત્સા ખાસા મોસા !

૩. હે મગવન્ ! ગો-વલ્લદ, મુગો, પશુઓ અને પક્ષીઓ' એ માયા પ્રજ્ઞાપની-અર્થનુ પ્રતિપાદન કરનારી છે ? આ માયા મૃપા-અસ-
ત્ય નથી ? હે ગૌતમ ! અવશ્ય ગો, મુગો, પશુઓ અને પક્ષીઓ એ માયા પ્રજ્ઞાપની છે, આ માયા અસત્ય નથી.

અને પરપીડાનો હેતુ નહીં હોવાથી વિરાધની પણ નથી, તેમ અનુક અશે સવાદ-યથાર્થપણા અને વિસવાદ-અયથાર્થપણાના અમાલ્યો
આરાધની-વિરાધની પણ નથી પથી 'હે સાધુ પ્રતિમ્મજ કરો, સ્થલિલનુ પ્રાયુપેક્ષણ કરો' इत्यादि व्यवहारसाधक धामन्त्रणी वगैरे
મેદવાલી અસત્યમૃપા નામે ચોથી માયા છે 'એ હેતુથી હે ગૌતમ ! એમ કહુ છુ, इत्यादि उपसहार वाक्य છે

૩ અહીં 'યથાવસ્થિત ઘસ્તુત્તવનુ પ્રતિપાદન કરનારી માયા આરાધની હોવાથી સત્ય છે' એમ કાણ, તેથી સશયને
પ્રાપ્ત થયેલા ગૌતમ સ્વામી સશય દૂર કરવા માટે પૂછે છે-'અહ મતે ! ગાઓ મિયા' इत्यादि हे मगवन् ! गो-प्रसिद्ध છે, મુગો પણ
પણ પ્રસિદ્ધ છે, પશુઓ-ચકરાઓ, પક્ષિઓ પણ પ્રસિદ્ધ છે, એ માયા પ્રજ્ઞાવ્યતેડ્યોડન્યા' इति जे वडे अर्थे जणावाय ते प्रसापनी-अर्थेने
પ્રતિપાદન કરનારી યથાર્થ માયા છે ? વટલે પ્રરુપણા કરવા યોગ્ય છે ? આ માયા સત્ય છે ? આ માયા મૃપા નથી ? અહીં પ્રજ્ઞાને
આ માયાર્થ છે--'ગો' પથી માયા ગોજાતિનુ પ્રતિપાદન કરે છે, અને જાતિમા પ્રણે લિંગાલાઠા અર્થો અભિચય-ફહેયા યોગ્ય છે કારણ
કે પ્રણે લિંગનો જાતિમાં સમય છે એ પ્રમાણે મૃગ, પશુ અને પક્ષી સવન્થે પણ જાણુ પરતુ આ શબ્દો પ્રણે લિંગના વાચક નથી,
કેમકે તેથી તેવા પ્રકારની પ્રતીતિ થતી નથી, પણ તે શબ્દો પુલિંગ રૂપ અર્થના વાચક છે તેથી સંશય થાય છે કે આ માયા
પ્રજ્ઞાપની-યથાવસ્થિત અર્થની પ્રતિપાદન કરનારી છે કે નહિ ? મગવાન્ ઉચ્ચર આવે છે-'હન્તા ગોયમા' ! इत्यादि 'हन्त' शब्द अवधारण अर्थमा
છે 'ગૌતમ' એ ધામન્ત્રણ અર્થમાં છે વટલે હે ગૌતમ ! અવશ્ય 'ગો'-इत्यादि माया प्रसापनी છે તેના અર્થનુ કથન કરવા માટે પ્રક-

४. अह भंते ! जा य इत्थीवज्ज, जा य पुमवज्ज, जा य णपुंसगवज्ज पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा
४. हे भगवन् ! जे स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंगवाची, पुंवाक्-पुरुषलिंगवाची, नपुंसकवाक्-नपुंसकलिंगवाची, ए भाषा प्रज्ञापनी छे ?

पणा करवा योग्य छे, कारण के यथावस्थित अर्थनुं प्रतिपादन करनाही होवाथी साय छे. तोपण जातिनुं प्रतिपादन करनाही आ भाषा छे, अने जातिनो त्रणे लिंगनी साथे संबन्ध छे, माटे जातिना प्रतिपादन वडे यथासंभव त्रणे लिंगवाळा विशेष अर्थोनुं प्रतिपादन थाय छे. तेथी यथावस्थित अर्थना प्रतिपादनथी आ भाषा प्रज्ञापनी छे. वळी पम जे कहेवामां आबुं के 'गो' वगेरे शब्दो पुह्लिग विशिष्ट अर्थना वाचक छे. तेना उत्तरमां शब्दमां लिंगनी व्यवस्था व्याकरण शास्त्रने आधीन छे. "स्त्रीपुंनपुंसकसहोक्तौ परं" "ग्राम्याश्चिशुद्धि-खुरसंधे, स्त्री, प्रायः" इत्यादि व्याकरणना नियम छे, तेथी कोष्ट शब्दमां व्याकरणना नियमथी स्त्रीलिंग, कोइमां पुह्लिग अने कोइमां नपुंसकलिंग थाय छे. वास्तविक रीते तो वधा जातिवाचक शब्द त्रणे लिंगरूप अर्थने ते ते देश, काल अने प्रस्तावादिना सामर्थ्यथी कहे छे. माटे तेमां कोईपण प्रकारनो दोष नथी. आ भाषा अन्यने पीडा करनार नथी, तेमज छेतरचा वगेरे दुष्ट आशयथी कहेली नथी, माटे असत्य नथी, तेथी प्रज्ञापनी छे.

४. 'अह भंते जा य इत्थिवज्ज' इत्यादि. 'अथ' प्रश्नना अर्थमां छे. 'भवत्त' ए संवोधनना अर्थमां छे. हे भगवन् ! स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंग प्रतिपादन करनाही भाषा 'खट्वालता'-इत्यादि, पुरुषवाक्-घट, पट-इत्यादि पुह्लिगप्रतिपादक भाषा, नपुंसकवाक्-कुडय-भौत, कांड-इत्यादि नपुंसकलिंगनुं प्रतिपादन करनाही भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? अहीं संशयनुं कारण ए छे के खट्वा

१. स्त्रीलिंग, पुंलिंग अने नपुंसकलिंगवाळा शब्दोनी सहोक्ति-साथे कथन होय त्यारे पर-नपुंसकलिंगवाची शब्द शेष रहे छे अने वीजानो लोप थाय छे.

२. ग्राम्य अने शिशुभिन्न वे खरीवाळा प्राणीओना समुदायनुं कथन होय त्यां स्त्रीवाची शब्द शेष रहे छे अने वीजानो लोप थाय छे.

મોસા ? હંતા ગોયમા ! જા ય ફ્લ્થીવઝ, જા ય પુમવઝ, જા ય નપુંસગવઝ પળળચળી ધં ળ્સા ળાસા, ન ળ્સા ળાસા મોસા !

આ ધાપા અમત્વ નર્થી ? હે ગૌતમ ! સ્ત્રીલિંગવાચક, પુરુષલિંગવાચક અને નપુંસકલિંગવાચક આ ધાપા પ્રજ્ઞાપની-અર્થત્વં પ્રતિપાદન કર-
નારી છે, આ ધાપા અસત્ય નર્થી.

પટ અને પુરુષ ધનોરે ડાબ્ધો ળનુષ્ઠમે સ્ત્રી, પુરુષ અને નપુસક લિંગા યાચક છે સ્ત્રી, પુરુષ અને નપુસકોનુ આ લક્ષણ છે-યોતિ, ક્ષોમઢ્ઢા, અસ્થિરતા, મુષ્ઠપણુ, કાયરપણુ, સ્લાનો અને પુરુષમમાગમની ર્ષ્ઠા, ય સાત સ્ત્રીપણા ચિહ્નો છે. પુરુષચિહ્ન, કઢોરપણુ, રહતા, પરત્રમ, ઢાઢીમૂઠ, ઢૃષ્ટતા-નિલંચતા, અને સ્ત્રીસમાગમની ર્ષ્ઠા—પ સાત ચિહ્નો પુરુષપણા છે સ્ત્રનાદિ અને ઢાઢીમૂઠ-ર્યાદિ લક્ષણો સર્વમાય અને સમાય સહિત અને મોહાનિવઢે પ્રત્યલિત ધયાને પરિતો નપુસક કહે છે". તેમજ ઢીને સ્થંઢે પણ કાઢ છે કે 'સ્ત્રલ અને કેઢાયાઢી સ્ત્રીઓ અને લોમચા-રોમયુક્ત પુરુષ કહ્યો છે જ્યાં ઢને લક્ષણનો અન્તર-અયકાચ ઢોય તે નપુસક કહ્યો છે આર્થો સ્ત્રી-ફ્લ્યાદિનાં લક્ષણો મટ્કાદિમાં ળગાતા નર્થી, તે આ પ્રમાણે-ઓ તેનાં યક યક અયચને જુઢા કરી સારી રીતે તપાસ કરીપ નોપણ તેમોમાં પૂર્વોક્ત સ્ત્રી ધનેરેનાં લક્ષણ ળગાતા નર્થી તેર્થી આ ધાપા પ્રજ્ઞાપની છે કે નર્થી યર્થો સશય ળપચ ઢાય છે અને તેને દૂર કરવાને માટે પૂછે છે અર્થી મગયાન્ ળસાર આર્થે છે-‘ફ્લ્તા ગોયમા’ ! હે ગૌતમ ! અયદ્ય’ ફ્લ્યાદિ અશરાર્થં પૂર્વેની ઢંઢે ળાળ્યો તેનો માર્થાર્થં આ છે-અર્થી ઢાબ્ધની પ્રયુક્તિના ચિચારમાં પૂર્વોક્ત સ્ત્રી ફ્લ્યાદિના લક્ષણો સ્ત્રીલિંગાદિ ઢાબ્ધનુ ઢાબ્ધ્ય નર્થી, ધંતુ ‘ફ્લ્યમ્, અયમ્, અને ફ્લ્યમ્’ ઢાબ્ધની ઢ્યવસ્થાના કારણમૂલત ધર્વાર્થના ધર્મો સ્ત્રીલિંગાદિ ઢાબ્ધ ઢાબ્ધ્ય છે અને તે ગુરુના ળપરેચ અને પરંપરપી ળાળી ઢકાય છે આ કલ્પના માત્ર નર્થી, કારણ કે ઢાસ્તયિક રીતે તે તે ઢાબ્ધના અમિથેયરૂપે-અર્થરૂપે તે ઢમિ ઢેચધર્મોનુ પરિણમન ઢાય છે અને તે ઢમ્યોના અમિથેય ધર્મો પરમાર્થર્થી સાન્વિકરૂપે છે ઢાકઢાવાન પણ કહે છે-“અયમિયમિથમિતિ

૬. અહ મંતે ! જા ય ઇત્થિઆણવણી, જા ય પુમઆણવણી, જા ય નપુંસગઆણવણી પણવણી ણં એસા ભાસા, પણ એસા ભાસા મોસા ? હંતા ગોયમા ! જા ય ઇત્થિઆણવણી, જા ય પુમઆણવણી, જા ય નપુંસગઆણવણી પણવણી ણં એસા ભાસા, ન એસા ભાસા મોસા !

૫. હે ભગવન્ ! જે સ્ત્રીઆજ્ઞાપની, પુરુષઆજ્ઞાપની અને નપુંસક આજ્ઞાપની ભાષા તે પ્રજ્ઞાપની છે ? આ ભાષા અસત્ય નથી ? હા ગૌતમ ! જે સ્ત્રીઆજ્ઞાપની, પુરુષઆજ્ઞાપની અને નપુંસકઆજ્ઞાપની ભાષા પ્રજ્ઞાપની છે, અને એ ભાષા અસત્ય નથી.

શબ્દવ્યવસ્થાહેતુરભિધેયધર્મ ઉપદેશમ્મયઃ સ્ત્રીપુંનપુંસકલ્પાનિ” इति—अयम्, इयम् અને इदम् ए शब्दानी व्यवस्थानुं कारण उपदेशग-
म्य पदार्थनो धर्म ते स्त्रीलिंग, पुल्लिंग અને नपुंसकलिंगा છે.” આ વાચત સચિસ્તરપણે સ્વોપજ્ઞ શબ્દાનુશાસનના ચિવરણમાં અમે પ્રતિપાદન કરેલી છે. તેથી શાબ્દિક વ્યવહારની અપેક્ષાપૂર્ણ થયાવસ્થિત અર્થનું પ્રતિપાદન કરવાથી આ ભાષા પ્રજ્ઞાપની છે. વલ્લી તેની ઉત્પત્તિ દુષ્ટ વિવક્ષાથી થયેલી નહિ હોવાથી તેમજ અન્યની પીડાનું કારણ નહીં હોવાથી તે અસત્ય નથી.

૫. ‘અહ મંતે’ ! ઇત્યાદિ. હે ભગવન્ ! જે સ્ત્રીવાચાપની ‘આજ્ઞાપતે-આજ્ઞાસંપાદને પ્રયુજ્યતે અન્યા સા આજ્ઞાપનો’-સ્ત્રીને આજ્ઞા કરનારી, પુમાજ્ઞાપની—પુરુષને આજ્ઞા કરનારી અને નપુંસકાજ્ઞાપની—નપુંસકને આજ્ઞા કરનારી આ ભાષા પ્રજ્ઞાપની છે ? આ ભાષા અસત્ય નથી ? અહીં સંશયનું કારણ આ છે-પ્રજ્ઞાપની સત્યભાષા છે અને આ ભાષા આજ્ઞા સંપાદનની ક્રિયામાં યુક્ત સ્ત્રી વગેરેને કહેનારી છે. આજ્ઞા કરાયેલ સ્ત્રી વગેરે તે પ્રકારે કરે અથવા ન કરે, તેથી સંશયને પ્રાપ્ત થયેલા ગૌતમ સ્વામી નિશ્ચયને માટે પૂછે છે—અહીં ભગવાન્ ઉત્તર આપે છે—‘હન્તા ગોયમા’ ! હા ગૌતમ ઇત્યાદિ અક્ષરાર્થ સુગમ છે. ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે—આજ્ઞાપની ભાષા તે પ્રકારે છે—એક પરલોકનો વાધ નહીં કરનારી અને વીજી પરલોકનો વાધ કરનારી તેમાં સ્વ અને પરના ઉપર ઉપકારની બુદ્ધિથી કપટ સિવાય પારલૌકિક ફલના સાધન માટે સ્વીકારેલા ધૈરિક આલંચના પ્રયોજનવાળી, વિવક્ષિત કાર્યને સિદ્ધ કરવાના સામર્થ્ય

૬. અહ મતે ! જા ય હતિયપણવળી, જા ય પુમપણવળી, જા ય નપુંસગપણવળી પણવળી ણં ઇસા માસા, ણ ઇસા માસા મોસા ! હંતા ગોયમા ! જા ય હતિયપણવળી, જા ય પુમપણવળી, જા ય નપુંસગપણવળી પણવળી ણં ઇસા માસા, ણ ઇસા માસા મોસા !

૬. હે મગવન્ ! જે સ્ત્રીપ્રજ્ઞાપની, પુરુષપ્રજ્ઞાપની અને નપુંસકપ્રજ્ઞાપની માયા તે પ્રજ્ઞાપની છે ! આ માયા અસત્ય નથી ! હા ગૌતમ ! જે સ્ત્રીપ્રજ્ઞાપની, પુરુષપ્રજ્ઞાપની અને નપુંસકપ્રજ્ઞાપની માયા છે તે પ્રજ્ઞાપની છે, આ માયા અસત્ય નથી.

શુક ધિનીત સ્ત્રી ઘરેને ચિપ્ય ઘરેને પ્રેરણા કરનારી આજ્ઞાપની માયા પરલોકનો યાચ કરનારી હતી નથી, આઝ માયા સાનુને પ્રજ્ઞાપની-પ્રત્યયા લાયક છે કારણ કે તેથી પરલોકનો યાચ થતો નથી ધીઝી માયા તેનાથી ઝલટી છે અને તે સ્વપરને સપ્લેષ્ટ ઝરપદ્ય કરનાર હોવાથી અમત્ય માયા છે કહ્યું છે કે-‘અધિનીતને આજ્ઞા કરનાર પ્લેશ પામે છે, અને તે મૃયા ઘોલે છે કારણ કે ઘટના લોહાને આળીને તેની કટ-સાવડી કરવામાં કોણ પ્રયત્નિ કરે ! ક્રિયા દ્રવ્યને-યોગ્ય યસ્તુને સસ્કાયુક કરે છે, પણ અદ્રવ્યને-અયોગ્ય યસ્તુને કરતી નથી ય અભિપ્રાય છે

૬ ‘અહ મતે ! જા ય હતિયપણવળી’ इत्यादि हे भगवन् ! જે ‘સ્ત્રીપ્રજ્ઞાપની’ યોનિ, કોમલતા, અસ્થિરતા, મુગ્ધતા-इत्यादि સ્ત્રીના લક્ષણને જણાવનારી છે, જે ‘પુરુષપ્રજ્ઞાપની’-‘પુરુષચિદ્ધ, કઠોરતા, દ્રઢતા’-इत्यादिरूप પુરુષના લક્ષણને જણાવનારી છે અને જે ‘નપુંસકપ્રજ્ઞાપની’-‘સ્તનાદિ અને શઠી મૂઠ ઘરેરેના સદ્ગાય અને અમાયયુક’ इत्यादिरूप નપુંસકના લક્ષણને જણાવનારી છે, આ માયા પ્રજ્ઞાપની છે ! આ માયા અસત્ય નથી ! અહીં પ્રમ્મનો ય અભિપ્રાય છે કે સ્ત્રીલિંગાદિ શબ્દો યાચ્છિક વ્યયહારના ઘટથી સ્ત્રી ઘરેરેના લક્ષણરહિત અન્ય અર્થના ધીઝે પણ પ્રયત્નિ કરે છે જેમકે તદ્દયા, ઘટ, કુઝ્વ ઘરેરે યદયાદિ અર્થમાં પ્રયત્ન છે, પરંતુ તેમાં પૂર્વોક્ત સ્ત્રી ઘરેરેનાં લક્ષણો નથી, ય સંબંધે પૂર્વે કહ્યું છે માટે અભ્યાપક હોવાયતી ‘સ્ત્રી ઘરેરેના લક્ષણને જણાવનારી માયા ન કહેવી ઝોદ્દય કે

७. अह भंते ! जा जायीति इत्थिवज्ज, जातीति पुमवज्ज, जातीति णपुंसगवज्ज पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिवज्ज, जाईति पुमवज्ज, जातीति णपुंसगवज्ज पणवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ।

७. हे भगवन् ! जे जातिमां स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंगवाचक भाषा, जातिमां पुरुषवाक्-पुल्लिंगवाचक भाषा अने जातिमां नपुंसकवाक्-नपुंसकलिंगवाचक भाषा, ए भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? हा गौतम ! अवश्य जातिमां स्त्रीवाक्-स्त्रीलिंगवाची, जातिमां पुंवाक्-पुल्लिंगवाची अने जातिमां नपुंसकवाक्-नपुंसकलिंगवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे. आ भाषा असत्य नथी.

कहेवी जोइए ? आ प्रमाणे संशयने प्राप्त थयेला गौतम स्वामी पूछे छे. अहीं भगवान् उत्तर आपे छे—'हंता गोयमा ! हे गौतम ! अवश्य-इत्यादि अश्रुतरथं प्रसिद्ध छे. तेनो भावार्थ आ छे—अहीं स्त्री वगैरेनां लक्षण ने प्रकारनां छे-शाब्दिक व्यवहारगत अने शास्त्रगत. तेमां ज्यारे शाब्दिक व्यवहारने अनुसरी प्रतिपादन करवुं. इए होय त्यारे अन्यापक होवाथी शास्त्रगत स्त्री वगैरेना लक्षण ए प्रमाणे न कहेवां जोइए, ते लक्षणोनी अव्यापकता ते प्रकारे पूवें लेखथी वतावेली छे. विस्तारथी स्वोपदेशार्थानुशासनना विवरणथी जाणवुं. माटे आ भाषा शाब्दिक व्यवहारने आश्रयथी प्रज्ञापनी छे. ज्यारे शास्त्रने अनुसरी स्त्री वगैरेनुं लक्षण प्रतिपादन करवानुं होय त्यारे यथावस्थित अर्थना कथनथी आ भाषा प्रज्ञापनीज छे, असत्य नथी.

७. 'अह भंते ! जा जातीति इत्थिवज्ज' इत्यादि. हे भगवन् ! जातो स्त्रीवाष् षट्ठले जातिमां स्त्रीलिंगवाची वचन, जेमके 'सत्ता,' सत्ता जाति छे अने ते स्त्रीलिंगविशिष्ट छे. जातिमां पुंवाक्-पुरुषवचन, जेमके भाव, भाव ए जातिवाचक छे अने पुल्लिंग छे. अने जातिमां नपुंसकवाक्-नपुंसकवचन, जेमके सामान्य ए जातिवाचक छे अने नपुंसकलिंग छे. ए भाषा प्रज्ञापनी छे ? आ भाषा असत्य नथी ? अहीं

८. अहं भंते ! जा जातीह इत्थियाणमणी, जाइत्ति पुमआणवणी, जातीनि णपुंसगाणमणी पणवणी णं गसा

८. हे भगवन् ! जे जातिरूपे स्त्रीआज्ञापनी, जातिरूपे पुल्लआज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकआज्ञापनी, ए भाषा भद्रापनी छे ?

प्रश्नोप अभिप्राय छे के जाति ए सामान्य कहेयाए छे अने सामान्यनी साथे लिंग अने संख्यानो संबन्ध सथी द्रव्यनोज लिंग अने संख्यानी साथे संबन्ध अन्य तीर्थकोए स्वीकारेछो छे (कारण के 'लिंगसख्यान्वित द्रव्यम्'-लिंग अने संख्याना संबन्धघाळु द्रव्य होए छे) जो जातिमां लिंग अने संख्यानो योग मानीए तो पण औसर्गिक एकवचन अने नपुंसकलिंग घटे, पण प्रण लिंगनो संबन्ध घटी छोके नहीं अने जातिमां [सत्ता, भाव, स्वामन्व यगोरे] प्रणे लिंगना याचक शब्दो पयतेंछे ए हमबांज कम् छे, तेथी सशय थाए छे के जातिमां स्त्रीलिंगयाचक, पुल्लिंगयाचक अने नपुंसकलिंगयाचक भाषा भद्रापनी छे के नहीं ? हवे भगवान् उत्तर आये छे—'हन्ता गोयमा' ! हा गौतम ! इत्यादि अक्षरायें सुगम छे तेनो भाषांय भा छे—जाति पटले सामान्य, अने ते सामान्य यीजाए पढ़येल्लु एक, अवयव रहित अने निश्चय नहि, कारण के ते प्रमाणघटे शोधित छे, अने ते प्रमाणनी पद्यानो विचार जे प्रकारे छे तें प्रकारे तत्पार्यंटीकाम्य अने करेछो छे, माटे त्यांथी जाणी लेयो परंतु सामानपरिणामरूप सामान्य छे, कारण के 'यस्तुनोज जे सामान परिणाम तेज सा मान्य' एतु शाब्दु कथन छे, सामान परिणाम अनेक धर्मरूप छे अने धर्मनो परस्पर अमेद संबन्ध छे कारण के तेया प्रकारे प्रमाणघटे जणाए छे माटे जातिनो पण प्रण लिंगनी साथे संबन्ध घटे छे, तेथी भा भाषा भद्रापनी छे भा भाषा भद्रान्य नथी

८ 'अथ भद्रन्त ! 'जाती स्थानापनी' हे भगवन् ! जातिने उद्देशीने छीने आज्ञा करजारी भाषा, जेमेके 'असुक प्राप्तनी ये शक्ति याणी एव करे' यथी रीते जातिने आश्रयी पुरयने भाषा करजारी अथवा करजारी भा भाषा भद्रापनी छे ? भा भाषा भद्रान्य नथी ? अही पण भा संशयनु कारण छे—भाषांनी पटले आज्ञासंपादन करवानी प्रियात्म युक्त छी घोरेंजे प्रेरणा फलार्थी, भाषा

भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिआणमणी, जातीति पुमआणवणी, जातीति ण-
पुंसगाणमणी पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

९. अह भंते ! जातीति इत्थिपणवणी, जातीति पुमपणवणी, जातीति णपुंसगपणवणी, पणवणी णं एसा
भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! जातीति इत्थिपणवणी, जाईति पुमपणवणी, जाईति णपुंस-
आ भाषा असत्य नथी ? हे गौतम ! अवश्य जातिरूपे स्त्रीआज्ञापनी, जातिरूपे पुरुषआज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकाज्ञापनी ए भाषा
प्रज्ञापनी छे, आ भाषा असत्य नथी.

९. हे भगवन् ! जातिरूपे स्त्रीप्रज्ञापनी-स्त्रीना लक्षणं प्रतिपादन करनारी, जातिरूपे पुरुषप्रज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकप्रज्ञापनी,
करायेल स्त्री वगैरे ते प्रमाणे करे के नहीं ? ए संशय छे, तो आ भाषा प्रज्ञापनी छे के अन्य छे ? अहीं भगवाच् उत्तर आये छे-
'हत्ता गोयमा' ! हा गौतम !-इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे. तेनो भावार्थ आ छे-परलोकनो वाद्य नहीं करनारी आज्ञापनी भाषा ते
कहेवाय के जे स्व अने परना उपकारनी बुद्धिची विवक्षित कार्यने करवाना सामर्थ्यवाळा विनीत स्त्री वगैरे शिष्यगणने प्रेरणा कर-
नारी होय. जेसके 'अमुक ब्राह्मणी के साध्वी आजे शुभ नक्षत्र छे तेथी अमुक अंग के श्रुतस्कंधनो पाठ करे'-इत्यादि प्रज्ञापनी छे,
जेसके ते निर्दोष छे. तेथी अन्य भाषा स्व अने परने पीडाजनक दोषाथी असत्य छे अने तेथी ते अप्रज्ञापनी छे.

९. 'अथ भवन्त ! या जातिस्त्रीप्रज्ञापनी' हे भगवन् ! जे जातिने आश्रयी स्त्रीनां लक्षणने प्रतिपादन करनारी, जेसके स्त्री स्व-
भावथी तुच्छ, बहुअभिमानवाळी, चपल इन्द्रियवाळी अने धीरज वडे दुर्बल होय छे. काणुं छे के--'तुच्छा गारवद्युला चर्लदिया
दुब्बला य धीर्दप' । जे जातिने आश्रयी 'पुंमज्ञापनी' पुरुषनां लक्षणने प्रतिपादन करनारी, जेसके 'पुरुष स्वभावथी गंभीरआशयवाळो

गणपणवणी पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

१०. अह भंते ! संवकुमारण वा संवकुमारिया वा जाणति युयमाणा-अहमेसे युयामीति ? गोयसा ! नो इणहे

ए मापा प्रज्ञापनी छे ? आ मापा असत्य नथी ? हे गौतम ! अवश्य जातिरूपे स्त्रीप्रज्ञापनी, जातिरूपे पुलकप्रज्ञापनी अने जातिरूपे नपुंसकप्रज्ञापनी ए भाषा प्रज्ञापनी छे, आ भाषा असत्य नथी.

१०. हे भगवन् ! मंदकुमार (अत्यन्त नानो थालक) के मंदकुमारीका (अत्यन्त नानी थालिका) बोलती एम जाणे के, 'हु आ होय छे, मोटी आपत्तिमां पण फायर थतो नथी' इत्यादि, अने जे जातिने आश्रयी 'नपुंसकप्रज्ञापनी'-नपुंसकना स्वरूपने जणावनारी, जेम के 'नपुंसक स्वभावयकी कायर होय छे अने प्रबळ मोहाग्निनी ज्याळाना समूह धरे प्रज्वलित थयेलो होय छे'-इयादि, वा मापा प्रज्ञापनी छे ? आ मापा असत्य नथी ? अही पण आ सशयपु कारण छे-छी वगेरे जातिना गुणो पया प्रकारना छे, परंतु प्यारक कदाचित् व्यभिचार-नियमनो अभाव पण देखाय छे पटले केटलीपक व्यक्तिसोमा पवा प्रकारना गुणो देवता नथी जेमके कोइ कोइ छी पण गमीर आशयवाली अने धैर्यधरे अत्यन्त पळयाळी होय छे, कोइ पुरुष पण तुच्छ प्रकृतिवालो देसाय छे अने थोटी आपत्तिमा पण फायर याय छे कोइक नपुंसक पण अरपमोहाग्निवाळी अने द्रढस्त्वयाळो होय छे तेथी सशय थाय छे के आ मापा प्रज्ञापनी छे के नदी ? अही भगवान् फरे छे—'हा, गौतम' ! इत्यादि अक्षरार्थ सुगम छे, परंतु भावार्थ आ छे-अही जातिना गुणती प्ररूपणा यदुलताने आश्रयी छे, परंतु पधी व्यक्तिकी अपेक्षाप नथी. माटे ज जातिना गुणोनी प्ररूपणा फलार निर्मळयुधिवाळा प्राय-गुणुनो उच्चार करे छे के 'आ हकीकत प्रायः समजवी' ज्या पण प्राय शून्यनु कथन नथी, त्या पण प्रसंगधी जाणी लेयु, तेथी प्यारक अने कदाचित् जातिना गुणोनी व्यभिचार (अनियतपणु) होय तो पण योपना अभावधी आ भाषा प्रज्ञापनी जाणपी, पण असत्य न समजवी

समष्टे, गण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणइ आहारं आहारेमाणे-अहमेसे आहारमाहारेमिति ? गोयमा ! नो इण्णट्टे समष्टे, गण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति-अयं मे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इण्णट्टे समष्टे, गण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति-अयं मे अतिराडलो अयं मे अइराडलेत्ति ? गोयमा ! णो तिण्णट्टे समष्टे, गण्णत्थ स-
 वोळं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी-विशिष्टमनवाळा सिवाय अन्यत्र ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नथी. अर्थात् संज्ञी-विशिष्टमनवाळा सिवाय अन्य मन्दकुमार के मन्दकुमारिका एम जाणता नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका आहार करता जाणे के, 'हुं आ आहार करं छुं' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका जाणे के 'आ मारा मातापिता छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के मन्दकुमारीका एम जाणे के,

१०-११. अर्हीं भाषा सम्यग् उपयोगवाळानी अने ते सिवाय वीजानी एमचे प्रकारनी छे. तेमांजे पूर्वापरनो विचार करचामां कुशल आत्मा श्रुतज्ञान वडे अर्थनो विचार करीने बोले छे ते सम्यग् उपयोगवाळो छे. ते एम जाणे छे के 'हुं आ वोळुं छुं' अने जे करण-मन अने इन्द्रियना सामर्थ्यरहित होवाथी के वातावि दोषथी उपघात थयेला चैतन्यवाळो होवाथो पूर्वापरना अनुसंधान-संबन्धरहित जेम तेम मन वडे विकल्प करी करीने बोले छे ते सम्यग् उपयोगरहित छे. ते एम नथी जाणतो के 'हुं आ वोळुं छुं', अने वालको वगेरे एण बोले छे, तेथी संशय थाय छे के 'अमे आ बोलीए छीए' एम पथो जाणे छे के जाणता नथी, तेथी पूछे छे-'अह भंते ! मन्दकुमार ए वा'-इत्यादि. हे भगवन् ! मन्दकुमार-चत्तो सइ रहेनार वाळक, मन्दकुमारीका-चत्ती सइ रहेनारी वाळिका बोलतो-भाषा योग्य पुद्दलने प्रहण करी भाषापणे परिणमावीने छोडी देती-एम जाणे के 'हुं आ वोळुं छुं' ? भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! ए अर्थ

११ माया-
पद.
॥७७१॥

पिणपो । अह भंते ! मन्दकुमारण या मयकुमारिया या जाणति-अगं मे भट्टिवाराण, अयं मे भट्टिवारणति ! गो-
यमा ! गो इण्णहे समंढे, णण्णत्थ सण्णिणो ।

प्रजापना
मानुषाद

॥७७१॥

११. अह भंते ! उट्टे गोणे गरे घोडण अण पल्लते जाणति युयमाणे-अहमेसे युयामि ! गो इण्णहे
समंढे, णण्णत्थ सण्णिणो । अह भंते ! उट्टे जाय पल्लते जाणति आहार आहारमाणो-अहमेसे भाणरेमि ! गो-
'आ मार स्वामिनुं गृह्णे, आ मार स्वामीनुं गृह्णे' ? हे गौतम ! संक्षी सिवाय ए अयं समर्थ नथी. हे भगवन् ! मन्दकुमार के
मन्दकुमारीका ए जाणं के, 'आ मार स्वामिनो पुत्रे, आ मार स्वामिनो पुत्रे, आ मार स्वामिनो पुत्रे ए

अयं समर्थ-यथार्थ नथी.

११. हे भगवन् ! ऊट्ट, षट्ठ, गंधेडो, घोडो, पकुरी अले घेटो बोलतो एम जाणे के 'दु पोळं छु' ? हे गौतम ! संक्षी सिवाय
समर्थ-युक्त मर्था, जो के ते षट्ठक मथया पाळिका मत्तपर्याप्ति घटे पर्याप्ता छे तोपण इत्तु सुधी तेतु मन्कुर करण भस्ममर्थ छे, अले
मन करण भस्ममर्थ होवापी नेनो शयोपशम एण मन्कुर होय छे कारण के थुलमानावरण कर्मनो शयोपशम प्राया मन करणना सामर्थ्यने
भाधपी उपपद्य थाय छे, केअके तेया प्रकारे लोकमा रेण्णाय छे, तेथी मन्कुरमार के मन्कुरमारिका बोलती वय नथी जाणती के 'दु मा
घोडुं तु' दु वथाए जाणता नथी ! ए प्रसन्ता उचरत्तां भगवान् कहे छे- 'भण्णाय सच्चिणो' संक्षीपी भन्त्यय, संक्षी सिवाय बीजे ए अयं
समर्थ नथी अदी 'भन्त्यय' उण्ण परिपज्जता अर्थमा छे बीजे ह्येळं एण परिपज्जतायंक भन्त्यय उण्ण अजाय छे जेअके- 'अन्त्यय द्रोण
भीष्मार्थां गये घोषा पराशयुगा' इति द्रोण भने भीष्मने यजेनि यथा घोषाधो पराशयुग यथा-ए तेले मर्थ छे संक्षी-अयधिबानी
जाणिय्यारणयुक्त के सामान्य रीते चिचिण मन्ता सामर्थ्यपाळे, ते सिवाय बीजे जाणतो नथी. परंतु उपर वट्टेल्य स्वरूपपाटो संक्षी

यमा ! णो इण्णहे समढ्ढे, जाव णणत्थ सण्णणो । अह भंते ! उट्टे गणे ञ्वरे घोडए अए एलए जाणत्ति-अयं मे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इण्णहे समढ्ढे, जाव णणत्थ सण्णणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणत्ति-अयं म अतिराउलेत्ति ? गोयमा ! णो इण्णहे समढ्ढे, जाव णणत्थ सण्णणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणत्ति-अयं मे भट्टिदारए २ ? गोयमा ! णो इण्णहे समढ्ढे, जाव णणत्थ सण्णणो ।

१२. अह भंते ! मणुस्से मद्दिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे चिगे दीचिए अच्चे तरच्चे परस्सरे सियाळे विराळे वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो आहार करतो एम जाणे के, ' हुं आहार करं छुं ' हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट, वळद, गयेडो, घोडो, चकरो अने घेटो एम जाणे के, 'आ मारा मातापिता छे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो एम जाणे के, 'आ मारा स्वामिनुं घरछे' ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! ऊंट यावत् घेटो एम जाणे के, आ मारा स्वामिनो पुत्र छे' २ ? हे गौतम ! संज्ञी सिवाय वीजे ए अर्थ समर्थ नथी.

१२. हे भगवन् ! मनुज्य, महिय-पाडो, अश्व, हस्ती, सिंह, वाघ, वृक-नाहार, दीपडो, रीछ, तरक्ष, परस्पर-गडो, शियाळ, विलाडो जाणे छे. ए प्रमाणे आहारादि संवन्धी चारे खूनो विचार करवो. परंतु 'अतिराउल' ए देशीपद छे अने स्वामीना घरवाची छे. 'भर्तृदारकः' भर्ता-स्वामी, तेनो दार-पुत्र ते भर्तृदारक कहेवाय छे. ए प्रमाणे उंट चगेरे संबन्धे पण पांच खूनो जाणवां. परंतु उंट चगेरे पण अत्यन्त बाल्य अवस्थावाला लेवा, पण मोटी उमरला न लेवा. कारण के मोटी अवस्थामां तेओने पूर्वोक्त ज्ञाननो संभव छे.

મનુષ્ય કોલસુણા કોસ્કંતિણ સસા ચિહ્નણ જે યાવને તહ્પગારા સન્વા સા પગવજ ? હંતા ગોયમા ! મનુષ્સે જાય ચિલ્લણ, જે યાવને તહ્પગારા સન્વા સા ળયવજ ! અહ મંતે ! મનુષ્સા જાવ ચિહ્નણા જે યાવને તહ્પગારા સન્વા સા ષહુવજ ? હંતા ગોયમા ! મનુષ્સા જાવ ચિહ્નણા સન્વા સા ષહુવજ !

કુતરો, ઝિફારી કુતરો, કોકતિક-લોકઢી, સસલો, ચિષો, ચિલ્લક, અને તે સિવાયના રીજા તેવા પ્રકારના તે ષયા ઇકવચન છે ? હે ગૌતમ ! અવશ્ય મનુષ્ય યાવ્ ચિલ્લક અને તે સિવાયના તેવા પ્રકારના તે ષયા ઇકવચન છે. હે મગવન્ ! મનુષ્યો યાવ્ ચિલ્લકો અને તે સિવાય તેવા પ્રકારના રીજા ષયા ષહુવચન છે ? હે ગૌતમ ! અવશ્ય મનુષ્યો, યાવ્ ચિલ્લકો અને તે સિવાય તેવા પ્રકારના ષયા ષહુવચન છે.

૧૨ હવે ઇક વચનાદિ ષયા સવર્ણી સંશય વુટ કરવાને માટે વુટે છે—‘આહ મંતે’ ઇત્યાદિ. હે મગવન્ ! મનુષ્ય, મહિય, અમ્ય, હસ્તી, મિઠ, ષાય અને યુક-નાહર ષ પ્રસિદ્ધ છે. રીષહો ષ ઇક જાતનો ચિત્તો છે. પ્રક્ષ-રીછ, તરક્ષ-ચક ષાયની જાત, પરસ્વર-ગેરો, ગુગાલ-રીયાલ, ચિલાસો, શુનક-કુતરો, કોમ્પુનક-શીકાર, ફરયામા કુગલ વુતરો, ગુગક-સસલો પ્રસિદ્ધ છે, ‘કોકતિકા’ લોકઢી, ચિત્રક-પ્રમિદ્ધ છે અને ચિહ્નક ષ અરણ્યનો વશુ વિશેષ છે, ‘જે ષાયછે તહ્પગાર’ ઇતિ તે સિવાય રીજા ષયા તેવા પ્રકારના ઇકવચનાલ્ શય્તો તે ‘ઇકયાઈ’ વચનપ્રતિપાદક ષયા છે. અહીં પ્રક્ષનો આ અભિપ્રાય છે—ધર્મો અને ધર્મીના સમુચાયક ષયુ છે, પ્રયેક ષયુમાં અન્ના ધર્મો છે, ‘મનુષ્ય’ ઇત્યાદિ કવનમાં ધર્મે અને ધર્મીના સમુચાયક ષપૂર્વ ષયુ પ્રતીયમાલ ષાય છે. કારણ કે તેવા પ્રકારનો ઇવહાર રેગાય છે. ઇક અર્થમાં ઇકવચન અને ષહુ અર્થમાં ષહુવચન આયે છે. અહીં ષયા ધર્મો અભિપેય-કહેવા ષોગ્ય છે, તેથી ઇકવચન કેમ ષટી શકે ? અને લોકમાં ઇક વચન ષટે ષણ ઇવહાર ષાય છે. માટે વુટે છે કે આ ષથી ઇકવચન પ્રતિપા-

દૂર ભાગા છે ? કાકુ-પ્રસ્નાર્થક ધ્વનિ ઘડે આ સૂત્ર પાઠ કહેવો, તેથી પ્રસ્નાર્થનો ત્યાલ આવે છે. ભગવાન ઉત્તર આપે છે—હે ગૌતમ ! અવશ્ય આ વધી પફવચન પ્રતિપાદક ભાગા છે-ઇત્યાદિ. અક્ષરાર્થ સુગમ છે. ભાવાર્થ આ છે-શબ્દની પ્રવૃત્તિ વિવક્ષાને આધીન છે અને તે વક્તાની વિવક્ષા પ્રયોજનના વશથી કોઈ સ્થલે, કોઈ સમયે કથંચિત્ મિન્ન મિન્ન હોવાથી અનિયત હોય છે. જેમ કે તે પફલ પુરુષ 'આ મારો પિતા છે' પમ પુત્ર ઘડે વિવક્ષિત હોય ત્યારે તે પિતા કહેવાય છે. અને જ્યારે તેજ પુરુષ 'મને આ મળાવે છે' પમ તે પુત્રઘડે જ વિવક્ષિત હોય ત્યારે 'ઉપાધ્યાય' કહેવાય છે. તેમાં જ્યારે ધર્મને ગૌણ કરી ધર્મની પ્રધાનપણે વિવક્ષા કરાય ત્યારે ધર્મો ધર્મો એક હોવાથી પફ વચન થાય છે અને ધર્મો ધર્મો અંતર્ગત હોવાથી સંપૂર્ણ વસ્તુની પ્રતીતિ થાય છે. જેમ કે 'તું છે'. જ્યારે ધર્મની ગૌણ કરી પાંડિત્ય, પરોપકારીપણું, મહાદાનનું વ્રતાપણું વગેરે ધર્મોની પ્રધાનપણે વિવક્ષા કરાય છે ત્યારે ધર્મો ધર્મો ઘણા હોવાથી પફઃ વ્યક્તિમાં પળ યદુવચન ઘટે છે. જેમ કે 'તમે છો.' તેથી અહીં પળ મનુલ્ય ઇત્યાદિના કથનમાં ધર્મોને ગૌણ કરી, ધર્મોની પ્રધાનપણે વિવક્ષા કરી છે. માટે આ પ્રકારની વધી વાળી પફવચનપ્રતિપાદક છે. 'અહ મંતે મળુરસા' ઇત્યાદિ સૂત્રનો અક્ષરાર્થ પૂર્વેની પેઠે જાણવો. અહીં પળ સંશયનું કારણ આ છે-મનુલ્યાદિ શબ્દો જાતિવાચક છે, અને જાતિ સામાન્યરૂપ હોવાથી પફ છે. કારણ કે "પફં નિલ્યં નિરવયવમક્રિયં સર્વંગં ચ સામાન્યમ્" પફ, નિલ્ય, અવયવરહિત, નિર્મક્રય અને સર્વવ્યાપક સામાન્ય છે-પણું વચન છે, તેથી અહીં યદુવચન શી રીતે ઘટે ? અને યદુવચન ઘડે પળ વ્યવહાર જણાય છે, માટે પ્રશ્ન કરે છે કે-આ વધી યદુવચનપ્રતિપાદક ભાગા છે ? અહીં પ્રસ્નાર્થક ધ્વનિ ઘડે સૂત્રનો પાઠ કહેવાથી પ્રસ્નાર્થનો ત્યાલ આવે છે. ભગવાન ઉત્તર આપે છે—'હુન્તા ગોયમા' ઇત્યાદિ. હે ગૌતમ ! અવશ્ય આ વધી યદુવચનપ્રતિપાદક ભાગા છે. સૂત્રનો અક્ષરાર્થ સુગમ છે. તેનો ભાવાર્થ આ છે-યયપિ પ યવા જાતિવાચક શબ્દો છે તો પળ જાતિ પ સમાનપરિણામરૂપ છે અને સમાન પરિણામ અસમાન-વિશેષ પરિણામ સિવાય હોતો નથી, જો પમ ન હોય તો વસ્તુમાં પફલ્વના પ્રસંગથી સમાનપણું ઘટી ન શકે, તાત્પર્ય પ છે કે વસ્તુમાં અસમાન પરિણામ સિવાય કેવલ સમાન પરિણામ હોય તો તે પફ હોવાથી સમાનપણું ઘટી શકશે નહિ. તેથી જ્યારે અસમાન પરિણામથી અમિત્ર પવા સમાન પરિણામની પ્રધાનપણે વિવક્ષા કરાય ત્યારે અસમાન પરિણામ દૂરેક વ્યક્તિમાં મિન્ન હોવાથી તેને કહેવામાં યદુવચન ઘટી શકે છે.

१३. अह भंते ! मणुस्सी महिस्सी यलथा इत्थिणिया सीही वर्घी विगी धीविया अन्ही तरन्ही परस्सरा रा-
समी सियाली विराली सुणिया कोलसुणिया कोषकंतिपा ससिया चित्तिया चिह्ललिया जे यावन्ने तहप्पगारा
सन्वा सा इत्थिबऊ ? इंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिह्ललिया जे यावन्ने तहप्पगारा सन्वा सा इत्थिबऊ । अह

१३. हे मगवन् ! मातुपी-मनुष्यनी स्त्री, महिपी-भैंस, बडवा-बोडी, हाथणी, सिहण, बाघण, नाहरी, दीपडी, रींछण, तराही,
गेडी, गधेडी, छियाळी, बिलाडी, कुवरी, शिकारी कुवरी, फोकंतिका-लोकडी, ससली, चीची, चिल्ललिका अने ते सिचायना बीजा
तेवा प्रकारना होय ते यथा स्त्रीबाची छे ? हे गौतम ! अवश्य मातुपी यावत्-चिल्ललिका अने ते सिचाय बीजा तेवा प्रकारना ते यथा

जेम के यडाओ, परतु ज्यारे तेज समान परिणामनी प्रधानपणे विपला करप अने पीओ असमान परिणाम गौण होय त्यारे यथेय
समान परिणाम एक होधापी तेना कथनमा एक बचन घटी शके छे जेम के सर्व घट पहोळा तळीयां अने उदरादि आकारवाळो
होय छे अही गण 'मनुष्यां' मनुष्यो इत्यादिना कथनमा असमान परिणामधी अस्मिन् समान परिणाम प्रधानपणे विपरित छे अने
ते अनेक गोयाधी तेमां बहुपचन घटे छे

१३ 'अह भंते ! मणुस्सी' इत्यादि मातुपी इत्यादि प्रश्नां सशयु कारण भा छे—सर्वं यस्तु ब्रण स्निग्धाळी छे जेमके आ
नादीक्य छे, तेपी पुत्तिग पे आ माटीनी गरिणति (परिणाम) छे के आ घटाकारवाळी गरिणति (परिणाम) छे. तेथी स्त्रीलिंग छे, आ
यस्य ते तेथी मनुष्यलिंग छे, य प्रमाणे अनेकरूपे रवेळी यस्तुमां एकस्निग्धाचक शय् तेनो प्रतिपादक इी रते होय ? मरत्सिहना
इतिनी कथन विदधान् के मरत्स्य तेनो प्रतिपादक होतो मयी, अने लोकमां एक स्निग्धा प्रतिपादकपणा घटे शय्तेनो रूपवहार याय
छे, तेपी पृष्टे छे के—'तया एत इत्थिपऊ' यथा प्रकारनी यधी 'स्त्रीबाक'-स्त्रीलिंगविशिष्ट अर्थेनु प्रतिपादन करलारी माया छे ? वातुयडे

भंते ! मणुस्से जाव चिह्लए जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा पुमवज्ज ! हंता गोयसा ! मणुस्से महिसे जाव चिह्लए जे यावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा पुमवज्ज। अह भंते ! कंसं कंसोयं परिमंडलं सेलं थूमं जालं थालं तारं ! रूवं अच्छिपव्वं कुंडं पउमं दुद्धं दहिं णवणीतं असणं सयणं भवणं विमाणं छत्तं चामरं भिंगारं अंगणं गिरं-

स्त्रीवाची छे. हे भगवन् ! मनुष्य यावत् चिल्लक अने ते सिवाय तेवा प्रकारना वीजा वधा पुरुषवाची छे ? हे गौतम ! अवश्य मनुष्य, महिष, यावत् चिल्लक अने ते सिवायना तेवा प्रकारना वीजा वधा पुरुषवाची छे. हे भगवन् कंस, कंसोय, परिमंडल, शैल, स्तूप, जाल, स्थाल, तार, रूप, अधिपर्व, कुंड, पत्र, दूध, दहिं, नवनीत, अशन, शयन, भवन, विमान, छत्र, चामर, भुञ्जार, कलश, अंगण-आंगणु, निरंगण, आभरण, रत्न अने ते सिवायना तेवा प्रकारना वीजा वधा नपुंसकवाची छे ? हे गौतम ! अवश्य

(प्रश्नार्थक ध्वनिबडे) सूत्रनो पाठ कहेवाथी प्रश्नार्थनो ल्याल आवे छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'हंता गोयसा' ! इत्यादि. हा गौतम ! ते वधा स्त्रीलिंगवाची छे. अक्षरार्थ सुगम छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे-यद्यपि विचित्र स्वरूपवाळी (अनेक लिंगात्मक) वस्तु छे. तोपण आ शाब्दिक न्याय छे—जे धर्म वडे विशिष्ट वस्तुं प्रतिपादन कखुं इष्ट होय ते धर्मने प्रधान करीने अने वीजा धर्मोंने गौण करीने ते धर्म विशिष्ट धर्मोतुं प्रतिपादन करे छे. जेमेके एक व्यक्तिमां पुरुषत्व, शास्त्रज्ञत्व, दातृत्व, भोक्तृत्व, पितृत्व अने अध्यापकत्व धर्म एक साथे रहेलो छे, तोपण पुत्र ते व्यक्तिने आवती जोइने 'पिता आवे छे' एम कहे छे, शिष्य 'उपाध्याय आवे छे' एम कहे छे. ए प्रमाणे अर्ही पण जो के मनुषी वगैरे सर्व वस्तु त्रिलिंगरूप छे. तोपण योनि, मृदुत्व अने अस्थिरतादिरूप स्त्रीपणुं प्रतिपादन कखुं इष्ट होवाथी तेने प्रधान करी अने वाकीना वीजा धर्मोंने गौण करीने ते स्त्रीत्व धर्म विशिष्ट धर्मोतुं प्रतिपादन करे छे, माटे ते यधी स्त्रीवाक्-स्त्री-लिंगविशिष्ट अर्थनी वाचक छे. ए प्रमाणे पुंवाक्-पुंलिंगविशिष्ट अर्थनी वाचक, अने नपुंसकलिंगवाक्-नपुंसकलिंगविशिष्ट अर्थनी

गणं आभरणं रयणं जे यावन्ने तद्द्वारा सब्बं तं णपुंसगवज्ज ? इंता गोयमा ! कंसं जाव रयणं जे यावन्ने तद्द्वारा तं सब्बं णपुंसगवज्ज ।

१४. अह भंते! पुढवी इत्थिवज्ज आउत्ति पुमवज्ज घणित्ति नपुंसगवज्ज पधवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? इंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिवज्ज आउत्ति पुमवज्ज घणित्ति नपुंसगवज्ज पणवणी ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भंते! पुढवित्ति इत्थिआणमणी, आउत्ति पुमआणमणी, घणेत्ति नपुंसगणमणी पणवणी

कस पावत् एल अने ते सिवायना तेवा प्रकारना बीजा बधा ते सवें नपुंसकवाची छे.

१४ हे भगवन् ! पृथिवी स्त्रीवाची, आज (अए-याणी) पुरुषवाची अने धान्य नपुंसकवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे ? ए भाषा मृषा नथी ? हे गौतम ! अवश्य पृथ्वी स्त्रीवाची, आज (अए) पुरुषवाची अने धान्य ए नपुंसकवाची ए भाषा प्रज्ञापनी छे. ए भाषा मृषा नथी. हे भगवन् ! पृथ्वीने उदेशी स्त्रीआज्ञापनी, आज (याणी) ने उदेशी पुरुषआज्ञापनी अने धान्यने उदेशी नपुंसकज्ञापनी, ए

घाचक भाषाणे विचार करणे

१४ 'अह मते' पुढवी' इत्यादि सूत्र सुगम छे, परतु आज (अए) ए प्राकृतना नियमथी पुहित्ति छे, संस्कृतमा तो ते स्त्रीलिंग ज छे 'अह भंते ! पुढवीत्ति इत्थिआणवणी' इत्यादि हे भगवन् ! 'तु पृथ्वी फट, तु पृथ्वी लाय' ए प्रमाणे स्त्रीलिंगमां पृथ्वीने उदेशी आभा करलारी स्त्रीआज्ञापनी, ए प्रमाणे पुल्लिंगमा घंतमान आऊने (अए-याणीने) उदेशी आशा करनारी पुमाज्ञापनी अने नपुंसकलिंगमां घंतमान धान्यने उदेशी आभा करलारी नपुंसकज्ञापनी ए भाषा प्रज्ञापनी छे ? ए भाषा सत्य नथी ? भगवन् उत्तर

वणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थिआणमणी, आउत्ति पुमआणमणी, धण्णेत्ति नपुंसगणमणी, पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा । अह भंते ! पुढवीत्ति इत्थिपणवणी, आउत्ति पुमपणवणी, धण्णेत्ति णपुंसगपणवणी आराहणी णं एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा ! पुढवीत्ति इत्थिपणवणी, आउत्ति पुमपणवणी, धण्णेत्ति नपुंसगपणवणी, आराहणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा । इच्चं भंते ! इत्थिवयणं वा पुमवयणं वा नपुंसगवयणं वा वयमाणे पणवणी णं एसा

भाया प्रज्ञापनी छे ? आ भाया मृया नथी ? हे गौतम ! पृथ्वीने उद्देशी स्त्रीआज्ञापनी, आउत्ते (पाणीने) उद्देशी पुरुषआज्ञापनी अने धान्यने उद्देशी नपुंसकआज्ञापनी ए भाया प्रज्ञापनी छे, ए भाया मृया नथी. हे भगवन् ! पृथ्वीने विषे स्त्रीप्रज्ञापनी आउत्ते (पाणीने) उद्देशी पुरुषप्रज्ञापनी अने धान्यने उद्देशी नपुंसकप्रज्ञापनी ए भाया आराधनी छे ? ए भाया असत्य नथी ? हे गौतम ! अवश्य पृथ्वीने उद्देशी स्त्रीप्रज्ञापनी, आउ-पाणीने उद्देशी पुरुषप्रज्ञापनी, अने धान्यने उद्देशीने नपुंसक प्रज्ञापनी ए भाया आराधनी छे. ए भाया असत्य नथी. हे भगवन् ! ए प्रमाणे स्त्रीवाची, पुरुषवाची अने नपुंसकवाची बोलतो (साधु) जे भाया बोले छे ते भाया प्रज्ञापनी छे ? ए

आपे छे-‘हन्ता गोयमा’ ! हे गौतम ! अवश्य ए भाया प्रज्ञापनी छे.

‘अह भंते’ इत्यादि, हे भगवन् ! पृथ्वीने विषे स्त्री प्रज्ञापनी-स्त्रीपणाना स्वरूपने जणावनी, आऊ (पाणी) ने विषे पुरुषत्व रूपने निरूपण करवारी पुरुषप्रज्ञापनी अने धान्यने विषे नपुंसकपणाना स्वरूपने वतावनी नपुंसकप्रज्ञापनी ए भाया आराधनी-सम्यग् दर्शनादि मुक्तिमार्गनी साधक छे ? आ भाया असत्य नथी ? अर्थात्—ए प्रमाणे बोलवारीने सत्यभाषीपणाने प्रसंग

भासा, ण एसा भासा मोसा ! इत्थिधरणं वा पुमवयणं वा णसुंगवयणं वा वयमाणे पणवणी
ण एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।

१६. भासा णं भंते ! किमादिया, किंपवहा, किंसंठिया, किंपज्जवसिया ? गोयमा ! भासा णं जीवादीया, स-
भापा असत्य नथी ? हे गौवम ! अथम्य तीवाची, पुरुषाची अने नपुसकवाची बोलतो (साधु) जे भापा बोले छे ते
भापा असत्य नथी

१५. हे भगवन् ! भापासुं मूल कारण सुं छे ! ते द्वाधी उत्पन्न थाय छे ! तेनां आकार कोना जेवो छे ! अने तेनो अन्त क्यां थाय छे ?

भासतो नथी ! भगवान् उत्तर आये छे—य भापा आराधनी छे, य भापा असत्य नथी कारण के शाब्दिक व्यवाहारी अयेसाए
यथास्थित वस्तुतत्त्वनी प्ररूपणा करे छे अही एक एक पद सवन्थे केटलु पूछी शक्या ! तेथी अतिवेद्य (सादृश्यबोधक धार्य)
थी पूछे छे—‘इथेय भते !’ हे भगवन् ! ‘इति’ उपवर्तन अर्थमा छे अने ‘यय’ शब्द प्रकार अर्थमा छे एटले उपवर्तित—यतायेत्ता प्रकार
यहे ज्यारे बीजा पण स्त्रीलिंगवाचक अने नपुसकलिंगवाचक भापा साधु बोले त्यारे एम बोलतां जे भापा बोलाय ते प्रज्ञापनी
भापा कहेयाय ! ते भापा असत्य नथी ! भगवात् उत्तर आये छे—‘य भापा प्रज्ञापनी छे’, कारण के शाब्दिक व्यवाहारु अनुसरण
करयाथी तेमा दोर नथी. अन्यरूपे रेखली वस्तुमां अन्यरूपे बोलुते दोर छे, परंतु जे वस्तु यथास्थित छे तेने ते प्रकारे कहेयामां
जो दोर छे ? य प्रमाणे भापाना प्रतिपादन सवन्थे केटलाक सर्वेसो इत्ता ते दूर क्यां

१७. इये सामान्यता भापाना कारणवि सवन्थे प्रश्न करे छे—‘भासा ण भते ! किमाया’ इत्यादि हे भगवन् ! अययोपनु
कारणमूत भापा ‘किमादिका’-किम् आदि-बीड कारण पस्या सा-जेनु मूल कारण शु छे एवा प्रकाली छे ! अर्थात्-तेनु उपादान

રીરપ્પભવા, વજ્જસંઠિયા, લોગંતપ્જ્જવસિયા પળ્ણત્તા ।

ભાસા કઓ ય પમ્ભવત્તિ? કતિહિ વ સમ્મહિ ભાસતી ભાસં? । ભાસા કતિપ્પગારા? કતિ વા ભાસા અણુમયા ડ? ।
સરીરપ્પભવા ભાસા, દોહિ ય સમ્મહિ ભાસતી ભાસં । ભાસા ચડપ્પગારા, દોણિ ય ભાસા અણુમતા ડ ।

હે ગૌતમ ! માપાનું મૂલ કારણ જીવ છે, માપા શરીરથી ઉત્પન્ન થાય છે, વષ્ટના જેવો તેનો આકાર છે અને લોકાન્તે તેનો અન્ત થાય છે.
? માપા ક્યાંથી ઉત્પન્ન થાય છે? ૨ કેટલા સમયે માપા વોલે છે? ૩ માપા કેટલા પ્રકારની છે? અને ૪ કેટલી માપા વોલવા યોગ્ય છે? ૧ શરીરથી માપા ઉત્પન્ન થાય છે. ૨ વે સમયે માપા વોલે છે. ૩ માપા ચાર પ્રકારની છે અને ૪ વે માપા વોલવા યોગ્ય છે.

કારણ સિવાય વીંજું મૂલ કારણ શું છે? 'કિમ્મભવા' તેની ઉત્પત્તિ શાથી થાય છે પટલે તેનું મૂલ કારણ છતાં માપા વીજા કયા કારણથી ઉત્પન્ન થાય છે? 'કિંસંસ્થિતા' કયા આકારે રહેલી છે-પટલે કોના જેવું તેનું સંસ્થાન-આકાર છે? 'કિપર્યવસિતા' અને ક્યાં તેનું પર્યવસાન-અન્ત થાય છે? ભગવાન્ ઉત્તર આપે છે—હે ગૌતમ ! 'જીવાદિકા' માપાનું મૂલ કારણ જીવ છે. કારણ કે જીવના તેવા પ્રકારના પ્રયત્ન સિવાય અવયોધના કારણભૂત માપાનો અસંભવ છે. ૫ સંવન્ધે ભગવાન્ ભદ્રચાહુ સ્વામી કહે છે —“તિવિહમ્મિ સરીરમ્મિ જીવપ્પસા દ્વવન્તિ જીવસ્સ । જેહિ ડ ગેણ્ણ ગ્ઢ્ઢણં તો ભાસદ્ધ ભાસઓ ભાસં ॥” ઔદારિક, વૈક્રિય અને આદારક-૫ ણ પ્રકારના શરીરમાં જીવપ્રવેશો જીવના છે, અને જે જીવપ્રવેશો વહે ગ્ઢ્ઢણ—માપાદ્રવ્યને ગ્ઢ્ઢણ કરે છે અને ત્યાર પછી માપક-વક્કા વોલે છે'. હવે 'માપા શાથી ઉત્પન્ન થાય છે ૫ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપે છે—'શરીરપ્રભવા' માપા શરીરથી ઉત્પન્ન થાય છે, કારણ કે ઔદારિક, વૈક્રિય અને આદારક શરીરમાંના કોદ્ધ ૫ ણ શરીરના સામર્થ્યથી માપા દ્રવ્ય નીકળે છે. માપા કેવા સંસ્થાન-આકારવાળી છે? ૫ પ્રશ્નનો ઉત્તર આપે છે—'વજ્જસંસ્થિતા' વષ્ટના જેવા સંસ્થાન-આકારવાળી છે, કારણ કે તેવા પ્રકારના પ્રયત્ન વહે નીકળેલા માપા-

દ્રવ્યો સર્વે લોકોને વ્યાપ્ત કરે છે, અને લોકની ઘણના જેવી આકૃતિ છે માટે માયા પણ ઘણના આકાર જેવી છે, તેનું પર્યવસાન (અન્ત) કર્યા છે ? પ પ્રશ્નનો ઉત્તર—‘લોકાન્તપર્યવસિતા’ લોકાન્તે તેનું પર્યવસાન-અન્ત છે, કારણ કે ત્યાર પછી ગતિક્રિયામા સહાયક ધર્માન્તિકાપના અમાયથી માયાદ્રવ્યનો ગમનનો અસંભવ છે પ પ્રમાણે મેં અને ધીજા તીર્યકરોપ માયા કર્મી છે હવે ફરીથી પ્રશ્ન કરે છે— ‘માતા કત્તો ય પમવા’ ? માયા કયા યોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ? કાયયોગથી કે યત્ન યોગથી ? માયા યોલે છે ? અને તાત્પર્ય ય છે કે કેટલા સમયે નીફલતા દ્રવ્યના સમૂહરૂપ માયા હોય છે ? તથા ‘કતિમકારા’ માયાના કેટલા પ્રકાર છે ? અને કેટલી માયા સાથુને યોલ્યાવાની અનુભા છે ? અહીં ત્રેક પ્રશ્નોનો ઉત્તર આયે છે—‘શરીરપ્રમવા માયા’-શરીરથી ઉત્પન્ન થાય છે અહીં શરીરના પ્રહણથી શરીરયોગનું પ્રહણ કરુ, કારણ કે ‘માયા શરીરમાત્રથી ઉત્પન્ન થાય છે’ ય ઘાતનો પૂર્વેજ નિર્ણય કર્યો છે અહીં ‘શરીરપ્રમવા’ ઘટલે માયા શરીર-કાયયોગથી ઉત્પન્ન થાય છે ય અર્થે સમજાયો તે આ પ્રમાણે-કાયયોગયંદે માયાયોગ્ય પુરુગલો પ્રહણ કરી માયાપણે પરિણમથી યત્ન યોગ ઘટે યદ્વાર કાઢે છે તેથી કાયયોગનાં સામર્થ્યથી માયા ઉત્પન્ન થાય છે ય સંબન્ધે મગંબાન્ મદ્રયાનુ સ્વામી કાઢે છે—‘ગિણ્દર કારણ નિસર તદ યારણ ઝોર્વેળ’ । ઇતિ કાયયોગ યદે પ્રહણ કરે છે અને યત્નયોગ યદે યદ્વાર કાઢે છે કેટલા સમયે માયા યોલે છે ? ય પ્રશ્નનો ઉત્તર આયે છે—યે સમયે માયા યોલે છે તે આ પ્રમાણે—પ્રથમ સમયે માયાયોગ્ય પુરુગલો પ્રહણ કરે છે, અને ધીજે સમયે માયાપણે પરિણમથી છોઝી યે છે ‘માયાના કેટલા પ્રકાર છે’—પનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—સત્યાદિના મેવથી માયાના ચાર પ્રકાર છે અને તેનો ચિત્તાર પૂર્વે કરેલો છે ‘કર્મ માયા યોલ્યાવાની અનુભા છે’ ? પનો ઉત્તર—સત્યાદિ યે માયા સાથુને યોલ્યાવાની અનુભા છે—સત્ય અને અસત્યાવૃષ્ટા, અર્થાત્ જે અસત્ય અને સત્યાસત્ય-મિશ્ર માયા છે તે યોલ્યાવાની અનુભા તથી કારણ કે તે યત્ને અયયાર્થે અર્થનું પ્રતિપાદન કરતી હોવાથી મોહને પ્રતિફુલ છે

१६. कतिविहा णं भंते ! भासा पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा भासा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तिया य अपज्जत्तिया य । पज्जत्तिया णं भंते ! भासा कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सच्चा मोसा य ।

१७. सच्चा णं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता । तंजहा-जणवयसच्चा १, सम्मयसच्चा २, ठवणसच्चा ३, नामसच्चा ४, रूवसच्चा ५, पडुच्चसच्चा ६, ववहारसच्चा ७, भावसच्चा ८,

१६. हे भगवन् ! केटला प्रकारनी भाषा कहेली छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनी भाषा कही छे. ते आ प्रमाणे-पर्याप्ता अने अपर्याप्ता हे भगवन् ! पर्याप्ता भाषा केटला प्रकारनी छे ? हे गौतम वे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-सत्य अने मृषा.

१७. हे भगवन् ! पर्याप्ता सत्यभाषा केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-१ जनपदसत्य, २ संमतसत्य, ३ स्थापनासत्य, ४ नामसत्य, ५ रूपसत्य, ६ प्रतीत्यसत्य (अपेक्षासत्य), ७ व्यवहारसत्य, ८ भावसत्य, ९ योगसत्य,

१६. भाषा संबन्धे फरीथी प्रश्न करे छे—'केटला प्रकारनी भाषा छे' ? उत्तर—पर्याप्ता भाषा अने अपर्याप्ता भाषा. जे प्रतिनि-यतरूपे-निश्चितार्थरूपे जाणी शक्य ते पर्याप्ता-अर्थनो सम्यक् निर्णय करवाना सामर्थ्ययुक्त. ते सत्य अने मृषा वे प्रकारनी छे, कारण के वन्ने भाषा सत्य के असत्य एम निश्चितार्थरूपे जाणी शक्य छे. जे भाषा सत्य अने असत्य वन्नेनी मिश्रितारूप दोवाथी अने सत्य अने असत्य वन्नेना प्रतियेयरूप दोवाथी प्रतिनियतरूपे-सत्य के असत्य एम निश्चितार्थरूपे जाणी शकली नथी ते अपर्याप्ता-अर्थनो निर्णय करवाना सामर्थ्य रहित छे. ते सत्यमृषा जने असत्यमृषा जाणवी. कारण के वन्ने भाषानो एण प्रतिनियतरूपे-सत्य के असत्य एम विनिश्चय थह शकतो नथी.

१७. ए प्रमाणे पर्याप्ता भाषाना स्वरूपनो विचार कर्यो, परन्तु तेना सत्य अने मृषा ए वे भेद कहां छे, तेथी सत्य भाषाना भेदो

जोगसच्चा ९, ओवम्मसचा १०।

“जणवय १ संमत २ ठवणा ३ नामे ४ रूवे ५ पदुवसणे ६ य।
वयहार ७ भाव ८ जोगे ९ वसमे ओवम्मसचे य १०” ॥

१० उपमासत्य.

जाणवा माटे प्रश्न करते छे—‘सचा ण भत्ते ! भासा पञ्चसिया काचिहा पत्रचा’ ? हे भगवन् ! पर्यासा सत्य भाया केवळा प्रकारनी छे ?—इत्यादि पाठ सिद्ध छे इवे भगवान् उत्तर आपे छे—‘गोयमा’ ! हे गौतम वस प्रकारनी छे—१ ‘जणवयसचा’ जनपदसत्या-ते ते जनपद-देशाने भायची इए अर्थना बोधनु कारण होवाने लीचे व्यवहाराने हेतु होयाची सत्य ते जनपदसत्य जेम के कोंकणादि देशमा पाणीने ‘पिच’ कहे छे-इत्यादि २ ‘संमतसत्या’ जे सकल लोकने संमत होवाची सत्यपणे प्रसिद्ध छे, जेमके कुमुद, कुवलय, उत्पल अने तामरस (रक्त फमळ) ए यथा समान रीते पकथकी उत्पन्न थयेला होया छ्या णण गोपालो अरचिन्दने ज पंफज माने छे, याकीनाने मानता नथी, माटे अरचिन्दने पंफज कहेतु ते संमतसत्य ३ ‘स्थापनासत्या’ तेवा प्रकारना अंक यगरे के सिद्धा यगरेने जोइने कहेवाय, जेम के एकडानी पाले वे मीडां जोइने ‘आ लो छे’ एम कहेवाय अने व्रण मीडां जोइने‘आ हजार छे’ एम कहेवाय, माटी वगरेमां तेवा प्रकारनी मुद्रा-छाप जोइने ‘आ मार छे, आ कार्याण छे’ एम कहेवाय ते स्थापनासत्य ४ ‘नामसत्या’ नाममात्रथी सत्य होय, जेम के पुलनी वृद्धि-अभ्युदय न करतो होय तो णण ‘कुलवर्धन’ कहेवाय छे ते नामसत्य ५ ‘रूपसत्या’ जे रूप-देशमात्रथी सत्य होय, जेय के लेणे वमथा सायुजो वेष धारण करेलो होय ते सायु कहेवाय छे ते रूपसत्य ६ ‘प्रतीत्यसत्या’ प्रतीत्य—धीमी वस्तुनी अपेक्षाप जे सत्य होय, जेम के जामि का आगळी कनिष्ठानी अपेक्षाप लावी अने मध्यमानी अपेक्षाप दुकी कहेवाय छे ते प्रतीत्यसत्य अर्धी एम न कहेतु के एक वस्तुमां इस्त्व अने दीर्घाप वास्तविक रीते केम कहेवाय ? कारण के तेभोनो परस्पर विरोध छे जे इस्त्व होय ते दीर्घ केम होय अने जे दीर्घ

होय ते ह्रस्व कैम होय ? तेनो उत्तर प छे के भिन्न निमित्त होवाथी-जुदी अपेक्षाप होवाथी त्यां परस्पर विरोधनो संभव नथी. जो ते एक कनिष्ठाने के मध्यमा आंगळीने आथयी लांबी के टुंकी कहीप तो विरोधनो संभव छे, कारण के एक निमित्तनी अपेक्षाप परस्पर विरुद्ध वे कार्यनो असंभव छे, ज्यारे एक आंगळीनी अपेक्षाप टुंकी अने बीजीनी अपेक्षाप लांबी कहीप तो 'सत्त्व अने असत्त्वनी जेम भिन्न निमित्त होवाथी परस्पर विरोध नथी. अर्ही शंका करे छे—'जो दीर्घत्व-लंबाई अने ह्रस्वत्व-टुंकाई वास्तविक होय तो ऋजुत्व-सरलता अने वक्रतानी जेम बीजा निमित्तनी अपेक्षा विना कैम भासता नथी ? माटे अन्य निमित्त सापेक्ष होवाथी ह्रस्वत्व अने दीर्घत्व प यन्ने धर्मो काल्पनिक छे', ते अयुक्त छे. वस्तुना धर्मो अे प्रकारना छे-सहकारी वडे जेजुं स्वरूप व्यक्त थाय ते अने ते सिवायना बीजा. तेमां जे सहकारीथी जेजुं स्वरूप व्यक्त थाय तेवा धर्मो छे ते सहकारीना संवन्धथी प्रतीत थाय छे. जेम जळना संवन्धथी पृथिवीमां गन्ध व्यक्त थाय छे. अने बीजा सहकारीना संवन्ध सिवाय स्वयं व्यक्त थाय पवा प्रकारना छे, जेम कर्परादिनो गंध. ह्रस्वत्व अने दीर्घत्व धर्मो पण सहकारीना संवन्धथी व्यक्त थाय तेवा प्रकारना छे, तेथी तेओ सहकारिने आथयी अभिव्यक्त थाय छे. ७ 'व्यवहारसत्या' व्यवहार—पटले लोकविवक्षा, व्यवहारथी सत्य ते व्यवहारसत्य, जेम के पर्वत वळे छे, पात्र झरे छे, पेट विनानी कन्या छे, ऊन विनानी घेटी छे. लोको पर्यंत उग्रजुं घास वळतुं होय त्यारे घासनी साथे पर्वतना अमेदनी कल्पना करी 'पर्वत वळे छे' एम कहे छे. पात्रथी पाणी झरतुं होय त्यारे पाणी अने पात्रना अमेदनी विवक्षा करी 'पात्र झरे छे' एम बोले छे. संभोग हेतुक पेटनी बुद्धिना अभावमां 'अनुवरा कन्या'-पेट विनानी कन्या कहेवाय छे, अने कापवा लायक ऊनना अभावमां 'अलोपिका पडका'-ऊन विनानी घेटी कहेवाय छे. माटे लोकव्यवहारनी अपेक्षाप ते प्रमाणे बोलनार साधुनी पण भाया

१. एकज वस्तु स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावनी अपेक्षाप सत् छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल अने परभावनी अपेक्षाप असत् छे, अने ते भिन्न भिन्न निमित्तनी अपेक्षाप होवाथी तेमां सत्त्व अने असत्त्वनो परस्पर विरोध नथी.

१८. मोसाणं भंते ! भासा पञ्चतिया कतिविहा पन्नत्ता ! गोयसा ! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा-क्रोहणिसिसया १, माणनिसिसया २, मायानिसिसया ३, लोहणिसिसया ४, पेज्जणिसिसया ५, दोसणिसिसया ६, हासणिसिसया ७,

१८. हे भगवन् ! पर्यासा मृया भाया फेटला प्रकारनी छे ! हे गौतम ! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधनिश्चित १, माननिश्चित २, मायानिश्चित ३, लोभनिश्चित ४, प्रेमनिश्चित ५, द्वेषनिश्चित ६, हासनिश्चित ७, भयनिश्चित ८, आख्यायिकानिश्चित ९, व्यवहारसत्य छे ८ 'भाषसत्या' भाष-वर्णादि, ते वडे सत्य जे वर्णाविभाष जेमां उकट-अधिक होय ते वडे जे सत्यभाया ते भाष-सत्य, जेम वगलासा पाच वर्णनो समय छे तो पण सुफलपर्यन्ती अधिकता होवाधी थोळो कहेयाय छे ९ 'योगसत्या' योग-सम्बन्ध, ते वडे सत्य, जेम छत्रना सन्धधी विषयित शब्दप्रयोगना समये छत्रनो अभाय होय तो पण छत्रना योगनो समय होवाधी 'छत्री' भने दटना संकथधी 'दुडी' कहेयाय छे ते योगसत्य १० 'उपमासत्या' जेम समुद्रना जेपु तळाय छे, आ उपमा सत्य छे. अहीं शिष्यजन उपर उपकार कटवा माटे संभ्रमणी गाथा कहे छे- 'जणपयसमपठवणा' इत्यादि तेना अर्थनो विचार करेलो छे

१८ मृगामाया दस प्रकारनी छे, जेम १ 'कोहणिसिसया' इत्यादि क्रोधनिःमृता-क्रोधधी नीकळेही घाणी, पम कये स्थळे विचार करयो तेमां क्रोधाधीन आत्मा विपरीत बुद्धिधी रीजाने छेतरयाने जे सत्य के असत्य बोले ते मृया जाणपु, कारण के तेनो आशय अतिबुद्ध छे. जो के पुणाइरल्यायधी तेमा सत्याश होय अथवा कण्टबुद्धिधी सत्य बोले ते पण आशयना बोधी बुद्ध होवाधी असत्य छे २ 'माननिःसृता' पूरे देववर्धनो अनुभव न कर्यो होय तो पण पेतानो उत्कर्ष यतायवा माटे 'अमे ते समये देववर्धनो अनुभव कर्यो इनो इत्यादि कहेनाली माननि सत भाया कहेयाय छे ३ 'मायानि सृता' जे रीजाने छेतरयाना इराधाधी सत्य के असत्य बोले ते मायानिःमृत भाया ४ 'लोभनिःसृता' लोभने अधीन थयेलो आत्मा मोटा तुला वगेरे फरी 'तुला वगेरे दरोयट प्रमाणपळा छे' पम बोले ते लोभनि सत भाया ५ 'प्रेमनि सृता' अतिप्रेमना वशधी 'धुं तारे दास छु' इत्यादि खुशामत करलाली प्रेमनि सत भाया

भयणिसिसया ८, अक्खाइयाणिसिसया ९, उवघाइयणिसिसया १० ।

“कोहे माणे माया लोभे पिजे तहेव दोसे य । हास भए अक्खाइय उवघाइयणिसिसया दसमा ॥”
१९. अपज्जत्तिया णं भंते! कइविहा भासा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सच्चामोसा असच्चा-
मोसा य। सच्चामोसा णं भंते! भासा अपज्जत्तिया कत्तिविहा पन्नत्ता? गोयमा! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा-उप्प-

अने उपघातनिश्चित १०.

१९. हे भगवन्! अपर्यासा भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! वे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-सत्यमृषा अने असत्यामृषा.
हे भगवन्! अपर्यासा सत्यमृषा भाषा केटला प्रकारनी छे? हे गौतम! दस प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-१ उत्पन्नमिश्रिता, २ वि-
गतमिश्रिता, ३ उत्पन्नविगतमिश्रिता, ४ जीवमिश्रिता, ५ अजीवमिश्रिता, ६ जीवाजीवमिश्रिता, ७ अनंतमिश्रिता, ८ प्रत्येक-
मिश्रिता, ९ अद्धामिश्रिता अने १० अद्धाद्धामिश्रिता.

६ ‘द्वेषनिःसृता’ द्वेषी आत्मा तीर्थकरादि सपुरुषोना पण अवर्णवाद बोले ते द्वेषनिःसृत भाषा. ७ ‘हास्यनिःसृता’ केलि-गम्मतने लीधे
जुं वोलुं ते हास्यनिःसृत भाषा. ८ ‘भयनिःसृता’ चोर वगेरेना भयथी असत्य बोलुं ते भयनिःसृत भाषा. ९ ‘आख्यायिकानिःसृता’
कथाशोभां असंभचित वातो कहेथी ते आख्यायिका निःसृत भाषा. १० ‘उपघातनिःसृता’ ‘तुं चोर छो’ इत्यादि खोडुं आळ आपडुं ते
उपघातनिःसृत भाषा. अही पण सूत्रकार संग्रहणी गाथा कहे छे-‘कोहे माणे’ इत्यादि. तेना अर्थनो विचार करेलो छे.

१९. सत्यमृषा भाषा दस प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-‘उत्पन्नमिश्रिता’ संख्या पूरी करवा माटे जेमां नहि उत्पन्न थयेलानी साथे
उत्पन्न थयेला मिश्रित छे ते उत्पन्नमिश्रित भाषा. ए प्रमाणे बीजे स्थले पण यथासंभव विचारुं. जेम के कोइ गाम के नगरमां ओछा

णमिस्सिया १, विगतमिस्सिया ३, उप्पणविगतमिस्सिया ४, जीवमिस्सिया ५, जीवा-
जीवमिस्सिया ६, अणंतमिस्सिया ७, परित्तमिस्सिया ८, अद्धामिस्सिया ९, अद्धामिस्सिया १०।

२० असयामोसा णं भंते ! आसा अपज्जत्तिया कइविहा पन्नत्ता ! गोयमा ! दुवालसविहा पन्नत्ता । तंजहा-

२०. हे भगवन् ! अपर्याप्ता असत्यामृया माया कैटला प्रकारनी छे ! हे गौतम ! बार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे-१ आमन्त्रणी,

अपचा अधिक पाळको जनव्या होय त्यारे 'आजे रस पाळको जनव्या' इत्यादि कहेसु ते उपल्लमिधिता १ 'विगतमिधिता' ए प्रमाणे
मरणना कथनमां विगतमिधिता २, जन्म अने मरणसु निश्चित परिमाणना कथनमां विसंवाह-अयथार्थेपणे कथन ते उत्पल्लविगतमिधिता ३
'जीवमिधिता' घणा जीवता अने घणा मरी गयेला सुल रापला घरेरेनो एक दगलो जोरने कोर एम कहे के 'अहो ! आ मोटो जीवनो
दगलो छे' त्यारे जीवमिधिता ४ जीवताने आश्रयी सत्य अने मरी गयेलाने आश्रयी असत्य होयाथी आ सत्यमृया माया छे तेज
राश्रिमा 'आटला जीवता छे अने आटला मरी गया छे' एम परिमाणपूर्वक निश्चित कथन करता विसंवाह-अयथार्थेपणु होय त्यारे
जीवाजीवमिधिता ५ मूढा घगेरे अनंतकार्यफोना एक्य-पीढा पांढा यहे अथवा कोरफ प्रायेक वनस्पति यहे मिश्र जोरने आ यहु
अनंतकार्यक छे' एम कहेसु ते 'अनंतमिधिता' ७ प्रत्येक वनस्पतिना समुदायनो अनंतकार्यक साथे करेलो दगलो जोरने' आ यधी
प्रत्येक वनस्पति छे' एम कहेसु ते प्रत्येकमिधिता ८, अदाकाल ते अही प्रस्तावने अनुसरी दिवस के रात्रि रूपकाल प्रहण करयो ते
काल यहे मिधित थयेल ते अद्यामिधिता जेम के कोर मनुष्य थप करतो दिवस छता एम कहे के उठ रात्रि गर अथवा रात्रि
छतां एम कहे के उठ सूर्य उर्यो ९, दिवस के रात्रिनो एरु अंश ते अद्यादा, ते जेमा मिश्र करयेल होय ते अद्यादातिमिधिता,
जेम के पहिलो पहोर छता कोर मनुष्य उतावळ करतो कोरने एम कहे के चाल मयाळ थर गयो

२०-२२ अतथासृया माया बार प्रकारनी छे ते आ प्रमाणे- 'आमवणि' इति 'हे देवदत्त' ! इत्यादि आमन्त्रणी भाग १ आ भाग

आमंतणि १, आणमणी २, जायणि ३, तह पुच्छणी य ४, पणवणी ५ ।

पचवखाणी ६ भासा भासा इच्छाणुलोमा ७ य ॥

अणभिग्गहिया भासा ८ भासा य अभिग्गंमि बोद्धव्वा ९ ।

संसयकरणी भासा १० वोगड ११ अब्वोगडा चव १२ ॥

२१. जीवा णं भंते ! किं भासगा, अभासगा ? गोयमा ! जीवा भासगावि, अभासगावि । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चति-‘जीवा भासगावि अभासगावि’ ? गोयमा ! जीवा दुचिहा पन्नत्ता । तंजहा-संसारसमावण्णगा य २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ पृच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छालोमा (इच्छानुकूल), ८ अनभिगृहीता, ९ अभिगृहीता, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता अने १२ अव्याकृता भाषा.

२१. हे भगवन् ! जीवो शुं भापक छे के अभापक छे ? हे गौतम ! जीवो भापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे. हे पूर्व कहेली सत्यादि त्रण भाषाना लक्षणथी रद्धित होवाने लीधे सत्य नथी, असत्य नथी तेम सत्यमृषा पण नथी, केवल व्यवहार मात्रनी प्रवृत्तिनुं कारण छे, माटे ते असत्यामृषा कहेवाय छे. ए प्रमाणे वधे विचार करवो. आज्ञापनी-कार्यमां बीजाने प्रेरणा करवी, जेम के ‘आ कर’ २. याचनी-कोइ पण वस्तुनी-‘तुं आप’ एम याचना करवी ३. पुच्छनी-नहीं जाणेल अथवा संदिग्ध एवा कोइ पण अर्थने जाणवा माटे तेना जाणनारने पूछुं ४. प्रज्ञापनी-जेणे विनयनी शिक्षा प्राप्त करी छे एवा शिष्यने उपदेश आपवो, जेम के, ‘हिंसाथी निवृत्त थयेलां प्राणीओ भवान्तरमां दीर्घायुमी थाय छे’ इत्यादि. कणुं छे के ‘पाणिवहाउ नियत्ता हवंति दीहाउया अरोगा य । एमाई पणत्ता पणवणी दीर्घायुपी अने नीरोमी थाय छे-इत्यादि भाषा

असंसारसमावणगा य । तत्थ णं जे ते असंसारसमावणगा ते णं सिद्धा, सिद्धा णं अभासगा । तत्थ णं जे ते संसारसमावणगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सेलेसीपडिबणगा य असेलेसीपडिबणगा य । तत्थ णं जे ते सेलेसिपडिबणगा ते ण अभासगा । तत्थ णं जे ते असेलेसिपडिबणगा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुग्गि-दिया य अणेग्गिदिया य । तत्थ णं जे ते णग्गिदिया ते ण अभासगा । तत्थ णं जे ते अणेग्गिदिया ते दुविहा प-

भगवन् ! एम सा हेतुथी कहां छो के, 'जीवो मापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे' ? हे गौतम ! जीवो वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—संसारी अने असंसारी. तेमां जे असंसारी छे ते सिद्धो छे अने सिद्धो अभापक होय छे. अने तेमां जे संसारी जीवो छे ते वे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—द्वैलेयीने प्राप्त थयेला अने द्वैलेयीने नहीं प्राप्त थयेला छे, ते अयापक छे. द्वैलेयीने प्राप्त नहीं थयेला जीवो वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—एक इन्द्रियवाळा अने अनेक इन्द्रियवाळा. तेमां जे एकेन्द्रिय छे ते अभापक छे. अनेक इन्द्रियवाळा जीवो वे प्रकारना छे—पर्यासा अने अपर्यासा. तेमां जे अपर्यासा छे ते अभापक होय छे अने जे

पीतरागे प्रज्ञापनी बही छे ५. प्रत्याख्याती—थाचना करलासे निवेश करयो ६ इच्छातुलोमा—परनी इच्छाने अनुसरयु, जेम कोर करक कार्य करतो स्यारे कोइने पूछे स्यारे ते कहे के 'तमे करो मने पण प मयीए छे' ७ 'अनभिप्राहा'—ज्यां प्रतिनियत अर्थनो निश्चय न होय ते जेमके घणा कार्यो करपाना होय स्यारे कोर कोइने पूछे के 'अस्यारे शु कय ?' ते कहे के 'अस्यारे तने जे ठीक लागे ते कर' ८. 'अभियुहिता'—ज्या प्रतिनियत अर्थनो निश्चय होय ते जेमके 'अस्यारे आ करयु अने आ न करयु' ९. 'संशयकरणी' जे माया अनेक अर्थनी वाचक होवापी बीजाने संशय उत्पन्न करे ते जेमके 'सैन्यय लाव' अही सैन्यय शब्द लयण, धळ, पुरुष मने अर्थनो वाचक छे १० व्याकृता—प्रगट अर्थवाली ११ अने अब्याकृता—अतिगम्भीर शयार्थवाली थापया अस्पष्ट उच्चारवाली १२ कारण के तेना अर्थनो

न्नत्ता, तंजहा-पञ्जत्तगा य अपञ्जत्तगा ते णं अभसगा। तत्थ णं जे ते अपञ्जत्तगा ते णं अभसगा। तत्थ णं जे ते पञ्जत्तगा ते णं भासगा, से एएणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चति-‘जीवा भासगावि अभसगावि’ ।

२२. नेरइया णं भंते ! किं भासगा, अभसगा ? गोयमा ! नेरइया भासगावि, अभसगावि । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चति-‘नेरइया भासगावि, अभसगावि’ ? गोयमा ! नेरइया दुचिहा पन्नत्ता, तंजहा-पञ्जत्तगा य अपञ्जत्तगा य । तत्थ णं जे ते अपञ्जत्तगा ते णं अभसगा, तत्थ णं जे ते पञ्जत्तगा ते णं भासगा, से एएणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चति-‘नेरइया भासगावि अभसगावि’ । एवं एगिंदियवज्जाणं निरंतरं भाणियच्चं ।

पर्याप्ता छे ते भापक होय छे. ए कारणथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छे के ‘जीवो भापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे’.

२२. हे भगवन् ! नैरयिको भापक होय छे के अभापक होय छे ? हे गौतम ! नैरयिको भापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के ‘नैरयिको भापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे’ ? हे गौतम ! नैरयिको वे प्रकारना होय छे-पर्याप्ता अने अपर्याप्ता. तेमां जे अपर्याप्ता छे ते अभापक छे अने जे पर्याप्ता छे ते भापक छे. तेथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं के ‘नैरयिको भापक पण होय छे अने अभापक पण होय छे’ . ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवाय वधा जीवोने निरंतर कहेबुं.

२३. हे भगवन् ! भापाना केटला प्रकारो कह्या छे ? हे गौतम ! भापाना चार प्रकारो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-एक सत्यभापानो विचार थतो नथी. वाकी बंधुं यावत् ‘कश् णं भंते ! भासज्जाया पन्नत्ता’ इत्यादि सुधी सुगम छे.

२३. हे भगवन् ! भापाना केटला प्रकारो कया छे ? आ भापाना प्रकार पूर्वे कहेलां छे तो पण फरीथी कहेवानुं कारण चीजा

२३. कति णं भंते ! भासज्जाया पणत्ता ! गोयमा ! धत्तारि भासज्जाया पणत्ता, तंजहा-सवमेणं भास-
ज्जाय, यितिय मोस, ततियं सवामोसं, चउत्थं असच्चामोसं । जीवा णं भंते ! किं सचं भास भासंति, मोसं
भास भासति, सवामोसं भासं भासंति, असवामोसं भासं भासंति ! गोयमा ! जीया सचंयि भासं भासति,
मोसंयि भास भासति, सच्चामोसयि भासं भासंति, असच्चामोसंयि भासं भासंति । नेरइया णं भंते ! किं
सचं भासं भासति, जाव असवामोसं भासं भासति ! गोयमा ! नेरइया णं सचंयि भासं भासति, जाव अस-
च्चामोसंयि भासं भासंति । एवं असुरकुमारा जाव धणियकुमारा । वेइवियतेइंविचउरिदिया य नो सच्चं, नो

प्रकार, बीजो मृषा, शीजो सत्यमृषा अने चोषो असत्यामृषा. हे भगवन् ! जीवो शुं सत्यमापा बोले छे, मृषामापा
बोले छे, सत्यमृषा मापा बोले छे के असत्यामृषा मापा बोले छे ? हे गौतम ! सत्य मापा पण बोले छे, मृषा मा-
पा पण बोले छे, सत्यमृषा मापा पण बोले छे अने असत्यामृषा मापा पण बोले छे. हे भगवन् ! नैरयिको शु सत्य मापा
बोले छे के यावत् असत्यामृषा मापा बोले छे ? हे गौतम ! नैरयिको सत्य मापा पण बोले छे अने यावत् असत्यामृषा मापा पण

सत्यना सबन्ध माटे छे ते धताये छे-हे भगवन् ! जीवो सत्य मापा बोले छे' इत्यादि सुगम छे, परलु वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने
चउरिन्द्रियोमा सत्यादि षण भायानो प्रतिषेध ममजबो, कारण के तेओगे सम्यग् ज्ञान अने पीजाने छेतएवा यगेरेनो इएवो होतो
नथी तिर्यञ्च पचेन्द्रियो पण यथावस्थित घस्तुना प्रतिपादनना भूमिप्रायथी सम्यक् (यथायं) बोलता नथी, तेम बीजाने छेतएवानी
दुस्वियी बोलता नथी, परलु ज्यारे बोले छे त्यारे दुस्से यवा छतां के बीजाने मारथानो इच्छावाढ्या छता प प्रमाणे ज बोले छे माटे

मोसं, नो सच्चामोसं भासं भासंति, असच्चामोसं भासं भासंति । पंचिदियतिरिक्त्वजोणिया णं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति, जाव किं असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! पंचिदियतिरिक्त्वजोणिया णो सच्चं भासं भासंति, णो मोसं भासं भासंति, णो सच्चामोसं भासं भासंति, एगं असच्चामोसं भासं भासंति, णण-
तथ सिक्त्वापुञ्चगं उत्तरगुणलद्धिं वा पटुच्च सच्चंपि भासं भासंति, मोसंपि, सच्चामोसंपि, असच्चामोसंपि भासं भासंति । मणुस्सा जाव वेमाणिया एत्ते जहा जीवा तहा भाणियच्चा ।

बोले छे. ए प्रमाणे असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो जाणवा. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो सत्यभाषा, मृषाभाषा अने सत्यमषा भाषा बोलता नथी, पण असत्यामृषा भाषा बोले छे. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तियचो शुं सत्य भाषा बोले छे के यावत् असत्यामृषा भाषा बोले छे ? हे गौतम ? सत्यभाषा, मृषाभाषा अने सत्यमृषा भाषा बोलता नथी, पण एक असत्यामृषा भाषा बोले छे. परन्तु शिक्षापूर्वक के उचरगुणी लब्धि सिवाय बीजे जाणवुं. शिक्षा पूर्वक के उचरगुणी लब्धिने आथयी सत्यभाषा पण बोले छे, असत्यभाषा पण बोले छे सत्यमृषा तथा असत्यामृषा भाषा पण बोले छे. मनुष्यो यावत् वैमानिको जेम जीवो कया तेम जाणवा.

तेओनी पण माषा असत्यामृषा छे. शुं तेओ वधानी एक असत्यामृषा भाषा छे ? 'नथी' एम जणवे छे. तेओ शिक्षादि सिवाय सत्यादि भाषा बोलता नथी, परंतु मेना पोपट वगैरे शिक्षापूर्वक संस्कार विशेषथी के तेवा प्रकारता क्षयोपशमनी विशेषताथी जातिसरणरूप के विशिष्ट व्यवहारनी कुशलतारूप लब्धिने आथयी सत्यादि चारे भाषा बोले छे.

२४ जीवे णं भंते ! जातिं वब्धातिं भासत्ताणं गिण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति, अठियाइं गेण्हति ! गोयमा ! ठियाइं गिण्हति, नो अठियाइ गिण्हति । जाइं भंते ! ठियाइं गिण्हति ताइं किं वच्चतो गिण्हति, वेत्ततो गिण्हति, कालतो गिण्हति, भावतो गिण्हति ! गोयमा ! वच्चओचि गिण्हति, दोत्तओचि, कालओचि, भावओचि गिण्हति । जातिं भंते ! वच्चओ गेण्हति ताइ किं एगपदेसियाइं गिण्हति, दुपदेसियाइं जाव अणतपदेसियाइं गेण्हति ! गोयमा ! नो एगपदेसियाइं गेण्हति, जाव नो असंखिब्बपदेसियाइं गिण्हइ, अणंतपदेसियाइं गेण्हति । जाइं

२४. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो मायापणे ग्रहण करे छे, ते शु स्थित-स्थिर रहेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे, अस्थित-अस्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! स्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे एण अस्थिर द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे स्थिर द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शु द्रव्यथी ग्रहण करे छे, क्षेत्रथी ग्रहण करे छे, कालथी ग्रहण करे छे, के मावथी ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने मावथी ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जे द्रव्यथी ग्रहण करे छे ते एकप्रदेशवाळां ग्रहण करे छे, वे प्रदेशवाळा के यावत् अनन्त प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एक प्रदेशवाळां के यावत् असल्य प्रदेशवाळां द्रव्यो ग्रहण करतो नथी, एण अनन्त

२४-२५. इधे मायाद्रव्यना ग्रहणादि सक्खे संशयो दूर कएवा प्रस करे छे—इ भगवन् ! जीव जे द्रव्योने मायापणे ग्रहण करे छे' इत्यादि पाठ सुगम छे परंतु स्थित-गमनत्रियादिह द्रव्यो ग्रहण करे छे, एण अस्थित द्रव्यो ग्रहण करतो नथी.

द्रव्यथी विचारता अनन्त परमाणुरूप माया सक्खो ग्रहण करे छे, एण एक परमाणु, वे परमाणु बगैरेना सक्खो ग्रहण करतो नथी कारण के तेभो स्वमावथी ज जीवोने ग्रहण करवाने अयोग्य छे क्षेत्रना विचारमा असल्यवात् प्रदेशावगाढ द्रव्यो ग्रहण

खेत्तओ गेण्हति ताई किं एगपएसोगाढाई गेण्हति, दुपएसोगाढाई गेण्हति, जाव असंखेज्जपएसोगाढाई गेण्हति? गोयमा ! नो एगपएसोगाढाई गेण्हति, जाव नो संखेज्जपएसोगाढाई गेण्हति, असंखेज्जपएसोगाढाई गेण्हति ।

प्रदेशवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे. जे क्षेत्रथी ग्रहण करे छे ते शुं एकप्रदेशवाढ-एक प्रदेशमां रहेला, वे प्रदेशमां रहेलां के यावत् असंख्यात प्रदेशमां रहेलां ग्रहण करे छे? हे गौतम ! ते एक प्रदेशमां रहेलां के यावत् संख्याता प्रदेशमां रहेलां द्रव्यो ग्रहण करतो

करे छे, कारण के एक प्रदेशादि भवगाढ द्रव्यो तेवा प्रकारना स्वभावथी ज ग्रहणने अयोग्य छे. काळथी विचार करतां एक समयनी स्थितिवाळां यावत् असंख्यात समयनी स्थितिवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे, कारण के पुद्गलोनी असंख्याता काळ सुधी स्थितिओ संभव छे. भगवती सूत्रमां सैज अने निरेज पुद्गलोनी स्थितिना विचारमां कांशुं छे-‘हे भगवन् ! अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध केटला काळ सुधो सैज-सकम्प होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट आचलिकानो असंख्यातमो भाग होय. निरेज जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्ट असंख्याता काळ सुधी होय छे.’ ते ग्रहण करेलां द्रव्यो ग्रहण पछीना समये अवश्य द्रुटे छे-ए स्वभाव छे अने ते पछीना समये ग्रहण थाय छे. बीजा आचार्यो आ प्रमाणे व्याख्या करे छे-‘एक समयनी स्थितिवाळां द्रव्यो भायाना आदि परिणामनी अपेक्षाए जाणवां, कारण के पुद्गलोनी विचित्र परिणाम छे, तेथी एक प्रयत्नथी ग्रहण करेलां अने छोडेलां छतां पण केटलाक एक समय सुधी भाषापणे रहे छे, केटलाक वे समय सुधी, यावत्-केटलाक असंख्याता समय सुधी रहे छे.’ तथा ‘ग्रहणद्वयां’ गृह्यन्ते इति ग्रहणानि-जे ग्रहण कराय ते ग्रहणद्रव्यो पटले ग्रहण करवाने योग्य द्रव्यो छे तेमना केटला एक वर्णपरिणाम वडे एक वर्णवाळां, केटलांक वे वर्णवाळां, केटलांक त्रण वर्णवाळां, केटलांक चार वर्णवाळां अने केटलाक पांच वर्णवाळां होय छे. ज्यारे एक प्रयत्नथी ग्रहण करेलां पण वधा द्रव्योना समुदायनी विवक्षा करीए त्यारे अवश्य पांच वर्णवाळां ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे गन्ध अने रस संयन्धे विचार करयो. स्पर्शनी अपेक्षाए विचार करतां एक.

जाइं कालतो गेणहति ताइ किं एगसमयठिइयाइं गेणहति, दुसमयठिइयाइं गिणहति, जाव असंविज्जसमयठिइ-
याइं गेणहति ? गोयमा । एगसमयठितीयाइंपि गेणहति, दुसमयठितीयाइंपि गेणहति, जाव असलेज्जसमयठिती-
याइंपि गेणहति । जाइं भायतो गेणहति ताइ किं घणमंताइं गेणहति, गंधमंताइं, रसमंताइं, फासमंताइं गेणहनि ?

नथी, एण असएणत प्रदेशमां देहमां द्रव्यो प्रहण करे छे, जे द्रव्यो पाकपी प्रहण करे छे ते दु एक समयनी स्थितिवाळां, वे सम-
यनी स्थितिवाळां के यावत् असएय समयनी स्थितिवाळा प्रहण करे छे ? हे गौतम ! एक समयनी स्थितिवाळां, वे समयनी स्थिति
वाळां के यावत् असंख्यान समयनी स्थितिवाळां प्रहण करे छे, जे द्रव्यो भागयी प्रहण करे छे ते शुं वर्णवाळां, गंधवाळां, रसवाळां
स्थानो ग्रन्थिघ जाण्णो, षट्ठे एक स्पर्शवाळा द्रव्यो प्रहण करतो नथी, कारण के वरत्तणुने एण अपइय दे सांशं श्लेष छे का । छे के-
'कारणमेव तदस्य मूलसो नित्यश्च भवति परमाणुः । परमाणु भक्त्य-उच्यते चाल्प छे
(अर्थात्-तेनु कोइ कारण नथी) यळी ते मूलम अने नित्य छे ते एक रस, एक गन्ध, एक वर्ण अने वे स्पर्शवाळो, अने कार्यरूप
ल्लिङ्गपी अनुमान करया योग्य छे 'पुत्तासां गिण्हर' द्विस्पर्शनि'-मुत्तु अने शीत के मूत्तु अने उष्णस्पर्शवाळा इत्यादि प्रहण करे

१ भाषा वर्णवाणा इत्यो स्पर्शनी अपेक्षान् वे स्पर्शवाळां प्रहण करे, चाग्ने-चार स्पर्शवाळां एण प्रहण करे एम कथु, तमां दीपायात् 'पुत्रपत्तं गिण्हर'
ए मूलनी प्रतीक लदने मूत्तु अने शीत तथा मूत्तु उष्णत्वं इत्यादि वे स्पर्शवाळां प्रहण करे छे एम जगामि छे. तमां मूत्तु अने शीत, मूत्तु अने उष्ण ए वे स्पर्श ज केम
मन्थये । कारण क द्विप अथवा रूप स्पर्शनी एण एममं छे, तो विचार करतो वे स्पर्श पटी इकल नथी, एकी त्रिस्पर्शवाळा पुत्रलोम प्रहण मन्थये दीपायात्
जगामि छे के त्रिस्पर्शपदम्—मन्थिषिद् मूत्तुशीतत्वादिति, वन्थिषिद् एतुस्पर्शवाळा इत्य इति अने शीतस्पर्शवाळा इत्य इति अने शीत मूत्तु अने श्लिप
स्पर्शवाळा इति छे. षट्ठे मूत्तुने मूत्तुमं भन्तर्भां वरतो मूत्तु, शीत अने श्लिप एम एण स्पर्शवाळा इत्य इति अने शीत मूत्तु ए के भाषावर्णवाणा

कोइ स्कन्ध केवल मृदु अने शीत स्पर्शवाळो होय ? तेमां रस के शीत स्पर्श केम न होय ? कारण के क्षिप अने रस केमांधी एक स्पर्श तो होवो जोइए. जो क्षिप न होय तो रस होय अने रस न होय तो क्षिप होय, शीत न होय तो उष्ण होय अने उष्ण न होय तो शीत होय एटले एक स्कन्धमां परस्पर विरोधी स्पर्श न होय, तेथी कोइपण रीते मृदुशीतस्पर्शवाळं के मृदुक्षिपस्पर्शवाळं द्रव्य घटी शकता नथी, कारण के मृदु अने शीत स्पर्श होय त्यां क्षिप के रस स्पर्श होवो जोइए, अने मृदु क्षिप स्पर्श होय त्यां शीत के उष्ण स्पर्श होवो जोइए. एटले वे स्पर्शवाळं के त्रण स्पर्शवाळं द्रव्यो घटी शकतां नथी. कदाच एम मानीए के मृदु अने लघु स्पर्श अवस्थित होवाथी तेनी गणना न करीए तोपण उपर कथा प्रमाणे मृदु अने शीत अने मृदु अने उष्णरूप वे स्पर्शवाळं द्रव्यो घटता नथी, तेम त्रिस्पर्शवाळा द्रव्योना ग्रहण प्रसंगे मृदुशीतस्पर्शवाळा अने मृदुक्षिपस्पर्शवाळा द्रव्यो घटतां नथी. लोकप्रकाशमां कथुं छे के-

‘तैजसाया वर्गणा अय्येव वर्णादिभिः स्मृताः । स्पर्शस्तु चतुःस्पर्शास्तेषां मृदुलघु ध्रुवौ । अन्यौ द्वौ च क्षिपक्षीतो क्षिपोष्णौ वा प्रकीर्तितौ । रसोष्णौ रसक्षीतो वा विश्वेयौ यथागमम् ॥ अथं पद्मसंग्रहट्टितिशतकमृदुद्वीकाद्यभिप्रायः, कर्मप्रकृतिप्रज्ञात्याद्यभिप्रायेण त्वेतासु क्षिपस्क्षोणशतरूपमेव स्पर्शचतुष्टयं स्यात्प्रान्यदिति’ । लोक प्रकाश, सर्ग ३५. श्लो० ४३—४४.

अर्थ—तैजस, माया, श्रामोच्चत्र्वाग, मन अने कर्मण नर्गणओ पण वर्णादि नडे ए प्रमाणे छे. परन्तु स्पर्शनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळी छे, तेमां मृदु अने लघु ए वे स्पर्शों ध्रुन-अवस्थित छे अने वीजा क्षिप शीत अथवा क्षिप उष्ण अने रस उष्ण अथवा रस शीत स्पर्श होय छे ए विद्वानोए आगमने अनुगरी जाणवुं. आ प्रमाणे पद्मसंग्रहट्टिति अने शतकमृदुद्वीका वगेरेनो अभिप्राय छे. कर्मप्रकृति अने भगवती सूत्रना अभिप्रायथी क्षिप, उष्ण, रस अने शीत ए चार ज स्पर्श होय छे. एटले मायावर्गणा कोइ स्कन्ध स्पर्शनी अपेक्षाए क्षिप अने शीत स्पर्शवाळो, क्षिप अने उष्ण, रस अने शीत अथवा रस अने उष्ण स्पर्शवाळी होय तो ते अपेक्षाए वे स्पर्शवाळा द्रव्य ग्रहण करे छे, पण त्रण स्पर्शवाळं द्रव्य ग्रहण करे छे एमां कथा त्रण स्पर्श लेवा ए प्रश्न तो वाक्री ज रहे छे. सर्वे ग्रहण योग्य द्रव्यनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ए तो चरोचर छे. पण प्रत्येक स्कन्धनी अपेक्षाए त्रण स्पर्शवाळो द्रव्यो तो कोइपण रीते घटी शकतां नथी. तत्त्व बहुभुत गम्य छे.

गोयमा ! वणमंताइं पि जाव फासमंताइं पि गेणहति । जाइं भावओ वणमंताइं पि गेणहति ताइं किं एगवण्णाइं गेणहति, जाव पंचवण्णाइं गेणहति ? गोयमा ! गहणदब्बाइ पडुच्च एगवण्णाइं पि गेणहति, जाव पंचवण्णाइं पि गेणहति, तजहा—कालाइं नीलाइं लोहियाइं हलियाइं सुक्कि-गेणहति, सब्बगहणं पडुच्च णियमा पंचवण्णाइं गेणहति,

के स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! वर्णवाळा पण ग्रहण करे छे अने यावत् स्पर्शवाळां पण ग्रहण करे छे. जे भावधी वर्णवाळां ग्रहण करे छे ते तुं एक वर्णवाळा ग्रहण करे छे के यावत् पांच वर्णवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण द्रव्यो—ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने आश्रयी एकवर्णवाळां पण यावत् पांचवर्णवाळा पण ग्रहण करे छे. सर्वं ग्रहणयोग्य द्रव्योने आश्रयी अवश्य पांचवर्णवाळां

छे 'जाव चउफासाइ' यावत्-चार स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां यावत् शश्रयी त्रण स्पर्शवाळा द्रव्योने ग्रहण करे छे. त्रण स्पर्शवाळा द्रव्यो आ प्रमाणे छे—केटलाफ द्रव्यो मृदु अने शीत स्पर्शवाळा छे अने केटलाक मृदु अने खिग्घ स्पर्शवाळा छे तेमा मृदुस्पर्शोने मृदुस्पर्शमा समावेश धाय छे मोटे एक स्पर्श, अने शीत अने खिग्घरूप वे अन्य स्पर्शो यम समुदायने आश्रयी त्रण स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे यम धीजा स्पर्शोने योग होय तोपण त्रण स्पर्शवाळां द्रव्यो जाणवां केटलाक चार स्पर्शवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां चार स्पर्शमा मृदु अने लघुरूप वे स्पर्शो अवस्थित छे, कारण के सहम स्पर्शोमा ते अवश्य होय छे अने धीजा वे खिग्घ अने उष्ण, खिग्घ अने शीत, रुक्ष अने उष्ण, रुक्ष अने शीत स्पर्श होय छे सर्वे समुदायनी अपेक्षार अवश्य ते चार स्पर्शवाळा द्रव्य ग्रहण करे छे तेमा मृदु अने लघु प वे स्पर्शो अवस्थित छे अने अवस्थित होवाधी व्यधिवारना (अनियतयणाना) अभावधी अर्थात्-निश्चित होवाधी गणता नथी, ते सिषाय धीजा खिग्घादि चार स्पर्शो विफल्से होय छे—तेने आश्रयी सूत्र कहे छे 'शीतस्पर्शवाळा ग्रहण करे छे, (उष्ण स्पर्शवाळा, खिग्घ स्पर्शवाळा अने रुक्ष स्पर्शवाळा ग्रहण करे छे) इत्यादि यावत्-जाइ मते ।

ल्लाईं । जाईं वणणतो कालाईं गेण्हति ताईं किं एगगुणकालाईं गेण्हति, जाव अणंतगुणकालाईं गिण्हति? गोयमा! एगगुणकालाईंपि गिण्हति, जाव अणंतगुणकालाईंपि गेण्हति । एवं जाव सुक्किक्कल्लाईंपि । जाईं भावतो गंधमंताईं गिण्हति ताईं किं एगगंधाईं गिण्हति, दुगंधाईं गिण्हति, गुगंधाईं गिण्हति? गोयमा! गहणदन्वाहं पडुच्च एगगंधाईंपि दुगंधाईंपि गिण्हति, सबवगहणं पडुच्च नियमा दुगंधाईं गिण्हति । जाईं गंधतो सुब्भिगंधाईं गिण्हति ताईं किं

द्रव्यो ग्रहण करे छे. ते आ प्रमाणे-कालां, नील-लीलां, लोहित-रातां हाखि-धीलां. जे वर्णधी कालां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकगुणा कालां द्रव्यो ग्रहण करे छे? हे गौतम ! एकगुण कालां द्रव्यो ग्रहण करे छे, यावत् अनन्तगुणा कालां द्रव्यो पण ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे शुक्ल द्रव्यो सुधी जाणहुं. भावधी जे गंधवाला द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकगंधवालां ग्रहण करे छे? हे गौतम ! ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने

अणंतगुणल्लुकवाहं गेण्हइ' हे भगवन् ! जे यावत् अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने ग्रहण करे छे' त्यां सुधी सुगम छे. अहीं हमणां आ छेळुं सूत्र कहुं के-अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने पण ग्रहण करे छे अने त्याएपली सूत्रना संयन्धथी आ कहुं के-हे भगवन् ! जे यावत् अनन्तगुण रूक्ष द्रव्योने ग्रहण करे छे' अहीं यावत् शब्दवेडे हे भगवन् ! जे एकगुण कालावर्णवाला द्रव्यो ग्रहण करे छे'-इत्यादि जाणहुं. हे भगवन् ! ते द्रव्यो शुं स्पृष्ट-आत्मप्रदेशोवडे स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे के नहि स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! आत्मप्रदेशो साथे स्पर्श करायेला ग्रहण करे छे, पण स्पर्श नहि करायेला ग्रहण करतो नथी. अहीं भाग द्रव्योनी आत्मप्रदेशोनी साथे स्पर्श आत्मप्रदेशोना अवगाहना क्षेत्रधी वद्वार पण संभवे छे, माटे प्रश्न करे छे-हे भगवन् ! इत्यादि. अवगाह-आत्मप्रदेशो साथे एक क्षेत्रमां रहेला द्रव्यो ग्रहण करे छे पण तेथी वीजा अनवगाह-भिन्न क्षेत्रमां रहेलां द्रव्य ग्रहण करतो

एगुणसुभिंगंधाईं गिण्हति, जाव अणंतगुणसुभिंगंधाईंपि गिण्हति ? गोयमा ! एगुणसुभिंगंधाईंपि जाव अणंतगुणसुभिंगंधाईंपि गेण्हइ । एवं सुभिंगंधाईंपि गेण्हइ । जाइ भावतो रसमंताइ गेण्हति ताईं किं ळगरसाइ गेण्हति, जाव किं पंचरसाईं गेण्हति ? गोयमा ! गहणवब्बाईं पडुच्च ळगरसाइपि गेण्हति जाव पंचरसाइंपि गेण्हति, सब्वगहणं पडुच्च नियमा पचरसाइं गेण्हति । जाइं रसओ तित्तरसाइं गेण्हति ताईं किं एगुणत्तित्तरसाइं गिण्हति, जाव अणंतगुणत्तित्तरसाइं गिण्हति ? गोयमा ! एगुणत्तित्तरसाइंपि गिण्हइ, जाव अणंतगुणत्तित्तरसाइंपि गिण्हति, एवं जाव मधुररसो । जाइं भावतो फासमंताइं गेण्हति ताईं किं ळगफासाइं गेण्हइ जाव

आथयी एकगंधवाळा के वे गंधवाळां ग्रहण करे छे अने ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आथयी अवश्य वेगधवाळा द्रव्यो ग्रहण करे छे, जे मथयी सुरभिंगंधवाळां ग्रहण करे छे ते शु एक्युण सुरभिंगंधवाळां के यावत् अनन्तगुण सुरभिंगंधवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एक्युण सुरभिंगंधवाळां ग्रहण करे छे, यावत्-अनन्तगुण सुरभिंगंधवाळा ग्रहण करे छे, ए प्रमाणे दुरभिंगंधवाळां पण ग्रहण करे छे, मावधी जे रसवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शु एकरसवाळां के यावत् पांच रसवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण योग्य प्रत्येक द्रव्योने आथयी एकरसवाळां के यावत्-पाच रसवाळां ग्रहण करे छे अने ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आथयी अवश्य पाचरसवाळां ग्रहण करे छे. रसधी जे विक्र रसवाळा ग्रहण करे छे ते शु एक्युण विक्र रसवाळा ग्रहण करे छे के यावत् अनन्तगुण विक्ररसवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एक्युण विक्र रसवाळां के यावत् अनन्तगुण विक्ररसवाळां ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे यावत् मधुस सुधी जाणवु.

मधी. जे भद्रगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे तेमां अनन्तराणगाढ-भन्तर स्विशय रहेला भावाद्व्योने ग्रहण करे छे पण परंपराणगाढ द्रव्योने

अट्टफासाइं गिण्हति ? गोयमा ! गहणदब्बाइं पडुच्च णो एगफासाइं गेण्हति, दुफासाइं गिण्हइ, जाव चउफासाइं गेण्हति, णो पंचफासाइं गेण्हति, जाव नो अट्टफासाइं गेण्हति, सब्वगहणं पडुच्च नियमा चउफासाइं गेण्हति, तंजहा-सीतफासाइं गेण्हति, उस्सिणफासाइं, निद्धफासाइं, लुक्खफासाइं गेण्हति । जाइं फासतो सीताइं गिण्हति ताइं किं एगगुणसीताइं गेण्हति, जाव अणंतगुणसीताइं गेण्हति ? गोयमा ! एगगुणसीताइंपि गेण्हति, जाव अणंतगुणसीताइंपि गेण्हति, एवं उस्सिणणिद्धलुक्खाइं जाव अणंतगुणाइंपि गिण्हति ।

२५. जाइं भंते ! जाव अणंतगुणलुक्खाइं गेण्हति ताइं किं पुट्टाइं गेण्हति, अपुट्टाइं गेण्हति ? गोयमा ! पुट्टाइं भावथी जे स्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं एकस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे के यावत् आठ स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ग्रहण योग्य (प्रत्येक) द्रव्योने आश्रयी एक स्पर्शवाळां ग्रहण करतो नथी, पण वे स्पर्शवाळां, यावत्-चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे, पांच स्पर्शवाळां के यावत्-आठस्पर्शवाळां ग्रहण करतो नथी. ग्रहण योग्य सर्व द्रव्योने आश्रयी अवश्य चार स्पर्शवाळां ग्रहण करे छे. ते आ प्रमाणे -शीतस्पर्शवाळां उष्णस्पर्शवाळां, स्निग्धस्पर्शवाळां अने रुक्षस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे. जे स्पर्शथी शीतस्पर्शवाळां ग्रहण करे छे ते शुं एकगुण. शीतस्पर्शवाळां के यावत् अनंतगुण शीत स्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! एकगुण शीतस्पर्शवाळा के यावत् अनन्तगुण शीतस्पर्शवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे. ए प्रमाणे उष्ण, स्निग्ध अने रुक्ष द्रव्यो संबंधे जाणवुं, यावत्-अनन्तगुण रुक्षस्पर्शवाळा द्रव्योने पण ग्रहण करे छे.

ग्रहण करतो नथी. भावार्थ ए छे के जे आत्मप्रदेशोने विद्ये जे आत्मप्रदेशो रहेलां छे ते भापाद्रव्यो रहेलां छे ते आत्मप्रदेशो वडे तेज भापाद्रव्योने ग्रहण करे छे,

गेणहति, नो अपुढाईं गेणहति । जाईं भंते ! पुढाईं गेणहति ताईं कि ओगाढाईं गेणहति, अणोगाढाईं गेणहति ? गो-
गमा ! ओगाढाईं गेणहति, नो अणोगाढाईं गेणहति । जाईं भंते ! ओगाढाईं गेणहति ताईं कि अणंतरोगाढाईं गे-
णहति, परपरोगाढाईं गेणहति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाईं गिणहति, नो परपरोगाढाईं गेणहति । जाइ भंते ! अणं-
तरोगाढाईं गेणहति ताईं भंते ! कि अणूईं गेणहति, पायराईं गेणहति ? गोयमा ! अणूईं गेणहति, पायराईं गेणहति
गेणहति । जाईं भंते ! अणूइ गेणहति ताईं कि उटुं गेणहति, अचे गेणहति, तिरियं गेणहति ? गोयमा ! उटुं गेणहति
गेणहति, अचेयि गणहति, तिरियं गेणहति । जाइ भंते ! उटुं गेणहति, अचेयि गेणहति, तिरियं गेणहति

२५. हे भगवन् ! जे यावत् अनन्तगुण रुध द्रव्यो ग्रहण करे छे ते स्पष्ट-आत्म मदेद्य साथे स्पष्टोलां के अस्पष्ट-नदि स्पष्टोलां
ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! स्पष्टोलां ग्रहण करे छे, पण नदि स्पष्टोलां ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे स्पष्ट द्रव्योने ग्रहण करे छे
ते दु अत्रगाढ (आत्मप्रदेशो साथे एक आकाश प्रदेशमां रहेलां) ग्रहण करे छे के अनत्रगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अत्र-
गाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे पण अनत्रगाढ द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे अत्रगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं अनन्तरा-
त्रगाढ (अन्तर सिषाय रहेलां) के परपरागाढ (अन्तर-व्यवधान पूर्वक रहेला) द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अनन्तरात्रगाढ
द्रव्यो ग्रहण करे छे, पण परपरात्रगाढ द्रव्यो ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे अनन्तरात्रगाढ द्रव्यो ग्रहण करे छे ते अणु-योडा
पण एक, ये, त्रण भात्मप्रदेशोने अन्तरे रहेला भाषाद्रव्योने ग्रहण करतो नथी जे अनन्तरात्रगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे, ते अणु-योडा
प्रदेशपाढा पण ग्रहण करे छे अने वाक्-घणा प्रदेशपाढा पण ग्रहण करे छे अही अणुगणु अने वाक्-पणु भाषाते योग्य ते स्कन्धोना

ताइं किं आदिं गेण्हति, मज्झे गेण्हति, पज्जवसाणे गेण्हति ? गोयमा ! आदिंपि गेण्हति, मज्झेवि गेण्हति, पज्ज-
वसाणेवि गेण्हति । जाइं भंते ! आदिंपि गिण्हति, मज्झेवि, गेण्हति, पज्जवसाणेवि गिण्हति ताइं किं सविसए
गिण्हति, अविंसए गिण्हति ? गोयमा ! सविसए गेण्हति । जाइं भंते ! सविसए गेण्हति

प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे के चादर-घणा प्रदेशवाळां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अणु-सूक्ष्म पण ग्रहण करे छे अने चादर पण ग्रहण करे
छे. हे भगवन् ! जे अणु-सूक्ष्म के चादर द्रव्यो ग्रहण करे छे ते ऊर्ध्व दिशाथी आवेलां, अधो दिशाथी आवेलां, के तिर्यग् दिशाथी आवेलां
ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! ऊर्ध्व दिशाथी आवेलां, अधो दिशाथी आवेलां अने तिर्यग् दिशाथी आवेलां ग्रहण करे छे. हे भगवन् !
जे ऊर्ध्व, अधो के तिर्यग् दिशाथी आवेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे ते शुं आदिमां (प्रथम समये), मध्यमां के अन्तमां (छेब्ला समये)
ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! आदिमां, मध्यमां अने अन्ते ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जे आदिमां, मध्ये अने अन्ते ग्रहण करे छे ते
स्व विषय (स्पृष्ट अवगाढ अने अनन्तरावगाढ रूप) द्रव्योने ग्रहण करे छे के अविषयने ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! स्वविषयने ग्रहण
थोडा प्रदेश अने घणा प्रदेशानी अपेक्षाए समजवुं. कारण के मूल टीकाकारे तेवा प्रकारनी व्याख्या करी छे.

जे अणुद्रव्योने पण ग्रहण करे छे ते ऊर्ध्व दिशाना, अधो दिशाना अने तिर्यग् दिशाना जाणवा. अहाँ जेटला क्षेत्रमां जीवने ग्रहण
योग्य भागा द्रव्यो रहेलां छे, तेटला ज क्षेत्रमां उर्ध्वपणुं, अधोपणुं अने तिर्यक्पणुं समजवुं. 'जाइं भंते ! उइंदिं गेण्हइ' इत्यादि. जे
भायाद्रव्योने ग्रहणयोग्य उत्कर्षथी अन्तर्मुहलं प्रमाण फाल छे, तेने ते फालनी आदिमां-प्रथम समये पण ग्रहण करे छे, मध्ये-बीजा चगेरे समयोमां
पण ग्रहण करे छे अने छेत्ले समये पण ग्रहण करे छे. 'जाइं भंते ! आदिंपि गेण्हइ' इत्यादि. जे आदिमां, मध्यमां अने अन्तमां जे
द्रव्योने ग्रहण करे छे ते स्वविषय-स्पृष्ट, अवगाढ अने अनन्तरावगाढरूप द्रव्योने ग्रहण करे छे, परंतु अविषय-स्पृष्टादि सिवायना

ताह किं आणुपुन्विय गेण्हति, अणाणुपुन्विय गेण्हति ? गोयमा ! आणुपुन्विय गेण्हति, नो अणाणुपुन्विय गेण्हति । जाह भते ! आणुपुन्विय गेण्हति ताहं किं तिदिंसि गेण्हति, जाच छविसि गेण्हति ? गोयमा ! नियमा छविसि गेण्हति । “पुद्दोगाढअणंतर अणू य तह घायरे य उडुमहे । आविदिसयाणुपुन्विय णियमा तह छविसि चैय” ॥

करे छे, पण अणियने ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे स्ववियय द्रव्योने ग्रहण करे छे, ते आनुपूर्वी-अनुक्रमे केअनानुपूर्वी (क्रम गिनाय) ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अनुक्रमे ग्रहण करे छे, पण क्रम सिवाय ग्रहण करतो नथी. हे भगवन् ! जे अनुक्रमे ग्रहण करे छे ते तु ग्रण दिग्वाथी आवेलां ग्रहण करे छे यावत् छ दिग्वाथी आवेलां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! अवश्य छ दिग्वाथी आवेलां ग्रहण करे छे. “स्यए, अमगाढ, अनन्तर, अणु (ग्रहण), यादर, ऊर्ध्व, अधो, आदि, स्ववियय, आनुपूर्वी, अने अवश्य छ दिग्वाओने आथयी ग्रहण द्रव्य भाषा संपंधे कसुं.

धीना द्रव्योने ग्रहण करतो नथी ‘जाई भते ! तसितप गेण्ह’ इत्यादि जे स्वविययसूत द्रव्योने ग्रहण करे छे ते आनुपूर्वी घटे-द्रव्य ग्रहणनी अणुपुन्विय जेम जेम नतीक होय ते अणुपुन्विये ग्रहण करे छे, पण तेथी विपरीत क्रमथी ग्रहण करतो नथी

‘जाई भते ! आणुपुन्विय गेण्ह’ इत्यादि हे भगवन् ! जे आनुपूर्वीथी ग्रहण करे छे ते ते ग्रण दिग्वाथी आवेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे, पण घाट दिग्वाथी आवेलां, पण दिग्वाथी आवेलां के छ दिग्वाथी आवेलां ग्रहण करे छे ? पण गौतम स्वामीप प्रसन्न कस्यो पटले भगवन् बहे छे-‘हे गौतम ! अणुपुन्विय छ दिग्वाथी आवेला द्रव्यो ग्रहण करे छे, कारण के भायक-गोलनार अणुपुन्विय ग्रण नाओमां होय छे, भते ते सिवाय धीने ग्रण कायने संसय नथी भते ग्रह नाहीमां रहेलां अणुपुन्विय छ दिग्वाथी आवेला पुद्दलनो समय छे प पुणोक्त अर्थ संसंधे संस्रहणी गाया कहे छे-‘पुद्दोगाढअणन्तर’ इत्यादि प्रथम स्यए संसंधी गृह्य, त्वाएपणी भयगाढएत, त्वाएपणी

२६. जीवो णं भंते ! जाइं दब्बाइं भासत्ताए गेण्हति ताइं किं संतरं गेण्हति, निरंतरं गेण्हति ? गोयमा ! संतरं गेण्हति, निरंतरं गेण्हति । संतरं गिण्हमाणे जहणणेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अंतरं कइइ गेण्हति, निरंतरं गेण्हमाणे जहणणेणं दो समय, उक्कोसेणं असंखेज्जसमये अणुसमयं अचिरहियं निरंतरं गेण्हति । जीवो णं भंते ! जाइं दब्बाइं भासत्ताए गहियाइं णिसिरइ ताइं किं संतरं निसरइ, निरंतरं निसरइ ? गोयमा !

२६. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो भाषाणो ग्रहण करे छे ते शुं सान्तर (समयादिना अन्तर सहित) ग्रहण करे छे के निरंतर ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! सान्तर पण ग्रहण करे छे अने निरन्तर पण ग्रहण करे छे. सान्तर ग्रहण करतो जघन्यथी एक समय अने उल्लुष्ट असंख्याता समयो जघन्यथी वे समय अने निरन्तर ग्रहण करतो जघन्यथी वे समय अने उल्लुष्ट असंख्याता समयो सुधी प्रतिसमय निरंतर अविरोहितपणे ग्रहण करे छे. हे भगवन् ! जीव भाषाणो ग्रहण करेलां जे द्रव्यो बहार काढे छे ते शुं सान्तर अनन्तरावगाढसूत्र, ते पछी अणु अने यावर संबन्धी सूत्र, त्याखाद उर्थ, अथो, तिर्यग् विशा संबन्धी सूत्र, त्यापछी 'आइं' आदि मध्य अने अवसानसूत्र, त्यापछी विषयसूत्र, त्याखाद आनुपूर्वीसूत्र अने त्यापछी 'नियमात्' अवश्य पइविशिसूत्र छे.

२६. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्यो भाषाणो ग्रहण करे छे ते शुं सान्तर (समयादिना अन्तर सहित) ग्रहण करे छे के निरंतर (समयादिना अन्तर सिवाय) ग्रहण करे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे—सान्तर पण ग्रहण करे छे अने निरंतर पण ग्रहण करे छे, कारण के बन्ने प्रकारे ग्रहण करवानो संभव छे. तेमां सान्तर ग्रहण अने निरंतर ग्रहणना फाळनुं प्रमाण बतावे छे—'संतरं गिण्हमाणे' इत्यादि. सान्तर ग्रहण करतो जघन्य एक समयनुं अन्तर करी ग्रहण करे छे. आ जघन्य एक समयनुं अन्तर निरंतर बोळवांमां प्रवृत्त थयेला बोलनारने आश्रयी समजनुं, ते. आ प्रमाणे—प.रु समये भाषापुद्गलोने ग्रहण करी त्सार वाद मूकवाना समये

संतरं निमरइ, नो निरंतरं निसरइ । संतरं निस्सरमाणे एगेणं समणं निसरइ, एतेण गणनिसरणोपाणं जहन्नेणं पुसमइयं, उक्कोसियं असरोज्जसमइयं अंतोद्युत्तिगं गहणनिसरणोवायं करेति ।

फांटे छे के निरंतर फांटे छे ? हे गौतम ! सान्तर बहार फांटे छे, एण निस्तर फांठतो नथी. सान्तर बहार फांठतो एक समये प्रहण करे छे अने एक समये बहार फांटे छे. ए रीते प्रहण अने निःसरण-बहार फांठवा चंटे जयल्य चंटे उत्कट अंतल्याव ममयना अन्तर्गृहृतं सुधी प्रहण अने नि.गण करे छे.

बीजा पुण्णतो प्रहण कर्यां क्रियाय त्रीजा ममये फटीथी प्रहण अ करे छे, मूकतो नथी अने बीजा समये प्रथम ममयमां प्रहण करेला पुण्णतो मूके छे अने बीजा प्रहण करतो नथी अहीं आदाका करे छे के 'मय्य प्रयत्तथी प्रहण थाय छे अने मय्य प्रयत्तथी मूके छे, ते एव्णे प्राण अने निस्सर्गं प्रयत्त परस्सट थिद्वइ कायं करयाथी परस्सट थिद्वइ छे, तो एक समये ते वे प्रयत्त केम होय ? ते आउठा अयुक्त छे कारण के जीयनां तेया प्रकारां स्यभायथी वे उपयोग एक समये होला नथी, परन्तु जे क्रियाओ छे ते एणी होय तो एव एक समये चंटे छे, केमके तेथी रीते देगाय छे जेम के नृत्य करानी एक छतां एण अमणादि नृत्य करती एक समये एण हाय एण थोरेना विचित्र अमित्तयो फलती देगाय छे, यत्ती सर्वं वस्तुनो एण प्रत्येक समये उल्पाइ अने ध्वय थाय छे अने एक ज ममये संपाल-मळणु अने गरिशाठ-धुवा पइयु थाय छे अटे एक समये प्रहण अने निस्सर्गं वे क्रियाओ मानयायां कोइ एण थारानो होय नथी ए संसंधे भाण्कार करे छे छे--'परस्सट थिरोथी एया प्रहण अने निस्सर्गक्य वे प्रयत्तनो एक समये वेम होय ? उचार-एक समये वे उपयोग न होय, एण अनेक क्रियाओ होणामा ओ होय छे ?' त्रीजा समये बीजा समये प्रहण करेला तेज पुण्णतोने मूके छे अने बीजा प्रहण करलो नथी एम सान्तर प्रहण करे छे उक्कंथी तो अस्तल्याना समय सुधी निस्तर प्रहण करे छे एणव बीजो कोइ अस्तल्याना ममयमां एवेत्ता प्रहणने एक प्रहण माने, तेथी चंटे छे के 'प्रतिसमय प्रहण करे छे' कदाचिद्व अन्तर पइनुं होय

२७. जीवे णं भंते ! जाइं दब्बाइं भासत्ताए गहियाइं गिसरति ताइं किं भिण्णाइं गिसरति, अभिण्णाइं गिसरति ? गोयमा ! भिन्नाइंपि निस्सरइ, अभिन्नाइंपि निस्सरइ । जाइं भिन्नाइं गिसरति ताइं अणंतगुणप-

२७. हे भगवन् ! जीव भापापणे ग्रहण करेलां जे द्रव्यो बहार काढे छे ते भिन्न-भेदायेलां काढे छे के अभिन्न-नहि भेदायेलां काढे छे ? हे गौतम ! भिन्न पण काढे छे अने अभिन्न पण काढे छे. जे भिन्न द्रव्योने काढे छे, ते अनन्तगुणा वृद्धिची वधतां लो-
तो पण व्यवहारथी 'प्रतिसमय ग्रहण करे छे' एम कहेवाय, तेथी ते आशंका दूर करवा माटे 'अविरहितपणे निरंतर ग्रहण करे छे' एम कहं छे. तेमां प्रथम समये पुद्गलोलुं ग्रहणमात्र होय छे, पण मूकवाहुं होलुं नथी. कारण कर्या सिवाय निसर्ग होतो नथी. छेले समयये मूकवाहुं ज होय छे. कारण के बोलवानी इच्छा वंध थतां ग्रहणनो संभव नथी. वाकीना बीजा बीजा वगेरे समयोमां ग्रहण अने निसर्ग-मूकहुं बन्ने एक समये थाय छे. स्थापना—

ग्र. प्र. प्र. प्र. प्र. प्र. ०
० नि. नि. नि. नि. नि.

२७. 'जीवा णं भंते ! जाइं दब्बाइं भासत्ताए गहियाइं निस्सरइ'—हे भगवन् ! जीवो भापापणे ग्रहण करेलां जे द्रव्यो मूके छे-इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. उत्तर—'सान्तरं निरुजति' सान्तर मूके छे पण निरन्तर मूकतो नथी. तेनो आ भावार्थ छे—अहीं प्रथम भापा द्रव्यहुं ग्रहण निरन्तर कहं, कारण के 'अणुसमयं अविरहियं निरंतर गेण्हइ' प्रतिसमय अविरहितपणे निरंतर ग्रहण करे छे—एम हमणां ज सूत्र कहं, तेथी निसर्ग-मूकहुं पण प्रथम सिवायना वाकीना समयोमां निरंतर मानहुं जोइए, कारण के ग्रहण कर्या पछीना समये अवश्य निसर्ग-मूकवाहुं होय छे. माटे 'सान्तरं निरुजति नो निरन्तरम्' इति-सान्तर मूके छे, निरंतर मूकतो नथी, ए ग्रहणनी अपेक्षाए समजहुं. ते आ प्रमाणे—जे समये जे भापाद्रव्यो ग्रहण करे छे तेने ते समये मूकतो कथी. जेम के प्रथम समये ग्रहण करेलां भापाद्रव्यो तेज प्रथम समये मूकतो नथी, पण पूर्वं पूर्वना समये ग्रहण करेलां पछी पछीना समये मूके छे. माटे निसर्ग ग्रहण पूर्वक

रिबुद्धीर्णं परिबुद्धमाणाईं लोयंतं फुसन्ति, जाईं अभिण्णाईं निसरइ ताईं असंखेज्जाओ ओगाहणवगगणाओ गंता भेवमाचज्जति, सखेज्जाति जोअणत्ति गंता विद्धंसमागचंछंति ।

कान्तनो स्पष्टं करे छे, जे अभिख द्रव्यो काटे छे ते असल्याती अवहगाहनार्गणा (अरांख्य प्रवेद्यात्मक क्षेत्रना विभागरूप) पर्यन्त जाईने मेदाय छे, अने पछी संख्याता योजनो सुधी जाईने विनाश पाभे छे.

होय छे, कारण के प्रहण कयां सियाय निसर्ग होतो नथी, माटे सान्तर निसर्ग कहाओ छे प सयन्धे भाव्यकार कहे छे--प्रतिसमय निरन्तर प्रहण करयानु कशु छे, तो सूक्यानु पण निरन्तर कहेयु ओरए, तो सान्तर (अन्तर पूर्वक) सूक्यानु केम कशु ? उचर--प्रहणनी अपेक्षाप सूक्यु सान्तर कशु छे, कारण के जे समये जे भायाद्रव्यो प्रहण करेल्यं छे तेने ते समये निरन्तर सूकतो नथी, जेम प्रथम समये (प्रहण करे छे पण) सूकतो नथी. प्रहण कयां सियाय सूकतो नथी माटे प्रहणनु अन्तर होयाथी सान्तर सूके छे तात्पर्य प छे के प्रहणनी अपेक्षाप निसर्ग सान्तर छे अने समयनी अपेक्षाप निरन्तर छे, कारण के द्वितीयायि यथा समयोमां निरन्तर निसर्ग होय छे, एज थायत रूच कार स्पष्ट करे छे--'संतर निसरमाणो परेण समयण गेणहइ, परेण समयण निसरए' इति-सान्तरपणे प्रहण करतो एक समये-पूर्व पूर्वना समये प्रहण करे छे अने एक समये-पछी पछीना समये सूके छे अथवा प्रहणनी अपेक्षाप निसर्ग-सूक्यानु होयाथी एक समये-प्रथम समये प्रहण ज करे छे, पण सूकतो नथी, कारण के प्रहण कयां सियाय सूक्यानु होतु नथी अने एक ऐहा समये सूके ज छे, एण प्रहण करतो नथी कारण के फोलयानी इच्छा एण्य पता भायापार्गणाना प्रहणनो समय नथी, याकीना द्वितीयायि समयोमां एक साथे प्रहण अने निसर्ग करे छे ते निरन्तर जयन्थयी ये समय सुधी भवे उत्कर्षथी भसंगयाता समयसुधी होय छे एज थायत सूककार कहे छे--'एतेण गहणनिसरणोयाएण जइण्णेण सुस-मए, उक्कोसेण असगिद्धसमएय भन्तोमुद्धत्तिग गहणनिसरण करेइ'-आ प्रहण अने निसर्गना उपाय-प्रयत्न बडे जअन्य ये समय सुधो भवे उतरए भसंख्यातसमयना परिमाणयाळा भन्तमुद्धत सुधी प्रहण अने निसर्ग करे छे. 'जीपेण मते ! जाइ बव्याई'-हेमगयन् ! जीवे भायापणे प्रहण

૨૮. તેસિ ણં મંતે ! દ્રવ્યાણં કતિવિદે મેષ પ્પણત્તે ? ગોયમા ! પઞ્ચવિદે મેદે પન્નત્તે । તંજહા-લંહામ્હે,
૨૮. હે મગવન્ ! તે દ્રવ્યોનો મેદ કેટલા પ્રકારનો કહેલો છે ! હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો મેદ કહેલો છે. તે આ પ્રમાણે—?

કરેલાં જે દ્રવ્યો મૂકે છે, તે ભિન્ન મૂકે છે કે અભિન્ન મૂકે છે-ક્યાંદિ પ્રશ્નસૂત્ર સુગમ છે. મગવાન્ ઉત્તર આપે છે-‘હે ગૌતમ ! ભિન્ન-મેદાયેલાં પળ મૂકે છે અને અભિન્ન-નહિ મેદાયેલાં પળ મૂકે છે. અહીં આ ભાવાર્થ છે-વક્તાના બે પ્રકાર છે-મન્દપ્રયત્નવાલો અને તીવ્રપ્રયત્નવાલો. તેમાં જે વ્યાધિવિશેષથી કે અનાદરથી મન્દપ્રયત્નવાલો છે તે તેવાજ પ્રકારના સ્થૂલ લંહાવાળાં માયા દ્રવ્યો મૂકે છે અને જે આરોગ્યાદિગુણયુક્ત અને તથાવિધ આદરભાવથી તીવ્રપ્રયત્નવાલો છે તે માયાદ્રવ્યોને ગ્રહણ અને મૂકવાના પ્રયત્નવડે અનેક લંહા કરીને મૂકે છે. ય સંવન્ધે માપ્યકાર કહે છે—“કોઈ મન્દપ્રયત્નવાલો વક્તા સકલ-સંપૂર્ણ નહિ મેદાયેલાં સર્વ દ્રવ્યોને મૂકે છે અને વીજો તીવ્રપ્રયત્નવાલો માયાદ્રવ્યોને મેદીને-લંહો કરીને મૂકે છે. તે માટે કહ્યું છે કે ‘ભિન્નાઈપિ નિસ્સરઠ્ઠ, અભિન્નાઈપિ નિસ્સરઠ્ઠ’-મેદાયેલાં પળ મૂકે છે અને નહિ મેદાયેલાં પળ મૂકે છે. તીવ્રપ્રયત્નવાલો વક્તા પ્રથમથી જ જે મેદાયેલાં માયાદ્રવ્યોને મૂકે છે તે સૂક્ષ્મ હોવાથી અને ઘણાં હોવાથી ઘણાં અન્ય દ્રવ્યોને વાસિત કરે છે, અને તે અન્ય દ્રવ્યોને વાસિત કરતાં હોવાથી અનન્તગુણદ્વિધી વધતાં છ ય વિશાપ લોકાન્તનો સ્પર્શ કરે છે. ય સંવન્ધે કહ્યું છે કે તે ‘મેદાયેલાં દ્રવ્યો સૂક્ષ્મ હોવાથી અનન્તગુણ દ્વિધવડે લોકાન્તને પ્રાપ્ત થાય છે, અને માયાવડે નિરંતર લોકને પૂર્ણ કરે છે. મન્દપ્રયત્નવાલો વક્તા પૂર્વે જેવા પ્રકારનાં જે માયાદ્રવ્યો હતાં તેવાજ પ્રકારના વર્થા અભિન્ન-નહિ મેદાયેલાં દ્રવ્યોને માયાપણે પરિણમાવી મૂકે છે અને તે અસંખ્યાતી અવગાહનાવર્ગના સુધી જઈને મેદાય છે. પટલે એક એક માયાદ્રવ્યના આધારરૂપ અસંખ્યપ્રદેશાત્મક ક્ષેત્રના વિભાગ રૂપ અવગાહનાઓના અસંખ્યાતા વર્ગના-સમુદાયો ઓલંગી પછી તે માયા દ્રવ્યો અને મેદાય છે તે મેદાયેલા માયા દ્રવ્યો સંખ્યાતા યોજન સુધી જઈને નાશ પામે છે-શબ્દપરિણામનો ત્યાગ કરે છે. કહ્યું છે કે “અભિન્ન માયાદ્રવ્યો અસંખ્યાતી અવગાહના વર્ગના સુધી જઈને મેદાય છે અને ત્યાર પછી સંખ્યાતા યોજન પર્યન્ત જઈને નાશ પામે છે.”

पयराभेदे, चुण्णियाभेदे, अशुतडियाभेदे, उक्करियाभेदे। से किं त खंडाभेदे? २ जणं अयखंडाण वा तउखंडाण वा तंयखंडाण वा, सीसखंडाण वा रययखंडाण वा जातरूयखंडाण वा खंडाण भेदे भवति से तं खंडाभेदे?। से किं तं पयराभेदे? २ जणं यंसाण वा वेत्ताण वा नलाण वा कवलीयंभाण वा अण्मपडलाण वा पयरेणं भेदे भवति, से तं पयराभेदे २। से किं तं चुण्णियाभेदे? २ जणं तिलचुण्णाण वा सुग्गुण्णाण वा मासचुण्णाण वा पिप्पली-चुण्णाण वा मिरियचुण्णाण वा सिंगेयचुण्णाण वा चुण्णियाए भेदे भवति से तं चुण्णियाभेदे ३। से किं तं

रडभेद, २ प्रतरभेद, ३ चूर्णिकाभेद, ४ अनुतटिकाभेद अने ५ उत्करिकाभेद. हे भगवन् ! खडभेद केवा प्रकारो छे? हे गौतम ! जे लोढाना खंडोनो, जसतना खंडोनो, श्रावाना खंडोनो, सीसाना खंडोनो, रूपाना खंडोनो, के सुवर्णना खंडोनो खडरूपे-डुकडा-रूपे भेद थाय ते खंडभेद. हे भगवन् ! प्रतरभेद केवा प्रकारो छे? जे वांसनो, नेतरनो, परनो, केठना संमनो के अबरलना पडोनो प्रतर-पडरूपे भेद छे ते प्रतरभेद. हे भगवन् ! चूर्णिकाभेद केवा प्रकारो छे? हे गौतम ! जे तलना चूर्णोनो, मगना चूर्णोनो, अडदना चूर्णोनो, पीपरना चूर्णोनो, मरीना चूर्णोनो के सुंठना चूर्णोनो चूर्णरूपे भेद थाय ते चूर्णिकाभेद. हे भगवन् !

२८. 'भेद पामेलां पण मायाद्वय्यो मूके छे' पम कटु, तेसां शब्दद्वय्यनो भेद केटला प्रकारो छे-ए संख्ये प्रश्न करते छे-सिसि ज मते ! शब्दापं कसियेहे भेए-हे भगवन् ! ते द्रव्योनो केटला प्रकारो भेद कहेलो छे' इत्यादि तेमा लोढाना खड चगेरेली पंठे रडभेद, अवरए अने भोजपत्रादिनी पंठे प्रतरभेद, केकेला चूर्णनी पंठे चूर्णिकाभेद, शेरडीनी छाल चगेरेली जेम अनुतटिकाभेद अने शुक्ति-कानना भाषर्पनी? जेम उत्करिकाभेद जाणथो प भेदोनो व्याख्या करयानी इच्छयाळा सूत्रकार प्रश्न अने उत्तरसूत्रो कहे छे-

अणुतडियाभेदे ? २ जणुणं अगडाण वा तडागाण वा दहाण वा नदीण वा वावीण वा पुक्करिणीण वा दीहियाण वा गुंजालियाण वा सराण वा सरसराण वा सरपंतियाण वा सरसरपंतियाण वा अणुतडियाभेदे भवति, से तं अणुतडियाभेदे ४ । से किं तं उक्करियाभेदे ? २ जणुणं मूससाण वा मंडूससाण वा तिलसिंगाण वा सुगसिंगाण वा माससिंगाण वा एरंडवीयाण वा फुट्टिया उक्करियाए भेदे भवति, से तं उक्करियाभेदे ५ ।

२९. एएसि णं भंते ! दब्बाणं खंडाभेएणं पयराभेदेणं चुणियाभेदेणं अणुतडियाभेदेणं उक्करियाभेदेण य

अनुतटिकाभेद केवा प्रकारनी छे ? जे कूवा, तळावो, द्रहो, नदीओ, वावो, पुक्करिणीओ, दीर्घिकाओ, गुंजालिकाओ, सरोवरो, सरःसरोवरो, सरःपंक्तिओ के सरःसरःपंक्तिओनी अनुतटिकारूपे भेद थाय छे ते अनुतटिकाभेद. उत्कारिकाभेद केवा प्रकारनी छे ? जे मूस-महर, मंडूस, तलनी सिंगो, अडदनी सिंगो के एरंडाना वीजोनी फुटीने उत्करीकारूपे भेद थाय छे ते उत्कारिकाभेद.

२९. हे भगवन् ! खंडभेद, प्रतरभेद, चूर्णभेद, अनुतटिकाभेद अने उत्कारिकाभेदथी भेद पामतां ए द्रव्योमां कया द्रव्यो

से किं तं खंडाभेदे ? 'खंडभेद केवा प्रकारनी छे' इत्यादि पाठसिद्ध छे, परंतु अनुतटिका भेदमां कूवा, तळावो, द्रहो ए वधा प्रसिद्ध छे, नदीओ-पर्वतनी नदीओ वगैरे, वावो-चतुष्कोण आकारवाळी, पुक्करिणीओ-गोल आकृतिवाळी, दीर्घिका-सीधी नदीओ, गुंजालिका-बक्र नदीओ, घणां एकलां पुष्पप्रकरनी जेम छुटां सरोवरो, अने ते एक एक श्रेणिमां रहैलां होय ते सरःपंक्तिओ कहेवाय छे. श्रेणिवद्ध रहैलां सरोवरोमां कूवातुं पाणी प्रणाली-नीकद्वारा जाय ते सरःसरःपंक्ति कहेवाय छे. ए सिवाय वीजा अप्रसिद्ध भेवो लोकथी जानी लेवा.

२९-३२. ५ भेदवाळा द्रव्योतुं अल्पयथुत्व सूत्रना प्रामाण्यथी ते प्रमाणे ज मानतुं, कारण के ते युक्तियो विषय नथी. चाकीना

भिन्नमाणां कयरे कयरेहिनो अप्पा वा यधुया वा तुल्ला वा, विसेसादिया चा ? गोयमा ! सन्धत्योवारं वन्वारं उरुकारियाभेदेणं भिन्नमाणां, अणुतट्टियाभेदणं भिन्नमाणां अणंतगुणां, शुण्णियाभेदेणं भिन्नमाणां अणंतगुणां, पयराभेदेणं भिन्नमाणां अणंतगुणां, व्वाभेदेणं भिन्नमाणां अणंतगुणां ।

३०. नेरइण णं भंते ! जाइं वब्बाइं भाससाण गेणहति तां किं ठियाइं गेणहति अठियाइं गेणहति ? गोयमा ! णंं येय, जहा जीये यत्तव्यया मणिया तथा नेरइयस्सयि जाव अप्पापहुयं । एयं ण्णिदिययज्जो वंढतो जाव वे-
साणिता । जीया णं भंते ! जाइं वब्बाइं भाससाण गेणहति तां किं ठियाइं गेणहति अठियाइं गेणहति ? गोयमा !

फोनाथी अन्व, यद्दु, तुल्य कं विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! उत्कारिका भेद वडे भेद पामतां सौथी थोडा द्रव्यो छे, तेथी अनुतट्टिया भेद वडे भेदतां अनन्तगुणा छे, तेथी चूर्णिका भेद वडे भेदतां अनन्तगुण छे, तेथी प्रतर भेद वडे भेदतां अनन्तगुण छे अने तेथी स्रष्टभेद वडे भेदतां अनन्तगुण छे.

३०. हे मगगन् ! नैरयिक जे द्रव्योने भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थिर द्रव्योने ग्रहण करे छे कं अस्थिर द्रव्योने ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! जेम जीर मयन्थे पक्तव्यता फही छे तेम नैरयिकने णण पावन् अल्पपटुत्व गुथी कहंवी. ए प्रमाणे एकेन्द्रिय सिवायनो दंडक पावन् वैमानिक गुथी जाणवो. हे मगगन् ! जीयो जे द्रव्योने भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थित-स्थिर रहेतां ग्रहण करे छे एषा मूत्रो पाठमिद छे, पावन्-हे मगगन् ! केटला प्रकारा एचन कहंयो छे 'पुरु' ए एकायचन छे 'पुरुगो-ने पुरुगो ए द्विपचन छे भने 'पुरुगा' भनेक पुरुगो ए यधुयचन छे. 'मा स्त्री' ए स्त्रीयचन, 'मा पुरु' ए पुरुयचन भने 'मा तुड' ए नपुमकयचन

एवं चेव, पुहुत्तेणवि णेतव्वं, जाव वेमाणिया २ । जीवे णं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गेण्हति ताइं किं ठियाइं गेण्हति अठियाइं गेण्हति ? गोयसा ! जहा ओहियदंडओ तथा एसोडवि, णवरं विगलिंदिया ण पुच्छिज्जंति । एवं मोसाभासाएवि, सच्चामोसाभासाएवि एवं चेव, नवरं असच्चामोसाभासाए विगलिंदिया पुच्छिज्जंति इमेणं अभिलावेणं-विगलिंदिए णं भंते ! जाइं दव्वाइं असच्चामोसाभासाए गिण्हइ ताइं किं ठियाइं गेण्हइ अठियाइं गेण्हइ ? गोयसा ! जहा ओहियदंडओ, एवं एए एगत्तपुहुत्तेणं दस दंडगा । भाणियव्वा ।

के अस्थित-अस्थिर रहेलां द्रव्यो ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! बहुवचन वडे ण एमज यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीव जे द्रव्योने सत्यभाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थित द्रव्योने ग्रहण करे छे के अस्थित द्रव्योने ग्रहण करे छे ? जेम सामान्य दंडक क्कथो तेम आ ण जाणवो, परन्तु विकलेन्द्रियो संबन्धे न पूछवुं. ए प्रमाणे मृषा भाषा, सत्यमृषा भाषा अने असत्यामृषा भाषा संबन्धे जाणवुं, परन्तु असत्यामृषा भाषा वडे आ अभिलाप-पाठ वडे विकलेन्द्रियो पूछवा. हे भगवन् ! विकलेन्द्रिय जे द्रव्योने असत्यमृषा भाषापणे ग्रहण करे छे ते शुं स्थिर रहेलां ग्रहण करे छे के अस्थिर रहेलां ग्रहण करे छे ? हे गौतम ! जेम सामान्य दंडक क्कथो छे तेम जाणवुं. ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचन वडे ए दस दंडको कहेवा.

मनमां वीजुं राखीने छेतरवानी बुद्धिथी वीजुं ज कहेवानी इच्छावालो जलदीथी जे मनमां छे ते ज बोले ते अध्यात्मवचन. उपनीतवचन-प्रशंसानुं वचन, जेमके आ खी रूपाली छे, अपनीतवचन-निन्द्यात्मक वचन, जेमके आ कद्दरूपी खी छे, उपनीतापनीतवचन-

३१. जीये णं भंते ! जाइं दब्ब्याइं मणभासत्ताण्णि गिण्हति ताइं किं सयमामत्ताण्णि निसिरइ, मोसभासत्ताण्णि निसिरइ, मयामोसभामत्ताण्णि निमरति, असयामोसभामत्ताण्णि निसिरइ ? गोयमा ! सयमामत्ताण्णि निसिरइ, नो मोसभामत्ताण्णि निसिरति, नो मयामोसभामत्ताण्णि निसरति, नो असयामोसभामत्ताण्णि निसरइ । णं पण्डियियि-
गळ्ळिरिययज्जो पंदत्तो जाय येमाणिया । णं पुत्तेणिया । जीये णं भंते ! जाइं दब्ब्याइं मोसभासत्ताण्णि गिण्हति ताइं किं मणभासत्ताण्णि निसरति, मोसभासत्ताण्णि, असयामोसभामत्ताण्णि निसरइ ? गोयमा !
नो मच्चभामत्ताण्णि निमरति, मोसभामत्ताण्णि निमरति, नो मच्चभामोसभासत्ताण्णि, नो असच्चभामोसभासत्ताण्णि
निसरति । णं सच्चभामोसभासत्ताण्णिया । असयामोसभामत्ताण्णिया णं येय, नयरं असच्चभामोसभासत्ताण्णि

३१. इ भगवान् ! जीय ते द्रव्यो मत्स्य भाषापणे प्रदण करे छे ते इं मत्स्य भाषापणे, मृगा भाषापणे, मत्स्यमृगा भाषापणे के अगत्या-
मृगा भाषापणे मूकं छे ? इ गौतम ! मत्स्य भाषापणे मूकं छे, पण अमत्स्य भाषापणे, मत्स्यमृगा भाषापणे के अगत्यामृगा भाषापणे मूकतो
नयी. ए द्रव्यां णं सच्चिद्रय अने विस्सेन्द्रिय मिनायतो दंडक यावत् वेमानिक मुधी करेयो. एम पदुयचल पडे पण जाणुं. हे भगवान् !
जीय जे द्रव्येने मृगा भाषापणे प्रदण करे छे तेने तु मत्स्य भाषापणे, मृगा भाषापणे, सत्स्यमृगा भाषापणे के असत्स्यमृगा भाषापणे मूकं छे ?
हे गौतम ! मृगा भाषापणे मूकं छे, पण मत्स्य भाषापणे, मत्स्यमृगा भाषापणे के अगत्यामृगा भाषापणे मूकतो नयी. ए प्रमाणे मत्स्यमृगा
भाषापणे अने असत्स्यमृगा भाषापणे पण एमत्र गमवन्, परन्तु अगत्यामृगाभाषापणे विस्सेन्द्रियो संपन्थे तेमत्र पण्डुं. जे भाषापणे
जे प्रवणा व्हीने निरे, तेमके 'भा स्वी व्पवली छे पण पुरस्सभामानी छे' भयमीनोपनीत्तय्या जे-पित्त करिने प्रवोणा करे, तेमके

विगल्लिदिया तहेव पुच्छिज्जंति, जाए चेव गिण्हति ताए चेव निसरति । एवं एते एगत्तपुहुत्तिया अट्ट दंडगा भाणियन्वा ।

३२. कतिविहे णं भंते ! वयणे पन्नत्ते ? गोयमा ! सोलसविहे वयणे पन्नत्ते, तंजहा—एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे, इत्थिवयणे, पुमवयणे, णपुंसगवयणे, अञ्जत्थवयणे, उवणीयवयणे, अवणीयावणीयवयणे, अवणीयोवणीयवयणे, तीतवयणे, पडुप्पन्नवयणे, अणागयवयणे, पच्चक्खवयणे, परोक्खवयणे । इच्चेइतं भंते ! एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वदमाणे पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ? हंता ! गोयमा !

ग्रहण करे छे ते भाषापणे सूके छे. ए प्रमाणे एकवचन अने बहुवचन संबन्धी ए आठ दंडको कहेवा.

३२. हे भगवन् ! केटला प्रकारना वचन कथां छे ? हे गौतम ! सोल प्रकारना वचनो कथां छे. ते आ प्रमाणे—१ एकवचन, २ द्विवचन, ३ बहुवचन, ४ स्त्रीवचन, ५ पुरुषवचन, ६ नपुंसकवचन, ७ अध्यात्मवचन, ८ उपनीतवचन, ९ अपनीतवचन, १० उपनीतापनीतवचन, ११ अपनीतोपनीतवचन, १२ अतीतवचन, १३ प्रत्युत्पन्नवचन, १४ अनागतवचन, १५ प्रत्यक्षवचन अने १६ परोक्षवचन. ए प्रमाणे ए एकवचन यावत् परोक्षवचनने बोले ते प्रज्ञापनी भाषा छे ? ए भाषा मृषा नथी ? हे गौतम ! अवश्य

‘आ स्त्री कद्रूपी छे, पण सुशील छे.’ अतीतवचन-भूतकालजुं वचन, जेमके ‘कथुं’ इत्यादि. प्रत्युत्पन्नवचन-वर्तमानकालजुं वचन, जेमके ‘करे छे’ वगैरे. अनागतवचन-जेमके ‘करशे’ वगैरे. प्रत्यक्षवचन-जेमके ‘आ छे’. परोक्षवचन-जेमके ते वगैरे. ए सोले वचनो यथावस्थित वस्तु संबन्धे जाणवा, पण काल्पनिक न समजवा. माटे एने सम्यक् उपयोगपूर्वक कहेत्यारे ते भाषा प्रज्ञापनी जाणवी. ते बाबत

इवेइतं एगवयणं वा जाव परोक्त्ववयणं वा बद्धाने पणवणी णं एसा भासा, ण एसा भासा मोसा ।
 ३३. कति णं भंते ! भासब्बाया पणत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासब्बाया पन्नत्ता, तज्जहा—सच्चमेगं भास-
 ज्जायं, यित्तिं मोस भासब्बातं, तइयं सधामोसं भासब्बातं, चउत्थं असच्चामोस भासब्बातं । इवेइयाइं भंते !
 चत्तारि भासब्बायाइं भासमाने किं आराहते विराहते ? गोयमा ? इवेइयाइं चत्तारि भासब्बायाइं आउत्तं भास-
 माने आराहते, नो विराहते, तेण पर असंजत्तअविरयअपडिहत्तअपधक्खापपावकम्मे सर्वं भासं भासतो मोसं

ए प्रमाणे ए एकवचन, यावत् परोक्ष वचन बोले ते प्रज्ञापनी भाषा છે, ए भाषા असत्य नहीं.

३३ हे भगवन् ! केटला भाषाना प्रकारो कखा छे ? हे गौतम ! भाषाना चार प्रकारो कखा छे, ते आ प्रमाणे, एक सत्य भाषा, बीजी
 मृषा भाषा, श्रीजी सत्यमृषा अने चौथी असत्यामृषा. हे भगवन् ! ए प्रमाणे ए चार भाषाना प्रकारो बोलनार आराधक छे के विराधक
 छे ? हे गौतम ! ए प्रमाणे ए चार भाषाना प्रकारले सावधानपणे बोलतो आराधक छे, पण विराधक नहीं. ते सिवाय बीजो असयत्त,
 विरतिरहित, जेओनु पापकर्म अग्रतिहत अने अग्रत्याख्यात छे एवो सत्यभाषा बोलतो, असत्य, सत्यमृषा के असत्यामृषा भाषा बोलतो

सुप्रकार कहे छे—'हे भगवन् ! ए प्रमाणे एकवचन द्विवचन' इत्यादि तेना अर्थनी भावना करी, अक्षरार्थ स्पष्ट छे

३३. 'हे भगवन् ! केटला भाषाना प्रकार छे' इत्यादि सुगम छे, परंतु आयुक्त-सावधानपणे बोलतो-सम्यक् प्रवचननी मलिनतादिने दूर
 करधामां तत्पररणे बोलतो होय, ते आ प्रमाणे-प्रवचननी निन्दाना रक्षणादि निमित्ते गौरव अने लाघवने विचार करी असत्य पण
 बोलनार साथ आराधक छे, जे सावधानतापूर्वक बोले छे ते सिवाय अन्य असंयत-मन, दचन अने फायना समय रहित, अधिल-

वा सच्चामोसं वा असच्चामोसं वा भासं भासमाणे नो आराहते, विराहते ।

३४. एतेसि णं भंते ! जीवाणं सच्चभासगाणं मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाणं असच्चामोसभासगाणं
अभासगाण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सच्चत्थोवा जीवा

आराधक नथी, पण विराधक छे.

३४. हे भगवन् ! ए सत्यभाषी, मृषाभाषी, सत्यमृषाभाषी के असत्यामृषाभाषी जीवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के
विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो सत्यभाषी छे, तेथी सत्यमृषाभाषी असंख्यातगुणा छे, तेथी मृषाभाषी असंख्यात-
साधय व्यापारथी जेनुं मन निवृत्त थयुं नथी पवो, अप्रतिदत्त-मिथ्या दुग्दत्त आपनुं, प्रायश्चित्तनो स्वीकार करवो, इत्यादि बडे जेणे
अतीत कालनुं पाप नाश कर्युं नथी, तथा अप्रत्याख्यात-फरीथी नहि करया बडे भविष्यकालना पाप कर्मनुं प्रत्याख्यान जेणे नथी
कर्युं पवो सत्यादि कोशपण भाषाने बोलतो आराधक नथी.

३४. अल्पबहुत्वना विचारमां सौथी थोडा सत्यभाषी छे. अर्धी सम्यक् उपयोगपूर्वक सर्वस मतना अनुसारे वस्तुने सिद्ध करवानी
बुद्धिथी बोले छे ते सत्यभाषक छे, अने तेओ प्रश्न समये केटलाक ज होय छे माटे सौथी थोडा कया छे, तेथी असंख्यातगुणा
सत्यमृषाभाषी छे, कारण के घणा जीवोने जे ते प्रकारे सत्यमृषा बोलवानो संभव छे, अने लोकमां तेम जणाय छे, तेथी असंख्यातगुणा
असत्यभाषी छे, कारण के क्रोधाधीन अने बीजाने छेतरवा वगेरेना अभिप्रायवाळा घणा होय छे, अने तेओ असत्यभाषी होय छे. तेथी

सत्त्वभासगा, सत्त्वामोसभासगा असंलिङ्गगुणा, मोसभासगा असंलेङ्गगुणा, असत्त्वामोसभासगा असंलेङ्ग-
गुणा, अभासगा अणंतगुणा ।

पणवणाए मगवईए एक्कारसं भासापदं समचं ।

गुणा छे, तेथी असत्यामृषामापी असल्यातगुणा छे अने तेथी अमापी (नहि बोलनार) अनन्तगुणा छे.

प्रज्ञापना मगवतीमा अगियासु माणपव समात.

असल्यातगुणा असत्यामृषामापी छे कारण के बेन्द्रियावि जीयो असत्यामृषा माणा बोले छे तेथी अनन्तगुणा समापक छे, कारण
सिद्धो अने पन्द्रियो अनन्त छे

श्रीमदाचार्यमध्यगिरिविचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमा अगियासु माणपद समात.

भाषापद परिशिष्ट

मोक्षना अर्थीय भाषानी विशुद्धि अवश्य करवी जोइए, कारण के भाषासमिति अने वचनगुप्ति ए वन्ने भाषानी विशुद्धिने आधीन छे, भाषासमिति अने वचनगुप्ति चारिचतुं अङ्ग छे, अने चारित्र मोक्षतुं कारण छे. अहीं आ शङ्का न करवी के 'वचनता विभागमां कुशलता रहित आत्माने केवल मीन मात्रथी वचनगुप्ति सिद्ध थाय छे, कारण के सर्वथा मीन धारण करवामां व्यवहारनी उच्छेद थाय, बली वचनना विवेकमां अकुशल आत्मा गुप्तिने अन्धकारी छे. ए संबन्धे कथुं छे के "वचनने विवेक करवामां अन्धमिष अने वचन संबन्धे बहु प्रकारने नहि जाणतो आत्मा जो के कंइपण न बोले तोपण ते वचनगुप्तिने प्राप्त थयेलो नथी." परंतु वचनगुप्ति रहित होवा छतां वचनगुप्तिना अभिमानादिथी दोपने ज प्राप्त थाय छे. ए संबन्धे कह्ते छे के "आह-जइ भासमाणस्स दोसो तो मोणं कायव्वं। आयरिओ भणइ-मोणमवि अणुवापण कुणमाणस्स दोसो भवइ"ति। अहीं पूर्वपक्षी कह्ते छे के जो बोलनारने दोप लागे तो मीन धारण करतुं जोइए. आचार्य कह्ते छे के मीन पण अनुपाय-कारण सिवाय करनारने दोप लागे छे. विशुद्धि बडे लांवा काळ सुधी बोलनारने पण धर्मना उपदेशदानादि बडे गुण ज थाय छे. ते माटे आ कथुं छे के-"वयणविभत्तिकुसलो वयोगयं बहुविद्धं वियाणं तो। दिवसंपि भासमाणो तदा वि वयगुत्तयं पत्तो" ॥ वचनने विवेक करवामां कुशल अने वचन संबन्धी बहु प्रकारने जाणतो आत्मा आखो दिवस बोले तोपण वचनगुप्तिने प्राप्त थयेलो छे.

भाषाना चार प्रकार-नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव ए चार निक्षेप बडे भाषाना चार प्रकार छे-नामभाषा, स्थापनाभाषा, द्रव्यभाषा अने भावभाषा. कोइ जीव के अजीवतुं 'भाषा' एतुं नाम कराय ते नामभाषा. पुस्तक-पत्रादिमां लेखेली स्थापनाभाषा,

१ श्रीमदुपाध्याय यशोविजयजीए प्रज्ञापना सूत्रना अगियारमा भाषापदना विषयने लइ तेना विवेचनरूपे भाषाहस्सनी रचना करी छे. तेथी तेमांथी आ विषयने स्पष्ट करवाना हेतुगी परिशिष्ट लेवामां आच्युं छे.

દ્રવ્યમાયા શાગમથી અને નોઆગમથી એમ બે પ્રકારે છે, અહીં આગમ શબ્દનો અર્થ જ્ઞાન શબ્દ છે આગમથી માયાના અર્થનો જ્ઞાતા અને તે વિશે ઉપયોગ રહિત હોય તે આગમથી દ્રવ્યમાયાના પ્રકારીર, અલ્પ શરીર અને તદ્વ્યતિરિસ્ત એ ત્રણ પ્રકાર છે માયાના અર્થ જાણનાર પુરુષનું જીવરહિત શરીર તે નોઆગમથી શરીર દ્રવ્ય માયા હે મવિષ્યમાં માયાનો અર્થ જાણવાનો છે પણ પુરુષનું શરીર તે મલ્લ શરીર તદ્વ્યતિરિસ્ત દ્રવ્ય માયાના ત્રણ પ્રકાર છે—પ્રદાન, નિ સરણ અને પરાધાત તેમા યત્ન યોગના પરિણામવાલા આત્માદ પ્રદાન કરેલાં અને નહિ છોડેલા માયાદ્રવ્યો તે પ્રદાન, કટાદિ સ્થાનના પ્રયત્નથી વિમાગપૂર્વક છોડેલા માયા દ્રવ્યો તે નિસરણ, અને છોડેલા તે માયા દ્રવ્યો યદે યત્નિત થયેલા માયાના પરિણામને યોગ્ય યીજા દ્રવ્યો તે પરાધાત એ પ્રમાણે દ્રવ્યમાયાના ત્રણ પ્રકાર છે. અને ઉપયોગવાલાની માયા તે માયમાયા

માયા દ્રવ્યોને પ્રદાન કરવાનો પ્રકાર—જીવ માયા દ્રવ્યો વિષય-સ્થિતિ પરિણામવાલાં પ્રદાન કરે છે, પણ ગમન પરિણામ વાલાં પ્રદાન કરતો નથી, તે સ્થિતિ પરિણામવાલાં પ્રદાન કરે છે તે દ્રવ્યથી અન્નતપ્રદેશવાલા પ્રદાન કરે છે, તેથી ન્યૂ પ્રદેશ વાલાં પ્રદાન કરતો નથી, કારણ કે તે સ્વભાવથીજ પ્રદાનને અયોગ્ય છે દેશથી અસત્યાતા પ્રદેશાવગાદજ દ્રવ્યો પ્રદાન કરે છે, કારણ કે એક પ્રદેશારિમાં અવગાહ-રહેલા દ્રવ્યો પ્રદાનને અયોગ્ય છે વાલાથી એક સમયની સ્થિતિવાલા યાવત્ અસત્ય સમયની સ્થિતિવાલાં પ્રદાન કરે છે, કારણ કે પુરુગાનેની અસત્યાત વાલા સુધી પણ સ્થિતિનો સમય છે “ નિરેષ ગ્રહનેષ વર્ષા સમય, ઉદ્યોસેણ અરારેન્નજ કાલ” નિરેજ-નિક્ષપ પુરુગલ ગ્રહથી એક સમય અને ઉત્પટથી અસંખ્યાત કાલ સુધી રહે છે—એવું મ ગયતીનુક્રમ કયા છે માયા દ્રવ્યોની એક સમયની સ્થિતિ પ્રદાન કર્યા પછી છોડતાં એક પ્રદાન સમય પર્યન્ત રહેવાથી જાણથી ‘એક પ્રયત્ન યદે પ્રદાન કરેલાં દ્રવ્યોના આદિ માયાપરિણામની સ્થિતિમાં ફેરફાર થવાથી એક સમયની સ્થિતિવાલા દ્રવ્યો છે’ એમ અય આગાર્ય કહે છે માયથી વર્ણવાલાં યાવત્ સર્વંવાલાં પણ પ્રદાન કરે છે વર્ણ, ગન્ધ અને રસની સત્યાને આશ્રયી સમુદાયની વિવિધતામાં અપદય વાય વર્ણ, એ ગન્ધ અને વાન રસવાલા પ્રદાન કરે છે અને પ્રદાન કરવા યોગ્ય પ્રત્યેક દ્રવ્યને આશ્રયી એક, કે બે

इत्यादि वर्ण, गन्ध अने रसवाळां द्रव्यो ग्रहण करे छे ए विचारुं. काळा वगैरे पण एक गुण काळा वगैरेथी मांडी अनन्तगुण काळा वगैरे द्रव्यो जाणवां. स्पर्शनी संबन्धाने आश्रयी प्रत्येक ग्रहण योग्य द्रव्योनी अपेक्षाए केटलाएक बे स्पर्शवाळां होय छे. परन्तु एक स्पर्शवाळां होतां नथी, कारण के एक परमाणुमां पण बे स्पर्श होय छे. अने ते बे स्पर्श मृदु अने शीत तथा मृदु अने उष्णरूप जाणवा. केटला एक त्रण स्पर्शवाळां तथा केटला एक मृदु अने स्निग्ध स्पर्शवाळां इत्यादि दिशा वडे मृदु स्पर्शना अवयवोने वीजा स्पर्शानो योग होय तो पण समुदायने आश्रयी त्रण स्पर्श जाणवा. केटलाएक चार स्पर्शवाळां पण होय छे. पटले समुदायने आश्रयी चार स्पर्शवाळा ज होय छे. तेमां चार स्पर्शमां मृदु अने लघु रूप बे स्पर्श अवस्थित होय छे अने वीजा स्निग्ध अने उष्ण, स्निग्ध अने शीत, रूक्ष अने उष्ण तथा रूक्ष अने शीत स्पर्श होय छे. तेमां अवस्थित स्पर्श नियत होवाथी तेनी गणना करी नथी अने वैकल्पिक स्पर्शनी अपेक्षाए चार स्पर्शवाळानो निर्देश छे-पवो संप्रदाय (परंपरा) छे. आ संबन्धे प्रश्न न करवो, कारण के सूत्रनी गति विचित्र छे.

उपर कहेला स्वरूपवाळा भाषा द्रव्यो स्पृष्ट-आत्म प्रदेशो साथे रहेला होय तेने ग्रहण करे छे, पण अस्पृष्टने ग्रहण करतो नथी. स्पृष्ट छतां पण अवगाढ-आत्मप्रदेशो साथे एक क्षेत्रमां रहेलां होय तेने ग्रहण करे छे, परन्तु आत्मप्रदेशो वडे स्पर्श करायेला, पण आत्मप्रदेशना अवगाह क्षेत्रथी चहार रहेलां ग्रहण करतो नथी. तेमां पण अनन्तरावगाढ द्रव्योने ग्रहण करे छे, पण परंपरावगाढने ग्रहण करतो नथी. पटले जे आत्मप्रदेशोमां जे भाषा द्रव्यो रहेलां छे ते आत्मप्रदेशो वडे तेज द्रव्योने ग्रहण करे छे, परन्तु एक, बे, त्रण आत्मप्रदेशो वडे व्यवहित भाषा द्रव्योने ग्रहण करतो नथी. ते पण भाषाने योग्य स्कन्धोमां परस्पर थोडा प्रदेशोनी अपेक्षाए अणु अने वधारे प्रदेशोनी अपेक्षाए वादर स्कन्धो ग्रहण करे छे, परन्तु वीजा भाषाने अयोग्य स्कन्धोने ग्रहण करतो नथी. ते पण जीवना जेटला क्षेत्रमां ग्रहण योग्य भाषा द्रव्यो रहेला छे नेमां ऊर्ध्व दिशा अघो दिशा अने तिर्यग्दिशाए रहेलां ग्रहण करे छे, ते पण भाषाना द्रव्यने ग्रहण करवाने योग्य अन्तर्मुहूर्तना काळनी आदिमां मध्यमां अने अन्तमां पण ग्रहण करे छे. ते पण स्वविषय-स्पृ-

દાદિ દ્રવ્યો પ્રહણ કરે છે, પણ અધિચરક અસ્પૃશ્યિ દ્રવ્યો પ્રહણ કરતો નથી તે ગણ આપુર્ણી-પ્રહણની અપેક્ષાપ ગતીક હોય જેમજેમ તે પ્રહણ કરે છે, પણ તેથી બિન્ન દ્રવ્યો પ્રહણ કરતો નથી, અને તે અવશ્ય છે પ વિચારથી આવેલાં પ્રહણ કરે છે, કારણ કે યત્તા અવશ્ય ત્રવ તાષીઆ રહેવાથી તેને છ વિચારથી આવેલા પુદ્ગલોના પ્રહણનો સમય છે

તેમાં કોઈ તોલ્ય પ્રયત્નવાલો ઘઠ્ઠા પ્રહણ કરવાના અને ઊંઠવાના પ્રયત્ન થઈ મેવાપેલાં-રાઠગઠ કરાયેલાં આવાદ્રવ્યો છોટે છે અને કોઈ મન્દ પ્રયત્નવાલો યાગ તેવા પ્રકારનાં નદિ મેવાપેલ તૂલ માયા મજોને છોટે છે તેમા મેવાપેલા આવાદ્રવ્યો સૂક્ષ્મ અને ઘણા ઠોપાથી અને ઘાવ્ય દ્રવ્યને યાસિત કરતા હોવાથી અનન્તગુણમુદિ પામતા છ પ વિચારનાં લોકાન્તને વ્યાપ્ત કરે છે અને તે અભિષ્ક-નદિ મેવાપેલ માયા દ્રવ્યો અસસ્વાતી અચનાદનાયર્ગણા મુથી જાને મેવાય છે અચનાદના-યક યક માયાદ્રવ્યના આધારસૂત અસં-ક્યાતા પ્રવેચકર કંદ્રનો વિમાગ, તેની યર્ગણા-મમુદાય તે અચનાદના યર્ગણા કહેવાય છે અને મેવાપેલા માયાદ્રવ્યો સંસ્વાતા યો જન મુથી જાને વિલય વાસે છે-શાદ્ય પરિણામનો સ્થાગ કરે છે

દુયે જે માયાદ્રવ્યો મેવાય છે તે મેવ યાંચ પ્રકારનો છે-૧ રાઠમેવ, ૨ પ્રતરમેવ, ૩ ચૂલિકામેવ, ૪ અનુતટિકામેવ અને ૫ ઉત્ક-રિકામેવ. લોઠા, અસત, ઝાંચુ, હીમુ યગેરે દ્રવ્યોનો મઠ-કકઠા રૂપે મેવ ધાય તે મઠમેવ ધાય, નેતર, ઘઠ, કેઠ, અપરત યગેરેનો પ્રતર-પરુરૂપે મેવ ધાય તે પ્રતરમેવ, યોપર યગેરેનો ચૂર્ણરૂપે મેવ ધાય તે ચૂલિકામેવ પ્રહ, તઢાય, યાય યગેરેનો (તટ-વિનારાગ મેવ યટે (1)) મેવ ધાય છે તે અનુતટિકામેવ પ સખ્યે તેત્યાર્થેટીકામા આ પ્રમાણે છે-“અનુતટમેવસ્તુ ઘશેશુચિલ્લિયુપાલનમ્” યાલ,લેરડી, યગેરેની ઉપરની છાલ ઉચોટકારૂપ મેવ તે અનુતટમેવ કહેવાય છે પરંટીજાનિનો શિગ યગેરેના પુટયા યટે મેવ ધાય તે ઉત્કલિકામેવ અર્થી મેવ પામતા આવાદ્રવ્યોનો નાશ ધાય છે, કારણ કે અપયનો વિમાગ યવાધી દ્રવ્યના અસમવાયી કારણરૂપ અ ધાપવના રાયોગ્ને નાશ ધાય છે વમ ન સમગપુ. વેમકે ઘટમાં છિદ્ર વર્વાયની યંઠે માયાદ્રવ્યોનો મેવર્વાંય ઉત્પત્ત ધાય છે તો વળ અન્ય દ્રવ્યની ઉપરિ ઘતી તથી વિશિષ્ટ ડાપવિમાં વિશિષ્ટ ઘલ કારણ હોવાથી તે અધિશિષ્ટ-સામાન્યરૂપે અવશિષ્ટિતો વિરોધી

नथी. जो एम न होय तो द्वितीयादि समयमां रहेला घटनी द्वितीयादि समयमां विशिष्ट उत्पत्ति थाय छे, तो पण घटना नाशानो व्यवहार थतो नथी. छिद्रघट ते घटथी भिन्नज उत्पन्न थाय छे एम न कहेछुं. कारण के त्यां दंडादिनो व्यापार नहि होवाथी तेनी उत्पत्ति आकस्मिक थशे. कोइ एम कहे के दंडादि घटविशेषमां कारण छे, पण अहाँ छिद्रघटादिनी उत्पत्तिमां कारण नथी, आ कल्पना अपूर्व छे, तो पण घटमां छिद्र उत्पन्न थयुं छे, घट विनष्ट थयो नथी ए व्यवहारनुं शी रीते उपपादन करुं? वास्तविक रीते संयोगनो नाश द्रव्यनो नाशक नथी, पण आवश्यक होवाथी भेदज नाशक छे अने भेद पण भेदरूपे हेतु नथी पण भेदविशेषरूपे कारण छे. तेथी मन्द प्रयत्न वडे उच्चारेला भापाद्रव्यनो गतिविशेषथी यतो भेद तेना नाशनुं कारण छे, पण ग्रहण अने निसर्ग-छोडवाना प्रयत्न वडे थयेलो भेद ध्वंसनुं कारण थतो नथी. माटे सूत्रमां कहेछुं छे ते युक्त छे. निष्ट-छोडेला-तालु वगरे स्थानना प्रयत्न पूर्वक उच्चारेला द्रव्यो वडे वासनाने योग्य द्रव्यनो पराघात-वासना थाय छे, तेथी विश्रेणिमां केवल वासित द्रव्यो होय छे, कारण के छोडेला भापाद्रव्यो सूक्ष्म होवाथी श्रेणिना अनुसारे गमन करे छे. केमके जीव अने सूक्ष्म पुद्गलानी गति श्रेणिने अनुसारे होय छे. अने भापक-वक्तानी दिशानी समश्रेणिमां रहेलां निष्ट-छोडेलां अने वासित-एम मिश्र द्रव्यो होय छे. अहीं द्रव्यना प्राधान्य अने ग्रहणादिरूप क्रियाना अने भाषाना परिणामरूप भावना अप्राधान्यनी विवक्षा करीने तेनो द्रव्यभापारूपे व्यवहार थाय छे. अर्थात् आ त्रणे प्रकारनी भापा द्रव्यना योगनी विवक्षा करेली होवाथी द्रव्यभापा कहेवाय छे. जो एम न मानवामां आवे तो “दोहिं समर्हि भासए भासं” ‘बे समये भापा बोले छे’ ए वचननी साथे वचनयोगजन्य भापा अने ‘भाव्यभाषां’-बोलतो होय त्यारे भापा कहेवाय-ए वचननो विरोध थशे, कारण के प्रथम समये भापाद्रव्यो ग्रहण करी बीजा समये भापापणे परिणामाची छोडे छे-ए रीते निसर्गना अभिप्रायथी संगत थाय छे. परन्तु पूर्वे कल्या प्रमाणे मानवामां आवे तो छोडवाना समयेज भावभाषा कहेवाय अने ग्रहण समये द्रव्यभापा कहेवाय, पण निसर्गादि समये द्रव्यभापा नहि कहेवाय ए माटे उपर कहेली विवक्षा आदरणीय छे. ए प्रमाणे ‘वचनयोगथी उत्पन्न थयेली भापा होय छे’ ए पण वचन छोडवाना समये भावभापा न मानो तो विरुद्ध थाय छे. छोडवाने अनुकूल

कायसंभ-शरीरको प्रयत्न से घबनयोग अथवा फाययोग बड़े प्रहण करेला भाषाद्रव्यना समूहसहित जीयनो व्यापार घबनयोग कहे
घाय छे अने बन्ने प्रकारे तेनाथी उत्पन्न थयेली भाषभाषा कहेघाय छे ए प्रमाणे 'भाव्यभाषा' योलाती होय ते भाषा ए अगवन्तु
घबन एण विरुद्ध घाय छे अहीं भाष भाषा अ विधेय छे, जो एम न होय तेनी पूर्णे अने एही भाषा कहेयाती नथी ए अघघारण
घटी शकसे नहि

हये भाषभाषा सकथे कहे छे-अहीं उपयोगघाळानी भाषा भाषभाषा कहेघाय छे कारण के उपयोग भाव छे अने अनुपयोग
द्रव्य छे जे अभिप्रायथी भाषा उत्पन्न घाय ते भाषभाषा जे योलायने इच्छे छे ते एहेलाज तेने पोताने घयो क्यल्ल होय छे के आ मारे
कहेयानु छे, ह्यार एही ते योलाती यीजाने पोतानो अभिप्राय जणाबे छे, ए रीते भाषानु प्रयोजन छे के पोताने अने धीजाने घोष
करयो अहीं कोर शका करे के अन्तिको उपयोग घावानि कहेघाय छे तेम भाषानो उपयोग भाषभाषा कहेघाय, एण उपयोगना
विषयभूत भाषा भाषभाषा न बहेघाय, ते अनुक छे 'भाषरूप भाषा ए भाषभाषा' ए मंगी बहे उपर कहेलो अर्थ घटतो नथी एण
भाषबहे भाषा ते भाषभाषा-ए रीते प्रकृत अर्थनी उपपत्ति घाय छे

अहीं कोर शका करे के भाषा अर्थनो निर्णय करजारी नथी, कारण के शब्द अने अर्थनो तादात्म्य के तदुपत्ति सवन्ध 'दि होयाथी स
एचना अभाषथी प्रतिनियत अर्थनो घोष नहि घाय, तेथी एम न जानु के शब्दोनी अनुत्पत्तिको प्रसंग घयो अर्थना घोषकएणानो
विचार करी शब्दो उच्चार करे छे कारण विकल्पथी ज शब्दोनी उत्पत्ति घाय छे शब्दो एण विकल्पना उत्पन्न करयायटे चरितार्थ
घाय छे मोटे विकल्प अने शब्दोको परस्पर कार्यकारणभाव छे, ते शकना समाधानमा कहे छे—

भाषा अघघारणी-अर्थनो निश्चय करजारी छे, कारण के पद अने पदार्थनो संकेतरूप सवन्ध होयाथी 'आ श्रुत-सामव्यथी जानु छे'
एयो व्यवहार घाय छे जेम 'अनुमिनोनि' हु अनुमान करहु एण ए बुद्धि घटे अनुमितिकरूप प्रमाविशेषतो सिद्धि घयाथी अनुमान प्रमाणसिद्ध
घाय छे तेम 'शब्दाए मत्थेमि' शब्दथी जानु एण ए बुद्धि वडे प्रमाविशेषतो सिद्धि घयाथी शब्दप्रमाण सिद्ध घाय छे अहीं कोर कहे छे के

शब्दधी अर्थनी प्रतीति अनुमानधी थाय छे, तेनो उत्तर प छे के अनुमितिमां व्याप्ति जान वगैरे कारण छे अने ते सिवाय पण शब्दधी जल्दी अर्थनी प्रतीति थाय छे मटे ते अनुमान प्रमाण रूप नथी. तेथी भाषा अवधारणी-अर्थनो बोध करनारी छे.

हवे भावभाषाना भेदो कहे छे-द्रव्यने आश्रयी अने चारित्रने आश्रयी भावभाषाना वण प्रकार छे. द्रव्यने आश्रयी भावभाषा चार प्रकारनी छे-१ सत्य, २ असत्य, ३ मिश्र-सत्यासत्य, अने ४ असत्यामृगा. ते चार प्रकारना भाषानो वे भेदमां समावेश करे छे. प्रथम सत्य अने असत्य प वे प्रकारनी भाषा पर्याप्ता अने पछीना वे प्रकारनी भाषा अपर्याप्ता छे. तेमां जे सत्य के असत्यरूपे अवधारण करी शक्य अने अवधारण न करी शक्य ते पर्याप्ता अने अवधारण न करी शक्य ते अपर्याप्ता.

हवे पूर्वे कहेला भाषाना भेदोनुं निश्चय अने व्यवहार वडे विवेचन करे छे-व्यवहारलयधी भाषा चार प्रकारनी शाखामां कहेली छे. अने निश्चयनयनी अपेक्षार सत्य अने मृगा प वे प्रकारनी भाषा छे. तेमां वस्तुतत्त्वने स्थापन करवानो बुद्धिधी जिनप्रणीत सिद्धान्तने अनुसरीने बोलाय, जेमके आत्मा सत् अने असत्स्वरूप छे ते सत्य भाषा कहेवाय छे, कारण के आराधकभाव छे. जे सिद्धान्तधी विरुद्ध बोलाय ते असत्य, कारण के विराधकभाव छे. घवादि वृक्षनो समूह छतां अशोक घणा होवाथी 'आ अशोकवन छे' पम कहेवाय ते मिश्रभाषा. जे वस्तुमानना पर्यालोचन करवामां तपर हे देवदत्त घट लाव' इत्यादि ते आराधकभाव अने विराधकभाव रहित होवाथी असत्यामृगाभाषा छे. अहीं परिभाषा ज शरण छे. परिभाषा पटले व्यवहार. अहीं असत्यामृगा भाषामां तालयनो वाध थतो होय तो तेनो असत्य भाषामांज समावेश थाय छे. तालयनो वाध न थतो होय तो ते सत्यभाषा छे. अहीं वृक्षना समूहरूप वनमां अशोकना अभेदना तालयनो वाध थवाथी मृगापणुं स्पष्ट छे. ज्यारे अशोकप्रधान वन प विवशथी प्रयोग होय त्यारे श्रमणसंघनी पेटे व्यवहारसत्य पण कहेवामां चांथी नथी पम जणाय छे. असत्यामृगा भाषा पण कोइने छेतरधानी बुद्धिपूर्वक होय तो तेनो असत्यमां अने ते सिवाय सत्यमां समावेश थाय छे. जेथी निश्चयनय वडे छेल्ली वे भाषानो पूर्वनी वे भाषामां समावेश कर्यो, अने पधीज आशापनी भाषाने असत्यामृगाना भेदमां गणेली छे छतां जाति वडे-सामान्य वडे के सामान्य रहित भाषा प्रज्ञापना सूत्रमां तत्त्वार्थदर्शी दयामाचार्ये पज्ञापनी-

माया कहेली छे—“अह भते ! जातीति इत्थिआणमणी, जातीति पुमआणमणी, जातीति णुसुगआणमणी पण्यणी ण पसा ! ण एसा मासा मोसा ? हुता गोयमा ! इत्यादि जो के जेने आसा करे ते शिष्यादि कार्य न करे तेथी असस्यनी आराफाथी प्रश्न कर्यो छे तेथी विनीत शिष्यादि विषयक आझापनी माया असस्य नथी, तो पण अविनीतने आझा करवी ते स्य अने परने पीडानु कारण होवाथी पारिभाषिक-ध्यायहा रिक असस्य छे आराधकण्यु, विराधकण्यु, वैशाराधकण्यु, वैशविराधकण्यु तथा आराधकण्यु अने विराधकण्युना अभावने आधयी भाषणा विभाग चार प्रकारे छे अौ निश्चयथी आराधकण्यु अने विराधकण्यु प वझेने आश्रयी ये प्रकारनी भाषा छे वास्तविक रीते तो भाषानिमिष शुभाशुभ सकस्यु आराधकण्यु अने विराधकण्यु छे, परल्लु भाषानु नथी अहीं प्रश्न थाय छे के तहन नाना वाक्ये के जेओनी इन्द्रियो असमर्थ होवाथी ‘हु आ बोलु छु’ एषु जेने मान नथी तेओने ते निमित्ते अशुभ सकस्य नदि होवाथी छी रीते आराधकण्यु के विराधकण्यु समज्यु ! तेनो उत्तर प छे के उपयोगरहित परिणाम अ कर्मवचनो हेतु होवाथी विराधकण्यु स्पष्ट छे कारण के आयुक्त-उपयोग पूर्वक चारे प्रकारनी भाषा बोलनार आराधक छे अने उपयोग सिवाय बोलनार विराधक छे-पम प्र-ज्ञापना सूत्रमां स्पष्टपणे प्रतिपादन कर्यु छे अहीं आयुक्त-सावधानपणे प्रयचननी मलीनता, निदा वगेरेथी रक्षण करयामा तत्परता छे माटे निश्चयथी आराधकण्यु अने विराधकण्युने आश्रयी सत्य अने असत्य वेज प्रकारनी भाषा छे अहीं पम न समज्यु के निश्च-य नय तात्त्विक होवाथी भाषाना चार प्रकार कस्यना मात्र होवाथी वास्तविक नथी, कारण के व्ययहारानुगत वस्तु पण शाल्यप्रसिद्ध छे प प्रमाणे नयनी अपेक्षार भाषाना वे प्रकार अने चार प्रकार कस्य, हवे सूत्रना विभागने अनुसरी सत्यभाषाना लक्षणना कयन-पूर्वक विभाग कदे छे-अवधारणपूर्वक ते वस्तुने किसे ते प्रकारनु यचन ते सत्य भाषा छे अने तेने आराधनी भाषा कहेली छे तेना दस प्रकार छे-१ जाणदस्य, २ समतसत्य, ३ स्यापनासत्य, ४ नामसत्य, ५ रूपसत्य, ६ मतीत्यसत्य, ७ व्ययहारसत्य, ८ भानसत्य,

१ हे भगवन् ! जति वदे खीने आझा कलार, जति वदे पुइने अज्ञा कलार अने जति वदे ननुगइने आझा कलार भाषा प्रज्ञापनी रहेगा ? ” भाषा नुया गथी ! हा गौतम ! आ भाषा प्रज्ञापनी छे, नुया नथी

९ योगसत्य, १० उपमासत्य. जे जनपद-देशना संकेत मात्राथी अर्थनी प्रतीति करावे ते जनपदसत्य, अहीं मात्र अनादि सिद्ध संकेतनो निषेध करवा माटे छे. जेमके कौंकणादि देशना संकेतज्ञानथी पिच्चादि पदथी पाणी वगेरे अर्थनी प्रतीति थाय छे. द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावने आश्रयी जे रूढिने छोडीने योग-व्युत्पत्ति मात्र वडे अर्थनो निश्चय न करे ते संमतसत्य. जेमके पद्मने विशेषे पंकज शब्दनो प्रयोग. शेचाल वगेरे पंकथी उत्पन्न थयेला होवा छतां पंकजशब्द अरविन्द-कमळने जणावे छे, परन्तु शेचालादिनो बोध करता नथी. ते संमतसत्य. ५ प्रमाणे समुदायनी शक्तिना प्रतिसंधान-स्मरण सिवाय नहि बोध करनार पदयुक्त भाषा ते संमतसत्य ५ तात्पर्य छे. अहीं जनपद सत्यमां अतिव्याप्ति थशे एम न जाणुं. कारण के अवयव शक्तिना अतिप्रसंगने दूर करनार समुदायनी शक्तिनुं ग्रहण करेनुं होवाथी दोष नथी. व्युत्पत्तिरहित रूढ शब्दमां अव्याप्ति थशे एम न मानुं कारण के अहीं शक्ति संकेतमात्र नथी, पण अनादि शास्त्रीय अवाधित संकेत छे. अन्यथा लक्षणादि वगेरेना उच्छेदनो प्रसंग प्राप्त थशे. २ स्थापनासत्य-स्थापनामां वर्तमान अने जेनो भावार्थरहित संकेत जाण्यो छे पवी स्थापनासत्य भाषा कहेवाय छे. जेमके जिनप्रतिमामां जिनशब्द स्थापनासत्य छे. अहीं संमतसत्य भाषानुं लक्षण लागु पडे छे तेथी कोइ पण प्रकारनो दोष नथी, कारण के उपधेयनुं (उपाधिना आश्रयनुं) सांकर्य छतां पण उपाधिनुं सांकर्य नथी. ३ नामसत्य-भावरूप अर्थ रहित भाषा नामना संकेतमात्रथी योगार्थना-व्युत्पत्ति प्रतित्पाद्य अर्थना वाधनी दरकार कर्या सिवाय पोताने प्रतित्पादन करवा योग्य अर्थनुं प्रतित्पादन करे ते नामसत्य. जेमके धनरहित छतां नाम वडे धनवान् होय छे. ज्यां यथार्थ नाम होय त्यां केवल नामसत्य नथी पण परिणामसत्य छे. भावरूप अर्थना वाध सहित अने रूपवाळाने विशेषे जेनो उपचार कर्यो छे एवा पद युक्त भाषा ते रूपसत्य. जेमके प्रकट दोषने सेवनारने विशेषे यतिशब्दनो प्रयोग. अहीं यतिपदनो रूपवाळा-वैपधारीने विशेषे उपचार छे. अहीं भाव यतिपणानो वाध छे माटे स्थापना यतिपणुं मानुं युक्त छे एम न कहेनुं. कारण के स्थापना ते जातिना सदोष पदार्थमां होती नथी, पण विजातीय अने दोषरहित पदार्थने विशेषे होय छे. लिंग-वैपमां गुण अने दोष वन्ने होय छे अने प्रतिमामां वन्ने नथी. माटे तेथी भिन्न द्रव्यमां तेना आकारनी कल्पना ते स्थापना. अने केवल रूप-वैश तो ते जातनुं

કૂટ દ્રવ્ય છે. ૫ વિશેષતા જાણથી '૫ પ્રતીત્યસત્ય-વિરોધ સિવાય પ્રતીત્ય માધ-સાપેક્ષ પદાર્થનો ઉપદેશ કરનારી માયા પ્રતીત્યસત્ય કહેવાય છે. જેમકે અપેક્ષાપદ એક ફલ યિગેરે નાનું પણ છે અને મોઢું પણ હોય છે. ઘડી ભાગમિકા ગાગલી મધ્ય આગલીની અપેક્ષાપદ નાની હોય છે અને કનિષ્ઠાપદ મોટી હોય છે. આ અનુભવ અને મહત્વાધિ પરસ્પર વિરુદ્ધ નથી, કારણ કે સત્યાસત્યનો પેઠે મિત્ર મિત્ર નિમિત્તસાપેક્ષ છે અને તે નિમિત્ત અનેક પ્રકારના હોય છે.

ધ્યયદ્વાર સત્ય-ધ્યયદ્વાર પટલે લોકની વિચક્ષા, તે ઘટે જેનો પ્રયોગ થાય તે ધ્યયદ્વારસત્ય જેમ કે નદી પીવાય છે, પર્યંત ઘટે છે. અહીં પીવાય છે. પટલે પર્યંતમાં રહેલું ઘાસ ઘટે છે. અહીં પર્યંત અને યુગારિના અમેદગા કપનથી નદી પીવાય છે. પટલે નદીનું પાણી પીવાય છે, પર્યંત ઘટે છે. પટલે પર્યંતમાં રહેલું ઘાસ ઘટે છે. અહીં પર્યંત અને યુગારિના અમેદગા કપનથી મુપાચારીપણાનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત યદો પમ ન જાણવું, કારણ કે અહીં ધ્યાયદ્વારિક અમેદનો આશ્રય કરેલો દોષાથી તેમાં દોષ નથી. લોકની વિચક્ષાનું પ્રહ્ણ દોષાથી રૂપસત્યાદિમાં અતિવ્યાસિનો પ્રસંગ નથી. ૫ પ્રમાણે આમલકી ઘગેરેમાં પેકેન્દ્રિય દોષાથી નપુસક છતાં પણ સ્ત્રી યગેરેની અમેદ વિચક્ષા ઘટે સ્ત્રીલિંગાદિનું પ્રતિપાદન પણ ધ્યયદ્વારસત્ય જ છે. ૭ માયસત્ય-સત્ યસ્તુના અભિપ્રાયપૂર્વક કહેલી માયા તે માયસત્ય જેમકે 'મા ઘટ છે, ઘડલો ઘોલો છે' યાસ્તયિક ઘટનો યોગ કરવાના અભિપ્રાયથી ઘટપવનો પ્રયોગ કરેલો છે. અથવા ઘડલામાં પાંચે ઘર્ણનો સંમય છે તેો પણ શુદ્ધઘર્ણનું કથન ઉત્કટ ગુરુઘર્ણ યતાયયા માટે છે, અહીં પમ ન કહેવું કે આ ધીજા ઉદાહરણનો ધ્યયદ્વાર સત્યમા સમાવેશ થાય છે, કારણ કે ધ્યયદ્વારસત્ય લોકવિચક્ષાને આધીન છે. ૯ યોગસત્ય-જ્યા યસ્તુના યોગે ઉપવાર થાય તે યોગસત્ય અતીત કાલે સયમ્થયાલા લાક્ષણિક પદ્યુક્ત માયા યોગસત્ય કહેવાય છે. જેમકે યર્તમાન કાલે છત્રા વિનો અમાવ શોયા છત્રા અતીત કાલે છત્રાદિના સયમ્થથી છત્રી-છત્રયાલો, કુડલી કુડલયાલો અને ઘડી કહેવાય છે. ૧૦ ઉપમાસત્ય-ઉપમાન પટલે દ્વાલ, ઉદાહરણ, નિર્દર્શન અને દ્વાલ પ સમાનાર્થક છે, તે ઘટે સત્ય તે ઉપમાન સત્ય તે ઉપમાન એ પ્રકારે છે-ચરિત અને કલ્પિત ચરિત-પારમાર્થિક, જેમકે મદારંભયાલો પ્રહ્ણવત્તની પેઠે ટુ-૫૫ પામે છે. કલ્પિત-પોતાની શુદ્ધિનો કલ્પા ઘટે રચેલું જેમકે અનિત્યતામાં પીપલ્બના પાનનું ઉદાહરણ કલ્પિત પણ કલ્પની પેઠે તાત્પર્યનો યાધ યતો ન દોષાથી નિરર્થક નથી. ૫ પ્રમાણે સત્ ઉપ-

मानवाचक पद वडे घटित भाषा उपमानसत्य छे. 'चन्द्रमुखी' इत्यादि देशोपमां संभवित प्रसन्नत्वादि धर्मोतुं ग्रहण होवाथी दोष नथी. ए प्रमाणे दस प्रकारनी सत्य भाषातुं प्रज्ञापनादि सूत्रने अनुसारे वर्णन कर्युं, हवे असत्य भाषातुं निरूपण करे छे-सत्यथी विपरीत होय ते असत्य. अहीं चरित उपमानादिमां अतिव्याप्ति थशे एम न कहेतुं, कारण के यथार्थ तात्पर्यना बाध वडे जे वचन होय ते असत्य छे. चरित अने कल्पित उपमानादिमां तात्पर्यनो बाध नहि होवाथी अतिव्याप्ति नथी. अथवा विराधनी भाषा ते असत्य भाषा कहेवाय छे. अहीं विराधकपणुं सद्भूत अर्थना प्रतिषेधादि वडे जाणतुं

असत्य भाषा चार प्रकारे छे. द्रव्यथी सर्व द्रव्यो संवन्धे, क्षेत्रथी लोक अने अलोक संवन्धे, कालथी दिवसे अथवा रात्रे अने भावथी क्रोध, लोभ, भय अने हास्यथी असत्य बोलतुं. अहीं एकना ग्रहणथी, तेनी जातिंतुं ग्रहण थतुं होवाने लीधे क्रोधना ग्रहणथी मानंतुं ग्रहण, लोभना ग्रहणथी मायांतुं ग्रहण अने भय अने हास्यना ग्रहणथी प्रेम, द्वेष, कलह अने अभ्याखानादिंतुं ग्रहण जाणतुं एवो वृद्ध आचार्योनी संप्रदाय छे. अथवा तो क्रोध निश्चिन्तादि दस भेदो भाव असत्यना ज छे. अहीं असत्यना संवन्धे द्रव्य अने भावना संयोगे विधि अने प्रतिषेध वडे चरभंगी जाणवी. १ द्रव्यथी मृपावाद छे अने भावथी नथी. जेमके कोइ शीकारी पूछे के 'ते पशु मृग दगेरे जोया'? तयारे तेने कहे के 'में जोया नथी'. ए द्रव्यथी मृपावाद छे, भावथी नथी. २ भावथी मृपावाद छे, पण द्रव्यथी नथी. जेमके मृपा बोलवानी इच्छावाळो उतावळने लीधे एकदम सत्य बोली जाय. ए भावथी मृपा छे, पण द्रव्यथी अने भावथी. जेम कोइ मृपा बोलवना परिणामवाळो मृपावाद बोले. 'चोथो भंग शून्य छे. बळी असत्य भाषा दस प्रकारे छे-१ क्रोधना आवेशवाळो जे भाषा बोले ते क्रोधनिश्चित भाषा कहेवाय छे. जेमके गुस्से थयेलो पिता पुत्रने कहे के 'तुं मापो पुत्र नथी.' अथवा क्रोधना आवेशवाळंतुं वधुं कथन असत्य छे. (प्र०)—क्रोधना आवेशवाळो गायने, गाय कहे ते असत्य केम होय? (उ०)—तेतुं चित्त क्रोधथी व्याकुल होवाने लीधे गायने विशे गायंतुं कथन पण अप्रमाण भूत छे-एवो संप्रदाय छे. परन्तु आ विचारणीय छे के तेमां मूढ व्यवहारने उपयोगी सत्य होवा छतां फलोपयोगी सत्य नथी, कारण

के साक्षिष्ठ आचरणवाळानु कथन निष्कळ छे अहीं कोर दंका करे के गुस्ते घयेलो मनुष्य शुणाक्षर न्याय घडे पण सत्य बोले तो तेने अग्रशस्त क्रोधना वचाथी छिष्ट कर्मनो बध थया छता सत्यभाषा निमित्ते शुभ कर्म बन्ध केम न थाय ? ए आशुकानो उत्तर ए छे के योगो स्थितिवन्ध अने रसबध करनार कपायने योग्य प्रवृत्तिबध अने प्रवेशबन्ध करे छे, पण तेथी भिन्न कर्मनो बन्ध करता नथी, एम कोइ भाषा व्ययहारथी सत्य होय तो पण छिष्ट कर्मना सामग्रीभूत कपायोनी अन्तर्गत होवाथी स्वतन्त्रपणे शुभकर्मना बन्धनो हेतु घती नथी, माटे क्रोधना आवेशवाळानी सर्व भाषा असत्य ज छे पटलु ज नहि पण क्रोधना आवेशवाळानी सत्य भाषा यथारे बुए छे, कारण के से भाषा जीवोने मिथ्या कदाग्रहने माटे थाय छे छिष्ट आशयवाळानु सत्य भाषण भै धरोवर फहु छे' एम दुर्मापणनु अनुमोदन उत्पन्न करतु महाकर्मबन्धनु कारण थाय छे माटे परमार्थथी असत्य ज छे एम माननिधितादि भाषा जाणथी उपयातनिधित-परना अनुमचिन्तना परिणामवाळो जे असत्य पोले, जेम के चोर न होय तेने चोर कहे से उपयातनिधित भाषा जाणथी ए दसेय प्रकारनी असत्य भाषा सुन्नने अनुसरी प्रशस्त परिणामना योग्यथी सत्य कहेपाय छे अहीं राग, द्वेष अने मोह बडे असत्य भाषा बोले छे ए सत्ये कसु छे के "रागाहा द्वेषाहा मोहाहाऽयाच्यमुच्यते ह्यनुत्तम । यस्य तु नैसे दोषास्तस्यानुत्तकारण किं स्यात्" ? ॥ राग, द्वेष अने मोहथी अघाच्य-नहि कहेवा योग्य असत्य थोलाय छे, परन्तु जेने ए दोषो नथी, तेने असत्य बोलवानु शु कारण छे ? असत्य बोलवानु असाधारण कारण राग द्वेष अने मोह छे, से सिवाय थीशु असाधारण कारण नथी कारण के क्रोधादिनो ते-मात्र अन्तर्भाव थाय छे, पटले असत्यभाषाना व्रण प्रकारज कहेवा जोइए, तो पण तेनो वल प्रकारनो विभाग अत्यंत सक्षिप्त नहि तेम अत्यंत चिस्तत नहि एवी रुचिवाळा जीवो माटे प्राचीन शास्त्रमां निर्देश कर्यो छे

हवे प्रकारान्तरथी चार प्रकारे मृषा भाषा कहे छे-१ सव्भावनो निषेध करवो पटले धर्मी मात्रनो निषेध करवो जेमके आत्मा नथी २ असद्भूत वस्तुनु प्रतिपादन करतु पटले धर्मीनो स्वीकार करी तेमा चिक्क धर्मनु प्रतिपादन करतु जेमके जीव छे, पण अनुपरिमाण छे अथवा व्यापक छे ३ अन्य वस्तुमा अन्य शब्दनु प्रयोग करवो जेमके गायने विद्वे अथ शब्दनु प्रयोग करवो ४ निन्दा-

व्यंजक शब्दों प्रयोग करवो. जेम के 'आ काणो छे, वहेरो छे' इत्यादि.

हवे सत्यमृपा भापानो लक्षणपूर्वक विचार करे छे-जेनो विषय अंशतः सत्य होय अने अंशतः असत्य होय ते सत्यमृपा भापा कहेवाय छे. एम करवामां मृपामेदनो उच्छेद थसो, कारणके सर्व प्रकारनी असत्य भापा अंशतः सत्य होय छे. सर्व ज्ञान धर्मीना अंशे सत्य होय छे, जेमके घट विनाना भूतलमां आ घटवाळुं भूतल छे, तेमां भूतलांशे सत्य छे अने घटांशे असत्य छे तेथी सर्व प्रकारनी असत्य भापा पण सत्यमृपा भापा छे एम न समजवुं. कारणके धर्मी अंशने छोडी स्थूल अम अने प्रमा उत्पन्न करनार भापा सत्यमृपा कहेवाय छे. माटे आ मेदनी अधिकता स्पष्ट रीते छे. तेना उत्पन्नमिथिता इत्यादि उपाधिना मेदथी दस प्रकार छे. जेमके पांच अथवा दसथी अधिक वालको उत्पन्न थया होय त्यारे दस वालको उत्पन्न थया एम कहेवुं ते उत्पन्नमिथिता. अहाँ दस संख्या पांचने वमणा करवाथी थाय छे, माटे पांच संख्याना अंशमां सत्य छे अने पांच संख्याना अंशमां असत्य छे. 'हुं आवती काले सो रूपीया आपीश' एम प्रतिज्ञा करीने पचास रूपिया आपनार नहि आपनारनी पेटे सर्वथा मृपाभापी कहेवातो नथी, तेम सत्यभापी पण कहेवातो नथी, एम प्रस्तुत वस्तुमां तेचा प्रकारना व्यवहारने अनुसरीने तेनी अनुपपत्ति नथी.

हवे लक्षणना कथन पूर्वक असत्यामृपा भापाना मेदो कहे छे-जे सत्य, असत्य अने मिथ ए भापाथी विलक्षण होय अने आराधन अने विराधनना उपयोगवाली न होय ते असत्यामृपा भापा कहेवाय छे. तेना वार मेद छे-१ आमन्त्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ पुच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्याननी, ७ इच्छानुलोमा, ८ अनभिगृहीता, ९ अभियष्टीता, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता, १२ अव्याकृता.

हवे ते मेदोने अनुक्रमे जणवे छे.-जे संबोधन पदो वडे युक्त होय अने जेने सांभळी श्रोता श्रवणने अभिमुल थाय ते आमन्त्रणी, आ असत्यामृपा भापा होवामां हेतु ते सत्यादि त्रण भापाथी विलक्षण छे अने आराधकभावथी रहित छे. १ आ-ज्ञावचन वडे युक्त आज्ञापनी भापा कहेवाय छे. अने ते पूर्वे कटेली खीआज्ञापनी वगेरे सत्यादि भापाथी करवा, अने नहि करवानो नियम नहि होवाथी अने दुष्ट विवक्षापूर्वक नहि होवाथी भिन्न छे. करवानो नियम होय तो पटले आज्ञा करावेल शिष्यादि ते

प्रमाणे फाय करे तो सत्य, ते प्रमाणे कार्य न करे तो मृदा, माटे करवा अने नदि होवाथी सत्य अने असत्यथी मिश्र छे अने दुष्ट विवक्षापूर्वक नदि होवाथी मृदाथी मिश्र छे सत्यासत्यनो निषेध तेनो अर्ही प्रसंग नदि होवाथी फर्षो नथी अर्ही प्रश्न करे छे के आक्षाना विषयमां आक्षा आपनारतु सत्यवादीपणु केम न होय ? कारण के थोतानी प्रवृत्ति न थयी ते बीजा निमित्तादिने आधीन छे एम न कहेतु आक्षा करनार गुर्धादि शिष्यना अभिप्रायने जाण्या सिवाय आक्षा करे अने तेथी शिष्यनी प्रवृत्ति न थाय तो ते परमार्थथी असत्य छे, कारण के आक्षा करवा योग्य शिष्यनी प्रवृत्तिनो निर्णय नदि करवामा तेमनामा भावभाषानो नियामक सव्यग् उपयोगनो निर्बाह थतो नथी इच्छित पदार्थनी याचना करवामा तत्पर बचन ते याचनी भाषा कहेयाय छे जेमेके साधु याचना करे के 'मने भिक्षा आयो' जेम अर्थिनीतादिने विशे आक्षाना यिपयमा याचनी भाषा पण असत्य छे अर्ही प्रश्न करे छे के रगादिना अभाव घडे कोइने का पण नदि आपता तीर्थकरला प्रति 'आरुगयोद्विलाभ समादियसुत्तम विनु' प याचनी भाषा याचनानो विषय नदि होवाथी असत्यामृदा केम कहेयाय एम न कहेतु कारण के ते याचनी भाषा भक्तिपयुक्त छे, तेथी याचनानो विषय नदि होवा छता पण असत्यामृदाक गुण घडे अने निष्पयथी सत्यनी कोटीमां प्रवेश करवा रूप गुण घडे सहित छे माटे निर्वीय छे प सत्यचे फलु छे-"भक्ति घडे कहेली भाषा असत्यामृदाक छे, परंतु रागद्वेषरहित तीर्थकरो समाधि अने बोधि आपता नथी वास्तविक रीते जिनमां दातापणु छे, प सत्यचे फलु छे के-"तेमोने जे आपया योग्य छे ते घटा जिनबरोप आयु छे अने ते वर्तन, ज्ञान अने चारित्रकूप मोक्षमार्गनो उपवेश छे" प्रार्थित यस्तुना उपायनी प्राप्ति छता तेने नदि करवामां परमार्थथी प्रार्थना मृदा छे जे विषयनी सिधासा धर होय ते सवन्धी तेना जाणनारने पूछतु ते प्रच्छनी भाषा कहेयाय छे निरुत्तर करवा माटे मगवती सूत्रमां सोमिले भगवत महावीरने प्रश्न फर्षा हता के 'आप एक छो के वे छो ?' इत्यादि प्रच्छनी भाषा

नथी. परन्तु 'हे भगवन् ! जीवो केटला प्रकारना छे ? इत्यादि प्रच्छनी भाषा छे. विनीत शिष्यादिने विधिवाद-कर्तव्यनो उपदेश करवो ते प्रज्ञापनी, उपलक्षणथी 'हिसादिमां प्रवृत्त थयेल जीव दुःखी थाय छे' इत्यादि निषेधनो उपदेश करवो ते पण प्रज्ञापनी भाषा जाणवी. आज्ञापनीमां आज्ञा प्रमाणे नहि करवामां अत्यंत अनिष्टना भयद्वारा प्रेरणा छे अने प्रज्ञापनी इष्ट साधनताना ज्ञानद्वारा प्रेरणा करे छे पटलो भेद छे, प्रार्थित-याचना करेल वस्तुनो निषेध करवो ते प्रत्याख्यानी भाषा कहेवाय छे. जेमके 'आ वस्तु नहि आणुं' वगैरे. 'हुं पाप नहि करं' इत्यादि दुराचरण निषेधनुं वचन पटले निषेधना विषयमां निषेधनी प्रतिज्ञा ते पण प्रत्याख्यानी भाषा छे. पोतानी इच्छाना विषयभूत अर्थनुं कथन ते इच्छानुलोमा भाषा कहेवाय छे. जेमके कोइ मनुष्य कार्यनो प्रारंभ करतो पूछे के हुं 'आ कार्य करं ?' त्यारे ते कहे के 'करो' मने पण ए इष्ट छे. अहीं आस पुरुषनी इच्छानो विषय होवाथी पोतानी इष्टसानुलोमा भाषा शंकानो रोध थवाथी इष्टसाधनतानो निश्चय थाय छे अने तेथी पोतानी इच्छा विलंब विना तुरत थाय छे माटे ते इच्छानुलोमा भाषा कहेवाय छे. ए प्रमाणे दीक्षानी इच्छावाळो मनुष्य पिता वगैरेनी अनुमति माटे गुरुना प्रति प्रश्न करे अने गुरु उत्तर आपे के 'जेम सुख थाय तेम करो, प्रतिबन्ध न करो' ए पण इच्छानुलोमा भाषा जाणवी. जेमां अनेक कार्योंनो प्रश्न कर्यों तेमां एकनो पण निश्चय न थाय ते अनभिगृहीत भाषा जाणवी. जेमके आ वधा कार्योंमां कयुं कार्य करं ? ए प्रश्नना उत्तरमां 'जे तने ठीक लागे ते कर' ए उत्तरमां कोइ पण कार्यनो निर्णय थतो न होवाथी अनभिगृहीत भाषा कहेवाय छे. आ भाषाणुं फल ए छे के वधा कार्यों तुल्य फल-वाळां होवाथी प्रथम उपस्थित कार्यमां जलदी प्रवृत्ति करवी, पण अधिकनी इच्छा वडे अन्य कार्यनी सामग्रीना विलंब वडे विलंब न करवो ए तात्पर्य छे. अथवा तो यहच्छापूर्वक डित्थादिक वचन कहेनुं ते पण अनभिगृहीता भाषा कहेवाय छे. तेथी प्रतिपक्ष-विरुद्ध भाषा, पटले जेमां अनेक कार्यों संवन्धी प्रश्न कर्यों होय त्यारे एकनो निश्चय करवो ते अभिगृहीता. जेम के 'अत्यारे आ कार्य

वस्तु' अथवा 'आ घट छे' इत्यादि प्रसिद्ध प्रवृत्तिमिच्छावादा पदुं कथन कएलु जेसा अर्थार्थक पर सामग्री श्रोताने सवेद धाय ते संशयकरणी भाग लेमके फोर 'सिन्धुय लय' पम कदे त्वारे सिन्धुयपदुनो एरण अने योडा पगेरे मनेक अर्थमां सकेत छान गयेल होषाधी मनेकार्थ पदना योधसा प्रकरणदिनु प्रान कारण होषाधी ज्या प्रकरणदिनु प्रान न होय त्या यत्नाग अभिप्रायनो सवेद थवाधी 'मारे लरण लयपु के घोने लाययो' पयो मानस सवेद धाय छे ज्यां प्रकरणदिनु प्रान होय छे त्यां सवेद थतो गयी. कारण के भोजनना प्रकरलमां कहु होय त्वारे लरणनो योध धाय छे अने गमनता प्रसंगे कहु होय तो योजनो योध धाय छे अही सदायकरणी भागमा 'अनेकार्थक पर सामग्रीने' कहेयामां आबु छे ते प्रत्यिक छे, तेथी 'संशयपु कारण जे भाग ते संशयकरणी भाग' छे, तेथी 'स्यापु अथवा पुनर छे' प भाग पण सशयकरणी जाणपी प्रकट-सष्ट अर्थवाली व्यापता भाग जाणपी, लेमके 'आ देयदपनो भार छे' इत्यादि अनिगभीर अने मदा अर्थवाली मध्याएत भाग कहेयाय छे अथवा वाळकोनी अत्यक भाग पण मध्याएत जाणपी प प्रमाणे मगयायगु भागाग वार सेव करा

यथा देयो, नारनो अने मनुष्योने सत्यादि धारे प्रचाली भाग होय छे धेयन्दित्रय, तेयन्दित्रय अने चउरिन्द्रियोने असत्यायुग भाग होय छे, कारण के तेभोने सम्यक् प्रान बने परने ऐतत्या पगेरेनो अभिप्राय नहि होषाधी सत्यादि भागानो असमय छे, चिदा अने एधिपरहित पचेन्द्रिय तिर्यचोने असत्यायुग भाग होय छे, चिदा-सस्कार उत्पन्न करनार पठन, लधि जातिरक्षणरूप के तेया प्रचालना व्यापकारिक कुदाहता जागन कनार शयोपशम रूप जाणपी चिदा अने एधिपरहित पचेन्द्रिय तिर्यचो सम्यक् यथायस्थित पदु प्रतियादाना अभिप्रायपी यो-ग नपी, तेम वीजाने ऐतत्यापी बुद्धियो योहता नपी, परलु गुरले पया छतां भने वीजाने न एयनी एच्छावादा छतां प प्रमाणेच योले छे अही गुरले यथेहा तेभोनी भाग क्रोधनि एत असत्य होय पम न समजु, कारण के

तेओनी अव्यक्त भाषा होवाथी तेथी निश्चय थवाने अयोग्य छे. अथवा ते विलक्षण भाषाना पुद्गलो जन्य छे. शिक्षा अने लब्धिसहित शुक्र सारिका वगेरे तिर्यंचो यथासंभव चारे भाषाने बोले छे, कारण के शिक्षा अने लब्धिथी व्यक्त भाषानी उत्पत्ति थाय छे. ए प्रमाणे द्रव्यविषयक भाव भाषा कही.

हवे श्रुतविषयक भावभाषा कहे छे-श्रुतविषयक भावभाषा त्रण प्रकारनी छे-सत्य, असत्य अने असत्यामृग्या. तेमां सम्यक्त्व सहित अने सम्यक् उपयोगवालाने सत्य भाषा होय छे, कारण के तेनो विशुद्ध आशय छे. तेज सम्यग्दृष्टिने उपयोग सिवाय बोलता श्रुत-विषयक असत्य भावभाषा होय छे. अथवा सत्य परिणामरहित मिथ्यादृष्टिने उपयोगसहित के उपयोग सिवाय वधी श्रुतविषयक असत्य भावभाषा होय छे. उपरना अवधि, मनःपर्यंग अने केवल त्रण ज्ञानमां उपयोगवालो श्रुतविषयक जे बोले ते असत्यामृग्या भाषा जाणवी. कारण के बहुधा सूत्रमां तेवा प्रकारनी भाषा छे. द्रव्यश्रुतने आश्रयी केवलज्ञान छतां पण भाव-भाषानो संभव छे. चारित्रने आश्रयी भावभाषा कहे छे-चारित्रनी विशुद्धि करनारी पटले जे बोलता चारित्र वृद्धि पामे ते सत्य भाषा छे अने चारित्रनी अविशुद्धि करनारी पटले जे बोलतां चारित्रनो परिणाम हीन थाय ते असत्य भाषा छे, ए सिवाय जे बोलतां चारित्रनो परिणाम स्थिर थाय ते असंम्लेश करनारी सत्य भाषा अने जे बोलतां चारित्र न रहे ते असत्य भाषा. ए वनने भाषा चारित्रने विशे भावने आश्रयी जाणवी.

ए प्रमाणे दोष अने गुणने जाणने युक्ति अने आगम वडे जेम चारित्र परिणामनी वृद्धिना हेतु गुणो न घटे, नाश न पामे तेवी रीते साधुगोप बोलचुं. धर्ममां तत्पर अने अध्यात्म योगमां स्थिर, हितकारक अने परिमित बोलता महर्षिनी भाषा चारित्रनी विशुद्धि करे छे अने चारित्रनी विशुद्धि वडे मोहनीयकर्मनो क्षय करीने अने केवलज्ञान रूप लक्ष्मी प्राप्त करीने शैलेशी वडे योगनो निरोध करी सर्व संवरयुक्त थवने मोक्षसुखने प्राप्त करे छे.

ધારસમં સરીરપયં !

૧. કતિ ણં મંતે ! સરીરા પણ્ણત્તા ! ગોયમા ! પંચ સરીરા પન્નત્તા, તંજહા—ઓરાલ્લિણ, વેઝલ્લિવ્વપ, આહારણ, તેયપ, કમ્મપ ! નેરહ્યાણં મંતે ! કતિ સરીરયા પણ્ણત્તા ! ગોયમા ! તઓ સરીરયા પન્નત્તા, તંજહા—વેઝલ્લિવ્વપ, તેયપ, કમ્મપ ! પંચં અસુરકુમારાણવિ જાવ યણિયકુમારાણં ! પુઠ્ઠવિકાહ્યાણં મંતે ! કતિ સરીરયા પન્નત્તા ?

ધારસું શરીર પદ.

૧. હે મગવન્ ! કેટલાં શરીરો કહ્યાં છે ? હે ગૌતમ ! પાંચ શરીરો કહ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે—૧ ઔદારિક, ૨ વૈક્રિય, ૩ આહારક, ૪ તૈજસ અને ૫ કાર્મણ. હે મગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલાં શરીરો કહ્યાં છે ? હે ગૌતમ ! ત્રણ શરીરો કહ્યાં છે, તે આ પ્રમાણે—૧ વૈક્રિય, ૨ તૈજસ અને ૩ કાર્મણ. એમ અસુરકુમારોને યાવદ્ સ્વનિવકુમારોને જાણવું. હે મગવન્ ! પૃથિવીકાયિકોને કેટલાં શરીરો છે ? હે

૧. ૫ પ્રમાણે અગિયારમા પદની વ્યાખ્યા કરી, હવે ધારમા પદનો આરંભ કરાવ્યો છે, અને સચન્ધ આ પ્રમાણે છે—અહીં પૂર્વેના પદમા જીવોની સત્યાદિ માયાનો વિભાગ ઘટાડ્યો, અને માયા શરીરને આધીન છે, કારણ કે 'શરીરપ્રમયા માયા' માયા શરીરથી ઉત્પન્ન થાય છે, ૫ હમણાં જ પ્રતિપાદન કર્યું છે. વીજે સ્વહે પપ કમ્મુ છે કે—'ગેણ્ણ કારણ નિસ્સર તદ ધારણ જોપણ' એટલે કાર્યયોગ વડે પ્રદાન કરે છે અને ઇચ્છયોગ વડે વહાર ફાટે છે, માટે શરીરનો વિભાગ ઘટાડવા માટે આ પદનો આરંભ કરવામાં આવ્યો છે, તેમાં આ પ્રથમ સૂત્ર છે—'કર ણ મંતે ! સરીરા પચ્છતા' ! ઇત્યાદિ ઉત્પત્તિ સમયથી માઝી પ્રતિસમય 'શીર્ગન્તે' શબ્દ પામે તે શરીર, હે મગવન્ ! તે શરીરો કેટલા કહ્યા છે ? મગવાન્ ઉત્તર માપે છે—પાચ શરીરો કહ્યા છે તે નામથી જણાયે છે—'ઓરાલ્લિવ્વપ' ઇત્યાદિ

गोयमा ! तओ सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, तेयए, कम्मए । एवं वाउकाइवज्जं जाव चउरिंदियाणं । वाउकाइयाणं भंते ! कति सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, वेउ-
वित्ते, तेयए, कम्मए । एवं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणवि । मणुस्साणं भंते ! कति सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा !
पंच सरीरया पन्नत्ता, तंजहा—ओरालिए, वेउवित्ते, आहारए, तेयए, कम्मए । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं,
जहा नारगाणं ।

गौतम ! त्रण शरीरोः होय छे, ते आ प्रमाणे—औदारिक, तैजस अने कार्मण. ए प्रमाणे वायुकाय सिवाय यायत् चउरिन्द्रियो सुधी
जाणवुं. हे भगवन् ! वायुकायिकोने केटलां शरीरो होय छे ? हे गौतम ! चार शरीरो होय छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिक, २ वै-
क्रिय, ३ तैजस अने ४ कार्मण. ए प्रमाणे पंचेन्द्रिय तिर्यचोने पण जाणवुं. हे भगवन् ! मनुष्योने केटलां शरीरो होय छे ? हे गौ-
तम ! पांच शरीरो होय छे, ते आ प्रमाणे—१ औदारिक, २ वैक्रिय ३ आहारक, ४ तैजस अने ५ कार्मण. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने
वैमानिकोने नारकोनी पेठे जाणवुं.

आ शरीरोनो शब्दार्थ आगळ कहीशुं. तोपण स्थान खाली न रहे ते माटे कंइक कहीय छीय—'उदार' प्रधान, तेनुं प्रधानपणुं तीर्थकर
अने गणधरना शरीरोनी अपेक्षाय समजवुं, कारण के तीर्थकर अने गणधरना शरीरथी अन्य अनुत्तर वेचोनुं शरीर पण अनन्तगुण
हीन छे. अथवा 'उरालं' उदार—विस्तारवाळुं, कारण के अवस्थित स्वभाववाळा औदारिक शरीरनो विस्तार कंइक अधिक हजार
योजन प्रमाण छे, स्वाभाविक वैक्रिय शरीरनुं प्रमाण पटवुं नथी, कारण के उल्करथी पण अवस्थित स्वभाववाळा वैक्रिय शरीरनुं

પ્રમાણ પાંચસો ઘટુપ છે અને તેટલુ પ્રમાણ સાતમી નરકપૃથિવીમાં છે, બીજે નથી. જે ઉત્તરવૈકિય હાથ યોજના પ્રમાણવાલુ છે, પણ તે અવસ્થિત નથી કારણ કે તે-આથા મ્મ્ય હુધી રહેતુ નથી, માટે તેની અપેક્ષાદ અહીં કપલ નથી પ સર્વથે ધૂર્ણિકાર કહે છે-“ઉપલ તામ વિરપરલ વિસાલ તિ જ મગ્નિય હોહ, કહા ? સારેગજોયણસદસ્સમવદ્વિપ્પમાણમોપલિયં, અજનેરહમેષ્ઠ નરિય, વેગલ્લિય જોર-પાસદસ્સં-ધનસ્પવીનામ્” ઇતિ. જે શરીર ઉપલ-વિસ્તારવાલુ વિગાલ-કહેલુ છે, કારણ કે અવસ્થિત પ્રમાણવાલુ ઔદારિક શરીર કારક અધિક હજાર યોગન છે, તેથી અન્ય શરીર પટલુ મોટુ નથી વૈકિય શરીર મોટું હોય છે, પણ તે અવસ્થિત પ્રમાણવાલું નથી અવસ્થિત પ્રમાણવાલુ પાંચસો ઘટુપટુ, વૈકિય શરીર સાતમી નરકપૃથિવીમાં છે અને ઔદારિક, શરીર અવસ્થિત પ્રમાણવાલુ હજાર યોજનાથી કારક અધિક ધનસ્પતિને હોય છે, માટે તે ઓપલ-વિગાલ કહેવાય છે અથવા ઉપલ-યોદા પ્રવેશવાલુ પણ ઘન નહિ, કારણ કે ઔદારિક શરીર મીંઢીની પેઠે યોદા પ્રવેશવાલુ અને વિગાલ છે, અથવા, સિદ્ધાન્તની પરિમાપાયથી ઓપલ-માસ અસ્થિ અને, સ્નાયુ વગેરેથી સંઘાયેલુ, ઘણે સ્વાર્થમાં દક પ્રત્યય થયેલો છે અને પૂરોવરવિમા પાઠ હોવાથી દુદ્ધ કર્ણની નિષ્પત્તિ થાય છે. ઉદાર શબ્દથી ઔદારિક થાય છે અને પ્રાપ્ત હોવાથી ‘ઓપલિય’ રુપ થાય છે કશું છે કે-તેમાં, ઉદાર, ઉપલ, અને ઓપલ શબ્દો જાણવા તેમા પ્રથમ ‘ઔદારિક’ સીર્ષકરના શરીરને આધથી જાણુ વિસ્તારવાલ્લી ધનસ્પતિને આશ્ચથી ‘ઉપલ’ કહેવાય છે કારણ કે સ્વમાવથી પટલુ વિગાલ થીનુ કોર શરીર તથી ઉપલ-યોદા પ્રવેશથી ઉપચિત થયેલુ અને મીંઢીની પેઠે મોટુ, માંસ, અસ્થિ અને જાનુ વહે ઘણાયેલ છે માટે પ સિદ્ધાન્તની પરિમાપાયથી ‘ઓપલ’ કહેવાય છે. વિચિથ અથવા વિચિથ ક્રિયા તે વિક્રિયા, તે, નિમિષે થયેલુ તે-વૈકિય કાનુ છે કે-વિચિથ પ્રકારની કે વિચિથ ક્રિયા, તે નિમિષે જે થયેલુ તે વૈક્રિય, તે નારક અને, વેયોને સ્વમાવથી જ હોય છે અથવા વૈકુર્વિક શબ્દનો આ રીતે સંસ્કાર કરવો ‘વિકુર્વ’ પ સિદ્ધાન્તમસિદ્ધ થાતુ છે, વિકુર્વણ- વિકુર્વ-વિચિથ પ્રકારની ક્રિયા પ તેનો અર્થ છે, તે હેતુથી યનેલુ તે વિકુર્વિક ચૌર પૂર્વચરથી કાર્યની સ્થિતિ માટે યોગશલઃ યદે ‘આદ્રિયતે’ કારણ તે માદ્ધારક ધ તેજનો વિકાર-પરિણામ તે તેજસ અને અને ૫ કર્મથી ઉત્પન્ન થયેલુ તે કર્મજ

૨. કેવલ્યા ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરયા પન્નત્તા ! ડુવિહા પન્નત્તા, તંજહા-બદ્ધિલ્હયા ય સુવિક-
લ્હયા ય । તત્થ ણં જે તે બદ્ધેલ્હગા તે ણં અસંલેજ્ઞા, અસંલેજ્ઞાહિં ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીહિં અવહીરંતિ કાલતો,

૨. હે ભગવન્ ! ઔદારિક શરીરો કેટલા પ્રકારનાં કહ્યાં છે ? હે ગૌતમ ! જે પ્રકારનાં કહ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે-બદ્ધ અને સુવત.
તેમાં જે બદ્ધ-જીવે ગ્રહણ કરેલાં શરીરો છે તે અસંલ્યાતા છે અને તે કાલથી અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીના સમયો વડે અ-

ઔદારિકાદિ શરીરોના આ પ્રકારે ક્રમિક ઉપન્યાસનું કંઈ પ્રયોજન છે કે યથાકથચ્ચિત્ આ ક્રમ પ્રવૃત્ત થયેલો છે ? 'આવા પ્રકારના ક્રમનું પ્રયોજન છે' એમ કહીએ છીએ. શું પ્રયોજન છે ? ઉત્તરોત્તર શરીરના પ્રવેશોનું સૂક્ષ્મપણું અને ઉત્તરોત્તર વર્ગણામાં પ્રવેશોનું અધિકપણું જણાવવા માટે છે, તે આ પ્રમાણે-ઔદારિક કરતાં વૈક્રિય શરીરના પ્રવેશોની સૂક્ષ્મતા છે, વૈક્રિયથી પણ આહારકના આહારકથી પણ તૈજસના અને તૈજસથી પણ કાર્મણના પ્રવેશોની સૂક્ષ્મતા હોય છે, ઘટલે શરીરના પ્રવેશોનો ઉત્તરોત્તર સૂક્ષ્મ પરિણામ થાય છે. ઔદારિકથી વૈક્રિય શરીરની વર્ગણામાં, વૈક્રિયથી આહારકની, આહારક કરતાં તૈજસની અને તૈજસથી કાર્મણની વર્ગણામાં પ્રવેશોની અધિકતા હોય છે. એ પાંચ શરીરમાં નૈરયિકાદિને વિષે કેટલા શરીરો સંભવે છે તેનો વિચાર કરે છે—'નૈરલ્યાણં મંતે ! કેવલ્યા સરીરા પણ્ણત્તા'—'હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલાં શરીરો કહ્યાં છે ?—'ઇત્યાદિ પાઠસિદ્ધ છે.

૨. શરીરો જીવોને જે પ્રકારના હોય છે-બદ્ધ અને મુક્ત. તેમાં જે વિચાર સમયે જીવે ગ્રહણ કરેલાં છે તે વદ્ધ અને જે પૂર્વે ભવમાં છોડી દીધેલાં છે તે મુક્ત શરીરો. હવે તે વદ્ધ શરીર અને મુક્ત શરીરોના પરિમણનું અભ્યારે દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર અને કાલ વડે નિરૂપણ કાઠું જોઈએ. તેમાં અભવ્યાદિ દ્રવ્ય વડે, શ્રેણિ-પ્રતરાદિ ક્ષેત્રવડે, અને આવલિકાદિરૂપ કાલવડે પ્રથમ ઔદારિક શરીરને આશ્રયી નિરૂપણ કરે છે-કેવલ્યા ણં મંતે ! ઓરાલિયસરીરા પણ્ણત્તા'—'હે ભગવન્ ! કેટલાં ઔદારિક શરીરો કહ્યાં છે-ઇત્યાદિ. અહીં

लेखतो असंखेजा लोका । तत्थ णं जे ते सुककेल्लया ते णं अणंता, अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवही-
रंति कालतो, लेखतो अणंता लोका, अभवसिद्धिपहितो अणंतगुणा सिद्धाणंतभागे । केवनिया णं भंते !
वेवन्धियसरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेल्लया य सुयकेल्लगा य। तत्थ णं जे ते पद्धेल्लगा
ते णं असरेजा, असंखेजाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, लेखतो असंखेजातो सेहीओ पपरस्स
असंखेज्जतिभागो । तत्थ णं जे ते सुककेल्लगा ते णं अणता, अणंताहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति का-

पहराय छे क्षेत्रयी असख्याता लोक प्रमाण छे. तेमां जे मुक्त (जीवे छोडेल) शरीरो छे ते अनन्ता छे अने ते काळयी अनन्त
उत्सर्पिणी-अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे. क्षेत्रयी अनन्त लोक प्रमाण छे अने ते अभव्योयी अनन्तगुणा अने सिद्धीने अ-
नन्तमा भागे छे. हे भगवन् ! केटलां वैक्रिय शरीरो छे ? हे गौतम ! ते वे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-बद्ध अने मुक्त. तेमां जे बद्ध
शरीरो छे ते असख्याता छे अने ते काळयी असख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे. क्षेत्रयी प्रवरना अ-
सख्यातमा मायसां रहेली असख्याती श्रेणिओना प्रदेश प्रमाण छे. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे अने काळयी अनन्त

मूळमां 'धक्खिहया'-बद्ध शरीरो अने 'मुक्खिहया'-मुक्ता शरीरो-जीवोप त्याग करेलां शरीरो, अहीं प्राकृत मायाने लीधे 'इत्त' प्रत्यय
अने स्वार्थमां 'क' प्रत्यय घयेलो छे तेमा बद्ध शरीरो असख्याता छे, ते असख्यातातु निरूपण प्रथम काळने आश्रयी करे छे-अस-
खेजाहिं' इत्यादि प्रतिसमय एक एक शरीराने अपहार करया घडे असख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी घडे यथां शरीरो अपहराय
वात्पर्ये प छे के-असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणीना जेटला समयो धाय तेटलां बद्ध-जीवोप ग्रहण करेला औदारिक शरीरो छे आ

लतो, जहा ओरालियस्स मुक्केल्लया तहेव वेउव्वियस्सवि भाणियव्वा । केवतिया णं भंते ! आहारगसरीरया पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-चंद्धेल्लया य मुक्केल्लया य । तत्थ णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लया ते णं अणंता, जहा ओरालियस्स मुक्किल्लया तहेव भाणितव्वा । केवइया णं भंते ! तेयगसरीरया पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पणत्ता, तंजहा-चंद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थ णं जे ते वद्धेल्लगा ते णं अणंता, अणंताहिं

उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयो वडे अपहराय छे-इत्यादि जेम औदारिक संबन्धे मुक्त शरीरो कक्षां छे तेम चैक्रियना पण कहेवां. हे भगवन् ! आहारक शरीरो केटला प्रकारना छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना छे-चद्ध अने मुक्त. तेमां जे चद्ध शरीरो छे ते कदाच होय के कदाच न होय. जो होय तो जघन्य एक, वे के व्रण होय अने उत्कृष्ट सहस्रपृथक्त्व होय. तेमां जे मुक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे-इत्यादि जेम औदारिकना मुक्त शरीरो कक्षां छे तेम कहेवां. हे भगवन् ! केटला प्रकारना तैजस सरीरो कक्षां छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना कक्षां छे, ते आ प्रमाणे-चद्ध अने मुक्त. तेमां जे चद्ध शरीरो छे ते अनन्ता छे अने काळथी अनन्त उत्सर्पिणी

काळथी परिमाण कक्षुं हवे क्षत्रने आथयी परिमाण कहे छे-‘खेत्तओ अस्संवेजा लोगा’-क्षत्रथी तेओनी संन्या असंन्याता लोकप्रमाण छे. तात्पर्यं ए छे के-त्रयां औदारिक शरीरो पोतपोतानी अवगाहना वडे आकाशप्रदेशोमां जुदां जुदां अनुक्को स्थापीए तो ए प्रमाणे स्थापेलां ते शरीरे वडे असंन्याता लोको व्याप्त थाय. अहीं एक्क एक एक आकाशप्रदेशने विधे पण एक एक औदारिक शरीर स्थापवा वडे असंन्याता लोको व्याप्त थाय छे, परंतु पूर्वाचार्यो पोतानी अवगाहनानी स्थापना वडे प्ररूपणा करे छे तेथी अयसिद्धान्तनो दोए

ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીઠિં અયહીરંતિ કાલતો, હેસઓ અણંતા લોગા, દબ્બઓ સિદ્ધેઠિંતો અણંતગુણા સબ્બજી-
વાણંતમાગુણા । તત્થ ણ જે તે સુકકેહ્લુગા તે ણં અણંતા, અણંતાઠિં ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીઠિં અયહીરંતિ કાલતો,
હેસત્તો અણંતા લોગા, દબ્બઓ સબ્બજીવેઠિંતો અણંતગુણા જીવચગ્ગસ્સાણંતમાગો । एवं कम्मगसरीराणिवि
भाणितब्बाणि ।

અને અવસર્પિણીના સમયો વહે અપહરાય છે. ક્ષેત્રથી અનન્ત લોક પ્રમાણ છે. દ્રવ્યથી સિદ્ધો કરતાં અનન્તગુણા અને અનન્તમા માગ
વહે ન્યૂન સર્વ જીવોના જેટલાં છે, તેમાં જે શુક્ત શરીરો છે તે અનન્તા છે અને કાલથી અનન્ત વસર્પિણી અને અવસર્પિણીના સમયો
વહે અપહરાય છે ક્ષેત્રથી અનન્ત લોક પ્રમાણ છે. દ્રવ્યથી સર્વ જીવો કરતાં અનન્તગુણા અને સર્વ જીવોના વર્ગના અનન્તમા માગ પ્રમાણ
છે એ પ્રમાણે કાર્મણ શરીરો પણ કહેવાં.

ન પ્રાપ્ત થાય માટે અમે પણ તે જ પ્રમાણે પ્રરૂપણા કરીય છીએ એ સંવન્ધે ઘૂર્ણિકાર પણ કહે છે-જો કે એક એક આકાશપ્રવેશમાં
એક એક શરીર સ્થાપીએ તોપણ અસંખ્યાતા લોકો થાય, પરંતુ અપસિદ્ધાન્ત શોચનો ત્યાગ કરવા માટે યોગ્યતાની અચળતાના વધે
સ્થાપન કરાય છે ' અહીં શદ્ધા કરે છે- 'અનન્તા જીવો છે, તો અસંખ્યાતા ઔદારિક શરીરો કેમ હોય ? ઉચ્ચર-અહીં ઘે પ્રકારના જીવો
છે-પ્રત્યેક શરીરચાહ્યા અને અનન્તકાર્યિકો તેમા જેઓ પ્રત્યેકશરીરી છે તેમોમાં એક એક જીવને એક એક ઔદારિક શરીર હોય છે,
જો એમ ન હોય તો પ્રત્યેકશરીરી ન કહેવાય. જે અનન્તકાર્યિક જીવો છે તેઓમા અન્ત અનન્ત જીવોને એક એક ઔદારિક શરીર
હોય છે, માટે યથી સત્યા વધે પણ અસંખ્યાતા ઔદારિક શરીરો હોય છે જીવોએ શુક્ત-સ્વાગ કરેલા ઔદારિક શરીરો અનન્ત છે.
તે અનન્તપણાનુ કાલ્લ, ક્ષેત્ર અને દ્રવ્ય વધે નિકરૂપણ કરે છે- 'અણંતાઠિં' ઇત્યાદિ કાલ્લથી પરિમાણ-પ્રતિસમય એક એક શરીરનો અપહાર

करीण तो अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे सर्वथा अपहरण्य है. तत्पर्यं ए छे के अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समथो धाय तेटला मुक्त-त्याग करेलां औदात्तिक शरीरो छे. श्वेत्रथी परिमाण अनन्त ल्यक छे. प्रल्लल्लोकरु प्रमाण आकाशगंडोमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटलां छे. द्रव्यथी परिमाण-अभ्यथी प्रल्लगुणा छे. जो पम छे तो ते शरीरो त्विरोली राशि जेटलां थाय, ते माटे सूत्रकार कहे छे-स्त्रिनोना अनन्तमा भाग जेटला छे. (प्र०)—अतीं अभ्य अने त्विरोना यन्ने राशि वच्चे पतित सत्यगृष्टि जीवो कणा छे, तो त्याग करेला औदात्तिक शरीरो तेना जेटलां छे? (उ०)—जो तेटलां होत तो सूत्रकार तेमज निदेश करत, कारण के भगवन्त कार्य श्यामे शिष्यने सुगण्यक बोध धाय तेवा प्रकालनी सूत्रचना करवानी प्रतिना करी छे, तो तेवा प्रका-रनो निवेश नदि करवथी उणाय छे के पतित सत्यगृष्टिनी राशि जेटलां न होय तो पतित सत्यगृष्टिना राशिथी न्यून होय के अधिक होय? तेनो उत्तर ए छे के कृत्तव ते राशिथी न्यून होय. कृत्तव अधिक के कृत्तव तुल्य होय. कारण के तेनुं अनियत प्रमाण होय छे, परन्तु हमेशां तेटलुं प्रमाण न होय. ए संयन्ने चूर्णिकार कहे छे—'तो शुं पडेल्य सत्यगृष्टियोना राशिप्रमाण प्रल्ल होय? कारण के तेओ यन्ने राशिनी वच्चे कहेला छे, अदि उत्तर कहे छे—जो तेना जेटला होत तो तेनोज निवेश कया होत, माटे तेना जेटला नथो. तो शुं तेनी नीचे होय के उपर होय? उत्तर—कृत्तवित् नीचे होय, कृत्तवित् उपर होय, के कृत्तवित् तुल्य होय, पण हमेशां तेना जेटला न होय. अतीं अन्य शंता करे छे—'मुक्त शरीरो उपर कहेल अनन्तल्लंयाना परिमा-णवाळां केम गटे? कारण के जो औदात्तिक शरीरो ज्यां सुधी प्रगलित होय त्यां सुधीं ज प्रकण करीण तो तेओली प्रल्ल काल सुधी त्विन नदि होवथी अनन्तणुं नदि पटी गके? जो प्रल्ल काल सुधी गो तो तो प्रल्ल काले तेनी गणना कणां प्रल्लना थाय, पण प्रल्ल काल सुधी तेओनी त्विन होली नथी. कारण के पुराणोनां उपरार्थी पण प्रल्लंयाना काल सुधी त्विति कहेली छे. जे पुरलो जीवे औदात्तिक शरीरणे प्राण करनि प्रतीत काले छोडवां छे, तेओनुं प्राण धाय तो परा ओयोमां प्रत्येक जीवे कथा पुरलो औदात्तिकरणे प्रकण करनि मूरयां छे, तेथी मरि पुराणोनुं प्रकण धाय अने पम होय तो जे कणुं छे के 'अभ्यथी

प्रधान्युप मने गिजोला धन्यताया प्राण प्रदान है' ने विन्द डरे है काएण के मने जीयोपी भान्नात्सयुषा पुट्टणयोगे प्रहणने
 ज्ञाने प्राण धार है उत्तर—धही केवल मर्गित्त मुक्त भौतिक शरीरों में प्रहण नहीं, तेमज भौतिक शरीरएणे प्रहण करीने
 मूठेण मने पुट्टमोनु एण प्रहण नहीं, कारण के तेपी उत्तर कहेना शीयनी प्राप्ति धार है. परन्तु ने औषतिक शरीर जीये प्रहण
 करीने मूठेण ने विधीके मर्गने प्राण धर्मा तेना भान्न भेद धार है, अने ते भान्न भेदो धना धना ज्यां मुधी ने पुट्टने औषतिक-
 धर्मिणायनो त्याग न करे त्यां मुधी ने प्रत्येक भेदने 'भौतिक शरीर' कहेयाय है, जे पुट्टलो भौतिक धर्मिणायनो त्याग करे है
 तेनी औषतिक शरीर मर्गके प्रहण नहीं करीने एण धन्य शरीरों धार है ए प्रमाणे क्या शरीरों मर्गने
 ज्ञान्यु ए प्रमाणे एक एक शरीरना भान्न भेद धना होयापी एक शरीरना एण गणा भान्न शरीरों धार है. मने तेमो धर्मिणायना काळ
 मुधी रहे है अने ते धर्मिणायना काळे जीये मूठेय्यं थीना धर्मिणायना शरीरों होय है अने ते प्रत्येकना धन्य भेदो धार है, तेमोयो
 तेदना काळे जेमो भौतिक शरीर धर्मिणायनो त्याग करे तेने छोडी देया मने धर्मिणाय गणा तेपी ए प्रमाणे मुक्त भौतिक
 धर्मिणायने उत्तर कहेनी धन्य मर्गना यही उके है आ मारी पोतानी धर्मिणायना नहीं, कारण के ए संवसे धर्मिणायन करे है—
 "धही केवल मर्गज भौतिक शरीरों प्रहण नहीं, तेम भौतिकएणे प्रहण करी मूठेय्यं मने पुट्टमोनु एण प्रहण नहीं, परन्तु ज भौतिक
 शरीर जीये मूठेय्यं है, तेना धन्य मर्ग धार अने ज्यां मुधी ने पुट्टने औषतिक धर्मिणायनो त्याग करीने प्राण न करे
 अने त्यां मुधी धन्य धर्मिणायन वदे धर्मिणाय न धार त्यां मुधी ने प्रत्येक 'भौतिक शरीर' कहेयाय है. ए प्रमाणे एक एक भौत
 रिक धर्मिणाय धन्य भेद धर्मिणाय धन्य भौतिक शरीरों धार है" एत्यादि

धही दास करे है—'शरीर प्रहणना एक एक भागनों भौतिक शरीरएणे केम धर्मिणाय धार है उत्तर—प्रहणना धर्मिणाय धार
 है जेम के मारी प्रमाण एण होय, दोण प्रमाण होय के भाउक प्रमाण होय ने वसु एण न कहेयाय, ज्यां मुधी एक भागनों
 होय त्यां मुधी मर्गन कहेयाय है, तेम धही एण मर्गज होय होय एण भौतिक शरीर कहेयाय, तेमो धर्मिणाय होय होय एण, अने तेमो

पण एक भाग होय यावत् अनन्तमो भाग होय तो पण ते शरीर ज कहेवाय छे. अहीं तात्पर्य ए छे के जेम लवणना परिणाम वडे परिणत थोडा के घणा पुद्रलोनो समुदाय लवण कहेवाय छे, तेम औदारिक शरीरयोग्य पुद्रलोनो समुदाय पण औदारिकपणे परिणत थयेलो थोडो के घणो होय तो तेनो औदारिक शरीरपणे व्यवहार थइ शकै छे. अथवा समुदायना एक भागमां पण समुदायवाचक शब्दनो व्यवहार थाय छे. जेम के देवदत्तनी आंगळीना अग्रभागमां स्पर्श कर्यो होय तो 'मैं देवनो स्पर्श' एम कहेवाय छे, तेथी उपचारथी तेने औदारिक शरीर कहेवामां कांइ पण दोय नथी.

(प्र०) जो एम छे तो ते अनन्त लोकाकाशना प्रदेश प्रमाण औदारिक शरीरो एक लोकमां केम रही शकै ? उत्तर-प्रदीपना प्रकाशनी पेठे रही शकै छे. ते आ प्रमाणे—जेम के एक पण दीवानो प्रकाश आबा घटने प्रकाशित करे छे, अने वीजा अनेक दीवाओनो प्रकाश होय तोपण तेमां ज समाय छे, कारण के तेओनो परस्पर विरोध नथी, तेम औदारिक शरीर संबन्धे जाणवुं. एम वधां मुक्त शरीरो संबन्धे पण आ युक्ति समजवी.

(प्र०)—द्रव्य अने क्षेत्र छोडीने प्रथम कालने आथयी प्ररूपणा केम करी ? (उ०)—अन्य कालमां रहेता होवाथी पुद्रलोनो विशे शरीरनो उपचार थाय छे, अन्वथा थतो नथी, तेथी काल मोटो छे माटे प्रथम कालने आथयी प्ररूपणा करी.

एम औदारिक शरीरो कथां, हवे वैक्रिय शरीर संबन्धे सूत्र कहे छे—'केवइया णं भंते ! इत्यादि. वद्ध-ग्रहण करेलां वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे, तेमां कालने आथयी परिमाण वतावे छे-प्रतिसमये एक एक शरीरनो अपहार करीप तो असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी वडे वधां शरीरो अपहराय. तात्पर्य ए छे के असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जेटला समयो थाय छे तेटला वद्ध वैक्रिय शरीरो छे. क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणीओ छे अने ते श्रेणिओनुं परिमाण प्रतरनो असंख्यातमो भाग छे. तात्पर्य ए छे के प्रतरना असंख्यातमा भागमां जेटली श्रेणिओ छे अने ते श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो छे तेटलां वद्ध वैक्रिय शरीरो छे.

(प्र०)—हवे श्रेणि ए शुं छे ? (उ०)—घनीकृत-घनरूपे कल्पेला अने चोतरफ सात रज्जुप्रमाण लोकनी सात रज्जुप्रमाण लांबी

गुणवर्गीया त्रेयी एक धाराउत्प्रेरणी गति व धेनि कहेयाय छे (प्र०)—लोकनो घन केयी नीते करयो भने ते गान रज्जुप्रमाण
 ती रीते घाय ! (३०)—सही लोक उचें भने भयो गौर रज्जुप्रमाण छे. नीचे विलारवां करक मूल गान रज्जु प्रमाण छे. एक
 रज्जुप्रमाण मध्य भागमां छे, माल्लोकना प्रेरणा वज्जु मध्य भागमां गाय रज्जु भने लोकान्ते एक रज्जुप्रमाण छे मध्यमूलज
 गज्जुनी गुरे वेरिक्काना भल्लपी गच्चिम वेरिक्काना भल्ल गुधी रज्जु। परिमाण जाणु भाषा प्रमाणपाळा धेयाग स्थान स्थित-
 पदोळा एग करी भने केहे वे हाय मूलीने उमा रहेला पुकली आटतिपाळा भा लोकना प्रस नाडीगा वरिण भागमां रहेलो करक
 मूल वच रज्जुना विलारपाळो भने करक अधिक गान रज्जुनी उगाएपाळो भयोलेकनो गंउ करननाथी लले ते वच नाडीगा उत्तर
 भागमां उत्तर भने नीचेनो भाग उच्यो करी जोडयो. पदले उत्तरो भाग नीचे करी भने नीचेनो भाग उत्तर करी मूल्यो एयार पछी
 उचें सोरमां वच नाडीगा वरिण भागमां कोणीगा आकारे रहेला जे वे गयो छे, ते मय्येकनी उचार करक मूल्यो नाडा वच रज्जु
 प्रमाण छे, भने करननाथी लर उलटा करी वच नाडीगा उत्तरणा भागमां जोडया एम करननाथी नीचेनो लोकनो अर्थ भाग करक
 लल वार रज्जुना विलारपाळो भने करक अधिक सान रज्जुनी उचारपाळो घयो भने उपरलो अर्थ भाग वच रज्जुना विलारपाळो
 भन उपरमां करक मूल्यो सात रज्जु प्रमाण घयो पछी उपरलो अर्थ भाग करननाथी लले नीचेगा अर्थ भागनी उत्तर विद्यामां
 जोडयो. एम करननाथी करक अधिक सान रज्जु उचो भने करक मूल्यो सात रज्जुना विलारपाळो गन थयो, एयार पछी सात रज्जुना
 उत्तर जे अधिक भाग छे ते लले उचें-अधो मय्यो करी उत्तर भागनी माधे जोडयो तेथी विलारमां गाल रज्जु परिपूर्ण घाय छे
 ए प्रमाणे करननाथी लोकनो घन कएय छे भने घन कएय एयारे सात रज्जुप्रमाण घाय छे कोर शकले वा थयाथी गाल रज्जु
 प्रमाण पूर न घाय एवां बुद्धिथी गाल रज्जुनी पूर्ण करी लेयी आ रीत पाटीमां लगीने वगापयी विचान्तमां कयार वच थनि के
 जगज्जु प्रहण होय एवां सर्वत्र भा प्रमाणे एनकये करेला सात रज्जुप्रमाण लोकज्जु जाणुं वैमिय गुण शरीरो भौयारिणी
 छे जाणयां

આહારક શરીર સંબંધે સૂત્ર કહે છે—'કેવચિદ્ યા જં મંતે ! આહારગતસરીરગા'—હે ભગવન્ ! આહારક શરીરો કેટલા પ્રકારનાં કહ્યાં છે ?—ઈત્યાદિ. 'વદ્ધાનિ સિય અલ્પિ સિય નલ્પિ'—વદ્ધ શરીરો કદાચ હોય અને કદાચ ન હોય. અહીં 'અલ્પિ'—અસ્તિ ય અવ્યય વહુ-વચનમાં છે, તેથી કદાચિત્ સન્તિ, કદાચિત્ ન સન્તીત્યર્થઃ' તેથી આહારક શરીરો કદાચ હોય અને કદાચ હોતા નથી, કારણ કે આહારક શરીરનું જઘન્યથી એક સમયનું અને ઉત્કર્ષથી છ માસનું અન્તર હોય છે. કલું છે કે—'આહારક શરીરો લોકમાં કદાચિત્ વધારેમાં વધારે છ માસ પુઠાં હ'નાં નથી અને જઘન્ય એક સમય સુધી હોતાં નથી. જ્યારે હોય છે ત્યારે પણ જઘન્યથી એક, ત્રે અને ઉત્કર્ષથી સદ્સપ્તથમ્ત્વ-ત્રે હજારથી નવ હજાર સુધી હોય છે. અને મુક્ક શરીરો ઔદારિકની પેઠે જાણવાં.

તૈજસ શરીર સંબંધે સૂત્ર કહે છે—'કેવચયણં મંતે ! તેયગસરીરયા'—હે ભગવન્ ! તૈજસ શરીરો કેટલા પ્રકારનાં છે' ઇત્યાદિ. તેમાં વદ્ધ-ગ્રહણ કરેલાં તૈજસ શરીરો અનન્ત છે. તે અનન્તપણાનું કાઠ, ક્ષેત્ર અને દ્રવ્ય વડે નિરૂપણ કરે છે—'અણંતાહિ' ઇત્યાદિ. તેનું કાઠથી પરિમાણ-અનન્ત ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીના સમય જેટલાં વદ્ધ તૈજસ શરીરો છે, ક્ષેત્રથી અનન્ત લોક પ્રમાણ આકાશનાં ઘંડના પ્રવેશ જેટલા છે, દ્રવ્યથી પરિમાણ-શિદ્ધો કરતાં અનન્તગુણા છે. તૈજસ શરીર પ્રત્યેક સંસારી જીવને હોય છે. સંસારી જીવો શિદ્ધોથી અનન્તગુણા છે, તેથી તૈજસ શરીરો પણ શિદ્ધોથી અનન્તગુણા થાય છે, અને સર્વે જીવો કરતાં તેના અનન્તમા ભાગે ન્યૂન છે. અહીં તાત્પર્ય એ છે કે શિદ્ધોને તૈજસ શરીર હોતું નથી, કારણ કે તેઓ સર્વે શરીર રહિત છે, અને શિદ્ધો સર્વે જીવોને અનન્તમે ભાગે છે તેથી શિદ્ધના જીવો વડે ન્યૂન પડેલે અનન્તમા ભાગે ન્યૂન સર્વે જીવોના જેટલા વદ્ધ તૈજસ શરીરો છે. મુક્ક તૈજસ શરીરો અનન્ત છે. તે અનન્તપણું કાઠ, ક્ષેત્ર અને દ્રવ્યવડે જણાવે છે—'અણંતાહિ' ઇત્યાદિ. કાઠ અને ક્ષેત્રના મૂલ્યો પૂર્વેની પેઠે જાણવા. અને દ્રવ્યથી પરિમાણ સર્વે જીવો કરતાં અનન્તગુણા છે. (પૃ૦)—શાથી અનન્તગુણા છે ? (૩૦)—એક એક સંસારી જીવને એક એક તૈજસ શરીર હોય છે, અને તે જીવોપ મૂકેલાં શરીરો પૂર્વે કહેલી યુક્તિથી અનન્ત મેવઘાઠ્યાં થાય છે અને તેઓ અસંલ્યાતા કાઠ મુધી રહે છે, તેટલા કાઠમાં જીવોપ મૂકેલાં વરેક જીવ વીઠ અન્ય અસંસ્ય તૈજસ શરીરો પ્રાપ્ત થાય છે અને તે પ્રલ્યેકના પૂર્વોક્ક યુક્તિથી અનન્ત મેવો

३. नेरइयाणं भंते ! केवतिपा ओरालियसरीरा पन्नत्ता, तंजहा पन्नत्ता, तंजहा-पद्वेह्णगा य मुयके-
ल्लगा य । तत्थ णं जे ते यद्वेह्णगा ते णं जत्थि । तत्थ णं जे ते मुयकेह्णगा ते णं अणंता जहा ओरालियमुयके-

३. हे मगवन् ! नैरयिकोने केटलां औदारिक शरीरो कक्षां छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना औदारिक शरीरो कक्षां छे, ते आ-
प्रमाणे-यद्द अने युक्त. तंमां नैरयिकोने यद्द औदारिक शरीरो होलां नथी, अने युक्त औदारिक शरीरो अनन्ता छे-इत्यादि जेम
थाय छे, माटे मुक्त-त्याग करेलां शरीरो सर्वे जीवो फरलां अनन्तगुणा छे ते तु जीवोना धर्मप्रमाण छे ? य प्रश्नना उत्तरां फहे
छे-जीवयगन्स भणतमाणे--जीवोना धर्मना अनन्तमे भागे छे (प्र०)--जीवना धर्म जेटला केव नथी ? (उ०)--जो एक एक जीवना
शरीरो सर्वे जीवराशि प्रमाण होय के तेथी फरक अधिक होय के जेथी मित्रता भनन्तमा भागनी पूर्ति थाय, तो शरीरो जीवयर्मप्रमाण
थाय, ते राशिने तेदली राशि घडे गुणतां धर्म थाय छे जेमके चाले कारे गुणता सोल धर्म थाय छे परंतु एक एक जीवना शरीरो
सर्वे जीव प्रमाण के तेथी फरक अधिक नथी, एण धणा धोडां छे अने ते एण असंख्याता फाळ सुधी रहे छे, अने तेदला फाळमां
धीजां जे अन्य शरीरो होय छे ते एण थोडा होय छे, कारण के फाळ थोडो छे, माटे जीवयर्मप्रमाण यता नथी, परंतु जीवयर्मना
अनन्तमा भागे होय छे अनन्तमा भागना प्रमाणतु पूर्वाचार्योप यथायेल्लु भा दृष्टत छे-सर्वे जीवो वास्तविक रीते अनन्त छे, एण
अन कल्पनाथी दम दज्जर गणथा ते दस हजारो धर्म दस प्रौढ थाय छे मुक्त वैजम शरीरो अस्तकल्पनाथी दस हांठ प्रमाण छे,
तेथी सर्वे जीवो फरता सो गुणा पडले सर्वे जीवोथी अनन्तगुणा छे अने ते जीवयर्मना सोमा भागे छे तेथी जीवयर्मना अनन्तमा
भागप्रमाण थाय छे एम पद भो मुक्त कामंय शरीरोजो विचार करवो. कारण के तेनी संख्या वैजसना जेटली छे एम सामान्य
पाचे शरीरो कक्षां

३. नेरइयाण भंते ! इत्यादि नैरयिकोने पद औदारिक शरीरो नथी, कारण के तेभोने मयनिमिच्छक औदारिक शरीरो अस्मय

લગા તહા આણિયઢ્વા । નેરઙ્ગ્યાણં ઢંતે ! કેવઙ્ગ્યા વેડઢ્વિયસરીરા પન્નત્તા ? ગોયમા ! દુવિહા પન્નત્તા, તંજહા-
 વઢ્હેલ્લગા ય સુવકેલ્લગા ય । તત્થ ણં જે તે વઢ્હેલ્લગા તે ણં અસંલેજ્ઞા, અસંલેજ્ઞાદિં ઉસસપ્પિણિઓસપ્પિણિદિં
 અવહીરંતિ કાલત્તો, લેત્તત્તો અસંચિજ્ઞાઓ સેઢ્ઢીઓ પયરસસ અસંલેજ્ઞાદ્ધમાગો, તાસિ ણં સેઢ્ઢીણં ચિવઙ્ગં ઢ્સૂઢ્ઢે અં-
 ગુલપઢ્ઢમવગમૂલં ચિત્તીયવગમૂલપઢ્ઢુપ્પણં, અહ્વ ણં અંગુલચિત્તીયવગમૂલઘણપ્પમાણમેત્તાઓ સેઢ્ઢીતો । તત્થ

સુક્ત ઔદારિક શરીરો કહ્યાં તેમ કહેવાં. હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલાં વૈક્રિય શરીરો કહ્યાં છે ? હે ગૌતમ ! વે પ્રકારનાં વૈક્રિ-
 ય શરીરો કહ્યાં છે, તે આ પ્રમાણે-વઢ્ધ અને સુક્ત. તેમાં જે વઢ્ધ વૈક્રિય શરીરો છે તે અસંલ્યાતા છે અને ક્રાઢ્ઢની અપેક્ષા અસંલ્યા-
 તી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી વઢ્ઢે અપહરાય છે. ક્ષેત્રથી પ્રતરના અસંલ્યાતમા ઢ્ગ પ્રમાણ અસંલ્યાતી શ્રેણિઓ જેટલા છે, તે શ્રે-
 ણિઓની વિષ્કમ્ભસૂચિ અંગુલ પ્રમાણ આકાશ પ્રદેશોના પ્રથમ વર્ગમૂલને વીજા વર્ગમૂલ વઢ્ઢે ગુણતાં જેટલા આકાશ પ્રદેશો આવે
 છે. સુક્ત શરીરો સામાન્ય સુક્ત ઔદારિક શરીરોની પેઢે જાણવા. વઢ્ધ વૈક્રિયશરીરો નારકોના જેટલા છે, અને તે અસંલ્યાતા
 છે. તે અસંલ્યાતાની ક્રાઢ્ઢ અને ક્ષેત્ર વઢ્ઢે પ્રસ્તુપણા કરે છે-‘અસંલેજ્ઞાદિ’ રલ્યાદિ. ક્રાઢ્ઢથી પરિમાણ-પ્રતિસમય પદ્ધ પદ્ધ શરીરોનો
 અપહાર કરનાં અસંલ્યાતી ઉત્તર્પિણી અને અવસર્પિણી વઢ્ઢે યન્ના શરીરો અપહરાય છે. તાત્પર્ય ણં છે કે અસંલ્યાતી ઉત્તર્પિણી અને
 અવસર્પિણીના જેટલા સમયો થાય તેટલા શરીરો છે. ક્ષેત્રથી અસંલ્યાતી શ્રેણિઓ છે પટલે અસંલ્યાતી શ્રેણિઓમાં જેટલા આકાશપ્ર-
 દેશો હોય તેટલા છે. ‘સંપૂર્ણ પ્રતરમાં ણ ઢ્ગ અસંલ્યાતી શ્રેણિઓ હોય છે, અને અર્ધે ઢ્ગ ભાગ કે વીજા ઢ્ગ યગેરેમાં ણ અસંલ્યાતી
 શ્રેણિઓ હોય છે, તો તે કેટલી શ્રેણિઓ હોય’ ણ આશંકામાં વિશેષ અર્થનો નિર્ણય કરવા ઢ્ઢટે કહે છે-‘પ્રતરલ્યાસંલેયમાગઃ’ પ્રતરજ્ઞા
 અસંલ્યાતમા ઢ્ગમાં જેટલી શ્રેણિઓ હોય તેટલી લેવી. યોજું વિશેષ પરિમાણ આ પ્રમાણે છે-‘તાસિ ણં સેઢ્ઢીણં ચિવઙ્ગમ સૂઢ્ઢે’

णं जे ते सुककेल्लगा ते णं जहा ओरालियस्स सुककेलगा तथा भाणियव्वा । नेरइयाणं भंते ! केवइआ आहारग-
सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! बुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेल्लगा य सुककेल्लगा य, एवं जहा ओरालिप पद्धेल्लगा सुकके-

तेटला प्रदेसोनी जाणवी. अथवा अंगुलप्रमाण आकाश प्रदेसोना बीजा वर्गमूलना घनप्रमाण श्रेणिओ जाणवी. तेमां जे सुक
शरीरो छे ते जेम औदारिकना सुक्त शरीरो कसा तेम कहेवां. हे भगवन् ! नारकोने केटला आहारक शरीरो होय छे ? हे गौतम ! वे

इत्यादि ते श्रेणिगेतो विष्कम्भसुचि-विस्तारने आथयी सूची-एक प्रदेसानी श्रेणि अगुलना प्रथम वर्गमूलवदे गुणेतला बीजा वर्गमूलप्रमाण जाणवी
अहीं आ भावार्थ छे—अहीं प्रकापके सात रज्जु प्रमाण घनीकृत लोकनी पाटी यगेरेसा स्थापना करयी अने तेनी श्रेणि रेखाना
आकार वढे यतावधी, अने पतावधी, अने पतावधी प प्रमाणे कहेबु—अगुलप्रमाण आकाशक्षेत्रना जेटला प्रवेशो होय तेना असख्याता वर्गमूलो
थाय छे जेम के प्रथम वर्गमूल, तेनु जे वर्गमूल थाय ते वीजु वर्गमूल, तेनु जे वर्गमूल आवे ते वीजु वर्गमूल, प्रथम असख्याता
वर्गमूलो थाय छे तेमा प्रथम वर्गमूलने बीजा वर्गमूल वढे गुणथा, अने गुणवाधी जेटला प्रवेशो आवे तेटला प्रदेसानी सुचिभ्रणि
बुद्धिणी करपवी कल्पीने वक्षिण अने उत्तर लायी स्थापयी अने तेने स्थापया पढे जेटली श्रेणिओनो स्वर्णं करे तेटली श्रेणिओ
प्रहण करवी तेमा आ उदाहरण छे—अगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रवेशो वास्तविक रीते असख्याता छे, तो पण असकल्पनाधी यमो
उत्पन्न कल्पवा तेनु प्रथम वर्गमूल सोळ, वीजु वर्गमूल चार अने वीजु वर्गमूल वे तेमा चाररूप बीजा वर्गमूल वढे सोळरूप प्रथम वर्गमूलने
गुणता चोसठ थाय, पटली श्रेणिओ प्रहण करवी आ अर्थ बीजी रीते जणाये छे—‘अथवा णं’ इत्यादि ‘अथवा’ शब्द प्रकान्तरना
अर्थमा छे ‘ण’ वाक्यालकारमा छे अगुलमात्र क्षेत्रना प्रवेशरूपिणा बीजा वर्गमूलरूप असकल्पनाए चारलो जे घन थाय तेटली
श्रेणिओ प्रहण करवी अहीं जे राशिनो जे वर्ग छे तेने ते राशि वढे गुणतां घन थाय छे जेम के घेनो घन आठ थाय छे ते मा
प्रमाणे—घेनो वर्ग चार, तेने घेयी गुणता आठ थाय प प्रमाणे अहीं पण चारलो वर्ग सोळ तेने चारे गुणता जे आवे तेटलो चारलो घन थाय छे,

हृद्या य भणिया तहेव आहारगावि भाणियव्वा । तेयाकम्मगाई जहा एएसिं चेव वेउव्वियाई ।

४. असुरकुमाराणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहा नेरइयाणं ओरालियसरीरा भणित्ता तहेव एतेसिं भाणितव्वा । असुरकुमाराणं भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा प्रकारना आहारक शरीरो छे, ते आ प्रमाणे जेम औदारिक शरीरो वद्ध अने मुक्त कहां तेम आहारक शरीरो पण कहेवां. तैजस अने कार्मण शरीरो जेम वैक्रिय शरीरो कहां तेम कहेवा.

४. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटला औदारिक शरीरो कहां छे ? हे गौतम ! जेम नारकोने औदारिक शरीरो कहां तेम असुरकुमारोने पण जाणवां. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटलां वैक्रिय शरीरो कहां छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना वैक्रिय शरीरो कहां छे,

अने त्यां पण तेज चोसठ थाय छे, वन्ने प्रकारना गणितमां अर्थनो भेद नथी. अहीं आ गणितनो व्यवहार छे के घणी संख्याने थोडी संख्याथी गुणाय छे. तेथी सूत्रकारे वे ज प्रकार यताव्या छे, अन्यथा जीजो प्रकार पण छे—‘अंगुलविइयवगमूलं पढमवगमूलप इप्पन्नं’ इति. अंगुलप्रमाण आकाशक्षेत्रना प्रदेशोना वीजा वर्गमूलने प्रथम वर्गमूलथी गुणवां. वीजा आचार्यो आ प्रमाणे कहे छे—अंगुल प्रमाण क्षेत्रना प्रदेशोने पोताना प्रथम वर्गमूलनी साथे गुणतां जेटला प्रदेशो थाय तेटला प्रदेशनी सूची वडे जेटलो श्रेणिओनो स्पशं थाय तेटली श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला नारकोना वद्ध वैक्रिय शरीरो छे, अने मुक्त वैक्रिय शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवा. नारकोने वद्ध आहारक शरीरो नथी, कारण के तेओने आहारकलव्धिनो असंभव छे. मुक्त शरीरो पूर्वनी पेठे जाणवां. वद्ध तैजसकार्मण शरीरो वैक्रियनी पेठे अने मुक्त शरीरो पूर्वनी पेठे जाणवा.

४. असुरकुमारोने औदारिक शरीरो नैरयिकोनी पेठे जाणवा. तेओने वद्ध वैक्रिय शरीरो असद्धयाता छे अने ते असंख्यातानुं काल अने क्षेत्रवडे

પણ, તંજાહ-ચંદ્રદ્રગા ય મુરુકોદ્રગા ય । તત્થ ણં જે તે પંદ્રોદ્રગા તે ણં અસંતેજા અસંતેજાહિં ઉસ્સલ્પિણીઓ
 મલ્પિણીહિં અયહીરિનિ કાલ્લો, તેત્તનો અમગેજાઓ તેદીતો ગગરસ્સ અમંતેજાનિમાગો, તામિ ણં સેદીણં સિયગ-
 મસારં અંગુલ્લપટ્ઠમયગમૂન્દરમ્ સવેજ્ઞતિમાગો । તત્થ ણં જે તે મુરુકોદ્રગા તે ણં જાહા ઓરાલ્લિયસ્સ મુરુકોદ્રગા
 ત્થા માણિગચ્ચા । આદારસરીરગા જહા ણ્તેમિં ચંચ ઓરાલિયા ત્થેય યુચિહા માણિયચ્ચા, તેગાકમ્મગસરીરા
 તે ત્રા પ્રમાણે-પદ અને મુક્ત. તેમાં જે પદ ધૈક્રિય ગ્રીરો છે તે અમાપ્યાલા છે અને ક્ષાઢ્ઠી અંગવ્યાતી ઉલ્સપિણી અને અમ-
 લિણી જે પ્રપદગાય છે. ધૈચ્ઠી પ્રાના અમાપ્યાતમા યાગરૂપ અમાપ્યાતી શ્રેણિઓ છે. તે શ્રેણિઓની ચિત્કમપ્પરી અંગુલના ત્રયમ
 રામૂન્નના ગંભ્યાપાની ભાગ પ્રમાણ જાણી. તેમાં જે મુક્ત ગ્રીરો છે તે શ્રીદારિક્કના મુક્ત ગ્રીરો કચ્ચો છે તેમ વરેગો. આદારુ ગ્રી-
 રો જેમ વ્ણોને આંદારિક્ક ગ્રીરો કચ્ચો છે તેમ જે પ્રકાલાં કંદોાં વલ્લે પ્રકારના પળ ગંચમ અને કાર્મણ ગ્રીરો જેમ વ્ણોને ધૈક્રિય ગ્રીરો
 ચિત્કમ્મ કને છે-જેમાં જાટ્ટને ધાધથી મદ્દ પૂર્વેનો જેઠે જાણું. એવને તાધથી અમંત્યાતી શ્રેણિઓ જે પટલે માવચ્યાતી ધેણિઓમાં
 ગટ્ટમા આરાગાગરેતો દોય જેટ્ટાં છે તે ધણિઓ પ્રત્યનો પ્રત્યનો પ્રત્યનો આગ છે-પટલે પ્રત્યના અમંત્યાતમા આગપ્રમાણ છે તાપોના
 ધિવાલ્લો વલ પ્રત્યના કર્મવ્યાજમા આગ પ્રમાણ ધેણિઓ જહી છે, તેથી ધોંયુ ણિતેય પરિમાણ વહે છે-જે ધેણિઓના પરિમાણને માટે
 જે ચિત્કમ્મ મુલિ છે તે અગુટ્ટમાલ્લ એવના પ્રદેશ મરિતિના પ્રથમ પાંગમૂલ્લના ચલ્યાતમા આગપ્રમાણ છે. તાપ્યં વ છે કે અગુટ્ટમાણ
 આગ પ્રદેશોનો અગુમાય અગ્ગલ્લયનાથી વલો છાવલ છે, તેનુ પ્રથમ પાંગમૂટ ઘોઢ ધાય, તેગા મંત્યાતમા આગો જેટલ્લ આરાગાગરેતો
 છે તે અગ્ગલ્લનામા ગોંગ કે છે જાણા, જેટલ્લ પ્રદેશોની ધણિપ્રમાણ ચિત્કમ્મમુલિ જાણવી વ પ્રમાણે મેરચિત્તો વટ્ટો અગુટ્ટમા
 તેની ચિત્કમ્મમુલિ વર્મચ્યાતમુલ્લ દીલિ જાવથી તે મા પ્રમાણે--ધૈચિત્કોની ધેણિના પરિમાણ માટે જે ચિત્કમ્મમુલિ છે તે અંગુટ્ટના

दुविहावि जहा एतेसिं चैव चिउन्विवा, एवं जाव थणियकुमारा ।

५. पुढविकाइयाणं भंते ! केवइया ओरालियसरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेच्छगा य सुद्धेच्छगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेच्छगा ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्त-तो असंखेज्जा लोगा । तत्थ णं जे ते सुव्खेच्छगा ते णं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणिओस्सप्पिणीहिं अवहीरंति का-

कक्षां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

५. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटलां औदारिक शरीरो कक्षां छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना औदारिक शरीरो कक्षां छे, ते आ प्रमाणे-वद्ध अने युक्त. तेमां जे वद्ध औदारिक शरीरो छे ते असंख्याता छे अने कळ्थी असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी वडे

प्रथमवर्गमूलने यीजा वर्गमूलनीसाथे गुणतां जेटली संख्या आवे तेटला प्रवेशनी जाणवी. वीजुं वर्गमूलवास्तविकरीते असंख्यात प्रदेशरूप छे, तेथी असंख्यातगुण प्रथम वर्गमूलना प्रदेशरूप नैरयिकोनी विष्कंभसूचि छे, अने असुरकुमारोनी सूचि अंगुलना प्रथम वर्गमूलना संख्यातमा भागना प्रदेशरूप छे अने ए युक्त पण छे, कारण के त्रीजा पदने विशेषे महावंडकमां वधा भवनपतिओ रत्नप्रभाना नैर-यिको करतां पण असंख्यातागुण हीन कक्षा छे, तो पछी वधा नारको करतां असंख्यातगुण हीन होय पमां शुं कहेवुं ? तेओना मुक्त शरीरो सामान्य मुक्त शरीरोनी पेठे जाणवा. आहारकशरीरो नैरयिकोनी पेठे जाणवां. वद्ध तैजस अने कार्मण शरीरो वद्ध वैक्रियनी पेठे समजवा. मुक्त तैजस अने कार्मण शरीरो सामान्य मुक्त तैजसकार्मणनी पेठे जाणवा. जेम असुरकुमारोने कणुं तेम चाकीना भवनपतिओने यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं.

५. पृथिवी, अप् अने तेजस्कायिक सूत्रोमां वद्ध औदारिक शरीरो असंख्याता छे, तेमां पण काळने आश्रयी परिमाणलो विचार

लतो, खेत्ततो अणता लोणा, अमवसिद्धिर्हितो अणंतगुणा सिद्धानं अणंतभागो । पुढचिकाइयाण भंते ! केव-
तिया वेउन्वियसरीरगा पणत्ता ! गोयमा । दुविहा पत्ता, तंजहा-बंदेछगा य मुक्केलगा य । तत्थ णं जे ते
यदेछगा ते णं णत्थि । तत्थ णं जे ते मुक्केलगा ते णं जहा एप्पिसिं चैव ओरालिया तदेव भाणियब्बा । एवं
आहारगसरीराधि । तेयाकम्मगा जहा एप्पिसिं चैव ओरालिया । एवं आउकाइयतेउकाइयाधि ।

अपहराय छे. क्षेत्रधी असंख्याता लोक प्रमाण छे. तेमां जे युक्त शरीरो छे ते अनन्ता छे अने कालधी अनन्त उत्सर्पिणी अने
अवसर्पिणी बडे अपहराय छे. क्षेत्रधी अनन्त लोकप्रमाण छे. ते मव्य कर्ता अनन्तगुण अने सिद्धोना अनन्तमा मागे छे. हे मगवन् !
पृथिवीकायिकोने केटला वैक्रिय शरीरो कक्षां छे ! हे गौतम ! वे प्रकारनां कक्षां छे, ते आ प्रमाणे-बद्ध अने युक्त. तेमां जे बद्ध
शरीरो छे ते तेओने नथी. तेमा जे युक्त शरीरो छे ते जेम एओने औदारिक शरीरो कक्षां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे आहारक
शरीरो पण कहेवां तैजस अने कर्मण शरीरो एओने जेम औदारिक शरीरो कक्षां छे तेम कहेवां. ए प्रमाणे अप्कायिको अने
तेजस्कायिको संबंधे पण कहेवुं.

करता प्रतिसमय एक एक शरीरनो अपहार करता असंख्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी बडे यथा शरीरो अपहराय छे क्षेत्रने
माथयी परिमाणना विचारना 'असंख्याता लोकप्रमाण छे' पढले पोतपोतानी भयगाइना बडे असंख्याता लोको ब्याप्त थाय छे मुक्त
शरीर सामान्य मुक्त शरीरलो पेटे जाणया यद्य तैजस अने कर्मण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेटे अने मुक्त शरीरो सामान्य मुक्त
शरीरली पेटे जाणया

६. वाउकाइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेह्लगा य सुक्केह्लगा य । दुविहावि जहा पुढविकाइयाणं ओरालिया । वेउव्वियाणं पुच्छा । गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-बद्धेह्लगा य सुक्केह्लगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेह्लगा ते णं असंखेज्जा समए अवहीरमाणा २ पलितोवमस्स

६. हे भगवन् ! वायुकायिको ने केटलां औदारिक शरीरो कक्षां छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनां औदारिक शरीरो कक्षां छे, ते आ प्रमाणे-बद्ध अने युक्त. ते वन्ने प्रकारना शरीरो जेम पृथिवीकायिकोने औदारिक शरीरो कक्षां छे तेम कहेवां. वैक्रियशरीर संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! वे प्रकारना कक्षा छे. ते आ प्रमाणे-बद्ध अने युक्त. तेमां जे बद्ध शरीरो छे ते असंख्याता छे. अने समये समये अपहार कराता प-

६. वायुकायने पण औदारिक शरीरो पृथिव्यादिनी पेटे जाणवा. तेओने बद्ध वैक्रिय शरीरो असंख्याता छे, अने प्रतिसमय एक एकनो अपहार करता पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण काठे यथां अपहराय छे. तात्पर्य ए छे के पल्योपमना . असंख्यातमा भागना जेटला समयो थाय तेटलां बद्ध वैक्रिय शरीरो छे, पण अधिक नथी, ते आ प्रमाणे-वायुकायिको चार प्रकारना छे, सूक्ष्म अने वादर. अने ते एक एकना बद्धे प्रकार छे-पर्यांता अने अपर्यांता. तेमां वादर पर्यांता सिवाय वाकीना इणे प्रत्येक असंख्याता लोका-काशप्रदेशप्रमाण छे. जेओ वादर पर्यांता छे ते प्रतरना असंख्यातमा भागप्रमाण छे. तेमांता इण प्रकारना वायुकायने वैक्रियलब्धि नथी. वादर पर्यांतामां पण संख्याता भागमावने वैक्रियलब्धि छे, पण वाकीनाने नथी. ए संबन्धे चूर्णिकार कट्टे छे—"तिण्हं ताव रासीणं वेउव्वियलब्धी चेव नत्थि, वायरपज्जानाणं पि संखेज्जाभागमेत्ताणं लब्धी अत्थि" ति । इण राशिये वैक्रिय लब्धि नथी, वादर पर्यांतामां पण मात्र संख्याता भागने ज वैक्रिय लब्धि होय छे." तेथी पल्योपमना असंख्यातमा भागना समयप्रमाण ज वायुकायिको प्रत्नसमये वैक्रियलब्धिवाळा होय छे, अधिक नथी. अही केटलाक आचार्यो कट्टे छे-"यथा वायुकायिको वैक्रियलब्धि

असलेज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, नो वेच णं अवहिद्या सिया । सुक्केह्णगा जहा पुढविकाइयाण । आहारयतेयाकम्मा जहा पुढवीकाइयाणं, वणफ्फइकाइयाण जहा पुढविकाइयाणं, णवरं तेयाकम्मगा जहा ओहिद्या तेयाकम्मगा ।

७. बेइंदियाणं भंते ! केवइया ओरालिया सरंरिगा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता । तंजहा-यद्धेह्णगा यत्पोपमना असल्लयातमा भाग मात्र काळ सुधी अपहराय छे, तो पण एम अपहरयेलां नथी. सुक्त्त शरीरो पृथिवीकायिकोनी जेम जाणवा, आहारक, तैजस अने कामंण शरीरो पृथिवीकायिकनी जेम कहेवा. वनस्पतिकायिको पृथिवीकायिकोनी पेटे जाणवा, परन्तु तैजस अने कामंण शरीरो सामान्य तैजस अने कामंणनी पेटे जाणवा.

७. हे भगवन् ! बेइंदियोने केटला प्रकारना औदारिक शरीरो कखा छे ? हे गौतम ! वे प्रकारना कखा छे, ते आ प्रमाणे-बद्ध घाळाज होय छे, कारण के धैक्रिय लब्धि रहित घायुकायने चेष्टानी ज असमच छे” ते अयुक्त छे कारण के वस्तुस्थितित्तु परिसान नथी घायु स्वभावधी गतिक्रियावाळा होय छे अने तेधी धैक्रियरहित छातां धाय छे एम जाणतु कारण के ‘याति’ इति घायु-घाय छे ते घायु-पधी तेनी स्युपत्ति छे ए सयन्चे घूर्णिकार कहे छे—“जेण सम्बेसु चेय लोगागारेसु चला घायधो घायति, तम्हा भवेजब्धियाचि घाया घायतीति चित्तव्य” इति । जेधी सर्व लोकाकायमा गतिक्रियायुक्त घायुभो घाय छे ते माटे धैक्रिय लब्धि रहित छातां घाय छे एम जाणतु मुक्त धैक्रिय शरीरो सामान्य मुक्त धैक्रियनी पेटे जाणवा बद्ध तैजस अने कामंण शरीरो बद्ध औदारिकनी पेटे अने मुक्त शरीरो सामान्य मुक्तनी पेटे जाणवा वनस्पतिकायना विचारमा औदारिक शरीरो पेटे अने तैजस अने कामंण शरीरो सामान्य तैजस अने कामंणनी पेटे जाणवा

મુવકેછગા ય, તત્થ ણં જે તે વદ્દેછગા તે ણં અસંલેજ્ઞા અસંલેજ્ઞાહિં ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીહિં અવહીરતિ કાલતો, લેત્તતો અસંલેજ્ઞાઓ સેઢીઓ પયરસ્સ અસંલેજ્ઞાઇ ભાગો, તાસિણં સેઢીણં વિવ્ઠ્ઠં ભસ્સૂઈ અસંલેજ્ઞાઓ જોયણકોઢા-કોઢીઓ અસંલેજ્ઞાઈં સેઢિવગ્ગમૂલાઈં । વેઈંદિયાણં ઓરાલિયસરીરેહિં વદ્દેછગેહિં પયરો અવહીરતિ, અસંલેજ્ઞાહિં ઉસ્સપ્પિણીઓસપ્પિણીહિં કાલતો, લેત્તતો અંગુલપયરસ્સ આચલિયાતે ય અસંલેજ્ઞતિભાગપલિભાગેણં । તત્થ અને મુક્ત. તેમાં જે વદ્દ શરીરો છે તે અસંલ્યાતા છે અને કાલથી અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી વડે અપહરાય છે. ક્ષેત્રથી પ્રતરના અસંલ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ અસંલ્યાતી શ્રેણિઓ જાણવી. તે શ્રેણિઓની વિષ્કંભસૂચી અસંલ્યાતા કોઢા કોટી યોજન પ્રમાણ અથવા અસંલ્યાતા શ્રેણિના વર્ગમૂલ પ્રમાણ જાણવી. વેઈન્દ્રિયોના વદ્દ ઔદારિક શરીરોથી ક્ષેત્રને આશ્રયી અંગુલપ્રમાણ (એકપ્રદેશરૂપ) પ્ર-તરવંડ વડે અને કાલથી આવલિકાના અસંલ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ વંડ વડે (એક એક શરીરનો અપહાર કરતા) અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અને

૭. વેઈન્દ્રિયસુત્રમાં વદ્દ ઔદારિક શરીરો અસંલ્યાતા છે, તેથી કાલને આશ્રયી પરિમાણના વિચારમાં અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી વડે અપહરાય છે. પટલે અસંલ્યાત ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીના જેટલા સમયો છે તેટલાં વદ્દ ઔદારિક શરીરો છે. ક્ષેત્રથી અસંલ્યાતી શ્રેણિઓ છે-પટલે અસંલ્યાતી શ્રેણિમાં જેટલા આકાશપ્રદેશો છે તેટલા છે. તે શ્રેણિઓના પરિમાણ વિશેષનો નિર્ણય કરવા માટે કહે છે—'પ્રતરાસંલ્યેયમાગઃ'—પ્રતરના અસંલ્યાતમા ભાગરૂપ છે. પટલે પ્રતરના અસંલ્યાતમા ભાગ પ્રમાણ અસંલ્યાત શ્રેણિઓ પ્રદ્દાણ કરવી. પ્રતરનો અસંલ્યાતમો ભાગ નૈર્ગયિક અને ભવનપત્તિઓને પણ કાપો છે, માટે વિશેષતર પરિમાણનું નિરૂપણ કરવા માટે સૂચીનું પ્રમાણ કહે છે—'તાસિ ણં સેઢીણં' इत्यादि. તે શ્રેણિઓના પરિમાણનો નિશ્ચય કરવા માટે જે વિષ્કંભસૂચી છે તે અસં-લ્યાતા કોઢાકોટી યોજન પ્રમાણ જાણવી. અથવા વીજું વિશેષથી પરિમાણ કહે છે—'અસંલેજ્ઞાઈં સેઢિવગ્ગમૂલાઈં' અસંલ્યાતા શ્રેણિના

જે તે મુકકેહ્ણગા તે જહા ઓહિયા ઓરાલિયમુકકેહ્ણગા । વેડન્વિયા આહારગા ય ઘદિહ્ણગા ણત્થિ । મુકિક-
હ્ણગા જહા ઓહિયા ઓરાલિયમુકકેહ્ણગા । તેયાકમ્મગા જહા ઇતેસિં ચેવ ઓહિયા ઓરાલિયા, ઇવં જાવ ઘડ-
રિવિયા । પંચિદિયતિરિખલ્લજોણિયાણં ઇવ ચેય, નયરં વેડન્વિયસરીરણ્ણુ ઇમો વિસેસો-પંચિદિયરિખલ્લજોણિ-
યાણં મંતે ! કેવહ્યા વેડન્વિયસરીરયા પન્નત્તા ? ગોપમા ! દુવિહા પન્નત્તા-પંદેહ્ણગા ય મુકકેહ્ણગા ય । તત્થ ણં

અવસર્પિણી કાંઠે સમગ્ર પ્રતર અપહરાય છે. અર્થાત્ ક્ષેત્રથી અંગુલ પ્રમાણ એક પ્રદેશના પ્રતર સંઠ વઢે અને કાઠથી અવલિકાના અ-
સંરૂપાતમા માગ પ્રમાણ સઠ વઢે એક એક શરીરનો અપહાર કરતા અસલ્યાતી ડત્તર્પિણી અને અવસર્પિણી કાઠમાં ઘઘાવેન્દ્રિયોના
શરીરો અપહરાય છે. તેમા જે મુક્ત શરીરો છે તે ઔદારિક-સામાન્ય ઔદારિક મુક્ત શરીરોની પેઠે જાણવા. વૈક્રિય અને આહારક
પદ શરીરો નથી, અને મુક્ત શરીરો સામાન્ય ઔદારિક મુક્ત શરીરોની પેઠે જાણવા. તૈજસ અને કાર્યજ ઇઓના જ સામાન્ય ઔદારિ-

યર્ગમૂલ પ્રમાણ છે. તાપરં ય છે કે એક સર્પુણં શ્રેણિના પ્રદેશરણ્ણુ પ્રથમ યર્ગમૂલ, થીજુ, થીજુ પમ અસંલ્યાતમા યર્ગ-
મૂલ સુધી સર્પે યર્ગમૂલો એકત્ર સંકલિત કરવા અને સંકલિત કરેલા તે ઘઘાના જેટલા પ્રદેશો થાય તેટલા પ્રદેશપ્રમાણ
વિષ્કમત્વધિ જાણથી અહીં આ રુદાન્ત છે—શ્રેણિના અસલ્યાતા પ્રદેશો હોવા છતાં પણ અસત્કરુપનાર ૬૫૫૩૬ પાન્નઠ ઇ-
જાં પાવલો અને છત્રીય કરુપવા તેજુ પ્રથમ યર્ગમૂલ યલો ને છપ્પન ૨૫૬, થીજુ સોઠ ૧૬, થીજુ ચાર ૪, અને વીજુ
યર્ગમૂલ યે ૨, પમોજુ સંકલન-સરયાલો કરતા યલો ને અઠ્ઠ્યોત્તેર ૨૭૮ થાય અસત્કરુપના ઘટે પટલા પ્રવેશોની સુચિ જાણવી
હવે ય વૈન્દ્રિય જીવો કેટલી અયગાહના ઘટે ઇયાત ઘતા જેટલા કાંઠે સર્પુણં પ્રતરને વ્યાસ કરે ? ઉત્તર-અગુલના અસંલ્યાતમા માગ
પ્રમાણ અયગાહના ઘટે એક અવલિકાના અસલ્યાતમા માગમાં એક એક અયગાહનાની રચના કરવાથી અસલ્યાતી ડત્તર્પિણી અથ

જે તે બદ્ધેહ્યા તે ણં અસંલિજા, જહા અસુરકુમારાણં, ણવરં તાસિ ણં સેઠીણં ચિત્ત્વંભસૂદૈ અંગુલપદમવગમ્-
લસ્સ અસંલેજાહમાગો । મુક્કેહ્યાગા તદ્દેવ ।

શરીરોની પેઠે કહેવાં. એ પ્રમાણે યાવત્-ચવરિંદ્રિયો સુધી જાણું. પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોને એમજ સમજું. પરન્તુ વૈક્રિય શરીરોમાં આ વિશેષતા છે-હે મગવન્ ! પંચેન્દ્રિય તિર્યંચોને કેટલા પ્રકારના વૈક્રિય શરીરો કહ્યાં છે ? હે ગૌતમ ! જે પ્રકારના કહ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે-વદ્ધ અને મુક્ત. તેમાં જે વદ્ધ શરીરો છે તેઓ અસંલ્યાતા છે-इत्यादि असुरकुमारानी पेटे जाणुं. પરન્તુ તે શ્રેણિઓની વિ-
ઠ્ઠંમદ્ધચી અંગુલના પ્રથમ વર્ગમૂલના અસંલ્યાતામા ભાગ પ્રમાણ જાણવી. મુક્તશરીરો તેમજ જાણવાં.

સર્પિણી વહે સંપૂર્ણ પ્રતર વ્યાપ્ત કરે છે. તાત્પર્ય આ છે--एक एक आवलिकाना अगंत्यातमा भागमां एक एक अंगुलना असंल्यतामा भागप्रमाण अवगाहनानी रचना कराय छे અને તેથી અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી કાલે વેશન્દ્રિયોના શરીર વહે સંપૂર્ણ પ્રતર વ્યાપ્ત થાય છે. પણ યાવત સૂચકાર કહે છે--'वेइवियाणं' इत्यादि. વેશન્દ્રિયોના વદ્ધ ઔવરિક શરીરોથી અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી વહે સંપૂર્ણ પ્રતર અપહરાય છે. અહીં 'પ્રતર' અપહરાય છે, એ ધેત્રને આશ્રયી પરિમાણ કહ્યું અને 'ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણી વહે' કાઢને આશ્રયી પરિમાણ કહેવું છે. હવે કેટલા ધેત્ર વહે અને કેટલા કાલે અપહાર થાય છે ? તેથી કહે છે--अंगुलपरस्स आचलियाप य असंखेत्तइभागपलिभागेणं' एक प्रदेशनी श्रेणिरूप अंगुलमात्र प्रतरना असंल्यतामा भाग प्रमाण रंड वडे अपहार थाय छे, आ धेत्रने आश्रयी परिमाण कहुं અને 'आचलिकाना असंल्यतामा भागरूप रंड वडे अपहारय छे' ए कालने आश्रयी परिमाण छे. भावार्थ ए छे के एक वैशन्द्रिय वडे अंगुलना असंल्यतामा भाग प्रमाणरंड आवलिकाना असंल्यतामा भाग प्रमाण काले अपहराय छे, बीजा वडे एण तेदलो खंड तेदला काले अपहारय छे, एम यथा वैशन्द्रियो वडे अपहार करतां समग्र प्रतर असंर्याती उत्स-

૮ મનુસ્સાણં મંતે ! કેવદ્વયા ઓરાલિયસરીરગા પન્નત્તા ! ગોયમા ! દુચિદા પન્નત્તા, તંજહા-વદ્દેલ્લગા ય
૮. હે મગવન્ ! મનુષ્યોને કેટલાં પ્રકારના ઔદારિક શરીરો કહ્યા છે ? હે ગૌતમ ! બે પ્રકારના કહ્યાં છે. તે આ પ્રમાણે-ચદ્

પિની અને અવસર્પિણી કાલે અપહરાપ છે મુક્ત શરીરો સામાન્ય મુક્તની પેઠે જાણવા યદ્ય તૈજસ અને કાર્મણ શરીરો યદ્ય ઔદારિકની પેઠે જાણવા યદ્ય ધૈકિય શરીરો તેઓને નથી, મુક્ત ધૈકિય શરીરો મુક્ત ધૈકિયની જેમ જાણવા પ પ્રમાણે ઘેરન્દ્રિયો, તેરન્દ્રિયો અને ઘરન્દ્રિયો સયન્થે પણ જાણવું તિર્યંચ પચેન્દ્રિયોને યદ્ય અને મુક્ત ઔદારિક શરીરો ઘેરન્દ્રિયની પેઠે જાણવાં તેઓને યદ્ય ધૈકિય શરીરો અસ્યાતા છે તેમાં તેઓ કાલ્ધી પરિમાણના ચિત્તારોમાં 'અસસ્થાતી વત્તસર્પિણી-અવસર્પિણી કાલે અપહરાપ છે સંપ્રથી અસ્યાતી શ્રેણિઓમાં જેટલા આકાશપ્રદેશો છે તેટલા છે તે શ્રેણિઓવુ પરિમાણ પ્રતરના અસ્યાતામાં માગ પ્રમાણ છે તે પ્રમાણે સ્વરૂપકાર કહે છે--'અદા અતુરકુમારાણ' દત્તિ જેમ અતુરકુમારોને કહ્યું છે તેમ કહેવું, પરન્તુ પટલો વિશેષ છે કે ચિપ્કમસ્થિના પરિમાણના ચિત્તારમાં અતુરકુમારોને અગુલપ્રમાણ ક્ષેત્રના ધર્મમૂલનો નસ્યાતામો માગ કહ્યો છે, પણ અહીં અસ્યાતામો માગ જાણવો તાત્પર્ય પ છે કે અગુલપ્રમાણ આકાશક્ષેત્રના પ્રદેશોનું જે પ્રથમ ધર્મમૂલ તેના નસ્યાતામાં ભાગે જેટલા આકાશપ્રદેશો છે તેટલા આકાશપ્રદેશોની મુલ્તિ પ્રહણ કરાવી અને તે સુભી ઘટે સ્પર્શ કરાવેલી શ્રેણિઓના જેટલા આકાશપ્રદેશો છે તેટલા તિર્યંચ પચેન્દ્રિયોના યદ્ય ધૈકિય શરીરો છે કાનું છે કે "અગુલમૂલાસલ્લેજ્જમાગ્ગપ્પમિયા ડ હોત્તિ સેટ્ઠિઓ ! ડત્તરચિત્તઘિયણ તિરિયાણ સપ્પિપ્પજ્ઞાણ" ॥ ડત્તર ધૈકિયધાલા નક્કી પર્યાપ્તા તિર્યંચોને અગુલના ધર્મમૂલના અસ્યાતામાં ભાગપ્રમાણ શ્રેણિઓ હોય છે મુક્ત ધૈકિય શરીરો સામાન્ય મુક્ત શરીરની પેઠે જાણવા યદ્ય તૈજસ અને કાર્મણ શરીરો યદ્ય ઔદારિક શરીરની પેઠે સમજવા અને મુક્ત તૈજસ અને કાર્મણ શરીરો સામાન્ય મુક્ત તૈજસ કાર્મણ શરીરોની પેઠે જાણવાં

૮ મનુષ્યોના યદ્ય ઔદારિક શરીરો 'સ્યાન્' કન્નચિત્ત્ સમ્યાતા હોય અને કન્નચિત્ત્ અસ્યાતા હોય અહીં તાત્પર્ય પ છે એ--

મુવકેલ્લગા ય । તત્થ ણં જે તે બદ્ધેલ્લગા તે ણં સિય સંઘિજ્ઞા, સિય અસંઘિજ્ઞા, જહણ્ણપદે સંઘેજ્ઞા, સંઘેજ્ઞાઓ કોઢાકોઢીઓ, તિજમલપયસ્સ ઉવરિં ચુજમલપયસ્સ દિટ્ઠા, અહવ ણં પંચમવગ્ગપહુપ્પન્નો છટ્ઠો વગ્ગો, અહવ ણં છણ્ણઉદ્દેયણગદાહરાસી, ઉવ્કોસપ્પે અસંઘિજ્ઞા, અસંઘિજ્ઞાહિં ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીહિં અવહીરંતિ કાલતો, લેત્તઓ રૂવપક્ખિલ્લેત્તેહિં મણુસ્સેહિં સેઢી અવહીરહ, તીસે સેઢીએ આકાસલેત્તેહિં અવહારો મગ્ગિજ્ઞહ-અસંઘેજ્ઞા અસંઘેજ્ઞાહિં ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણીહિં કાલતો, લેત્તતો અંગુલપઢમવગ્ગમૂલં તહયવગ્ગમૂલપહુપ્પણં । તત્થ ણં

અને મુક્ત. તેમાં જે બદ્ધ શરીરો છે તે કદાચ સંખ્યાતા હોય અને કદાચિત્ અસંખ્યાતા હોય છે કે સંખ્યા-તા કોટાકોટી પ્રમાણ હોય છે. અથવા ત્રણ ચમલપદના ઉપર અને ચાર ચમલપદની નીચે છે. અથવા પાંચમા વર્ગ વડે છટ્ટા વર્ગને ગુણતાં જેટલી સંખ્યા આવે તેટલાં છે. અથવા છત્તું ચાર છેદ આપી શકાય એટલા રાશિપ્રમાણ છે. ઉત્કૃષ્ટ પદે અસંખ્યાતા છે. અને તે કાઢથી અસંખ્યાતી ઉત્તસર્પિણી અને અવસર્પિણી વડે અપહરાય છે. ક્ષેત્રથી એક સંખ્યાનો પ્રક્ષેપ કરવાથી મનુષ્યો વડે સમગ્ર શ્રેણિ અપહરાય છે. તે શ્રેણિના આકાશ પ્રદેશોનો અપહાર વિચારીએ તો તેઓ અસંખ્યાતા થાય છે અને કાઢથી અસંખ્યાતી ઉત્તસ-

મનુષ્યો જે પ્રકારના છે-ગર્ભજ અને સંમૂહિમ. તેમાં ગર્ભજ હમેશાં સ્થાયી હોય છે, પવો કોઈ કાઢ નથી કે જેમાં ગર્ભજ મનુષ્યોનો અમાવ હોય. સંમૂહિમ મનુષ્યો કદાચિત્ હોય છે અને કદાચિત્ સર્વથા હોતા નથી. કારણ કે તેઓનું ઉત્કૃષ્ટ અન્તર્મુહર્તનું આયુષ્ય છે અને તેઓનું ઉત્પત્તિનું અન્તર ઉત્કર્ષથી ચોવીસ મુહર્ત પ્રમાણ છે. તેથી જ્યારે સર્વથા સંમૂહિમ મનુષ્યો હોતા નથી અને કેવલ ગર્ભજ

જે તે મુકકેહ્ણગા તે જહા ઓરાલિયા ઓહિયા મુકકેહ્ણગા ! વેડવિવયાળ મંતે ! પુહ્ણા ધ ગોયમા ! દુવિહા પમ્મજા ; તંજહા-વદેહ્ણગા ય મુકકેહ્ણગા ય । તત્થ ણં જે તે પદેહ્ણગા તે ણં સંલિહ્ણા, સમપ્પ ૨ અક્કરીમાણે ૨ સંલેહ્ણેણં કાલેણ અવહીરંતિ, નો ચેવ ણં અવહીરિયા સિયા । તત્થ ણં જે તે મુકકેહ્ણગા તે ણં જહા ઓરાલિયા ઓહિયા । આહારગસરીરા જહા ઓહિયા । તેયાકમ્મગા જહા પ્પત્તેસિ ચેવ ઓરાલિયા । યાળમંતરાણં જહા નેરહયાણં ઓરા-

વિળી અને અવસર્પિણી વહે અપહરાય છે. ક્ષેત્રથી અંગુલના પ્રથમ વર્ગમૂલને ત્રીજા વર્ગમૂલ વહે ગુણતાં જે સંભ્યા આવે તેટલાં જાણવા. તેમાં જે મુક્ત શરીરો છે તે ઔદારિક સામાન્ય મુક્ત શરીરની પેઠે જાણવા. હે ભગવન્ ! વૈક્રિયશરીર સંવપ્પે પૃથ્થા. હે ગૌતમ ! બે પ્રકારના છે, તે આ પ્રમાણે-વદ્ અને મુક્ત. તેમાં જે વદ્ શરીરો છે તે સંભ્યાતા છે અને તે સમયે તેનો અપહાર કરતાં સંભ્યાતા ફાટ્ટે-સમયે અપહરાય પરન્તુ દમ અપહરાયેલાં નથી. તેમાં જે મુક્ત શરીરો છે તે સામાન્ય ઔદારિકની જેમ જાણવા. તેજસ અને કાર્મણ

મનુષ્યો જ હોય છે ત્યારે તેઓ સંભ્યાતા હોય છે કારણ કે ગર્ભજ મનુષ્યો હમેશા સભ્યાતા જ હોય છે, તેનું કારણ ૨ છે કે તેઓ મહા શરીરયાલા અને પ્રત્યેક શરીરયાલા છે તથા પરિમિત ક્ષેત્રમાં રહે છે જ્યારે સંમૂર્ધિમ મનુષ્યો હોય છે ત્યારે અસંખ્યાતા હોય છે, કારણ કે તેઓ ઉત્કૃષ્ટથી શેખિના અસંખ્યાતમા માગમા રહેલા આકાશપ્રવેશના રાશિપ્રમાણ છે તે પ્રકારે સૂત્રકાર કહે છે—‘જહદ્દયથે સયોહ્ણાં’ इत्यादि ‘जघन्यपदे सत्याता होय છે’ જ્યારે સૌથી ઘોડા મનુષ્ય હોય તે જઘન્ય પદ્મ આ જઘન્ય પદ્મમા સંમૂર્ધિમોનું પ્રહણ છે કે ગર્ભજ મનુષ્યો પ્રહણ છે ! ઉચ્ચર—સંમૂર્ધિમોનું પ્રહણ નથી, પરન્તુ ગર્ભજોનું પ્રહણ છે, કારણ કે તેઓ જ હમેશા અયસ્થિત હોવાથી સંમૂર્ધિમના અમાયર્મ સૌથી ઘોડા હોય છે અને ઉત્કૃષ્ટ પદ્મમા વલ્ને પ્રકારના મનુષ્યોનું પ્રહણ છે ૨ સયન્યે મૂલ ટીકાકાર કહે છે કે “સેત

लिया आहारगा य । वेडवियसरीगा जहा नेरइयाणं, नवरं तासि णं सेढीणं विक्खं भस्सई, संखेज्जोअणसयवग्ग-
पलिभागो पयरस्स । सुक्किह्लया जहा ओरालिया, आहारगसरीरा जहा असुरकुमाराणं, तेयाक्म्मया जहा ए-
तेसि णं चेव वेडविवता । जोइसियाणं एवं चेव, नवरं तासिणं सेढीणं विक्खं भस्सई, विछप्पन्नंगुलसयवग्गपलि-
भागो पयरस्स । वेमाणियाणं एवं चेव, नवरं तासिणं सेढीणं विक्खं भस्सई अंगुलवितीयवग्गसूलं तइयवग्गसूल-

शरीरो एओने जेम औदारिक शरीरो क्ख्हां छे तेम क्ख्हां व्यंतरोने नैरयिकोनी पेठे औदारिक अने आहारक शरीरो क्ख्हां अने वैकिय
शरीरो नैरयिकोनी पेठे क्ख्हां. परन्तु ते श्रेणिओनी विक्कं भस्सिचि (संख्यातगुण हीन) जाणवी. संख्याता सेंकडो योजनना वर्ग प्रमाण
खंड प्रतरने पूरवा के अपहरवामां जाणवो. सुक्त शरीरो औदारिकनी पेठे जाणवा. आहारक शरीरो; जेम असुरकुमारीना
क्ख्हां तेम क्ख्हां. तैजस अने कार्मण शरीर एओने वैकिय शरीरो क्ख्हां छे तेम क्ख्हां. ज्योतिपिकोने एम जसमज्जुं, परन्तु ते श्रेणि-

राणां ग्रहणमुत्कृष्टपदे, जघन्यपदे गर्भव्युत्क्रान्तिनामैव केवलानां ग्रहणम्" । उत्कृष्टपदे संमूर्द्धिम अने गर्भज छे अने जघन्यपदे केवल
गर्भजजुं ज ग्रहण छे. आ जघन्यपदमां संख्याता मनुष्यो छे. तेमां संख्याताना संख्याता भेदो छे तेथी 'तेओ केटलो' छे एम न
जाणी शकाय माटे विशेष संस्थानो निर्णय करे छे- 'संख्येयाः कोटीकोट्यः' संख्याता कोटाकोटी मनुष्यो छे. ते सिवाय वीजुं तेथी
विशेष परिमाण जणावे छे- 'तिजमलपयस्स उवरि, चउजमलपयस्स हेटुं' इति. त्रण यमल पदना उपर अने चार यमल पदनी
नीचे छे, अहीं मनुष्यनी संख्या जणावनार ओगळत्रीश अक्कस्थान आगळ- क्खेवामां आवशे, तेमां आगमनी परिभाषा-संकेतथो आठ
आठनी 'यमलपद' एवी संशा छे. चोवीश अक्कस्थान वडे त्रण यमलपद थाय छे. उपरना पांच अक्कस्थान चाकी रहे छे, एण यमलपद
आठ अक्कस्थानवडे थतुं होवाथी चोथुं यमलपद थतुं नथी. माटे क्खुं छे के 'त्रण यमलपदना उपर छे, कारण के पांच अक्कस्थानो वधे छे,

પરુષ્ણ, અદ્ય ણં અંગુલતદ્યથગમૂલયળ્પમાણમેતાઝો સેઢીઝો, સેસં તં ચેવ ।
 પન્નનાદ મગર્ષદ્ધ ધાસમ સરીરપયં સમ્મં ।

એની ચિષ્કંમગ્ગિ પળ (સમ્મ્યાતગુણી) ઝાળવી. સમો દુપ્પન અંગુલના ધર્મ પ્રમાણ સ્વઢ પ્રતલે પૂરવામા કેઅપહાર ફરવામા ઝાળવો વેમાનિકો સંવધે પળ ઇમઝ ઝાળવું. પરન્તુ તે ઐણિઝીની ચિષ્કંમગ્ગિ અંગુલના ધીઝા વર્ગમૂલને ધીઝા વર્ગમૂલ વઢે ગુણતાં ઝેટલા પ્રદેઝો આધે તેટલા પ્રદેઝપ્રમાણ ઝાળવી. અથવા અંગુલના ધીઝા વર્ગમૂલના ધનપ્રમાણ ઝાળવી.

પ્રમાણના મૂલના અનુયાયમા ધાસુ ડરીરપદ સમાસ

ધને ધોગા યમલપદની નીચે છે, કારણ કે ધળ મદુસ્થાનો પઢે ન્યૂન છે અથવા ધવ્યે ધમનો સમુદાય તે ઇક યમલપદ, ઘાર ધર્મનો સમુદાય તે યે યમલપદ ધને છે ધર્મનો સમુદાય તે ધળ યમલપદ ધને આઢ ધર્મનો સમુદાય તે ઘાર યમલપદ છે કારણ કે તેમાં છે ધર્મની ડરઢ ધને માતમા ધર્મની નીચે છે તે માટે કલ્પ છે કે-ધળ યમલ પદની ડરઢ ધને ઘાર યમલ પદની નીચે છે ઢવે સપ્પા ધમાયે છે—'ધાર્ય ધ ડહુધમ્મો પન્નમયળાપ્પનો' ઇતિ. મથવા ડહુ ધર્મને ધાવમા ધર્મ યઢે ગુણવાધી ઝેટલી સપ્પા ધાય તેટલા ઝપ્પાધે મનુષ્યો છે તેમાં ધવનો ધર્મ ઇક ઝ ધાય, તેની વૃદ્ધિ ન ધાય, માટે તેનો ગળના ધતી નથી યેનો ધર્મ ઘાર ધ પ્રથમ ધર્મ, ઘારનો ધર્મ મોલ ધ ધીઝો ધર્મ, મોલનો ધર્મ ધમ્મને ડુપ્પન ધ ધીઝો ધર્મ, ધને ધમ્મો ડુપ્પતનો ધર્મ પાંસઢ ઢઝાર ધાવમ્મો ડુપ્પીઝ ધ ધોગો ધર્મ, ધને તેનો ધર્મ ઘારમ્મો ઓગળધીઝ ધોઢ ઓગળવાસ તાર સઢમ્મઢ ઢઝાર ધલો ને ડુપ્પુ ધ ધાવમો ધર્મ કલ્પુ છે કે-ધારલો ઓગળધીઝ ધોઢ ઓગળપ્પમ તાર, સઢઢઢ ઢઝાર ધમ્મો ને ડુપ્પુ ધ સસેપ્પી ધાવમો ધર્મ છે ધલો ડહો ધર્મો ફરીપ ધને ઝે માયે તે ધધીઝ ધ ધાવમા ધર્મનો ઝે ધર્મ ધાય તે ડહો ધર્મ તેઝુ ધરિમાળ—ઇક ગળ ધોપધી ઢઝાર ઘારલો ને સઢમ્મઢ ધોટાધોટી,

चुम्माळीश लाख सात हजार त्रणसो सिस्तेर कोटी अने पञ्चाणु लाख एकावन हजार छसो छे के-एक लाख, चोराशी हजार चारसो सडसठ कोडाकोडी, चुम्माळीश लाख सात हजार त्रणसो सिस्तेर कोडी अने पञ्चाणु लाख एकावन हजार छसो ने सोळ ए छट्टो वर्ग थाय छे. तेने पांचमा वर्ग वडे गुणतां जेटली संख्या थाय तेटला जघन्यपदे मनुष्यो छे. ते संख्या आटली थाय छे- ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३१५०३३६. ए ओगणत्रीश अंकस्थानो छे. एने कोटाकोटी वर्गे संख्याथी कोइपण रीते कही शकाय तेम नथी तेथी छेला अकथी मांडी अकस्थानो संग्रह मात्र पूर्वाचार्य प्रणीत बे गाथाओ द्वारा कहे छे—छ, त्रण, त्रण, शून्य, पांच, नव, त्रण, चार, पांच, नव, पांच, सात, त्रण, चार, छ, दो, चार, एक, पांच, बे, छ, एक, आठ, बे, ने, नव अने सात पटला अक स्थानो उपर उपरना छे. अथवा आ अंक स्थानना प्रथमाक्षरनी संग्रहाया छे—

छ-ति-ति-सुं-पण-नव-ति-च-प-ति-न-प-स-ति-ति-चउ-छ-दो । च-प-प-दो-छ-ए-अ-दो-दो-ण-स पढमखबरसन्तिथट्टाणा ॥ ”

आ उपर कहेला प्रथमाक्षर संवन्धी स्थानो छे. आ ओगणत्रीश अकस्थानोनी पूर्वाचार्योप पूर्ण अने पूर्वाङ्क वडे संख्या कही छे ते बतावे छे—तेमां चोराशी लाखनी पूर्वाङ्क संज्ञा छे. चोराशी लाखने चोराशी लाख वडे गुणीए पटले पूर्ण थाय छे. तेतुं परिमाण सिस्तेर लाख छपन हजार फोड थाय छे. ए संख्या वडे पूर्वोक्त ओगणत्रीश अंकवाळी संख्यानो भागाकार करवो. पटले आ नीचेनी संख्या आवे छे—अगियार कोटाकोटी, बावीश लारा कोटी, चोराशी हजार कोटी, एकसो अठार कोटी, पंचाणु हजार त्रणसो अने छपन पटला पूर्वा, त्रार पछी पूर्ण वडे भाग चालतो नथी. तेथी पूर्वाङ्क वडे भाग चलाववो. तेथी आ नीचे वतावेली संख्या आवे छे. एकवीश लाख, सीस्तेर हजार, छसो ने ओगणसाठ पूर्वाङ्क. त्रार वाद नीचेनी संख्या शेष रहे छे. ज्याशी लाख, पचास हजार, त्रणसो अने छत्रीश. ए प्रमाणे मनुष्योनी संख्या छे. ए अर्थने जणावनारी पूर्वाचार्य रचित अही गाथा आपवामां आवी छे—“मनुष्योनी संख्या जघन्यपदे अगियार कोटाकोटी, बावीश लाग कोटी, चोराशी हजार कोटी, एकसो अठार कोटी, ते पछी एकाशी लाख, पञ्चाणु हजार, त्रणसो छपन पटला पूर्वा छे अने तेतुं स्वरूप पूर्ण वर्णवेलुं छे. पथी अधिक बीजा आ पूर्वाङ्को

છે. દેવકીયોગ સાથે સિલેટર હજાર છાનો ને ઓગણસાઠ પટલા પૂર્વાંગી છે, અને (તે ઉપર) ડ્રાયાથી ત્રણ પચાસ હજાર ત્રણસો ને છત્રીચ, પટલા યથા મનુષ્યો છે આ જ સભ્યને વિશેષ જ્ઞાનની છાતર પ્રકારાન્તરે યતાવે છે—'અહય ણ છુણ્ણાઉંઉયણ્ણાપ્પી રાસો' ઇતિ અથવા જે સભ્યને છનુંં ધાર છેવ આપી શકાય તેટલા મનુષ્યો છે તાત્પર્ય પ છે કે જે રાધિને અર્ધ અર્ધ છેવ આપતાં છનુ ધાર છેવ આપી શકાય અને છેવટે એક યાત્રી રહે તે રાધિપ્રમાણ મનુષ્યો આજ્યા કા રાધિ પયો છે કે તેને છનુ ધાર છેવ આપી શકાય ! ઉત્તર-પાચમા ધર્મને છદ્દા ધર્મની સાથે ગુણતાં જે આવે તે રાધિને છનુ ધાર છેવ આપી શકાય છે તે આ પ્રમાણે-પ્રથમના ધર્મને છેવ આપતાં એ ધાર છેવ આપી શકાય છે. જેમકે પ્રથમ ધર્મ ધાર છે તેનો પ્રથમ છેવ એ અને ધીજો છેવ એક. ધીજા ધર્મને ધાર છેવ આપી શકાય છે તેમા પ્રથમ છેવ આઠ, ધીજો છેવ એક અને ઘોયો છેવ એક. પયી રીતે ધીજા ધર્મનો આઠ ધાર ઘોયા ધર્મનો સોઠધાર, પાંચમા ધર્મનો યત્રીયધાર અને છદ્દા ધર્મનો ઘોસઠ ધાર છેવ કરી શકાય છે અને પછી પાંચમા ધર્મ સાથે ગુણધામાં આવે છે, પટલે તે રાધિને છનુ ધાર છેવ આપી શકાય છે. ૫ ઠી રીતે આવી શકાય છે. ઉત્તર—જે જે ધર્મનો જે જે ધર્મનો સાથે ગુણાકાર કરવામાં આવે ત્યા ત્યાં તે ઘટેનો છેવ પ્રાપ્ત થાય છે. જેમ કે ધીજા ધર્મનો પ્રથમ ધર્મ ઘટે ગુણાકાર કરવામાં આવે તો તે રાધિ છ છેવને પ્રાપ્ત થાય છે. જેમ કે ઘોયો ધર્મ સોઠ છે તેને પ્રથમ ધર્મ ધાર ઘટે ગુણતાં ઘોસઠ ધાય તેનો પ્રથમ છેવ યત્રીચ, ધીજો સોઠ, ધીજો આઠ, ઘોયો ધાર, યાચસો એ અને છદ્દો છેવ એક, ૫ પ્રમાણે ધીજા સ્થલે પણ આણુ તેમાં પાચમા ધર્મમાં યત્રીચા છેવ અને છદ્દા ધર્મમાં ઘોસઠ છેવ ધાય છે તેથી યાચમા ધર્મ ઘટે છદ્દા ધર્મને ગુણતાં જે સભ્ય આવે તેનો છનુ ધાર છેવ ધાય છે અથવા વકને સ્થાપી તેના છનુ ધાર યમણા યમણા કરવા અને તેમ ફરવાથી તેની પટલી સભ્ય ધાય છે કે તેને છનુ ધાર છેવ આપી શકાય છે. ૫ પ્રમાણે જઘન્ય ૫૪ કાળ, હવે ઉત્કર ૫૪ ફઠે છે—ઉત્કરપરે મનુષ્યો અસભ્યતા હોય છે તેમા પણ કાઠને આધથી પરિમાણનો વિચાર કરીપ ત્યારે પ્રતિસમય એક એક મનુષ્યનો અપહાર કરતા અસભ્યતાી ઉત્સર્પિણી ઘટે યથા મનુષ્યો અપહારય અને ક્ષેત્રને આધથી એક સભ્ય ઉમેરીપ તો મનુષ્યો ઘટે સમૂળ એણિ અપહારય તાત્પર્ય ૫ છે કે ઉત્કરપરે જે મનુષ્યો છે તેમણે

અસત્કલ્પનાથી એક મનુષ્ય ઉમેરીએ તો એક આશી શ્રેણિ અપહરાય. તે શ્રેણિની ક્ષેત્ર અને કાલને આશ્રયી અપહારમાર્ગના-તેમાં કાલથી અસંખ્યાતી ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી વહે અને ક્ષેત્રથી અંગુલના પ્રથમ વર્ગમૂલને ત્રીજા વર્ગમૂલની સાથે ગુણતાં જે સંખ્યા આવે, જેમ કે અંગુલમાત્ર ક્ષેત્રના પ્રદેશરાશિનું પ્રમાણ અસત્કલ્પનાથી વસો છપ્પન છે, તેના પ્રથમ વર્ગમૂલ સોલને ત્રીજા વર્ગમૂલરૂપે વહે ગુણવા, અને ગુણવાથી અસત્કલ્પનાળ વત્રીશ પ્રદેશો આવે, ઘટલા પ્રદેશપ્રમાણ ળંડવહે અપહાર કરતાં જેટલામાં શ્રેણિ પૂરી થાય છે તેટલામાં મનુષ્યો પણ પૂરા થાય છે.

પ્ર૦—પૂર્વે કહેલા પ્રમાણના ળંડો વહે એક શ્રેણિનો અપહાર કરતાં અસંખ્યાતા ઉત્સર્પિણી-અવસર્પિણીઓ કેમ લાગે ? ૩૦—ક્ષેત્ર અતિસૂક્ષ્મ હોવાથી. સૂત્રમાં પણ કહ્યું છે કે ‘કાલ સૂક્ષ્મ છે અને તેથી અધિક સૂક્ષ્મ ક્ષેત્ર છે. અંગુલપ્રમાણ શ્રેણિમાં (સમયે સમયે એક એક પ્રદેશનો અપહાર કરતાં) અસંખ્યાતી ઉત્સર્પિણી-અવસર્પિણીઓ લાગે છે. ઔદારિક મુક્ત શરીરો સામાન્ય મુક્તની પેઠે જાણવાં. વદ્ધ વૈક્રિય શરીરો સંખ્યાતા છે, કારણ કે ગર્ભજમાં કેટલાકનેજ વૈક્રિયલઘ્વિનો સંભવ છે. મુક્ત વૈક્રિયશરીરો સામાન્ય મુક્તની પેઠે જાણવાં. આદ્યારક શરીરો સામાન્ય આદ્યારકની જેમ અને વદ્ધ તૈજસ કાર્મણ શરીરો વદ્ધ ઔદારિકની પેઠે સમજવા. તથા મુક્ત તૈજસ અને કાર્મણ સામાન્ય મુક્તની જેમ જાણવા.

વ્યન્તરોને ઔદારિક શરીરો નૈરયિકોની જેમ સમજવા. તેઓને વદ્ધ વૈક્રિયશરીરો અસંખ્યાતા છે. તેમાં કાલથી પરિમાણ-પ્રતિસમય એક એકનો અપહાર કરવામાં આવે તો અસંખ્યાતી ઉત્સર્પિણી-અવસર્પિણીવહે અપહરાય. ક્ષેત્રથી પરિમાણ-અસંખ્યાતી શ્રેણિઓ, ઘટલે અસંખ્યાતી સૂત્રિ શ્રેણિઓમાં જેટલા આકાશપ્રદેશો હોય તેટલા વ્યન્તરો છે. તે શ્રેણિઓ કેટલી છે ? પ્રતરના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણ છે. વૈક્રિય શરીરો નરયિકોની પેઠે વ્યન્તરોને જાણવા. કેવલ સૂત્રિમાં વિશેષતા છે. તે વાવત સૂત્રકાર જણાવે છે. પરંતુ માત્ર તે શ્રેણિઓની વિષ્કમ્મસૂત્રી કહેવી જોઈએ. અને તે પ્રસિદ્ધ હોવાથી કહી નથી. કેવી રીતે પ્રસિદ્ધ છે ? ઉત્તર-અહીં મહાદંડકમાં પંચેન્દ્રિય તિર્યંચ નાપુંસકો કરતાં અસંખ્યાતગુણહીન વ્યન્તરો કહ્યા છે. તેથી પની વિષ્કમ્મસૂત્રી પણ તિર્યંચ પંચેન્દ્રિયની વિષ્કમ્મસૂત્રી કરતાં અસંખ્યા-

तदुपनिषद् ज्ञान मूल टीकाकार एव कहे छे-‘कारण के महार्णवकर्म एवेन्द्रिय तिर्यश्च नपुंसको फलात् असंख्यातगुणा मोक्षा
 व्यस्तने कहेला छे, तैथी चिक्कम्भारवो एण ते कर्मात् असंख्यातगुण हीन कहेयी’ इये प्रतिभाग कहेयाय छे-‘प्रतिभाग-गंड,
 संख्याता संकडो योजनना परंप्रमाण प्रतिभाग गड प्रतने पूरयामां के अण्डरयामां जाणयो अही ‘पूरयामां के अण्डरयामां’ ए पाण्यलो
 दोन-अण्डरयामां छे संख्याता संकडो योजनना परंप्रमाण एक एक धेणिगड अण्डरीय तो आनु प्रतर पूर अण्डर जाय.
 अण्डरयामां एक एक व्यस्तनो अण्डर कर्मात् संख्याता संकडो योजनना परंप्रमाण एक एक धेणिगड अण्डरीय तो एक तरफ
 व्यस्तनो गाली थाय अने पीजी तरफ आनु प्रतर गाली थाय. मुक्त शरीरो भौतिक मुलनी पंठे जाणया आहारक शरीरो भैरवि
 कोनी जेम, पद भैरव अने कर्मण शरीरो पद भैरवनी पंठे अने मुक्त शरीरो भौतिक मुलनी जेम जाणया ज्योतिष्कोने भौतिक
 शरीरो भैरविकनी जेम होय छे पद भैरव शरीर असंख्यातां छे. तेमा कळने आधयी मर्णयामां प्रतिसमय एक एकनो अण्डर
 करयामां आवे तो अतक्याती उत्सर्पिणी अने अयसर्पिणी पठे वया अण्डरयामां अण्डरीय असंख्याती धेणिओ छे अने ते प्रतरना अल
 वयानमा भागप्रमाण छे, ते वायत सूत्रकार कहे छे-‘ज्योतिष्कोने एम अ समजवु’ परंतु पदलो विज्ञेण छे के ते धेणिओनी चिक्कम्भ
 मूर्थी कहेयी जोरए, मा एण सुप्रमिद होवायी कडी नथी, कारण के महादण्डरमां व्यस्तरीय ज्योतिष्कोने संख्यातगुणा वटा छे, तैथी
 तेभोनी चिक्कम्भमूर्थी एण व्यस्तरोनी चिक्कम्भमूर्थी कर्मात् संख्यातगुणी जाणयी ते वायत सूत्रटीकाकार कहे छे-‘कारण के
 व्यस्तरोनी ज्योतिष्कोने मन्थानगुणा वहेला छे, तैथी तेभोनी चिक्कम्भमूर्थी एण व्यस्तरो कर्मात् संख्यातगुणी होय छे” परंतु
 प्रतिभागमां स्पष्ट विदोयता छे ते सूत्रकार जणाये छे-‘कनो छया अणुदना परंप्रमाण प्रतिभाग-धेणिओ गड प्रखले पूरयामां
 के अण्डरयामां उपरोनी छे अही एम मा मायार्थ छे-‘कनो छया अणुदना परंप्रमाण धेणिओदने विदे एक एक ज्योतिष्क
 रणययामां आवे तो भणुं प्रतर, मण्डर जाय, अथवा एक एक ज्योतिष्कोने अण्डर करता एक एक पलो छया अणुदना परंप्रमाण
 धेणिगडो अण्डर करयामां आवे तो एक तरफ एया ज्योतिष्को राली थार जाय अने पीजी तरफ मणुं प्रतर गाली थाय. ए

પ્રમાણે જ્યોતિષિકોનો વ્યન્તરોથી સંસ્થાતગુણ દ્વીન પ્રતિભાગ છે અને સંસ્થાતગુણાધિક સૂચી છે. પચ્ચસંપ્રહમાં તો વસો છપ્પન અંગુલ પ્રમાણ જ પ્રતિભાગ-ખંડ કહ્યો છે, પણ વસો છપ્પન અંગુલના વર્ગપ્રમાણ કહ્યો નથી. તે આ પ્રમાણે-છપ્પનદોસંયગુલચૃઈપપસેહિં ભાઈયં પયરં જોઈસિપહિં દિરહ્” । વસો છપ્પન અંગુલપ્રમાણ સૂચિપ્રદેશો વહે ભાગ આપેલું પ્રતર જ્યોતિષિકો વહે અપહરાય છે. મુક્ત શરીરો સામાન્ય મુક્તની જેમ, આદારક શરીરો નૈરયિકોની પેઠે, વદ્ધ તૈજસ અને કાર્મણ વૈક્રિયની પેઠે અને મુક્ત સામાન્ય મુક્ત શરીરની પેઠે જાણવાં. વૈમાનિકોને ઔદારિક શરીરો નૈરયિકોની જેમ જાણવાં. વદ્ધ વૈક્રિય શરીરો અસંસ્થાતા છે. તેમાં કાલને આશ્રયી માર્ગણા જ્યોતિષિકની પેઠે જાણવી. ક્ષેત્રથી માર્ગણા-અસંસ્થાતાી શ્રેણિઓ છે. પટલે અસંસ્થાતાી શ્રેણિઓમાં જેટલા આકાશપ્રદેશો છે તેટલા છે. તે શ્રેણિઓનું પરિમાણ પ્રતરના અસંસ્થાતમા ભાગપ્રમાણ સમજાવું, તેમાં પ્રતરનો અસંસ્થાતમો ભાગ નૈરયિકાવિની માર્ગણામાં પણ કહ્યો છે, માટે અહીં વિશેષતર પરિમાણ વતાવે છે-તે શ્રેણિઓની વિષ્કંમ્મ સૂચી અંગુલના વીજા વર્ગમૂલને ત્રીજા વર્ગની સાથે ગુણતાં જેટલી સંસ્થા આવે તેટલા પ્રદેશપ્રમાણ જાણવી. પટલે કે અંગુલમાત્ર ક્ષેત્રના પ્રદેશો અસત્કલ્પનાથી વસો છપ્પન છે, તેનું પ્રથમ વર્ગમૂલ સોલ્, થીજું વર્ગમૂલ અસત્કલ્પનાથી ચાર થાય, તેને ત્રીજા વર્ગમૂલ વહે પટલે અસત્કલ્પનાથી વે વહે ગુણતાં જેટલા પ્રદેશો આવે પટલે અસત્કલ્પનાથી આઠ પ્રદેશો આવે તેટલા પ્રદેશોની વિષ્કંમ્મ સૂચિપ્રમાણ શ્રેણિઓ જાણવી. ત્યાં પણ અસત્કલ્પનાથી આઠ જ શ્રેણિઓ જાણવી. વન્ને પ્રકારે અર્થમાં ભેદ નથી. આદારક શરીરો નૈરયિકોની પેઠે, વદ્ધ તૈજસ કાર્મણ શરીરો વદ્ધ વૈક્રિયની પેઠે અને મુક્ત શરીરો સામાન્ય મુક્તશરીરની જેમ જાણવા.

શ્રીમદાચાર્યમલ્યગિરિચિત પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુવાદમાં વાસું શરીરપદ ~~સૂચિ~~

तेरसमं परिणामपर्यं ।

१. कतिविधे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ! गोयमा ! बुद्धिहे परिणामे पन्नत्ते, तंजहा-जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य । जीवपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ! गोयमा ! दसविधे पन्नत्ते, तंजहा-गतिपरिणामे १, इंदियपरिणामे २, कसायपरिणामे ३, लेसापरिणामे ४, जोगपरिणामे ५, उवजोगपरिणामे ६, णणपरिणामे ७,

तेरसुं परिणाम पद.

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो परिणाम कखो छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनो परिणाम कखो छे. ते आ प्रमाणे—जीवपरिणाम, अने अजीवपरिणाम. हे भगवन् ! जीवपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! दस प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ गतिपरिणाम, २ इन्द्रियपरिणाम, ३ कसायपरिणाम, ४ लेइयापरिणाम, ५ योगपरिणाम, ६ उपयोगपरिणाम, ७ ज्ञानपरिणाम, ८ दर्शनपरिणाम,

१ पम थारमा पदनी ध्याख्या करी हवे तेरमा पदनो प्रारंभ करत्य छे तेनो सबन्ध आ प्रमाणे छे—पूर्वना पदमा औदारिकादि शरीरनो विभाग कखो, परंतु ते शरीरपरिणाम थयाथी थाय छे, परिणाम सिचाय थता नथी, तेथी परिणामना स्वरूपतु प्रतिपादन करवा माटे आ पदनो प्रारंभ करवामां आवे छे तेमां आ प्रथम सूत्र छे—‘करिहिं ण भंते ! परिणामे पन्नत्ते ?’ हे भगवन् ! केटला प्रकारन परिणाम कखा छे ?-इत्यादि प्रब्योतु परिणामन-रूपात्तर के अवस्थान्तर थयु ते परिणाम ते परिणाम नयना भेवोथी विविध प्रकारनो होय छे तेगमादि अनेक प्रकारना नयो छे ते सर्वे नयोनो भ्रमह करनार थे नयो सिखान्तमा कहेला छे—प्रय्यार्थिक भने पर्यार्थिक प सब्धे थी महयादी सरि कहे छे—

દંસનપરિણામે ૮, ચરિત્તપરિણામે ૯, વેદપરિણામે ૧૦ ।

૧ ચારિત્રપરિણામ અને ૧૦ વેદપરિણામ.

‘તિથયરવયણસંગહવિસેસપથારમૂલવાગરણી । દ્વ્યટ્ટિઓ ય પજ્જવનઓ ય સેસા વિગપ્પા સિ ’॥ (સન્મતિ. ગા. ૨)
‘તિર્થ’કરના વચનોના સંગ્રહરૂપ સામાન્યપ્રસ્તાર અને વિશેષપ્રસ્તારના મૂલ્યું પ્રતિપાદન કરતાર દ્રવ્યાસ્તિક અને પર્યાયાસ્તિક પ બે નયો છે અને ચાકીના વયા તેના વિકલ્પો-મેવો છે.”

તેમાં દ્રવ્યાસ્તિક નયના મતે કથચિત્ સત્ છતાં ઉત્તર પર્યાયરૂપ ધર્માન્તરને પામે તે પરિણામ કહેવાય, તેમાં પૂર્વ પર્યાયની સર્વથા સ્થિતિ હોતી નથી, તેમ તેનો પ્કાન્તથી નાશ પળ હોતો નથી. પ સંબન્ધે કહ્યું છે કે “અર્થાન્તરરૂપે—અન્ય સ્વરૂપે થયું તે પરિણામ, તેની સર્વથા સ્થિતિ હોતી નથી, તેમ સર્વથા નાશ અને વીજા અસતપર્યાયોની ઉત્પત્તિ તે પરિણામ જાળનારાઓપ માનેલો છે”. પર્યાયાસ્તિક નયના મતે પૂર્વના સત્-વિદ્યમાન પર્યાયનો વિનાશ અને વીજા અસતપર્યાયોની ઉત્પત્તિ તે પરિણામ પર્યાયાસ્તિક નયના મતે નયને આપ્રથી અન્યત્ર કહેવામાં આવ્યું છે કે “સતપર્યાયરૂપે નાશ અને અસતપર્યાયરૂપે પ્રાદુર્ભાવ તે પરિણામ પર્યાયાસ્તિક નયના મતે છે.” હવે ભગવાન્ ઉત્તર આપે છે-દે ગૌતમ ! ત્રે પ્રકારનો પરિણામ છે—જીવપરિણામ અને અજીવપરિણામ. તેમાં જીવનો પરિણામ પ્રાયોગિક-ચેતનાભ્યાપારજન્ય છે અને અજીવનો પરિણામ વૈદ્રસિક—સ્વાભાવિક છે. સૂત્રકાર તે પરિણામના મેદો આગલ કહેશે, તે પ્રમાણે જીવ પરિણામના મેદો કહે છે-‘જીવપરિણામે પં મંતે ! કતિવિધે પન્નત્તે’? જીવપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે?—इत्यादि. જીવપરિણામ

૧, આ ‘ગાથા સન્મતિર્ક પ્રકરણની છે અને તેના કર્તા તરીકે સિદ્ધસેન દિવાકર પ્રસિદ્ધ છે. છતાં ટીકાકાર તેના કર્તા મહાબાદો તરીકે જણાવે છે તે ત્રિચારણીય છે. કદાચ સન્મતિર્કની આ ગાથા મહાબાદી સૂરિે પોતાના ગ્રન્થમાં લીધી હોય તેથી કદાચ એમ કહ્યું હોય તો તે સંમથિત છે.

रुस प्रकाराने छे जेसके-‘गतिपरिणाम’ इत्यादि ‘गम्यते’ नैरधिकारि गतिनामकर्मना उच्यथी जे प्राप्त थाय ते गति-आरथापरिकरूप पर्याप्ताने परिणाम, जीयोनो तेया प्रकारानो गतिरूप परिणाम ते गतिपरिणाम २ ‘इन्द्र’ धातु वेधयर्थ अर्थमां छे, धानरूप परम वेधयर्थना सप्त-घषी इन्द्र-आत्मा कहेयाय छे, तेनु चिह्न ते इन्द्रिय अर्ही ‘इय’ प्रत्यय धयो छे इन्द्रियरूप परिणाम ते इन्द्रियपरिणाम ३ ‘पपन्ति-द्विन्मन्ति परस्परं प्रागिनोऽस्मिन्’-जेमां प्राणीषो परस्पर द्विंसा करे ते कर्-सत्साट, तेने अयन्ते-प्राप्त करताये ते कपायो, ते ह्य आत्मानो परिणाम ते कपायपरिणाम ४ लेख्या यनेरेनो चन्द्रार्थ आगळ कहेवासो लेख्या ५ योगना परिणामरूप छे लेख्यारूप परिणाम ते लेख्यापरिणाम ५ मन, यचन अने कायाना योगरूप परिणाम ६ उपयोग-येतनाशक्तिला व्युत्पाकरूप परिणाम ते उपयोगपरिणाम ७ प्रमाणे ७ ज्ञानपरिणाम, ८ द्येनपरिणाम, ९ धारिपरिणाम अने १० वेदपरिणाम सम्बन्धे विवराट करयो

हये आ रुस प्रकाराना प्रकाराना परिणामोने य प्रकारे प्रमथी कहेबाजु प्रयोजन यताये छे-१ ते ते भौतिकारि माथने माधित सव्ये भाषो गतिपरिणाम मियाय प्रगटना नथी, तेथी प्रथम गतिपरिणाम कहो छे २ गतिपरिणाम यथाथी अपश्य इन्द्रियपरिणाम धाय छे माटे त्वारराठी इन्द्रियपरिणाम कहो छे ३ इन्द्रियपरिणाम यथाथी इष्ट अने अनिष्ट विषयना सप्त-घषी रागेद्वयनो परिणाम धाय छे माटे त्वारराट करायपरिणामजु कपन करेनु छे करायपरिणाम अपश्य लेख्यापरिणाम मियाय होतो नथी, ते आ प्रमाणे-लेख्या परिणाम मयोगी केयळी सुधी होय छे, कारण के लेख्यानी स्थितिना निरूपणना अपसरं लेख्याययनमां शुद्धलेख्यानी अथन्य अने उग्ररूप स्थिति पही छे-‘शुद्धलेख्यानी स्थिति अथन्य अन्तर्गुहनं अने उग्ररूप स्थिति नय एवं न्यून पूर्यं क्रोड धरतनी छे अने शुद्ध लेख्यानी उग्ररूप नय यत्न न्यून पूर्यं कोटि परतनी स्थिति अथन्य अन्तर्गुहनं अने उग्ररूप स्थिति नय एवं न्यून पूर्यं क्रोड धरतनी छे अने शुद्ध परिणाम सूक्ष्म मपराय गुणस्थानक मुधी होय छे ज्या कपायपरिणाम होय छे, त्वां अपश्य लेख्यापरिणाम होय छे, अने लेख्यापरिणाम करायपरिणाम मियाय नय होय छे, माटे करायपरिणामनी पत्री लेख्यापरिणाम कहो छे पण लेख्यापरिणामनी पही कराय

૨. ગતિપરિણામે ણં મંતે ! કતિવિધે પન્નત્તે ? ગોયમા ! ચઠ્ઠિવિદે પન્નત્તે, તંજહા-નરયગતિપરિણામે, તિરિય-ગતિપરિણામે, મણુયગતિપરિણામે, દેવગતિપરિણામે ? ૧ । ઇંદિયપરિણામે ણં મંતે ! કતિવિધે પન્નત્તે ? ગોયમા ! પંચવિધે પન્નત્તે, તંજહા-સોતિંદિયપરિણામે, ચંકિંલ્લવિદિયપરિણામે, ઘાણિંદિયપરિણામે, જિંઠિંમદિયપરિણામે, ફાસિંદિયપરિ-
 ૨. હે મગવન્ ! ગતિપરિણામ કેટલા પ્રકારે કહ્યો છે ? હે ગૌતમ ! ગતિપરિણામ ચાર પ્રકારે કહ્યો છે. તે આ પ્રમાણે—૧ નરક-ગતિપરિણામ, ૨ તિર્યચગતિપરિણામ, ૩ મનુષ્યગતિપરિણામ અને ૪ દેવગતિપરિણામ. હે મગવન્ ! ઈન્દ્રિયપરિણામ કેટલા પ્રકારનો કહ્યો છે ? હે ગૌતમ ! પાંચ પ્રકારનો કહ્યો છે. તે આ પ્રમાણે—૧ શ્રોત્રેન્દ્રિયપરિણામ, ૨ ચક્ષુઈન્દ્રિયપરિણામ, ૩ ઘ્રાણેન્દ્રિયપરિણામ, ૪

પરિણામ કહ્યો નથી. ૫ લેશ્યાપરિણામ યોગના પરિણામરૂપ છે, કારણ કે “યોગપરિણામો લેશ્યા” પહું શાસ્ત્રહું વચન છે. આ અર્થ લેશ્યાપદમાં સચિત્તરપ્ણે ચુક્તિપૂર્વક કહેવામાં આવશે. માટે લેશ્યાપરિણામ કહ્યા પછી યોગપરિણામ કહ્યો છે. સંસારી જીવોને યોગનો પરિણામ થયા પછી ઉપયોગનો પરિણામ થાય છે, માટે યોગપરિણામ પછી ઉપયોગપરિણામહું કથન કર્યું છે. ૭ ઉપયોગ પરિણામ થવાથી જ્ઞાનપરિણામ થાય છે, માટે ત્યાર પછી જ્ઞાનપરિણામ કહ્યો છે. ૮ જ્ઞાનપરિણામ ત્રે પ્રકારે છે—સમ્યગ્ જ્ઞાનપરિણામ અને મિથ્યા જ્ઞાનપરિણામ. તે વન્ને પ્રકારના જ્ઞાનપરિણામ સમ્યગ્દર્શન અને મિથ્યાદર્શન સિવાય થતા નથી, માટે ત્યાર પછી દર્શનપરિણામહું કથન કર્યું છે. ૯ સમ્યગ્દર્શન પરિણામ થવાથી જીવોને જિનવચનશ્રવણદ્વારા નવા નવા સંવેગનો અવિભાંચ થવાથી ચારિત્રાવરણ કર્મના ક્ષયોપશામ વહે ચારિત્રપરિણામ થાય છે, માટે દર્શનપરિણામ પછી ચારિત્રપરિણામ કહ્યો છે. ૧૦ ચારિત્રપરિણામથી મહાસન્ન્યવાલા આત્માઓ વેદપરિણામનો નાશ કરે છે, માટે ચારિત્રપરિણામની પછી વેદપરિણામ કહ્યો છે.

૨. ૫ પ્રમાણે જીવના ગત્યાદિ પરિણામો કહ્યા, હવે તે ગત્યાદિ પરિણામના અનુક્રમે મેલો વતાવે છે—‘ગરણિણામે ણં મંતે’! કહ્યું

૨। કંસાયપરિણામે ણં મંતે ! કત્તિવિદે પન્નત્તે ! ગોયમા ! ચડબ્વિદે પન્નત્તે, તંજહા-કોઠકસાયપરિણામે, મા-
 ણકસાયપરિણામે, માયાકસાયપરિણામે, લોમકસાયપરિણામે ૩। હેંસાપરિણામે ણ મંતે ! કત્તિવિદે પન્નત્તે ?
 ગોયમા ! છબ્વિદે પન્નત્તે, તંજહા-કણ્ઠહેસાપરિણામે, નીલહેસાપરિણામે, કાઠહેસાપરિણામે, તેઠહેસાપરિણામે,
 પન્નહેસાપરિણામે, સુચકહેસાપરિણામે ૪। જોગેપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિદે પન્નત્તે ? ગોયમા ! તિવિદે પદ્ધત્તે,
 તંજહા-મણજોગપરિણામે, વહ્જોગપરિણામે કાયજોગપરિણામે ૫। ઉંચજોગપરિણામે ણં મંતે ! કહ્વિદે પદ્ધત્તે ?

બિદ્ધેન્દ્રિયપરિણામ અને ૫ સ્વર્ણનેન્દ્રિયપરિણામ. હે મગવન્ ! કંયાપરિણામ કેટલા પ્રકારનો છે ? હે ગૌતમ ! ચાર પ્રકારનો છે.
 તે આ પ્રમાણે-૧ ક્રોધકપાયપરિણામ, ૨ માનકપાયપરિણામ, ૩ માયાકપાયપરિણામ, અને ૪ લોમકપાયપરિણામ. હે મગવન્ !
 હેંડયાપરિણામ કેટલા પ્રકારનો છે ? હે ગૌતમ ! હેંડયાપરિણામ છ પ્રકારનો છે. તે આ પ્રમાણે-૧ કૃષ્ણહેંડયાપરિણામ, ૨ નીલહેંડયા-
 પરિણામ, ૩ કાપોતહેંડયાપરિણામ, ૪ તેજોહેંડયાપરિણામ, ૫ પદ્મહેંડયાપરિણામ, અને ૬ શુક્લહેંડયાપરિણામ. હે મગવન્ ! યોગેપ-
 રિણામ કેટલા પ્રકારનો છે ? હે ગૌતમ ! ત્રણ પ્રકારનો છે, તે આ પ્રમાણે-૧ મનોયોગપરિણામ, ૨ વચનયોગપરિણામ, અને ૩

ચિદે પન્નત્તે ?-હે મગવન્ ! ગતિ પરિણામના કેટલા પ્રકાર કહ્યા છે-હ્યાદિ સ્વો પાઠ સિદ્ધ છે. હવે તેમા જે પરિણામો વહે
 સદ્ધિન નૈરયિકાદિ જીવો છે તે પરિણામોનું તે પ્રકારે પ્રતિપાદન કરે છે--નૈરદયા ગતિપરિણામેણ-નૈરયિકો ગતિપરિણામ વહે નરકગતિ-
 વાળા છે--હ્યાદિ પાઠ સુગમ છે, પરન્તુ નૈરયિકોને કૃષ્ણ, નીલ અને કાપોત પ ત્રણ અ લેશ્યા હોય છે, ચાકીની લેશ્યા હોતી નથી
 અને તે ત્રણ લેશ્યાઓ પણ નરકપુચિચીમોમાં આ પ્રથમથી છે--પ્રથમની વે નરકપુચિચીમા કાપોતલેશ્યા, ત્રીજો પુચિચીમા કાપોત

गोयसा ! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा-सागारोवओगपरिणामे, अणागारोवओगपरिणामे य ६ । णाँणपरिणामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गोयसा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा-आभिणिबोहियणाणपरिणामे, सुयणाणपरिणामे, ओहि-नाणपरिणामे, मणपज्जवणाणपरिणामे, केवलणाणपरिणामे । अण्णाणाणपरिणामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? गो-यसा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा-मइअण्णाणाणपरिणामे, सुयअण्णाणाणपरिणामे, विभंगणाणपरिणामे ७ । दंसणपरि-णामे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते, तंजहा-सम्महंसणपरिणामे, मिच्छदंसणपरिणामे, काययोगपरिणाम. हे भगवन् ! उर्धयोगपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-साकारोपयोग-परिणाम अने अनाकारोपयोगपरिणाम. हे भगवन् ! ज्ञानपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे- १ आभिनिबोधिकज्ञानपरिणाम, २ श्रुतज्ञानपरिणाम, ३ अवधिज्ञानपरिणाम, ४ मनःपर्ययज्ञानपरिणाम अने ५ केवलज्ञानपरिणाम. हे भगवन् ! अज्ञानपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो छे, ते आ प्रमाणे-१ मतिअज्ञानपरिणाम, २ श्रुतअज्ञा-नपरिणाम अने ३ विभंगज्ञानपरिणाम. हे भगवन् ! दर्शनपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारनो छे. ते आ

अने नीललेइया, चोथी नरकपृथिवीमां नीललेइया, पांचमी नरकपृथिवीमां नीललेइया अने छट्टी अने सातमी पृथिवीमां कृष्णलेइया ज होय छे. माटे एम कहुं छे के 'कण्णलेसावि नीललेसावि फाडलेसावि'—कृष्णलेइया, नीललेइया अने कापोतलेइयावाळा पण होय छे. तिर्यंचपंचेन्द्रिय अने मनुष्य सिवाय बीजा जीवोमां चारित्रपरिणाम भवस्वभावथी सर्वथा होतो नथी, माटे अहाँ चारित्रपरि-णामनो निषेध कर्यो छे. वेदपरिणामना विचारमां नैरयिको नपुंसक ज होय छे, पण ली अने पुरुयो होता नथी. कारण के "नारकसं-

सम्भमिच्छावंसणपरिणामे ८ । चारित्तपरिणामे णं भंते । कतिविधे पद्दत्ते । पंचविधे पद्दत्ते, तंजहा-
सामाइयचारित्तपरिणामे, छेवोचट्टायणियचारित्तपरिणामे, परिहारविस्तुद्धियचारित्तपरिणामे, सुदुमसपरायच-
रित्तपरिणामे, अहत्वायचरित्तपरिणामे ९ । वेदंपरिणामे णं भंते । कइविधे पन्नत्ते ? गोयमा । त्तिविधे पप्रत्ते,
तंजहा-इत्थियेवपरिणामे, पुरिसयेवपरिणामे, णपुंसगवेदपरिणामे १० ।

३. नेरइया गतिपरिणामेण निरयगतिया, इंदियपरिणामेण पच्चियया, कसायपरिणामेणं कोहकसाइथि जाव

प्रमाणे-सम्यग्दर्शनपरिणाम, मिथ्यादर्शनपरिणाम अने सम्यग्मिथ्यादर्शनपरिणाम. हे भगवन् ! चारित्रपरिणाम केटला प्रकारनो
छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-१ सामायिकचारित्रपरिणाम, २ छेदोपस्थापनीयचारित्रपरिणाम, ३ परिहा(विशुद्धिक
चारित्रपरिणाम, ४ दहसससयचारित्रपरिणाम, अने ५ यथाव्यातचारित्रपरिणाम. हे भगवन् ! वेदंपरिणाम केटला प्रकारनो छे ? हे
गौतम ! ग्रण प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-१ द्विवेदपरिणाम, २ पुलपेदपरिणाम अने ३ नपुंसकवेदपरिणाम.

३. नरथिको गतिपरिणाम वडे नरकगतिवाळा, इन्द्रियपरिणाम वडे पचेन्द्रियों, कपायपरिणाम वडे क्रोधकपायवाळा यावन्

मूढित्तो नपुणफानि" (अ० ३ सू० ५०) नारको अने समुच्छित्तो नपुणको होय छे—एवु तत्थार्थयु सूत्र छे ए प्रमाणे एतुएकुमारोने
एण आणु पएत्तु तेओ गत्तिने आधकी देयगतियाळा छे, अने तेओमां जे मोटी कइयाळा छे तेओने तेओलेइया एण होय छे, ते मोटे
काम छे के तेउलेस्सा धि'-तेओलेइयावाळा एण होय छे धेइपरिणामनो विचार कएला तेओ पुठयो अने लीओ होय छे, एण नपुणको
दोला एथी एएण के देयोमा नपुणकरणनो असंगय छे पृथिवीकायिकग्रामा 'नघरं लेमापरिणामेण' इत्यादि अही पृथिवी, पाणी

लोभकसाथीवि, लेसापरिणामेणं कण्हलेसावि नीललेसावि काउलेसावि, जोगपरिणामेणं मणजोगीवि वइजोगीवि कायजोगीवि, उवओगपरिणामेणं सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि, पाणपरिणामेणं आभिणिबोहि-
यणाणीवि सुयणाणीवि ओहिणाणीवि, अणाणपरिणामेणं मइअणाणीवि सुयअणाणीवि विभंगणाणीवि,
दंसणपरिणामेणं सम्मादिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्माभिच्छादिट्ठीवि, चरित्तपरिणामेणं नो चरित्ती, नो चरित्ता-
चरित्ती, अचरित्ती, वेदपरिणामेणं नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । असुरकुमारावि एवं चेव,

लोभकपायवाळा, लेश्यापरिणाम वडे कृण्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा, योगपरिणाम वडे मनोयोगवाळा,
वचनयोगवाळा अने काययोगवाळा, उपयोगपरिणाम वडे . साकार उपयोगवाळा अने अनाकार उपयोगवाळा, ज्ञानपरिणाम वडे
आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी, अज्ञानपरिणाम वडे मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानी, दर्शनपरिणाम
वडे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि होय छे. चारित्रपरिणाम वडे सर्वविरतिचारित्रवाळा अने देशविरतिचारित्र-
वाळा नथी. पण चारित्ररहित-अविरति होय छे. वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदी अने पुरुषवेदी नथी, पण नपुंसकवेदी होय छे. असुर

अने वनस्पतिने तेजोलेश्यानो पण संभव छे, कारण के पओमां सोधर्म अने इंधान देवलोक सुधीना देवो आवी उत्पन्न थाय छे.
तेथी कणुं छे के 'तेउलेसावि' तेजोलेश्यावाळा पण होय छे. ए पृथिव्यादि पांचे स्थाचरोमां सास्वादन सम्यक्त्व पण होतुं नथी,
कारण के सिद्धान्तमां तेनो निषेध कर्यो छे, तेथी ज्ञान अने सम्यक्त्वनो अर्ही निषेध कर्यो छे. मिथ्यादृष्टिनो परिणाम संझी
पंचेन्द्रियोने ज होय छे बाकीना जीवोने होतो नथी, माटे तेनो निषेध करवामां आव्यो छे. केटला एक वेइन्द्रियादि जीवने

णवर देवगतिया, कणहलेसाधि जाव तेउलेसाधि, वेदपरिणामेण इत्थिवेदगाधि, पुरिसवेदगाधि, नो नयुसगवे-
दगा, सेस त चेव । एव जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया, इंदियपरिणामेणं ए-
निंदिया, सेस जहा नेरइयाणं, नवर लेसापरिणामेणं तेउलेसाधि, जोगपरिणामेणं कायजोगी, णाणपरिणामो
णत्थि, अण्णाणपरिणामेणं मतिअण्णाणी, सुयअण्णाणी, वसणपरिणामेणं भिच्छदिही, सेस तं चेव । एव आउ-
वणस्सइकाइयाधि । तेऊयाऊ एवं चेव, णवर लेसापरिणामेणं जहा नेरइया । वेइंदिया गतिपरिणामेणं तिरिय-
गतिया, इंदियपरिणामेणं वेइंदिया, सेस जहा नेरइयाणं । णवर जोगपरिणामेणं चयजोगी, कायजोगी, पाणप-
रिणामेण आभिणिपोइियणाणीधि, सुअण्णाणीधि, अण्णाणपरिणामेणं मइअण्णाणीधि, सुयअण्णाणीधि, नो

कुमारो ण एमज जाणवा. परन्तु देवगतिवाळा, कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा, वेदपरिणाम वडे स्त्रीवेदवाळा अने पुरुष
वेदवाळा होय छे, परन्तु नपुमकवेदवाळा होता नथी. चाकी वधु तेमज जाणवु. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमागे सुषी कवेइं. प्रथि-
वीकायिको गतिपरिणाम वडे तिर्यचगतिवाळा अने इन्द्रियपरिणाम वडे एकेंद्रियो होय छे. चाकी वधुं नैरयिकोनी वेडे कवेइं. परन्तु
लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा ण होय छे योगपरिणाम वडे काययोगवाळा होय छे. तेओमां ज्ञानपरिणाम नथी. अज्ञान-
परिणाम वडे मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अने दर्शनपरिणाम वडे भिच्छादृष्टि होय छे. चाकी वधु तेमज जाणवु. अष्कापिको अने चन-
स्पतिकायिको एमज जाणवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको सर्वेधे एमज जाणवु, परन्तु तेओ लेश्यापरिणाम वडे नैरयिकोनी जेम
करण अपयोस्तावस्थामां सासादत्त सम्यक्त्त होय छे, माटे ज्ञानपरिणामवाळा अने सम्यग्दृष्टि ण कहा छे तिर्यच एत्थेन्द्रियोने

ચિત્તમંગળાણી, દંડણપરિણામેણં સમ્મવિદ્ધીચિ, મિચ્છવિદ્ધીચિ, નો સમ્મામિચ્છાવિદ્ધી, સેસં તં ચેવ। एवं जाव च-
 उरिंदिया, णवरं इंदियपरिबुद्धी कायब्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया गतिपरिणामेणं तिरियगतिया। सेसं जहा
 नेरइयाणं, णवरं लेसापरिणामेणं जाव सुक्खलेसाचि। चरित्तपरिणामेणं नो चरिती, अचरितीचि, चरित्ताचरि-
 तीचि, वेदपरिणामेणं इत्थिवेदगाचि, पुरिसवेदगाचि, नपुंसगवेदगाचि। मणुस्सा गतिपरिणामेणं मणुस्सगतिया,
 इंदियपरिणामेणं पंचिंदिया, अणिंदियाचि, कसायपरिणामेणं कोहकसाईचि जाव अकसाईचि, लेसापरिणामेणं
 कण्हलेसाचि जाव अलेसाचि, जोगपरिणामेणं मणजोगीचि जाव अजोगीचि, उवओगपरिणामेणं जहा नेरइया,
 जाणवा. चेइन्द्रियो गतिपरिणाम वडे तिर्यचगतिवाळा અને इन्द्रियपरिणाम વડે વે इन्द्रियवाळा होय છે. चाકી વધું નૈરયિકોની પેઠે
 કહેવું. પરન્તુ યોગપરિણામ વડે વચનયોગવાळा અને કાયયોગવાळा होय છે. જ્ઞાનપરિણામ વડે આભિનિવોધિજ્ઞાની અને શ્રુતજ્ઞાની પણ
 હોય છે. અજ્ઞાનપરિણામ વડે મતિઅજ્ઞાની અને શ્રુતઅજ્ઞાની પણ હોય છે, પરન્તુ વિભંગજ્ઞાની હોતા નથી. દર્શનપરિણામ વડે સમ્યગ્-
 દષ્ટિ અને મિથ્યાદષ્ટિ પણ હોય છે, પરન્તુ સમ્યગ્મિથ્યાદષ્ટિ હોતા નથી. ચાકી વધું તેમજ જાણવું. એ પ્રમાણે યાવત્ ચડરિન્દ્રિયો
 સુધી કહેવું. પરન્તુ ઇન્દ્રિયની સંખ્યા અધિક કહેત્રી. પંચેન્દ્રિયતિયંચો ગતિપરિણામ વડે તિયંચગતિવાळा होय છે. ચાકી વધું નૈરયિ-
 કોની જેમ કહેવું. લેશ્યાપરિણામ વડે યાવત્ શુક્લેશ્યાવાळा પણ હોય છે. ચારિત્રપરિણામ વડે સર્વવિરતિ ચારિત્રવાळा નથી, પણ
 અચારિત્રી—અવિરતિ કે દેશચિરતિચારિત્રવાळा હોય છે. વેદપરિણામ વડે સ્ત્રીવેદી, પુરુષવેદી અને નપુંસકવેદી હોય છે. મતુલ્યો ગતિ-
 છ એ લેસ્યાનો સંભવ છે, માટે મૂલ્યમાં કવું છે કે 'જાવ મુક્કલેસ્યાચિ'—યાવત્ શુક્લેશ્યાવાळा ण હોય છે. તથા દેશચિરતિનો પરિણામ

पाणपरिणामेण आभिगियोदियणाणीवि जाव केवलणाणीवि, अपणाणपरिणामेणं तिग्णिवि अपणाणा, वंस-
णपरिणामेणं तिग्णिवि दसणा, चरित्तपरिणामेणं चरिस्सीवि अचरिस्सीवि चरित्ताचरिस्सीवि, वेदपरिणामेणं इ-
त्थीचेयगावि पुरिसवेदगावि नपुंसगवेयगावि अवेयगावि । वाणमतरा गतिपरिणामेणं देवगतिया, जहा असुर-
कुमारा एवं जोइसियावि, नवरं लेसापरिणामेण तेउलेस्सा । वेमाणियावि एवं चेव, नवरं लेसापरिणामेणं तेउ-

परिणाम वढे मवुप्यगतिवाळा, इन्द्रियपरिणाम वढे पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रिय पण होय छे. क्पायपरिणाम वढे श्लेषकपायी, यावत्
अकपायी होय छे. लेश्यापरिणाम वढे कृष्णलेश्यावाळा यावत् लेश्यारहित होय छे. योग्यपरिणाम वढे मनोयोगी, यावत् अयोगी-
योग्यरहित होय छे. उपयोगपरिणाम वढे नैरयिकोनी जेम जाणवा. ज्ञानपरिणाम वढे आभिनयोधिक्खानी, यावत् केवलज्ञानी पण
होय छे. अज्ञानपरिणाम वढे ज्ञणे अज्ञानो अने दर्शनपरिणाम वढे ज्ञणे दर्शनो होय छे. चारित्र्यपरिणाम वढे सर्वविरतिचारित्र्यवाळा,
चारित्र्यरहित अने देशविरतिचारित्र्यवाळा होय छे. वेदपरिणाम वढे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी, नपुंसकवेदी अने वेदरहित पण होय छे.
व्यन्तरो गतिपरिणाम वढे देवगतिवाळा-इत्यादि असुकुमारीनी पेठे कहेहुं, ज्योतिषिको पण एमज जाणवा, परन्तु तेजो मात्र तेजो-
पण तेकोले थाय छे, माटे कस्यु छे के 'चरित्ताचरिस्सी वि'--चारित्ताचरिस्सी-देशविरतिवाळा पण होय छे ज्योतिषिकोने केवल

१ सयोगी केवळी अने अयोगी केवळीनी अपेक्षाए मनुष्यो अनिन्द्रिय क्खा छे, कारण के केवळीने इन्द्रियोनो उपयोग होतो नथी यद्यपि
केवळीने इन्द्रियनो उपयोग छे, परन्तु मात्र मन नथी, तथा अयोगीने तो इन्द्रिय मत अने मात्र मन वन्ने नथी, माटे अनिन्द्रिय छे

लेसावि पम्हलेसावि सुक्कलेसावि, सेतं जीवपरिणामे ।

४. अजीवपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दसविधे पन्नत्ते, तंज्हा-बंधणपरिणामे १, गति-
लेश्यावाळा होय छे. वैमानिको पण एमज जाणवा, परन्तु लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा, पम्हलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा
होय छे. एम जीवपरिणाम कह्यो.

४. हे भगवन् ! अजीवपरिणाम केटला प्रकारे कह्यो छे ? हे गौतम ! दस प्रकारे कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-१ बंधनपरिणाम, २
तेजोलेश्या ज होय छे, चाकीनी होती नथी, तेथी 'लेसापरिणामेणं तेउलेस्सा' लेश्यापरिणाम वडे तेजोलेश्यावाळा कख्या छे.

४-५. 'बन्धन परिणामे णं भंते ! कतिविधे' हे भगवन् ! बन्धनपरिणाम केटला प्रकारे छे ? इत्यादि. हे गौतम ! 'स्निग्धबन्धनपरिणाम

१. स्निग्धरूक्षत्वाद् बन्धः(तत्त्वार्थ अ. ५. सू. ३२.) स्निग्धपणाथी अने रूक्षपणाथी पुद्गलोनो परस्पर बन्ध थाय छे. एदले स्निग्ध अने रूक्ष पुद्गलोनो संयोग
थाथी स्नेहहेतुक अने रूक्षत्वहेतुक पुद्गलोनो बन्ध थाय छे. ते बन्ध गजातीय अने विजातीय एम त्रे प्रकारनो छे. तेमां स्निग्धनी साये स्निग्धनो बन्ध अने
रूक्षनी साये रूक्षनां बन्ध ते सजातीय अथवा सदश बन्ध छे. अने स्निग्ध अने रूक्षनो परस्पर बन्ध ते विजातीय के विसदश बन्ध छे. आ सूत्र सामान्य
रीते स्नेहहेतुक के रूक्षताहेतुक पुद्गलोना बन्धनुं निधान करे छे. तेनो अपवाद छे ते यतावि छे—“न जघन्यगुणानाम्” (तत्त्वार्थ अ. ५ सू. ३३) जघन्यगुण-
वाळा-एकगुणवाळा स्निग्ध अने जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनो राजतीय अने विजातीय बन्ध थतो नथी. तात्पर्य ए छे के जघन्यगुणवाळा स्निग्ध
पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलोनो जघन्यगुणवाळा स्निग्ध के जघन्यगुणवाळा
रूक्ष पुद्गलोनो साये बन्ध थतो नथी. कारण के तेमां परिणामनी शक्तिनो अभाव छे. जघन्य स्नेहगुण थोडो होयाथी जघन्यगुणवाळा रूक्ष पुद्गलने परिणामावा
समर्थ नथी. आ सूत्रनो फलितार्थ ए छे के—मयमगुणवाळा के उच्छृगुणवाळा स्निग्ध अने रूक्ष पुद्गलोनो सदश के विसदश बन्ध थाय छे. तेनो पण अपवाद

परिणामे ३, सठाणपरिणामे ४, भेदपरिणामे ४, वणणपरिणामे ५, गंधपरिणामे ६, रसपरिणामे ७, फासपरिणामे ८, अगुरुलघुपरिणामे ९, सङ्घपरिणामे १० ।

गतिपरिणाम, ३ सस्यानपरिणाम, ४ भेदपरिणाम, ५ वणंपरिणाम, ६ गन्धपरिणाम, ७ रसपरिणाम, ८ स्पर्शपरिणाम, ९ अगुरुलघुपरिणाम, अने १० शब्दपरिणाम.

अने रुक्षगन्धनपरिणाम ५ वे प्रकारे छे स्निग्ध छता तेना यन्धनो परिणाम से स्निग्धयन्धनपरिणाम अने रुक्ष छता तेना यन्धनो

छे, से अणवे छे—गुणसाम्ये सहस्रानाम्' (तत्पार्थ ५ सू. १५) गुणनी समानता होय तो सहस्रानो रूप यतो नथी तत्पार्थ ५ छे के गीष्वाता, अरुन्ध्याता क यातस्-अन्त गुणवाळा क्षिप्र पुद्गलोनो देस अ प्रप्रत्ता क्षिप्र पुद्गलोनो देस प्रकृता स्स पुद्गलोनो समानगुणवाळा स्स पुद्गलोनो साथे यन्ध यतो नथी. तनो फलितार्थ ८ थाय छे के गुणनी नियन्ता होय तो सहस्र पुद्गलोनो रूप थाव छे, अने गुणनी समानता होय तो विसहस्र पुद्गलोनो रूप थाय छे. हवे गुणनी नियन्तानी सर्वाक्षने नियत करे छे—'द्वयधिकारियुग्मा तु' (तत्पार्थ ५ सू. १५) वे, त्रण आदि गुण-अंश बडे अधिक होय तो क्षिप्र अने स्स पुद्गलोनो सहस्र रूप पण थाय छे जेमके—एक अपन्यगुणवाळो क्षिप्र परमाणु होय तो त्रिगुण क्षिप्र परमाणुनी साथे रूप थाय छे, त्सेम अपन्यगुणवाळा स्स परमाणुनी द्विगुणाधिक-त्रिगुण स्स परमाणुनी साथे रूप थाव छे एट्ठे आ तथा सूत्रोत्तु तत्पार्थ ५ छे के—१ अपन्यगुणवाळा क्षिप्र के स्स पुद्गलोनो अपन्यगुणवाळा क्षिप्र के स्स परमाणुओ साथे सहस्र के विसहस्र रूप यतो नथी १ अपन्यगुणवाळा पुद्गलोनो एकाधिक अपन्यगुणवाळा पुद्गलोनो साथे सहस्र रूप थाव छे, अपन्यगुणवाळा साथे द्विगुणाधिक पुद्गलोनो सहस्र अने विसहस्र रूप थाय छे. अपन्य गिवायना गुणवाळा पुद्गलोनो साथे त्ता समान अपन्यगुण गिवायना पुद्गलोनो सहस्र रूप यतो नथी, विसहस्र रूप थाय छे अपन्य गुण गिवायना पुद्गलोनो साथे एकाधिक अपन्येतर पुद्गलोनो सहस्र रूप यतो नथी पण विसहस्र रूप थाय छे अपन्येतर गुणवाळा पुद्गलोनो द्विगुणाधिकदि अपन्येतर पुद्गलोनो साथे सहस्र अने विसहस्र रूप थाय छे.

५. बंधनपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुचिहे पन्नत्ते, तंजहा-णिद्धबंधनपरिणामे, लुक्ख-
बंधनपरिणामे य ।

समणिद्धयाए बंधो न होति समलुक्खबयाएचि ण होति । वेमायणिद्धलुक्खत्तणेण बंधो उ खंधाणं ॥१॥

णिद्धस्स णिद्धेण दुयाहिएणं लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएणं ।

निद्धस्स लुक्खेण उवेइ बंधो जहण्णवज्जो विसमो समो वा ॥ २ ॥

५. हे भगवन् ! बंधनपरिणाम केटला प्रकारनो कखो छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनो कखो छे. ते आ प्रमाणे-स्निग्धबंधनपरिणाम
अने रुक्खबंधनपरिणाम. “स्कन्धोनी समान स्निग्धपणामां के समान रुक्खपणामां परस्पर बंध थतो नथी. परन्तु विपम स्निग्धपणाअने
विपम रुक्खपणामां बंध थाय छे. स्निग्धनो द्विगुणादि अधिक स्निग्धनी साथे अने रुक्खनी द्विगुणादि अधिक रुक्खनी साथे बंध थाय
छे. तथा स्निग्धनी रुक्खनी साथे जघन्यगुण सिंघाय विपम होय के सम होय तो बंध थाय छे. एटले के एकगुणा स्निग्ध के एक

परिणाम ते रुक्खबंधनपरिणाम. केवा प्रकारना स्निग्ध अने केवा प्रकारना रुक्खनो बन्धनपरिणाम थाय छे ? प माटे बंधनपरिणामजुं
लक्ष्ण-स्वरूप बतावे छे-‘समनिद्धयाए’ इत्यादि. स्कंधनो ‘समस्निग्धतायां’ परस्पर समानगुण स्निग्धतामां बन्ध थतो नथी. तथा परस्पर
‘समरुक्खतायां’ समानगुण रुक्खतामां पण बन्ध थतो नथी, परन्तु ‘विमात्रस्निग्धरुक्खत्वेन’ जो स्निग्धतानी के रुक्खतानी विपम मात्रा-
प्रमाण होय तो परस्पर बन्ध थाय छे. तात्पर्य प छे के समानगुण स्निग्ध परमाणु आदिनो समानगुण स्निग्ध परमाणु वगेरनी साथे
संबन्ध थतो नथी, तेम समानगुणवाळा रुक्ख परमाणु आदिनो समानगुणवाळा रुक्ख परमाणु आदिनी साथे संबन्ध थतो नथी, परन्तु
जो विपमगुणवाळो होय तो स्निग्ध स्निग्धनी साथे अने रुक्ख रुक्खनी साथे स्नेह के रुक्खपणजुं विपम प्रमाण होवाथी तेओनो

गतिपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! बुधिहे पन्नत्ते, तंजहा-कुसमाणगतिपरिणामे य अकु-
समाणगतिपरिणामे य ! अहवा वीहगइपरिणामे य हस्सगइपरिणामे य २ । संवाणपरिणामे णं भंते ! कतिविधे
गुण रुक्खरूप जवन्य गुणने छोडीने वाकीना सम के विपमगुणवाळा स्निग्ध के रुक्खनी परस्पर बंध थाय छे, हे भगवन् ! गतिपरिणाम
केटला प्रकारनो कसो छे ? हे गौतम ! वे प्रकारनो कसो छे, ते आ प्रमाणे-सृशुद्रत्तिपरिणाम अने असृशुद्रत्तिपरिणाम

परस्पर बन्ध थाय छे 'विपममात्रा पढे बन्ध थाय छे' एम कसु, बाटे विपम मात्रानु निरूपण करे छे--'पिदस्स पिन्देण बुयादि
पण' इत्यादि जो स्निग्ध परमाणुआविनो स्निग्धगुणवाळा परमाणुआविनी साथे बन्ध थाय तो अवश्य वे त्रण आदि अधिकगुणवाळा
परमाणुआविनी साथे थाय, जो रुक्खगुणवाळा परमाणु वगेरेनो बन्ध थाय तो एण वे त्रण आदि
अधिकगुणवाळा परमाणु आविनी साथे ज थाय, अन्यथा न थाय जो स्निग्धनो रुक्खनी साथे बन्ध थाय तो केवी रीते थाय ? ते
बताये छे--'पिदस्स लुक्खेण' इत्यादि स्निग्धनो रुक्खनी साथे बन्ध थाय तो जबन्यगुण सिवाय विपम के समान होय तो बन्ध थाय
छे तात्पर्य प छे के पकगुण स्निग्ध के पकगुण रुक्खने छोडी वाकीनानो यथा विगुणाधिक खिग्धादि के विगुणाधिक रुक्खनिनी साथे बन्ध थाय छे
यम बन्धनपरिणाम कसो हवे गतिपरिणाम काहे छे--'गएपरिणामे णं भंते' ! हे भगवन् ! गतिपरिणाम केटला प्रकारे छे-इत्यादि वे प्रकारनो
गतिपरिणाम छे-सृशुद्रत्तिपरिणाम अने असृशुद्रत्तिपरिणाम तेमां अन्य वस्तुने स्पर्श करतां छता जे गतिपरिणाम ते सृशुद्रत्तिपरिणाम जेम के
पाणीना उपर प्रयत्नयी तीरछी फेकेली ठीकरी बन्धे रहेला पाणीनो स्पर्श करती करती चाली जाय छे प घात चालजन प्रसिद्ध छे तथा
कोइ पण बीनी वस्तुने स्पर्श नहि करता छतां वस्तुनो गतिपरिणाम ते मसृशुद्रत्तिपरिणाम जे वस्तु (गति करता) बन्धे रहेलो कोइ
पण वस्तुनी साथे स्पर्श न करे तेनो असृशुद्रत्तिपरिणाम जाणवो, बीजा आचार्यो आ प्रमाणे समजाये छे--जे गतिपरिणाम बडे
प्रयत्नविशेषयी क्षेत्रना प्रवेशोने स्पर्श करता गति करे ते सृशुद्रत्तिपरिणाम अने जे गतिपरिणाम बडे क्षेत्रना प्रवेशोने स्पर्श कयां

पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पणत्ते, तंजहा-परिमंडलसंठाणपरिणामे, जाव आयतसंठाणपरिणामे ३। भेदपरि-
णामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-खंडाभेदपरिणामे, जाव उक्करियाभेद-
परिणामे ४। वंणपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे पन्नत्ते, तंजहा-कालवण-
परिणामे, जाव सुक्किच्छवणपरिणामे ५। गंधपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते,
तंजहा-सुभिभंगंधपरिणामे दुब्भिभंगंधपरिणामे य ६। रसपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! पंच-
विधे पन्नत्ते, तंजहा-तित्तरसपरिणामे जाव मधुररसपरिणामे ७। फासपरिणामे णं भंते ! कतिविधे पन्नत्ते ?

अथवा दीर्घगतिपरिणाम अने ह्रस्वगतिपरिणाम. हे भगवन् ! संस्थानपरिणामना केटला प्रकार छे ? हे गौतम ! पांच प्रकार छे. ते आ
प्रमाणे-१ परिमंडलसंस्थानपरिणाम, यावत्-आयतसंस्थानपरिणाम. हे भगवन् ! भेदपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? हे गौतम !
पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे-१ खंडभेदपरिणाम अने यावत् ५ उत्करिका भेदपरिणाम. हे भगवन् ! वर्णपरिणाम केटला
प्रकारे छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-१ कृष्णवर्णपरिणाम, यावत् ५ शुक्लवर्णपरिणाम. हे भगवन् ! गंधपरिणाम
केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! वे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे-१ सुरभिगन्धपरिणाम अने दुरभिगन्धपरिणाम. हे भगवन् ! रसपरिणाम
केटला प्रकारे छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-१ तित्तरसपरिणाम, यावत् ५ मधुररसपरिणाम. हे भगवन् ! स्पर्श-

स्वियाय गति करे ते अस्पृशद्गतिपरिणाम. परन्तु आ वात असे समजी शकता नथी, कारण के आकाश सर्वव्यापी होवाथी तेना
प्रदेशोनो स्पर्श कर्या स्वाय गतिनो असंभव छे. अथवा आ विचार बहुश्रुतोथी जाणवो. अहीं गतिपरिणाम अन्य प्रकारे वतावे छे-

चौदसमं कसायपर्यं ।

१. कति णं भंते ! कसाया पणत्ता ? गोयसा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तंजहा-कोहकसाए. माणकसाए, मायाकसाए, लोभकसाए । नेरइयाणं भंते ! कनि कसाया पन्नत्ता ? गोयसा ! चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तंजहा-

चौदसुं कपाय पद.

१. हे भगवन् ! कंटला कपायो कया छे ? हे गौतम ! चार कपायो कया छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधकपाय, मानकपाय, मायाकपाय, अने लोभकपाय. हे भगवन् ! नेरथिकोने कंटला कपायो कया छे ? हे गौतम ! चार कपायो कया छे. ते आ प्रमाणे-क्रोधकपाय,

१. प प्रमाणे तेरसा पदनी व्याख्या करी, इद्वे चौदसा पदनी व्याख्यालो प्रारंभ कराय छे, तेनो संख्य आ प्रमाणे छे-पूर्वना पदगो सामान्यरूपे गत्यादिरूपे जीवन्तो परिणाम फरगो. अने सामान्य विशेषनिन्द-विशेषने आश्रयी रहलुं छे, तेथी तेज परिणाम कोइक स्थले विशेषरूपे प्रतिपादन कराय छे, तेमां फेकेन्द्रियोने पण कपायो होवाथी अने " सकरायत्वाज्जीवः रुमणो योग्यान् पुरल्लानादत्ते " ॥ (अ० ९ सू० २) कपायसहित होवाथी जीव कर्मने योग्य पुद्गले ग्रहण करे छे-पया तत्कार्य सूत्रना नन्वन्थी कपायो वन्धनुं प्रधान कारण होवाथी प्रारंभमांज कपायपरिणामनुं विशेषरूपे प्रतिपादन करवा माटे आ पदगो आरंभ कराय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे- 'कइ णं भंते कसाया पन्नत्ता' ?-हे भदन्त-परमकल्याणना योग्याज्जा भगवन् ! कंटला कपायो कया छे ? तेमां 'कइ' धातु रोडवा अर्थमां छे 'कुरन्ति'-मुन दुःगरूप धान्य उदाहर करवा माटे जे कर्मरूप अंगने रोडे छे ते कपायो. अथी उणादि संख्यी 'आय' प्रत्यय अने निपात होवाथी ककारलो अकार थयेलो छे. अथया 'कलुरयन्ति' मुन स्वभावपाळा छातां आत्माने कर्मधी मलिन करे ते कपायो. पूर्वनी पंठे आय प्रत्यय थाय छे अने निपात होवाथी णिच् प्रत्ययाल कलुर शब्दगो 'कर' आदेश थाय छे. कइं छे के-

कोहकसाए, जाव लोमकसाए । एवं जाव वेमाणियाणं ।

२ कतिपतिट्टिए ण भंते । कोहे पन्नत्ते । तजहा-आयपतिट्टिए, परप-

याव लोमकपाय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणयुं.

२. हे भगवन् ! क्रोध केटलां स्यानेने विपे रहेलो छे । हे गौतम क्रोध चार स्यानेने विपे रहेलो छे. ते आ प्रमाणे-१ आत्म-

“ सुहृदुक्खदुस्वार्थं कम्मखेचं कसति ते जग्हा । कसुमंति न च जोवं तेण कथाय सि दुष्चंति ” ॥

जे कारणधी मुज-दु'परूपी यहुधान्ययाळा कर्मक्षेत्रेने खेहे छे अथवा जीवने कसुपित्त-मलिन करे छे ते माटे कथायो कहेवाय छे उत्तर स्वयनो अर्थ स्पष्ट छे नैरयिकादि षडकसूत्र एण सुगम छे

२. 'कएपट्टिए ण भंते कोहे'-हे भगवन् ! केटला स्यानेने विसे क्रोध रहेलो छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! चार स्यानेने विपे क्रोध रहेलो छे ते आ प्रमाणे- 'भारमप्रतिष्ठित' इत्यादि भातमाने विशेष रहेलो, पोताने अचलयीने उत्पन्न थयेलो होय ते, सात्पर्य ए छे के पोते आचरेला दुपचारु कळ वेदिक दुस्करुण जाणीने क्रोध पोताना उपर न गुस्सो करे त्पारे आत्मप्रतिष्ठित क्रोध कहेवाय छे, २ ज्यारे बीजो भाग्नेश-तिरस्कार धगेरे करवाधी गुस्सो उत्पन्न करे त्पारे तेना उपर क्रोध थाय छे ते परप्रतिष्ठित आ नैगमनयना मतधी कथन छे कारण के नैगमनय तेना विषयमात्र धटे तेने विपे स्थिति माने छे जेम के 'जीवनां सम्यग्दर्शनं, अजीवमां सम्यग्दर्शनं'-इत्यादि आठ भागा सम्यग्दर्शना अधिकरणता विचाएप्रसवो 'भावदयक सूत्रमा कहेला छे तदुम

१ नाणावरणिज्जास्म य दसणभोइस्स तद्द खभोयसमे । जीवमजीवि अट्टु भगेसु उ होर सस्यथ ॥

इत्तावरणीयिनो तथा दर्शनमोहनीयको हायोपधम चीव अने अर्धी आठ भागाअमां बणे होय छे. त मांगा आ प्रमाणे छे-१ जीव, २ अर्धी,

तिष्ठि, तदुभयपतिष्ठि, अप्पइडिते । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं दंडतो । एवं माणेणं दंडतो, मायाए दंड-
ओ, लोभेणं दंडओ ।

प्रतिष्ठित, २ परप्रतिष्ठित, ३ तदुभयप्रतिष्ठित अने ४ अप्रतिष्ठित. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने दंडक कहेवो. एम मान,
माया अने लोभने आश्रयी दंडक कहेवो.

यप्रतिष्ठित-पोताने अने परने अवलंबोने जे क्रोध थयेलो होय ते. जेस के कोद मनुष्य तेवा प्रकारने अपराध करवाथी पोताना उपर
अने बीजाना उपर गुस्सो करे ते. अप्रतिष्ठित—ज्यारे पोताना दुराचार के परना आक्रोशादि सिवाय केवल क्रोधवेदनीयना उदयथी
निष्कारण कोप थाय छे ते, ते क्रोध आत्मप्रतिष्ठित नथी, कारण के पोतानो दुराचार नहि होवाथी पोतानो आत्मा ते क्रोधनो चिपय
थतो नथी, तेस परप्रतिष्ठित पण नथी, कारण के बीजो निरपराधी होवाथी अने तेना उपर अपराधनी संभावना नहि होवाथी ते पण

३ बहु जीव, ४ बहु अजीव, ५ जीव अने अजीव, ६ जीव अने बहु अजीव, ७ बहु जीव अने अजीव, ८ बहु जीवो अने बहु अजीवो—ए आठ भांगा-
ओमा सम्यग्दर्शन होय छे. तेमां जिनना उपदेसाधी दर्शनगोहूनी क्षयोपगम थयेलो होय तो जिनने विज्ञे सम्यग्दर्शन कहेवाय छे. १. तेमां एक जिनप्रतिमा
निमित्त होय तो अजीवने विज्ञे कहेवाय छे. २. तेमां घणा साधुओं निमित्त होय तो बहु जीवो सम्यग्दर्शनं अधिक्करण कहेवाय छे. ३. घणी प्रतिमाओ नि-
मित्त होय तो बहु अजीवो सम्यग्दर्शनं अधिक्करण छे. ४. एक साधु अने एक जिनविच सम कळे निमित्त होय तो जीव अने अजीव अधिकरण छे, ५. एक
साधु अने घणी जिनप्रतिमाओ निमित्त होय तो जीव अने बहु अजीवो अधिकरण छे. ६. घणा साधुओ अने एक जिनविच निमित्त होय तो बहु जीवो अने
अजीव सम्यग्दर्शनं अधिक्करण छे. ७. घणा साधुओ अने घणा जिनविचो निमित्त होय तो बहु जीवो अने अजीवो सम्यग्दर्शनं अधिक्करण छे. ८. जुओ. आ.
रा. आग्दयटीका प. ३८०.

३. कनिहि णं भंते ! ठाणेहि कोटुप्पत्ती भवति ! चउहिं ठाणेहिं कोटुप्पत्ती भवति, तंजहा-खेतं पडुच, वत्तुं पडुच, सरीर पडुच, उवहिं पडुच । एवं नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं । एवं माणेणवि मायाएवि लोभे-
 ३. हे भगवन् ! केटलां सानोए क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे ? हे गौतम ! चार सानोए क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे. ते आ प्रमाणे-
 १ क्षेत्रनेआश्रयी, २ वस्तुनेआश्रयी, ३ शरीरनेआश्रयी अने ४ उपधिनेआश्रयी. ए प्रमाणे नैरयिकोथी माही वैमानिक सुधी जाणवु.
 क्रोधनो विषय नथी, तेम उभयप्रतिष्ठित एण नथी यळी कोइने कत्रचित् ए प्रमाणे केयळ प्रोचवेदनीयता उवयथी क्रोध उत्पन्न थाय छे, अने ते पाळ्ळथी कहे छे- 'अरे मने निष्कारण गुस्सो उत्पन्न थयो हतो, कारण के कोइ एण माळ ररायण चोळतु नथी, तेम माय कर यगाडतु नथी' मारेल पूर्वना महपिओए काणु छे-

“ सापेक्षाणि निरपेक्षाणि च कर्माणि फलविपाकेणु । सोपक्रम निरुपक्रमं च दृष्टं यथाऽऽयुक्तम् ॥ ”

कर्माँ फळविपाकमा सापेक्ष अने निरपेक्ष होय छे जेम के आयुष सोपक्रम-उपक्रमसापेक्ष अने निरुपक्रम-उपक्रमनिरपेक्ष होय छे ए प्रमाणे मान, माया अने लोभ एण आत्मप्रतिष्ठित, परप्रतिष्ठित उभयप्रतिष्ठित अने अप्रतिष्ठित जाणवा
 ३. ए प्रमाणे अधिकरणता मेवथी क्रोधनो मेव फलो, हवे कारणना मेवथी मेव थताये छे- 'कतिहिण मते ! ठाणेहिं कोटुप्पत्ती हवइ इत्यादि-हे भगवन् ! केटला स्थाने क्रोधनी उत्पत्ति थाय छे ? 'तिष्ठन्त्येभिरिति स्थानानि' जे पडे कार्यनी स्थिति होय ते स्थान-कारण, अही केटला कारणो वडे क्रोध उत्पन्न थाय छे ? भगवान् उत्तर आपे छे- चार स्थानो-कारणो वडे प्रोधनी उत्पत्ति थाय छे, ते स्थानो कहे छे- 'खेच पडुच' क्षेत्र प्रतीत्य-क्षेत्रने आश्रयी, तेमा नैरयिकोने नैरयिक क्षेत्र आश्रयी, तिर्यञ्चोने तिर्यञ्च क्षेत्र आश्रयी, मनुष्योने मनु-प्यक्षेत्र आश्रयी अने देयोने देयक्षेत्र आश्रयी, 'यत्तु पडुच' मचेतन के अचेतन वस्तुने आश्रयी, 'शरीरं प्रतीत्य' एतएव आहतिवाळा के वेडोळ शरीरने आश्रयी, 'उपधिं प्रतीत्य' उपधि-उपकरणने आश्रयी एटले जेनु उपकरण चोर वगैरेथी हरण करायेलु होय के

णवि, एवं एतेषु चत्वारि दंडगा ।

४. कतिविधे णं भंते ! कोधे पणत्ते ? गोयसा ! चउव्विहे कोहे पन्नत्ते, तंजहा-अणंताणुबंधी कोहे, अपच्च-
क्खाणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, संजलणे कोहे । एवं नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं । एवं माणेणं मायाए लो-
भेणं, एएवि चत्वारि दंडगा ।

एम मान, माया अने लोभने आश्रयी दंडक कहेवो. ए चार दंडको कब्बा.

४. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो क्रोध कब्बो छे ? हे गौतम ! चार प्रकारनो क्रोध कब्बो छे. ते आ प्रमाणे-? अनंतानुबंधीक्रोध,
२ अपत्याख्यान क्रोध, ३ प्रत्याख्यानवरण क्रोध अने ४ संज्वलन क्रोध. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत्-वैमानिकोने कहेवुं. एम
मानं, माया अने लोभ संबंधे जाणवुं. ए चार दंडको कब्बा.

न हरण करयेवुं होय तेने आश्रयी, ए चार कारणो चडे क्रोधनो उत्पत्ति थाय छे. ए प्रमाणे नैरयिकादि दंडकनुं सूत्र पण जाणवुं.

४. हवे सम्यग् दर्शनादि गुणना घाती होवाथी कभायोનો भेद कहे छे-‘कइविहे णं भंते ! कोधे पत्तत्ते ?’ ‘हे भगवन् ! केटला
प्रकारनो क्रोध कब्बो छे ? इत्यादि. अनन्तानुबन्धी वगैरेनो शब्दार्थ आगळ कर्मप्रकृति पदसां कब्बीशुं. भावार्थ आ छे-सम्यग्दर्शनगुणनो
विघात करणार अनन्तानुबन्धी, देशविरति गुणनो घाती अप्रत्याख्यान, सर्वविरति गुणनो घात करणार प्रत्याख्यानवरण अने यथाख्यात
चारित्रनो विघात करणार संज्वलन कपाय छे. ए चारे कपायोनी पण नैरयिकादि दंडकना क्रमथी विचार करे छे-‘एवं नेरइयाणं’ इत्या-
दि. ए. प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने कहेवुं. एम मान, माया अने लोभना प्रत्येकना चार चार प्रकार सामान्य रीते
दंडकना क्रमथी विचारवा.

५. कतिचिदे षं भंते ! कोधे पन्नत्ते ? गोयमा ! खउव्विहे कोहे पन्नत्ते, तंजहा-आमोगनिव्वत्तिण, अणामो-
गनिव्वत्तिण, उवसंते, अणुवसंते । एव नेरइयाणं जाध वेमाणियाणं । एवं माणेणधि, मायाएधि, लोभेणधि
वत्तारि वंडगा !

६. जीवा णं भंते ! कतिहिं ठणेहिं अट्ट कम्मपग्गीओ चिणिंसु ? गोयमा ! खउहिं ठणेहिं अट्ट कम्मपग्ग-

५. हे भगवन् ! केटला प्रकारो क्रोध कसो छे ? हे गौतम ! चार प्रकारो कसो छे. ते आ प्रमाणे-१ आसोयनिर्वर्तित, २
अनामोगनिर्वर्तित, ३ उपघान्त अने ४ अनुपघान्त, ए प्रमाणे नेरयिकोधी आरंसी वेमानिको सुधी जाणवुं. एम मान, माया, अने
लोभने आशयी पण चारे दंडको जाणवा.

६. हे भगवन् ! जीवोए केटलां साने आठ कर्मनी प्रकृतिओनो खय कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार साने आठ कर्मनी प्रकृति-

५. हये ए क्रोधादिना उत्पत्तिमेदधी अने भवस्थामेदधी मेद यतावे छे-धीजानो अतराथ साटी रीते जाणीने अने कोपनु कारण
व्यवहारधी सबळ मानी 'आ सिवाय एने शिक्षा नहिं थाय' एम विचारी ज्यारे कोप करे त्यारे से कोप आमोगनिर्वर्तित-
विचारपूर्वक थयेलो कहेयाव छे ज्यारे ए प्रमाणे ज तेवा प्रकारा मुद्धर्तना यशधी गुणवोयती विचारणाशून्य आमा परत्यश थाने
कोप करे छे त्यारे से कोप अनामोगनिर्वर्तित कहेयाव छे उपघान्त-अनुपघायस्थाने नहिं प्राप्त थयेलो अने अनुपघान्त-उदयायस्थाने
प्राप्त थयेलो ए प्रमाणे ए सबन्धे दंडकत्तए पण विचारए पम मान, माया अने लोभ ए प्रत्येकना चार चार प्रकार सामान्य रीते
अने दंडकना प्रमथी जाणवा

६. हये फळना मेदधी त्रिकाळवर्ती जीवोने मेद यतावे छे- 'जीवा ण भंते ! कतिहिं ठणेहिं अट्टकम्मपग्गीओ चिणिंसु' इत्यादि

डिओ चिणिंसु, तंजहा-कोहेणं, साणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइयाणं जाव वेसाणियाणं । जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ चिणंति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं, तंजहा-कोहेणं, साणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइया जाव वेसाणिया । जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ चिणिसंस्ति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ चिणिसंस्ति, तंजहा-कोहेणं, साणेणं, मायाए, लोभेणं । एवं नेरइया जाव वे-

ओनो चय कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे-१ क्रोध वडे, २ मान वडे, माया वडे अने लोभ वडे. एम नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो केटलां स्थाने-कारणे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय करे छे ? हे गौतम ! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो चय करे छे. ते आ प्रमाणे-क्रोध वडे, मान वडे, माया वडे अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो केटलां कारणे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय करशे ? हे गौतम ! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो चय करशे. ते आ प्रमाणे-क्रोध, मान, माया अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी मांडी वैमानिको सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! जीवो केटलां

हे भगवन् ! जीवोए केटला स्थान-कारणे वडे आठ कर्मनी प्रकृतिओनो चय कर्यो हतो ? कथायपरिणतिवाळा आत्माने कर्मपुद्गलोनुं मात्र ग्रहण थंनुं ते चय. भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! चार कारणोए चय कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे-क्रोध, मान, माया अने लोभ वडे. ए प्रमाणे नैरयिकादि दंडकने विषे कहेवुं. आ दंडक अतीतकाळ विषयक छे, एम वर्तमान काळ अने भविष्य काळ विषयक दंडको कहेवा. ए रीते उपचय, वन्ध, उंचीरणा, वेदन अने निर्जरा संवन्धे दरेकना त्रण त्रण दंडक जाणवा. एम सर्व संख्या वडे अठार दंडको कहेवा. तेमां पोताना अथाधाकाळनी पछी ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलोने वेववा माटे निषेक-रचना थवी ते उपचय.

माणिया । जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडिओ उवचिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ उवचिणिंसु, तजहा-क्रोहेण, माणेणं, मायाए, लोमेणं । एवं नेरइया जाव वेमाणिया । जीवा णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति जाव लोमेणं, एवं नेरइया जाव वेमाणिया । एवं उवचिणि-स्संति । जीवा णं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपगडीओ वधिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ट कम्मपग-

कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो उपचय कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार कारणे-क्रोध, मान, माया अने लोभ बडे. ए प्रमाणे नैरयिकोथी माही यावत्-वैमानिको सुधी जाणु. हे भगवन् ! जीवो केटला कारणे-इत्यादि पृच्छ. हे गौतम ! चार कारणे यावत् लोभ बडे उपचय करे छे. एम नैरयिकोथी आरमी यावत् वैमानिको सुधी जाणु. एम 'उपचय करेशे' ए सवन्धे एअ जाणु. हे भगवन् ! जीवोए केटला कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो वध कर्यो हतो ? हे गौतम ! चार कारणे आठ कर्मप्रकृतिओनो वंध कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे-क्रोध बडे, मान बडे, यावत् लोभ बडे. ए प्रमाणे नैरयिको यावत् वैमानिको जाणवा. बांधी हती, बांधे छे अने

ते आ प्रमाणे-प्रथम स्थितिमां सौधी अधिक कर्मदल होय के, योही स्थितिमा विशेष हीन, तेथी योही स्थितिमा विशेष हीन, एम विशेषहीन विशेषहीन स्या सुधी जाणु के ज्या सुधी ते बळे बांधेला कर्मनी छेही स्थिति होय ए सवन्धे कर्मप्रकृति-टीकामां अने पचत्तप्रहणी टीकामा सविस्तर कसु छे त्याथी जाणी छेसु पन्धन-पूर्वोक प्रकारे पोतयेताना अबाधाकाळनी पडीना काळमां नियेक-रचनाने प्राप्त थयेला ज्ञानावरणीयादि कर्मपुद्गलेने पुन' कयायना परिणामविशेषयो निकाचित करया, उदय ममयने नदि प्राप्त थयेला कर्मपुद्गलेने उदीरणा करणना सामर्थ्यथी उदयावलिकामा प्रवेश कराययो ते उदीरणा ते उदीरणा एण फोर कर्मने

द्विओ बंधिसु, तंजहा-कोहेणं, माणेणं, जाव लोभेणं, एवं नेरइया जाव वेमाणिया, बंधिसु, बंधिसंति, बंधिस्संति, उदीरेसु, उदीरंति, उदीरिस्संति, वेदिसु, वेदंति, वेदइस्संति, निज्जरिसु, निज्जरंति, निज्जरिस्संति, एवं एते जीवा-इया वेमाणियपज्जवसाणा अट्टारस दंडगा जाव वेमाणिया निज्जरिसु निज्जरंति निज्जरिस्संति ।

बांधशे, उदीरी हती, उदीरे छे अने उदीरशे. वेदी हती, वेदे छे अने वेदशे, निर्जरा करी हती, निर्जरा करे छे अने निर्जरा करशे. ए प्रमाणे जीवथी मांडी वैमानिक पर्यन्त (प्रत्येकना) अन्नर दंडक जाणवा. यावत् वैमानिकोण् निर्जरा करी हती, निर्जरा करे छे अने निर्जरा करशे. (संग्रहणी गाथानो अर्थ--) आत्मप्रतिष्ठित, क्षेत्रने आश्रयी, अनंतानुबन्धी, आभोग, चय, उपचय, बंध, उदीरणा,

तथाविध कर्मायना परिणामविशेषथी श्राय छे, माटे एम हापुं छे के 'उदीरंति' उदीरंति. उदीरिस्संति--चार स्थाने उदीया एता, उदीरे छे अने उदीरशे. अन्यथा कर्माय सियाय एणं शीणमोह गुणस्थानके ज्ञानावरणादि कर्मनी उदीरणा करनार होय छे. गेतपोताना अयाथाकाळो श्रय थगाथी सभावथी उद्यने प्राप्त थयैला प्रथवा उदीरणा करणवे उद्यने प्राप्त थयैला कर्मनो उपभोग करयो ते देखना. कर्मपुद्गलेन भोगयो भोगयोने अकर्मरूपे करवां ते निर्जरा. अथात् आत्मप्रवेशो माधे लागेलं ज्ञाना-वरणीयादि कर्मपुद्गलेने भोगयोने नाश करनो. कर्णं छे कं. "पुत्रकयकम्मस्ताडण निज्जरा"-पुद्गल कर्मनो नाश करयो ते निर्जरा. आ देशनिर्जग जाणवी. कारण के ते कर्मायजन्य छे, एण सयं निर्जरा न ममज्जी. कारण के ते सयं निर्जग जेजे सयंयोगनो रोध कर्यो छे एवा कर्मायरहित आत्मने मोक्षरूपी प्रान्ताव उपर चढतां होय छे, यीजा जीवने होती नथी. ए माटेज चोवीश वंडक संयन्धी सूत्र एण अधिक्रम समजं. केमके देशनिर्जग प्रमेशां यथा जीवने होय छे. हवे सूत्रकार शिष्य उपर उपकार करवा माटे जे जे पदने आश्रयी पूर्व सूत्रो कर्णां छे ते पयोने संग्रहणी गाथा वचे निर्देश करे छे--'आयपतिट्ठियं' इत्यादि. प्रथम कर्मायनो भेद यत्तावनार सामान्य सूत्र

आतपतिष्ठिय खेत्तं पशुच गन्तानुयंथि आभोगे । विण उवचिण यंथ उवीर वेद तह निज्जरा खेव ॥ १ ॥
इति पण्णवणाए भगवइए चोइसमं कसायपपं समत्तं ।

वेदना तथा निर्जरा ए पदसहित सूत्रो जाणवा.

प्रज्ञापना भगवतीमा चौवसु कयाय पइ समात्त.

अत्यत प्रसिद्ध होषायी तेनो संग्रह कर्यो भयी, यीसु आत्मप्रतिष्ठित पदसहित सूत्र, त्यार पजी भनन्तासुअन्धीपदसहित सूत्र, त्यार यत्त आमोगपदसहित सूत्र, त्यार पजी थय, उपखय, कन्ध, उवीरण, वेदना मने निर्जरा संपन्थे अनुकमे सुत्तो जाणया मदी मूलमं 'विण'-चयपद उपखयत्तमनु उपलक्षण-सूत्रक छे.

श्रीमदाचार्यमल्लयागिरिविहित प्रज्ञापना टीकायां चौवसु कयायपद समात्त.

संठाणं बाहल्लं पोहत्तं कतिपदेस ओगाढे । अप्पाबहु पुह पविट्ट विसय अणगार आहारे ॥ १ ॥
अद्दाय असी य मणी दुद्ध पाणे तेह्ल फाणिय वसा य । कंबल थूणा थिगल दीवोदहि लोगल्लोगे य ॥ २ ॥

पंदरमुं इन्द्रिय पद—प्रथम उद्देशक

१ संस्थान, २ बाहल्य-जाडाइ, ३ पृथुत्व-विस्तार, ४ कतिप्रदेश-केटला प्रदेशवाळी, ५ अवगाढ-केटला प्रदेशमां रहल, ६ अल्पबहुत्व, ७ स्पृष्ट, ८ प्रविष्ट, ९ विषय, १० अनगार, ११ आहार, १२ आदर्श, १३ असि, १४ मणि, १५ दूध, १६ पानक, १७ तेल, १८ फाणित, १९ वसा, २० कांबल, २१ स्थूणा-स्तंभ, २२ थिगल-आकाशना थीगडारूप, २३ द्वीपोदधि, २४ लोक अने २५ अलोक संबंधे पहेला उद्देशकमां पचीश अधिकारो छे.

ए प्रमाणे चौदमा पदनी व्याख्या करी, हवे पंदरमा पदनो प्रारंभ कराय छे. अहीं पूर्वना पदमां वन्धुं प्रधान कारण होवाथी विशेषरूपे कपायपरिणामनुं प्रतिपादन कर्युं, अने त्यार पछी इन्द्रियवाळाने ज लेख्यादि परिणामनो सद्भाव होय छे, माटे विशेषथी इन्द्रियपरिणामनुं निरूपण करवा माटे आ पदनो आरंभ कराय छे. आ पदमा वे उद्देशको छे. तेमां प्रथम उद्देशकमां जे अर्थीधिकारो आवेला छे तेने संग्रह करनार आ वे गाथाओ छे—'संठाणं बाहल्लं' इत्यादि. १ प्रथम इन्द्रियोनुं संस्थान कहेवाचुं छे, संस्थान पटले आकारविशेष, २ त्यार पछी तेओनुं बाहल्य कहेवाचुं छे, बाहल्य पटले जाडाइ अथवा पिंड. ३ त्यार पछी इन्द्रियोनुं पृथुत्व-विस्तार कहे-वानो छे, ४ त्यारपछी 'कतिपदेस'ति केटला प्रदेशोवाळी इन्द्रियो होय छे ते कहेवाचुं छे, ५ त्यारपछी 'ओगाढ'इति-कतिप्रदेशावगाढमिन्द्रियम्' केटला प्रदेशोनी अवगाहनावाळी इन्द्रियो छे ते कहेवाचुं छे. ६ त्यारवाद् अवगाहना संबन्धे अने कर्कशादिगुण संबंधे अल्पबहुत्व कहेवाचुं छे. ७

૨ કતિ જાં મંતે ! ઈંદિયા પદ્મતા ? ગોયમા ! પંચ ઈંદિયા પદ્મતા, તંજદ્દા-સોતિંદિષ, ચર્કિસ્વલિષ, ઘાર્ગિ-
વિષ, જિંનિમલિષ, ઘાસિંદિષ !

૧. હે મગવન્ ! કેટલી ઈન્દ્રિયો છે ! હે ગૌતમ ! પાચ ઈન્દ્રિયો છે. તે આ પ્રમાણે—૧ શ્રોત્રેન્દ્રિય, ૨ ચક્ષુઈન્દ્રિય, ૩ પ્રાણેન્દ્રિય,
૪ ત્રિલેન્દ્રિય અને ૫ સ્પર્શનેન્દ્રિય.

ત્યારવાદ 'પુદ્' સિ અહીં સ્પૃષ્ટુ પ્રહણ અન્ન અસ્પૃષ્ટુ ઉપલક્ષણ હોવાથી સ્પૃષ્ટ અને અસ્પૃષ્ટ સબન્ધે સૂત્ર કહેવાનુ છે. ૮ ત્યાર પછી પ્રવિષ્ટ-
પ્રવિષ્ટ અને અપ્રવિષ્ટ વિષયના વિચાર સચન્ધી સૂત્ર છે, ૯ ત્યાર પછી વિચયનુ પરિમાણ, ૧૦ ત્યારવાદ અનગાર-સાધુચિયયક સૂત્ર છે,
૧૧ ત્યારવાદ આદારક વિષયક સૂત્ર, ૧૨ ત્યારપછી અનુક્રમે ૧૩ આદર્શ, ૧૪ મણિ, ૧૫ યુગ્ધપદસહિત, ૧૬ પાનક, ૧૭ તૈલ, ૧૮
ફાણિત, ૧૯ યસા, ૨૦ પાંચલ, ૨૧ સ્પૃષ્ણા-હુંઠા, ૨૨ મહાન આકાશરૂપી પટના ધિગલ-ધીગદ્દા જેવા લોક સંયન્ધે અને ૨૩ ક્રીપ-
સયુદ્ધ, ૨૪ લોક, અને ૨૫ ત્યારવાદ ગલોક વિષે સૂત્ર છે

૨ હેમા ઈન્દ્રિયોના સસ્થાનાવિ કહેવાના છે માટે પ્રથમ ઈન્દ્રિય સચન્ધો સૂત્ર કહે છે—કાણં મતે ! ઈંદિયા પન્નતા ! હે મગવન્ !
ઈન્દ્રિયો-જેનો ઇશ્વર્ય પૂર્વે કહેલો છે તે કેટલો છે ! મગવાન્ ઉત્તર આપે છે—'હે ગૌતમ ! પાચ ઈન્દ્રિયો છે' તેને અહીં નામથી કહે
છે—'સોઈચિય' ઈત્યાદિ આ પાંચે ઈન્દ્રિયો વે પ્રકારી છે—દ્રવ્યેન્દ્રિય તેમાં દ્રવ્યેન્દ્રિય નિર્વૃત્તિ અને ઉપકરણ વ વે
પ્રકારે છે, અને માયેન્દ્રિય લઘ્વિ અને ઉપયોગરૂપ વે પ્રકારે છે તત્વાર્થ સૂત્રકાર કહે છે કે "નિર્વૃત્ત્યુપકરણે દ્રવ્યેન્દ્રિયમ્, સમ્યુપયોગો
માયેન્દ્રિયમ્" (અ० ૨ સૂ० ૧૭-૧૮) નિર્વૃત્તિ અને ઉપકરણ દ્રવ્યેન્દ્રિય, અને લઘ્વિ અને ઉપયોગ માયેન્દ્રિય છે તેમાં નિર્વૃત્તિ—પ્રતિ-
નિયત પ્રમુક પ્રકારનો આકારવિશેષ, તે વે પ્રકારે છે—ચાદ નિર્વૃત્તિ અને અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ તેમાં યાશ્નિર્વૃત્તિ પાપડી ઘોરેજા જેવી આહતિવાહ્યો
અને ચિચિત્ર છે, માટે તે પ્રતિનિયતરૂપે ઘર્ણયી શકાય તેમ નથી જેમકે મનુષ્યના કાન વન્ને નેત્રની પડથે રહેલા છે અને મમરો કાનના

૨. સોત્તિદિવ ણં મંતે ! કિસંઠિવ પન્નત્તે ? ગોયમા ! કલંબુયાપુપ્પસંઠાણસંઠિતે પન્નત્તે । ચર્ચિલ્લવિદિવ ણં મંતે ! કિસંઠિતે પન્નત્તે ? ગોયમા ! મસૂરંચંદસંઠાણસંઠિતે પન્નત્તે । ઘાણિંદિવ ણં મંતે ! પુચ્છા । ગોયમા ! અહમુત્તાગંચં-

૨. હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયનો કેવો આકાર છે ? હે ગૌતમ ! કદંબ પુષ્પના જેવો આકાર છે. હે મગવન્ ! ચહુઇન્દ્રિયનો કેવો આકાર છે ? હે ગૌતમ ! મહૂર ચન્દ્રના જેવો આકાર છે. હે મગવન્ ! ઘ્રાણેન્દ્રિયનો કેવો આકાર છે ? હે ગૌતમ ! અતિમુક્ત

ઉપરના ભાગની અપેક્ષાપ સમ રેખામાં આવેલી છે. ઘોડાને નેત્રના ઉપર કાન છે અને તેનો અગ્રભાગ તીક્ષ્ણ છે-ઇત્યાદિ જાતિના મેદથી અનેક પ્રકારની વાહ્ય નિર્વૃત્તિ હોય છે અને અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ સર્વે પ્રાણીઓને સરસી જ હોય છે, તેથી તેને આશ્રયી સંસ્થાનાદિ વિપયક સૂત્રો આગલ કહેવાનાં છે. કેવલ સ્પર્શનેન્દ્રિયની નિર્વૃત્તિમાં આકૃતિની અપેક્ષાપ વાહ્ય અને અમ્યન્તરનો મેદ નથી, કારણ કે પૂર્વાચાર્યોપ તેનો નિષેધ કરેલો છે. માટે સ્પર્શનેન્દ્રિયના વાહ્યસંસ્થાન વિષેજ સૂત્ર કહેવામાં આવશે કે 'ફાસેંદિવ ણં મંતે ! કિસઠાણસંઠિવ પ્પન્નત્તે' ? ઇત્યાદિ-હે મગવન્ ! સ્પર્શનેન્દ્રિયનો કેવો આકાર છે' ? ઇત્યાદિ. સહ્ગસમાન વાહ્ય નિર્વૃત્તિ છે અને સહ્ગની ધાર જેવી જે સ્વચ્છ પુલ્લોના સમુદાયરૂપ અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ છે, તેની શક્તિવિશેષ તે ઉપકરણેન્દ્રિય છે. આ ઉપકરણરૂપ દ્રવ્યેન્દ્રિય અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિથી કથંચિદ્ ભિન્ન છે. કારણ કે શક્તિ અને શક્તિવાલાનો કથંચિદ્ મેદ છે. ય હેતુથી જ અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ છતાં દ્રવ્યાદિ વહે ઉપકરણના વિઘાતનો સંભવ છે. જેમ કે-કદંબપુષ્પાદિના સમાન આકારવાળી અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિ છતાં અત્યંત કઠોર મેઘની ગર્જનાદિ વહે ઉપઘાત થવાથી પ્રાણીઓ શબ્દપ્રદિ વિચયને જાણવા સમર્થ થતા નથી. ભવેન્દ્રિય વે પ્રકારની છે-લઘ્વિ અને ઉપયોગ. તેમાં શ્રોત્રેન્દ્રિયાદિના વિપયરૂપ સર્વ આત્મવદેશો સંબન્ધી ઇન્દ્રિયજ્ઞાનાવરણ કર્મનો જે ક્ષયોપશમ તે લઘ્વિ, અને પોતપોતાના વિપયમાં લઘ્વિને અનુસારે આત્માનો જે વ્યાપાર, જેને પ્રણિધાન કહે છે તે ઉપયોગ છે.

૨. હવે અમ્યન્તર નિર્વૃત્તિને આશ્રયી સંસ્થાનાદિનો વિચાર કરવાની ઇચ્છાવાલા સૂત્રકાર પ્રથમ સંસ્થાનનો વિચાર કરે છે-સોત્તિ-

वसंठाणसंठिते पद्मत्ते । जिनिंभदिण णं पुब्बा । गोयमा ! छुरप्पसंठाणसंठिते पन्नत्ते । फासिंदिए णं पुब्बा । गोयमा ! णाणासंठाणसंठिते पद्मत्ते ? ।

३ सोइंदिएणं भंते ! केवइयं याहल्लेण पद्मत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असं खेज्झइ भागे याहल्लेणं पद्मत्ते ? । एवं जाव फा-
सिंदिए । सोतिंदिए ण भंते ! केवइलं पोहत्तेणं पणत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्झइ भागं पोहत्तेणं पद्मत्ते । एवं
पुप्पना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! जिद्वेन्द्रियनो केवो आकार छे ? हे गौतम अस्साना जेवो आकार छे. हे भगवन् ! सपनिन्द्रि-
यनो केवो आकार छे ? अनेक प्रकारनो आकार छे.

३. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी जाडाइ केटली छे ? हे गौतम ! अंगुलना असत्थातमा भागनी जाडाइ छे. ए प्रमाणे यावत् स-
दिए ण भंते ! किंसंठिए पद्मत्ते ?—हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केवो आकार छे इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे

३ इवे याहल्य-इन्द्रियोनी जाडारनो विचार करे छे—'सोइंदिए ण मते ! केवरय याहल्लेण पद्मत्ते'-हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी
केटली जाडाइ छे ? इत्यादि सूत्र ण पाठसिद्ध छे आत्र अर्थ धीजे स्थले ण कसो छे—'याहल्लतो ए सत्थाइं अंगुलमसत्तमागं' ।
इधो इन्द्रियो जाडारमा अंगुलना असंखयातया भागप्रमाण छे (प्र०)—ओ सर्शनेन्द्रियनो जाडार अंगुलनो असत्थातमो भाग होय तो
तरवार के छटी घनेरेना घायी शरीरनी अवर पीडानो फेम अनुभव थाय ? (उ०)—आ शका अयुक्त छे, कारण के सम्यक् यस्तुतत्त्वनु
ज्ञान नथी सर्शनेन्द्रियनो विषय शीतादि स्पर्शो छे, जेम चतुन्द्रियनो विषय रूप मने द्रोणेन्द्रियनो विषय गन्ध छे तरवार के छटीनो
घा घागपायी शरीरनी अवर शीतादि स्पर्शो नथी, परन्तु केवल पीडानो अनुभव थाय छे, अने ते दुःपरूप वेदनाले
आत्मा ज्वरपिदिनी वेदनानी जेम सय शरीर घडे अनुभव छे, ण केवल सर्शनेन्द्रिय घडे भोगयतो नथी, माटे कारण श्रेय नथी ओ

ચર્ચિત્વદિણ્ચિ ઘાષિંદિણ્ચિ । જિહ્વિંદિણ્ચિ ણં પુચ્છા । ગોયમા ! અંગુલપુહુત્તેણં પન્નત્તે । ફાસિંદિણ્ચિ ણં પુચ્છા ।
ગોયમા ! સરીરપ્પમાણમેત્તે પોહ્તેણં પન્નત્તે ૩ ।

૪. સોતિંદિણ્ચિ ણં મંતે ! કતિપદેસિતે પન્નત્તે ? ગોયમા ! અણંતપદેસિતે પન્નત્તે । एवं जाव फासिंदिए ।

શ્નેન્દ્રિય સુધી સમજવું. હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયનો કેટલો વિસ્તાર છે. હે ગૌતમ ! અંગુલના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણ વિસ્તાર છે. એ પ્રમાણે ચક્ષુઃશ્ન્દ્રિય અને ઘ્રાણેન્દ્રિય સંબંધે જાણવું. હે મગવન્ ! જિહ્વેન્દ્રિયનો કેટલો વિસ્તાર છે ? હે ગૌતમ ! અંગુલપૃથક્ત્વપ્રમાણ વિસ્તાર છે. સ્પર્શનેન્દ્રિયનો કેટલો વિસ્તાર છે ? હે ગૌતમ ! શરીરપ્રમાણ વિસ્તાર છે.

૪. હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિય કેટલા પ્રદેશવાલી છે ? હે ગૌતમ ! અનન્ત પ્રદેશવાલી છે. એ પ્રમાણે યાત્ સ્પર્શનેન્દ્રિય સુધી જાણવું.

પમ છે તો શીતલ પીણું વગેરે પીતાં અંદર શીતસ્પર્શનો અનુભવ થાય છે તે કેમ ઘટી શકે ? તેનો ઉત્તર પ છે કે, અહીં સ્પર્શનેન્દ્રિય વધે આત્મપ્રદેશના છેવટના ભાગમાં હોય છે, કારણ કે તે પ્રમાણે પૂર્વાચાર્યોપ વ્યાખ્યા કરી છે. પ સંબંધે મૂલટીકાકાર કહે છે— “ સર્વપ્રદેશપર્યન્તવર્તિત્વાત્ ત્વચોઽમ્યન્તરેઽપિ શુપિરસ્યોપરિ ત્વનિન્દ્રિયસ્ય ભાવાતુપપચતેઽન્તઃ શીતસ્પર્શવેદનાનુભવઃ ” । ત્વચા સર્વપ્રદેશના પર્યન્તવર્તી હોવાથી અને શરીરનો અંદર પણ પોલાણના ઉપરના ભાગમાં સ્પર્શેન્દ્રિય હોવાથી અંદર શીત સ્પર્શનો અનુભવ ઘટી શકે છે.

હવે ઇન્દ્રિયના વિસ્તાર સંબંધે સૂત્ર કહે છે—‘સોઘંદિણ્ચિ ણં મંતે ! કેવં પોહ્તેણં પન્નત્તે’ ? હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયનો કેટલો વિસ્તાર છે—ઇત્યાદિ. અહીં સ્પર્શનેન્દ્રિય સિવાય ચાકીની ચાર ઇન્દ્રિયોનો વિસ્તાર આત્માંગુલ વડે જાણવો. અને સ્પર્શનેન્દ્રિયનો વિસ્તાર ઉત્ત્સેયાંગુલથી જાણવો. (પ્ર૦)—ઇન્દ્રિયો શરીરશ્રિત હોય છે અને શરીર ઉત્ત્સેયાંગુલથી મપાય છે, કારણ કે ‘ઉત્ત્સેહ્યમાણતો મિણસુ

बैह-उत्सेधागुलना प्रमाणची छरीतु मान करतु-एतु धाळवचन छे. तो इन्द्रियोनुं पण उत्सेधांगुलथी मान कएतुं योग्य छे, पण आत्मागुलथी करतुं योग्य नथो (उ०)-ते अयुक्त छे कारण के जीम पगेरे इन्द्रियना विस्तारु माा उत्सेधांगुलथी करीप तो द्रण गाउ पगेरेना प्रमाणवाळा मनुष्यादिने रसास्वादिने व्यहारात्तो उच्छेद थाय. ते आ आ प्रमाणे-द्रण गाउना प्रमाणवाळा मनुष्योने अने उ गाउना प्रमाणवाळा हस्ती घगेरेले पोतपोताना छरीतने अनुसारे अति विशाल मुण्व अने जीम होय छे तेथी जो तेथोनी अत्माा आकारे कहेली मन्थन्तर निर्गुंचिकुप जीमनो उत्सेधांगुलथी अगुलपृथग्प्रमाण विस्तार मानीप तो ते अस्य होपाथी यातनिर्गुंचित रूप सर्व जीमने व्यापीने नहि रहे, अने जो सर्व जीमने व्यापीने न रहे तो जाहाए थवे सर्व जीमथी थतो रतना अनुभवकरु थरेक प्राणी प्रसिद्ध व्यबहारनो उच्छेद थाय प प्रमाणे प्राणेन्द्रियादि संकन्धे पण थथासमय गथादिना व्ययहारनो उच्छेद जाणवो तेथी जिह्वादि वार इन्द्रियोना विस्तारु प्रमाण आत्मांगुलथी जाणतु पण उत्सेधांगुलथी न जाणतुं प संकन्धे भाष्यकार कहे छे-

“ इदियमाणेवि तयं भयणिकन जं तिगाउपार्शेण । जिभ्मिन्द्रियाहमार्गं सक्वहारे तिरुहोश्वा ” ॥

इन्द्रियना प्रमाणमा उत्सेधागुलनो विकल्प जाणवो कारण के द्रण गाउ घगेरेना प्रमाणवाळाने जिभ्मिन्द्रियादिनु प्रमाण संस्यपहा-रथी विरुद्ध थाय छे अक्षरपर्य-ते उत्सेधागुल इन्द्रियना परिमाणमां पण विकल्पे जाणवो, तेथी क्यांश्च तेनु प्रमाण थतु थो पटले इन्द्रियपिययना परिमाणमां तेनु प्रहण थतु नथी यजे अले विकल्प होय, पण इन्द्रियना परिमाणमां विकल्प समजवो प अपिज्ञाननो अर्थ छे, सात्पर्य प छे के स्वर्धनेन्द्रियना विस्तारना परिमाणमा उत्सेधागुल प्रहण करवो अने ते स्तियाय याकीनी इन्द्रियोना परिमाणमां न प्रहण करवो, कारण के याकीनी इन्द्रियोनु परिमाण आत्मांगुलथी थाय छे प शी रीते जाणो सकाय ? तेना उत्तरमा कहे छे के जो बधी इन्द्रियोनु परिमाण उत्सेधागुलथी करवामां भावे तो द्रण गाउना प्रमाणवाळा अने आदि शब्दुपी वे गाउ घगेरेना प्रमाण-वाळा मनुष्यनु जिभ्मिन्द्रियादिनु सुशोक मान व्यबहारथी विरोधी थाय छे, पटले घटी शकतु नथी, अने जे प्रकारे कितेधी थाय छे ते प्रकारे तेनो ह्रमणाज विचार करवो छे

५. सोइंदिए णं भंते ! कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ? असंखेज्जपएसोगाढे पन्नत्ते । एवं जाव फासिंदिए ।
६. एएसि णं भंते ! सोतिंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिभिंदियफासिंदियाणं ओगाहणद्वयाए पएसद्वयाए ओगाहणपएसद्वयाए कतरे कतरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थोवे चक्खिंदिते ओगाहणद्वयाते, सोतिंदिए ओगाहणद्वयाते संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणद्वयाते संखेज्जगुणे, जि-

५. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय केटला प्रदेशमां अवगाढ-रहेलु छे ? तेनी केटला प्रदेशोनी जवगाहना छे ? हे गौतम ! असंख्याता प्रदेशोमां अवगाढ होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं.

६. हे भगवन् ! ए श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय, अने स्पर्शनेन्द्रियोमां अवगाहनार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने अवगाहना तथा प्रदेशार्थरूपे कंण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी चक्षुइन्द्रिय अवगाहनारूपे छे-एटले के चक्षुइन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडी छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे. तेथी घ्राणेन्द्रिय अवगाहनारूपे

४. हवे 'कतिप्रदेश'-इन्द्रिय केटला प्रदेशवाली होय छे, ते द्वारवुं प्रतिपादन करे छे--'सोइंदिएण भंते' ! हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे.

६. हवे अल्पबहुत्व द्वार कहे छे-सौथी थोडी चक्षुइन्द्रिय अवगाहनार्थरूपे छे. तात्पर्य ए छे के चक्षुइन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडा आकाश प्रदेशोनी छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रिय अवगाहनार्थरूपे संख्यातगुण छे, कारण के अति घणा प्रदेशोमां तेनी अवगाहना होय छे, तेथी पण घ्राणेन्द्रिय अवगाहनारूपे संख्यातगुण छे, कारण के अति घणा प्रदेशोमां तेनी अवगाहना होय छे, तेथी पण जिह्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे असंख्यात

निर्मदिए ओगाहणद्वयाए असलेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणद्वयाए संलेज्जगुणे, पदेसद्वयाते-सब्बत्थोवे चक्खिदिण
पदेसद्वयाए, सोतिंदिए पएसद्वयाए सदेज्जगुणे, घाणिंदिए पएसद्वयाए संखिज्जगुणे, जिनिंमदिए पएसद्वयाए अ-
संलेज्जगुणे, फासिंदिए पएसद्वयाए सलेज्जगुणे ओगाहणपदेसद्वयाए-सब्बत्थोवे चक्खिदिण ओगाहणद्वयाए,
सोतिंदिए ओगाहणद्वयाए सलेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणद्वयाए सखिज्जगुणे, जिनिंमदिए ओगाहणद्वयाए

सल्यातगुण છે, તેથી જિહ્વેન્દ્રિય અવગાહનારૂપે અસલ્યાતગુણ છે, તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિય અવગાહનારૂપે સંલ્યાતગુણ છે. પ્રદેશાર્થરૂપે
સૌથી થોડી ચક્ષુન્દ્રિય છે. અર્થાત્ ચક્ષુન્દ્રિયના પ્રદેશો સૌથી થોડા છે. તેથી શ્રોત્રેન્દ્રિય પ્રદેશાર્થરૂપે સલ્યાતગુણ છે, તેથી ઘ્રાણે-
ન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે સલ્યાતગુણ છે, તેથી જિહ્વેન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે અસલ્યાતગુણ છે, તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે સલ્યાતગુણ છે. અવગા-
હના અને પ્રદેશરૂપે-સૌથી થોડી ચક્ષુન્દ્રિય અવગાહનારૂપે છે. ફટલે તેની અવગાહના સૌથી થોડા પ્રદેશવાલી છે. તેથી શ્રોત્રેન્દ્રિય
અવગાહનારૂપે સંલ્યાતગુણ છે, તેથી ઘ્રાણેન્દ્રિય અવગાહનારૂપે સલ્યાતગુણ છે, તેથી જિહ્વેન્દ્રિય અવગાહનારૂપે અસંલ્યાતગુણ છે,

ગુણ છે, કારણ કે તેનો વિસ્તાર અંગુલપૃથક્ક પ્રમાણ છે. કેટલાપક પુસ્તકોમા 'સપ્પાતગુણ' પવો જે પાઠ રેપાય છે તે અનુચ પાઠ છે,
કેમ કે યુક્તિથી અસગત છે તે આ પ્રમાણે-ચક્ષુ આદિ વ્રણે શ્વિત્રિયો પ્રત્યેક અંગુલના અસલ્યાતમાગપ્રમાણ વિસ્તારવાલી છે અને જિહ્વેન્દ્રિયનો
અંગુલપૃથક્કપ્રમાણ વિસ્તાર છે, માટે અસલ્યાતગુણ જ પઠે છે, પણ સલ્યાતગુણ ઘટતુ નથી, તેથી સ્વર્વેન્દ્રિય સંલ્યાતગુણ છે, તે આ
પ્રમાણે-જિહ્વેન્દ્રિયનો વિસ્તાર અંગુલ પૃથક્કપ્રમાણ છે. મહીં જે થી માહી નય સુધીની સંલ્યાને પૃથક્ક્ય કહે છે, અને સ્પર્શનેન્દ્રિય તો
શરીરપ્રમાણ છે, માટે તે અંગુલપૃથક્ક્ય પ્રમાણ મોટુ હોય તો પણ સંલ્યાતગુણ જ પઠે છે. ઘણા પુસ્તકોમા 'અસંલ્યાતગુણ' પવો જે પાઠ

અસંખેજગુણે, ફાસિંદિયસસ ઓગાહણદ્વયાહિંતો ચર્ચિંભદિયે પપ્સદ-
યાએ અણંતગુણે, સોતિંદિયે પપ્સદયાએ સંખેજગુણે, ઘાણિંદિયે પપ્સદયાએ સંખેજગુણે, જિહ્વિંભદિયે પપ્સદયાએ
અસંખેજગુણે, ફાસિંદિયે પપ્સદયાએ સંખેજગુણે ।

૭. સોતિંદિયસસ ણં મંતે ! કેવદ્યા કવલ્લડગુરુયગુણા પન્નત્તા ! અણંતા કવલ્લડગુરુયગુણા પન્નત્તા,

તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિય અવગાહનારૂપે સંખ્યાતગુણ છે. સ્પર્શનેન્દ્રિયની અવગાહના કરતાં ચક્ષુઃન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે અનંતગુણ છે-એટલે સ્પર્શ-
નેન્દ્રિયની અવગાહના જેટલા આકાશ પ્રદેશોની હોય છે તે કરતાં તેના-ચક્ષુઃન્દ્રિયના પ્રદેશો અનંતગુણા છે. તેથી શ્રોત્રેન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે
સંખ્યાતગુણ છે, તેથી ઘ્રાણેન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે સંખ્યાતગુણ છે, તેથી જિહ્વેન્દ્રિય પ્રદેશરૂપે અસંખ્યાતગુણ છે અને તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિય પ્ર-
દેશરૂપે સંખ્યાતગુણ છે.

૭. હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયના કર્કશ અને ગુરુગુણો કેટલા છે ? હે ગૌતમ ! કર્કશ અને ગુરુગુણો અનંતા છે. એ પ્રમાણે યાવત્-

દેખાય છે તે અચુદ્ધ છે, કારણ કે શુક્તિરહિત છે. તે આ પ્રમાણે-આત્માંગુલ્લૃપ્ત્યપ્રમાણ જિહ્વેન્દ્રિય છે અને શરીરપ્રમાણ સ્પર્શ-
નેન્દ્રિય હોય છે, શરીર વધારેમાં વધારે લાલ યોજન પ્રમાણ હોય છે તેથી તે અસંખ્યાતગુણ કેમ ઘટી શકે ? આ ક્રમ વડે જ પ્રવેશા-
ર્થરૂપે પણ સૂત્રનો વિચાર કરવો. અને ઉપર કહેલા પ્રકારવડે જ અવગાહનામાં અને પ્રવેશાર્થરૂપે એ ઉભય સૂત્રનો પણ વિચાર કરવો.

૭-૮. જે કર્કશ-ગુરુ ગુણ વગેરે સંબંધે સૂત્રો છે તે પાઠ સિદ્ધ છે, પરન્તુ અલ્પવહુલ્યના સૂત્રમાં ચક્ષુ, શ્રોત્ર, ઘ્રાણ, જિહ્વા અને
સ્પર્શનેન્દ્રિયના ઉત્તરોત્તર કર્કશ-ગુરુ ગુણો અનંતગુણા છે, અને પણ ઇન્દ્રિયના પદ્માનુપૂર્વો-પાછલના ક્રમથી પૂર્વે પૂર્વના મુદુ-લ્લુ-

एवं जाव फासिदियस्स णं भंते । सोत्तिदियस्स णं भंते । केवइया मउयलहुयगुणा पअत्ता ? गोयमा ! अणंता मउयल-
हुयगुणा पन्नत्ता, एवं जाव फासिदियस्स ।

८. त्तेसिं णं भंते ! सोइंदियचर्खिदियघाणिदियजिन्मियफासिदियाणं कक्खवडगुणयुणाणं मउयलहुय-
गुणाण य कयरे कयरेद्धितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चर्खिदियस्स कक्खवडगुणयुणा, सोत्तिदियस्स
कक्खवडगुणयुणा अणंतगुणा, घाणिदियस्स कक्खवडगुणयुणा अणंतगुणा, जिन्मियस्स कक्खवडगुणयुणा
अणंतगुणा, फासिदियस्स कक्खवडगुणयुणा अणंतगुणा । मउयलहुयगुणाणं-सव्वत्थोवा फासिदियस्स मउय-

स्सर्धनेन्द्रिय सुधी जाणवुं. हे मगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियना मृदु अने लघु गुणो केटला छे ? हे गौतम ! मृदु अने लघुगुणो अनन्ता छे. ए
प्रमाणे यावत्-स्पर्शनेन्द्रिय सुधी जाणवुं.

८. हे मगवन् ! ए श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय जिखेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश अने गुल्मुणो तथा मृदु अने लघुगुणो-
मां कइ इन्द्रियना कया गुणो कइ इन्द्रियना कया गुणोधी अल्प, बहु, तुल्प के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! तीथी थोडा चतुइन्द्रि-
यना कर्कश-गुरु गुणो छे. तेथी श्रोत्रेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी घ्राणेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे,
तेथी जिखेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अनन्तगुणा छे. मृदु-लघु गुणोहुं अल्प

गुणो धन्ततगुणा जाणथा, कारण के ते प्रमाणे उचरोत्तर कर्कशकये अने पूर्य पूर्य भतिकोमळ रूपे अणाय छे एक साथे यत्नेना
अल्पयदुत्थ सत्यमां 'स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो कस्तां तेना ज मृदु-लघु गुणो भन्ततगुण छे, कारण के शरीरमां उचर रहेला

શુણા, ચર્ચિત્વવિદ્યસ્સ મહયલહુયગુણા અર્ણતગુણા ।

૧. નેરહયાણ મંતે ! કદ્દ શ્લોકો પન્નસ્તા ! ગોયમા ! પંચ, તંજહા-સોતિન્દિય જાવ ફાસિન્દિય । નેરહયાણં મંતે ! સોતિન્દિય ફિસઠિય પન્નત્તે ? ગોયમા ! કલંબુયાસંઠાણસંઠિતે પન્નત્તે । ત્વં જહા ઓહિયાણં વત્તબ્બયા મણિતા તહેવ નેરહયાણપિ જાવ અપ્પાવહુયાણિ યોણિણ । નવરં નેરહયાણ મંતે ! ફાસિન્દિય ફિસંઠિય પન્નત્તે ?

૧. હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલી શ્લોકો છે ? હે ગૌતમ ! પાંચ શ્લોકો છે. તે આ પ્રમાણે-શ્રોત્રેન્દ્રિય, યાવત્ સર્વોનેન્દ્રિય. હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને શ્રોત્રેન્દ્રિય કેવા આકારની છે ? હે ગૌતમ ! કદંબપુષ્પના આકાર જેવી છે. ય પ્રમાણે જેમ સામાન્ય શ્લોકોની વક્તવ્યતા કહી છે તેમ નૈરયિકોની પણ યાવત્ પશ્ચે પ્રકારના અલ્પબહુલ્ય સુધી કહેવી. પરન્તુ શ્લોકી વિશેષતા છે-હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને સર્વોનેન્દ્રિય કેવા આકારની છે ? હે ગૌતમ ! તેઓને સર્વોનેન્દ્રિય કે પ્રકારની છે, તે આ પ્રમાણે-મવધારણીય અને ઉત્તરવે-હોય છે, માટે સર્વોનેન્દ્રિયના કર્કશ-ગુરુ ગુણ કરતા મૃદુ-લઘુ ગુણો અનન્તગુણા છે

૨. હવે નૈરયિકોમા સંસ્થાનથી માઝી અન્યથા સુધીના માઝ દારોનો વિચાર કરો છે-નેરયાણ મંતે !-હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલી શ્લોકો હોય-શ્લોકો હોય છે, પરન્તુ 'નેરહયાણ મંતે ! ફાસિન્દિય ફિસઠિય પન્નત્તે ?' હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને સર્વોનેન્દ્રિય કેવા આકારની હોય છે શ્લોકોને કે પ્રકારનો શરીર છે-મવધારણીય અને ઉત્તરવેક્કિય, મવધારણીય શરીર તેઓને મવ-સમાયથી જ ઝેની પાપ મૂલથીજ તોઢી નાખી છે અને એક ઘોરેના રુઠાટા ઉલેઝી નાખ્યા છે પયા પશ્ચીના શરીરનો પેઠે અતિ ઘીમત્ત આહુતિવાલુ હોય છે જે ઉત્તરવેક્કિય છે તે પણ મુઠકસસ્થાનવાલુ હોય છે, તે આ પ્રમાણે-ઓ કે તે નૈરયિકો 'અમે અતિમુરુ શરીર વિકુર્વીપ' ય શ્લોક વહે શરીરનો મારમ કરે છે, તો પણ તેઓને અત્યન્ત અમુમ તેવા પ્રકારના નામકર્મના ઉત્તરથી

ગોયમા ! દુવિધે પલ્લત્તે, તંજહા-ભવધારણિજ્ઞે ય ઉત્તરવેડવિવિતે ય । તત્થ ણં જે સે ભવધારણિજ્ઞે સે ણં હુંડસં-
ઠાણસંઠિત્તે પન્નત્તે, તત્થ ણં જે સે ઉત્તરવેડવિવિતે સેવિ તહેવ, સેસંતં ચેવ ।

૧૦. અસુરકુમારાણં ભંતે ! કહ્ ઇન્દિયા પન્નત્તા ? ગોયમા ! પંચ, एवं जहा ओहियाणि जाव अप्पावहुगाणि
दोणिणवि । नवरं फासिन्दिए दुविधे पणत्ते, तंजहा-भवधारणिज्जे य उत्तरवेडविविते य । तत्थ णं જે સે ભવધા-
રણિજ્ઞે સે ણં સમચરંસસંઠાણસંઠિત્તે પન્નત્તે, તત્થ ણં જે સે ઉત્તરવેડવિવિતે સે ણં ણાણાસંઠાણસંઠિત્તે, સેસંતં
ચેવ । एवं जाव थणियकुमाराणं ।

ક્રિય. તેમાં જે ભવધારણીય સ્પર્શનેન્દ્રિય છે તે હુંડક સંસ્થાના આકાર જેવી છે અને જે ઉત્તરવૈક્રિયરૂપ સ્પર્શનેન્દ્રિય છે તે ણ
તેવી જ છે. વાકી વધું તેમજ જાણું.

૧૦. हे भगवन् ! असुरकुमारोने केटली इन्द्रियो छे ? हे गौतम ! पांच इन्द्रियो छे. ए प्रमाणे जेम सामान्य इन्द्रियो संबंधे कहुं
तेम वन्ने प्रकारना अल्पबहुत्व सुधी कहेंहुं. परन्तु तेओने स्पर्शनेन्द्रिय वे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-भवधारणीय अने उत्तरवैक्रिय.
तेमां જે ભવધારણીય છે તે સમચતુરસંસ્થાના આકારવાલી છે, અને જે ઉત્તરવૈક્રિયરૂપ છે તે અનેક પ્રકારના આકારવાલી છે.
વાકી વધું તેમજ જાણું અને તે યાત્રવ્ સ્તાનિતકુમારો સુધી સમજાવું.

अत्यन्त अष्टुभ शरीर थाय छे.

૧૦. १२. असुरकुमार सूत्रमां तथास्त्रभावधी भवधारणीय समचतुरस्र संस्थान छे, अने उत्तरवैक्रिय अनेक आकृतिवाळुं होय छे,

११. पुढविकाइयाणं भंते ! कति इन्दिवा पन्नत्ता ! गोयमा ! एगे फासिन्दिए पन्नत्ते ! पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते किंसंठाणसठिते पन्नत्ते ? गोयमा ! मत्तरचदसंठाणसंठिते पण्णत्ते ! पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते केवइयं बाहल्लेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेच्चइभागं पाहल्लेणं पन्नत्ते ! पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिए कति-न्दिए केवतितं पोहत्तेणं पन्नत्ते ? गोयमा ! सरीरस्समाणमेत्ते पोहत्तेणं ! पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ? गोयमा ! अणंतपदेसिते पन्नत्ते ! पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दिते कतिपदेसोगाढे पन्नत्ते ! गोयमा ! असंखेच्चपएसोगाढे पन्नत्ते ! एत्तेसि ण भंते ! पुढविकाइयाणं फासिन्दिपस्स ओगाहणट्टयाए पएसट्टयाए ओगाहणपएसट्टयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सच्चत्थोवे पुढविकाइयाणं फासिन्दिए ओगाहणट्ट-

११. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोने केटली इन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! तेथोने एक सर्धनेन्द्रिय होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रिय केवा आकारनी होय छे ? हे गौतम ! मत्तरचंद्रना आकार जेवी होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रिय जाडाइमां केटली छे ? हे गौतम ! जाडाइमां अंगुलना असल्ल्यातमा माग ममाण छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रियनो विस्तार केटलो छे ? हे गौतम ! विस्तारमां शरीरप्रमाण मात्र होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रिय केटला प्रदेशवाली होय छे ? हे गौतम ! अनन्तप्रदेशवाली होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रिय अवगाहनावाली होय छे ? हे गौतम ! असल्ल्याता प्रदेशोनी अवगाहनावाली होय छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी सर्धनेन्द्रिय

कारण के स्वेच्छाणी तेनी उत्पत्ति थाय छे पृथिव्यादि सब्धे धरो अत्यंत स्पष्ट छे

याते, ते चेव पदेसदृयाते अणंतगुणे । पुढविकाइयाणं भंते ! फासिन्दियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता, एवं मउयलहुयगुणाधि । एतेसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं फासिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा पुढविकाइयाणं फासिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणा, तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा । एवं आउकाइयाणवि जाव वणप्फइकाइयाणं, णवरं संठाणे इमो विसेसो दट्ठब्बो-आउकाइयाणं थिउगच्चिहुसंठाणसंठिते पन्नत्ते । तेउकाइयाणं सूइकलावसंठाणसंठिते पन्नत्ते । वाउकाइयाणं पडागासंठाणसंठिते पन्नत्ते । वणप्फइकाइयाणं णाणासंठाणसंठिते पन्नत्ते ।

अवगाहनारूपे, प्रदेशरूपे अने अवगाहना-प्रदेशरूपे कोणकोनायी अल्प, बहु, तुल्य, के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रिय अवगाहना रूपे छे, एटले तेना प्रदेशोनी अपक्षाए स्पर्शनेन्द्रियनी अवगाहना सौथी थोडी छे, अने तेज प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुण छे. अर्थात्-अवगाहना करतां तेना प्रदेशो अनन्तगुणा छे. हे भगवन् ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना केटला कर्कश-गुरु गुणो छे ? हे गौतम ! अनन्ता छे. एम मृदु-लघु गुणो पण जाणवा. हे भगवन् ! ए पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो अने मृदु-लघु गुणोमां कया गुणो कोनायी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! पृथिवीकायिकोनी स्पर्शनेन्द्रियना सौथी थोडा कर्कश-गुरु गुणो छे, तेथी तेनाज मृदु-लघु गुणो अनन्ता छे. ए प्रमाणे अप्फायिको यावत् वनस्पतिकायिको मुथी जाणवुं. परन्तु संस्थानमां आ विशेषता छे-अप्फायिकोनी स्मितुक-परपोटानी आकृति लेवी, तेजस्कायिकोनी सोयना जत्थाना लेवी, वायुकायिकोनी ध्वजाना लेवी अने वनस्पतिकायिकोनी अनेक प्रकारना आकारवाली स्पर्शनेन्द्रिय जाणवी.

१२. वेद्वियाणं अंते ! कति इंविया पन्नत्ता ? गोयमा ! दो इंविया पन्नत्ता, तंजहा-जिंमदिएय फासिदिएय ! दोण्हपि इंवियाणं सठाणं थाहल्ल पोहत्त पदेसा ओगाहणा य जहा ओदियाणं भणिता तहा भाणियब्बा, णवरं फासिदिए हुंडसठाणसंठिते पणत्तेत्ति इमो विसेसो ! एतेसि ण अंते ! वेद्वियाण जिंमदिएयफासिदियाणं ओगाहणद्वयाते पदेसद्वयाते ओगाहणपदेसद्वयाते कपरे कपरेरिंक्तो अप्पा वा० ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे वेद्वियाणं जिंमदिए ओगाहणद्वयाते, फासिदिए ओगाहणद्वयाते संलेख्खणुणे । पदेसद्वयाते-सव्वत्थोवे वेद्वियाणं जिंमदिते पणसद्वयाण, फासिन्दिए संलेख्खणुणे । ओगाहणपणसद्वयाते-सव्वत्थोवे वेद्वियस्स जिंमदिए ओगाहणद्वयाते, फासिन्दिए ओगाहणद्वयाते संलेख्खणुणे, फासिदिएयस्स ओगाहणद्वयातेरिंत्तो जिंमदिए पणसद्वयाते

१२. हे भगवन् ! वेद्विनियोने केटली इन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! वे इन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे-जिद्वेन्द्रिय अने स्वर्णेन्द्रिय. धमे इन्द्रियोहुं सस्यान, जाबाइ, विस्तार, प्रदेशो अने अवगाहना जेम सामान्य इन्द्रियोनी कही छे तेम कहेयी. परन्तु स्वर्णेन्द्रिय हुंडक संस्याननी आकृति जेवी छे ए विशेष छे. हे भगवन् ! ए वेद्विनियोनी जिद्वेन्द्रिय अने स्वर्णेन्द्रियोमां अवगाहनारूपे, प्रदेशरूपे, अने अवगाहना-प्रदेशरूपे कोण कोनायी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! वेद्विनियोनी जिद्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे सौथी अल्प छे, तेथी स्वर्णेन्द्रिय अवगाहनारूपे सल्यातगुण छे, प्रदेशार्थरूपे-वेद्विनियोनी जिद्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे सौथी अल्प छे अने तेथी स्वर्णेन्द्रिय प्रदेशरूपे सल्यातगुण छे. अवगाहना-प्रदेशार्थरूपे वेद्विनियोनी जिद्वेन्द्रिय अवगाहनारूपे सौथी अल्प छे, तेथी स्वर्णेन्द्रिय अवगाहनारूपे सल्यातगुण छे. स्वर्णेन्द्रियनी अवगाहना कलां जिद्वेन्द्रिय प्रदेशरूपे

अणंतगुणे, फासिन्दि ए पएसट्टयाए संखेज्जगुणे । वेइन्दियाणं भंते ! जिभिन्दियस्स केवइया कक्खडगरुयगुणा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता । एवं फासिन्दियस्सवि, एवं मउयलहुयगुणावि । एतेसि णं भंते ! वेइन्दियाणं जिभिन्दियफासिन्दियाणं कक्खडगरुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाणं, मउयलहुयगुणाणं मउयलहुयगुणाण य कतरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेइन्दियाणं जिभिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणा, फासिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिन्दियस्स कक्खडगरुयगुणेहिंतो तस्स चेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिभिन्दियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा । एवं जाच चउरिन्दियत्ति, नवरं इंदियपरिउद्धी कातब्बा । तेइंदियाणं घाणिन्दि ए थोवे, चउरिन्दियाणं चक्खिदि ए थोवे, सेसं तं चेव । पंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं मणूसान य जहा नेरइयाणं, णवरं

अनन्तगुण છે, તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિય પ્રદેશાર્થરૂપે સંખ્યાતગુણ છે. હે ભગવન્ ! વેइन्दियोनी जिह्वेन्द्रियना केटला कर्कश अने गुरु गुणो कक्षा છે ? हे गौतम ! अनन्ता कथा છે. ए प्रमाणे स्पर्शनेन्द्रियना पण जाणवा. एम मृदु अने लघु गुणो संबन्धे जाणवुं. हे भगवन् ! वेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो, मृदु-लघु गुणो तथा कर्कश-गुरु गुणो अने मृदु लघु गुणोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक છે ? हे गौतम ? वेइन्द्रियोनी जिह्वेन्द्रियना कर्कश-गुरु गुणो सौथी थोडा છે, તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિયના કર્કશ-ગુરુ ગુણો અનન્તગુણ છે, અને સ્પર્શનેન્દ્રિયના કર્કશ-ગુરુ ગુણો કરતાં તેનાજ મૃદુ-લઘુ ગુણો અનન્તગુણ છે, તેથી जिह्वेन्द्रियना मृदु-लघु गुणो अनन्तगुणा છે. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. परन्तु इन्द्रियनी संख्यामां वृद्धि करवी. तेइन्द्रियोने घाणेन्द्रिय सौथी अल्प છે, ચउરિન્દ્રિયોને ચઠ્ઠુइન્દ્રિય અલ્પ છે. યાકી વધુ તેમજ જાણવું. પંચેન્દ્રિય તિર્થેવો અને મનુ-

फासिन्दिप छत्रिहसठाणसंठिते पन्नचे, तंजहा-समचउरंसे निगोह परिमंडले सादी खुले वामणे हुंढे । वाणम-
तरजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

१३. पुढाह भते ! सदाइं सुणेति, अपुढाइ सदाइं सुणेति ? गोयमा ! पुढाइं सदाइ सुणेति, नो अपुढाइं सदाइं
सुणेति । पुढाइं भते ! रूवाइं पासति, अपुढाइं पासति ? गोयमा ! नो पुढाइ रूवाइं पासति, अपुढाइं रूवाइं
पासति । पुढाइं भते ! गंधाइ अग्याइ, अपुढाइं गंधाइं अग्याइ ? गोयमा ! पुढाइ गंधाइं अग्याइ, नो अपुढाइं
गंधाइं अग्याइ, अपुढाइं गंधाइं अग्याइ ? गोयमा—१ समचतुरस्र, २
न्यग्रोघपरिमडल, ३ सादि, ४ कुञ्ज, ५ वामन अने ६ हुंढ [जेने जेवा प्रकाखु संस्थान होय तेने तेवा प्रकाराणी स्वर्गिन्द्रिय होय
छे.] व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुकुमारी पेटे कहेवु,

१३. हे भगवन् ! स्पष्ट-स्पर्श कारयेला-इन्द्रियना सबधने प्राप्त ययेला शब्दो सामके के अस्पष्ट-नहि स्पर्श कारयेला शब्दो सां-
मके ? हे गौतम ! स्पष्ट शब्दो सामके, पण अस्पष्ट शब्दो न सामके. हे भगवन् ! स्पष्ट रूप जुए के अस्पष्ट रूप जुए ? हे गौतम !
स्पष्ट रूप न जुए पण अस्पष्ट रूप जुए. हे भगवन् ! स्पष्ट गन्ध मुंधे के अस्पष्ट गन्ध मुंधे ? हे गौतम ! स्पष्ट गन्ध मुंधे, पण अस्पष्ट

१३ हवे स्पष्टार कहे छे—'पुढाइं भते ! सदाइ सुणेति' प्राकृत होयाथी स्वप्ना 'शब्द' नपुसकल्लिा छे, अन्यथा सव्वत भाषामा
'शब्द' पुल्लिग होय छे अही 'श्रोत्रेन्द्रिय' प कर्तृवाचक पद अर्थापत्तिगम्य छे हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय स्पष्ट शब्दोने सामके ? तेमा 'स्पष्ट्यन्ते
इति स्पष्टा' शरीर उपर धूलीकणनी पेटे जेनो प्रलेयात्मक सयन्ध थाप ते स्पष्ट-स्पर्शमात्रने प्राप्त ययेला फहेयाप छे कारण के 'पुढ

अर्थात् । एवं रसाणवि फासाणवि, णवरं रसाईं अस्साएति, फासाईं पडिसंवेदेति चि अभिलावो कायञ्चो । प-
विट्ठाईं भंते ! सदाईं सुणेति, अपविट्ठाईं सदाईं सुणेति ? गोयमा ! पविट्ठाईं सदाईं सुणेति, नो अपविट्ठाईं स-
दाईं सुणेति, एवं जहा पुट्ठाणि तथा पविट्ठाणिवि ।

गन्ध न सुंचे. ए प्रमाणे रस अने स्पर्श संबन्धे पण जाणवुं. परन्तु 'रस आस्वादे छे अने स्पर्शने वेदे छे' ए पाठ कहेवो. हे भगवन् !
प्रविष्ट-इन्द्रियमां प्रवेश करेला शब्द सांभळे के अप्रविष्ट शब्द सांभळे ? हे गौतम ! प्रविष्ट शब्द सांभळे, पण अप्रविष्ट शब्द न
सांभळे-इत्यादि जेम स्पृष्ट संबन्धे कहुं तेम प्रविष्ट संबन्धे जाणवुं.

रेणुं च तणुम्मि' शरीरने चिरो धूलनी पेठे स्पर्श करयेला 'शब्दयन्ते-प्रतिपाद्यन्तेऽथा पभिरिति शब्दाः' जे वडे अर्थोळुं
प्रतिपादत कराय ते शब्दो, तेने सांभळे-ग्रहण करे ? तात्पर्य प छे के-श्रोत्रेन्द्रिय स्पृष्टमात्र शब्द द्रव्यने जाणे छे, पण घ्राणेन्द्रियादिनी
पेठे वद्वस्पृष्ट द्रव्यने नहि, कारण के शब्दद्रव्यो घ्राणेन्द्रियादिना विषयभूत द्रव्य करतां सूक्ष्म छे अने घणां छे. तेमज ते क्षत्रमां
रहेलां शब्दयोग्य द्रव्यने वासित करनारा छे, तेथी सूक्ष्म होवाथी, अतिघणां होवाथी अने अन्य द्रव्यने वासित करनार होवाथी
आत्मप्रवेशीनी साथे स्पृष्टमात्र-स्पर्शमात्रने प्राप्त थयेलां निवृत्तिन्द्रियमां प्रवेश करीने जल्दी उपकरणेन्द्रियने-शब्दग्रहण करवाली
शक्तिने अभिव्यक्त करे छे. वळी श्रोत्रेन्द्रिय पोताना विषयने जाणवामां घ्राणेन्द्रिय करतां वधारे समर्थ छे, तेथी ते स्पृष्टमात्र शब्द-
द्रव्यने जाणे छे, परन्तु अस्पृष्ट-सर्वथा आत्मप्रवेशो साथे संबन्धने नहि प्राप्त थयेला द्रव्यने जाणती नथी. कारण के तेनो श्रोत्रेन्द्रियने
प्राप्त थयेला विषयने जाणवानो स्वभाव छे. ते प्रकारे श्रोत्रेन्द्रिय प्राप्तकारी-प्राप्त थयेला विषयने जाणवाना स्वभाववाळी छे, ते प्रकारे
नन्दिस्त्वनी टीकादिमां चर्चा करी छे माटे ते त्यांथी जाणी लेवुं. 'पुट्ठाईं भंते ! सदाईं-हे भगवन् ! स्पृष्ट रूपने जुष्ट-इत्यादि सुगम

૧૪. સોનિન્દ્રિયસ્મ નં મને ! કેવલિનિ વિસાન પળ્લવે ? ગોપમા ! જહ્વળેણં અંગુલસ્સ અસંતોઙ્ગલિમાગો, ઉ-

૧૪. હે મગવન્ ! શ્રોત્રેન્દ્રિયનો કેટલો વિષય છે ? હે ગૌતમ ! અપન્યથી અંગુલનો અસંસ્પાતમો ભાગ અને ઉલ્કર્ષથી ચાર યો-
ગે ઉપર કહે છે-હે ગૌતમ ! મનુ સ્ટુર રૂપને ન સુદ, વલ્લુ ઘસ્ટુર રૂપને સુદ, કાલ્લ કે મહુ ભ્રામત વિપળને પ્રહણ કરે તે અને
ને અન્નાક્ષતિય તાપ્યાયંટાક્ષામાં મચિસ્સરુપ્પે સિચ્ચ કરેત્તુ છે માટે સ્વીથી જાણી લેવું મપાદિવિલ્લક મયો મ્પદ છે, વરુત્તુ રુ
પાર મપ્પાન આઠિચ્ચત્તિ-સ્ટુર મપ્પને સુવે છે સ્થાવિ ઝો કે કમ્પુ છે, સો વળ વચ્ચસ્પદ મપ્પને સુવે છે વમ જાણુ, કાળ્લ કે આપ
સ્પક તિપુંલિમાં વમું છે કે-

“પુઠ્ઠુ પુઠ્ઠો વરં મ્પે પુળ વાન્ન અપુઠ્ઠુ પુ ! મપં રલં ય વમં યદ્દપુઠ્ઠુ વિચારો” ॥

સ્ટુર ઘન્ન મંમંઠે છે, મને અમ્પુર રૂપને સુદ છે, મપ, રા મને સ્પયો યચ્ચસ્પુને જાણે છે તેમાં સ્ટુર ઘટલે સૂવંની વંઠે આમ
મ્પેત્તોથી મપે મંચલ્પમામને પ્રામ ધંવેચ, મને વચ્ચ ઘટલે આમ્પમ્પેયો વંઠે મપાતોલા, કાળ્લ કે “વચ્ચમ્પીકપ વ-મેદિ” યચ્ચ ઘટલે
મ્પેત્તેવંઠે આમ્પમ્પ-વકમંક કરાવેચ્ચ-વ્પુ જાલ્લુ વચ્ચ છે મ્પીવચ્ચ વિદોલ્લ છે મને સ્ટુર વિદોલ્લ છે, મને તેમોલો વિદોલ્લ તમામ
માપ છે મ્પી સ્વંમાવયથી સ્ટુર માપ છે, જેમકે ઘન્ન તેથી સ્વંમાવતો નિવેધ કરીને માર સ્વંવિદોલ્લી અજ્જળ ધિના પ્રતિપ્તિ-
વોધ માપ માટે વચ્ચ વિદોલ્લનું પ્રહણ કરેત્તુ છે ઘટલે વચ્ચરુપ ધવેચ્ચ સ્ટુર વિપળને જાણે છે, અપ્પને જાણની મ્પી ઘામ્પી ! કાલ્લ કે
મંપાવિ વ્પયો વાર-સ્ટુર છે, ઘલ્લ છે, મને આયુક-વામક (જેમને વાલિત કલ્લામ) મ્પી, વઢી પ્રાણ વમેરે શ્લોકો વળ ધોને-
ત્રિયનો અપસાપ મન્ન ઇત્તિપાઢી છે હવ પ્રવિદ અને અન્નવિદ વિપળનો વિચાર કરે છે-‘વચ્ચિદારં મ્પે ! સ્થાવ’ દે મગર ! પ્રવિદ
ઘન્ને મંમંઠે ! સ્થાવિ મ્પુ વાન્નિચ્ચ છે, વાન્નુ સ્વંવં ઇત્તિમા વ્પલીના કળની વંઠે માપ છે અને પ્રથેચ મુદ્દામાં જોઢીમ્પી વંઠે
માપ છે વચ્ચ ઇન્નલ્લે ધિન્ન ઘોમાયો સ્ટુર અને પ્રવિદ સંપળ્પી મ્પુઓને ધિન્ન વિપળ જાણવો

ककोसेणं बारसहिं जोअणेहिन्तो अच्छिण्णे पोगले पुढे पविट्ठातिं सद्दतिं सुणेति। चक्खिन्दियस्स णं भंते। के-
वतिए विसए पन्नत्ते ? गोयसा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागो; उक्कोसेणं सातिरेगाओ जोयणसतसह-
जनथी आवेला अछिन्न (अन्य शब्दादि के वातादिथी नहि छेदायेला, सामर्थ्यवाळां) पुद्गलरूप प्रविष्ट शब्दोने सांभले छे. हे भगव-
न् ! चक्षुइन्द्रियनो केटलो विषय छे ? हे गौतम ! जघन्य अंगुलनो संख्यातमो भाग अने उत्कर्षथी कंडक अधिक लाख योजन

१४. हृद्ये इन्द्रियोना विषयनुं परिमाण कहे छे-‘सोइन्द्रियस्स णं भंते ! केवइए विसए पन्नत्ते’ ?-हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनो केटलो
विषय छे-इत्यादि. अहीं श्रोत्र वगैरे इन्द्रियो प्राप्त विषयने ग्रहण करती होवाथी अंगुलना असंख्यातमा भागथी पण आवेला शब्दने
सांभले छे, नेत्र अप्राप्तकारी-अप्राप्त विषयने जाणे छे, तेथी ते जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भाग जेटला दूर रहेला विषयने जुए छे.
तात्पर्य ए छे के नेत्र जघन्यथी अंगुलना संख्यातमा भागप्रमाण दूर रहेला विषयने जाणे छे, पण तेथी नजीकना विषयने जाणतुं
नथी. आ वात दरेक प्राणीने चिदित छे. तेथी अत्यंत नजीकमां रहेला अंजन, रज अने नेत्रना मळने चक्षु जोइ शकती नथी, कद्दु
छे के “अवरससंखेज्जंगुलभागतो नयणवज्जाणं । संखेज्जंगुलभागो नयणस्स” नेत्र सिवाय बाकीनी इन्द्रियोनो विषय जघन्यथी अंगुलनो
असंख्यातमो भाग छे अने नेत्रनो अंगुलनो संख्यातमो भाग छे. उत्कर्षथी श्रोत्रेन्द्रिय बार योजनथी आवेला अछिन्न-नहि
छेदायेलां, अव्यवहित, अन्य शब्दो वडे अथवा वायु वगैरेथी जेनी शक्ति हणाइ नथी पवा पुद्गलोने सांभले छे. आ कथन वडे ‘शब्द
पौद्गलिक छे, पण ‘आकाशनो गुण नथी’ एम प्रतिपादन कर्युं. ‘शब्द पौद्गलिक छे’ ए वायत तत्त्वार्थटीकामां सिद्ध करी छे तेथी
अहीं फरी तेनो विस्तार करता नथी. स्पृष्टमात्र-शरीरमां लागेली धूळनी पेटे स्पर्शमात्रने प्राप्त थयेलां अने प्रविष्ट-निर्वृत्ति इन्द्रियमां
प्रवेशेला शब्दोने सांभले छे, पण बार योजननी आगळथी आवेला शब्दोने सांभळती नथी. कारण के आगळथी आवेला शब्दोने मन्द
परिणाम थाय छे. ते आ प्रमाणे-बार योजनथी आगळ आवेला शब्द पुद्गलो तथोस्वभावथी तेवा प्रकारना मन्दपरिणामवाळा थाय

મગાઓ મસ્તિષ્ઠવને પોગાંહે અપુઠે અપરિદ્વાતિ સ્વાયં પાસર। ગાનિન્દિયસ્મ પુષ્પા। ગોપમા ! જલ્પ્ણેનં અંગુલ-
અમનેશ્ચિત્વાગો, ત્વરોતેણં વયત્તિ જોપ્ણેપ્રિન્તો અચિષ્ણે પોગાંહે પુઠે પરિદ્વાતિ ગંપાતિ અગાર, ગ્વં જિ-
શિમન્દિયસ્મરિ કાનિરિયસ્મરિ ।

પ્રથિષ્ઠ પુદ્ગલ્લ્લ અગુર અને પમરિષ્ઠ સ્વાને તુર છે. પ્રાંવન્દિયનો ફેટલો રિષય છે ? દે ગોપમ ! જ્યન્ય અનુનો પ્રાંવપ્ણામો
માગ અને ગ્વંકાંધી નર પોંચનથી આરેલા મસ્તિષ્ઠ પુદ્ગલ્લ્લ્લ સ્થર અને પ્રવિષ્ઠ ગંપને ગુંથે છે. ઇ પ્રમાણે તિરોન્દિય અને સ્વાનેન્દિય
ગંપે જાતી.

છે કે કેવી વાતલા તિરવં પોંચકાન ગ્વલ્લ કર્યાંને મ્વયં થવા મથી પોંચેન્દિયનુ વલ તેવા પ્રકારુ વધારે અદ્વગુલ વચ મળી,
કેવી આગલ્લયા આરેપા ગાંપોને ગાંપોને વા-પુન્દિય વધારેમાં વધારે વરુક અધિક માત્ર પોતલથી માંતેમી મસ્તિષ્ઠ-વચ્ચુટી વાગલી
ગુંદરી વનેટેલી અચ્ચાદિલ-મ્વલત રદિલ, અગુર-દુર રહેવા અને વપ કાળથી અમરિષ્ઠ પુદ્ગલ્લ્લ્લ્લ વચને તુર છે કારણ કે તેથી
માગલ્લ અચ્ચાદિલ (કોર વલ વસ્તુ વહેવે મ્વલત ન દોષ વયુ) વચ દોષ ભો વલ તેને ઝોવામા વધુરિ દ્વયલી શક્તિ મળી મરી પ્રગુર
વચ પ્રકાનો છે તે આ પ્રમાણે-આર્માંગુલ, ગાનેપાંગુલ અને પ્રમાણાગુલ નેમાં "જે મપુલ્યો જે કાઢે દોષ ત્યારે મંભોં માલ-પ્રમાણ
વચ જે પ્રગુલ ને આર્માંગુલ અને તે અનિવન પ્રમાણચાલુ દોષ છે આગ મ્વચ્ચાદિલો આર્માંગુલ છે ગત્માણુ, વગરેણુ, ર્ષારેણુ,
માત્રાપ, મીલ, ચુ, ત્વ તે વધા ત્વરોષ્ઠર માલ ગુણા વધારે દોષ છે" (એને વધા માલ ગરલો માગલ) ય સ્વરુપાલ્લો વચ ત્વરોષ્ઠાગુલ
દ્વગાર ગુણો વાપ ત્યારે પ્રમાણાંગુલ માત્ર છે અને તે ત્વરોષ્ઠાંગુલને વચનો કર્તા અગલ મત્તારીલો આર્માંગુલ વાપ છે" વધા પ્રકા
લ્લો વીડો પ્રમાણાંગુલ છે નેમાં આર્માંગુલ વહે તે કાઢતા વાવ, વૃણા વગેરે વસ્તુ, ત્વરોષ્ઠાંગુલ વહે મપુલ્ય, તિલ્લ, રેવ અને માલ-
કોના તરીને અને પ્રમાણાંગુલ વહે વૃષિલી અને પિમાલો મળાય છે કાલુ છે કે—"આર્માંગુલ વહે વસ્તુ-પાટ દાટ આરિ વાગુ માલ,

उत्सेधांगुलना प्रमाणथी शरीरुं मान अने प्रमाणंगुल वडे पर्वत, पृथिवी अने विमानोनुं मान करुं." (प्र०)—तेमां आ इन्द्रियना विषयनुं परिणाम आत्मांगुल, उत्सेधांगुल के प्रमाणंगुलथी करुं? (उ०)—आत्मांगुलथी करुं. तेज प्रमाणे चक्षुइन्द्रियना विषयना परिमाणना विचारमां भाष्यकार कहे छे—'नेत्र अने मन अप्राप्तकारी छे. इन्द्रियने अप्राप्त विषयने ग्रहण करना छे, नेत्रना विषयनुं परिमाण आत्मांगुल वडे कंइक अधिक लाख योजन छे. (प्र०)—शरीरुं प्रमाण उत्सेधांगुलथी करवामां आवे छे अने इन्द्रियो शरीराश्रित छे तेथी तेओनुं विषयपरिमाण पण उत्सेधांगुलथी करुं योग्य छे, तो आत्मांगुलथी करुं एम कहे छो? (उ०)—आत्मांगुलथी मान करवामां दोष नथी, जो के इन्द्रियो शरीराश्रित छे, तो पण तेओनुं विषयपरिमाण आत्मांगुलथी ज करुं. कारण के विषयपरिमाण शरीरथी अन्य छे. आज अर्थने भाष्यकार पण आक्षेप पूर्वक कहे छे—'उत्सेधांगुलना प्रमाणथी यावत् शरीरना मानादि कक्षां, परन्तु ते देहजुंज प्रमाण समजनुं, पण इन्द्रियना विषयनुं परिमाण न समजनुं." अहीं जे शरीरप्रमाण उत्सेधांगुल प्रमाण वडे कहुं ते मात्र शरीरप्रमाण ज समजनुं पण इन्द्रियना विषयनुं परिमाण न जाणनुं. कारण के इन्द्रियना विषयनुं परिमाण आत्मांगुल वडे मान करवा योग्य छे. (प्र०)—जो इन्द्रियोना विषयनुं परिमाण उत्सेधांगुलथी थाय तो शो दोष थाय? (उ०)—पांचसो धनुष वगेरेना प्रमाणवाला मनुष्योना विषयना व्यवहारनो विच्छेद थाय. ते आ प्रमाणे-जे भरतनो आत्मांगुल छे, ते प्रमाणंगुल वरोवर छे अने ते प्रमाणंगुल हजार उत्सेधांगुल वडे थाय छे. कारण के 'उत्सेहंगुलमेगं हवइ परमाणंगुलं सहस्सगुणं' हजार गुणा उत्सेधांगुलनी वरावर प्रमाणंगुल छे-एवु शाखनुं वचन छे. तेथी भरत अने सगरप्रमुख चक्रवर्तीओनी जे अयोध्यादि नगरीओ, अने स्कन्धावार-छावणीओ आत्मांगुल वडे वार योजन प्रमाण सिद्धान्तमां प्रसिद्ध छे, तेनुं उत्सेधांगुलथी मान करवामां आवे तो अनेक हजार योजन थाय. एम थवाथी तेनी आयुधशाला-वगेरे स्थले वगाडेली मेरी वगेरेना शब्दनुं श्रवण नहि थाय, कारण के 'श्रोत्रेन्द्रिय वार योजन नथी आवेला शब्दने ग्रहण करे छे' एवुं शाख वचन छे, वली समस्त नगरव्यापी अने वधी छावणीमां व्याप्त थनार विजय सूचक ढक्का वगेरेनो शब्द आगममां कहेलो छे, अने ते प्रकारेज मनुष्यनो व्यवहार थाय छे, तेथी आगमप्रसिद्ध पांचसो धनुष वगेरे प्रमाण

शरीरवाद्य मनुष्योना विषयव्यवहारो विच्छेद न पाय माटे आत्मागुल वटे इन्द्रियोना विषयु परिमाण जाणु, पण उल्लेखांगुल वटे गदि प संश्लेषे भाष्यकार कहे छे—

‘त्रे तेन पशुशुभकनाप्रमिसवमदादोच्छेजो । पाय बहुस्वगुणिय जेण पमाणुल ततो ॥ (शिवोपा० गा ३४२)

जेथी ते उल्लेखांगुलवटे पांचसो घुपुप्रमाण शरीरवाद्या मनुष्यादिना इन्द्रियना विषय संश्लेषी व्यवहाल्लो विच्छेद प्राप्त पाय, कारण के उल्लेखांगुलपी प्रमाणागुल हजारगुणो होय छे” ते माटे आत्मागुल वटे इन्द्रियोना विषयनु परिमाण जाणु, पण उल्लेखांगुल वटे न तमपु-ए उपसंहार वाक्यनो स्वयमेव विचार करयो यद्यपि पूरे कसु के ‘शरीरार्थित इन्द्रियो छे माटे तेमोना विषयु परिमाण उल्लेखांगुलपी कसु जोरप’ ते पण अयुक्त छे, कारण के केटकीक इन्द्रियोना एण विस्वातु परिमाण आत्मागुल वटे स्वीकारेनु छे अने प वाचन पूरे पण इन्द्रियना प्रमाणागा विचारमां ‘अयनिज्ज’ इत्यादि भाष्यकारना वचनो टाकीने विचारेली छे माटे तयै इन्द्र-

१ जेरी न उल्लेखांगुल वटे इन्द्रियना विषयनु परिमाण मानी” ता पांचसो घुपुना प्रमाणागा, आदिसत्त्वकी तादाचारणो स्मरे घुपुना प्रमाणागा अल, गणादि मनुष्योना न भा धात्रादि इन्द्रिया वटे एकरादि इन्द्रिया वटे एकराजो प्रमित एतद्वार छे तनो विच्छेद प्राप्त पाय तापी । उ वहे छे—अपी अल एकाकीनो भेगुस्व प्रमाणांगुल उ अने उ उल्लेखांगुलपी हजारगुणा वजो छे कारण के ‘गहस्वगुल उल्लेखांगुल न एक प्रमाणांगुल छे’ एउ भाष्यवचन छे अस्मादिनी अपोत्तरि नगरीओ अत एकाकार-एरापी विलासमां आत्मांगुल वटे एकर योजन प्रमाण गिज्जान्तमां निर्मान उ अने ते उल्लेखांगुल वहे अनेक हजार योजन पाय छे आदी तेन दिने आनुष्णागर्भिमो एगाकेरी भेगी एरोना एकरुं धरण तन्माा अग्निदावपी वपान नई पाय, कारण के धात्रेन्द्रिय वार योजनपी आरेल एकरन नामाडे छे, एउपी आरेन एकरने गर्भमठपी नपी अत ” वार योजन तन्माा वने उल्लेखांगुलपी काफी” तो उल्लेखांगुलपी वला अनेक हजार योजनपी आरेन भेगी एरोना एकरन धात्रेन्द्रिय केन गांकेडे । अत आत्मादिनी नगरीनी एराणीमां तेनुं धरण तो पाय छे, माटे आत्मांगुलपी इन्द्रियना विषयनु परिमाण छे एन उल्लेखांगुलपी नपी उभा वसा वच्यमव्य मुदित शिवोपास्यक भाष्यटीका प. ३०८

यना विषयं परिमाण आत्मांगुल वडेज थाय छे प वावत सिद्ध थाय छे. (प्र०)—आत्मांगुल वडे विषयं परिमाण भले हो, तो पण प्रकृत सूत्रमां कहेलुं चक्षुइन्द्रियना विषयं परिमाण घटुं नथी, कारण के बीजा आगमोमां तेना विषयं परिमाण अधिक पण कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे—‘पुष्करवर् द्वीपार्धमां मानुयोत्तर पर्वतनी पासे रहेनारा मनुष्यो कर्कसंक्रान्तिने दिवसे प्रामांणंगुल वडे कंइक अधिक-एकवीश लाल योजन दूर रहेला सूर्यने जुए छे’ पम शास्त्रान्तरमां प्रतिपादन करे छे. अने ते प्रमाणे ते अर्थने प्रतिपादन करनार आ ग्रन्थ छे—

“ इगवीसं खलु लम्बा चउतीसं चैव तह सहस्राङ्गं । तह पंचसथा भणिया सत्तीसाए अतिरिक्ता ॥

इह नयणविसयमाणं पुष्करदीवद्वत्रासिमणुयाणं । पुष्केण य अवरेण य पिहं पिहं होइ नायव्यं” ॥

एकवीश लाल चोत्रीश हजार पांचसो ने साडत्रीश (योजन) प प्रमाणे नेचना विषयं परिमाण पुष्करवर्दीपना अर्ध भागमां रहेनारा मनुष्योने पूर्व अने पश्चिम दिशाए (उदय अने अस्त समये) जुं जुं जाणुं इत्यादि. तो आ प्रस्तुत सूत्र आत्मांगुल वडे पण केम घटी शके ? कारण के प्रमाणांगुलथी पण व्यभिचार-अनियतपणुं थाय छे, कहलुं छे के—

“ लम्बोर्ध्वे एकवीसाए साइरोर्ध्वे पुष्करद्वग्नि । उदये पेच्छंति नरा सूरं उक्रोसए दिवसे” ॥

नयर्णदियस्स तग्हा विसयपमाण जहा जुए भणियं । आउरसेहपमाणंगुलाण एक्केणवि न जुत्तं” ॥ (विशेषा० गा. ३४५-६)

पुष्करार्धमां रहेला मनुष्यो उल्कृष्ट दिवसे-कर्क संक्रान्तिना दिवसे कंइक साधिक एकवीश लाल योजन दूर रहेला सूर्यने उदयसमये जुए छे. माटे नयनेन्द्रियना विषयं परिमाण जेम श्रुतमां कहेलुं छे तेम आत्मांगुल, उत्सेधांगुल अने प्रमाणांगुलमाना कोइ पण एक आंगुल वडे युक्त नथी. (उ०)—ए वात सत्य छे, परन्तु आ सूत्र केवल प्रकाश-प्रकाश करवा योग्य विषयनी अपेक्षाए समजुं. परन्तु प्रकाशक विषयनी अपेक्षाए न समजुं. अर्ही सूर्य प्रकाशक विषय छे, माटे प्रकाशक वस्तुमां विषयं परिमाण अधिक होय तो पण विरुद्ध नथी, कंइ पण दोष नथी. (प्र०)—ए प्रमाणे शी रीते जाणी शकय ? पूर्वाचार्योप करेला व्याख्यानथी जाणी शकय छे. कारण के

णं ते पोगला पणत्ता समणाउसो ! सब्बं लोगंपि य णं ते ओगाहित्ता णं चिद्धंति ? हंता ! गोयमा ! अणगा-
रस्स भावियप्पणो मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरमा णिज्जारापोगला, सुहुमा णं ते पोगला पणत्ता
समणाउसो !, सब्बं लोगंपि य णं ओगाहित्ता णं चिद्धंति। छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तेसिं णिज्जारापोगलाणं किं

श्रमण ! ब्रह्म कहां छे ? अने ते सर्व लोकमां अवगाहीने रहे छे ? हे गौतम ! अवश्य मारणांतिक समुद्घातने प्राप्त थयेला भावितात्मा
अनगारना छेब्लां निर्जरापुद्गली छे, ते हे आयुष्मान् श्रमण ! ब्रह्म कहां छे अने ते सर्व लोकने विये अवगाहीने रहे छे. हे भग-
वन् ! छब्रस्थ मनुष्य ते निर्जरापुद्गलोनुं अन्यपणुं, नानापणुं, हीनपणुं, तुच्छपणुं, गुरुपणुं अने लघुपणुं जाणे छे अने जुए छे ? हे

१५-१६. 'अणगारस्स णं भंते' ! हे भगवन् ! जेने द्रव्यथी अने भावथी अगार-घर नथी ते अनगार-संयत, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने
तपविशेष वडे जेनो आत्मा भावित-यासित थयेलो छे पया अने मरणसमुद्घात वडे समवहत-इणायेला पटले मरणसमुद्घातने प्राप्त
थयेला साधुना जे चरम-शैलेशीकाळना अन्त्य समयना निर्जरापुद्गलो-कर्मभाव रहित थयेला परमाणुओ छे ते पुद्गलो 'णं' निश्चय अर्थमां
छे, कारण के निपाताना अनेक अर्थ होय छे. अवश्य ब्रह्म-चक्षुआदि इन्द्रियना विषय रहित हे आयुष्मान् श्रमण ! कहां छे ? 'हे आयुष्मान्
श्रमण' ! प गौतमकृत भगवंतनुं संयोधन छे. तथा प निश्चित छे के ते पुद्गलो सर्व लोकमां अवगाहीने-स्पर्श करीने (णं वाक्यालंकारमां
वापरयेलो छे) रहे छे ? प प्रमाणे गौतमे प्रश्न कयों पटले भगवान् कोठे छे--हे गौतम ! तन्त-अवश्य, अर्ही हन्त अवधारण अर्थमां छे,
पमज छे-'भावित्तात्मा अनगारना' इत्यादि तेज प्रश्न पुनः कहेनो. 'हे भगवन् ! छमस्य मज्जाय ते निर्जरा पुद्गलोनुं अन्यत्व-भिन्नपणुं
जाणे अने जुए इत्यादि. अर्ही वा प्रश्नने शो अयकाश छे ? उत्तर--अर्ही पूर्वं कणुं दंतुं के 'स्पृष्ट अने प्रविष्ट शब्द द्रव्यो सांख्ये
छे' इत्यादि. निर्जरापुद्गलो पण सर्वलोकनो स्पर्श करे छे तो तेओनो पण श्रोत्रादिमां स्पर्श अने प्रवेश श्नुं नथी थतो ? प संशय

आणत्तं वा नाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुत्तं वा जाणत्ति पासति ? गोयमा ! णो इण्णट्ठे स-
मट्ठे । से केण्हण मत्ते ! एवं दुधइ-‘छउमत्त्ये ण मण्णसे तेसिं णिळ्ळारापोगलाणं णो किंचि आणत्त वा णाणत्तं
वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुत्तं वा लहुयत्तं वा जाणह पासइ’ ? गोयमा ! देवेवि य णं अत्थेगतिए जे णं तेसिं नि-
ज्जारापोगलाण नो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा गरुत्तं वा लहुयत्तं वा जाणत्ति पासति,
गौतम ! ए अयं समर्थ-युक्त नथी. हे भगवन् ! या हेतुपी एम क्खो छो के ‘छप्रस्थ मनुष्य ते निर्जरुद्रुगलोलुं अन्यपणु, भिम-
पणु, हीनपणु, सुच्छपणु, गुरुपणु अने लघुपणुं जाणतो नथी’ ? हे गौतम ! कोइ देव एण ते निर्जरुद्रुगलोलु कंषण अन्यपणुं, भि-
क्षपणुं, हीनपणुं, तुच्छपणुं, गुरुपणुं अने लघुपणु जाणतो नथी, तेम देखतो नथी, ते माटे हे गौतम ! एम क्खेवाय छे के छप्रस्थ
मनुष्य ते निर्जरुद्रुगलोलु कंषण अन्यपणुं थावत् जाणतो नथी, तेम देखतो नथी. ए प्रमाणे हे आयुष्मान् श्रमण ! एम ते

याय छे तेपी प्रश्न करे छे--‘हे भगवन् ! छप्रस्थ मनुष्य, अर्ही छप्रस्थनु प्रहण केपलीनो निवेध करवा माटे छे, कारण के केयलक्षानी
यथा य आत्मात्मा प्रदेशो यदे सर्वे जाणे छे अने शुप छे कसू छे के-“सम्यतो जाणर केयली सव्यतो पात्तर केयली”-केयलक्षानी
सर्वे जाणे छे अने सर्वेपी शुप छे स्तुतिकार एव कहे छे--‘सम-यत सर्वगुणं निरदा’ इति अने छप्रस्थ अंगोपागानामकर्मविशेष
यदे सस्कारने प्राप्त थयेल इन्द्रियद्वाराज जाणे छे अने शुप छे माटे छप्रस्थनु प्रहण छे आ हेतुपीज अर्ही विचिट्ट अयधिसन्नपरित
छप्रस्थनु प्रहण करवाडु छे से निर्जरुद्रुगलोलु अन्यत्व-अव्यपणु पटले वे अनगार-साशुभोना जे निर्जेतपुत्रलो छे तेभोऽ परस्पर
भिन्नपणु, ‘नातात्व’ नागापशुं-बीजानी अपेक्षा लियाय एकनाज निर्जेत पुद्रलोऽ वर्णादितु विचिप्रणु, ‘अयमात्व’-हीनपणु, तुच्छत्व-
नि-सारणु, गुरुत्व अने लघुत्व प्रसिद्ध छे, भगवान् उत्तर भापे छे--ए अर्थ समर्थ-युक्तियुक्त नयो, कारण के छप्रस्थ मनुष्य ते

से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुचति-छउमत्थे णं मणूसे तेसिं णिज्जरापोगगलाणं नो किंचि आणत्तं वा जाव जाणति पासति, एवं सुहुमा णं ते पोगगला पणत्ता समणाउसो !, सच्चलोगंपि य णं ते ओगाहिता णं चिद्धंति ।

१६. नेरइया णं भंने ! ते निज्जरापोगले किं जाणंति पासंति आहंरंति, उदाहु न याणंति न पासंति आहंरंति ? गोयमा ! नेरइया णिज्जरापोगले न जाणंति न पासंति आहंरंति, एवं जाव पंचिन्दियतिरिच्चखजोषियाणं ।

पुद्गलो मूक्षम कखा छे, अने सर्वलोकने अवगाहीने रहे छे.

१६. हे भगवन् ! नेरयिको ते निर्जरापुद्गलो जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे ? अथवा जाणतो नथी, जोतो नथी अने आहार करे छे ? हे गौतम ! नेरयिको निर्जरापुद्गलोने जाणता नथी, जोता नथी अने तेनो आहार करे छे. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तियंचो सुधी जाणवुं.

निर्जरापुद्गलोनुं अन्यपणुं वगेरे जाणतो नथी अने जोतो नथी.

आ संवन्थे प्रश्न करे छे-‘हे भगवन् ! सा हेतुथी एम कळो छो’-इत्यादि सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे-कोर कर्मपुद्गल संवन्थी अवधिज्ञानरहित देव छे, जे ते निर्जरापुद्गलोनुं कंसपण अन्यपणुं नगेरे जाणतो नथी अने जोतो पण नथी. तात्पर्य ए छे के देवोने मनुष्यो करतां वधारे मामर्थवाढी इन्द्रियो होय छे, तेमां देव पण जाणतो नथी अने जोतो नथी तो मनुष्य माटे तो छुं कहेवुं, ‘ए हेतुथी’ इत्यादि उपसंभार वाक्य सुगम छे. पटला प्रमाणवडे ते निर्जरा पुद्गलो सूक्ष्म करां छे. ‘हे आयुष्मान् श्रमण’ ! ए भगवाने करेलुं गौतमने संयोधन छे. ते एवा प्रकारना अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गलो सर्व लोकोने रहे छे, परन्तु ते वातरूप पुद्गलो नथी, जो वावर होय तो सांध्यगार्हिक प्रत्यक्षना (इन्द्रिय प्रत्यक्षना) विवेकनो प्रसंग उपस्थित थाय. ते निर्जरापुद्गलो सर्वे

१७. मणूसा णं भंते ! ते निज्जरापोगले किं जाणंति पासंति आहारंति, उदाहु न याणंति न पासंति आहारंति । से केरंति ! गोयमा ! अत्येगतिया जाणंति पासंति आहारंति, अत्येगतिया न याणंति न पासंति आहारंति । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुचंति—‘अत्येगतिया जाणंति पासंति आहारंति, अत्येगतिया न जाणंति न पासंति आहारंति’ ?

१७. हे भगवन् ! मनुष्यो ते निर्जरापुद्गलोने शु जाणे छे, जुए छे, अने तेनो आहार करे छे ? अथवा जाणता नथी, जोतानथी, अने आहार करे छे ? हे गौतम ! केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे, केटलाएक जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. हे भगवन् ! एम था हेतुथी कहो छो के ‘केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे, केटलाएक जाणता नथी,

लोकस्पर्शी छे, तेथी आ पण प्रश्न घाय छे—‘नैरय्या ण मत्ते’ ! इत्यादि हे भगवन् ! नैरयिको ते निर्जरापुद्गलोने आहार करे छे प सिद्ध छे, कारण के पुद्गलो ते ते सामग्रीना यथाथी विचित्र परिणाम पामयाना स्वभाववाळा होवाथी आहाररूपे पण तेओना परिणामनो समय छे, मात्र आज थायत प्रश्न छे के ‘ते नैरयिको जाणे छे, जुए छे’ ? इत्यादि प्राष्ट होवाथी क्रियाना हेतुपणामा पण यत्तमान विभक्ति थयेली छे तेथी आ अर्थ घाय छे—नैरयिको ते पुद्गलोने जाणता अने जोता आहार करे छे के नहि जाणता अने नहि जोता आहार करे छे भगवान् उतर आये छे—‘नहि जाणता अने नहि जोता आहार करे छे’ शायी ! कारण के ते निर्जरापुद्गलो अति सूक्ष्म होवाथी चक्षुआदि इन्द्रियोना विषय रहित छे अने नैरयिकोने कर्मणशरीला पुद्गलविषयक अवधिदान होतु नथी प प्रमाणे अतुक्कुमार सयन्धी सूत्रो थायत्, तिर्यचपथेन्द्रियसुधी जाणवां

१७-१८ मनुष्यसूत्रमां ‘सन्निभूया य’ संक्षीमूल-संक्षीपणाने प्राप्त थयेला अने ते सिंघायना यीजा अससीमूल छे अही सली पटले विचित्र अवधिदानवाळो प्रहण करयो, के जेना दाननो विषय ते कर्मण शरीला पुद्गलो छे याकी यशु सुगम छे वैमानिक सूत्रमां ‘मायीमि-

गोत्रमा ! मणूसा दुविहा पणत्ता, तंजहा-सण्णिभूया य असण्णिभूया य । तत्थ णं जे ते असण्णिभूया ते णं न याणंति न पासंति आहारंति । तत्थ णं जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-उवउत्ता य अणुवउत्ता य । तत्थ णं जे ते अणुवउत्ता ते णं न याणंति न पासंति आहारंति । तत्थ णं जे ते उवउत्ता ते णं जाणंति पासंति आहारंति, से एएणट्ठेणं गोत्रमा ! एवं बुच्चइ-‘अत्थेगतिया न याणंति न पासंति आहारंति, अत्थेगतिया जाणंति पासंति आहारंति’ । वाणमंतरजोइसिया जहा नेरइया ।

जोता नथी अने आहार करे छे ? हे गौतम ! मनुष्यो वे प्रकारता छे—संझीभूत अने असंझीभूत । तेमां जे असंझीभूत छे ते जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे. अने तेमां जे संझीभूत छे ते वे प्रकारता छे, ते आ प्रमाणे-उपयुक्त (उपयोगवाळा) अने अनुपयुक्त (उपयोगरहित). तेमां जे उपयोगरहित छे ते जाणता नथी, जोता नथी, अने आहार करे छे. अने जे उपयोगवाळा छे ते जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे. ए हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के ‘केटलाक जाणता नथी, जोता नथी अने आहार करे छे, अने केटलाएक जाणे छे, जुए छे अने आहार करे छे. व्यन्तर अने ज्योतिपिको नैरयिकोनी पेठे जाणवा.

‘च्छादिही’ इत्यादि. मायी मिथ्यादृष्टि-माया-श्रीजो कराय छे, अने ते अन्य करायोनुं उलक्षण-सूचक छे, ते जेओने छे एवा मायी-उत्कट रागद्वेषवाळा मिथ्यादृष्टि, ते रूपे उत्पन्न थयेला ते मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्न करेचाय छे, अने तेथी विपरित अमायी सम्यग्दृष्टि उपपन्नक जाणवा. अही मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्नना प्रद्वेषथी नवमा प्रवेयक सुधीना धैमानिको जाणवा. जो के नीचेना कल्पोमां अने त्रैवेयकमां सम्यग्दृष्टि देवो छे तो एण तेओनुं अचधिज्ञान कार्मणशरीरना पुद्गलयिपयक नथी, तेथी तेओ एण मायीमिथ्यादृष्टि उप-

१८. वैमाणिया णं भंते ! ते निज्जरापोगळे किं जाणंति पासंति आहारंति ? जहा मणूसा । णवर वैमाणिया बुचिहा पन्नत्ता, तंजहा-माइमिच्छदिट्ठीउववणणा य अमायिसम्मदिट्ठीउववणणा य । तत्थ णं जे ते माइमिच्छदिट्ठीउववणणा ते णं न याणति न पासंति आहारंति, तत्थ णं जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववणणा ते बुचिहा पन्नत्ता, तंजहा-अणंतरोववणणा य परंपरोववणणा य । तत्थ णं जे ते अणंतरोववणणा ते णं न याणति न

१८. हे मगवन् ! वैमानिको ते निर्जरपुद्गलोने शु जाणे छे, जुए छे अने तेनो आहार करे छे ? हे गौतम ! मनुष्योनी जेम जाणवा. परन्तु वैमानिको वे प्रकारा छे. ते आ प्रमाणे—मायीमिध्यादृष्टिउपपन्नक अने अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक. तेमां जे मायीमिध्यादृष्टिउपपन्नक छे ते जाणता नथी, जोता नथी, पण आहार करे छे. तेमां जे अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक छे ते वे प्रकारां छे. ते आ प्रमाणे—अनन्तरोपपन्न अने परंपरोपपन्न. तेमां जे अनन्तरोपपन्न छे ते जाणता नथी जोता नथी, अने आहार करे छे. जे परप-

पस जेया होवाथी उपमानथी मायी मिध्यादृष्टिउपपन्नक शुब्धी कहेयाय छे जेओ अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्नक देखो छे ते अनुत्तर देखो छे तेओ वे प्रकारा छे-अनन्तरोपपन्न अने परंपरोपपन्न जेओ एक पण समयना अन्तर सिधाय उत्पन्न थयेला पटले उत्पत्तिना प्रथम समययतीं छे तेओ अनन्तरोपपन्न अने परंपरा वडे उत्पन्न थयेला पटले उत्पत्ति पछी वे षण इत्यादि समयोमां थतता परंपरोपपन्न कहेयाय छे तेमां जेओ अनन्तरोपपन्न छे तेओ ते निर्जरा पुद्गलोने जाणता नथी अने जोता नथी, कारण के सेओने एक समयना उपयोगनो अर्समय छे अने तेओ अपर्याप्ता छे परंपरोपपन्नक वे प्रकारा छे-पर्याप्ता अने अपर्याप्ता तेमा जेओ अपर्याप्ता छे तेओ जाणता नथी अने जोता नथी, कारण के अपर्याप्ता होवाथी समयक उपयोगनो अर्समय छे. पर्याप्ता पण वे प्रकारा छे-उपपुक्त-उपयोगवाळा अने अनुपुक्त-उपयोग रक्षित तेमा जे उपयोगरक्षित छे ते जाणता नथी अने जोता नथी कारण के उपयोग सिधाय

પાસંતિ આહારંતિ । તત્થ ણં જે તે પરંપરોચવણના તે હુવિહા પન્નતા, તંજહા-પ્જત્તગા ય અપ્જત્તગા ય । તત્થ ણં જે તે અપ્જત્તગા તે ણં ન જાણંતિ: ન પાસંતિ આહારંતિ । તત્થ ણં જે તે પ્જત્તગા તે: હુવિહા પ્જત્તા, તંજહા-ઉવ-ઉત્તા ય અણુવઉત્તા ય । તત્થ ણં જે તે અણુવઉત્તા તે ણં ન યાણંતિ ન પાસંતિ આહારંતિ, તત્થ ણં જે તે ઉવ-ઉત્તા તે ણં જાણંતિ પાસંતિ આહારંતિ, સે પ્તેણદ્દેણં ગોયમા ! एवं बुच्चति-‘अर्थगतिया याणंति जाव अर्थेगं-

रोपपन्न છે તે વે પ્રકારના છે—પર્યાપ્તા અને અપર્યાપ્તા. તેમાં જે અપર્યાપ્તા છે તે જાણતા નથી, જોતા નથી અને આહાર કરે છે. તેમાં જે પર્યાપ્તા છે તે વે પ્રકારના છે—ઉપયુક્ત અને અનુપયુક્ત. તેમાં જે અનુપયુક્ત છે તે જાણતા નથી, જોતા નથી અને આહાર કરે છે. જે ઉપયુક્ત છે તે જાણે છે, જુગ છે અને તેનો આહાર કરે છે. તે હેતુથી હે ગૌતમ ! एम कहुं हुं के केटलाएक जाणे છે, यावत्-केटलाएक आहार करे છે.

સામાન્યરૂપે અને વિશેષરૂપે જ્ઞાન થયું અશક્ય છે. જેઓ ઉપયોગવાલા છે તેઓ જાણે છે અને જુગ છે. કેવી રીતે જાણે છે અને જુગ છે ? उत्तर—अर्हीं आवश्यकमां अवधिज्ञानना विषयना विचारमां आ फाणुं छे के “संखेज्ज कम्मदब्बे लोभे ओवृणगं पलियं” अर्थ:-

૧. “સંચિજ્જમણોદ્બ્બે ભાંગો લોગપલ્લિયસ્સ ચોદ્ધચ્ચો” ઇતિ ગાયાપૂર્ણિ: । મનોદ્રવ્ય વિષયક અવધિજ્ઞાન હોય તો લોક અને પલ્યોપમનો સંદ્યાતમો ભાગ તેના વિષય તરીકે જાણવો. અને ક્ષ્મદ્રવ્ય વિષયક અવધિજ્ઞાન હોય તો લોક અને પલ્યોપમના સંદ્યાતા ભાગો તેનો વિષય છે. તાત્પર્ય એ છે કે મનોદ્રવ્યને જોતો અવધિજ્ઞાની શેત્રથી લોકનો સંદ્યાતમો, ભાગ અને ક્ષ્મદ્રવ્યના સંદ્યાતમો ભાગ જુગ છે, અને ક્ષ્મદ્રવ્યના દ્રવ્યને જોતો અવધિજ્ઞાની શેત્રથી લોકના સંદ્યાતા ભાગો અને ક્ષ્મદ્રવ્યના સંદ્યાતા ભાગો જુગ છે. તથા શેત્રથી સમસ્ત લોકને જોતો ક્ષ્મદ્રવ્ય ન્યૂન પલ્યોપમને જુગ છે. ડુઓ વિગોપા૦ ટીકા પ. ૩૪૧.

तिता आहरेति ।

१९. अद्यायं वेदमागे मणूसे अद्याय-वेदनि, अत्ताणं वेदह; पलिमागं वेदति ? गोयमा ! अद्यायं वेदति, नो अप्पाणं वेदति, पलिमागं वेदति । एवं एतेण अभिलाषेणं अस्सि मणिं बुद्धं पाणं तेह्ण फाणियं वसं ।

१९. हे मगवन् ! आदर्शने जोनार मनुष्य आदर्शने जुए छे; आत्माने-पोताने जुए छे के प्रतिबिम्ब जुए छे ? हे गौतम ! आदर्शने जुए छे, आत्माने-पोताने जोतो नथी, पण प्रतिबिंब जुए छे. ए प्रमाणे ए पाठ वढे असि, मणि, दूध, पानक, तेल, फाणित अने वसा संबधे छत्रो ज्ञाणवां.

कर्मद्रव्य-कार्मण शरीर प्रब्योने जोतो देशयी लोकना संख्याता मागोने जुए छे, अने अनुत्तर देयो सपूर्ण लोकनाडीने जुए छे कारण के "समिन्नलोकनाडी पासनि अनुत्तर देवा"-एतु शास्त्र एवन छे माटे उपयोगवाळाओ ते अवधिमान वडे निर्जरापुत्रलोने जाणे छे अने जुए छे तथा 'माहार करे छे' त्यां एये लोमाहारयी आहार करे छे एम समजतु

१९. 'अद्याय वेदमाणे' इत्यादि इन्द्रियना अधिकाएयी आ पण प्रश्न थाय छे के आदर्श-आरित्तो जोनार मनुष्य आरीसो जुए छे, अथवा आत्मा-शरीर जुए छे ? अही आत्मशरीर्यो शरीर लेतु अथवा प्रतिमाग-प्रतिबिंब जुए छे ? मगवान् उत्तर माये छे-प्रथम आरीसो तो जुए-छे ज, कारण के स्फुरकरुपवाळा आरीसाने ते यथार्थपणे जाणे छे पण आत्माने-पोताना शरीरने जोतो नथी, कारण के तेनो त्यां अभाव छे पोतानु शरीर पोताने विशेषे रवेतु छे, आरीसानां रवेतु नथी, तो आरीसानां पोताना शरीरने केम जुए ? प्रतिमाग-पोताना शरीरतु प्रतिबिम्ब जुए छे, ह्ये प्रतिबिम्ब केवा प्रकाशतु छे ? उत्तर-छाया पुत्रलरूप छे, ते आ प्रमाणे-सबै प्रकाशनी इन्द्रियगम्य स्थूल वस्तु वय अने अपचय स्वभाषयाळी अने किरणो ए छायापुत्रलो छे अने तेनो प्रत्यक्ष

सिद्ध छायापुद्गलो तरीके व्यवहार थाय छे, कारण के सर्वे स्थूल वस्तुओनी छाया होय छे अने ते प्रत्यक्षथी वधा प्राणीओने विहित छे. बीजुं जो स्थूल वस्तु फोड़ वस्तुने अन्तरे रहेली होय के दूर होय तो तेना किरणो आरीसा वगेरेमां पडतां नथी, तेथी ते वस्तु तेमां देखाती नथी. माटे जणाय छे के छायापुद्गलो छे. ते छायापुद्गलो ते ले सामग्रीना वशथी विचित्र परिणाम पागवाना स्वभाववाला होय छे. ते आ प्रमाणे-ते छायापुद्गलो दिवसे अभास्वर-(अन्यने प्रकाशित नहि करनार) वस्तुमां पडेला होय तो स्वसंबन्धी द्रव्यनी आकृतिने धारण करतां श्यामरूपे (कहक कृष्णरूपे) परिणत थाय छे अने रात्रे कृष्णरूपे परिणत थाय छे, आ वात विवसे सूर्यना किरणो प्रसरे छे स्यारे अने रात्रिय चन्द्रना प्रकाशमां प्रत्यक्ष सिद्ध छे. ते छाया परमाणुओ आदर्शादि भास्वर द्रव्योमां प्रतियिम्बत थयेला स्वसंबन्धी द्रव्यना आकारने धारण करता रससंबन्धी द्रव्यमां कृष्ण, नील, शुक्ल के पीत जेवा प्रकारनो वर्ण होय ते रूपे परिणमे छे अने तेओनी आरीसा वगेरेमां उपलब्धि थाय छे, ए पण आरीसा वगेरेमां प्रत्यक्षथी सिद्ध छे, तेथी प्रस्तुत सूत्रमां पण जे मनुष्योना छायापरमाणुओ आरीसामां संकामीने पोताना शरीरना वर्णरूपे अने पोताना शरीरना आकाररूपे परिणमे छे ते पुद्गलोनी तेमां उपलब्धि थाय छे अने ते पुद्गलो प्रतियिम्ब शून्यत्वाच्च छे, माटे फांनुं छे के 'शरीरने जोतो नथी, पण प्रतिविम्बने हुए छे. आ यहुं स्वमतिकल्पित नथी, कारण के आगममां कलुं छे—

“सामा उ द्रिया छाया अमानुरगता निभि तु काग्रमा । सा चैव मानुरगवा सदेहाना मुनेकता ॥

जे आदरिगरन्तो देहायना एवंति मंजना । तेषि तत्पुलंभो पगामजोगा न इयरेभि” ॥

अभास्वर पदार्थमां पडेली छाया विवसे श्याम अने रात्रीए काली होय छे, अने भास्वर पदार्थमां पडेली छाया पोताना शरीरना वर्ण जेवी जाणवी. जे आरीसामां शरीरना अवयवो संकाल्ना थाय छे तेओनी प्रकाशयोगथी उपलब्धि (प्रत्यक्ष) थाय छे, बीजानी थती नथी. ए संबन्धी मूलद्वीकाकार पण कहे छे—“यस्मात्पर्यमेव हि पेन्द्रियकं सूत्रं द्रव्यं नयापन्यार्थमिकं रश्मियच्च भवति, यतश्चादर्शादिषु छाया स्थूलस्य दृश्यते अवगाढरश्मिनः, ततः स्थूलद्रव्यस्य कस्यचिद्दर्शनं भवति, नचान्तरितं दृश्यते किञ्चिद् अतिदूरस्य वा” । कारण

२०. कंबलसाडणं भंते ! आवेदितपरिवेदिते समाने जावतियं उवासतरं कुसित्ता णं चिद्धति विरुद्धिपि
समाने तावइय खेव उवासतरं कुसित्ता णं चिद्धति ? हंता गोयमा ! कंबलसाडणं आवेदियपरिवेदिते समाने
जावतियं त खेव । यूणा णं भंते ! उट्टं ऊसिया समानी जावइयं खेत्तं ओगाहइत्ता णं चिद्धति, तिरियंपि य णं

२० हे भगवन् ! कंबलरूप शटक-बख आवेदित परिवेदित-संकेलेतुं होय अने ते जेटला अवकाशान्तरने-आकाशप्रदेशोने स्प-
शुनि रहे छे ते जो विस्वत फरुं होय तो तेदलाज आकाशप्रदेशोने स्पशुनि रहे ? हे गौतम ! 'अवइय कंबलरूप शटक संकेलेतुं होय
तो ते जेटला'-इत्यादि तैमज कहेंदु, हे भगवन् ! स्पूणा-स्तंभ उंची उमीकरी होय तो जेटला क्षेत्रने अवगाहीने-स्पशुनि रहे छे, जो

के पथा इन्द्रियगम्य स्थूल द्रव्यो घय अने अपव्ययधर्मवाळां अने किरणोवाळां होय छे जेयी भारीसा यगेरेमां जेना किरणो पढेला
छे पयी स्थूल वस्तुनी छाया देपाय छे, तेयी कोरण स्थूल द्रव्यजु दर्शन पाय छे, एल्लु ते कोरने अन्तरे न रहेली होय अथवा अतिदूर
न होय ए माटे 'पल्लिमाण' प्रतिमाण- प्रतिवियने जुए छे ए प्रमाणे अस्ति, मणि इत्यादि विययक छे सूत्रो जाणया सूत्रपाठ पण
आ प्रमाणे—'अस्तिने देखतो कोर मज्जुय अस्तिने देखे छे, पोताने देखे छे के प्रतिवियने देखे छे' ? इत्यादि, हे गौतम ! अस्ति देखे छे,
पोताने देखातो नयी अने प्रतिवियने देखे छे इत्यादि

२० 'अहीं निर्जराला पुत्रलो छप्रसोने इन्द्रियगम्य यता नयी, कारण के से अतीन्द्रिय छे' एम कथु, तेयी अतीन्द्रियना प्रसंगयी
आ पण अतीन्द्रिय विययक प्रश्न करे छे—'हे भगवन् कम्बलरूप शटक'-कम्बलरूप शटक'-कम्बलशटक'-एयी प्युत्पत्ति थाय छे
कम्बलरूप पख आवेदित-परिवेदित-यत्यत संकेलेतुं जेटला अवकाशान्तर-आकाशना प्रवेशोने स्पशुनि-अवगाहीने रहे, तेने विर
ल्लित-विस्वत वधु होय तो पण ते तेदला अवकाशान्तर-आकाशप्रदेशोने स्पशुनि रहे ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! अवइय रहे,

આયતા સમાળી તાવહ્યં ચેવ શેતં ઓગાહૃતા ણં ચિદ્ધતિ । હંતા ગોયમા ! યૂના ણં ઉટ્ટં ઝસિયાતં ચેવ ચિદ્ધતિ ।
૨૧. આગાસથિગલે ણં મંતે ! કિંના ફુડે, કહિં વા કાઠિં ફુડે ? કિં ધમ્મત્થિકાણં ફુડે, ધમ્મત્થિકા-
યસ્સ દેસેણં ફુડે, ધમ્મત્થિકાયસ્સ પદેસિંહિં ફુડે ? ણં અધમ્મત્થિકાણં, આગાસત્થિકાણં ણં ણં મેદેણં જાવ
તીરહી લંબી કરી હોય તો ણ તેટલાજ ક્ષેત્રને સ્પર્શિને રહે ? હે ગૌતમ ! ‘અવહ્ય સ્થૂના ઉંચી ઉમી હોય તો’ ઇત્યાદિ
તેમજ [સ્પર્શિને] રહે છે.

૨૧. હે મગવન્ ! આકાશથિગલ-લોક કોનાથી સ્પર્શ કરાયેલો છે ? કેટલા કાય વડે સ્પર્શ કરાયેલો છે ? શું ધર્માસ્તિકાય
વડે સ્પર્શ કરાયેલો છે ? ધર્માસ્તિકાયના દેશ વડે સ્પર્શ કરાયેલો છે ? ધર્માસ્તિકાયના પ્રદેશો વડે સ્પર્શ કરાયેલો છે ? આ અધર્મા-

ઝિં ‘હન્ત’ પર અવધારણ-નિશ્ચયાર્થક છે પટ્ટલે પર પ્રમાણેજ છે, અહીં સંદેશાર્થ ણ છે-કમ્બલચાટક સંકેલેલું હોય અને તે જેટલા
આકાશપ્રદેશોને અવગામિને રહે, તેનો વિસ્તાર કર્યો હોય તો ણ તે તેટલા આશપ્રદેશોને અવગામીને રહે છે. કેવલ ણ અને પ્રતર-
રૂપ મેદ છે. પ્રદેશની સંખ્યા યન્ને સ્થલે તુલ્ય છે. આ અર્થ નેત્રપટ્ટને આશ્રયી મત્ય સ્થલે ણ કહેલો છે-જેમ મોટા પ્રમાણવાલો
નેત્રપટ્ટ આકાશપ્રદેશોમાં સંકુચિત કર્યો હોય અને પહેલો હોય તો ણ તેટલાજ આકાશપ્રદેશોને સ્પર્શે છે. પર પ્રમાણે સ્થૂનાસૂત્રને
પણ વિચાર કરવો.

૨૧. ‘આગાસથિગલે ણં મંતે’ ઇત્યાદિ. આકાશ થિગલ-આકાશરૂપી પટમાં થિગલ-ધીગડા સમાન લોક કહેવાય છે. કારણ
કે તે વિસ્તૃત પટના જેવા મોટા વાળ આકાશના થિગલ-ધીગડાના જેવો લાગે છે. હે મગવન્ ! તે આકાશથિગલ કોનાથી સ્પૃષ્ટ-
સ્પર્શ કરાયેલો-વ્યાપ્ત કરાયેલો છે ? આ સામાન્યરૂપે પ્રશ્ન કર્યો છે, ણેવે વિદેશરૂપે પ્રશ્ન કરે છે-કેટલા કાયો વડે સ્પર્શાયેલો છે ?

पुढयिकाएणं फुडे, जाव तसकाएणं, अद्वासमएणं फुडे ? गोयमा ! घम्मत्थिकाएणं फुडे, नो घम्मत्थिकायस्स दे-
सेणं फुडे, घम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एव अघम्मत्थिकाएणवि, नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थिकाय-
स्स देसेणं फुडे, आगासत्थिकायस्स पदेसेहिं जाव वणस्सइकाएणं फुडे, तसकाएणं सिय फुडे, सिय नो फुडे, अद्वासम-
एणं देसे फुडे, देसे णो फुडे । जंबुदीवि णं मंते ! वीचे किंणा फुडे ? कइहिं चा काणहिं फुडे ? किं घम्मत्थिकाएणं

स्विकाय वडे, आकाशास्विकाय वडे-एम ए प्रकारे यावत् श्रुथिवीकाय वडे, यावत् त्रसकाय वडे के अद्वासमय वडे स्वर्थं करायेल छे ?
हे गौतम ! घर्मास्विकाय वडे स्वर्थं करायेल छे, एण घर्मास्विकायना देश वडे स्वर्थं करायेल नथी. घर्मास्विकायना प्रदेशो वडे स्वर्थं
करायेल छे. ए प्रमाणे अघर्मास्विकाय वडे एण स्वर्थं करायेलो छे. आकाशास्विकाय वडे स्वर्थं करायेल नथी, एण आकाशास्विकायना
देश वडे स्वर्थं करायेलो छे, आकाशास्विकायना प्रदेशो वडे स्वर्थं करायेल छे. यावत् वनस्विकाय वडे वचिच्च् स्वर्थं करायेलो छे.

अही 'या' शब्द प्रकारान्तरणे मूचक छे, अने ते प्रकारान्तर सामान्यपी विशेषरूप छे तेपी प्रत्येक काय संख्ये विकीरन्त्ये पूछे छे-
किं घम्मत्थिकाएण फुडे'-शु घर्मास्विकायपी स्पृष्ट छे-इत्यादि सुणम छे भगवाव् कहे छे--हे गौतम ! घर्मास्विकाय वडे स्वर्थं कर
येलो छे, वरण के लोकमं घर्मास्विकाय रहेलो छे, भा ज हेतुधी घर्मास्विकायना देशधी स्वर्थं करायेलो नथी, कारण के जे जेनाधी
सर्पकये व्याप्त छे ते तेना ज देशवडे व्याप्त नथी, कारण के विरोध छे एण तेना प्रदेशो वडे व्याप्त छे कारण के तेमा तथा घर्मास्विका
या प्रदेशो रहेला छे ए प्रमाणे अघर्मास्विकाया विषयमा एण उत्तर कहेयो तथा संपूर्ण आकाशास्विकाय द्रव्य वडे स्वर्थं
करायेले नथी कारण के लोक आकाशास्विकायनो देशमात्र-अशमात्र छे, परन्तु तेना देशवडे अने प्रदेशो वडे व्याप्त छे. पृथिवी
कायादि एण एवम मकल्लोके थापी होय छे मोटे ते वडे एण लोक सर्वकये व्याप्त थयेलो छे. 'तसकाएण सिय फुडे'-यसकाय वडे

जाव आगासत्थिकाएणं फुडे ? गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थिकायस्सत्थि आगासत्थिकायस्सत्थि, पुढाविकाइएणं फुडे, जाव वणास्सइकाएणं फुडे, तसकाइएणं सिय फुडे सिय णो फुडे, अद्धासमएणं फुडे । एवं लवणसमुद्दे, धायतिसंडे दीवे, कालोए समुद्दे, अडिभ-तरपुक्खरद्धे । चाहिरपुक्खरद्धे एवं चेव, णवरं अद्धासमएणं नो फुडे । एवं जाव संयंभूरमणसमुद्दे । एसा परिवा-

अने अद्धासमय वडे तेना एक देशमां स्पर्श करायेल छे अने एक देशमां स्पर्श करायेली नथी. हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामे द्वीप को-नाथी स्पर्श करायेलो छे ? केटला काय वडे स्पर्श करायेलो छे ? शुं धर्मास्तिकायथी यावत्-आकाशास्तिकायथी स्पर्श करायेलो छे ? हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे स्पर्श करायेलो नथी, परन्तु धर्मास्तिकायना देश वडे अने धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्श करायेलो छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय संबंधे पण जाणंनुं. पृथिवीकाय यावत् वनसगतिकाय वडे स्पर्श करायेल छे, वनस काय वडे क्वचित् स्पर्श करायेल छे अने क्यांइक स्पर्श करायेल नथी. अद्धा समय वडे स्पर्श करायेलो छे. ए प्रमाणे लवण समुद्र, धातकिखंड द्वीप, कालोद समुद्र अने अभ्यन्तर पुष्करार्थ संबंधे जाणंनुं. बहारना पुष्करार्थ संबंधे एमज जाणंनुं. परन्तु ते अद्धासमय

क्वचित् स्पर्श करायेलो छे, ज्यारे समुद्रयातने प्राप्त थयेल केल्लानी चोथा ममयमां णेय छे ज्यारे ते णेताना प्रदेशो वडे सर्वे लोकने ब्याप्त करे छे माटे प्रसकायवडे स्पर्श करायेलो छे, कारण के केवली प्रसकाय छे. वार्कीना काले स्पर्श करायेलो होतो नथी. कारण के लोकमां नथे स्थळे प्रसताय होता नथी. ए प्रमाणे जंबूद्वीपादि संबंधे पण सूत्रो जाणना. परन्तु यत्तारना पुष्करार्थ द्वीपना विचारमां 'अद्धासमएणं नो फुडे'-ते अद्धासमय वडे स्पर्श करायेलो नथी. अद्धासमय (काल) अदी द्वीप समुद्रमां छे, यत्तार नथी.

હી રૂમાર્દિ ગાદાર્દિ અણુગંતબ્ધા, તંજહા--“જંબુદ્વીવે લવણે ધાયતિ કાલોય પુસ્કલરે ઘરુણે । સ્ત્રીરઘયલોયણંવિ ય
અરુણવરે કુણ્ડલે રુચતે ॥૧॥ આમરણવત્પગંથે ઉપ્પલતિલપ્પ ય પડમનિહિરયણે । ઘાસદ્દરવહનર્દ્દાઓ વિજયા વ-
પ્સ્વારકપ્પિવા ॥૨॥ કુરુ મવર આયાસા કૂઠા નક્કલત્તવંદસુરા ય । વેવે પાણે જક્કલે મ્પૂય ય સયંસુરમણે ય ॥૩॥
ઇવં જહા યાહિરપુસ્કલરદ્દે મ્પિણિપ્પ તહા જાવ સયંસુરમણસમુદ્ધે જાવ અદ્દાસમણં નો ફુલ્લે ।

વંદે સર્ગ્ય કરાયેલો નથી. એ પ્રમાણે સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર સુધી જાણું. આ દ્વીપસમુદ્રનો અનુક્રમ આ ગાથાઓ વંદે જાણવો. તે આ
પ્રમાણે—“જંબુદ્વીપ, લવણ, ઘાતકિ, કાલોદ, પુસ્કલવર વલ્ગા, ધીર, દુત, ધોદ-દંદુ, નંદિ, અરુણવર, કુલ્લ, રુવક (૧), આમરણ, વલ્લ,
ગન્ધ, ઉત્પલ, તિલક, પદ્મ, ત્રિધિ, રત્ન, વર્ષધર પર્વતો, દ્વદ, નદીઓ, વિવયો, વશસ્કાર (પર્વતો), કલ્પ-દેવલોક, દન્ત્રો (૨) કુરુ,
મન્દર અવાસ, કૂટ, નક્રમ, ચદ્ર અને સૂર્ય (એ ઘથાના નામે દ્વીપ અને સમુદ્રો છે.) દેવ, નાગ, યધ, મૃત અને સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર
૩ [એ પાંચ દ્વીપ અને સમુદ્રો છે] એ પ્રમાણે જેમ શાશ્વ પુસ્કલપર્થ કહ્યો તેમ સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર સુધી જાણું. યાવત્-તેઓ
અદ્દા સમય વંદે સર્ગ્ય કરાયેલા નથી.

પનો વિચાર ધર્મસંપ્રદાઈની ટીકામા કર્યો છે માટે યદ્દારાના દ્વીપસમુદ્રોમા અદ્દાસમયના સ્વર્ગનો પ્રતિષેધ કરયો ‘અપુદીવે લયણ’-
ઇત્યાદિ ગાથા છે સર્વે દ્વીપસમુદ્રોના મધ્યવર્તી જંબુદ્વીપ છે તેને વો સરુક ધોંટી લયણ સમુદ્ર રહેલો છે, ત્યાર પછી ઘાતકિબદ
નામે દ્વીપ છે, તે પછી કાલોદ સમુદ્ર છે ત્યાર પાદ પુસ્કલવર દ્વીપ અને ત્યાર પછી દ્વીપના સમાન નામવાલ્લ સમુદ્રો છે પટલે તે
પછી પુસ્કલવર સમુદ્ર તે પછી વરુણવર્ષીપ- અને વરુણવર સમુદ્ર, ક્ષીરવર્ષીપ, ક્ષીરવર્ષીપ, દુતોવ સમુદ્ર, રુણવર

द्वीप अने इष्टुवर समुद्र, नन्दीश्वर द्वीप अने नन्दीश्वर समुद्र-ए ओठे समुद्रो एक प्रत्ययावतार-एक एक रूपवाळा छे. अने पछीना द्वीप अने समुद्रो त्रिप्रत्ययावताररूप छे. जेम के अरुण, अरुणवर, अरुणवरावभास, कुंडल, कुंडलवर, कुंडलवरावभास, रुचक, रुचक-वर अने रुचकवरावभास-इत्यादि. अहीं आ क्रम छे—नन्दीश्वर समुद्र पछी अरुणद्वीप, अरुण समुद्र, ते पछी अरुणवर द्वीप अने अरुणवर समुद्र-इत्यादि नामनो उच्चार करी केटला द्वीपसमुद्रो कही शकाम ? माटे तेना नामनो संग्रह करीने कहे छे—‘आभरण-वर्त्य’-इत्यादि बे गाथा छे—जे कोइ आभरणना नामो होय, जेम के हार, अर्धहार, रत्नावली, कनकानली प्रमुख, जे कोइ वखना नामो चीनांशुक वगैरे होय, जे कोइ कोष्ठपुटादि गन्धना नामो होय, जलरुह, चन्द्रोद्द्योत वगैरे जे उत्पलना नामो होय, तिलक वगैरे जे दृक्षना नामो होय, शतपत्र, सहस्रपत्र, वगैरे पत्रना नामो होय, पृथिवी, रत्नप्रभा वगैरे जे पृथिवीना नामो होय, जे नव निधिना नामो, चक्रवर्तीना चौद रत्ना नामो, बुल्लहिमवंत आदि वर्षधर पर्वतादिना नामो, पश्चादि हृदोना नामो, गंगा सिन्धु वगैरे नदीओना नामो, कच्छादि विजयो, माल्यवंतादि वक्षस्कार पर्वतो, सौधर्मादि कल्पो, शक्र वगैरे इन्द्रो, देवकुरु, उत्तरकुरु, मन्दर, मेरुनी नजीक वगैरे शक्रादिना आवासो, बुल्लहिमवंत वगैरे पर्वतोना कूटो-शिखरो, कृत्तिकादि नक्षत्रो, चन्द्रो अने सूर्योना जे नामो छे ते वधाने त्रिप्रत्ययावतार करीने कहेवा. जेम के हारद्वीप, हारसरमुद्र, हारवर द्वीप, हारवर समुद्र, हारवरावभास द्वीप, हारवरावभास समुद्र-इत्यादिरूपे त्रिप्रत्ययावतार त्यां सुधी कहेवा यावत् सूर्य द्वीप, सूर्य समुद्र, सूर्यवर द्वीप अने सूर्यवर समुद्र सूर्यवरावभास द्वीप, अने सूर्यवरावभास समुद्र छे. जीवाभिगमनी चूर्णिमां कहं छे के—‘अरुणाई दीवसमुद्रा त्रिपडोयारा यावत् सूर्यवरावभासः समुद्रः’। अरुणादि द्वीपसमुद्रो त्रिप्रत्ययावतारवाळा यावत्-‘सूर्यवरावभास’ समुद्र छे त्यां सुधी कर्वा. त्यार पछी सूर्यवरावभास समुद्रने चो तरफ वींटी देवद्वीप रहेलो छे, पछी देवसमुद्र, पछी नागद्वीप अने नागसमुद्र. ते पछी यक्षद्वीप अने यक्षसमुद्र, ते पछी भूतद्वीप अने भूत समुद्र अने स्वयंभूरमण द्वीप अने स्वयंभूरमण समुद्र छे. ए पांचे देवादि द्वीपो अने देवादि समुद्रो एकरूपवाळा छे, तेओनो प्रत्ययाव-तार थतो नथी. जीवाभिगमनी चूर्णिमां कहं छे के “पते पञ्चद्वीपाः पञ्च समुद्रा एकप्रकारा” इति. ए पांचे द्वीपो अने पांचे समुद्रो

२२. लोके णं मंते ! किंणा फुडे ! कइहिं वा काएहिं ? जहा आगासधिगळे । अलोप णं मंते ! किंणा फुडे, कतिहिं वा काएहिं पुच्छा । गोयमा ! नो घम्मत्थिकाएणं फुडे, जाव नो आगासत्थिकाएणं फुडे, आगासत्थि-
कापस्स देसेणं फुडे, नो पुढविकाइएणं फुडे, जाव नो अद्दासमएणं फुडे । एणे अजीवद्वव्वेसे अगुल्लडुए अणं-
जेम

इत्यादि आकाशधिगलनी जेम
२२. हे भगवन् ! लोक कोनाथी स्वर्गं करायेलो छे ! केटला फाय वडे स्वर्गं करायेलो छे ! इत्यादि पुच्छा. हे गौतम ! घर्मास्ति
जाणुं. हे भगवन् ! अलोक कोनाथी स्वर्गं करायेलो छे ! केटला फाय वडे स्वर्गं करायेलो छे' इत्यादि पुच्छा. हे गौतम ! घर्मास्ति
फायथी स्वर्गं करायेलो नथी, यावत् आकाशास्त्रिकायथी स्वर्गं करायेलो नथी, आकाशास्त्रिकायना देशथी स्वर्गं करायेलो छे. पृथिवी-
फायथी स्वर्गं करायेलो नथी, यावत् अद्दासमयथी स्वर्गं करायेलो नथी. ते एक अजीवद्रव्यनी देश-भाग छे, अनन्त अगुल्लडु गुणो
कारण के तेजोने

एक प्रकारा छे. जीयामिगम सूत्रमा एण कथु छे--वेद्य, नाग, यक्ष, भूत अने स्वयंभूरूपण प एक एक कहेयो, कारण के तेजोने

विमत्सयपथत्ताट धतो नथी

२२. पूर्व आकाशधिगलशब्द वडे लोकसदृशे प्रथ कयौं हतो, हवे लोकशब्द वडे अ लोक सवन्धे प्रथ करयानी इच्छावाळा
सूत्रकार कहे छे--'लोपण मंते ! किंणा फुडे'-हे भगवन् ! लोक कोनाथी स्वर्गं करायेलो छे-इत्यादि सूत्र पाठसिद्ध छे अलोफसूत्र एण
पाठसिद्ध छे, परन्तु अलोक प एक अजीवद्रव्यनी देश छे-एटले आकाशास्त्रिकायनी देश छे एण संपूर्ण आकाशास्त्रिकाय नथी,
कारण के ते लोकाकाश वडे हीन छे आज कारणथी ते अगुल्लडुरूप छे कारण के अमृत छे अनन्त अगुल्लडुगुणो वडे सयुक्त छे,
कारण के वटेक प्रवेशे स्य अने एट भेदवधे भिन्न अनन्त अगुल्लडुपर्यायो होय छे अलोफकु केटलु प्रमाण छे ! प मंते सूत्रकार

तेहिं अगुरुलह्यगुणेहिं संजुत्ते सन्वागासअर्णतभागूणे ।

पन्नवणाए भगवईए पन्नरसस्स इंद्रियपयस्स पढमो उद्देशो समत्तो ।

वडे संयुक्त छे अने सर्व आकाशथी अनन्तमो भाग न्यून छे.

प्रज्ञापना भगवतीमां पंदरमा इन्द्रियपवनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

कहे छे— अनन्तमाभाग न्यून सर्व आकाशरूप छे—पटले लोकाकाशाना खंडरहित सर्व आकाशप्रमाण छे.

श्रीमदाचार्य मलयगिरिचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां पंदरमा इन्द्रियपदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

इंदियउवचय १ गिन्धत्तणा २ य समया भवे असंखेजा ३। लब्धी ४ उवओगखं ५ अप्पायहुए विसेसाहिया ६ ॥
ओगाहणा ७ अवाए ८ ईहा ९ तहंजणोगहे १० चेव । दन्डिवदिय ११ माविंदिय १२ तीया थद्धा पुरफ्लडिया ॥

द्वितीय उद्देशक

१ इन्द्रियोपचय, २ निर्वर्तना (इन्द्रियोनी उत्पत्ति), ३ निर्वर्तनाना असंख्याता समयो, ४ लब्धि, ५ उपयोगाद्वा-उपयोगनो
काल, ६ अल्पयहुत्वमां विशेषाधिक उपयोगनो काल, ७ अवग्रह, ८ अपाय, ९ ईहा, १० व्यंजनावग्रह अने अर्थवग्रह, ११-१२
अतीत, पद अने पुरस्कृत द्रव्येन्द्रिय अने मावेन्द्रिय-ए अधिकारो बीजा उद्देशकमां छे.

प्रथम उद्देशकनी व्याख्या करी, द्वये बीजा उद्देशकनो प्रारंभ करपाय छे, तेना प्रारंभमां अर्थाधिकारनो समग्र करानी भा र्थे गोणामो
छे-प्रथम इन्द्रियोनो उपचय कहेवानो छे 'उपधीयते इन्द्रियमनेनेत्युपचयः' जे पडे इन्द्रिय उपचयने प्राप्त थाय ते उपचय-इन्द्रिय
योस्य पुत्रगलेनो समग्र करवानी शक्ति, इन्द्रियपर्याप्ति २ त्यार पछी निर्वर्तना कहेवानी छे, निर्वर्तना-वाह्य भाने अम्यन्तर रूप निर्गुप्ति-
आकारमात्रनी उत्पत्ति ३ त्यार याद निर्वर्तना-इन्द्रियनी उत्पत्ति केटला समये थाय छे १' ए प्रथमां 'असख्याता समये थाय छे'
ए उत्तर कहेयो जोएए ४ त्यार पछी इन्द्रियावरणना क्षयोपशमरूप इन्द्रियोनी लब्धि कहेषी जोएए ५ त्यार थाए उपयोगाद्वा-इन्द्रियना
उपयोगनो काल कहेयो जोएए ६ त्यार पछी अल्पयहुत्वना विचारमां पूर्ये पूर्वनी इन्द्रियोना उपयोगकाल करतो उत्तरोत्तर इन्द्रियनो
उपयोगकाल विशेषाधिक छे ते कहेयु जोएए ७ त्यार पछी अयग्रह-ज्ञा कहेयु जोएए अने ते मपायादिना मेवथी भनैक प्रकारे छे.
माटे ८ त्यार पछी मपाय कहेवो जोएए. ९ त्यार पछी ईहा, १० त्यार पछी व्यंजनावग्रह, 'ध' शब्द नहि कहेला भर्त्तनो समुच्चय

२३. कतिचिहे णं भंते ! इंदियउवचए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदियउवचए पन्नत्ते । तंजहा-सोत्तिंदिय उवचते, चक्खिंदियउवचते, घाण्णिंदियउवचते, जिह्मिंदियउवचते, फासिंदियउवचते । नेरइयाणं भंते ! कतिचिहे इन्दिओवचए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इन्दिओवचए पन्नत्ते, तंजहा-सोत्तिन्दियउवचए, जाव फासिन्दियउवचए, एवं जाव वेमाणियाणं । जस्स जइ इन्दिया तस्स तत्तिविहो चैव इन्दियउवचओ भाणियञ्चो ? । कतिविहा णं भंते ! इन्दियनिव्वत्तणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इन्दियनिव्वत्तणा पन्नत्ता, तंजहा-सोत्तिन्दियनिव्वत्तणा, जाव फासिन्दियनिव्वत्तणा । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्दिया

२३. हे भगवन् ! केटला प्रकारतो इन्द्रियोपचय छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारतो इन्द्रियोपचय छे. ते आ प्रमाणे-१ श्रोत्रेन्द्रियोपचय, २ चक्षुइन्द्रियोपचय, ३ घ्राणेन्द्रियोपचय, ४ जिह्वेन्द्रियोपचय अने ५ स्पर्शनेन्द्रियोपचय. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारतो इन्द्रियोपचय कखो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारतो इन्द्रियोपचय कखो छे, ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियोपचय, यावत् स्पर्शनेन्द्रियोपचय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणहुं, जेने जेटली इन्द्रियो तेने तेटला प्रकारतो इन्द्रियोपचय कहेवो. हे भगवन् ! इन्द्रियनिर्वर्तना-इन्द्रियनी उत्पत्ति केटला प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! इन्द्रनिवर्तना पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियनिर्वर्तना यावत् स्पर्शेन्द्रियनिर्वर्तना. ए प्रमाणे नैरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणहुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनी

कारणर होवाथी अर्थावग्रह पण कहेवो जोइए. ? ? त्यार चाद अतीत, बन्द अने पुरस्सत इन्द्रिय अने भायेन्द्रियनो विचार करवानो छे.
२३-२४. तेसां 'यथोद्देशं निर्वेशः' उद्देश प्रमाणे निर्वेश होय छे, माटे प्रथम इन्द्रियोपचय सए कहे छे- 'कतिचिहेणं भंते इंदियउव-

अत्थि २ । सोतिन्द्रियगिब्यत्तणा णं भंते कइसइया पन्नत्ता ? गोयसा ! असंखिज्जइसमया अंतोसुद्धुत्तिया प-
न्नत्ता, एवं जाव फासिन्द्रियनिब्यत्तणा । एवं नेरइयाणं जाव वैमाणियाणं ३ । 'कइविहा णं भंते ! इन्द्रियलद्धी
पन्नत्ता ? गोयसा ! पंचविहा इन्द्रियलद्धी पन्नत्ता, तंजहा-सोतिन्द्रियलद्धी, जाव फासिन्द्रियलद्धी । एवं नेरइया-
णं जाव वैमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्द्रिया अत्थि, तस्स तावइया भाणियब्बा ४ । कत्तिविहा णं भंते ! इन्द्रि-
यउवओगद्धा पन्नत्ता ? गोयसा ! पंचविहा इन्द्रियउवओगद्धा पन्नत्ता, तंजहा-सोतिन्द्रियउवओगद्धा, जाव फा-
सिन्द्रियउवओगद्धा । एवं नेरइयाणं जाव वैमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इन्द्रिया अत्थि ।

इन्द्रियनिर्वर्तना कहेवी. हे भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रियनी निर्वर्तना (उत्पत्ति) केटला समयनी छे ? हे गौतम ! असख्याता समयना अन्त
सुहूर्तनी छे. ए प्रमाणे स्पशनेन्द्रियनिर्वर्तना सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे नेरयिकोधी मांडी वैमानिकी सुधी जाणवुं. हे भगवन् ! केटला
प्रकारनी इन्द्रियलब्धि छे ? हे गौतम ! पाच प्रकारनी इन्द्रियलब्धि छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् स्पशनेन्द्रियलब्धि.
एम् नेरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणवु. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनी इन्द्रियलब्धि कहेवी. हे भगवन् !
इन्द्रियोपयोगाद्धा-इन्द्रियना उपयोगनो काल केटला प्रकारनो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय उपयोगाद्धा
यावत् स्पशनेन्द्रिय उपयोगाद्धा. ए प्रमाणे नेरयिको, यानत् वैमानिकोने जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रका-

रुप पघत्ते ? हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय छे ? इत्यादि सुगम छे, परन्तु जे नेरयिकोने जेटली इन्द्रियोनो समय
होय तेने तेटला प्रकारनो इन्द्रियोपचय कहेचो तेमा नेरयिकोधी मांडी स्तनितकुमात् सुधी पाच प्रकारनो इन्द्रियोपचय होय छे पृथिवी,

૨૪. પંતેસિ પ્તે ંં મંતે ! સોતિન્દિયચકિલ્વન્દિયયાણિન્દિયજિહ્વિમધિયફાસિન્દિયાણં જહ્ણણયાણં ઉવઓગદ્વાણં ઉવકોસિયાણં ઉવઓગદ્વાણં જહ્નુન્વકોસિયાણં ઉવઓગદ્વાણં ક્રયરે કયરેહિંતો અપ્પા વા૦ ૪ ? ગોયમા ! સન્વત્થોવા ચકિલ્વન્દિયસ્સ જહ્ણણયા ઉવઓગદ્વા, સોતિન્દિયસ્સ જહ્ણણયા ઉવઓગદ્વા વિસેસાંહિયા, ઘાણિન્દિયસ્સ જહ્ણણયા ઉવઓગદ્વા વિસેસાંહિયા, જિહ્વિમન્દિયસ્સ જહ્ણણયા ઉવઓગદ્વા વિસેસાંહિયા, ફાસિન્દિયસ્સ જહ્ણણયા ઉવઓગદ્વા વિસેસાંહિયા, ઉવકોસિયાણં ઉવઓગદ્વાણં-સન્વત્થોવા ચકિલ્વન્દિયસ્સ ઉવકોસિયા ઉવઓગદ્વા, સોતિન્દિયસ્સ ઉવકોસિયા ઉવઓગદ્વા વિસેસાંહિયા, ઘાણિન્દિયસ્સ ઉવકોસિયા ઉવઓગદ્વા વિ-

રનો ઇન્દ્રિયોપયોગદ્વા સમજયો.

૨૪. હે મગવન્ ! એ શ્રોત્રેન્દ્રિય, ચક્ષુઃન્દ્રિય, ઘ્રાણેન્દ્રિય, જિહ્વેન્દ્રિય, અને સ્પર્શનેન્દ્રિયોના જઘન્ય ઉપયોગદ્વામાં ઉત્કૃષ્ટ ઉપયોગદ્વામાં અને જઘન્ય-ઉત્કૃષ્ટ ઉપયોગદ્વામાં કોણ કોનાથી અલ્પ, વધુ, તુલ્ય કે વિશેષાધિક છે ? હે ગૌતમ સૌથી થોડો ચક્ષુઃન્દ્રિયનો જઘન્ય ઉપયોગદ્વા-ઉપયોગ કાલ છે, તેથી શ્રોત્રેન્દ્રિયનો જઘન્ય ઉપયોગદ્વા વિશેષાધિક છે, તેથી ઘ્રાણેન્દ્રિયનો જઘન્ય ઉપયોગદ્વા વિશેષાધિક છે, તેથી જિહ્વેન્દ્રિયનો જઘન્ય ઉપયોગદ્વા વિશેષાધિક છે, તેથી સ્પર્શનેન્દ્રિયનો જઘન્ય ઉપયોગદ્વા વિશેષાધિક છે, ઉત્કૃષ્ટ ઉપયોગદ્વામાં-સૌથી થોડો ચક્ષુઃન્દ્રિયનો ઉત્કૃષ્ટ ઉપયોગદ્વા છે, તેથી શ્રોત્રેન્દ્રિયનો ઉત્કૃષ્ટ ઉપયોગદ્વા વિશે-

ષાણી, તેજ, વાયુ અને વનસ્પતિઓને પાંચ પ્રકારનો, એ ઇન્દ્રિયોને એ પ્રકારનો, તેન્દ્રિયોને ત્રણ પ્રકારનો, ચક્ષુરિન્દ્રિયોને ચાર પ્રકારનો અને તિર્યંચ પંચેન્દ્રિય, મનુષ્ય, વ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને ધેમાલિકોને પાંચ પ્રકારનો ઇન્દ્રિયોપલય દ્વોય છે. ક્રમ આયા પ્રકારનો છે-

सेसाहिया, जिग्मिन्वियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्वियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जहणउक्कोसियाए उवओगद्धाए-सव्वत्थोवा चक्खिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा, सोत्तिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिग्मिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिन्वियस्स जहणिया उवओगद्धा विसेसाहिया, सोत्तिन्वियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिन्वियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिग्मिन्वियस्स उक्कोसिया

पाधिक छे, तेथी प्राणेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे, तेथी जिग्मेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे अने तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे. जघन्य उत्कट उपयोगद्धामां-सौथी योडो चक्षुरिन्द्रियनो जघन्य उपयोगद्धा छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो जघन्य उपयोगद्धा विशेषाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियनो जघन्य उपयोगद्धा विशेषाधिक छे. स्पर्शनेन्द्रियना जघन्य उपयोगद्धायाथी चक्षुरिन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे, तेथी श्रोत्रेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे, तेथी घ्राणेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे. तेथी जिग्मेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे, तेथी स्पर्शनेन्द्रियनो उत्कट उपयोगद्धा विशेषाधिक छे.

स्पर्शन, रसन, घ्राण चक्षु धने श्रोत्रेन्द्रिय प प्रमाणे इन्द्रिय निर्वर्तना वगेरे सबन्धे खुनो जाणवा कारण के प्रायः सुगम छे. परन्तु इन्द्रियोपयोगद्धा-जेटला काळ सुधी इन्द्रियो वडे उपयोग्याळो होय तेटला काळनो इन्द्रियोपयोगद्धा कहेवाय छे

उचओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उचओगद्धा विसेसाहिया ।

२५. कतिविहा णं भंते ! इंदियओगाहणा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदियओगाहणा पन्नत्ता, तंजहा-सोत्तिंदियओगाहणा, जाव फासिंदियओगाहणा, एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि ६ ।
२६. कतिविधे णं भंते ! इंदियअवाए पन्नत्ते ? गोयमा ! पंचविधे इंदियअवाए पन्नत्ते, तंजहा-सोत्तिंदियअवाए, जाव फासिंदियअवाए । एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, नवरं जस्स जइ इंदिया अत्थि । कतिविहा णं पाधिके छे.

२५. हे भगवन् ! केटला प्रकारे इन्द्रियावग्रहणा-इन्द्रियो वडे अवग्रह-ज्ञान थाय छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारे इन्द्रियावग्रह छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियावग्रह, यावत् स्पर्शनेन्द्रियावग्रह. ए प्रमाणे नेरयिकोने यावत् वैमानिकोने जाणहुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकारनो इन्द्रियावग्रह कहेंवो.

२६. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियापाय कहेलो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो इन्द्रियापाय कहौ छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रियापाय, यावत्-स्पर्शनेन्द्रियापाय. ए प्रमाणे नेरयिको यावत् वैमानिकोने जाणहुं, परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला

२५. 'कतिविहा णं भंते ! ओगाहणा पन्नत्ता' हे भगवन् ! केटला प्रकारनो इन्द्रियावग्रह छे इत्यादि. इन्द्रियो वटे अवग्रह-ज्ञान थाय ते इन्द्रियावग्रह कहेंवाय छे.

२६-२७. इन्द्रियावग्रह संकन्धे सामान्यरूपे प्रश्न कर्यो एतो, परन्तु सामान्य विशेषने आश्रित होय छे माटे कपायादि विशेष संकन्धे

भंते ! ईहा_पन्नत्ता ! गोयमा ! पंचविहा ईहा पन्नत्ता, तंजहा-सोर्त्तियईहा, जाव फासिदियईहा । एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं जरस जइ इंदिया ८ । कत्तिविधे णं भंते ! उग्गहे पन्नत्ते ? गोयमा ! धुविहे उग्गहे पन्नत्ते, तंजहा-अत्थोगहे य वंजणोगहे य । वंजणोगहे णं भंते ! कत्तिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! चउन्विधे पन्नत्ते, तंजहा-सोर्त्तियवंजणोगहे, घाणिदियवंजणोगहे, जिण्मिदियवंजणोगहे, फासिदियवंजणोगहे । अत्थोगहे णं भंते ! कत्तिविधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छन्विहे पन्नत्ते, तंजहा-सोर्त्तियअत्थोगहे, चर्क्खिवियअत्थोगहे, घाणिदिय-

प्रकारानो अपाय जाणवी. हे भगवन् ! केटला प्रकाराणी ईहा छे ? हे गौतम ! पांच प्रकाराणी ईहा छे, ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय ईहा, यावत् स्पृशनेन्द्रिय ईहा. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटला प्रकाराणी ईहा जाणवी. हे भगवन् ! केटला प्रकारानो अवग्रह छे ? हे गौतम ! वे प्रकारानो अवग्रह छे. ते आ प्रमाणे-अर्याविग्रह अने व्यंजनावग्रह. हे भगवन् ! व्यंजनावग्रह केटला प्रकारानो छे ? हे गौतम ! व्यंजनावग्रह चार प्रकारानो छे. ते आ प्रमाणे—१ श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह, ३ जिह्वेन्द्रियव्यंजनावग्रह, ४ स्पृशनेन्द्रियव्यंजनावग्रह. हे भगवन् ! अर्याविग्रह केटला प्रकारानो छे ? हे गौतम !

सूत्रो कहे छे—‘कत्तिविहे ण भंते ! इदियअथाप पन्नत्ते ?’ हे भगवन् ! इन्द्रियापाय केटला प्रकारानो कखो छे ? इत्यादि तेषां अयग्रह रूप ज्ञान एहे अयग्रहीत-सामान्यरूपे जणेलो अने ईहा ज्ञान एहे इंदित-विचारेत्त अर्थनो निर्णयरूप जे अययसाय ते अपाय ‘आ शयल्लो ज शब्द छे, अथया रणशोर्गहानो ज छे’ इत्यादिकरूप निश्चयात्मक बोध ते अपाय ‘ईहा’ इति ईह घातु चेष्टा अर्थमां छे सव्भूत अर्थनी विचारणारूप चेष्टा ते ईहा तात्पर्य ए छे के अयग्रह पछी अने अपायनी पूर्वै सव्भूत अर्थविक्षेपने ग्रहण करया

અત્યોગહે, જિહ્વિમદિયઅત્યોગહે, ફાસિંદિઅત્યોગહે, નોંદિયઅત્યોગહે ।

૨૭. નેરહયાણં મંતે ! કતિવિહે ઉગ્ગહે પળ્લત્તે ? ગોયમા ! દુવિહે:ઉગ્ગહે પન્નત્તે, તંજહા-અત્યોગહે ય વંજ-
નોગ્ગહે ય । एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं मंते ! कतिविधे उगंहे पन्नत्ते ? गो-
यमा ! दुविधे उगंहे पल्लत्ते-अत्योगहे य वंजणोगहे य । पुढविकाइयाणं मंते ! वंजणोगहे कतिविधे पन्नत्ते ?
गोयमा ! एगे फासिंदियवंजणोगहे पन्नत्ते । पुढविकाइयाणं मंते ! कतिविधे अत्योगहे पणत्ते ? गोयमा ! एगे

અર્થાવગ્રહ છ પ્રકારનો છે. તે આ પ્રમાણે—૧ શ્રોત્રેન્દ્રિય અર્થાવગ્રહ, ૨ ચક્ષુહન્દ્રિય અર્થાવગ્રહ, ૩ ઘ્રાણેન્દ્રિય અર્થાવગ્રહ, ૪ જિહ્વે-
ન્દ્રિય અર્થાવગ્રહ, ૫ સ્પર્શેન્દ્રિય અર્થાવગ્રહ અને ૬ નોહન્દ્રિયઅર્થાવગ્રહ.

૨૭. હે ભગવન્ ! નેરયિકોને કેટલા પ્રકારનો અવગ્રહ કર્યો છે ? હે ગૌતમ ! વે પ્રકારનો કર્યો છે. તે આ પ્રમાણે-અર્થાવગ્રહ અને
વ્યંજનાવગ્રહ. એ પ્રમાણે અંસુરકુમારોથી માંડી સ્તનિતકુમારો સુધી જાણું. હે ભગવન્ ! પૃથિવીકાયિકોને કેટલા પ્રકારનો અવગ્રહ છે ?
હે ગૌતમ ! વે પ્રકારનો છે, તે આ પ્રમાણે-અર્થાવગ્રહ અને વ્યંજનાવગ્રહ. હે ભગવન્ ! પૃથિવીકાયિકોને વ્યંજનાવગ્રહ કેટલા પ્રકારનો

તરફ અને અસદ્ભૂત અર્થ વિશેષનો ત્યાગ કરવા અભિમુગ, પ્રાયઃ અહીં શંગ વગેરેના મધુસ્ત્યાદિ શબ્દધર્મો જણાય છે અને રણશી-
ગઢા વગેરેના કર્કશ નિષ્ઠુસ્ત્યાદિ શબ્દધર્મો જણાતા નથી, આવા પ્રકારની મતિવિશેષ તે છે. માત્ર્યકાર કહે છે—“ મૃયામૃયવિત્સે-
સાત્રાણચાયામિમુદમીદા ”-સદ્ભૂત અર્થને ત્રાણ કરવા અને અસદ્ભૂત અર્થને ત્યાગ કરવા અભિમુલ્લ યોધ વિશેષ તે છે. ‘દુવિહે
ઓગહે પન્લ્લત્તે’-વે પ્રકારનો અવગ્રહ છે-અર્થાવગ્રહ અને વ્યંજનાવગ્રહ. તેમાં અર્થનો અવ-અપકૃષ્ટ ગ્રહ-જ્ઞાન પટલે જેનો નિવંદય ન કરી

फासिदियअत्योगगहे पन्नते । एवं जाय घणस्तइकाइयाणं । एवं वेइंदियाणवि, नवरं वेइंदियाणं वंजणोगगहे दु-
चिहे पन्नते, अत्योगगहे दुचिहे पन्नते, एवं तेइंदियचउरिंदियाणवि, पावर इवियपरिदुही कायब्वा । चउरिंदि-
याण वंजणोगगहे तिविचे पन्नते, अत्योगगहे चउब्बिचे पन्नते, सेसाण जहा नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ९-१० ।
छे ? हे गौतम ! एक स्पंडीन्द्रियव्यजनावग्रह छे. हे मगबन् ! घृथिबीकायिकोने केटला प्रकारो अर्याविग्रह छे ? हे गौतम ! एक स्प-
ंडीन्द्रियार्थविग्रह छे. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवु. ए प्रमाणे वेइन्द्रियोने पण समज्जुं, परन्तु वेइन्द्रियोने व्यजनावग्रह
अने अर्याविग्रह वे प्रकारो छे. एम तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने पण जाणजुं, परन्तु इन्द्रियोनी वृद्धि करवी. चउरिन्द्रियोने व्यज-
नावग्रह त्रण प्रकारो अने अर्याविग्रह चार प्रकारो छे. बाकीनाने वैमानिको सुधी नैरयिकोनी पेठे जाणवु.

शक्य पया सामान्य रूपादि अर्थजु ग्रहण-ज्ञान ते अर्याविग्रह अही नन्दिचूत्रता चूर्णिकार कहे छे-“ सामन्तस्स रुषाइविसेसणरहि-
यस्स अनिहेसस्स अपगगो” इति रूपादि विशेषणरहित पटले भा रूप छे, गन्ध छे, शब्द छे के स्वर्श छे इत्यादि नामजातादिनी
करयना रहित, जेनो निर्देश न करी शक्य पया सामान्य अर्थजु ग्रहण से अयग्रह ‘व्यज्यते अनेन अर्थ’ जेम प्रदीप पठे घट प्रगट
कराप तेम जे घटे अर्थ प्रगट कराय ते व्यजन पटले उपकरण इन्द्रिय अने शब्दादिके परिणत धयेला द्रव्योतो परस्पर सयन्ध
जाणयो कारण के सयन्ध थयाथी ज ओत्र वगेरे इन्द्रियो घटे ते ते अर्थ प्रगट करी शक्य छे, ते सिवाय नहि, माटे इन्द्रिय अने
शब्दादि अर्थनो सयन्ध व्यजन समज्यो आ सयन्धे माय्यकार कहे छे के “ धञ्जिइ जेणतयो घटुव्व दीयेण घजण त च । उयगर-
णिदियसहाएपरिणयइप्यसंपन्धो ॥” जेम दीवा घटे घट प्रगट कराय तेम जे घटे अर्थ ‘व्यज्यते’ प्रगट कराय ते व्यजन अने ते उप-
करणेन्द्रिय अने शब्दादि परिणामयाळा द्रव्यनो संवन्ध जाणयो ते इयजत-संवन्ध घटे सयन्धने प्राप्त धयेला शब्दादिकर अर्थजु अव्यक्तरूप

ज्ञान ते व्यंजनावग्रह. अथवा 'व्यज्यन्ते' जे प्रगट कराय ते व्यंजन-उपकरणेन्द्रियने प्राप्त थयेला शब्दाद्विरूप परिणामवाळा द्रव्योत्पत्ती अवग्रह-अव्यक्त ज्ञान ते व्यंजनावग्रह. (प्र०)-प्रथम व्यंजनावग्रह थाय छे अने तयार पल्ली अर्थावग्रह थाय छे तो अहीं प्रथम अर्थावग्रह केम कळ्यो छे? (उ०)—स्पष्टरूपे जणाय छे ते माटे प्रथम अर्थावग्रह कळ्यो छे. ते आ प्रमाणे-अर्थावग्रह स्पष्टरूपे वधा प्राणीओ वडे अनुभवाय छे. कारण के अत्यन्त शीघ्र गमनादि क्रियांमं एकवार जलदीथी ज्ञान थाय छे के 'कंडक जोयुं'-अनुभव्युं पण बरोबर विचार्युं नहिं-पया प्रकारनो व्यवहार थाय छे. वल्ली अर्थावग्रह सर्व इन्द्रियो अने मनद्वारा थाय छे अने व्यंजनावग्रह एम थतो नथी, माटे प्रथम अर्थावग्रह कळ्यो छे. हवे व्यंजनावग्रह पल्ली अर्थावग्रह थाय छे ए क्रमने आश्रयो प्रथम व्यंजनावग्रहसुं स्वरूप प्रतिपादन करवानी इच्छावाळा सूत्रकार शिष्यद्वारा प्रश्न करावे छे—'व्यंजणोगहे णं भंते ! कश्चिहे पन्नत्ते'-हे भगवन् ! व्यंजनावग्रह केटला प्रकारनो छे? इत्यादि. अहीं व्यंजन पटले 'उपकरणेन्द्रिय अने शब्दाद्विरूप परिणामवाळा द्रव्यनो परस्पर संबन्ध' एम पूवें कसुं तेथी श्रोत्र वगरे चार इन्द्रियोनो व्यंजनावग्रह थाय छे अने मननो थतो नथी. कारण के ते वन्ने अप्राप्तकारी-अप्राप्त विषयने ग्रहण करे छे, ते अप्राप्तकारितानो विचार नन्दिस्त्रनी टीकामं वताव्यो छे माटे अहीं वतावता नथी. अर्थावग्रह छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—'सोईदियअयुगहे' श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह इत्यादि. श्रोत्रेन्द्रिय वडे व्यंजनावग्रह थया पल्ली एक सगयमं जेनो निर्वेश न थर शके पसुं सामान्यमात्र अर्थसुं ज्ञान ते श्रोत्रेन्द्रियार्थावग्रह. ए प्रमाणे द्रानेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियना अर्थावग्रह संगन्धे पण कहेवुं. चक्षु अने मननो व्यंजनावग्रह थतो नथी, तेथी ते वन्नेनो प्रथमज स्वरूप, द्रव्य, गुण अने क्रियानी कल्पना रहित, जेनो निर्वेश न थर शके पया सामान्यमात्र स्वरूपवाळा अर्थना ज्ञानरूप अर्थावग्रह जाणवो. 'नेईदियअथावगहो' नेईदियार्थावग्रह-नेईदिय-मन, ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारसुं छे. तेमं मनःपर्याप्ति नामकर्मना उदयथी मनयोग्य वर्गणाना पुत्रलो ग्रहण करी मनरूपे परिणमन कसुं ते द्रव्य मन. ए संबन्धे नन्दिस्त्रना चूर्णिकार तेमज कहे छे—'मणपज्जत्तिनामहम्मोदयओ जोगे मणोव्वे थिसुं मणत्तेण परिणामिया व्वया इव्वमणो भन्नाइ' इति. मनपर्याप्ति नामकर्मना उदयथी योग्य मनोद्रव्यने ग्रहण करीने मनपणे परिणाम पमाडेलां द्रव्यो द्रव्य मन कहे-

૨૮. કતિચિદ્દા ણં મંતે ! શ્લોકિયા પન્નત્તા ? ગોયમા ! દુચિદ્દા પન્નત્તા, તેજહા-વલ્લિવિદિયા ય માર્વિવિદિયા ય।
કતિ ણં મંતે ! વલ્લિવિદિયા પન્નત્તા ? ગોયમા ! અદ્દ વલ્લિવિદિયા પન્નત્તા, તેજહા-વો સોત્તા, વો નેત્તા, વો ઘાણા,
જીહા, ફાસે । નેરદ્દયાણં મંતે ! કતિ વલ્લિવિદિયા પન્નત્તા ? ગોયમા ! અદ્દ દ્દાણં અદ્દુરકુમારાણં જાવ ધ-

૨૮. હે મગવન્ ! શ્લોકિયો કેટલા પ્રકારની છે ? હે ગૌતમ ! હે પ્રમાણે-દ્રવ્યેન્દ્રિયો અને માર્વેન્દ્રિયો. હે મગ-
વન્ ! દ્રવ્યેન્દ્રિયો કેટલા પ્રકારની છે ? હે ગૌતમ ! આઠ દ્રવ્યેન્દ્રિયો છે. તે આ પ્રમાણે-વે શ્રોત્ર, વે નેત્ર, વે દ્રાણ-નાસિકા, જીભ અને સ્પર્શન.
વાય છે તથા દ્રવ્ય મગને અવલથી જીવનો જે મનન પરિણામ તે માયમન તે પ્રમાણે નન્દિસુત્તના પૂર્ણિકાર કહે છે-“જીવો પુણ
મણપરિણામકરિયાયતો માયમણો ! કિં મણિય દોર ? મણવ્વ્યાલયણો જીવસ્સ મણણવાયારો માયમણો મન્નદ” શ્લોક-મનના પરિણા-
મનો ક્રિયાવાલ્લો જીવ માયમન કહેવાય છે શુ કહ્ય ? મન દ્રવ્યોને અવલથી જીવનો મનનથ્યાપાર તે માયમન કહેવાય છે તેમાં અહીં
માય મનનુ પ્રયોજન છે, કારણ કે તેનુ પ્રહણ કરવાથી અથવ દ્રવ્ય મનનુ પળ પ્રહણ ધાય છે અને દ્રવ્ય મન સિવાય માવ મનનો અસમય
છે માય મન સિવાય પળ મયસ્ય કેયલક્ષ્મીની પેઠે દ્રવ્ય મનનો સંમવ છે માટે કશુ છે કે અહીં માયમનનુ પ્રયોજન છે તેમા નોશ્લોકિય-
માય મન પટે અર્થોપગ્રહ-દ્રવ્યેન્દ્રિયતા વ્યાપારી અપેક્ષા સિવાય ‘આ શુ છે ?’ ય પ્રમાણે ઘટાવિ અર્થતા સ્વરૂપની વિચારણા કરવામા
અભિમુખ, પ્રથમ પક સમય માયનો, રૂપાવિ તથા ડર્ચોકારાવિ (ડર્ચો આકૃતિ ઘનરે) વિશેષની વિચારણારહિત, જેનો નિર્દેશ ન ઘર
શકે પ્યો, નામાન્યમાત્રના વિચારરૂપ યોધ તે નોશ્લોકિયાર્થોપગ્રહ અવગ્રહનુ પ્રહણ ઉપલક્ષણ-સૂચક છે, તેથી નોશ્લોકિયાર્થોપગ્રહનુ
સાહ્યાત્ પ્રહણ છે અને તે સિવાય યીજા શ્લોક અને અપાયનુ ઉપલક્ષણથી પ્રહણ કરેલુ છે કારણ કે સુત્રની ગતિ વિચિત્ર ઘોષાયો યોગ નથી
૨૮ ‘કતિચિદ્દા ણં મંતે ! શ્લોકિયા પન્નત્તા’ હે મગવન્ ! શ્લોકિયો કેટલા પ્રકારની છે ? દ્રવ્યેન્દ્રિયસુત્ર સુગમ છે કારણ કે તેનો પૂર્વ
વિચાર કરેલો છે ‘કર ણ મંતે ! વલ્લિવિદિયા પન્નત્તા’-હે મગવન્ ! કેટલી દ્રવ્યેન્દ્રિયનો કહી છે-શ્લોકિયો દ્રવ્યેન્દ્રિયનો સઠ્થા વિધે સુત્ર

ગિયકુમારાણચિ । પુઠવિકાહ્યાણં ભંતે! કતિ દંબિવદિયા પન્નત્તા ? ગોયમા! એગે ફાસિંદિએ પન્નત્તે । એવં જાવ
ચણસ્સહકાહ્યાણં । બેહંદિયાણં ભંતે ! કતિ દંબિવદિયા પન્નત્તા ? ગોયમા! દો દંબિવદિયા પન્નત્તા, તંજહા-ફા-
સિંદિએ ય જિહિંભદિએ ય । તેહંદિયાણં પુચ્છા । ગોયમા! ચત્તારિ દંબિવદિયા પન્નત્તા, તંજહા-દો ઘાણા, જીહા,
ફાસે । ચડરિંદિયાણં પુચ્છા । ગોયમા! છ દંબિવદિયા પન્નત્તા, તંજહા-દો ગેત્તા, દો ઘાણા, જીહા, ફાસે । સે-
સાણં જહા નેરહ્યાણં જાવ વેમાણિયાણં ।

૨૯. એગમેગસ્સ પં ભંતે ! નેરહ્યાસ્સ કેવહ્યા દંબિવદિયા અતીતા ? ગોયમા ! અણંતા । કેવહ્યા વહેહ્છગા ? ગો-
હે ભગવન્ ! નૈરયિકોને કેટલી દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે ? હે ગૌતમ ! એ આઠ જ હોય છે. એ પ્રમાણે અસુરકુમારોને યાવત્ સ્તનિતકુમારોને
જાણું. હે ભગવન્ ! ધૃથિવીકાયિકોને કેટલી દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે ? હે ગૌતમ ! એક સ્પર્શનેન્દ્રિય હોય છે. એ પ્રમાણે વનસ્પતિકા-
યિકો સુધી જાણું. હે ભગવન્ ! વેહ્ન્દ્રિયોને કેટલી દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે ? હે ગૌતમ ! વે દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે. તે આ પ્રમાણે-સ્પર્શ-
નેન્દ્રિય અને જિહ્વેન્દ્રિય. તેહ્ન્દ્રિયો સંબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! ચાર દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે. તે આ પ્રમાણે-વે ઘ્રાણ-નાસિકા, જીભ
અને સ્પર્શન. ચડરિન્દ્રિયો સંબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! છ દ્રવ્યેન્દ્રિયો હોય છે. તે આ પ્રમાણે-વે નેત્રો, વે નાસિકા, જીભ અને સ્પર્શન.
બાકી વધા જીવોને નૈરયિકોની જેમ વૈમાનિકો સુધી જાણું.

૨૯. હે ભગવન્ ! એક એક નૈરયિકને કેટલી દ્રવ્યેન્દ્રિયો અતીત-ભૂતકાલમાં થયેલી હોય ? હે ગૌતમ ! અનન્ત હોય.
અને દંડક સંબંધે સૂત્ર પાઠસિદ્ધ છે.

यमा ! अट्ट ! केवइया पुरेक्खवाडा ? गोयमा ! अट्ट वा सोल वा सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवइया दब्बियदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता ! केवइया बद्धेह्लगा ? अट्ट ! केवइया पुरेक्खवाडा ? अट्ट वा नव वा सत्तरस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारणं ताव माणियन्व । एवं पुढविकाइया आउकाइया वणस्सइफाइयायि, नवर केवइया पद्धेह्लगत्ति पुच्छाप उत्तरं एय्के फासिंथियदब्बियदिए । एवं तेउकाइयवाउकाइयस्सवि, नवरं पुरेक्खवाडा नव वा दस वा । एवं वेइंदियाणवि, णवरं

केटली द्रव्येन्द्रियो बद्ध-वर्तमानकाळे विद्यमान होय ? हे गौतम ! आठ होय. कटली पुरस्कृत-भविष्यकाळे थवानी होय ? हे गौतम ! आठ, सोळ, सत्तर, संख्याता, असंख्याता अने अतन्त द्रव्येन्द्रियो भविष्यमा थवानी होय छे. हे सरवन् ! एक एक असुरकुमाने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय. केटली बद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय ? आठ होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? साठ, आठ, नव, सत्तर, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे स्तनितकुमारो सुधी कहेदु. एम पृथिवीकायिको, अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण जाणवा. परन्तु केटली बद्ध-

२९ एक एक जीव सपथे अतीत, बद्ध (वर्तमान) अने पुरस्कृत (भविष्यमा थवानी) द्रव्येन्द्रियना विचारमा 'पुरेक्खवाडा अट्ट वा सोल वा सत्तरस वा सदिज्जा वा असीक्खिन्धा वा अणता वा' पुरस्कृत-भविष्यत्कालीन द्रव्येन्द्रियो आठ, सोळ, सत्तर, संख्याती, असंख्याती के अन्त जाणवी जे नैरेयिक पठीनाज भवमा मनुष्यणु पामीने सिद्ध थाय-मुक्त थाय ठेने मनुष्य भवसंयन्धी आठ इन्द्रियो, अने जे पठीना भज्जन्. तिर्यंबणु पामी त्यायी मरण पामी मनुष्यमां आयीने सिद्ध थाय तेने तिर्यंबणु आठ अने मनुष्यभयनी आठ

बद्धेच्छगपुच्छाए दोग्णि। एवं तेइंदियस्सवि, णवरं बद्धेच्छगा चत्तारि। एवं चउरिंदियस्सवि, नवरं बद्धेच्छगा छ। पंचिंदियतिरिक्खजोग्णियमणूसवाणमंतराजोइसियसोहमीसाणगदेवस्स जहा असुरकुमारस्स, नवरं मणूसस्स पुरेक्खवडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा नव वा संखेज्जा वा अणंता वा। सणं-कुमारमाहिंदवंभंलतगसुक्खसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगदेवस्स य जहा नेरइयस्स। एगमेगस्स णं भंते ! विजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवस्स केवइया दब्बिंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धे-

वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय ? ए प्रश्नना उत्तरमां एक स्पर्शनेन्द्रियरूप द्रव्येन्द्रिय होय. ए प्रमाणे तेजस्कायिक अने वायुकायिक संवन्धे कहेहुं. परन्तु भविष्यमां थनारी जघन्यपदे नव अथवा दस द्रव्येन्द्रियो होय. ए प्रमाणे वेइन्द्रियोने ण कहेहुं. परन्तु वद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियना प्रश्नमां वे द्रव्येन्द्रियो होय. एम तेइन्द्रियोने जाणहुं. परन्तु तेओने चार वद्ध द्रव्येन्द्रियो होय. चउरिन्द्रियोने ण एमज जाणहुं. परन्तु तेने छ बद्ध-विद्यमान द्रव्येन्द्रियो होय. पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने असुरकुमारनी पेठे कहेहुं. परन्तु मनुष्यने द्रव्येन्द्रियो भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने

मळीने सोळ इन्द्रियो होय. जे नरकथी नीकळी पळोना भवमां तिर्यंचपंचेन्द्रियणुं पामी त्यार पछी एक भवमां पृथिवीकायिकादि थइने मनुष्यमां आवी सिद्ध थाय तेने तिर्यंचभवनी आठ, एक पृथिवीकायादिभवनी अने आठ मनुष्यभवनी एम सत्तर द्रव्येन्द्रियो होय. संख्याता काळ सुधी संसारमां रहेनाने संख्याती, असंख्याता काळ सुधी रहेनाने असंख्याती अने अनन्तकाळ पर्यंत रहेनाने अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय.

ह्यगा ? अह, केवइया पुरेकखडा ! अह धा सोलस धा चउबीसा वा संखेज्जा वा ! सव्यद्वसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, पद्धेह्यगा अह, पुरेकखडा अह ! नैरइयाणं भंते ! केवइया दब्बिदिद्या अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पद्धेह्यगा ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेकखडा ? गोयमा ! अणंता ! एवं जाय गेवज्जगदेयाणं, नवरं मणूसाणं पद्धेह्यगा सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अ-

आठ, नव, सख्याती, असंख्याती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय. सनत्तुमार, माहेन्द्र, ब्रह्मलोक, लोतक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अब्युत अने प्रवेयक देवने नैरियिकनी पेठे जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त द्रव्येन्द्रियो थयेली होय. केटली बद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय ? आठ होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? आठ, सोल, चोवीस अथवा संख्याती होय. सर्वाथसिद्ध देवने अतीत-भूतकाले अनन्त द्रव्येन्द्रियो थयेली होय. बद्ध-वर्तमान आठ होय अने भविष्यमां थवानी आठ होय. हे भगवन् ! नैरियिकोने केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत -पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली बद्ध-विद्यमान होय ? हे गौतम ! असंख्याती होय. अने भवि-

असुरकुमार सूत्रमा 'पुरेकखडा अह धा नव धा' भविष्यमां प्राप्त थवानी आठ अथवा नव धगेरे इन्द्रियो होय तेमां असुरकुमारना भवथी नीकळी पछीना भयमां मनुष्यणु पामी सिद्ध थाय तेने आठ द्रव्येन्द्रियो होय असुरकुमारथी माडी ईशान सुथोता देवो पृथिवी, पाणी अने धनस्पतिमां उत्पन्न थाय छे, तेथी पछीना भयमा पृथिव्याविमा जइने त्यार पछी मनुष्यणु पामीने सिद्ध थाय तेने नव इन्द्रियो होय, सख्याती, असंख्याती अने अनन्त द्रव्येन्द्रियोने विचार पुरेनी पेठे फरयो पृथिवी, पाणी अने धनस्पतिना सूत्रमां

तीता अणंता, बद्धेच्छगा असंखेज्जा, पुरेक्खडा असंखेज्जा । सव्वट्टसिद्धगदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! अतीता अणंता, बद्धेच्छगा संखेज्जा, पुरेक्खडा संखेज्जा ।

व्यमां थवानी केटली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. ए प्रमाणे त्रैवेयक देवो सुधी जाणुं. परन्तु मनुष्योने बद्ध द्रव्येन्द्रियो कदाचित् संख्याती होय अने कदाचित् असंख्याती होय. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवो संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अतीत काले अनन्त, बद्ध-वर्तमान असंख्याती, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे. सर्वार्थसिद्ध देवो संबंधे पृच्छा, हे गौतम ! पूर्वकाले थयेली अनन्त, विद्यमान संख्याती, अने भविष्यमां थवानी संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे.

‘पुरेक्खडा अट्ट वा नव वा’ इति. भविष्यमां थवानी आठ, नव वगैरे इन्द्रियो होय छे. पृथिव्यादि पोताना भवथी नीकळीने पछी मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने सिद्ध थाय, तेमां जे पछीना भवमां मनुष्यपणुं पामीने सिद्ध थाय तेने मनुष्यभव संबन्धी आठ इन्द्रियो होय, अने जे पछी एक पृथिव्यादि भव करीने त्परावाद मनुष्यभव पामी सिद्ध थाय तेने नव द्रव्येन्द्रियो होय. तेजस्कायिक अने वायुकायिको मरण पामी तुरत मनुष्यपणुंज पामता नथी, अने वेइन्द्रियो, तेइन्द्रियो अने च्छरिन्द्रियो पछी तुरत मनुष्यपणुं पामे छे, परन्तु तेओ सिद्ध थता नथी, तेथी तेओना सूत्रमां जघत्थ पदे नव के दस द्रव्येन्द्रियो होय एम फहेचुं जोइप. वाकीनानो विचार पूर्वे कथा प्रमाणे करवो, मनुष्यसूत्रमां पुरस्कृत-भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो कोइने होय अथवा न होय, ते भवेज सिद्ध थनारने न होय अने वाकीनाने होय, जेओने होय तेओ पण जो पछीना भवमां फरीथी मनुष्य थइने सिद्ध थाय तेने आठ अने जे वच्चे पृथिव्यादिनो एक भव करी मनुष्य थइने सिद्ध थाय तेने नव होय. वाकीनानो विचार पूर्वोने पेठे करवो. सनत्कुमारादि देवो मरण पामी तुरत पृथिव्यादिमां आवता नथी, परन्तु पंचेन्द्रियोमां आवे छे. तेथी तेओ नेरयिफोनी पेठे कइया. माटे कणुं छे के ‘सनत्कुमार,

३०. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवइया वड्विविदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया वड्वेइलुगा ?

३० हे मगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-भूतकाले गयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त

माहेन्द्र, प्रहलोक, लान्तक, युफ, सहस्राह, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत अने प्रवेयक देवोने नैरयिकोनी पंठे कहेयु

विलयादि चार देव संघन्धी सूयोमां जे पछीना भयमा मनुष्यपणु पामीने सिद्ध थाय तेने आठ द्रव्येन्द्रियो होय जे एकथार मनुष्य थाने फरीधी पण मनुष्यपणु पामी सिद्ध थाय तेने सोळ द्रव्येन्द्रियो होय, अने जे एखे देवपणु अनुभवयो मनुष्य थाने सिद्ध थाय तेने चौथीश होय, कारण के मनुष्यभयमा आठ, देवभयमा आठ अने फरीधी मनुष्यभयमा आठ संख्याता काल सुधी संसारमां रहेनाले संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे अहीं विलयादि चार देवोमां गयेला घणा कालपर्यन्त असख्याता के अनन्तकाल सुधी ससा रमा रहेता नथी तेथी 'संखेज्जा या' संख्यात काल-कसो छे, पण 'नासखेज्जा अणता था'-असंख्यात अने अनन्तकाल कसो नथी सर्वार्थसिद्ध पछीना भयमा अवश्य सिद्ध थाय छे, तेथी तेने जघन्य अने उत्कृष्ट सिंघाय भयिच्यमां थपानी आठ ज द्रव्येन्द्रियो होय छे थयुचनना विचारमां नैरयिकसूत्रने विषे बड द्रव्येन्द्रियो असख्याती होय छे, कारण के नैरयिको असख्याता छे ए प्रमाणे

थाकीना सूयोमां उपयोग-ध्यान राखी कहेयु पल्लु मनुष्यसूत्रमा 'सिय सखिज्जा सिय असखिज्जा'-कथाच संख्याती होय अने कथाच असंख्याती होय अहीं संसूछिम मनुष्यो कथाचिद सयंथा होता नथी, कारण के तेने चौथीश शुद्धतप्रमाण विरहकाल पूरे कसो छे तेमा ज्यारे तसूछिम मनुष्यो प्रशस्तमये सयंथा न होय स्यारे संख्याती द्रव्येन्द्रियो होय, कारण के गर्भज मनुष्यो संख्याता छे ज्यारे संसूछिम मनुष्यो पण होय छे त्यारे असंख्याती द्रव्येन्द्रियो होय छे सर्वार्थसिद्ध महायिमानना देवो संख्याता होय छे, कारण के वादर अने मोटा शरीरयाला छत्ता परिमित क्षेत्रमां रहे छे तेथी तेओने बड अने पुरस्सुत द्रव्येन्द्रियो संख्याती होय छे

३०-३५. 'एगमेगस्स ण भंते नेरइयस्स नेरइयत्ते' हे मगवन् ! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामा केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले

गोयमा ! अट्ट, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा सोलस वा चउ-
वीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एगमेगस्स णं नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवइया दब्बिदिया अ-
तीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेच्छगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि
कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणि-
थयेली होय . केटली वर्तमान होय ? हे गौतम ! आठ होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने
कोइने थवानी न होय जेने थवानी होय. तेने आठ, सोळ, चोवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त थवानी होय. हे भगवन् ! एक
एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्वं काळे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली वद्ध होय ? हे
गौतम ! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय

होय—इत्यादि, 'पुरस्सुत्त-भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो कोइने होय अने कोइने न होय. जे नरकथी नीकळी फरीथी पण नैरयिकपणुं
नद्धि पामे तेने न होय. जे नारकपणुं पामशे तेने होय, ते पण जो एकवार नरकमां आववानो होय तो तेने आठ, जे वार आववानो
होय तो सोळ, त्रण वार आववानो होय तो चोवीश, संख्याती वार आववानो होय तो संख्याती द्रव्येन्द्रियो इत्यादि होय.

मनुष्यपणाना विचारमां 'कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि' इति न वक्तव्यम्—कोइने होय अने कोइने न होय एम न कहेउं, कारण
के तेओउं मनुष्योमां आत्तमन अवइय थवाउं छे. तेथी जघन्यपदे आठ अने उत्कर्षथी अनन्त द्रव्येन्द्रियो होय छे एम कहेउं.

विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितना विचारमां अतीत फाळे द्रव्येन्द्रियो नथी, कारण के विजयादि चार अनुत्तरमां गयेलो
जीव अवइय त्यांथी मरण पामी तथास्वभावथी कदि पण नैरयिकथी मांडी तिर्यंच पंचेन्द्रिय सुधीना दडकोमां तथा व्यन्तर अने

यकुमाररत्ति । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स पुढयिकाइयत्ते केवइया दब्बिबिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पद्धेछ्छगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खवा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि एक्को वा दो वा तिण्णि वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता था, एवं जाय यणस्सइकाइयत्ते । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स वेइन्वियत्ते केवइया दब्बिबिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पद्धेछ्छगा ? गोयमा ! णत्थि, केव-

तेने आठ, सोळ, चोवीस, संख्याती, असंख्याती के अनन्त यवानी होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनिवकुमारणामां जाणवुं. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-पूर्वे यवेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटलीचद्द होय ? हे गौतम ! न होय. केटली मविष्यमां यवानी होय ? हे गौतम ! कोइने यवानी होय अने कोइने यवानी न होय, जेने यवानी होय तेने एक, वे, त्रण, सख्याती, असख्याती के अनन्त यवानी होय. ए प्रमाणे यावत् धनस्पतिकायणामां जाणवुं. हे भगवन् !

ज्योतिषिकोमा भायपालो नथी, पण मनुष्योमां अने सौधमादि देयोमां आक्खे, त्यां पण जयम्यथी एक, वे अने त्रण मय सुधी अने उत्कर्षथी सख्याता मय सुधी, परन्तु असंख्याता के अनन्त मय सुधी आयशे नदि, तेथी नैरयिकने विजयाविपणामा द्रव्येन्द्रियो अतीत फाले नथी, पुरस्सुत-मविष्यमा द्रव्येन्द्रियो आठ अथवा सोळ होय छे कारण के विजयादिमां वे चार उत्पन्न थाय छे तेने पचीना मयमां अयइय मोक्ष थाय छे ए प्रमाणे जेम नैरयिकने नैरयिकणणा यगेरे चोवीस स्थानोमां विचार कर्यो, तेम अमुकुमारदि प्रत्येकनो विचार करवो अने पूर्बोक्त भायना अनुसारे स्वयं उपयोग राती विचारु मावेन्द्रियवज्जो पण सुगमज छे, केवळ

श्रीमदाचार्यमलयगिरिविचित्त प्रभाषणा टीकाना अनुवादमा पदरमा इन्द्रियपदलो बीजो उरेशक समाप्त.

इया पुरेकखडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि दो वा चत्तारि वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं तेइन्दियत्तेवि, नवरं पुरेकखडा चत्तारि अट्ट वा वारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं चउरिंदियत्तेवि, नवरं पुरेकखडा छ वा वारस वा अट्टारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । पंचिंदियत्तिरिक्खज्जोणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते । मणूसत्तेवि एवं चेव, नवरं केवइया पुरेकखडा ? अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । सव्वेसिं मणूसवज्जाणं पुरेकखडा मणूसत्ते कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि एवं ण वुच्चति । वाणमंतरजोइसियसोहम्मग-जाव गेवेल्लगदेवत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा नत्थि, पुरेकखडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा

एक एक नैरयिकने वेइन्द्रियपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वद्ध होय ? हे गौतम ! नथी. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने वे, चार, संख्याती, असंख्याती के अनंत थवानी होय. ए प्रमाणे तेइन्द्रियपणामां पण जाणहुं. परंतु भविष्यमां थवानी चार, आठ, चार, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो होय. एम चउरिन्द्रियपणामां पण समजहुं, परंतु भविष्यमां थवानी छ, वार, अठार, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो होय. जेम असुरकुमारपणामां कहुं तेम पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिकपणामां पण जाणहुं. मनुष्यपणामां पण एमज समजहुं. परंतु भविष्यमां केटली द्रव्येन्द्रियो थवानी होय ? आठ, सोळ, चौवीश, संख्याती, असंख्याती के अनंत द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. मनुष्य सिवाय बधाने मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न

अणता घा । एगमेगस्स णं भंते । नेरइयस्स विजययेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दब्बिबदिया अतीता ? णत्थि, केवइया पुरेक्खवा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ घा सोलस था । सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते अतीता नत्थि, घट्ठेच्छगा णत्थि, पुरेक्खवा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ । एवं जहाने रइयंपंबओ नीतो तथा अमुरकुमारेणवि नेतव्वो, जाव पंचिवियतिरिक्खजोणिणं, नवरं जस्स सट्ठणे जइ पट्ठेच्छगा तस्स तइ भाणियव्वा ।

३१. एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स नेरइयत्ते केवइया दब्बिबदिया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवइया घट्ठे-
होय एम न कहेदु. ब्वंत्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म यावत् त्रैवेयकदेवणामां द्रव्येन्द्रियो पूर्वं काळे अनन्त यथेली होय, घट्ट द्रव्येन्द्रियो नथी, अने भविष्यमां थवानी कोइने न होय जेने होय तेने आठ, सोळ, चोवीश, सख्यती, असख्यती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत-भूतकाळे थयेली होय ? हे गौत्तम ! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय अने कोइने न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा सोळ द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. सवर्थिसिद्धदेवणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत अने चढ नथी, भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. जेने भविष्यमा थवानी छे तेने आठ द्रव्येन्द्रियो थवानी होय ए प्रमाणे जेम नैरयिकनो दडक फलो तेम अमुरकुमार चडे ण दडक कहेयो. यावत् पचेन्द्रिय तिर्यच वडे दडक कहेयो. परंतु जेने स्वस्थानमां जेटली घट्ट-
वर्तमान द्रव्येन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी.

ल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा सं-
खेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव पंचिदियतिरिक्खजोणियत्ते, णवरं एगिंदियविगल्लिंदिएसु जस्स
जइ पुरेक्खडा तस्स तत्तिया भाणियब्बा । एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स मणूसत्ते केवइया दच्चिदिया अतीता ?
गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स-
त्थि अट्ठ वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । वाणमंतरजोइसिय-जाव गेवेज्जा-
देवत्ते जहा नेरइयत्ते । एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स विजपवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दच्चिदिया

३१. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्वकाले थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त थयेली होय. केटली
बद्ध होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने भविष्यमां थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने भविष्यमां
थवानी होय तेने आठ, सोळ, चौवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त द्रव्येन्द्रियो थवानी होय. ए ममाणे यावत् पंचेन्द्रिय
तिर्यचयोनियणामां जाणवु. परंतु एकेन्द्रिय अने विकलेन्द्रियमां जेने जेटली भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी.
हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने मनुष्यपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो पूर्वे थयेली होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली बद्ध-चर्तमान होय ?
हे गौतम ! आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी
होय तेने आठ, सोळ, चौवीश, संख्याती, असंख्याती के अनन्त थवानी होय. व्यंतर, ज्योतिषिक, यावत् त्रैवेयकपणामां जेम नार-
कपणामां कहुं छे तेम कहेहुं. हे भगवन् ! एक एक मनुष्यने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो

अतीता ! गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ था सोलस वा । केवइया यद्धेच्छगा ! नत्थि,
केवइया पुरेक्खडा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सअत्थि अट्ठ था सोलस था । एगमेगस्स णं भंते ! मणूसस्स
सञ्चट्ठसिद्धगदेवचे केवतिता यन्विदिया अतीता ! गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, के-
वइया यद्धेच्छगा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ । चाणमंतरजोति-
सिप जहा नेरत्थि । सोहम्मगदेवेवि जहा नेरइए, नवरं सोहम्मगदेवस्स विजयवेजयंतजयंतापराजियत्ते केवइया
अतीता ! गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवइया यद्धेच्छगा ! णत्थि, केवइया पुरेक्ख-

अतीत काळे थयेली होय ! हे गौतम ! कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ अथवा सोळ होय. केटली वर्तमान
होय ! न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा
सोळ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक मनुष्येने सर्वाथसिद्धदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे थयेली होय ! हे गौतम !
कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली वर्तमान होय ! न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ! कोइने
थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. व्यन्तर अने ज्योतिष्क नैरयिकनी पेठे जाणवा.
अने सौधर्मदेव ण नैरयिकनी जेम कहेवो. परंतु सौधर्म देवने विजय, वैजयत, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो
अतीत काळे होय ! हे गौतम ! कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली विद्यमान होय ! न होय. केटली
भविष्यमा थवानी होय ! हे गौतम ! कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ अथवा सोळ

डा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सति णत्थि, जस्स अत्थि अट्ट वा सोलस वा । सन्वट्टसिद्धगदेवत्ते जहा नेरइ-
यस्स, एवं जाव गेवेल्लगदेवस्स सन्वट्टसिद्धगदेवत्ते ताव गेतब्बं ।

३२. एगमेगस्स णं भंते ! विजयवेजयंतजयंतापराजितदेवस्स नेरइयत्ते केवइया दब्बिदिया अतीता ? गोयमा !
अणंता, केवइया बद्धेच्छगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि । एवं जाव पंचिदियतिरिक्खल्लजोणियत्ते । मणूसत्ते
अतीता अणंता, बद्धेच्छगा णत्थि, पुरेक्खडा अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा । वाणमंतरजोइसियत्ते
जहा नेरइयत्ते । सोहम्मगदेवत्तेस्तीता अणंता, बद्धेच्छगा णत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स
अत्थि अट्ट वा सोलस वा चउवीसा वा संखेज्जा वा । एवं जाव गेवेल्लगदेवत्ते । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदे-

थवानी होय. सर्वार्थसिद्धदेवपणामां नैरयिकनी पेटे कहेहुं ए प्रमाणे यावत् त्रैवेयकदेवने यावत् सर्वार्थसिद्धदेवपणामां एमज कहेहुं.

३२. हे भगवन् ! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने नैरयिकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीतकाले थयेली
होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. बद्ध केटली होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यच-
पणामां कहेहुं. मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीतकाले अनन्त थयेली होय. वर्तमान काले न होय. अने भविष्यमां थवारी आठ, सोळ,
चोवीश के संख्याती होय. व्यंतर अने ज्योतिष्कपणामां नैरयिकपणामां कहां तेम कहेहुं. सौधर्मदेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत
काले अनन्त थयेली होय. वर्तमान काले नथी अने भविष्यमां थवानी कोइने होय अने कोइने न होय. लेने भविष्यमां थवानी होय
तेने आठ, सोळ, चोवीश के संख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् त्रैवेयकपणामां जाणहुं. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेव-

वत्ते अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवत्तिया पट्ठेह्लगा ? अट्ठ, केवत्तिया पुरेफत्तवडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ । एग्गेगस्स ण भत्ते ! थिजयवेजयंतजयंतअपराजियदेवस्स सव्व-
ट्ठसिद्धगदेवत्ते केवइया पट्ठिवदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पट्ठेह्लगा ? नत्थि केवइया पुरेफत्तवडा ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ । एग्गेगस्स णं भत्ते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स नेरइयत्ते केवइया पट्ठिवदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पट्ठेह्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेफत्तवडा ? अट्ठ । वि-
जाय गेवेज्जगदेवत्ते, नवरं मणूसत्ते अतीता अणता, केवइया पट्ठेह्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेफत्तवडा ? अट्ठ । वि-
जयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते अतीता कस्सत्ति अत्थि कस्सत्ति नत्थि, जस्स अत्थि अट्ठ, केवइया पट्ठेह्लगा ?

एणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली पट्ट होय ! आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने सर्वार्थसिद्ध देवणामा केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! न होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? कोइने थवानी होय अने कोइने थवानी न होय. जेने थवानी होय तेने आठ थवानी होय. हे भगवन् ! एक एक सर्वार्थसिद्ध देवने नैरयिकणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काळे होय ? न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे मनुष्य सिधाय यावत् प्रवेयकणामां जाणहुं. परंतु मनुष्यपणामा द्रव्येन्द्रियो अतीतकाळे अनन्त होय. केटली वर्तमान होय ? न

णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि। एगमेगस्स णं भंते ! सव्वट्टसिद्धगदेवस्स सव्वट्टसिद्धगदेवत्ते केवइया दब्बि-
दिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया बद्धेळ्ळगा ? अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? णत्थि ।

३३. नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिता दब्बिदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेळ्ळगा ? असं-
खिज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? अणंता । नेरइयाणं भंते ! असुरकुमारत्ते केवइया दब्बिदिया अतीता ? गोयमा !
अणंता, केवइया बद्धेळ्ळगा ? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? अणंता, एवं जाव गेवेज्जगदेवत्ते । नेरइयाणं भंते ! वि-
जयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दब्बिदिया अतीता ? नत्थि, केवइया बद्धेळ्ळगा ? णत्थि, केवइया पुरे-
क्खडा ? असंखिज्जा, एवं सव्वट्टसिद्धगदेवत्तेवि । एवं जाव पंचिदियतिरिक्खजोणिया सव्वट्टसिद्धगदेवत्ते भा-

होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? आठ थवानी होय. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत
काले कोइने होय अने कोइने न होय. जेने होय तेने आठ होय. केटली बद्ध होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न
होय. हे भगवन् ! एक एक सर्वार्थसिद्ध देवने सर्वार्थसिद्धणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! न होय. केटली
वर्तमान काले होय ? आठ होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय.

३३. हे भगवन् ! नेरयिकोने नेरयिकणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनंत होय. केटली वर्तमान
काले होय ? असंख्याती होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? अनन्त थवानी होय. हे भगवन् ! नेरयिकोने असुरकुमारणामां
केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काले होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ?

णियब्धं, नवर वणस्सइकाइयाणं विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते सन्वट्टसिद्धगदेवत्ते य पुरेयलडा अणता, सन्वेत्ति मणूससन्वट्टसिद्धगज्जाणं सट्ठाणे बद्धेह्लगा असंरोज्जा, परट्ठाणे बद्धेह्लगा गत्थि । वणस्सइकाइयाणं बद्धेह्लगा अणता । मणूसाणं नेरइयत्ते अतीता अणता, बद्धेह्लगा गत्थि, पुरेयलडा अणता । एय जाव गेवेज्जगदेवत्ते, नवर सट्ठाणे अतीता अणता, बद्धेह्लगा सिय संखेज्जा सिय असलेज्जा, पुरेयलडा अणता । मणूसाणं भंते । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवत्ते केवइया दब्बिदिवा अतीता ! सखेज्जा, केवइया बद्धेह्लगा ! गत्थि, केवइया पुरे-

अनन्त थवानी होय ए प्रमाणे यावत् त्रैवेयकदेवपणामा जाणहुं. हे भगवन् ! नैरयिकोने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ! न होय. केटली वर्तमान काले होय ! न होय. केटली भविष्यमा थवानी होय ! असल्याती होय ए प्रमाणे सर्वार्थसिद्धदेवपणामां पण जाणहुं. एम यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको सर्वार्थसिद्धदेवपणामां कहेवा. परतु वनस्पतिक्रायिकोने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामा तथा सर्वार्थसिद्ध देवपणामां भविष्यमां थवानी द्रव्येन्द्रियो अनंत होय. मनुष्य अने सर्वार्थसिद्ध सिवाय बधाने स्वस्थानने आश्रयी बद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियो असल्याती होय. परस्थानने आश्रयी वर्तमान काले द्रव्येन्द्रियो न होय. वनस्पतिक्रायिकोने बद्ध-वर्तमान द्रव्येन्द्रियो अनन्त छे. मनुष्योने नैरयिकपणामा द्रव्येन्द्रियो अतीत काले अनंत होय. वर्तमान काले नथी, अने भविष्यमा थवानी अनन्त होय. ए प्रमाणे यावत् त्रैवेयकदेवपणामां जाणवु परतु स्वस्थानमां द्रव्येन्द्रियो अतीत काले अनन्त होय. वर्तमान काले कदाच सल्याती होय अने कदाच असल्याती होय, अने भविष्यमा थवानी अनंत होय. हे भगवन् ! मनुष्योने विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामा केटली द्रव्येन्द्रियो

कखडा ? सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा । एवं सव्वहसिद्धेगदेवत्ते अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकखडा असंखेज्जा, एवं जाव गेवेल्लगदेवाणं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं भंते ! नेरइयत्ते केवइया दव्विदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, केवइया पुरेकखडा ? णत्थि । एवं जाव जोइसियत्तेवि, णवरं मणूसत्ते अतीता अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, पुरेकखडा असंखिज्जा । एवं जाव गेवेल्लगदेवत्ते सङ्गाणे अतीता असंखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? असंखिज्जा, केवइया पुरेकखडा ? असंखेज्जा । सव्वहसिद्धगदेवत्ते

अतीत काले होय ? संख्याती होय. केटली वर्तमान काले होय ? नथी. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कदाचित् संख्याती होय अने कदाचित् असंख्याती होय. ए प्रमाणे सर्वार्थसिद्धेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काले न होय, वर्तमानकाले न होय, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् त्रैविक देवो सुधी जाणुं. हे भगवन् ! विजय, वैजयन्त जयन्त अने अपराजित-देवोने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काले होय ? न होय. केटली भविष्य कालमां थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे यावत् ज्योतिषिकेवपणामां पण जाणुं. परंतु मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काले अनन्त होय. वर्तमान काले केटली होय ? न होय. भविष्यमां थवानी केटली होय ? असंख्याती होय. ए प्रमाणे यावत् त्रैविकदेवपणामां स्वस्थाननी अपेक्षाए अतीत काले असंख्याती होय. केटली वर्तमान काले होय ? असंख्याती होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? असंख्याती होय. सर्वार्थसिद्धेवपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काले न होय, वर्तमान काले न होय अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्धेवोने नारकपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनन्त होय.

अतीता नत्थि, पद्धेच्छगा नत्थि, पुरेक्खडा असंखेज्जा। सच्चद्वसिद्धगदेवाणं भंते। नेरइयत्ते केवतिया दब्बिधदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया पद्धेच्छगा ? नत्थि, केवतिया पुरेक्खडा ? गत्थि । एवं मणुसवज्जं ताव भेवेज्जगदेवत्ते । मणुसत्ते अतीता अणता, पद्धेच्छगा नत्थि, पुरेक्खडा संसेज्जा । विजययेजयंतजयंतअपरालितदेयत्ते केवइया दब्बिधदिया अतीता ? संखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? गत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गत्थि । सच्चद्वसिद्धग-देवाणं भंते ! सच्चद्वसिद्धगदेवत्ते केवइया दब्बिधदिया अतीता ? गत्थि, केवइया पद्धेच्छगा ? संखिज्जा, केवइया पुरेक्खडा ? गत्थि । वार ? १ ।

३४. कति णं भंते ! भाविदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच भाविदिया पन्नत्ता, तंजहा-सोत्तिविए, जाव फा-सिदिण । नेरइयाण भंते ! कति भाविदिया पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच भाविदिया पन्नत्ता, तजहा-सोत्तिदिते,

केटली वर्तमान काले होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. ए प्रमाणे मनुष्य सिवाय यावत् त्रैवेयकदेवपणामां ज्ञाणुं. मनुष्यपणामां द्रव्येन्द्रियो अतीत काले अनन्त होय, वर्तमान काले न होय, अने भविष्यमां थवानी असंख्याती होय. विजय, विजयन्त, जयन्त अने अपराजितदेवपणामां केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? संख्याती होय. केटली वर्तमान काले होय ? न होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय. हे भगवन् ! सर्वार्थसिद्ध देवोने सर्वार्थसिद्धदेवपणामा केटली द्रव्येन्द्रियो अतीत काले होय ? न होय. केटली वर्तमान काले होय ? संख्याती होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? न होय.

३४. हे भगवन् ! केटली भावेन्द्रियो कही छे ? हे गौतम ! पांच भावेन्द्रियो कही छे. ते आ प्रमाणे—श्रोत्रेन्द्रिय यावत्

जाव फासिंदिते । एवं जस्स जइ इंदिया तस्स तइ भाणितब्बा, जाव वेसाणियाणं । एगमेगस्स णं भंते ! नेरइ-
यस्स केवइया भाविंदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेच्छगा ? पंच, केवइया पुरेक्खडा ? पंच वा
दस वा एक्कारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमारस्सवि, नवरं पुरेक्खडा पंच वा छ
वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं जाव थणियकुमारस्सवि । एवं पुढविकाइयआउकाइयवणस्सइका-
इयस्सवि, वेइंदियतेइंदियचउरिंदियस्सवि । तेउकाइयवाउकाइयस्सवि एवं चेव, नवरं पुरेक्खडा छ वा सत्त चा
संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । पंचिदियतिरिक्खजोणियस्स जाव ईसाणस्स जहा असुरकुमारस्स, नवरं
मणूसस्स पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थित्ति भाणियब्बं । सणंकुमार-जाव गेवेज्जगस्स जहा नेरइयस्स ।

स्पर्शनेन्द्रिय. हे भगवन् ! नैरायिकोने केटली भावेन्द्रियो होय छे ? हे गौतम ! पांच भावेन्द्रियो होय छे. ते आ प्रमाणे-श्रोत्रेन्द्रिय
यावत् स्पर्शनेन्द्रिय. ए प्रमाणे जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली इन्द्रियो वैमानिको सुधी कहेवी. हे भगवन् ! एक एक नैर-
यिकने केटली भावेन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमान काले होय ? पांच होय. केटली भविष्यमां
थवानी होय ? पांच, दस, अगियार, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे असुरकुमारने पण जाणहुं. परंतु भविष्यमां
थवानी पांच, छ, संख्याती, असंख्याती के अनन्त भावेन्द्रियो होय. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने पण जाणहुं. एम पृथिवी-
कायिक, अप्कायिक अने वनस्पतिकायिकने पण समजहुं. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने पण एमज जाणहुं. तेजस्कायिक

विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेह्लगा पंच, पुरेकलडा पंच वा दस वा पणारस वा स-
लेब्बा वा । सन्धद्वसिद्धगदेवस्स अतीता अणंता, बद्धेह्लगा पंच, केवइया पुरेकलडा ? पंच । नेरइयाणं भंते ! के-
वइया भाविविदिया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया यद्धेह्लगा ? असंखेब्बा, केवइया पुरेकलडा ? अणंता ।
एव जहा वन्विदिएसु पोहत्तेणं वंडत्तो भगित्तो तथा भाविविदिएसुवि पोहत्तेणं वंडत्तो भाणियन्वो, नवर घणस्स-
इकाइयाणं बद्धेह्लगा अणंता ।

अने वायुकायिकने पण एमळ कहेतु. परन्तु भविष्यमां थवानी छ, सात, सल्यती, असल्यती के अनन्त भावेन्द्रियो होय. पंचेन्द्रिय
तिर्यंचयोनिकने याचव् ईशानदेवने अमुक्कुमारनी पेटे जागुं. परन्तु मनुष्यने भविष्यमां थवानी भावेन्द्रियो कोइने होय अने कोइने
न होय एम कहेतुं. सनत्कुमार याचव् त्रैवेयकने नैरयिकनी जेम जाणतु. विजय, वैजयन्त, जयन्त अने अपराजित देवने द्रव्येन्द्रियो
अतीतकाळे अनन्त होय, वर्तमान काळे पांच होय अने भविष्यमां थवानी पाच, दस, पंदर के सल्यती होय. सर्वार्थसिद्ध देवने
अतीत काळे अनन्त होय, वर्तमानकाळे पांच होय, केटली भविष्यमां थवानी होय ? पाच थवानी होय. हे भगवन् ! नैरयिकोनेकेटली
भावेन्द्रिय अतीत काळे होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. केटली वर्तमानकाळे होय ? असल्यती होय. केटली भविष्यमां थवानी
होय ? अनन्त थवानी होय. ए प्रमाणे जेम द्रव्येन्द्रियोमा थहुवचन बडे दंडक कसो तेम भावेन्द्रियमा पण थहुवचन बडे दंडक कहेवो,
परंतु वनस्पतिरूपिकोने वर्तमान काळे भावेन्द्रियो अनन्त होय छे.

३५. एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवत्तिया भाविविया अतीता ? गोयमा ! अणंता, बद्धेच्छगा ? पंच, पुरेक्खडा कस्सवि अत्थि कस्सवि नत्थि, जस्स अत्थि पंच वा दस वा पणारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं असुरकुमाराणं जाव भणियकुमाराणं, नवरं बद्धेच्छगा नत्थि । पुढाविकाइयत्ते जाव वेइदियत्ते जहा दंविदिया । तेइदियत्ते तहेव, नवरं पुरेक्खडा तिण्णि वा छ वा णव वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं चउरिंदियत्तेवि, नवरं पुरेक्खडा चत्तारि वा अट्ट वा चारस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा । एवं एए चेव गमा चत्तारि जाणेतब्बा जे चेव दंविदियत्तु, णवरं तइयगमे जाणितब्बा जस्स जइ इदिया ते पुरे-

३५. हे भगवन् ! एक एक नैरधिकने नैरधिकपणामां केटली भावेन्द्रियो अतीत काले होय ? हे गौतम ! अनन्त होय. वर्तमान-काले केटली होय ? पांच होय. केटली भविष्यमां थवानी होय ? कोइने होय अने कोइने न होय, जेने होयतेने पांच, दस, पंदर, संख्याती, असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे असुरकुमारी आरंभी स्तनितकुमार सुधी जाणतुं. परंतु वर्तमान काले न होय. पृथि-कायिकपणामां यावत् वेइन्द्रियपणामां जेम द्रव्येन्द्रियो कही तेम भावेन्द्रियो कहेही. तेइन्द्रियपणामां पण तेमज कहेतुं. परंतु भवि-ष्यमां थवानी त्रण, छ, नव, संख्याती, असंख्याती के अनंत भावेन्द्रियो होय. चउरिन्द्रियपणामां पण एमज जाणतुं. परन्तु भवि-ष्यमां थवानी भावेन्द्रियो चार, आठ, दस, संख्याती असंख्याती के अनन्त होय. ए प्रमाणे द्रव्येन्द्रियोमां जे चार गम-पाठ कथा छे ते आ चारे पाठ अहीं जाणवा. परंतु त्रीजा गमने विपे जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने जेटली इन्द्रियो भविष्यमां जाणवी. चोथा

फलहेतुमुजेतन्वा । चउत्थगमे जहेव वन्विषदिया, जाव सन्वडसिद्धगदेवाणं सन्वडसिद्धगदेवते केवतिया भा-
विषदिया अतीता ? नत्थि, यद्वेह्लणा ? संखिज्जा, पुरेकखडा ? गत्थि । समत्तो धीजो उरेत्तो ।

पन्नवणाए मगवईए पन्नासं इन्दियपयं समत्तं ।

गमन विपे जेम इव्येन्द्रियो कही छे तेम कहेपी. यावत् सार्थिसिद्धदेवपणामां केटली मावेन्द्रियो अतीत फाले होय ? न होय. वर्तमा-
नकाले केटली होय ? संख्याती होय. मविष्यमां थवानी केटली होय ? न होय. धीजो उरेयक समाप्त.

प्रज्ञापना मगयतीना अनुवादमा परसु इन्द्रियपद् समाप्त

सोलससं पओगपयं ।

१ कतिविहे णं भंते ! पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे १, असच्चमणप्पओगे २, सच्चामोसमणप्पओगे ३, असच्चामोसमणप्पओगे ४, एवं वइप्पओगेवि चउहा ८, ओरा-

सोळसुं प्रयोगपद.

१. हे भगवन् ! केटला प्रकारनो प्रयोग कळो छे ? हे गौतम ! पंदर प्रकारनो प्रयोग कळो छे. ते आ प्रमाणे-१ सत्यमनःप्रयोग, २ असत्य मनःप्रयोग, ३ सत्यमृपा मनःप्रयोग, ४ असत्यामृपा मनःप्रयोग, ५-८ ए प्रमाणे वचनप्रयोग पण चार प्रकारनो छे. ९

१. ५ प्रमाणे पंदरमा पदनी व्याख्या करी, हवे सोळमा पदनी आरंभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे. अहीं पूर्वना पदमां प्रधानपद-मोक्षतुं कारण होवाथी अने इन्द्रियवाळानेज लेइयादि परिणामनो सद्भाव होवाथी विशेषरूपे इन्द्रियपरिणाम कळो छे, त्यार पछी अहीं परिणामतुं समानपणुं होवाथी प्रयोगपरिणामतुं प्रतिपादन कराय छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—‘कइविहे णं पओगे पन्नत्ते’ हे भगवन् ! केटला प्रकारनो प्रयोग कळो छे ? अहिं ‘णं’ चाक्यालंकारमां छे. प्र उपसर्ग पूर्वक युज् धातु योग-व्यापार अर्थमां छे, तेने भाव-क्रियाना अर्थमां ‘घञ्’ प्रत्यय लागी प्रयोग शब्द थाय छे. तेनो अर्थ परिस्पन्द क्रिया अथवा आत्मव्यापार पवो थाय छे, प्रकर्षण युज्यन्तेऽनेन-जे वडे क्रियाओमां अथवा सांपरायिक-कापायिक के इयांपथ-योगनिमित्तक कर्मनी साथे आत्मा जोडाय ते प्रयोग. अहीं करण अर्थमां ‘घञ्’ प्रत्यय थयो छे. भगवान् उत्तर कहे छे—‘पंदर प्रकारनो प्रयोग छे.’ ते पंदर प्रकार वतावे छे—१ ‘सच्चमणप्पओगे’ इत्यादि. सत्यमनप्रयोग ‘सत्तु साधुः सत्यः’ सतने साधु-हितकारी होय ते सत्य. सत्-सत्पुणो, मुनिओ अथवा पदार्थो, तेने पटले मुनिओने मुक्तिने प्राप्त करावनार होवाथी हितकारी अने यथार्थ एरूपना चिन्तन वडे पदार्थोने हितकारी ते

लियसरीरकायप्पओगे ९, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे १०, वेडब्बियसरीरकायप्पओगे ११, वेडब्बियमीस-
सरीरकायप्पओगे १२, आहारकसरीरकायप्पओगे १३, आहारगमीससरीरकायप्पओगे १४, कम्मासरीरकाय-
प्पओगे १५ ॥

औदारिकशरीरकायप्रयोग, १० औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ११ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १२ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग, १३
आहारकशरीरकायप्रयोग, १४ आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग, १५ तैजसकर्मणशरीरकायप्रयोग.

सत्य जेमके 'जीव' छे, सद्-असदरूप छे अने शरीरमात्र व्यापी छे' इत्यादिरूपे यथार्थ वस्तुद्विचिन्तन करनार सत्य मन, तेनो प्रयोग
-व्यापार ते सत्यमन प्रयोग ३ 'असद्यमणप्पओगे' सत्यधी विपरीत ते असत्य, जेमके 'जीव' नथी, अथवा एकान्त सत् छे' इत्यादि
कुविकल्प करनार मन, तेनो प्रयोग-ध्यापार ते असत्यमन-प्रयोग ३ 'सच्चामोसमणप्पओगे' सत्यमृषा-सत्यासत्य, जेमके घब, खेर
अने पलाशादि घटे मिश्र घणा अशोक घृक्षो छवा 'आ अशोकवन छे' पघो विकल्प करवामा तत्पर ते सत्यमृषामन-प्रयोग, तेमां
केटलापक अशोकघृक्षो होवाथी सत्य छे, अने पीजा पण घब, खेर घगेरे झाडो होवाथी असत्य छे. ए प्रमाणे व्यवहाराअयना मतधी
कहेयाय छे, पण वास्तविक रीते तो आ असत्यअ छे, कारण के जेवी रीते चिंतवेळ छे तेवा प्रकारा अर्थनो अभाव छे ४ 'अस
धामोसमणप्पओगे' जे सत्य नथी तेम असत्य पण नथी ते असत्यामृषा, अहाँ विप्रतिपत्ति-मतमेव होय त्यारे पवार्थने
स्थापन करवानी बुद्धिथी सर्वकना मतने अनुसारे विचार कराय, जेम के 'जीव' छे, अने ते सद्-असत्सरूप छे' ते आराधक होवाथी
सत्य छे मतमेव होय त्यारे वस्तुने स्थापन करवानी बुद्धिथी सर्वकना मतधी विकल्प प्रतिकूलणने विचाराय, जेमके 'जीव' नथी,
अथवा ते एकान्त नित्य अथवा अनित्य छे' इत्यादि विराधक होवाथी असत्य छे अने जे वस्तुने स्थापन करवानी इच्छा सियाय
सरूपस्थानो विचार करवामां तत्पर होय, जेमके 'दियदत्त ! घट लाध, गायनी याचना कर' इत्यादि चिन्तन करवामा तत्पर ते अस-

त्यामृया. आ स्वरूपमात्रनो विचार करवामां तत्पर होवाथी पूर्वोक्त स्वरूपवाळुं सत्य नथी, कारण के ते आराधक नथी, तेम असत्य पण नथी कारण के विराधक नथी, आ पण व्यवहारनयना मतनी अपेक्षाप जाणवुं. अन्यथा छेतरत्रानी बुद्धिपूर्वक चिन्तन होय तो असत्यमां तेनो समावेश थाय छे. अने ते सिवाय अन्य होय तो तेनो सत्यमां समावेश थाय छे. 'पवं चद्रूपओगोचि चउद्धा' जेम मननो प्रयोग चार प्रकारे कथ्यो तेम वंचनप्रयोग पण चार प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्यवचनप्रयोग, २ मृयावचनप्रयोग, ३ सत्यमृयावचनप्रयोग अने ४ असत्यामृयावचनप्रयोग. आ सत्यवचनादि सत्यमननी पेटे जाणवा. 'ओरालियसरीरकायपओगे' इति. औदारिकशरीरकायप्रयोग-औदारिकादिनो शब्दार्थ आगळ कधीशुं. औदारिक शरीर ज पुद्गलस्कन्धना समुदायरूप होवाथी अने उपचयने प्राप्त थतुं होवाथी काय कहेवाय छे. काय-समुदाय, अथवा वीयते-उपचयने पामे ते काय. तेनो प्रयोग-व्यापार ते औदारिक शरीरकायप्रयोग कहेवाय छे. आ योग पर्याप्ता तिर्यंच अने मनुष्यने होय छे. 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग' इति. कर्मणनी साथे मिश्र थयेल औदारिक ते औदारिकमिश्र कहेवाय छे. प संवन्धे नियुक्तिकारे शस्त्रपरिज्ञा अध्ययनमां कहुं छे के "जोएणं कर्मएणं आहारैइ अणंतरं जीवो । तेणं परं मीसेणं जावं सरीरस्स निष्फत्ती ॥" 'जीव कर्मण योग वडे तुरत आहार करे छे अने तयार पछी मिश्र वडे यावत् शरीरनी उत्पत्ति थाय छे.' (प्र०)—मिश्रपणुं वन्नेमां रहेलुं छे, जेम औदारिक कर्मणनी साथे मिश्र थयेल छे, तेम कर्मण पण औदारिकनी साथे मिश्र थयेल छे, तो शा हेतुथी औदारिकमिश्र कहेवाय छे, पण कर्मणमिश्र कहेवातुं नथी? (उ०)—शास्त्रमां तेनोज व्यवहार थाय छे के जेथी श्रोताओने वक्ताप कहेवा घारेला अर्थनो स्पष्ट बोध थाय, जो पस न होय तो संवेद होवाथी ते वधा शरीरोमां होय छे. तेथी 'कर्मणमिश्र' पम कहेवाथी न थवाने लीधे श्रोताओने उपकार थतो नथी, कर्मणशरीर संसार पर्यन्त निरन्तर रहेतुं छे के देव नारकोने विवक्षित छे? तेथी उत्पत्तिनी अपेक्षाप औदारिकनुं प्रधानपणुं होवाथी अने कदाचित् होवाथी विवक्षित अर्थनो स्पष्ट बोध थवा माटे औदारिक वडे 'औदारिकमिश्र' पत्रो व्यवहार थाय छे. तथा ज्यारे वैकियलब्धिपुक्त औदारिकशरीरवाळा

मनुष्य, निर्दोष पंचेन्द्रिय के पर्याप्त वादर वायुकायिक धैक्रियशरीर करे छे त्वारे ते औदारिकशरीरप्रयोगमां ज यतंतो आत्मप्रवेशोने चित्सादी धैक्रिय शरीरयोग्य पुत्रलो प्रहण करी ज्या सुधी धैक्रिय शरीरपर्याप्ति पूर्ण न करे त्वा सुधी जो के औदारिकनी धैक्रियनी साथे मिश्रता बन्नेमां रहेली छे तो एण औदारिक प्रारंभ करलाट होयाथी प्रधान छे, माटे 'औदारिकमिथ' एषो व्ययहार धाय छे, एण 'धैक्रियमिथ' एषो व्ययहार धतो नयो तथा ज्वारे कोर आहारकलम्बिघालो चौत्र पूर्वधर आहारक शरीर करे छे त्वारे जो के आहारक साथे औदारिकनु मिश्रणु बन्नेमां रहेलु छे, तो एण औदारिक आरंभक होयाथी प्रधान छे, तेथी ते घडे 'औदारिकमिथ' एषो व्यय हार धाय छे, परन्तु आहारक घडे धतो नधी औदारिकमिथशरीरकायनो प्रयोग-ध्यापार ते औदारिकमिथशरीरकायप्रयोग 'धैक्रिय शरीरकायप्रयोग'—धैक्रियशरीर पर्याप्ति घडे पर्याप्ताने धैक्रियशरीरकायप्रयोग होय छे, धैक्रियमिथशरीरकायप्रयोग घेय नारकोने अपर्याप्तपस्थामा होय छे त्वां मिश्रणु कर्मणनी साथे जाणु अही आरंभ-पूर्वपक्ष अने परिहार-समाधान एण पूर्वनी पेटे जाणु ज्वारे मनुष्य, निर्दोष पंचेन्द्रिय के वायुकायिक धैक्रिय शरीर करी पोतानु कार्य समाप्त करी धैक्रियशरीरलो त्याग करता औदारिक शरीरने विषे प्रवेश करवानो प्रयत्न करे, त्वारे ते धैक्रियशरीरना बलथी औदारिक प्रहण करवाने प्रयत्न छे, माटे अही धैक्रियनु प्रयत्नणु होयाथी धैक्रियबडे 'धैक्रियमिथ' एषो व्ययहार धाय छे, एण औदारिक घडे धतो नधी 'आहारकशरीरकायप्रयोग' आहारक शरीरपर्याप्तिबडे पर्याप्ताने होय छे आहारकमिथशरीरकायप्रयोग अहारकथी औदारिकमां प्रवेश करतां होय छे तापर्यं आ छे—ज्वारे आहारकशरीरी शर पोतानु कार्य करी फरीयो औदारिकशरीर प्रहण करे छे त्वारे जो के मिश्रणु बन्नेमा रहेलु छे, तो एण आदा रकना सामर्थ्यथी औदारिकमां प्रवेश धाय छे माटे आहारकनु प्रधानणु होयाथी ते घडे 'आहारकमिथ' एषो व्ययहार धाय छे, एण औदारिक घडे धतो नधी आ निबन्तना भूमिप्रायशो कणु छे कर्मप्रान्तिको धैक्रियना प्रारंभकाले अने तेने त्याग करवाला समये धैक्रियमिथ अने आहारकना प्रारंभकाले अने तेने छोडवाना समये आहारकमिथ होय छे अने कोर एण अवस्थामां औदारिकमिथ नधी एम माने छे नेजमकर्मणशरीरप्रयोग विप्रहणगतिमा अने समुद्रघातनी अवस्थामां सयोगी केनलीने ग्रीजा, चौथा अने पाचमा

२. जीवाणं भंते ! कतिविधे पओगे पणत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविधे पणत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे, जाव कम्मासरीरकायप्पओगे । नेरइयाणं भंते ! कतिविधे पओगे पणत्ते ? गोयमा ! एक्कारसविधे पओगे पणत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे, जाव असच्चामोसवयप्पओगे, वेडव्वियसरीरकायप्पओगे, वेडव्वियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे । एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं । पुढविकाइयाणं पुच्छा । गोयमा ! तिविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मा-

२. हे भगवन् ! जीवोने केटला प्रकारना प्रयोग होय छे ? हे गौतम ! पंदर प्रकारना प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोग, यावत्-कर्मणशरीरकायप्रयोग. हे भगवन् ! नैरथिकोने केटला प्रकारना प्रयोग होय छे ? हे गौतम ! अगियार प्रकारना प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्य मनःप्रयोग, यावत् ८ असत्यामृपा वचनप्रयोग, ९ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १० वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग अने ११ कर्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे असुरकुमारी मांडी स्तनितकुमारी सुधी जाण्ठुं. पृथिवीकायिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने त्रण प्रकारनो प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ औदारिकशरीरकायप्रयोग, २ औदारिकमिश्र-

समये होय छे. अहीं तेजस कर्मणली साथे नियत सहचारी छे माटे तेजसकर्मण्ठुं साथे ग्रहण करेळुं छे.

२. आ पंदर प्रयोगोनी जीवादि स्थानोमां विचार करला सूत्रकार कहे छे—'जीवाणं भंते ! कतिविधे पओगे पन्नत्ते' ? हे भगवन् ! जीवोने केटला प्रकारनो प्रयोग होय छे वगेरे. तेमां जीवपदमां पंदरे प्रयोगो होय छे. कारण के भिन्नभिन्न जीवोनी अपेक्षाय हमेशां पंदरे प्रयोगो प्राप्त थाय छे. नैरथिकपदमां अगियाद प्रयोगो होय छे, कारण के तेओने औदारिक, औदारिकमिश्र, आहारक अने

शरीरकायप्पओगे य । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, णवर वाउकाइयाणं पञ्चविहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—ओरा-
लियकायप्पओगे, ओरालियमीससरीरकायप्पओगे य, वेउव्विए दुविधे, कम्मासरीरकायप्पओगे य । वेइदियाणं
पुच्छा । गोयमा ! चउव्विहे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—असचामोसवइप्पओगे, ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरा-
लियमिससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे । एवं जाव चउरिंदियाणं । पंचिवियतिरिक्खजोणियाणं
पुच्छा । गोयमा ! तेरसविधे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सचमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सचामोसमणप्पओगे,

शरीरकायप्रयोग, अने ३ कर्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे वनस्पतिकायिको सुधी जाणवु. परन्तु वायुकायिकोने पाच प्रकारनो
प्रयोग होय छे—१ औदारिकशरीरकायप्रयोग, २ औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ३-४ वैक्रिय वे प्रकारनो प्रयोग अने ५ कर्म-
णशरीरकायप्रयोग. वेइन्द्रियो सबन्धे पृच्छा. तेओने चार प्रकारनो प्रयोग होय छे. ते आ प्रमाणे—१ असत्यामुपा वचनप्रयोग, २
औदारिकशरीरकायप्रयोग, ३ औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग अने ४ कर्मणशरीरकायप्रयोग. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुधी जाणवु.
पंचेन्द्रिय तियंचयोनिओ सबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेने तेर प्रकारनो प्रयोग कसो छे. ते आ प्रमाणे—१ सत्य मनःप्रयोग, २ मृपा मन -

आहारकमिथ ५ चार प्रयोगनो असभव छे ५ प्रमाणे यथा भयनपथि, व्यन्तरो, ज्योतिविक अने धेमानिकोमा विचार करवो वायु-
काय सिपायना पृथिवीकायादि पकेन्द्रियोमा प्रत्येकने षण षण प्रयोग होय छे—१ औदारिक, २ औदारिकमिथ अने ३ कर्मण
वायुकायिकोमा षाच प्रयोगो होय छे, कारण के वैक्रिय अने धेत्रियमिथनो षण तेओने समय छे वेन्द्रिय, तेन्द्रिय अने चउरि-
न्द्रियोमा प्रत्येकने चार चार प्रयोग होय छे—१ औदारिक, २ औदारिकमिथ, ३ कर्मण अने ४ असत्यामुपा मापा पाकीनी सत्यादि

असच्चात्मोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगेवि, ओरालियसीससरीरकायप्पओगे, ओरालियसीससरीरकायप्पओगे, वेड-
ब्वियसरीरकायप्पओगे, वेडब्वियमीससरीरकायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे । मणूस्राणं पुब्बहा । गोयमा ।
पणरसविधे पओगे पन्नत्ते, तंजहा—सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे । चाणंगंतरजोइसियवेमाणि-
याणं जहा नेरइयाणं ।

३. जीवा णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी, जाव किं कम्मसरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! जीवा सब्बेवि ताव होल्ल स-
च्चमणप्पओगीवि जाव वेडब्वियमीससरीरकायप्पओगीवि कम्मासरीरकायप्पओगीवि ? ३ । अह्वेगे य आहारगस-

प्रयोग, ३ सत्यमृषा मनःप्रयोग, ४ असत्यामृषा मनःप्रयोग, ८ ए प्रमाणे वचनप्रयोग पण समजवो, ९ औदारिकशरीरकायप्रयोग,
१० औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ११ वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १२ वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग अने १३ कर्मणशरीरकायप्रयोग।
मनुष्यो संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! तेओने पंदर प्रकारनो प्रयोग होय छे. व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिकने नैरथिकोनी पेठे जाणवुं.

३. हे भगवन् ! शुं जीवो सत्यमनप्रयोगवाळा छे के यावत्-कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय छे ? हे गौतम ! सर्वे जीवो सत्यमन-

भागानो तेओने संभव नथी. कारण के 'चिगलेखु असच्चमोसेव' विकलेन्द्रियोमां एक असत्यामृषा भाषा होय छे-एखुं शाखुं वचन छे.
पंचेन्द्रिय तिर्यचोने तेर प्रयोगो होय छे, कारण के तेओने चौद पूर्वना धाननो असंभव होवाथी आहारक अने आहारकमिश्रप्रयोग
नथी. मनुष्योने विधे पंदरे योगो होय छे, कारण के मनुष्योने सर्व भावोने संभव छे.

३. ह्ये जीवादि पदोमां नियत प्रयोगोने विचार करता सूत्रकार कहे छे—'जीवा णं भंते'-हे भगवन् ! जीवो शुं सत्यमनप्रयो-

गिणो य २, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगभीसासरीरकायप्पओगी य ३, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगभीसासरीरकायप्पओगिणो य ४, एण जीवाणं अट्ट १ ।

४. नेरइया णं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मसरीरकायप्पओगी ११ ? गोयमा ! नेरइया सन्वेचि ताव हेज्जा सच्चमणप्पओगीवि जाव वेउन्वियमीसासरीरकायप्पओगीवि, अह्वेगे य कम्मसरीरकायप्पओगी प्रयोगवाळा होय, २ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगी होय, ४ अथवा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे जीवने आश्रयी आठ भांगा जाणवा.

४. हे भगवन् ! नैरयिको शुं सत्यमनप्रयोगवाळा यावत् कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! वधा नैरयिको सत्यमन-प्रयोगवाळा यावत् वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय, अथवा एक नैरयिक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा केट-के पांच होय छे. अने उत्कृष्ट एक साथे सहस्रपृथग्त्त्व दोष छे, तेथी ज्यारे आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने आहारकमिश्रशरीरका-यप्रयोगवाळो एक पण न होय त्यारे ते वे प्रयोग सिवाय बहुवचनयुक्त तेर पदनो प्रथम भंग थाय छे. कारण के तेरे पदोनुं पण द्दमेशां बहुपणुज होय छे. ज्यारे एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय छे, त्यारे चीजो भांगो घटे छे. तेओ पण ज्यारे घणां होय त्यारे चीजो भांगो. ए प्रमाणे ज आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपद् घटे पण ते भांगा थाय छे. एम एकना योगमां चार भांगाओ थया. द्विकसंयोगमां पण प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचन वडे चार भांगाओ, एम सर्व संख्यावडे जीवपदने आश्रयी नव भांगाओ थाय छे.

४. नैरयिकपदमां सत्यमनप्रयोगवाळाथी आरंभी वैक्रियमिश्रकायप्रयोगवाळा पर्यन्त दश पदो द्दमेशां बहुवचन वडे रहेलां छे, तेथी ए प्रथम

य ? अहंवेने य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य २, एवं असुरकुमारायि, जाघ थणियकुमाराणं । पुढचिकाइया णं भंते । किं ओरालियसरीरकायप्पओगी ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा । पुढचिकाइया ओरालियसरीरकायप्पओगीचि ओरालियमीससरीरकायप्पओगीचि कम्मासरीरकायप्पओगीचि,

लागक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे असुकुमार यावत् स्तनितकुमारोने चाणबु. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शु औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा के कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! पृथिवीकायिको औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय. ए प्रमाणे वनस्पति-

भग (प्र०)—वैश्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा इमेशां केम होय ? कारण के नरकगतिनो याट मुहूर्तनो उपपात विरहफाळ छे (३०)—आ उत्तरवैश्रियनी अपेक्षाप फाटु छे ते आ प्रमाणे-यद्यपि याट मुहूर्तनो गतिमा उपपात विरहफाळ होय छे, तो पण ते समये पण उत्तर वैश्रियशरीरनो आरंभ करलाप समये छे अने उत्तर वैश्रियना प्रारंभमा भयधारणीय वैश्रिय पडे मिश्र थाय छे, कारण के वैश्रिय शरीरना सामर्थ्यथी उत्तर वैश्रियनो आरंभ करे छे भयधारणीय शरीरना प्रवेशमा पण उत्तर वैश्रिय पडे मिश्र थाय छे, कारण के उत्तर वैश्रियना बलथी भयधारणीय शरीरना प्रवेश करे छे, तेथीज उत्तर वैश्रियनी अपेक्षाप भयधारणीय अने उत्तर वैश्रियना मिश्रनो समय होवाथी ते समये पण वैश्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा वैश्रियको होय छे कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो वैश्रियक कवा चित् एक पण न होय, कारण के याट मुहूर्तनो गतिमा उपपात विरहफाळ होय छे ज्यारे होय छे त्यारे पण जयन्थी एक वे अने उत्तरवैश्रिय अलंब्यता होय छे, तेथी ज्यारे कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो एक पण न होय त्यारे प्रथम भग, ज्यारे एक होय त्यारे गीजो भग, ज्यारे पणा होय त्यारे श्रीजो भग पथी अही त्रण भागाओ भवसपति, व्यतर, ज्योतिषिक अने धैमानिकमा विचारया पृथिवी, पाणी,

एवं जाव वणप्फइकाइयाणं । णवरं वाउक्काइया वेउब्बियसरीरकायप्पओगीचि वेउब्बियमीसासरीरकायप्पओगीचि । वेइंदियाणं भंते ! किं ओरालियसरीरकायप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्पओगी ? गोयमा ! वेइन्दिया सन्वेचि ताव होब्जा असच्चामोसवइप्पओगीचि ओरालियसरीरकायप्पओगीचि ओरालियमीससरीरकायप्पओगी-

कायिको सुधी जाणुं. परंतु वायुकायिको वैक्रियशरीरकायप्रयोगवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय छे. हे भगवन् ! वेइन्द्रियो शुं औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! त्रधा वेइन्द्रियो असत्याप्त्यावचनप्रयोगवाळा, औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय छे. ? कार्मणकायप्रयोगमां अ-

अग्नि, वायु अने वनस्पतिओमां औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण इमेशां घणां होय छे, माटे प्रत्येकने त्रणे पद्दोना वायुवचनरूप एकज भांगो होय छे. वायुकायिकोमां औदारिकद्विक, वैक्रियद्विक, अने कार्मणशरीर प पांच पद्दना बहुवचनरूप एक भांगो होय छे, कारण के तेओमां वैक्रियमिश्रशरीरवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरवाळा इमेशां घणा होय छे. वेइन्द्रियोमां जो के अन्तर्मुहूर्तनो उपपातचिराद् काळ छे, तो पण उपपातचिराद्काळं अन्तर्मुहूर्त नांनुं छे अने औदारिकमिश्रं अन्तर्मुहूर्तं घणुं मोडुं छे, माटे तेमां औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण इमेशां होय छे. कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो तो कदाचित् एक पण न होय, कारण के तेओनो उपपातचिराद्काळ अन्तर्मुहूर्तनो होय छे. ज्यारे ते होय छे त्यारे जघन्यथी एक वे अने उत्कर्षथी असंख्याता होय छे, तेथी ज्यारे एक पण कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो न होय त्यारे प्रथम भंग, ज्यारे एक कार्मणशरीरी होय त्यारे बीजो भंग, अने ज्यारे घणा होय त्यारे बीजो भांगो होय छे. प प्रमाणे तेइन्द्रिय अने नउरिन्द्रिय ने विषे विचारुं. 'पंचिन्द्रियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया' इत्यादि. जेम नैरियको संयन्धे काणुं तेम पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको संयन्धे कहेणुं, परन्तु वैक्रिय अने

वि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगीवि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य, एवं जाय चउरिंविद्यावि।
पंचविधितिरिफ्लजोगिया जहा नेरइया, नवर ओरालियसरीरकायप्पओगीवि, ओरालियभीसासरीरकायप्पओ-
गीवि, अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगी य अहवेगे य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य ।

यवा एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय, २ अयना केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय. ए प्रमाणे चउरिन्त्रियो
शुधी ज्ञाणु. पचेन्त्रिय तिर्येचो नेरयिकोनी पेठे समजवा. परन्तु तेओ औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने औदारिकमिश्रशरीरकाय-
प्रयोगवाळा पण होय. १ कर्मणकायप्रयोगमां-अथवा एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय, अथवा केटलाएक कर्मणशरीरकाय-
प्रयोगवाळा पण होय.

धेजियमिधशरीरकायप्रयोगवाळाने स्थाने भौतिक अने भौतिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा कहेया, तात्पर्य ए छे के १ सत्यमन-
प्रयोगवाळा, दायन् ८ असत्यामृत्युशवचनप्रयोगवाळा, ९ भौतिकशरीरकायप्रयोगवाळा अने पडी १० भौतिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा
होय-एम कहेयु ए दस पदो हमेशां बहुयचन यठे भयस्थित छे जो के तिर्येच पचेन्द्रियोने उपपातयिरहकाळ अन्तमुहर्तने छे, तो
पण उपपातयिरहकाळनु अन्तमुहर्तने नावु छे, भौतिकमिधनु अन्तमुहर्तने यशु भोट्ट छे, माटे अर्धी पण औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग-
वाळा मदा होय छे जे चार मुहर्तने उपपातयिरहकाळ कस्यो छे ते गर्भज पचेन्द्रिय तिर्येचोने आधयी समजयो, पण सामान्य ति-
र्येचोनी भयेसाप न जाणयो कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो तो तिर्येच पचेन्द्रियोमां पण कश्चित् एक पण न होय, कारण के
तेगोने उपपातयिरहकाळ अन्तमुहर्तने छे तेथी ज्यारे एक पण कर्मणशरीरी न होय त्यारे प्रथम भग, ज्यारे एक प्रोय त्यारे बीजो
भग, अने ज्यारे दणा होय त्यारे बीजो भग होय छे. मनुष्योमां चार मनना, चार घचनना, भौतिक अने धेजियदिकरूप अगियार

५. मणूसाणं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मसासीरकायप्पओगी ? गोयमा ! मणूसा सञ्चेवि ताव

५. हे भगवन् ! मनुष्यो शुं सत्यमनप्रयोगवाळा यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय ? हे गौतम ! वधा मनुष्यो सत्यमन-

पदो हमेशां बहुवचनयुक्त होय छे. (प्र०)—वैक्रियमिश्रशरीरवाळा हमेशां केम होय ? (उ०)—विद्याधरनी अपेक्षाप होय छे. जेमके—
विद्याधरो अने ते सिवाय बीजा केटलाएक मिथ्यादृष्टि वगैरे वैक्रियलब्धवाळा अन्य अभिप्राय वडे हमेशां विकुर्वणा करता
होय छे. आ संबन्धे मूलटीकाकार कहे छे—“मनुष्या वैक्रियमिश्रशरीरप्रयोगिणः, सर्वैव विद्याधरदीनां विकुर्वणाभावाद्” इति—मनुष्यो
वैक्रियमिश्रशरीरप्रयोगवाळा होय छे, कारण के विद्याधरदिने हमेशां विकुर्वणा होय छे. औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने
कार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा कदाचित् सर्वथा होता नथी, कारण के तेओने वार मुहूर्तनो उपपातविरहकाल होय छे. आहारकशरीर-
वाळा अने आहारकमिश्रशरीरवाळा कदाचित् होय छे-ए पूर्वे कह्युं छे. तेथी औदारिकमिश्रदिना अभावमां अगियार पदना बहुवचन-
रूप एक भांगो थाय छे. त्यार पछी औदारिकमिश्रपदने आश्रयी एकवचन अने बहुवचन वडे बे भांगा, ए प्रमाणे आहारकपद वडे
बे भांगा, आहारकमिश्रपद वडे बे भांगा अने कार्मणपद वडे बे भांगा-एम एक एक संयोगवडे आठ भांगा थाय छे. द्विकसंयोगमां
प्रत्येकना एकवचन अने बहुवचन वडे औदारिकमिश्र अने आहारकपदना चार भांगा, ए प्रमाणे ज औदारिकमिश्र अने आहारकमिश्र-
पदना चार भांगा, औदारिकमिश्र अने कार्मणना चार भांगा, आहारक अने आहारकमिश्रना चार भांगा, आहारक अने कार्मणना चार
भांगा, आहारकमिश्र अने कार्मणना चार भांगा-एम वधा मळी द्विकसंयोगमां चोवीश भांगा थाय छे. त्रिकसंयोगमां औदारिकमिश्र,
आहारक अने आहारकमिश्रपदना एकवचन अने बहुवचन वडे आठ भांगा थाय छे. औदारिकमिश्र, आहारक अने कार्मणना आठ भांगा,
औदारिकमिश्र, आहारकमिश्र अने कार्मणना आठ भांगा, अने आहारक, आहारकमिश्र अने कार्मणना आठ भांगा-एम वधा मळी त्रिक-
संयोगी वत्रीश भांगा थाय छे. औदारिकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र अने कार्मण-ए चार पदोना एकवचन अने बहुवचन वडे सोळ
भांगा थाय छे. अने सर्वे मळीने वंशी भांगा थाय छे.

होत्रा सचमण्यजोगीचि, जाव ओरालियसरीरकायप्यजोगीचि, वेडब्बियसरीरकायप्यजोगीचि, वेडब्बियभीस-
सरीरकायप्यजोगी य, अह्वेगे य ओरालियभीसासरीरकायप्यजोगी य, अह्वेगे य ओरालियभीसासरीरकाय-
प्यजोगिणो य २, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्यजोगी य, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्यजोगिणो य २,
अह्वेगे य आहारगमीसासरीरकायप्यजोगी य, अह्वेगे य आहारगमीसासरीरकायप्यजोगिणो य २, अह्वेगे
य कम्मगसरीरकायप्यजोगी य, अह्वेगे य कम्मगसरीरकायप्यजोगिणो य २, एते अट्ट भंगा पत्तेय। अह्वेगे य
ओरालियभीससरीरकायप्यजोगी य आहारगसरीरकायप्यजोगी य १, अह्वेगे य ओरालियभीसासरीरकायप्य-
जोगी य आहारगसरीरकायप्यजोगिणो य २, अह्वेगे य ओरालियभीसासरीरकायप्यजोगिणो य आहारगमी-

प्रयोगवाळा, याव् औदारिकशरीरकायप्रयोगवाळा, वैक्रियशरीरकायप्रयोगवाळा अने वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा पण होय,
१ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा कंटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक
आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ४ अथवा कंटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ५ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकाय-
प्रयोगवाळो, ६ अथवा कंटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ७ अथवा एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा
कंटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे एक सयोगना आठ भागाचो थाय छे. अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगना-
ळो अने एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने कंटलाएक आहारकशरीरकाय-
प्रयोगवाळा होय. ३ अथवा कंटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४

सासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य ४ एवं एते चत्तारि भंगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य २, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ४ चत्तारि भंगा, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य २, अहवेगे ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ३, अहवेगे ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगी य ४ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे ए चार भांगाओ थया. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ४ अथवा केटलाएक औदारिकमि-

નિયમીસાસરીરકાયપ્પઓગિણો ય કમ્માસરીરકાયપ્પઓગિણો ય ૪ एते चत्तारि भंगा, अहवेगे य आहारगस-
रीरकાયप્पઓગી य आहारगमीसासरीरकायप्पઓगी य १, अहवेगेय आहारगसरीरकायप्पઓगી य आहारगमी-
सामरीरकायप्पઓगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकायप्पઓगिणो य आहारगमीसासरीरकાયप્पઓगી य
३, अहवेगे य आहारगसरीरकાયप્पઓगिणो य आहारगमीसासरीरकાયप્पઓगिणो य ४ चत्तारि भंगा, अहवेगे
य आहारगसरीरकાયप્पઓगी य कम्मगसरीरकાયप્पઓगી य १, अहवेगे व आहारगसरीरकાયप્पઓगી य कम्मा-
सरीरकાયप્पઓगिणो य २, अहवेगे य आहारगसरीरकાયप્पઓगिणो य कम्माસરીરકાયપ્પઓગી य ३, अहवेगे
य आहारगसरीरकાયप્पઓगिणो य कम्माસरीरकાયप્पઓगिणो य ४ चउरो भङ्गा, अहवेगे य आहारगमीसा-

શ્રવરીરકાયપ્રયોગવાલા અને કેટલાએક કાર્મણશરીરકાયપ્રયોગવાલા હોય. એમ ચાર ભાંગા યાય છે. ૧ અથવા એક આહારકશરીરકાય-
પ્રયોગવાલો અને એક આહારકમિશ્રવરીરકાયપ્રયોગવાલો હોય. ૨ અથવા એક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલો અને કેટલાએક આહા-
રકમિશ્રવરીરકાયપ્રયોગવાલા હોય. ૩ અથવા કેટલાએક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલા અને એક આહારકમિશ્રવરીરકાયપ્રયોગવાલો
હોય. ૪ અથવા કેટલાએક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલા અને કેટલાએક આહારકમિશ્રવરીરકાયપ્રયોગવાલા હોય. એ ચાર ભાંગા
યાય છે. ૧ અથવા એક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલો અને એક કાર્મણશરીરકાયપ્રયોગવાલો હોય. ૨ અથવા એક આહારકશરીરકાય-
પ્રયોગવાલો અને કેટલાએક કાર્મણશરીરકાયપ્રયોગવાલા હોય. ૩ અથવા કેટલાએક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલા અને એક કાર્મણશ્ર-
રીરકાયપ્રયોગવાલો હોય. ૪ અથવા કેટલાએક આહારકશરીરકાયપ્રયોગવાલા અને કેટલાએક કાર્મણશરીરકાયપ્રયોગવાલા હોય છે. એ

सरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य १, अह्वेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मसासरीरकायप्पओगिणो य २, अह्वेगे य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य ४ चउरो भङ्गा, एवं चउब्बीसं भङ्गा । अह्वेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य १, अह्वेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य २, अह्वेगे य ओरालियमीसगसरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य ३, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरका-

चार भांगा थाय छे. १ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. एम चार भांगाओ थाय छे. ए प्रमाणे चोवीश भांगाओ थया. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो, केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवा-

यत्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायत्पओगिणो य ४, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायत्पओगिणो य
 आहारगसरीरकायत्पओगी य आहारगमीसासरीरकायत्पओगी य ५, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायत्प-
 ओगिणो य आहारगसरीरकायत्पओगी य आहारगमीसासरीरकायत्पओगिणो य ६ अह्वेगे य ओरालियमी-
 सासरीरकायत्पओगिणो य आहारगसरीरकायत्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायत्पओगी य ७, अह्वेगे
 य ओरालियमीसासरीरकायत्पओगिणो य आहारकसरीरकायत्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायत्पओगि-
 णो य ८ एते अट्ट भगा, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायत्पओगी य आहारगसरीरकायत्पओगी य कम्म-
 गसरीरकायत्पओगी य १, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायत्पओगी य आहारगसरीरकायत्पओगी य कम्म-
 वाळो होय. ४ अथवा एक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारक-
 मिथशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने
 एक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो होय, अथवा केटलाएक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो
 अने केटलाएक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहा-
 रकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो होय, ८ अथवा केटलाएक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा,
 केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए आठ मागा थाय छे. १ अथवा
 एक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कर्मगशरीरकायप्रयोगवाळो होय, २ अथवा

गसरीरकायप्पओगिणो य २, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य
कम्मगसरीरकायप्पओगी य ३, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगिणो
य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ४, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्प-
ओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ५, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरका-
यप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ६, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारग-
सरीरकायप्पओगिणो य कम्मगसरीरकायप्पओगी य ७, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य

एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ३
अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय,
४ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोग-
वाळा होय. ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा, एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कर्मणशरीरकाय-
प्रयोगवाळो होय, ६ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटला एक कर्म-
णशरीरकायप्रयोगवाळा होय, ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा
अने एक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकाय-
प्रयोगवाळा अने केटलाएक कर्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे आठ भांगा थाय छे. १ अथवा एक औदारिकमिश्रशरीरकाय-

आहारगसरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ८, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्य-
 ओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मगसरीरकायप्यओगी य १, अहवेगे य ओरालियमीसासरीर-
 कायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य २, अहवेगे य ओरालिय-
 मीसासरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगी य ३, अहवेगे य
 ओरालियमीसासरीरकायप्यओगी य आहारगमीसासरीरकायप्यओगिणो य कम्मगसरीरकायप्यओगिणो य ४,
 अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्मगसरीरकायप्य-
 ओगिणो य ५, अहवेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्यओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्यओगी य कम्म-

प्रयोगवालो एक आहारकमिश्ररीरकायप्रयोगवालो होय. २ अथवा एक औदारिकमिश्रशरी-
 रकायप्रयोगवालो एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो अने केटलाएक फार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक औदारिक-
 मिश्रशरीरकायप्रयोगवालो, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक फार्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ४ अथवा एक
 औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवालो, केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक फार्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय.
 ५ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक फार्मणशरीरकायप्रयो-
 गवाळो होय. ६ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक फार्म-
 णशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ७ अथवा केटलाएक औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगवाळा

गिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मासरीरकायप्पओगी य ५, अह्वेगे य आहारगसरीरकायप्प-
ओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगी य कम्मगसरीरकायप्पओगिणो य ६, अह्वेगे य आहारगसरीर-
कायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मसरीरकायप्पओगी य ७, अह्वेगे य आहार-
गसरीरकायप्पओगिणो य आहारगमीसासरीरकायप्पओगिणो य कम्मसरीरकायप्पओगिणो य ८ । एव एए
त्तियसजोणं चत्तारि अट्ट भगा, सन्वेवि भिलिता यत्तीस भंगा जगित्तव्या ३३ । अह्वेगे य ओरालियमिस्ता-
सरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगभीसासरीरकायप्पओगी य कम्मामरीरकायप्प-
ओगी य १, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगी य आहारगसरीरकायप्पओगी य आहारगभीसास-

प्रयोगवाळा एक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक काम्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. अथवा केटलाएक आहारक-
शरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक काम्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. ८ अथवा केटलाएक
आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक काम्मणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे
त्रिकसयोग वडे चार प्रकारे आठ भांगा याय छे यथा मळीने यत्रीश भागा जाणवा. १ अथवा एक औदारिकमिथशरीरकायप्रयो-
गवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक काम्मणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. २ अथवा
एक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक काम्म-
णशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ३ अथवा एक औदारिकमिथशरीरकायप्रयोगवाळो एक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळो केटलाएक आहारक-

यप्पओगिणो य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १२, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य १३, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य १४, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणी य कम्मासरीरकायप्पओगिणो य १४, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य १५, अह्वेगे य ओरालियमीसासरीरकायप्पओगिणो य आहारगसरीरकायप्पओगिणो य १६ एवं एते चउसंजोएणं सोलस भंगा भवंति,सन्वेडवि य णं संपिडिया असीति भंगा

कमिशरीरकायप्रयोगवाळो अने एक कामणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १४ अथवा केटलाएक औदारिकमिशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा एक आहारमिशरीरकायप्रयोगवाळो अने केटलाएक कामणशरीरकायप्रयोगवाळा होय. १५ अथवा केटलाएक औदारिकमिशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा, केटलाएक आहारकमिशरीरकायप्रयोगवाळा अने एक कामणशरीरकायप्रयोगवाळो होय. १६ अथवा केटलाएक औदारिकमिशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक आहारकशरीरकायप्रयोगवाळा केटलाएक कामणशरीरकायप्रयोगवाळा अने केटलाएक आहारकमिशरीरकायप्रयोगवाळा होय. ए प्रमाणे आ चतुःसंयोगी सोळ भांगा थया. वधा एकठा करीए एटले मनुष्यो संबन्धे एंशी भांगा थाय छे. व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिको असुरकुमारोनी पेटे जाणवा.

भवन्ति । वाणमंतरजोइसवेभाणिया जहा असुरकुमारा ।

६ कइविहे ण भंते ! गइप्पवाए पणत्ते ! गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पन्नत्ते, तंजहा-पओगगती १, तत-
गती ३, पंधणछेदणगती ३, उचवायगती ४, विहायगती ५ । से किं तं पओगगती ? पओगगती पण्णरसविहा
पन्नत्ता, तजहा-सचमणप्पओगगती, एव जहा पओगो भणितो तहा एसावि भाणितत्त्वा जाव कम्मगसरी-
रकायप्पओगगती । जीचारणं भंते ! कतिविहा पओगगती पन्नत्ता ? गोयमा ! पण्णरसविहा पन्नत्ता, तंजहा-

६. हे भगवन् ! गतिप्रपात केटला प्रकारनो कबो छे ? हे गौतम ! पांच प्रकारनो गतिप्रपात कबो छे. ते आ प्रकारे— १ प्रयो-
गगति, २ ततगति, ३ बन्धनछेदनगति, ४ उपपातगति, ५ विहायोगति, प्रयोगगति केटला प्रकारनी छे ? प्रयोगगति पंदर
प्रकारनी छे ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोगगति—इत्यादि जेम प्रयोग कबो तेम आ प्रयोगगति पण कहेवी. यावत्-कर्मणश्चरिरका-
यप्रयोगगति सुधी कहेबुं हे भगवन् ! जीविने केटला प्रकारनी प्रयोगगति कही छे ? हे गौतम ! पंदर प्रकारनी कही छे. ते आ

६ प्रयोग कबो, प्रयोगना चरथी जीव अने अजीवनी गति थाय छे, माटे गतिवु निलूपण करवा माटे कहे छे- 'हे भगवन् !
गतिप्रपात केटला प्रकारनो कबो छे' इत्यादि गति-गमन, अथवा प्राप्ति, अने ते वेदान्त-अन्य वेदनी प्राप्ति अथवा पर्यायान्त-अ-
न्य अन्य पर्यायनी प्राप्ति समजधी कारण के घातुनो अर्थ वन्ने अर्थमा घटी शकै छे, अने ते प्रकारे गतिशब्दनो प्रयोग पण वन्ने
अर्थमा देखाय छे जेमके वेचइस क्या गयो ? पाटण गयो धवनमात्रथी आ कोपने प्राप्त धयो आगममा पण वन्ने प्रकारना प्रयोग
मळे छे जेमके 'परमाणु एक समयमा एक लोकान्तथी बीजा लोकान्त सुधी जाय छे, तथा ते ते अध्यवसायान्तपेने प्राप्त थाय छे
गतिनो प्रपात-प्रवृत्ति, पटले क्या क्या अर्थमा गति शब्दनी प्रवृत्ति थाय छे ? भगवान् उत्तर भाये छे- गतिप्रपात पाच प्रकारनो छे-

सच्चमणस्पओगगती, जाव कम्मगसरीरकायस्पओगगती । नेरइयाणं भंते ! कइविहा पओगगती पन्नत्ता ? गो-
यमा ! एक्कारसविहा पन्नत्ता, तंजहा-सच्चमणस्पओगगती, एवं उवउज्जिऊण जरस जतिविहा तस्स तत्तिविहा
'भाणितन्वा जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! सच्चमणस्पओगगती, जाव कम्मगसरीरकायस्पओगगती ? गो-
प्रमाणे—सत्यमनःप्रयोगगति, यावत्-कर्मणशरीरकायप्रयोगगति. हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारनी प्रयोगगति होय छे ?
हे गौतम ! अगियार प्रकारनी प्रयोगगति होय छे. ते आ प्रमाणे—सत्यमनप्रयोगगति—इत्यादि ए प्रमाणे उपपयोग-ध्यान आपी
जेने जेटला प्रकारनी प्रयोगगति होय तेने तेटला प्रकारनी वैमानिको सुधी कहंवी. हे भगवन् ! जीवो सत्यमनप्रयोगगतिवाळा,
'प्रयोगगति:' इत्यादि. प्रयोग-जीवव्यापार, अने ते पूर्वे पंदर प्रकारनो कथ्यो छे. प्रयोगरूप गति ते प्रयोगगति. अहीं देशान्तरप्राप्तिरूप गति
समजवी, कारण के जीवचडे व्यापृत थयेला सत्य मन चगेरेना पुद्गलो अल्प के अधिक देशान्तर सुधी गमन करे छे. 'ततगति:'
तत-विस्तारवाळी गति ते ततगति. जेमके जे ग्राम के संनिवेश तरफ देवदत्त चगेरेए गमन कर्नु होय अने ते ग्रामादि पर्यन्त हजी
सुधी पहुँच्यो नथी त्यां सुधी मार्गमां एक एक पगलुं मूकतां देशान्तर प्राप्तिरूप गति होय छे, माटे ततगति कहेचाय छे. अहीं गतिनो
विषय विस्तीर्ण होवाथी गतिने तत-विस्तीर्ण विशेषण आपवामां आबुं छे, तेथी आ गति जूदी कही छे. अन्यथा तेनो प्रयोगगतिमां
अन्तर्भाव थाय छे. कारण के पगो चालुं ते शरीरना प्रयोग-व्यापाररूप छे. ए प्रमाणे वीजे स्थळे पण यथासंभव जाणी लेबुं. 'बन्ध-
छेदनगति:' बन्धननो छेद्द थवाथी गति थाय ते. अने ते जीवथी मुक्त शरीरनी के शरीरथी मुक्त जीवनी समजवी. परन्तु कोशना
संबन्धनो विच्छेद्द थवाथी परंडवीजनी गति न जाणवी, कारण के ते विहायोगतिना भेद्द तरीके कहेचामां आवशे. 'उपपातगति:' उप-
पात-प्रादुर्भाव, उत्पत्ति, अने ते क्षेत्र, भव अने नोभवना भेदथी त्रण प्रकारे छे. जेमके क्षेत्रोपपात, भवोपपात अने नोभवोपपात. तेमां
क्षेत्र-आकाश, ज्यां नारकादिं जीवो, सिद्धो अने पुद्गलो रवे छे. भव-कर्मना संबन्धथी उत्पन्न थयेलो नारकादिपर्याय, कारण के 'भव-

यमा ! जीवा सब्धेयि ताव होन्न स्वमणप्पओगगतीयि, एवं त चेय पुब्बवणिणं भाणितब्धं, भग्गा तहेव जाव वेमाणियाण, से तं पओगगती ? ।

७. से किं तं ततगती ? ततगती जे णं जं गामं चा जाव सण्णियेसं चा सपट्ठित्ते असंपत्ते अंतरापहे वट्ठति, से सं ततगती ? ।

८. से किं तं यधणछेदणगती ? यधणछेदणगती जीवो चा सरिराओ सरिर वा जीवाओ, सेत्त यधणछेदणगती ? ।

यावत् कर्मणशरीरकाययोगतिवाळा होय ? हे गौतम ! यथाय जीवो (समुदायनी अपेक्षाए) सस्य मनःप्रयोगगतिवाळा यण होय इत्यादि पूर्वे कहेछं तेज कहेछं, मांगा यण तेमज कहेचा. एम यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे प्रयोगगति कही.

७. हे मगवन् ! ततगति केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेणे गाम यावत् सनिवेश तरफ प्रयाण करुं होय, परन्तु त्या पहोंल्या सिवाय मार्गमां वर्तवो होय ते ततगति. एम ततगति कही

८. वन्धनछेदनगति केवा प्रकारनी छे ? जीव शरीरथी जुदो पडता अने शरीर जीवथी जुदुं पडतां वन्धनछेदनगति थाय छे. एम वन्धनछेदनगति कही.

न्ति अस्मिन्' जेमां कर्मने पण थयेला प्राणीओ उत्पन्न थाय ते 'भय' पथी व्युत्पत्ति थाय छे नोभय-भय रहित, पडले कर्मना सय न्धथी प्राप्त थयेल नारकत्थादिपर्यायपटित ए भावार्थ छे अने तेवा प्रकारना पुद्गल भयथा सिद्ध छे, कारण के वल्ले पूर्वोक्त स्वरूप पाळा भयथी रहित छे ते रुचे उपयात-उपजयारूप गति ते उपयात गति

९. से किं तं उचवायगती ? उचवायगती तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-खेत्तोववायगती, भवोववायगती, नोभवोववायगती । से किं तं खेत्तोववायगती ? खेत्तोववायगती पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-नेरइयखेत्तोववायगती १, तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती २, मणूसखेत्तोववायगती, ३ देवखेत्तोववायगती ४, सिद्धखेत्तोववायगती ५ । से किं तं नेरइयखेत्तोववायगती ? नेरइयखेत्तोववायगती सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा-रणयप्पभापुढविनेरइयखेत्तोववायगती, जाव अथेसत्तमापुढविनेरइयखेत्तोववायगती । से तं नेरइयखेत्तोववायगती १ । से किं तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती ? तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-एगिंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती । से तं तिरिक्खजोणियखेत्तोववायगती २ । से किं तं म-

९. उपपातगति केटला प्रकारनी छे ? उपपातगति त्रण प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—? क्षेत्रोपपातगति, २ भवोपपातगति, ३ नोभवोपपातगति. क्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? क्षेत्रोपपातगति पांच प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—? नेरयिकक्षेत्रोपपातगति, २ तिर्यञ्चयोनिकक्षेत्रोपपातगति, ३ मज्ज्यक्षेत्रोपपातगति, ४ देवक्षेत्रोपपातगति, ५ सिद्धक्षेत्रोपपातगति. नेरयिकक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? सात प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—? रत्नप्रभापृथिवीनेरयिकक्षेत्रोपपातगति, यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीनेरयिकक्षेत्रोपपातगति. एम नेरयिकक्षेत्रोपपातगति कही. तिर्यचयोनिकक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? पांच प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—? एकेन्द्रियतिर्यचयोनिकक्षेत्रोपपातगति, ५ यावत् पंचेन्द्रियतिर्यचयोनिकक्षेत्रोपपातगति. एम तिर्यचयोनिकक्षेत्रोपपातगति कही. मज्ज्यक्षेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? वे प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—संमूच्छिममज्ज्यक्षेत्रोपपातगति अने गर्भज-

णूसलेतोववायगती ? मणूसलेतोववायगती दुविधा पन्नत्ता, तंजहा-संशुच्छिममणूसलेतोववायगती, गम्भवंक-
तियमणूसलेतोववायगती । सेचं मणूसलेतोववायगती ३ । से किं तं देवलेतोववायगती ? देवलेतोववायगती
चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा-भवणवति०, जाव वेमाणियदेवलेतोववायगती । सेत्त देवलेतोववायगती ४ ।

१०. से किं तं सिद्धलेतोववायगती ? सिद्धलेतोववायगती अणेगधिहा पन्नत्ता, तंजहा-जंबुदीवे दीवे भरहे-
रवयवासे सपकिख सपडिदिसि सिद्धलेतोववायगती, जंबुदीवे दीवे शुल्लहिमवंतसिहरिवासहरपव्वतसपकिख
सपडिदिसि सिद्धलेतोववायगती, जंबुदीवे दीवे हेमवतहेरणवाससपकिख सपडिदिसि सिद्धलेतोववायगती,
जंबुदीवे दीवे सधावइचियढावहवट्ठेयडुसपकिख सपडिदिसि सिद्धलेतोववायगती, जंबुदीवे दीवे महाहिमवंत-
रुपिवासहरपव्वतसपकिख सपडिदिसि सिद्धलेतोववायगती, जंबुदीवे दीवे हरिवासरम्मगवाससपकिख सप-
मनुष्यशेत्रोपपातगति एम मनुष्यशेत्रोपपातगति कही. देवशेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे—
१ मवनपतिदेवशेत्रोपपातगति, यावत् वैमानिकदेवशेत्रोपपातगति.

१०. सिद्धशेत्रोपपातगति केटला प्रकारनी छे ? अनेक प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे-जंबुद्वीप नामे द्वीपमां भरत अने ऐरावत क्षेत्रनी
उपर सपक्ष-चारे दिशाए अने सप्रतिदिक्-चारे विदिशामां सिद्धशेत्रोपपातगति कही छे. जंबुद्वीपमां शुल्लहिमवंत अने शिखरी पर्वतनी
उपर चारे दिशाए अने चारे विदिशामां सिद्धशेत्रोपपातगति कही छे. जंबुद्वीपमां हेमवत अने हेरण्यवत क्षेत्रनी उपर चारे दिशाए
अने चारे विदिशामां सिद्धशेत्रोपपातगति कही छे. जंबुद्वीपनामे द्वीपमां शब्दापाती अने विकटापाती इत्थ वैवाढयनी उपर चारे दिशा

खिदिसि सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्वीवे दीवे गंधावातिमालवंतपव्वयवद्वेयडूसपकिंखं सपडिदिसि सिद्धखेत्तो-
ववायगती, जंबुद्वीवे दीवे गिसहणीलवंतवासहरपव्वतसपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्वीवे दीवे
पुव्वविदेहावरविदेहसपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्वीवे दीवे देवकुलुउत्तरकुलुसपकिंख सपडि-
दिसि सिद्धखेत्तोववायगती, जंबुद्वीवे दीवे मंदरपव्वयस्स सपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेत्तोववायगती, लवणे
समुद्वे सपकिंख सपडिदिसि सिद्धखेत्तोववायगती, धायइसंडे दीवे पुरिमद्धपव्वत्थिमद्धमंदरपव्वतसपकिंख स-

अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां महाहिमवंत अने रुक्मी वर्षथर पर्वतनी उपर चारे दिशा
अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां हरिवर्ष अने स्म्यक्वर्षनी उपर चारे दिशा अने चारे
विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां गन्धापाती अने माल्यवंत वृत्त वैताढयनी उपर चारे दिशा अने
चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां निपथ अने नीलवंत वर्षथर पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे
विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां पूर्व विदेह अने पश्चिम विदेहनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां
सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां देवकुरु अने उत्तर कुरुनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति
कही छे. जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मन्दर पर्वतनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. लवणसमुद्रनी
उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. धातकिलंड द्वीपने विपे पूर्वार्धि अने पश्चिमार्धना मेरु पर्वतनी
उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही छे. कालोदसमुद्रनी उपर चारे दिशा अने चारे विदिशामां सिद्धक्षेत्रोप-

પદ્ધિદિસિ સિદ્ધલેત્તોવવાયગતી, કાલોપસદુસપક્લિલ સપદ્ધિદિસિ સિદ્ધલેત્તોવવાયગતી, પુક્કલરવરવીવદ્ધપુર-
તિયમદ્ધમરહેરવયવાસસપક્લિલ સપદ્ધિદિસિ સિદ્ધલેત્તોવવાયગતી, एवं जाव पुक्कलरवरवीवदधपच्छिमदधमंवरप-
ब्बतसपक्लि सपदधिदिसि सिद्धलेत्तोववायगती, से तं सिद्धलेत्तोववायगती ५ ।

૧૧. સે કિં તં મવોવવાયગતી ? મવોવવાયગતી ચડબ્ધિહા પન્નત્તા, તંજહા-નેરઇયમવોવવાયગતી, જાવ દે-
વમવોવવાયગતી । સે કિં તં નેરઇયમવોવવાયગતી ? નેરઇયમવોવવાયગતી સત્તવિહા પન્નત્તા, તંજહા, एवं सि-
द्धयज्जो भेदो भाणितव्वो जो चैव लेत्तोववायगतीए सो चैव, से तं देवमवोववायगती । से तं भवोववायगती ।

૧૨. સે કિં તં નોમવોવવાયગતી ? નોમવોવવાયગતી દુવિહા પન્નત્તા, તંજહા-પોગ્ગલ્લનોમવોવવાયગતી,
પાતગતિ કહી છે. પુક્કલલદ્ધીપાર્થના પૂર્વાર્થના મત્ત અને પેરાવત ક્ષેત્રની ઉપર ચારે દિશા અને ચારે વિદિશામાં સિદ્ધક્ષેત્રોપપાતગતિ
કહી છે. ए प्रमाणे यावत्-पुक्कलरद्वीपार्थना पथिमार्थमां मेरुपर्वतनी उपर चारे दिशा અને ચારે વિદિશામાં સિદ્ધક્ષેત્રોપપાતગતિ કહી
છે. ए प्रमाणे सिद्धक्षेत्रोपपातगति कही છે.

૧૧. મવોવવાયગતિ કેટલા પ્રકારની છે ? મવોવવાયગતિ ચાર પ્રકારની છે. તે આ પ્રમાણે—નૈરયિકમવોવવાયગતિ, યાવત્
દેવમવોવવાયગતિ. નૈરયિકમવોવવાયગતિ કેટલા પ્રકારની છે ? નૈરયિકમવોવવાયગતિ સાત પ્રકારની છે. તે આ પ્રમાણે—ઇત્યાદિ
जे क्षेत्रोपपातगतिनो सिद्ध सिवायनो भेद છે તે અહીં કહેવો. एम देवमवोववायगति कही. ए प्रमाणे भवोववायगति कही.

૧૨. નોમવોવવાયગતિ કેટલા પ્રકારની છે ? તે આ પ્રમાણે—પુદ્ગલનોમવોવવાયગતિ અને સિદ્ધનોમવોવવાયગતિ.

સિદ્ધનો ભવો વચાચગતી । સે કિં તં પોગલનો ભવો વચાચગતી ? પોગલનો ભવો વચાચગતી જણું પરમાણુ પોગલે લોગસસ પુરત્થિમિહ્લાઓ ચરમંતાઓ પચ્ચત્થિમિહ્લં ચરમંતં એગસમણં ગચ્છતિ, પચ્ચત્થિમિહ્લાઓ વા ચરમંતાઓ પુરત્થિમિહ્લં ચરમંતં એગસમણં ગચ્છતિ, દાહિણિહ્લાઓ વા ચરમંતાઓ ઉત્તરિહ્લં ચરમંતં એગસમણં ગચ્છતિ, એવં ઉત્તરિહ્લાઓ દાહિણિહ્લં, ઉવરિહ્લાતો હેટ્ઠિહ્લં, હિટ્ઠિહ્લાઓ ઉવરિહ્લં, સે તં પોગલનો ભવો વચાચગતી ।

૧૩. સે કિં તં સિદ્ધનો ભવો વચાચગતી ? સિદ્ધનો ભવો વચાચગતી હુવિહા પન્નત્તા, તંજહા-અણંતરસિદ્ધનો ભવો વચાચગતી પરંપરસિદ્ધનો ભવો વચાચગતી ચ । સે કિં તં અણંતરસિદ્ધનો ભવો વચાચગતી ? ૨ પળ્ણરસવિહા પન્નત્તા, તંજહા-ત્થિત્થસિદ્ધઅણંતરસિદ્ધનો ભવો વચાચગતી ચ જાવ અણેગસિદ્ધનો ભવો વચાચગતી ચ । સે કિં તં પ-

પુદ્ગલનો ભવો પપાતગતિ કેવા પ્રકારની છે ? પરમાણુપુદ્ગલ જે લોકના પૂર્વના ચરમાન્ત-હેહાથી પશ્ચિમના ચરમાન્ત સુધી એક સમયમાં જાય અને પશ્ચિમના ચરમાન્તથી પૂર્વના ચરમાન્ત સુધી એક સમયમાં જાય, એ પ્રમાણે દક્ષિણના ચરમાન્તથી ઉત્તરના ચરમાન્ત સુધી અને ઉત્તરના ચરમાન્તથી દક્ષિણના ચરમાન્ત સુધી, ઉપરના ચરમાન્તથી નીચેના ચરમાન્ત સુધી અને નીચેના ચરમાન્તથી ઉપરના ચરમાન્ત સુધી જાય તે પુદ્ગલનો ભવો પપાતગતિ કહેવાય છે.

૧૩. સિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ કેટલા પ્રકારની છે ? સિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ વે પ્રકારની છે. તે આ પ્રમાણે—અન્તરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ અને પરંપરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ. અન્તરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ કેટલા પ્રકારની છે ? પંદર પ્રકારની છે. તે આ પ્રમાણે—તીર્થસિદ્ધઅન્તરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ, યાવત્ અનેકસિદ્ધઅન્તરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ. પરંપરસિદ્ધનો ભવો પપાતગતિ કેટલા પ્રકારની

રપરસિદ્ધનોભવોવયાયગતી ? ૨ અંગેગવિદ્યા પન્નત્તા, તંજહા-અપદમસમયસિદ્ધનોભવોવવાયગતી, ૫૪ં ટુસમ-
યસિદ્ધનોભવોવવાયગતી, જાવ અંજંતસમયસિદ્ધનોભવોવવાયગતી, સેતં સિદ્ધનોભવોવવાયગતી, સે તં ણોમવો-
વયાયગતી, સે તં ઉવયાયગતી ૪ ।

૧૪. સે કિં તં વિદ્યાયગતી ? વિદ્યાયગતી સત્તરસવિદ્યા પળ્લત્તા, તંજહા-કુસમાળગતી ૧, અકુસમાળગતી
૨, ઉવસપ્લ્લમાળગતી ૩, અણુવસપ્લ્લમાળગતી ૪, પોગ્ગલગતી ૫, મંડૂયગતી ૬, ણાવાગતી ૭, નયગ ૮, છા-
યાગતી ૯, છાયાણુવાતગતી ૧૦, હેસાગઈ ૧૧, હેસાણુવાતગતી ૧૨, ઉદિસ્સપવિભક્તગતી ૧૩, ચડપુરિસપવિભ-

હે ? અનેક પ્રકારની છે. તે આ પ્રમાણે—અપ્રથમસમય (પ્રથમસમય સિવાયના દ્વિતીયાદિ સમયમા) સિદ્ધની નોમવોપપાતગતિ, ૯
પ્રમાણે દ્વિસમયસિદ્ધનોમવોપપાતગતિ, યાથવ્ અન્તસમયસિદ્ધનોમવોપપાતગતિ. ૯મ સિદ્ધનોમવોપપાતગતિ કહી. ૯ પ્રમાણે નોમવો-
પપાતગતિ કહી અને ઉપપાતગતિ કહી.

૧૪. વિદ્યાયોગતિ કેટલા પ્રકારની કહી છે ? વિદ્યાયોગતિ સત્તર પ્રકારની કહી છે. તે આ પ્રમાણે—૧ સ્વચ્છદ્ધતિ, ૨ અસ્વચ્છદ્ધતિ,
૩ ઉપસપ્થમાનગતિ, ૪ અણુપસંપથમાનગતિ, ૫ પુદ્ગલગતિ, ૬ મંદૂકગતિ, ૭ નૌકાગતિ, ૮ નયગતિ, ૯ છાયાગતિ, ૧૦ છાયાણુ-
પાતગતિ, ૧૧ લેશ્યાગતિ, ૧૨ લેશ્યાણુપાતગતિ, ૧૩ ઉદિશ્ય પ્રવિભક્તગતિ, ૧૪ ચતુઃપુરુષપ્રવિભક્તગતિ, ૧૫ ચક્રગતિ, ૧૬

૧૪ વિદ્યાયસા ગતિવિદ્યાયોગતિ: વિદ્યાયસા-આકાશમા ગતિ થાય તે વિદ્યાયોગતિ તે ૩પાધિ-વિશેષણના મેરૂથી સત્તર પ્રકારે
હે—‘સ્વચ્છદ્ધતિ’-પદ્યાદિ તેમા પરમાણુ ઘમેરે યીજા પરમાણુ ઘમેરેની સાથે પરસ્પર સ્પર્શ કરી કરીને ગતિ કરે તે સ્વચ્છદ્ધગતિ.

तगती १४, वंकगती १५, पंकगती १६, बंधणविमोचनगती १७।

पंकगति अने १७ बन्धनविमोचनगति.

कारण के स्पृशतः गतिः-स्पर्श करतां छतां गति थाय ते स्पृशद्वति पवी व्युत्पत्ति थाय छे' १. तेथी विपरीत अस्पृशद्वति, जे परमाणु आदि अन्य परमाणु आदिनी साधे परस्पर संवन्धने अनुभव्या सिवाय गति करेते, जेम परमाणु एक समयमां एक लोकान्तथी बीजा लोकान्त सुधी जाय छे ते अस्पृशद्वति २. उपसंपद्यमानगति—जे अन्यनो उपसंपद्य-आश्रय करी तेनी सहाय वडे गमन करखुं ते, जेमके धनसार्थवाहना अवलंबन वडे धर्मघोषस्वरिखुं गमन ते उपसंपद्यमानगति ३. अनुसंपद्यमानगति—परस्पर अवलम्बन रहित पुरुषोनुं मार्गमां गमन ते अनुसंपद्यमानगति ४. जे मंडूक-वेडकानी पेहे कुटीने गमन करखुं ते मंडूकगति ६. नौकावडे मोटी नदी वगेरेमां जे गमन करखुं ते नौकागति ७. नैगमादि नयोप पोतपोताना मतनी पुष्टि करवी, अथवा परस्पर सापेक्ष वधा नयोप प्रमाण वडे अबाधित वस्तुनुं प्रतिपादन करखुं ते नयगति ८. छायांने अनुसरी तेना अवलम्बन वडे अथवा छायांनो आश्रय करवा माटे गति करवी ते छायागति ९. छायानुपातगतितरिति—छायांनी पोताना निमित्तरूप पुरुषादिना अनुपात-अनुसरवा वडे गति, जेमके छाया पुरुषने अनुसरे छे, पण पुरुष छायांने अनुसरतो नथी. माटे छायांनी अनुपातगति कहेवाय छे, पण छायांनी स्वतन्त्र गति नथी १०. जे तिर्यञ्च अने मनुष्योना कृष्णाविलेश्या द्रव्यो नीलाविलेश्या द्रव्यो पामीने तद्रूपविवरणे परिणमे छे ते लेश्यागति ११. लेश्यांनु अनुपात-अनुसरण, ते वडे जे गति ते लेश्यानुपातगति. 'लेश्याया अनुपात गतिः' ए विग्रहमां कर्ममां छट्टी विभक्ति छे. पटले लेश्याने अनुसरीने गति थवी कारण के आगळ कहेवामां आवशी के 'जे लेश्याद्रव्योने ग्रहण करी जीव काल करे छे ते लेश्यावाळामां उत्पन्न

१. अप्रथमसमयसिद्धनी भवोपपातगति चे समयथी मोडो यावत् अनन्त समय पर्यन्त होय छे. अथवा तो सिद्धपणानी उत्पत्ति समय पछी वे समय जेओने थया छे ते द्विसमय सिद्धनी भवोपपातगति, यावत् अनन्तसमयसिद्धनी भवोपपातगति जाणवी.

થાય છે, પણ થીસી લેણ્યાવાલામાં ઉપજતો તથી' માટે ઝીવ લેણ્યા પ્રખ્યને મનુસરતા નથી ૧૨ ઉદિશ્ય-
પ્રથિમકગતિ'—પ્રથિમક-પ્રતિનિયત આચાર્યાવિકને ઉદેશી જે તેની પાસે ગમન કરે તે ઉદિશ્યપ્રથિમકગતિ ૧૩ 'ચતુ'પુરુપપ્રથિમક-
ગતિ'—ચાર પ્રકારની પુરુષોની પ્રથિમક-પ્રતિનિયત ગતિ તે ચાર પ્રકાર યતાવે છે—'સમગ પદ્મપદ્ધિયા'—પદ્મ સાથે તૈયાર થયેલા
શ્યાવિ મૂલ્ય પ્રખ્ય ઘટે સૂચકાર સ્ય કહેશે ૧૪ ધક્રગતિ ચાર પ્રકારની છે તે આ પ્રમાણે—ધટ્ટનતા, સ્તમ્ભનતા, સ્ત્રેપનતા અને
પતનતા તેમાં ધટ્ટનશાષ્ટ્ય માય-ધટ્ટન શાષ્ટ્યનો માય ધટ્ટલે પ્રવૃત્તિનિમિષ ઘટ્ટન જ સમજવો પ પ્રમાણે શેરપથના શાષ્ટ્યાર્યનો વિચાર
કરવો ધટ્ટન-લક્ષ્ણે ગતિ, સ્તમ્ભન-પ્રીવામા ધમની-શ્ચિરચાહક નાહી ઘરેરેનુ રહેલું, મયવા આત્માનુ શરીરના પ્રવેશોમા રહેલુ
સ્ત્રેપણ-સાપલ ઘરેરેનો જાનુ ઘરેરેની સાથે સચ્ચ પતન-ઉમા રહેતા કે ચાલતાં પડલુ આ ધટ્ટનાવિ ઝીવને મનિષ્ટ ઘોષાયી અને
મયગસ્ટ ઘોષાયી ધક્રગતિ શાષ્ટ્ય ઘટે કહ્યા છે ૧૫. પદુ-શીચડમાં ગતિ તે પદુગતિ, પદ્મનુ પ્રદ્ધન તે ઉચ્કનુ પણ સૂચક છે તેથી
ફીચલ મયવા પાળીમા મતિદુસ્તર પોતાના શરીરને ફોફની સાથે 'ઉચ્ચિદિયા'—ઉદ્ધચ યાથીને તેના યલથી ગમન કરે તે પદુગતિ
૧૬ યન્યની યિમોચન-શૂટા થવા ઘટે જે ગતિ તે યન્યનયિમોચનગતિ મત્યત પાકેલાં અને તેથી યન્યની શૂટાં પહેલા આત્માવિ
ફલોનુ જે યિયસા-સ્વમાયયો પ્રતિબધ સિયાય ગમન તે યન્યનયિમોચનગતિ મત્યત પાકેલાં અને તેથી યન્યની શૂટાં પહેલા આત્માવિ
ત પમોગઈ' 'પ્રયોગગતિ કેટલા પ્રકારની છે' શ્યાવિ આ પવની સમાપ્તિ સુપી સુગમ છે

પરનુ 'અવૂરીવે ધીવે મરદેર્યયપાસસ્સ સપન્કિલ સપદિવિલિ સિદ્ધલેતોયવાયગઈ' અવૂરીપ નામે ધ્રીપમાં જે મરતવર્ષ અને તેરાય-
તવર્ષ છે તેના ઉપર સિદ્ધલેત્રોપપાતગતિ છે કેયી રીતે છે તે જણાવે છે—'સપ્ત સપતિવિક્' સહ-વિષમાન પક્ષ-પૂર્ણ, પચ્ચિમ, ડ
સર અને શક્ષિણરૂપ પાર્થ માનો જે ગતિમાં છે તથા સહ-વિષમાન પ્રતિવિદ્યુ-મનિક્ષોણ ઘરેરે વિવિશાનો જે ગતિમા છે પથી સિદ્ધ-
લેત્રોપપાત ગતિ છે આ ક્રિયાવિશેષણ છે માર્યર્થ આ છે—અવૂરીપ નામે ધ્રીપમાં મરત અને તેરાયત ક્ષેત્રની ઉપર સર્વે વિશામાં અને
વિવિશામાં ઘષે સિદ્ધલેત્રોપપાતગતિ છે. પમ યાફીના સૂત્રો સંચન્ધે પણ આણ્યુ ઉપસંપપમાન ગતિસૂત્રમાં યજા-ધૃયિધીયપિતિ, યુચપજ-

१५. से किं तं फुसमाणगती ? फुसमाणगती जणं परमाणुपोगले(ल)हुपणसिय-जाव. अणंतपणसियाणं खंधाणं अणमणं फुसिच्चा णं गती पवत्तइ, सेत्तं फुसमाणगती ? अफुसमाण-
गती जणं एतेसिं चैव अफुसिच्चा णं गती पवत्तति, से तं अफुसमाणगती २ । से किं तं उवसंपज्जमाणगती ?
२ जणं रायं वा जुवरायं वा ईसरं वा तलवरं वा मांडचितं वा कुंडुचितं वा इव्वं वा सिट्ठिं वा सेणावतिं वा
सत्थवाहं वा उवसंपज्जिता णं गच्छति, से तं उवसंपज्जमाणगती ३ । से किं तं अणुवसंपज्जमाणगती ? २ जणं

१५. स्पृशद्गति केवा प्रकारनी छे ? परमाणुपुद्गल, द्विप्रदेशिक, यावत् अनन्तप्रदेशिक स्कन्धोनी परस्पर स्पर्श करीने जे गति प्रवर्ते ते स्पृशद्गति. एम स्पृशद्गति कही १. अस्पृशद्गति केवा प्रकारनी छे ? परस्पर स्पर्श कर्या सिचाय ए परमाणु वगेरेनी जे गति प्रवर्ते ते अस्पृशद्गति. एम अस्पृशद्गति कही २. उपसंपद्यमानगति केवा प्रकारनी छे ? राजा, युवराज, ईश्वर, तलवर, मांडविक, कौटुम्बिक-कुटुम्बस्थामी, इम्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाहने अनुसरी जे गमन करे छे ते उपसंपद्यमानगति. एम उपसंपद्यमा-

राज्यनी चिन्ता करनार अने राजानो प्रतिनिधि, ईश्वर-अणिमा वगेरे मेथ्वर्ययुक्त, तलवर-संतुष्ट थयेला राजाप आपेल पट्टवन्ध वडे विभू-
पित राजाना जेवो, मांडविक-छिन्नमिन्न थयेला मंडय-गामविशेषनो अधिपति, कौटुम्बिक-केटलाणक कुटुम्बनो स्वामी, 'इममर्हति
इम्य' हाथीने योग्य होय ते धनवान्, श्रेष्ठी-श्रीदेवी युक्त सुवर्णना पट्टथी जेनुं मस्तक विभूषित छे पवो. सेनापति-राजाप स्थापेलो
चतुरङ्ग सेनानो नायक, सार्थवाह-सार्थनो नायक. नौगतिस्त्रमां 'पुल्वयेतालीओ' इत्यादि. धैतालीशन्ध अर्हो देश्य होयाथी वेताला
नदीना तटवाची छे.

श्रीमदाचार्यमलयगिरिधिरचित्त. प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सोळ्ळुं प्रयोगपद समाप्त.

પતેસિં શ્વેવ, અણ્ણમણ્ણં અણુવસંપલ્લિત્તા ણં ગચ્છતિ, સે તં અણુવસંપલ્લમાણગતી ૪ । સે કિંતં પોગ્ગલગતી ? ૨ જં ણં પરમાણુપોગ્ગલાણં જાવ, અણંતપ્પસિયાણં, ત્વંધાણ ગતી પવત્તતિ સે તં પોગ્ગલગતી ૫ । સે કિંતં મહ્ડુ-
યગતી ? ૨ જણ્ણ મંડૂઓ ફિલ્લિત્તા ગચ્છતિ, સે તં મંડૂયગતી ૬ । સે કિંતં ણાવાગતી ? જણ્ણં ણાવા પુન્નવેતા-
લીઓ દાહિણવેયાલિં જલપહેણં ગચ્છતિ, દાહિણવેતાલીઓ યા અવરેવેતાલિં જલપહેણં ગચ્છતિ, સે તં ણાવા-
ગતી ૭ । સે કિંતં ણયગતી ? ૨ જણ્ણં ણેગમસગહવહારુચ્છુપ્પસહસમ્મિરુદ્ધપ્પંમૂયાણ નયાણં જા ગતી,
અહવા સન્નવણયાયિ જ ઇચ્છંતિ, સે તં નયગતી ૮ । સે કિંતં છાયાગતી ? ૨ જં ણં હયછાયં વા ગયછાયં વા નર-
છાય યા કિણ્ણરછાયં વા મહેરગચ્છાય યા ગંધન્નવચ્છાયં વા રહછાયં વા ઉસહછાયં વા છત્તછાયં વા ઉવસપલ્લિ-
નગતિ કહી ૩. અણુપસપ્પમાનગતિ કેવા પ્રકારની છે ? ણો પરસર એક વીજાને અણુસર્પાં સિવાય જે ગમન કરે છે તે અણુ-
પસપ્પમાનગતિ ૪. પુદ્ગલગતિ કેવા પ્રકારની છે ? પરમાણુપુદ્ગલ, યાવ્ અનન્તપ્રેરેશિક સ્કન્ધોની જે ગતિ પ્રવર્તે છે તે પુદ્ગલગતિ
એમ પુદ્ગલગતિ કહી ૫. મહ્કગતિ કેવા પ્રકારની છે ? મંદ્ક-દેહકો કૂદી કૂદીને જે ગમન કરે છે તે મહ્કગતિ. એમ મહ્કગતિ
કહી ૬. નૌકાગતિ કેવા પ્રકારની છે ? નૌકા જે પૂર્વેવેતાલીથી-વેતાલા નદીના પૂર્વના કીનારાથી દક્ષિણના કીનારે જલમાર્ગે ગમન
કરે છે અને દક્ષિણના કીનારાથી પશ્ચિમના કીનારે જાય છે તે નૌકાગતિ. એમ નૌકાગતિ કહી ૭. નયગતિ કેવા પ્રકારની છે ?
જે નેગમ, સંપ્રદ, વ્યવહાર, ક્રણુહર, શબ્દ, સમ્મિરુદ્ધ અને એવંશૂલ નયોની ગતિ-પ્રવૃત્તિ, અથવા સર્વ નયો ણ જે ઇચ્છે-જે માને તે
નયગતિ. એમ નયગતિ કહી ૮. છાયાગતિ કેવા પ્રકારની છે ? જે ઘોઢાની છાયા, દાથીની છાયા, મણુપ્પની છાયા, કિંબલની છાયા,

त्ताणं गच्छति, से तं छायागती ९ । से किं तं छायाणुवायगती ? २ जेणं पुरिसं छाया अणुगच्छति, नो पुरिसे छार्यं अणुगच्छति, से तं छायाअणुवायगती १० । से किं तं लेस्सागती ? २ जणं किण्हलेसा नील्लेसं पप्प ता-
रूवत्ताए तावणत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताते भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवं नील्लेसा काउलेसं
पप्प तारूवत्ताए जाव ता फासत्ताए परिणमति, एवं काउलेसावि तेउलेसं तेउलेसावि पम्हलेसं पम्हलेसावि
सुक्कलेसं पप्प तारूवत्ताते जाव परिणमति, से तं लेसागती ११ । से किं तं लेसाणुवायगती ? २ जल्लेसाइं द-
व्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु उवयज्जति, तंजहा-किण्हलेसेसु वा जाव सुक्कलेसेसु वा, से तं लेसाणु-
वायगती १२ । से किं तं उद्दिस्सपधिभत्तगती ? २ जणं आयरियं वा उवज्झायं वा थेरं वा पवत्तिं वा गणिं वा

महोरगनी छाया, गांधर्वनी छाया, वृषभनी छाया, रथनी छाया अने छत्रनी छायाने अनुसरी गमन करे ते छायागति. एम छाया-
गति कही ९. छायानुपातगति केवा प्रकारनी छे ? जे कारणधी पुरुषने छाया अनुसरे छे, पण पुरुष छायाने अनुसत्तो नथी, एटले
पुरुषने अनुसरी छाया गति करे छे ते छायानुपातगति. एम छायानुपातगति कही १०. लेइयागति केवा प्रकारनी छे ? कृष्णलेइया
नील्लेइयाने पामीने तद्रूपणो-ते वर्णणो, ते गन्धणो, ते रसणो अने ते स्पर्शणो जे चारंवार परिणमे छे, ए प्रमाणे नील्लेइया
कापोतलेइयाने पामीने तद्रूपणो यावत् ते स्पर्शणो परिणमे छे, एम कापोतलेइया पण तेजोलेइयाने, तेजोलेइया पण पम्हलेइयाने
अने पम्हलेइया पण शुक्ललेइयाने पामीने जे तद्रूपणो यावत् परिणमे छे ते लेइयागति. एम लेइयागति कही ११. लेइयानुपातगति
केवा प्रकारनी छे ? जे लेइयावाळां द्रव्यो ग्रहण करी मरण पामे छे अने ते लेइयावाळांमां उत्पन्न थाय छे. जेमके कृष्णलेइयावाळांमां,

गणहर वा गणावच्छेदं वा उहिसिय २ गच्छति, से तं उहिसियपविभक्तगती १३। से किं तं चतुरिसपविभक्तगती ? से जहानामए चत्तारि पुरिसा समगं पञ्चवट्टिया समगं पट्टिता १, समगं पञ्चवट्टिया विसमगं पट्टिया २, विसमं पञ्चवट्टिया विसमं पट्टिया ३, विसमं पञ्चवट्टिया समगं पट्टिया ४, से तं चतुरिसपविभक्तगती १४। से किं तं वंकागती ? २ चउच्चिवा पन्नत्ता, तज्जहा-घट्टनया, थंभणया, छेसणया, पवडणया, से तं वंकागती १५। से किं तं पंकागती ? २ से जहाणामते केइ पुरिसे पंकासि वा उदयंसि वा कायं उच्चिवा २ गच्छति, से तं पंकागती १६। से किं तं थंघणविमोयणगती ? २ जणं अंघाण वा अंघाडगाण वा माउलुगाण वा चिह्लाण वा कचिह्लाण वा भवाण वा फणसाण वा धालिमाण वा पारेवताण वा अक्खोलाण वा धाराण वा थोराण वा

यावत्-शुक्ललेइयावात्तामां, ते लेइयानुपातगति. एम लेइयानुपातगति कही १२. उदिस्यप्रविभक्तगति केया प्रकारनी छे ? जे आचार्य, उपाध्याय, स्यविर, प्रवर्तक, गणी, गणघर के गणावच्छेकने उदेयी उदेयीने जे गमन करे ते उदिस्यप्रविभक्तगति. एम उदिस्यप्रविभक्तगति कही १३. चतुःपुरुषप्रविभक्तगति केया प्रकारनी छे ? जेमेके चार पुरुषो एक साथे तैयार थाय अने एक साथे प्रयाण करे १, एक साथे तैयार थाय अने जुदा जुदा समये प्रयाण करे २, जुदा जुदा काले तैयार थाय जुदा जुदा काले प्रयाण करे ३ अने जुदा जुदा काले तैयार थाय अने साथे प्रयाण करे ४, ते चतुःपुरुषप्रविभक्तगति एम चतुःपुरुषप्रविभक्तगति कही १४. चक्रगति केटला प्रकारनी छे ? चक्रगति चार प्रकारनी छे. ते आ प्रमाणे—१ घट्टनता, २ स्वमनता, ३ स्रेणता अने ४ पतनता. एम चक्रगति कही १५. पंकागति केना प्रकारनी छे ? जेम कोइ पुरुष एक-कीचडमां के पाणीमां पोताना थरीले टेको आपीने

तिडुयाण वा पक्काणं परियागयाणं बंधणातो चिप्पसुक्काणं निरुयावातेणं अथे धीससाए गती पवत्तइ, से तं
बंधणविमोयणगती । से तं विहायोगती १७ ।

पणायणाए भगवईए सोलससं पओगपद समचं ।
(स्थिर करी करीने) गमन करे ते पंकगति.एम पंकगति कही १६. वन्धनविमोचनगति केया प्रकारनी छे ? पक्व थयेलां अति पाकेला
अने वन्धनथी जुदा थयेला आम्र, अंबाडक, धीजोरां, चीलां, कोठां, मच फणस, दाडम, पारायत, अखोड, चार, बोर अने तिडुकनी
निव्यर्थात-अतिवन्ध सिवाय नीचे स्वाभाविक गति थाय ते वन्धनविमोचनगति, एम वन्धविमोचनगति कही. १७.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवाचमां सोळसुं प्रयोगपव समाप्त.

सत्तरसं पर्यं ।

पद्मो उद्देशो ।

आहार समसरीरा उस्सासे कम्मवद्यलेसासु । समवेवण समकिरिया समाउया चैव बोद्धन्वया ॥१॥

सत्तरसुं लेख्या पद—प्रथम उद्देशक

१ सम आहार सम शरीर अने सम उच्छ्वास, २ सम कर्म, ३ सम वर्ण, ४ सम लेख्या, ५ सम वेदना, ६ सम क्रिया, अने ७ सम आयुष--ए सात अधिकारो प्रथम उद्देशकमां छे.

एम लोळ्ळमु प्रयोगपद कळु, हचे सत्तरमा पदलो प्रारंभ कराय छे तेनो जा सख्य छे-अहीं पूर्पना पद्मा प्रयोगपरिणाम सख्ये कळु हचे परिणामनी समानताथी लेख्या परिणाम कदेषाय छे लेख्यालो शब्दार्थ शो छे ? 'लिख्यते आत्मा कर्मणा सह अतया' जे घडे आत्मा कर्मनी साथे लेषाय ते लेख्या घटले कृष्णादि द्रव्यना प्रधानपणाथी आत्मानो परिणाम विशेष कळु छे के--

“ कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात् परिणामो य आत्मन । स्फटिकस्यैव तत्राय लेख्याशब्दः प्रवर्तते” ॥

'कृष्णादि द्रव्यना प्रधानपणाथी-निमित्तपणाथी स्फटिकनी जेवा आत्मानो जे परिणाम घाय तेमा आ लेख्याशब्दनी प्रवृत्ति घाय छे (प्र०)--क्या कृष्णादि द्रव्यो छे ? (उ०)--अहीं योग होय छे स्वारे लेख्या होय छे, योगना अभावमा नथी होती, मोटे योगनी साथे अन्यय अने ध्यतिरेक संख्य अणावाथी लेख्याउ कारण योग छे एम निश्चय घाय छे केमके घडे कार्यकारणभावतो निश्चय 'अन्यय

१ तत्सत्ये तत्सत्वमन्यय', तदभावे तदभाव' ध्यतिरेक',--तेनो विद्यमानतामा तेषु हेतुं ते अन्यय अने तेना अभावमा तेनो अभाव परो ते ध्यतिरेक.

अने व्यतिरेकना दर्शनथी थाय छे. लेइया योगनिमित्तक छे तेमां बे विकल्प छे-लेइया योगना अन्तर्गत द्रव्यरूप छे के योगना कारणभूत कर्मद्रव्यरूप छे ? तेमां प्रथम योगना कारणभूत कर्मद्रव्यरूप नथी, कारण के तेमां बे विकल्प सिवाय बीजो विकल्प घाती कर्मद्रव्यरूप तो नथी, कारण के घाती कर्मनो अभाव छतां सयोगी केवलीने लेइया होय छे. अघाती कर्मद्रव्यरूप छे ? कारण के अघाती कर्म होवा छतां अयोगी केवलीने लेइया नथी, तेथी परिशेष न्यायथी लेइया योगान्तर्गत द्रव्यरूप पण नथी, ते योगान्तर्गत द्रव्यो ज्यां सुधी करायो छे त्यां सुधी तेना उदयने वधारे छे. योगान्तर्गत द्रव्योनुं कपायना उदयने वधारवानुं सामर्थ्य छे, जेमेके पित्तद्रव्यनुं. ते आ प्रमाणे-पित्तना प्रकोपथी क्रोध अत्यन्त वधतो जणाय छे. वल्बी चाण द्रव्यो पण कर्मना उदय अने क्षयोपशामादिमां कारणरूपे जणाय छे. जेमेके द्रासी औषधी ज्ञानावरणना शयोगशामनुं अने मन्दिरापान ज्ञानावरणना उदयनुं कारण छे. जो ज्ञानावरणना उदयनुं कारण न होय तो मन्दिरापानथी मनुष्य युक्त अने अयुगाना विवेकरहित केस थाय ? दृतिं निद्रारूप छे एस शारदमां कानुं छे ते एरोयर एटे छे. कारण के स्थितिपाकविशेष एटले अनुभाग, तेनुं निमित्त कपायोदयना अन्तर्गत कृष्णादि लेइयाना परिणामो छे. अने ते वास्तविक रीते तेना अन्तर्गत पोवाथी कपायोदयना ज छे. केवल योगान्तर्गत द्रव्यरूप सहकारी कारणना मेद अने तेनी विचित्रता लीधे कृष्णादि मेदो घटे भिन्न अने प्रत्येकना तारतम्य मेदथी विचित्र परिणामो थाय छे. तेथी कर्मप्रकृतिकार भगवन्त शिवशर्मसूरि ए शतकमां जे काणुं छे—'द्विअणुभागं कसायथो कुण्ड' स्थिति अने अनुभाग कपायथी करे छे, ते पण युक्त छे. कारण के कपायोदयना अन्तर्गत कृष्णादि लेइयाना परिणामो पण कपायरूप छे. तेथी कोइ एम कहे छे के 'लेइयाने योगना परिणामरूप मानवामां आवे तो "जोगा एण्डिगपसं द्विअणुभागं कसाइओ कुण्ड" योगथी प्रकृतियन्ध अने प्रदेश-यन्ध करे छे अने कपायथी स्थिति अने अनुभागयन्ध करे छे-ए वचनथी लेइया प्रकृतियन्ध अने प्रवेशयन्धनुं कारण थइते, पण

સ્થિતિવચનનું કારણ નહિ થાય,' તે પણ અનુક્રમ છે, કારણ કે તેને ઉપર કહેલા માધ્યમનું જ્ઞાન નથી ઘટ્ટી લેશ્યા સ્થિતિનું કારણ નથી, પણ કપાળો છે લેશ્યા તો કયાયોગ્યના અન્તર્ગત અનુમાનનું કારણ થાય છે. પ હેતુથી જ 'સ્થિતિયાકવિશેષસ્ય મયતિ લેશ્યા વિશેષેન'-સ્થિતિયાકવિશેષ લેશ્યાવિશેષથી થાય છે-પમ કસુ છે અહીં અનુમાનનો યોગ થયા માટે 'પાક'શબ્દનું પ્રદાન કરેલું છે આ યાતન વર્મપ્રતિદીક્ષાવિમા સુનિશ્ચિત કરી છે તેથી ઉપરની શબ્દા કરનારને સિદ્ધાન્તનું પરિજ્ઞાન પણ ઘટેવર નથી

ઘટ્ટી જે કતુ છે કે "કર્મનિવ્યન્નો લેશ્યા" —લેશ્યા ય કર્મના નિવ્યન્નરૂપ છે, લેશ્યા નિવ્યન્નરૂપ હોય તો જ્યાં સુધી કયાયનો ઉદ્દેશ છે ત્યાં સુધી નિવ્યન્ન પણ હોય છે, માટે કર્મસ્થિતિનું પણ કારણ થાય છે, તે પણ અનુક્રમ છે કારણ કે લેશ્યા અનુમાનવચનનું કારણ છે, પણ સ્થિતિવચનનું કારણ નથી ઘટ્ટી કર્મનિવ્યન્ન ય શુ છે? કર્મના કસ્ક-અસારરૂપ છે કે કર્મના સારરૂપ છે? કર્મના કસ્કરૂપ નથી, કારણ કે તે અસારરૂપ હોવાથી ઉત્કૃષ્ટ અનુમાનવચનનું કારણ થઈ શકશે નહિ કસ્ક અસારરૂપ છે અને સમાર ય ઉત્કૃષ્ટ અનુમાન વચનનું કારણ કેમ થાય! અને ઉત્કૃષ્ટ અનુમાનવચનનું કારણ પણ લેશ્યા થાય છે. હવે લેશ્યા ય કર્મના સારરૂપ છે ય વક્ષનો સ્વીકાર કરવામાં આવે તો તે કયા કર્મનો સાર છે? યથા સમય માટે કર્મના સારરૂપ છે. પણ કહેવામાં આવે તો તેનો ઉત્તર ય છે કે કે શાસ્ત્રમાં માટે કર્મના વિષાનો વર્ણવવામાં આવ્યા છે, પણ કોઈ કર્મનો લેશ્યા રૂપ વિષાક વર્ણવવામાં આવ્યો નથી માટે કર્મના સારરૂપ વક્ષને કેમ અગીકાર કરી શકાય! માટે પૂર્વે કહેલો યોગાન્તર્ગત દ્રવ્યરૂપ વક્ષ જ શ્રેયસ્કર છે અને તેને શ્વરિભદ્રસ્મૃતિ ઘમેરેપ તે તે સ્વકે અગીકાર કરેલો છે

આ લેશ્યાવર્ણમાં છ ઉદ્દેશનો છે, તેમાં પ્રથમ ઉદ્દેશકના અર્થને સમ્પ્રદ કરનારી આ ગાથા છે—'આહાર સમસંગીરા' इत्यादि गाथाना पूर्वार्थमा 'सर्व'शब्द प्रत्येकनी साथे જોડાય છે અને ઉત્તરાર્થમાં તો દરેક વક્ષનો સાથે સમગ્રવ્યનો સાક્ષાત્ સચ્ચ કરેલો છે. તેથી આ અર્થ ધાય છે-પયા નમાન આહારવાહા, સમાન શરીરવાહા અને સમાન ઉચ્ચવાસવાહા છે' ય પ્રશ્નસહિત પ્રથમ અધિકાર, 'મમાનકર્મવાહા' ય વીજો અધિકાર, 'સમાનવર્ણવાહા' ય વીજો અધિકાર, 'સમાનલેશ્યાવાહા' ય ચોથો અધિકાર, 'સમાલેશ્યાવાહા'

१. पेरइया णं भंते ! सब्बे समाहारा, सब्बे समसरीरा, सब्बे समुस्सासनिस्सासा ? गोयमा ! णो इण्ढे सम्ढे । से केण्ढेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समाहारा, जाव णो सब्बे समुस्सासनिस्सासा’ ? गोयमा ! पेरइया डुविहा पन्नत्ता, तंजहा-महासरीरा य अप्पसरीरा य अज्जसरीरा ते णं चहुतराए पोग्गले

१. हे भगवन् ! नैरयिको वधा समान आहारवाळा, वधा समान शरीरवाळा अने वधा समान उच्छ्वास-निःश्वासवाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कही छो के ‘ नैरयिको वधा समान आहारवाळा अने अल्पशरीरवाळा.तेमां जेओ समान उच्छ्वास निःश्वासवाळा नथी ? हे गौतम ! नैरयिको वे प्रकारना कखा छे, ते आ प्रमाणे-महाशरीरवाळा अने अल्पशरीरवाळा.तेमां जेओ

प पांचमो अधिकार, ‘समानक्रियावाळा’ प छट्टो अधिकार, अने ‘समानवायुवाळा’ प सातमो अधिकार छे. (प्र०)—अहीं लेइयापरिणामनो अधिकार छे, तेमां आ उपर वतावेला अर्थोनो केम उग्न्यास करवामां आव्यो छे ? (उ०)—दुमणं पूर्वेना प्रयोगपदमां कहेवामां पपातगति, ५ विज्ञायोगति, तेमां उपपातगति त्रण प्रकारनी छे—१ क्षेत्रोपपातगति, २ ततगति, ३ वचनछेदगति, ४ उ-त्पातगति चार प्रकारनी छे—नैरयिकभयोपपातगति, वैवभयोपपातगति, तियंभयोपपातगति, ३ नोभयोपपातगति. तेमां भवो-त्पातगति चार प्रकारनी छे—नैरयिकभयोपपातगति, वैवभयोपपातगति, तियंभयोपपातगति, ३ नोभयोपपातगति. तेमां नारक-आहारादि अधिकारोनो उपपत्त्यास करवामां आव्यो छे.

१. “यथाहेसं निर्वेशः” उइशना क्रम प्रमाणे निर्वेश थाय छे-प न्यायथी प्रथम ‘समान आहारवाळा’ प प्रज्ञासूचित अर्थाधिकार कहे छे—‘नेरइया णं भंते ! सब्बे समाहारा’ ? हे भगवन् ! वधा नैरयिको समान आहारवाळा छे-इत्यादि प्रज्ञासूत्र

આહારૈતિ, ઘટુતરાપ પોગ્ગલે પરિણામેતિ, ઘટુતરાપ પોગ્ગલે ઉસ્સસંતિ, ઘટુતરાપ પોગ્ગલે નીસસંતિ, અભિક્લ્બણં આહારૈતિ, અભિક્લ્બણં પરિણામેતિ, અભિક્લ્બણં ઝસસંતિ અભિક્લ્બણં નીસસતિ । તત્થ ણં જે તે અપ્પસરીરા તે ણં અપ્પતરાપ પોગ્ગલે આહારૈતિ, અપ્પતરાપ પોગ્ગલે પરિણામેતિ, અપ્પતરાપ પોગ્ગલે ઝસસંતિ, અપ્પતરાપ પોગ્ગલે નીસસતિ, આહચ આહારૈતિ, આહચ પરિણામેતિ, આહચ ઝસસંતિ, આહચ નીસસંતિ, સે ણ્ણ્ણંટ્ટેણં ગોયમા ।

મહાચરીશ્વાલા છે તેઓ ઘણા પુલ્કલોને આહાર કરે છે, ઘણા પુલ્કલોને પરિણામાવે છે, ઘણા પુલ્કલોને ઉચ્છ્વાસરૂપે ગ્રહણ કરે છે અને ઘણા પુલ્કલોને નિઃશ્વાસરૂપે સૂકે છે, વારંવાર આહાર કરે છે, વારંવાર ઉચ્છ્વાસરૂપે ગ્રહણ કરે છે અને વારંવાર નિઃશ્વાસરૂપે સૂકે છે. તેમાં જે અલ્પચરીશ્વાલા છે તે અલ્પ પુલ્કલોનો આહાર કરે છે, અલ્પ પુલ્કલોને પરિણામાવે છે, અલ્પ પુલ્કલોને ઉચ્છ્વાસરૂપે ગ્રહણ કરે છે અને નિઃશ્વાસરૂપે સૂકે છે. આહચ-કદાચિત્ આહાર ગ્રહણ કરે છે, કદાચિત્ પરિણામાવે છે, કદાચ

સુગમ છે મગયાન્ ઉચ્ચર કહે છે-‘ગોયમા’ इत्यादि-हे गौतम ! मा अर्थ समर्थ-युक्तियुक्त नयी पुना प्रश्न करे छे-‘से केण्ठेण’ -शा हेतुधी एम कहो छो ? इत्यादि ‘से’ इत्य अथशब्दना अर्थमां छे अथ केनार्थेन-कथा प्रयोजनधी हे मगयन् ! एम कहो छो ? मगयान् कहे छे-‘हे गौतम’ इत्यादि नैरथिको वे प्रकारला छे-अल्पचरीशवाळा अने महाचरीशवाळा अहीं अहण्णु अने महत्त्व-महाण्णु सापेक्ष छे तेमां जयन्त्य अल्पण्णु अगुलना अलंकारात्मा भागप्रमाण अने उत्कृष्ट महत्त्व पावसो घटुपप्रमाण छे आ मयधारणीय (सामाधिक) चरीश्वरी अपेक्षाप समज्जु उत्तरधीक्रियन्ती अपेक्षाप अघन्य अल्पण्णु अगुलना संख्यात्मा भागप्रमाण अने उत्कृष्ट महत्त्व हजार घटुपप्रमाण आण्णु प कथन घटे ‘समचरीशवाळा होय छे’ ? ए प्रश्नो उत्तर कहो. (प्र०)---अहीं प्रथम आहार सयन्धी प्रश्न छे अने चरीर संयन्धी प्रश्न थीजा स्थानमां कहेलो छे, तो तेनो प्रथम उत्तर केम आव्यो ? (उ०)---चरीश्वरी

एवं बुद्धि-निरइया नो सब्बे समाहारा, नो सब्बे समसरीरा, णो सब्बे सज्जस्सासनिस्सासा ।
उच्छ्वास ले छे अने कदाचित् मूके छे, ए हेतुथी एस कहुं छुं के 'नैरयिको बधा समान आहारवाळा नथी, बधा समान शरीरवाळा नथी अने बधा समान उच्छ्वासनिःश्वासवाळा नथी'.

विपमता कहेवाथी आहार अने उच्छ्वासनी विपमता सारी रीते कही सकाय छे, माटे बीजा स्थानमां कहेला शरीरसंक्थी प्रश्नो प्रथम उत्तर आय्यो छे. हवे आहार अने उच्छ्वासनो उत्तर आपे छे- 'तथ णं' इत्यादि. तेमां अल्पशरीरवाळा अने महाशरीरवाळारूप बे राशिमां जेओ जेनाथी महाशरीरवाळा छे तेओ तेनी अपेक्षाए मोटा शरीरवाळा होवाथी घणा पुद्गलोनो आहार करे छे, लोकमां पण एम देखाय छे के मोटा शरीरवाळो घणुं खाय छे, जेमके हाथी, अने नाना शरीरवाळो ससलानी पेटे अल्प खाय छे. बहुलतानी अपेक्षाए आ उदाहरण आपेछुं छे, अन्यथा तेवा प्रकारना मनुष्यनी पेटे कोइ मोटा शरीरवाळो पण थोडुं खाय छे अने कोइ नाना शरीरवाळो जेस महाशरीरवाळा, दुःखी अने तीव्र आहारनी इच्छावाळा होय छे तेस अवश्य घणा पुद्गलोनो आहार करे छे अने घणापुद्गलोनो परिणामवे छे, कारण के आहारना पुद्गलोनो अजुसरी परिणाम होय छे. जो के परिणाम संवन्धे प्रश्न नथी कर्यो छतां ते आहारनुं कार्य छे एम घारी उत्तर आय्यो छे. तथा 'बहुतराए पुगले ऊससंति' तेमज मोडुं शरीर होवाथी घणां पुद्गलोनो उच्छ्वासरूपे ग्रहण करे छे अने 'नीससंति' निःश्वासरूपे मूके छे. लोकमां पण देखाय छे के मोटा शरीरवाळा ते जातना बीजा प्राणीनी अपेक्षाए बहु उच्छ्वास अने निःश्वासवाळा होय छे अने दुःखी पण होय छे. ते प्रमाणे नारको दुःखी होय छे. आहारनुं कालनी

१ अहाँ तीर्थकरना उपपात-जन्म वगेरे कल्याणक निमित्ते नारकोने क्षण पर्यन्त सातानो उदय होय छे, ते सिवाय असातानो निरंतर उदय होय छे.

२. नेरइया णं भंते ! सन्वे समकम्मा ? गोयमा ! नो इण्ढे समट्ठे । से केण्ढेणं भंते ! एवं बुच्चइ-‘नेरइया नो
 २. हे भगवन् ! नैरयिको यथा समानकर्मबाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के

अपेक्षाय विद्यमण्यु यतावे छे-‘अभिक्खण’ कमीक्षण-चांदात् आहार करे छे जेओ जेनाथी मोटा शरीरवाळा छे तेओ तेनी अपेक्षाय
 शीघ्र अतिशीघ्र आहार प्रहण करवाना समावषाळा होय छे, अभीक्षण-चांदात् उच्छ्वास ले छे अने यारघाट निश्वास मूके छे
 महाशरीरवाळा होयाने लीये अत्यन्त दुःखी होयाथी निरत उच्छ्वासादि क्रिया करे छे ए मायार्थे छे ‘तथ ण जे से’ इत्यादि अर्ही
 ‘जे’ जेओ कहेया मायथी अर्थ सरे छे तो ‘जे से’ जेओ-तेओ कहेयानु कारण तेवा प्रकारनी मायाशैली छे जेओ अल्पशरीरवाळा छे तेओ
 अत्यन्त अल्प पुद्गलोनो आहार करे छे पटले जेओ जेनाथी अल्पशरीरवाळा छे तेओ तेने प्रहण करया लयक पुद्गलोनो अपेक्षाय
 अल्प शरीर होयाथी घणा अल्प पुद्गलोनो आहार करे छे ‘आहय आहारयति’-कदाचित् आहार करे छे अने कदाचित् आहार करता
 नथी, कारण के महाशरीरवाळाने आहारप्रहण करवानु अन्तर छे तेनी अपेक्षाय ते बहु काळना अन्तर बडे आहार करे छे ए मायार्थे
 छे ‘आहय ऊससति, आहय नीससति’-कदाचिद् उच्छ्वास ले छे अने कदाचित् मूके छे कारण के एओ अल्प शरीरवाळा होयाथी
 महाशरीरवाळानी अपेक्षाय अल्प दुःखवाळा होयाथी आहय-कदाचित् पटले सात्तरणे उच्छ्वासादि क्रिया करे छे ए मायार्थे छे
 अथवा अपयसिक्खि-अपयासायस्थामां अल्पशरीरवाळा लोभाहारनी अपेक्षाय आहार करता नथी, अने उच्छ्वासात्पयसि बडे अपयासा
 होयाथी उच्छ्वास लेता नथी, अन्य काळे आहार प्रहण करे छे अने उच्छ्वास ले छे, माटे फसु छे के-‘आहय आहारयति आहय
 ऊससति’ कदाचित् आहार ले छे अने कदाचित् उच्छ्वास ले छे’ ‘ते हेतुथी’ इत्यादि निगमन वाक्य सुगम छे

२. हवे समानकर्मणानो अधिकार कहे छे-‘नेरइया ण’ हे भगवन् ! नैरयिको यथा समान कर्मवाळा छे-‘इयादि यथा
 नैरयिको समान कर्मवाळा कथी तेनु कारण यतावे छे-‘नैरयिको पे प्रकारा छे-पुब्बोयत्तगा य पच्छोयत्तगा य’ पूर्वे उत्पन्न

सन्धे समकम्मा'। गोयमा ! नेरइया दुचिहा पन्नता, तंजहा-पुञ्चोवन्नगा य पञ्चोवन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुञ्चोवन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा, तत्थ णं जे ते पञ्चोवन्नगा ते णं महाकम्मतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-नेरइया णो सन्धे समकम्मा' ।

३. नेरइया णं भंते ! सन्धे समवन्ना ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चइ-नेरइया नो

'नैरयिको वधा समानकर्मवाळा नथी' ? हे गौतम ! नैरयिको वे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-पूर्वे उत्पन्न थयेला, अने पाळळ उत्पन्न थयेला. तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते अल्पकर्मवाळा छे अने पाळळ उत्पन्न थयेला छे ते महाकर्मवाळा छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के 'नैरयिको वधा समान कर्मवाळा नथी.

३. हे भगवन् ! नैरयिको वधा समानवर्णवाळा छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो

थयेला अने पञ्चात्-पछी उत्पन्न थयेला. पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पछी उत्पन्न थयेला नैरयिकोमां जेओ पूर्वे उत्पन्न थयेला छे तेओए नरकायुप, नरकगति अने असातावेवनीयादि घणा कर्मनी निर्जरा करी होय छे अने थोडां कर्म वाकी होय छे, तेथी तेओ अल्प कर्मवाळा होय छे. वीजा तेनाथी विपरीत होवाथी महाकर्मवाळा छे. आ हकीकत समान स्थितिवाळा जे नारको छे तेने आथयी कहेली समजवी, जो एम न होय तो रत्नप्रभामां उरुप्र स्थितिवाळा नारकं घणुं आयुप क्षीण थयुं होय अने पल्योपमं आयुप वाकी होय त्यारे ते ज रत्नप्रभामां दश हजार वर्गनी स्थितिवाळो अन्य कोइ नारक उत्पन्न थाय ते पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पल्योपम वाकी रहेला आयुपवाळा नारकनी अपेक्षाए महाकर्मवाळो कही शक्या ?

३. वर्णसूत्रमां 'विशुद्धतरवर्णकाः'-पूर्वे उत्पन्न थयेला नैरयिको विशुद्धतर वर्णवाळा छे. शा हेतुथी ? नारकोने अप्रशस्त वर्णनाम-

सन्धे समझा' ! गोयमा ! गेरइया बुचिहा पन्नत्ता, तंजहा-पुन्वोवन्नगा य पन्वोवन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुन्वोवन्नगा ते णं विमुद्धवन्नतरागा, तत्थ णं जे ते पन्वोवन्नगा ते णं अविमुद्धवन्नतरागा, से एणणट्टेणं गोयमा ! एवं बुचइ-‘नेरइया नो सन्धे समबन्ना’ ! एवं जहेव वन्नेण भणिया तहेव छेसासु विमुद्धलेसतरागा के ‘नेरयिको यथा समानवर्णवाळा नथी’? हे गौतम ! नेरयिको वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वे उत्पन्न थयेला अने पाछळ उत्पन्न थयेला. तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते विमुद्धतरवर्णवाळा अने जे पाछळ उत्पन्न थयेला छे ते अविमुद्धवर्णवाळा छे, ए हेतुथी हे गौतम ! एम कहु छुं के ‘नेरयिको यथा समानवर्णवाळा नथी’. ए प्रमाणे जेम वर्ण सधे कहुं तेम लेइयासंधे विमुद्धलेइयावाळा

कर्मनो अणुम अने तीय रसोपय भवनी अपेक्षाए छे ए संघन्धे कहु छे के—‘कालमयलेचचेक्कमो उय्थो सयियागभयियानो’ । काल, मय अने शेषनी अपेक्षाए कर्मनो थियाकत्तहित के थियाक रहित उवय होय छे (म०)—तेमा मात्र आयुयकर्मं भवयियानो प्रकृति छे, तो अप्रकृत्त वर्णनामकर्मनो उवय भवसापेक्ष केम कहो छो ? (उ०)—ए सत्य छे, तो पण आ अप्रकृत्त नामकर्मनो तीप्ररसवाळो छुय उवय पूर्वाचार्योप कहेल्यो छे अने ते पूर्वे उत्पन्न थयेला नारकोप भोगथी घणो क्षय कर्यो होय छे, अने थोडो थाकी छे अने वर्णनाम कर्म पुत्रलविकािनी प्रकृति छे, तेथी पूर्वे उत्पन्न थयेला नारको विमुद्धतर वर्णवाळा छे, पाछळ उत्पन्न थयेला नारकोप हुजी सुथी भोगथीने घणो क्षय कर्यो नथी, माटे तेमो अविमुद्ध वर्णवाळा छे आ इकीकत पण समानस्थितिवाळा नारकोनो अपेक्षाए समजयी अन्धया पूर्वे कक्षा प्रमाणे अनियतपणानो संभय छे ‘एवं जहेव पणेष भणिया’ इत्यादि ए प्रमाणे जेम घणं संघन्धे कहु तेम लेइया सवन्धे एण कहेसु ते आ प्रमाणे—‘हे भगवन् ! यथा नेरयिको समान लेइयावाळा होय छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी’ इत्यादि यस्तु पूर्वे उत्पन्न थयेला विमुद्ध लेइयावाळा छे कारण के पूर्वे उत्पन्न थयेला नारकोप घणा अयणस्त लेइयाद्वय्यो अतुमथी

अविशुद्धलेसतरागा य भाणियञ्चा ।

४. नेरइया णं भंते ! सब्बे समवेदणा ? गोयमा ! नो इण्ढे सम्ढे । से केण्ढेणं भंते ! एवं बुच्चति-नेरइया णो सब्बे समवेयणा' ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नता, तंजहा-सन्निभूया य असन्निभूया य । तत्थ णं जे ते सन्निभूता ते णं महावेदणतरागा, तत्थ णं जे ते असन्निभूता ते णं अप्पवेदणतरागा, से तेण्ढेणं गोयमा ! अने अविशुद्धलेस्यावाळा कहेवा.

४. हे भगवन् ! नैरयिको वधा समानवेदनावाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'नैरयिको वधा समानवेदनावाळा नथी ?' हे गौतम ! नैरयिको वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-संज्ञीभूत-सम्यग्दृष्टि अने असंज्ञीभूत-मिथ्यादृष्टि. तेमां जेओ संज्ञीभूत छे ते महावेदनावाळा छे अने असंज्ञीभूत छे ते अल्पवेदनावाळा छे. ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहं छुं अनुभवीने क्षीण कर्यां छे, ते माटे ते विशुद्ध लेस्यावाळा छे अने बीजा पाछळ उत्पन्न थयेला होवाथी तेथी विपरीत अविशुद्धलेस्यावाळा छे. आ लेस्यासूत्र पण समान स्थितिवाळा नारकनी अपेक्षाए समजहुं.

४. हवै समानवेदनावाळा पद वडे सूचित अर्थाधिकारुं प्रतिपादन करवा माटे कहे छे-नेरइया णं भंते ! सब्बे समवेदणा ? नैरयिको वधा समानवेदना-समान पीडावाळा छे ?-इत्यादि. तेमां जेओ संज्ञीभूत छे पटले पूर्वे संक्षी पंचेन्द्रिय छतां नारकणुं पाम्यां छे तेओ महावेदनावाळा छे, कारण के तीव्र अनुभ अद्यवसाय वडे अनुभतर कर्मनो बन्ध करवाथी महानरकोमां उत्पन्न थयेला छे. जेओ असंज्ञीभूत-असंक्षी पंचेन्द्रिय छतां नैरयिक भावने प्राप्त थयेला छे तेओ अल्पवेदनावाळा छे. असंक्षी चारे गतिमां उत्पन्न थाय छे, कारण के तेने तेने योग्य आयुपना बन्धनो संभव छे. ते संबन्धे कह्युं छे के-“कइविहे णं भंते ! असन्निआउए पचत्ते ?

एवं दुबई-निरइया नो सन्धे समवेयणा' ।

के- 'नैरयिको यथा समानवेदनावाळा नथी.'

गोयमा ! चउव्यिहे असन्निभाउप पसचे, तज्जदा-नैरइयअसन्निभाउप, तिरिफखजोगिपमसन्निभाउप, मणुस्सजोगियअतदिभाउप, देव-
असन्निभाउप !" हे भगवन् ! केदला प्रफालु असदी आयुप कसु छे ? हे गौतम ! असदी आयुप चार प्रफालु कसु छे ते आ
प्रमाणे-नैरयिकमसदीमायुप, तिर्यञ्चयोनिकमसदीमायुप, मनुष्ययोनिकमसदीमायुप अने देवअसदीमायुप तेमा देव अने नारकमा
असदीमा आयुपनी जघन्य स्थिति वस हजार धरणी छे अने उत्करीषी परयोपमनो असंख्यातमो भाग छे तिर्यञ्च अने मनुष्यमा
जघन्य स्थिति अन्तर्मुहुत अने उत्कृष्ट परयोपमनो असंख्यातमो भाग छे प प्रमाणे असदी छता जेभो नरकमा उत्पन्न थाय छे तेभो
अति तीव्र मनुष्य अभ्यवसायना अमावयी रक्षामामो ज्यां अति तीव्र वेदना नथी पया नरकायासमा उत्पन्न थाय छे, अने तेभो
अल्प स्थितिवाळा होय छे तेथी अल्पवेदनावाळा छे अथवा संक्षीभूत-पर्याता, तेभो पर्याता होयाथी महावेदनावाळा छे अने असदी
अल्पवेदनावाळा छे, कारण के अपर्याता होयाथी प्राय वेदनानो असंभव छे [मनरूप करणना अभावमा वेदनानो अनुभव थतो नथी]
अथवा सजा-सम्यग्दर्शन, ते जेभोने छे ते सदी-सम्यग्दर्शणाने प्राप्त थयेळा, तेभो महावेदनावाळा छे, कारण के पूर्ये करेला
कर्मना विपाकनु सारण फरता तेभोने 'अहो मोडु दु'द अमने प्राप्त थयु छे, अति विषम विषयना उपभोग घडे वञ्चित चित्तवाळा
अने सकल दुखनो हय करनार भगवन्त अर्हत्प्रणीत धर्म न कर्यो' भावा प्रकारे मोडु दु'द मामां थाय छे, तेथी महावेदनावाळा
छे असदी-मिथ्यादर्शि तेभो 'पोताना करेला कर्मनु आ फळ छे' पर जाणता तेभो पथातापरहित मानसवाळा
होय छे, तेथी अल्पवेदनावाळा होय छे

५. गेरइया णं भंते ! सब्बे समक्खिरिया ? गोयमा ! नो इण्णट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुच्चति-‘नेरइया णो सब्बे समक्खिरिया’ ? गोयमा ! नेरइया तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-सम्महिट्ठी, भिच्छहिट्ठी, सम्मामिच्छहिट्ठी । तत्थ णं जे ते सम्महिट्ठी तेसि णं चत्तारि क्रिरियाओ कज्जंति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणक्खिरिया । तत्थ णं जे ते भिच्छहिट्ठी जे सम्मामिच्छहिट्ठी तेसि णं नियताओ पच्च क्रिरियाओ क-

५. हे भगवन् ! वधा नैरयिको समानक्रियावाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कही छो के ‘नैरयिको वधा समानक्रियावाळा नथी’ ? हे गौतम ! नैरयिको त्रण प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि. तेमां जे सम्यग्दृष्टि छे तेओने चार क्रियाओ धाय छे. ते आ प्रमाणे-१ आरंभिकी २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी अने ४ अप्रत्याख्यानक्रिया. तेमां जे मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-

५. हवे ‘समक्खिरिया’ समान क्रिया सब्धी अधिकारतो विचार करता सूत्रकार कहे छे-‘नेरइया णं भंते ! सब्बे समक्खिरिया’ हे भगवन् ! वधा नैरयिको समान क्रियावाळा छे ?-इत्यादि. सम-तुल्य छे कर्मना हेतुभूत आरंभिकी वगेरे क्रियाओ जेओने ते समानक्रियावाळा कहेवाय छे. आरंभ-पृथिव्यादि जीवनी दिसा ते प्रयोजन जेनुं छे ते आरंभिकी. ‘परिग्गहिया’ इति. धर्मना उपकरण सिवायनी वस्तु राखवी अने धर्मोपकरणमां पण मूर्छां राखवी ते परिग्रह, ते जेनुं प्रयोजन छे ते पारिग्रहिकी. ‘मायावत्तिया’ माया-वक्रता, सरलतानो अभाव, ते क्रोधादिना उपलक्षण-सूचक होवाथी क्रोधादि पण ग्रहण करवा, ते जेनुं प्रत्यय-कारण छे ते मायाप्रत्ययिकी. ‘अपच्चक्खाणक्खिरिया’ अप्रत्याख्यान-विरतिनो अभाव, ते वडे कर्मबन्धनना कारणभूत जे क्रिया ते अप्रत्याख्यानक्रिया. ए चार क्रियाओ सम्यग्दृष्टिने होय छे, सम्यग्मिथ्यादृष्टि अने मिथ्यादृष्टिने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकीसहित पांच क्रियाओ ‘नियइयाओ’ नियत-

ज्जन्ति, तंजहा-आरभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, भिच्छादंसणवत्तिया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव बुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समकिरिया’ !

६. नेरइया णं भत्ते ! सब्बे समाउआ, सब्बे समोवच्चगा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ! से केणट्ठेणं भत्ते ! एवं बुच्चइ ? गोयमा ! नेरइयावउचिहा पन्नत्ता, तंजहा-अत्थेगत्तिया समाउआ समोवच्चनगा, अत्थेगत्तिया समाउया-

१ आरभिकी, २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी, ४ अपत्याख्यानक्रिया अने ५ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. ते माटे हे गौतम ! एम फहुं छु के ‘नैरयिको वधा समानक्रियावाळा नथी.’

६. हे भगवन् ! नैरयिको वधा समानआयुषवाळा अने साधे उत्पन्न थयेला होय छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम ज्ञा हेतुथी कवो छो ? हे गौतम ! नैरयिको चार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे--१ केटलाएक समान आयु-

अवश्य होय छे मिथ्यादर्शन प्राप्य-कारण जेनु छे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी ते सिवाय सम्यग्दर्शिते प क्रियानो अनियत होय छे कारण के सयतादिने विषो व्यभित्वाट-अनियतपणु छे

(प्र०)—मिथ्यात्व, भविरति, कयाय अने योग प कर्मवन्धना हेतुनो प्रसिद्ध छे, बहीं तो कर्मवन्धना हेतुरूपे आरभिकी वगैरे क्रियाओ कहीं छे, तो एत्स्यट्ठ विरोध केम नथी ? (उ०)—बहीं आरभ अने परिग्रह शून्यदे योग ग्रहण केल्लो छे, कारण के योगो आरंभ अने परिग्रहरूप छे अने याकीना पद वडे पाकीना वन्धहेतुओनु ग्रहण घाय छे, एट्ठे मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी पडे मिथ्यादर्शन-नु, अपत्याख्यानक्रिया वडे भविरतितु अने मायाप्रत्यय क्रिया वडे कयायनु ग्रहण करेलु छे, माटे तेमां फइ पण श्रेय नथी

६. नेरइया ण भत्ते ! समे समाउमां-हे भगवन् ! वधा नैरयिको समान आयुषवाळा छे-इत्यादि प्रश्नना उत्तररूप चतुर्भंगी

विसमोवन्नगा, अत्येगतिया विसमाडया समोवन्नगा, अत्येगतिया विसमाडया विसमोवन्नगा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ-‘नेरइया नो सब्बे समाडया, नो सब्बे समोवन्नगा ।

७. असुरकुमारा णं भंते ! सब्बे समाहारा ? एवं सब्बेवि पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्टे समट्टे । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ ? जहा नेरइया । असुरकुमारा णं भंते ! सब्बे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे । से केण-

पवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला, २ केटलाएक समानआयुषवाळा अने विपम-जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला, ३ केटलाएक विपम-जुदा जुदा आयुषवाळा अने साथे उत्पन्न थयेला अने ४ केटलाएक जुदा जुदा आयुषवाळा अने जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला. ते हेतुयी हे गौतम ! एम कहुं छुं के ‘नेरयिको वधा समान आयुषवाळा नथी अने साथे उत्पन्न थयेला नथी’.

७. हे भगवन् ! वधा असुरकुमारो समान आहारवाळा छे ? एम समशरीरादि वधा संबंधे प्रश्न. हे गौतम ! आ अर्थ युक्त नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? नेरयिकोनी पंठे कहेथुं. हे भगवन् ! असुरकुमारो वधा समानकर्मवाळा छे ? हे गौतम ! आ

छे, तेनो विचार कराय छे-जेओप दस हजार वरसनुं आयुष वांधेछुं छे एवा अने साथे उत्पन्न थयेला प पहिलो भंग, तेज दस हजार वरसनी स्थितिवाळा नरकावासमां केटला एक प्रथम उत्पन्न थयेला छे अने वीजा पछी उत्पन्न थयेला छे-प वीजो भंग, अन्य नारकोप विपम-भिन आयुष वांधुं छे, केटलापके यश हजार वरसनी स्थितिवाळा अने केटलाएके पंदर हजार वरसनी स्थितिवाळा नरक संबन्धी आयुष वांधुं छे अने साथे उत्पन्न थयेला छे-प वीजो भंग. केलाएक सागरोगमनी स्थितिवाळा छे अने केटलाएक दस हजार वरसनी स्थितिवाळा छे एम विपम स्थितिवाळा छे अने जुदा जुदा समये उत्पन्न थयेला छे. प चौथो भंग छे.

७. द्ये असुरकुमारादिने विषे आहागदि नव पदुनो विचार करे छे-‘असुरकुमारा णं भंते ! सब्बे समाहारा’ हे भगवन् ! असुर-

ટ્ટેણં મંતે ! एवं शुचइ ? गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पुब्बोवचन्नगा य पच्छोवचन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुब्बोवचन्नगा ते णं महाकम्मतरा, तत्थ णं जे ते पच्छोवचन्नगा ते णं अप्पकम्मतरा, से तेण-
ट्टેણં गोयમા ! एवं शुचति--'असुरकुमारा णो सब्बे समकम्मा' । एवं वल्लेस्साए पुच्छा । तत्थ णं जे ते તે પુબ્બોવ-
ચન્નગા તે ण અવિસુદ્ધવન્નતરાગા, તત્થ ણં જે તે તે પચ્છોવચન્નગા તે ण વિસુદ્ધવન્નતરાગા, સે તેણટ્ટેણં ગોયમા !

અર્થ યુક્ત નથી. હે મગવન્ ! एम या हेतुयी कहे छो ? हे गौयम ! असुरकुमारो वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-पूर्वे उत्पन्न थयेला
अने पछी उत्पन्न थयेला तेमां जे पूर्वे उत्पन्न थयेला छे ते महाकर्मवाळा छे अने जे पछी उत्पन्न थयेला छे ते अल्पकर्मवाळा छे,
ते हेतुयी एम कहु छु के 'असुरकुमारो वथा समानकर्मवाळा नथी'. ए प्रमाणे वर्णं अने लेख्या संबंधे पूच्छा करवी. तेमां जे पूर्वे
उत्पन्न थयेला छे, ते अविशुद्धवर्णवाळा छे अने जे पछी उत्पन्न थयेला छे ते विशुद्धवर्णवाळा छे, ते हेतुयी हे गौयम ! एम कहु छुं

કુમારો વથા સમાનઆહારવાळा છે ?-રૂસ્વાદિ આ સૂત્ર નારકસૂત્રના સમાન છે, તો પણ તેનો વિશેષતા: વિચાર કરાય છે--અસુકુમા-
રોહુ મત્થ શરીર મવધારણીય શરીરની અપેક્ષાપ અધન્યથી અંગુલના અસંખ્યાતમા ભાગપ્રમાણ છે અને મહા શરીર ઉત્કર્ષથી સાત
હાથ પ્રમાણ છે ઉચ્ચર વૈક્રિયની અપેક્ષાપ અત્થ શરીર અધન્યથી અંગુલના સખ્યાતમા ભાગપ્રમાણ અને ઉત્કર્ષથી મહા શરીર લાજ
યોજન પ્રમાણ છે તેમાં જેઓ મનોમક્ષણરૂપ આહાર સંમયે છે તેઓ મનયદે મક્ષણ કરવા રૂપ આહારની અપેક્ષાપ ઘણા પુત્રલોનો આહાર કરે
છે કારણ કે વેયોને મનોમક્ષણરૂપ આહાર સંમયે છે અને તે પ્રધાન આહાર છે, શાસ્ત્રમા પ્રધાનની અપેક્ષાપ યસ્તુનો નિર્વેશ થાય છે, તેથી
અત્થ શરીરયદે પ્રહણ કરવા લાયક આહારના પુત્રલોનો અપેક્ષાપ જે ઘણા પુત્રલો છે તેનો તેઓ આહાર કરે છે 'ઘણા પરિણમાવે છે'
--રૂસ્વાદિ વ્રણ પવની વ્યાખ્યા પૂર્વની વેટે સમજવી તથા 'ધારંધાર આહાર કરે છે અને ધારંધાર ઉચ્છ્રયાસ લે છે' અહીં જેઓ યક વિલલાદિ

एवं बुद्धि-‘असुरकुमारा णं सन्धे णो समवन्ना’ । एवं लेस्साएधि, वेयणाए जहा नेरइया, अवसेसं जहा नेरइयाणं । एवं जाव थणियकुमारा ।

के ‘असुरकुमारो वधा समानवर्णवाळा नथी’ ए प्रमाणे लेइया संबंधे पण समजवुं, वेदना संवन्धे नैरयिकोनी पेठे समजवुं. चाकी वधुं नैरयिकोने कहुं तेम कहेवुं. ए प्रमाणे स्तनितकुमार सुधी जाणवुं.

व्यतीत थया पल्ली आहार करे छे अने सात स्तोक वगेरे काल व्यतीत थया चार उच्छ्र्वास ले छे तेने आथयी चारवार कहुं छे, कारण के जेओ कईक अधिक एक हजार गरम पल्ली आहार करे छे अने कईक अधिक एक पगवाडीया पल्ली उच्छ्र्वास प्रहण करे छे तेनी अपेक्षाए ए असुरकुमारोने अल्प काले आहार अने उच्छ्र्वास होय छे, तेथी चारवार आहार करे छे-इत्यादि व्यवहार थाय छे. तथा अल्प शरीरवाळा अल्प शरीर होवाथी अतिअल्प पुद्गलोने आहार करे छे, अने उच्छ्र्वास ले छे. जे तेओना आहार अने उच्छ्र्वासवुं कवचितपणुं ते महाशरीरवाळाना आहार अने उच्छ्र्वासना अन्तर करतां वणुं वधारे अन्तर होवाथी कहुं छे. तेओ वचनेना अन्तरमां आहारदि करना नथी, ते निवाय बीजा समये करे छे पथी विवक्षा छे. तेथी महाशरीरवाळाने पण आहार अने उच्छ्र्वासवुं अन्तर छे पण ते अल्प होवाथी तेनी विवक्षा करी नथी, तेथी ‘चारवार आहारदि करे छे’ एम कहुं छे. महाशरीरवाळा तेओने आहार अने उच्छ्र्वासवुं अल्प अन्तर अने अल्पशरीरवाळाने वणुं अन्तर छे ए स्तित छे. जेमके सौघमांदि देवो मात हाथ प्रमाण होवाथी महाशरीरवाळा छे, तेओने आहारवुं अन्तर वे हजार गरम अने श्वासोच्छ्र्वासवुं अंतर वे पगवाडीया छे. अने अनुसर देवोवुं हस्तप्रमाण शरीर होवाथी ते अल्पशरीरवाळा छे तेथी तेओनुं आहारवुं अन्तर तेओरा हजार घर्य अने श्वासोच्छ्र्वासवुं अन्तर तेओरीछ पगवाडीया छे. ए महाशरीरवाळाने चारवार आहार अने उच्छ्र्वासना कथन घडे तेओनी अल्प स्थिति उणाय छे, अने बीजानी तेथी विपरीत मोटी स्थिति धैमानिक देयनी पेठे जाणथी. अथवा लोमाहारानी अपेक्षाए चारवार प्रतिसमय

महात्परीरवाळा पर्याप्तावस्थामां आहार करते छे श्वालोच्छ्रयाल पूर्वोक्त प्रमाण वडे होया छतां पूर्ण मयनी अपेक्षाए वारंवार कहेयाय छे अपर्याप्तावस्थामां तो अत्यशीरवाळा लोमाहारपी आहार करता नथी, पण लोमाहारपी आहार करते छे तेथी तेचो कदाचित् आहार करते छे' एम कहेयाय छे अपर्याप्तावस्थामां उच्छ्रयाल लेता मूकता नथी बीजा समये ले छे, माटे कहेयामां आय्यु छे के 'कदाचित् उच्छ्रवास ले छे'.

हवे कर्मसूत्र कहे छे—'अनुकुरमारु ण भते ! सव्ये समकम्मा' ! हे भगवन् ! यथा अनुकुरमारो समान कर्मवाळा छे ?-इत्यादि अर्ही नैरधिकसूत्रनी अपेक्षाए विपर्यास-उलटुं कसु छे कारण के पूर्वे उत्पन्न थयेला नैरविको अल्पकर्मवाळा अने बीजा महाकर्मवाळा कहा छे, अनुकुरमारो तो पूर्वे उत्पन्न थयेला महाकर्मवाळा अने पछी उत्पन्न थयेला अल्प कर्मवाळा छे केवी रीते छे ? तेनो उत्तर ए छे के अनुकुरमारो पोताला मयपी नीकळी तिर्येच अने मनुष्यमां उत्पन्न थता केटलाएक पृथिवी, पाणी अने धनस्पतिकरुप एकेन्द्रियोमा उत्पन्न थाय छे, अने केटलाएक एकेन्द्रियोमा उत्पन्न थाय छे, मनुष्यमां पण उत्पन्न थता कर्मभूमिना गर्भज मनुष्योमा उत्पन्न थाय छे, बाफीनामां उत्पन्न थता नथी छ मासतु आयुए बाकी होय त्पारे परमबन्धु आयुए बाधे छे अने परमवना आयुपना थधसमये एकान्त तिर्येच योग्य के एकान्त मनुष्य योग्य प्रकृतिभोनो उपचय करे छे, तेथी पूर्वे उत्पन्न थयेला महाकर्मवाळा छे जेचो पाछळ उत्पन्न थयेला छे तेमोए हजी पण परमबन्धु आयुए बायु नथी अने तिर्येच अने मनुष्य योग्य प्रकृतिभोनो उपचय कर्यो नथी, तेथी तेचो अल्पकर्मवाळा छे आ सुत्र पण समानस्थितिवाळा अने समानभववाळा परिमित अनुकुरमार सव्ये समज्जु पूर्वे उत्पन्न थयेला पण जेणे परमबन्धु आयुए बायु छे एथा अने पछी उत्पन्न थयेला पण जेणे परमबन्धु आयुए बायु नथी एथा थोडा काळना अन्तरवाळा प्रवृण करपा अन्वया तिर्येच अने मनुष्य योग्य प्रकृतिभो थंघ करपा छता पण पूर्वे उत्पन्न थयेलाथी पछी उत्पन्न थयेलो उत्कृष्टस्थितिवाळो अने नथीन उत्पन्न थयेलो अनन्त सत्तापी महाकर्मवाळो अयएय होय छे

वर्षसूत्रमा जेमो पूर्वे उत्पन्न थयेला छे तेचो अविशुद्ध वर्णवाळा छे केवी रीते छे ? अनुकुरमारोने भवसांसेप प्रयस्त वर्ण

નામકર્મનો શુભ અને તીવ્ર રસવાલો ઉદય છે. અને તે પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલાનો ઘણો ક્ષીણ થયેલો છે, તેથી તેઓ અવિશુદ્ધતર વર્ણવાલા છે. તે સિવાય વીજા પછી ઉત્પન્ન થયેલા હોવાથી હજી સુધી પળ વર્ણો નામકર્મનો ઘણો ક્ષય કર્યો નથી માટે વિશુદ્ધવર્ણવાલા છે. આ સૂત્ર સમાનસ્થિતિવાલા અસુરકુમારની અપેક્ષાપ સમજવું. પવં 'લેસ્સાપંચિ' ઇતિ. પમ લેશ્યા સંવન્ધે પળ જાણવું-પટલે વર્ણસૂત્રની પેટે લેશ્યાસૂત્ર; પળ કહેવું. પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલા અવિશુદ્ધ લેશ્યાવાલા કહેવા અને પછી ઉત્પન્ન થયેલા વિશુદ્ધ લેશ્યાવાલા કહેવા પ માવાર્થ છે. અહીં આ તાત્પર્ય છે—અહીં દેવો અને નૈરયિકોને તેવા પ્રકારના ભવસ્વભાવથી લેશ્યાનો પરિણામ ઉત્પત્તિના સમયથી માંડી ભવના ક્ષય પર્યન્ત નિરંતર હોય છે. જેથી ત્રીજા લેશ્યોદ્દેશકમાં કહેવામાં આવશે કે "સે નૂળં મંતે ! કળ્હલેસે નેરરૂપ કળ્હલેસેસુ નેરરૂપસુ ઉવવજ્જહ, કળ્હલેસે ઉવ્વટ્ટહ, જહ્હેસે ઉવવજ્જહ તહ્હેસે ઉવ્વટ્ટહ" ? इत्यादि. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावालो नैरयिक कृष्णलेश्यावाला नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्णलेश्यावालो थइ मरण पामे ? जे लेश्यावालो थइ मरण पामे ? आ सूत्रनो भावार्थ आ छे-पंचेन्द्रिय तिर्यंच के मनुष्य आयुष क्षीण थवाथी नैरयिकायुष वेदतो ऋजुसूत्रनयनी दृष्टिथी चित्रह्रगतिमां वर्ततो होय तो-पण नारकज कहेवाय छे. तेने कृष्णादि लेश्यानो उदय पूर्वभववुं अन्तर्मुहूर्त आयुष वाकी होय त्यारेज होय छे. प संवन्धे कहुं छे के-

“अन्तर्मुहूर्तमि गर अन्तर्मुहूर्तमि सेसए चेव । लेस्साहि परिणयाहिं जीवा वच्चंति परलोयं ॥

૧ આગામી ભવની લેશ્યાના પ્રથમ સમયે પરભવાયુષનો ઉદય થાય કે પૂર્વભવની લેશ્યાના અન્ત સમયે પરભવના આયુષનો ઉદય થાય અથવા વીજી રીતે થાય ? પ શંકા દૂર કરવા માટે મદ્રવાહુ સ્વામી કહે છે—'પરિણત થયેલી સર્વ લેશ્યાના પ્રથમ સમયે પરભવમાં કોઈ જીવનો ઉપત્તિ થતી નથી, તેમ તેના છેલ્લા સમયે પળ પરભવમાં કોઈની ઉપત્તિ થતી નથી, પરન્તુ આગામી ભવની લેશ્યાનું અન્તર્મુહૂર્ત ગયા પછી તિર્યંચ અને મનુષ્યો અને સ્વભવસંવન્ધી લેશ્યાનું અન્તર્મુહૂર્ત વાકી હોય ત્યારે દેવ અને નારકો પરલોકમાં જાય છે. જુઓ—નૃહસ્ત્રપ્રહણો ટોકા પ. ૧૦૮-૯.

लेख्याभेतु अन्तर्मुहूर्तं गया पक्षी अने अन्तर्मुहूर्तं बाकी होय त्यारे परिणत घयेली लेख्या घटे जीवो परलोकमा जाय छे केवल तिर्वच अने मनुष्यो भागानी मघनी लेख्यातु अन्तर्मुहूर्तं गया पक्षी अने देव अने नारको पोताना मघनी लेख्यातु अन्तर्मुहूर्तं बाकी होय त्यारे परलोकमा जाय छे एम देवो सख्ये पण जाणतु तथा लेख्याध्ययनमा नारकादिने बिये कृष्णादि लेख्यानी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति आ प्रमाणे कही छे—“कापोत लेख्यानी जघन्य स्थिति वस हज्जारनी धरतनी छे उत्कृष्ट स्थिति व्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे नील लेख्यानी जघन्य स्थिति व्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे, कृष्णलेख्यानी जघन्य स्थिति वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे, कृष्णलेख्यानी जघन्य स्थिति वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे, कृष्णलेख्यानी जघन्य स्थिति वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो वस सागरोपम अने पल्योपमनो असख्यातमो भाग छे ए नैरविकोनी लेख्यानी स्थिति वर्णवी ते पक्षी तिर्वच, मनुष्य अने देवोनी स्थिति कहीश—

“ अन्तोमुहूर्तसद्वा लेखाण ठिई जहि जा उ । तिरियनराण वा वज्जिता केवल लेस ” ॥

तिर्वच अने मनुष्यमा जेने जेने विशेषे जे लेख्याभो होय छे तेभोगी केवल-शुफल लेख्याने छोडी अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति छे आ गायानो असपर्यं आ छे-जे जे पृथिवीफायिकादिमा के समूहिम मनुष्यादिमा जे कृष्णादि लेख्याभो छे तेभोगी जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी छे ए लेख्याभो कोरने बिये कोर होय छे-पृथिवी, पानी अने वनस्पतिने कृष्ण, नील, कापोत अने तेजोलेख्या रूप चार लेख्याभो होय छे, अग्नि, वायु, बेरुन्द्रिय, तेरुन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, समूहिम तिर्वच पचेन्द्रिय अने मनुष्यने कृष्ण, नील अने कापोत ए व्रण लेख्याभो छे गर्भज तिर्वच पचेन्द्रिय अने गर्भज मनुष्योने छ ए लेख्याभो होय छे परन्तु ए प्रमाणे शुक्ललेख्यानी स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी घाय ए आ गायाना उत्तरमा कण्ठ छे के ‘केवल’ शुक्ललेख्या-शुक्ललेख्याने छोडीने समजतु ते शुक्ललेख्यानी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट नव वरस न्यून पूर्वकोटि वर्षनी जाणवी आ तिर्वच अने मनुष्यनी लेख्यानी स्थिति वर्णवी छे अने त्यार घात्र देवोनी लेख्यानी स्थिति कहीश— वस हज्जार वर्षनी कृष्णलेख्यानी जघन्य स्थिति छे अने उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमना असख्यातमा भाग प्रमाण छे जे कृष्ण लेख्यानी

ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે તેને સમયાધિક કરતાં નીલલેશ્યાની જગન્ય સ્થિતિ અને પલ્યોપમનો અસંખ્યાતમો ભાગ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ સમજવી. ત્યારવાદ દેવોની તેજોલેશ્યાની સ્થિતિ કહીશ-ભવનપતિ, વ્યન્તર, જ્યોતિષિક અને વૈમાનિકોને તેજોલેશ્યાની દસ હજાર વર્ષની જગન્ય સ્થિતિ છે, અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ બે સાગરોપમ અને પલ્યોપમનો અસંખ્યાતમો ભાગ છે. જે તેજોલેશ્યાની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે તેને સમયાધિક કરતા પચ્ચલેશ્યાની જગન્ય સ્થિતિ અને ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ અન્તર્મુહૂર્ત અધિક દસ સાગરોપમની જાણવી. અહીં અન્તર્મુહૂર્ત અધિક કહ્યું છે તે પૂર્વભવનું અન્તર્મુહૂર્ત અને પછીના ભવનું અન્તર્મુહૂર્ત પમ બે અન્તર્મુહૂર્તની એક વિવશા કરીને કહ્યું છે. કારણ કે દેવ અને નૈરયિકોને લેશ્યા પૂર્વભવના અને ઉત્તરભવના બે અન્તર્મુહૂર્ત અધિક પોતાના આયુષના કાલપ્રમાણ સ્થિતિવાળી હોય છે. તથા જે પચ્ચલેશ્યાની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે તેને સમયાધિક કરતાં શુક્લેશ્યાની જગન્ય સ્થિતિ અને અન્તર્મુહૂર્ત અધિક તેત્રીશ સાગરોપમની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ જાણવી. તેથી પૂર્વે કહેલા આ લેશ્યાની સ્થિતિના પરિમાણથી અને ત્રીજા લેશ્યોદ્દેશ્યકમાં કહેવામાં આવશે તે સૂત્રથી જાણાય છે કે દેવો અને નૈરયિકોને લેશ્યાદ્રવ્યનો પરિણામ ઉત્પત્તિના સમયથી આરંભી ભવના અન્ત સુધી નિરન્તર હોય છે. પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલા અસુરકુમારોપ ઘણાં અને તીવ્રરસવાળાં લેશ્યાદ્રવ્યો અનુભવી અનુભવીને ક્ષય કર્યો છે અને થોડાં મન્દરસવાળાં ચાકી છે તેથી પૂર્વે ઉત્પન્ન થયેલા અવિશુદ્ધલેશ્યાવાળા હોય છે અને પછી ઉત્પન્ન થયેલા તેથી વિપરીત હોવાથી વિશુદ્ધલેશ્યાવાળા હોય છે. 'વેયણપ જહા નેરશ્યા' ઇતિ. વેદનામાં જેમ નૈરયિકો કહ્યા તેમ અસુરકુમારો પણ કહેવા, કારણ કે ત્યાં પણ અસંશીની ઉત્પત્તિ હોય છે. તેમાં જો કે વેદ-નાસૂત્રનો પાઠ નારકોની પેઠે અસુરકુમારોને છે, તો પણ ભાવાર્થમાં વિશેષતા છે. તે આ પ્રમાણે—જેઓ સંશીમૂત છે તે સમ્યદ્દષ્ટિ હોવાથી મહાવેદનાવાળા છે, કારણ કે ચારિત્રની વિરાધનાથી તેઓના ચિત્તને સંતાપ થાય છે. યોજા અસંશીમૂત છે, તે મિથ્યાદ્દષ્ટિ હોવાથી અલ્પવેદનાવાળા છે, કારણ કે તેને ઉપર કહ્યા પ્રમાણે ચિત્તનો સંતાપ નથી. અથવા સંશીમૂત-પૂર્વભવમાં સંશી હોય તે, અથવા પર્યાપ્તા શુભવેદનાને આશ્રયી મહાવેદનાવાળા છે અને પૂર્વભવમાં અસંશી હોય તે અથવા અપર્યાપ્તા અલ્પવેદનાવાળા છે. 'અવસેસં જહા નેરશ્યાણં' ઇતિ. વાકીનું ક્રિયાસૂત્ર અને આયુષસૂત્ર જેમ નૈરયિકોને કહ્યું છે તેમ કહેવું અને સુગમ હોવાથી તેનો સ્વયં વિચાર કરવો.

८. पुढविकाइया आहारकम्मवन्नलेस्साहिं जहा नैरइया । पुढविकाइया सब्बे समवेयणा पलत्ता ! हुंता गो-
यमा ! सब्बे समवेयणा । से केणट्ठेण ? गोयमा ! पुढविकाइया सब्बे असन्नी असन्निभूय अणिययं वेयणं वे-
यन्ति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! पुढविकाइया सब्बे समवेयणा । पुढविकाइया णं भत्ते ! सब्बे समकिरिया ? हुंता
गोयमा ! पुढविकाइया सब्बे समकिरिया । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! पुढविकाइया सब्बे माइमिच्छाविट्ठी, तेसिं
णियइयाओ पंच किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आरभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पचक्खाणकिरिया,

८. पृथिवीकायिको आहार, कर्म, वर्णं अने लेश्या यडे नैरयिकोनी पेठे जाणवा. पृथिवीकायिको यथा समान वेदनावाळा छे ? हा
गौतम ! यथा समानवेदनावाळा छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! पृथिवीकायिको यथा असङ्गी छे अने तेथी
तेओ असंज्ञीभूव-असंज्ञीना जेवी अनियत वेदना वेदे छे. ते हेतुथी हे गौतम ! यथा पृथिवीकायिको समानवेदनावाळा छे,
हे भगवन् ! यथा पृथिवीकायिको समानक्रियावाळा छे ? हा गौतम ! यथा पृथिवीकायिको समानक्रियावाळा छे. हे भगवन् !
एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! यथा पृथिवीकायिको मायी मिध्यादट्टि छे, तेओने नियत-अवश्य पांच क्रियाओ होय छे. ते

प प्रमाणे-असुरकुमारने फळा प्रमाणे नागकुमारथी आरंभी स्तान्तिकुमार सुधी कहेयु

८ 'पुढविकाइया' इत्यादि. पृथिवीकायिको आहार, कर्म, वर्णं अने लेश्याओ यडे जेम नैरयिको फळा छे तेम फट्टेया पृथिवीकायि
फोना शास्त्रादिविषयक चार सुओ नैरयिकसुओनी पेठे पृथिवीकायिकना पाठ यडे फट्टेया प भाषार्थ छे केवल आहारसुत्रमा आ
विचार छे-पृथिवीकायिकेजु भगुलना असंब्यातमा मागप्रमाण इरीर छसा एण अत्यशरीर अने मद्दाशरीर आगमना यत्तथी जाणयु ते

भिच्छादंसणवत्तिया य, से तेणट्टेणं गोयमा ! । एवं जाव चउरिंदिया । पंचदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवरं किरियाहिं सम्महिट्ठी भिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी । तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-असंजता य संजयासंजता य । तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसि णं तिन्नि किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आ-रंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया । तत्थ णं जे अस्संजता तेसि णं चत्तारि किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आरंभि-या, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपचक्खवाणकिरिया । तत्थ णं जे ते भिच्छदिट्ठी जे य सम्मामिच्छदिट्ठी तेसि णं णियइयाओ पंच किरियाओ कज्जन्ति, तंजहा-आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपचक्खवाणकिरिया,

आ प्रमाणे-१ आरंभिकी, २ पारिग्रहिकी, ३ मायाप्रत्ययिकी, ४ अपत्याख्यान क्रिया अने ५ मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहुं छुं. ए प्रमाणे चउरिन्द्रियो सुथी जाणवुं. पंचेन्द्रिय तियचो नेरयिकोनी पेटे जाणवा. परन्तु क्रियावडे सम्यग्दट्टि मिथ्यादट्टि अने सम्यग्मिथ्यादट्टि होय छे. तेमां जे सम्यग्दट्टि छे ते त्रे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे-असंयत-अविरति अने संयता-संयत-देशविरति. तेमां जे संयतासंयत छे तेओने त्रण क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्य-यिकी. तेमां जेओ असंयत छे तेओने चार क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-आरंभिकी, पारिग्रहिकी मायाप्रत्ययिकी अने अप-त्याख्यानक्रिया. तेमां जेओ मिथ्यादट्टि अने जेओ सम्यग्मिथ्यादट्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ थाय छे. ते आ प्रमाणे-

आगम आ प्रमाणे छे-“पुढविक्काए पुढविक्काएयस्स ओगात्तणट्टयाए चउट्टाणवडिप” इत्यादि. पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकनी अपेक्षाए चार स्थानने प्राप्त थयेल छे-इत्यादि. तेमां महाशरीरवाला महाशरीर प्रोवाथी लोमाहार वडे घणा पुद्गलेनो आहार करे छे अने घणा

मिच्छावंसणयत्तिथा, सेस तं वेव ।

महाप्रना
सागुवाद.

॥१०३१॥

आरमिकी, पारिप्रहिकी मायाप्रत्ययिकी, अप्रत्याख्यानक्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. पाकी वपुं तेमज कहेवुं.

पुत्रलोने उच्छ्रयासरुपे ले छे तथा पारंवार भाहार करे छे अने भरण चारीरखाळाने अस्य चारीर होयाथी मत्त भाहार अने भत्त उच्छ्रयास होय छे भाहार अने उच्छ्रयासनु वदचित्तखुं भययासावस्थानी भयेहाय समजयु

इये वेदनामृदु कहे छे--'पुढयिकाशया न भते' सन्ने समवेयणा' ! हे भगवन् ! शु पुण्यिकीकायिको यथा समान्वेदनायाळा छे'-इत्यादि 'मलंती' मिथ्याचरि भयया मनाहित, तेभो मसंकीपूत-मसकीने जे वेदना प्राप्त पाय छे तेथी, ते भयने स्पष्ट करे छे-अनियत-मनिष्ठित स्वकारणाळी वेदना वेरे छे अने वेदनाणे भुभय करया छतां पण मिथ्याचरि होयाथी के मन रहित होयाथी मत्त मूर्च्छितादिनी पेठे 'आ पुरं यंपेला मनुमकर्मनो परिणाम छे' पम जाणता नथी

क्रियासूत्रमा मार्गमिच्छदिष्टि ति माथीमिथ्याचरि छे, कारण के तेभोमां माया मायावाळा उत्पद्य धाय छे ए संयन्धे श्रियशर्म चरि कहे छे--'उम्मगवेसभो मगनासभो मूढहिचयमासो ! सदसीलो ए ससतो तिरियाड यथा जीवो ः'--उम्मगंनो उपवेद्यक, मार्गनो गाराक, मूढहिचयवाळो, मायावाळो, उट्टस्यभायवाळो भो उट्टयुक्त जीय तिरिचपु मायुप यंदि छे माटे तेभो मायावाळा फहे-पाय छे माया अर्धी समस्त भक्तानुसंधी कथायनु उपलक्षण (सूचक) छे, तेथी मायावाळा-धक्तानुसंधी कथायना उदयवाळा अने एपीज मिथ्याचरि होय छे, तेभोने नियत-भयद्य पाच अ क्रियानो होय छे, पण ग्रण मियामो घगेरे नथी होती.' सेण्टेण ते हेतुधी-इत्यादि निगमा-उपलंकार वाक्य छे ए प्रमाणे यावत् 'द्युठदिन्द्रिय सुधी जाणयु' अर्धी महाचारीरखाळा अने अत्यचारीरखाळा पोतपोतानी भयगदाने भुम्कारे जाणया भाहार वेद्येन्द्रियानि प्रसेयरूप समजयो. 'वचिन्द्रिय तिरिचपजोणिया जहा नेरइया' इति पथेन्द्रिय तिरिचपो भेटयिकोनी पेठे जाणया' ए प्रसिद्ध छे परन्तु अर्धी महाचारीरखाळा पारंवार भाहार करे छे अने पारंपार उच्छ्रयास ले छे

१७ लेख्या-

पद.

१ उद्वेगक

॥१०३१॥

९. मणुस्सा णं भंते ! सब्बे समाहारा ? गोयमा ! णो इण्णहे समहे । से केण्णहेणं ? गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-महासरीरा य अप्पसरीरा ते णं तत्थ णं जे ते महासरीरा ते णं बहुतराए पोग्गले आहारंति, जाव बहुतराए पोग्गले नीससंति, आह्च आहारंति, आह्च नीससंति । तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्प-

९. हे भगवन् ! वधा मनुष्यो समान आहारवाळा छे ? हे गौतम ! आ अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! एम था हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! मनुष्यो वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—महाशरीरवाळा अने अल्पशरीरवाळा छे तेओ घणा पुद्गलोनी आहार करे छे, यावत्-घणा पुद्गलोने निःश्वासरूपे मुके छे. कदाचित् आहार ग्रहण करे छे अने कदाचित् निःश्वास मुके

ते संख्याता वरसना आयुषवाळानी अपेक्षाय समजवुं, कारण के ते प्रमाणे देव्याय छे, असंख्यात वरसना आयुषवाळानी अपेक्षाय न समजवुं, कारण के तेओनी प्रक्षेपाहार वे दिवस पछी कहेलो छे. अल्पशरीरवाळाने आहार अने उच्छ्वासवुं कदाचित्पणुं ते अपया-सावस्थामां लोमाहार अने उच्छ्वास नहि होवाथी अने पर्यासावस्थामां होवाथी जाणवुं. परन्तु कर्मसूत्रमां जे पूवें उत्पन्न थयेलाने अल्प कर्म अने बीजाने महाकर्म ते आयुष वगेरे ते भवमां देव्यां योग्य कर्मनी कपेक्षाय समजवुं. वर्ण अने लेइयासूत्रमां पण पूवें उत्पन्न थयेलाने शुभवर्णादि कहा छे ते तरणपणाथी अने पछी उत्पन्न थयेलाने अशुद्ध वर्णादि कहा छे ते बालपणानी अपेक्षाय समजवा. कारण के लोकमां तेवी रीते देव्याय छे. तथा 'संजयासंजया' इति. संयतासंयत-स्थूल प्राणातिपातादिथी निवृत्त थयेलो होवाने लीधे देशविपतिवाळा समजवा, कारण के बीजा मूक्षम प्राणातिपातादिथी तेओ निवृत्त थयेलो नथी.

९. हवे मनुष्य संवन्धी सूत्र कहे छे—'मणुस्सा णं भंते ! सब्बे समाहारा' ? हे भगवन् ! मनुष्यो वधा समानआहारवाळा छे ? इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'आह्च आहारंति, आह्च ऊससंति आह्च नीससंति' इति. कदाचित् आहार ग्रहण करे छे, कदाचित् उच्छ्वास

तराए पोगळे आहारेंति, जाव अप्तराए पोगळे नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, जाव अभिक्खणं नीस-
संति, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुद्धति-‘मनुस्सा सब्बे णो समाहारा’ । सेसं जहा नेरइयाणं, नवर किरियाहिं
मणूसा तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-सम्मदिही, मिच्छादिही, सम्मामिच्छविही । तत्थ णं जे ते ते सम्मविही ते ति-
विहा पन्नत्ता, तंजहा-संयत्ता, असपत्ता, संयत्तासंयत्ता । तत्थ णं जे ते सयत्ता ते बुद्धिहा पन्नत्ता, तंजहा-सरा-
गसंयत्ता य वीयरगसयत्ता य । तत्थ णं जे ते वीयरगसयत्ता ते णं अकिरिया, तत्थ ण जे ते सरागसयत्ता ते

छे. तेमां जेओ अल्पशीरवाळा छे तेओ थोडा पुद्दलोनी आहार करे छे, यावत् अल्प पुद्दलोनी निःश्वास मूके छे. धारवार आहार करे
छे, यावत् धारवार निःश्वास मूके छे. ते कारणथी हे गौतम ! एम कहुं छुं के मनुष्यो वधा समान आहारवाळा नथी. बाकी पधुं नै-
रयिकोनी पेठे जाणुं, परन्तु क्रियाओमां मनुष्यो व्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि.
तेमां जेओ सम्यग्दृष्टि छे ते व्रण प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे-सयत्, असंयत् अने सयत्तासयत्. तेमां जेओ सयत् छे ते वे प्रकारना
छे. ते आ प्रमाणे—सरागसयत् अने वीतरागसयत् छे तेओ क्रियारहित छे. तेमां जेओ वीतरागसयत् छे ते वे

छे छे अने कदाचित् निःश्वास मूके छे मद्दाशीरवाळा रेषकुठ भादिना युगलिक मनुष्यो छे, तेओ कदाचित्तज कयलाहार यठे आहार
करे छे कारण के ‘अट्टममत्तस्स आहारो’ तेओनी आहार अट्टममत्त-व्रण दिवस पछी होय छे-एषु शास्त्रवचन छे तेओनी उच्छ्रयास
-निःश्वास पण बाकीना वीजा मनुष्यनी अपेक्षाए अतिसुखी होयाथी कदाचित्तज होय छे अल्प शरीरवाळा यारवार अल्प आहार करे
छे, कारण के बालको बगेरेने सेवा प्रकारे जणाय छे अने समूहिस अल्पशरीरवाळा मनुष्योने निरंतर आहारलो संमय छे उच्छ्रयास-

दुविहा-पन्नता, तंजहा-पमत्तसंयता य अपमत्तसंयता य । तत्थ णं जे ते अपमत्तसंजया तेसिं एगा मायावत्ति-
या किरिया कज्जति । तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया तेसिं दो किरियाओ कज्जति-आरंभिया मायावत्तिया य ।
तत्थ णं जे ते संजयासंजया तेसिं तिन्नि किरियाओ कज्जति, तंजहा-आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया ।
तत्थ णं जे ते असंजया तेसिं चत्तारि किरियाओ कज्जति, तंजहा-आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्च-

प्रकारना छे—पमत्तसंयत अने अपमत्तसंयत. तेमां जे अपमत्त संयत छे तेओने एक मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय छे. अने जे प्रमत्त-
संयत छे तेओने बे क्रियाओ होय छे—आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी. जेओ संयतासंयत छे तेओने त्रण क्रियाओ होय छे, ते आ-
प्रमाणे—आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्ययिकी. तेमां जेओ असंयत छे तेओने चार क्रियाओ छे. ते आ प्रमाणे-आरंभिकी,
पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी अने अप्रत्याख्यानक्रिया. तेमां जेओ मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे तेओने अवश्य पांच क्रियाओ

निःश्वास पण अल्पशरीरखालाने वांत्वार होय छे, कारण के प्रायः तेओ घणा दुःखी होय छे. 'सेसं जहा नेरइयाणं' इति
वाकी कर्म, वर्णादि संबन्धे सूत्र जेम नैरयिकोने कह्युं छे ते प्रमाणे जाणहुं, परन्तु अहीं पूर्वे उरपन्न थयेलाने तरुणपणाथी शुद्धवर्णादि
जाणवा. क्रियासूत्रमां विशेषता जणावे छे—'किरियादिं मणुसा तिविहा' इत्यादि. परन्तु क्रियाओमां मनुष्य त्रण प्रकारना छे. तेमां
सरागसंयतो-जेना कयायो क्षीण के उपशान्त थया नथी पचा छे वीतरागसंयतो-जेना कयायो उपशान्त अथवा क्षीण थया छे पचा छे अने ते
'अकिरिया' इति कियारहित छे, कारण के वीतराग होवाथी तेओने आरंभादि क्रियानो अभाव छे. अप्रमत्त संयतने एक माया-
प्रत्ययक्रिया होय छे, अने ते शासनना उदुहर्षणमां प्रवृत्त थयेलाने होय छे, कारण के तेना कयायो क्षीण थया नथी. प्रमत्त संयतने
आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी प बे क्रिया होय छे, प्रमत्तसंयतोने सर्व प्रमत्तयोग आरंभरूप छे माटे तेने आरंभिकी क्रिया होय छे अने

फलाणकिरिया । तत्प णं जे ते मिच्छविही जे सम्मामिच्छविही तेसि नियइयाओ पंच किरियाओ फळंति, तंजहा-आरभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपबकत्वाणकिरिया मिच्छावंसणवत्तितां, सेस जहा नेरइयाणं ।
 १०. चाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं । एवं जोइसियवेमाणियाणचि, नवर ते वेदणाए दुविहा पसत्ता, तं जहा-माइमिच्छविहीउववन्नगा य अमाइसम्मविहीउववन्नगा य । तत्प णं जे ते माईमिच्छविहीउववन्नगा ते णं अप्पवेवणतरागा । तत्प णं जे ते अमाईसम्मविहीउववन्नगा ते णं महावेदणतरागा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं होय छे. ते आ प्रमाणे-आरंभिकी, पात्तिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी, अप्रत्याख्यानक्रिया अने मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी. बाकी बाधुं नैरयिकोनी जेम जाणवु.

१०. व्यन्तरोने असुरकुमारोनी जेम समजवु. एम ज्योतिषिक अने वैमानिकोने एण जाणवुं. परत्तु वेदनामां तेओ ने प्रकारना छे-मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्पदृष्टि उत्पन्न थयेला. तेमां जे मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला छे ते अल्पवेदनावाळा होय छे, अने जे अमायी सम्पदृष्टि उत्पन्न थयेला छे तेओ महावेदनावाळा छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं. बाकी तेना कणयो क्षीण नहि थया होवायी मायाप्रत्ययिकी क्रिया होय छे 'सेस जहा नेरइयाण' इति बाकीवु आयुय संकथी सूत्र जे प्रमाणे नैरयिकोने काहू छे ते प्रमाणे कहेवु अने ते सुगम होवायी स्वय विचारी लेवु

१० 'चाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं' ध्यन्तरोने असुरकुमारोनी पेटे कहेवुं-इत्यादि जेम असुरकुमारो संकीभूत अने असवीभूत छे तेमां जे संकीभूत छे ते महावेदनावाळा छे अने असवीभूत छे ते अल्पवेदनावाळा छे-ए प्रमाणे असुरकुमारो संकथे काहू छे

હુચ્છ ! સેસં તહેવ !

વધું તેમજ જાણવું.

તેમ વ્યન્તરો સંવન્ધે પળ કહેવું. કારણ કે અસુરકુમારથી આરંભી વ્યન્તર સુધીના દેવોમાં અસંક્ષી ઉત્પન્ન થાય છે. મગવતીસૂત્રમાં પ્રથમ શતકના વીજા ઉદ્દેશકમાં કહ્યું છે કે 'અસન્ની જહન્નં મવળવાસીસુ ઉક્તોસેળં વાળમંતરેસુ' । અસંક્ષી જઘન્યથી મવળવાસી અને ઉત્કૃષ્ટપણે વ્યન્તરોમાં ઉત્પન્ન થાય છે. અને તેઓ અસુરકુમારના પ્રકરણમાં કહેલી યુક્તિથી અલ્પવેદનાવાલા હોય છે એમ જાણવું. જે પૂર્વે વ્યાખ્યાન કર્યું કે સંક્ષી-સમ્યગ્દષ્ટિ અને અસંક્ષી મિથ્યાદષ્ટિ-પ્ર પ્રમાણે પળ વૃદ્ધ આચાર્યોના વ્યાખ્યાનને અનુસરી, કરેલું વ્યાખ્યાન ઘટે છે, માટે દોષપરહિત છે. પ્ર પ્રમાણે અસુરકુમારને કહેલા પ્રકાર વહે જ્યોતિપિક અને વૈમાનિકોને પળ કહેવું, પરન્તુ વેદનામાં તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા—'દુવિહા જોહસિયા પન્નત્તા, તંજહા-માયિમિચ્છાદિટ્ટીહવઘન્નગા ય' इत्यादि. જે પ્રકારના જ્યોતિપિકો છે-માયી મિથ્યાદષ્ટિ ઉત્પન્ન થયેલા અને અમાયી સમ્યગ્દષ્ટિ ઉત્પન્ન થયેલા-इत्यादि. (પ્ર૦)—જ્યોતિપિક સંવન્ધે ષ્ઠા પ્રકારનો પાઠ કેમ કહ્યો છે, પળ અસુરકુમારની પેઠે 'સન્નિભૂયા ય અસન્નિભૂયા ય'—સંક્ષીભૂત અને 'અસંક્ષીભૂત ષ્ઠો પાઠ કેમ કહેતા નથી? (ઉ૦)—જ્યોતિપિકમાં અસંક્ષી ઉત્પન્ન થતા નથી માટે. પ્ર શાથી જાણવું? યુક્તિથી જાણી શકાય છે, તે આ પ્રમાણે-અસંક્ષીના આયુષની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ પલ્યોપમનો અસંલ્પ્યાતમો ભાગ હોય છે અને જ્યોતિપિકોની જઘન્ય સ્થિતિ પળ પલ્યોપમનો સંલ્પ્યાતમો ભાગ છે, અને વૈમાનિકોની જઘન્ય સ્થિતિ પલ્યોપમની છે તેથી જાણી શકાય છે કે તેઓમાં અસંક્ષી ઉપજતા નથી. અને તેના અમાયથી ઉપર કહ્યા પ્રમાણે પાઠ કહેવામાં આવ્યો છે, પળ અસુરકુમારના પ્રકરણમાં કહ્યા પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યો નથી. તેમાં શુભવેદનાને આશ્રયી માયી મિથ્યાદષ્ટિ અલ્પવેદનાવાલા છે અને વીજા મહાવેદનાવાલા છે.

પ્રજ્ઞાપના
સાબુવાદ

॥૧૦૩૬॥

૧૭ લેખ્યા-

પદ.

૧ ઉદ્દેશક

॥૧૦૩૬॥

११. सलेसा णं भंते ! नेरइया सब्बे समाहारा, समसर्पारा, समुत्सासनिस्सासा-सब्बेवि पुच्छा । गोयमा ! एवं जहा ओहिओ गमओ तथा सलेसागमओवि निरवसेसो भाणियब्बो जाव वेमाणिया । कणहलेसा णं भंते ! नेरइया सब्बे समाहारा-पुच्छा । गोयमा ! जहा ओहिया, नवरं नेरइया धेयणाए माइमिच्छविट्ठीउववन्नगा य जमाइसम्मविट्ठीउववन्नगा य भाणियब्बा, सेस तइव जहा ओहियाणं । असुरकुमारा जाव वाणमंतरा एते जहा ओहिया, नवर मणुस्साणं किरियाहिं यिसेसो-जाव तत्थ णं जे ते सम्मविट्ठी ते तिविहा पन्नत्ता, तंजहा-

११. हे भगवन् ! लेश्यासहित नैरयिको वधा समानअहारावाळा, समानअरीरावाळा अने समानउब्ब्यासनिःश्यासवाळा छे ? एम बीजा वधा सबन्धे पूच्छा करवी. हे गौतम ! जेम औधिक-सामान्य नैरयिको संबन्धे आलापक कसो छे तेम लेश्यासहित समग्र आलापक पण यावत्-वैमानिक सुधी कहेवो. हे भगवन् ! कुण्यलेश्यावाळा नैरयिको वधा समानअहारावाळा छे-इत्यादि पूच्छा. हे गौतम ! जेम औधिक-सामान्य नैरयिको कसा छे तेम कहेवा, पण वेदनामां मायी मिथ्यादृष्टि उपपन्नक अने अमायी सम्यग्दृष्टि-उपपन्नक कहेवा. बाकी वधु जेम सामान्य नैरयिकोने कसु तेमज कहेवु. असुरकुमारयी आरसी व्यन्तर सुधी सामान्य असुरकुमारा-

११. इये सलेस्यपरूप विशेषणयुक्त चोपीय वडकतुं आहारादि नय पदपटे निरूपण करे छे--'सलेसा ण भंते ! नेरइया' हे भगवन् ! लेश्यावाळा नैरयिको वधा समान आहारावाळा छे ? इत्यादि जेम हमणा औधिक-सामान्य, विशेषणरहित आलापक पूर्व कसो तेम सलेस्य संबन्धी समग्र आलापक वैमानिकसूत्र पर्यन्त कहेवो, कारण के सलेस्यपरूप विशेषण सिधाय थीसु विशेषण क्याए पण घटतुं नथी हवे अिअ भिन्न कृष्णादि छेदयला विशेषणयुक्त छ वंडकोतु आहारादि पूर्वो घटे निरूपण करायानी इच्छायाळा

संजया अस्संजया संजयासंजया य, जहा ओहियाणं । जोइसियवेमाणिया आइहियासु तिसु लेसासु ण पुच्छि-
जंति । एवं जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नील्लेस्सावि विचारेयन्वा । काउलेसा नेरइएहिंतो आरब्भ जाव
वाणभंतरा, नवरं काउलेस्सा नेरइया वेदणाए जहा ओहिया । तेउलेसाणं भंते ! असुरकुमाराणं ताओ चेव पुच्छा-
ओ । गोयमा ! जहेव ओहिया तहेव, नवरं वेयणाए जहा जोइसिया । पुढविआउवणस्सइपंचेदियतिरिक्खमणु-

दिनी पेठे कहेहुं. परन्तु मनुष्योने क्रियाओमां विशेषता छे—यावत् तेमां जेओ सम्यग्दृष्टि छे तेओ त्रण प्रकारना छे, ते आ
प्रमाणे—संयत, असंयत अने संयतासंयत—इत्यादि जेम औधिक—सामान्य मनुष्य संबन्धे कहुं छे तेम कहेहुं. ज्योतिषिक अने वैमानिक
संबन्धे आदिनी त्रण लेख्यामां न पूछुं. ए प्रमाणे जेम कृष्णलेख्यावाळा नैरयिकोनो विचार कर्यो तेम नील्लेख्यावाळा नैरयिकोनो
विचार करवो. कापोत लेख्यानो नैरयिकोथी आरंभी व्यन्तरो सुधी. विचार करवो, परन्तु कापोतलेख्यावाळा नैरयिको वेदनामां
सामान्य नैरयिको कखा तेम कहेवा. हे भगवन् ! तेजोलेख्यावाळा असुरकुमारो—इत्यादि असुरकुमार संबन्धे तेज पूर्वोक्त पृच्छा करवी.
हे गौतम ! जेम सामान्य असुरकुमारो कखा तेमज जाणवा. परन्तु वेदनामां ज्योतिषिकनी जेम कहेवा. पृथिवीकाय, अक्काय,

सूत्रकार कहे छे—‘कण्हलेसा णं भंते ! नेरइया’—हे भगवन् ! कृष्णलेख्यावाळा नैरयिको समान आहारवाळा होय—इत्यादि. जेम
औधिक-विशेषणरहित सामान्य नैरयिको आहार, शरीर, उच्छ्वास, कर्म, वर्ण, लेख्या, वेदना, क्रिया अने उपपातरूप नवपदो वडे
पूर्व कखा छे तेम कृष्णलेख्यावाळा पण कहेवा. परन्तु वेदना पदमां नैरयिको आ प्रमाणे कहेवा—‘माइमिच्छदिट्ठीउवन्नगा य अमा-
इसम्मदिट्ठीउवन्नगा य’ मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न थयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न थयेला. परन्तु औधिकसूत्रमां जेम ‘सन्ति-

रसा जहा ओहिया तहेव भाणियब्बा, नवर मणूसा किरियाहिं जे संजता ते पमत्ताय अपमत्ताय भाणियब्बा, सरागा बीयरगा नत्थि । बाणमंतरा तेउलेसाए जहा असुरकुमारा, एयं जोइसियेवेभाणियाचि, सेसं तं चेव । एवं पम्हलेसाचि भाणियब्बा, नवरं जेसिं अत्थि । सुक्कलेस्साचि तहेव जेसिं अत्थि, सब्बं तहेव जहा ओहियाणं

पनस्पत्तिकाय, पंचेन्द्रिय तिर्यच अने मनुष्यो जेम औधिक-सामान्यरूपे कक्षा तेम लेश्यासहित कहेवा. परन्तु मनुष्यो क्रियाओमां जे संयत छे ते प्रमत्त अने अप्रमत्त बे प्रकारना छे, पण सराग अने धीतराग एवा भेद थता नथी. ब्यन्तरो तेजोलेश्यामां असुरकुमारानी जेम कहेवा. एम ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण जाणयुं. बाकी चयु तेमज कहेयुं. ए प्रमाणे पद्मलेश्याबाळा पण कहेया. परन्तु पद्मलेश्या जेओने होय तेओने कहेवी. शुक्ललेश्याबाळा पण तेमज जाणवा, परन्तु शुक्ललेश्या जेओने होय तेओने कहेवी. बाकी

भूया य' 'सखीभूत अने असंखीभूत' प पाठ न कहेयो (प्र०)—शा माटे न कहेयो ? (उ०)—अहाँ असखी प्रथम नरक पृथिवीमा ज उत्पन्न थाय छे, कारण के 'अस्सन्नी बल्लु पढम'—असखी प्रथम नरकपृथिवी सुधी उत्पन्न थाय छे—एवुं शाळु पचन छे, अने प्रथम पृथि वीमां कृष्णलेश्या नथी, जे पाथमी घगेरे नरकपृथिवीमा कृष्णलेश्या छे त्यां असंखी उपजता नथी तेमां मायी विष्याएदि मत्ता धेवनायाळा छे, कारण के प्रकृष्ट-छेघटनी अशुभ स्थिति तेओ थये छे अने प्रकृष्ट अशुभ स्थितिमां मोटी धेवना होय छे, तेथी विपरीत वीखी स्थितिमां अल्प धेवना होय छे असुरपुमारखी मांडी व्यग्तर सुधीगा यथा जीयो जेम औधिक-सामान्यरूपे कक्षा छे तेम कहेया, परन्तु मनुष्योने धिन्याओमां विशेषता छे, ते विशेषता थतावे छे—तत्थ ण जे ते' इत्थादि सम्यग्दि घगेरेमां जे सम्यग्दि छे तेओ त्रण प्रकारना छे—संयत, असयत अने संयतासयत इत्थादि 'जहा मोहियाण' इति-सामान्यत कस्यु छे तेम कृष्णलेश्या थाळाने पण कहेयु जेमेके सयतोने आरंभिकी अने मायाप्रत्ययिकी प वे क्रियामो होय छे अने कृष्णलेश्या प्रमत्तसयतोने होय छे,

गमओ, नवरं पम्हलेस्ससुत्रकलेस्साओ पंचंदियतिरिक्खजोणियमणूसवेमाणियाणं चेव, न सेसाणं ति ।

पन्नवणाए भगवईए सत्तरसे लेस्सापए पढमो उद्देशओ समत्तो ।

बधुं जेम औधिक-सामान्य आलापक कहवो छे तेमज कहेवो. परन्तु पब्लेइया अने शुक्ललेइया पंचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य अने वैमानिकने ज जाणवी, वाकीनाने न जाणवी.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां सत्तरमा लेइयापदनो प्रथम उद्देशक समाप्त.

पण अप्रमत्तसंयतोने होती नथी. तेथी तेओने पूर्वोक्त वेज क्रियाओ होय छे. संयतासंयतने आरंभिकी, पारिग्रहिकी अने मायाप्रत्ययिकी प त्रण क्रियाओ होय छे. अने असंयतने आरंभिकी, पारिग्रहिकी, मायाप्रत्ययिकी अने अप्रत्याख्यानक्रिया प चार क्रियाओ होय छे. ज्योतिषिको अने वैमानिकोने आदिनी त्रण लेइया संवन्धे न पूछुं. पटले ते संवन्धे सूत्र न कहेचुं. कारण के प्रथमनी त्रण लेइयाओ तेओने होती नथी. जेम कृष्णलेइया संवन्धे सूत्र कहुं तेम नीललेइया संवन्धे पण कहेचुं. कारण के तेमां विशेषता नथी. पज वाचत सूत्रकार कहे छे—'एवं जहा किण्हलेसा विचारिया तहा नीललेसा विचारेयब्बा' जेम कृष्णलेइयानो विचार कयो तेम नीललेइयानो पण करवो. नीललेइया विषे सूत्रपाठ प प्रमाणेज छे. मात्र कृष्णलेइयापदनो स्थाने नीललेइयापदनो उच्चार करवो. 'कापोतलेस्सा' इत्यादि. कापोतलेइया सूत्रथी नीललेइयाना लेवी छे अने ते नैरयिकोथी आरंभी व्यन्तरो सुधी कहेवी. परन्तु कापोतलेइयामां नैरयिको जेम वेदनासूत्रमां औधिक-सामान्यरूपे कथा तेम कहेवा—'नैरइया दुचिहा पन्नत्ता-सन्निभूया य असन्निभूया य' जेमके नैरयिको वे प्रकारना छे-संक्षीभूत अने असंक्षीभूत-प प्रमाणे कहेवा. कारण के असंक्षी पण प्रथम नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय छे अने त्यां कापोतलेइया होय छे. तेजोलेइया संवन्धी सूत्र कहे छे—'तेउलेस्सा णं भंते ! असुरकुमार' हे भगवन् ! तेजोलेइयावाळा असुरकुमारो' समानआहारवाळा-वगेरे होय छे ? इत्यादि. अहीं नारको, अग्नि, वायु अने विकलेन्द्रियोने तेजोलेइयानो संभव नथी, माटे

प्रयत्नशील अशुभकुमार सखण्डी सूत्र कष्ट आ कारणशी अन्ति, धातु अने विकलेन्द्रियसूत्र पण न कहेयु अशुभकुमारो पण पूर्व जेम सामान्यरूपे कळा छे तेम कहेया, परन्तु वेदनापमा जेम ज्योतिषिको कळा छे तेम कहेया अने सख्णीभूत अने अलक्षीभूत पम न कहेया परन्तु मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न धयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न धयेला होय छे-पम कहेया, कारण के असखी जीवो तेजोलेश्यावाळामा उत्पन्न यतानयी पृथिवी, पाणी, धनस्पति, तिर्यक्ष पचेन्द्रियो अने मनुष्यो जेम पूर्व सामान्यरूपे कळा छे तेम कहेया परन्तु मनुष्यो क्रियाभोगा जे सयत छे तेभो प्रमत्त अने भ्रमरस पम वे प्रसारणा कहेया, कारण के ते यत्नेने पण तेजोलेश्यानो सभव छे सरतगसयत अने धीतरगसयत प मेवो न कहेया कारण के धीतरगने तेजोलेश्यानो असभव होवाथी धीतरगपदको उच्यव्यास अने तेजोलेश्या सरगने अवश्य होवाथी सरगपदको उपन्यास निरर्थक छे. 'बाणमततप तेउलेसाप जहा अशुभकुमार' ज्यन्तरो तेजो लेश्यामा अशुभकुमारी पेटे आणवा तेभो पण मायी मिथ्यादृष्टि उत्पन्न धयेला अने अमायी सम्यग्दृष्टि उत्पन्न धयेला छे पम कहेयु पण सख्णीभूत अने अलक्षीभूत न कहेया कारण के तेजोलेश्यावाळामा असखीनी उरयति धती नथी 'पवं पम्हलेसावि भाणियव्या' प प्रमाणे पम्हलेस्या पण कहेथी पटले तेजोलेश्याना प्रकरणमा कहेला प्रकारवटे पम्हलेस्या पण कहेथी प भावार्थ छे शु घटा जीवोने सामान्यपणे कहेथी ? नहि 'नवरं जैसि अरिष' परन्तु आ विशेषता छे-जेमोने पम्हलेस्या छे तेभोनेज कहेथी, याकीना जीवोने न कहेथी तेमा पचेन्द्रिय तिर्यक्षो, मनुष्यो अने वेमानिकोने पम्हलेस्या होय छे, याकीनाने होती नथी, माटे पम्हलेस्या सूत्र तेभो सक्पेज होय छे शुभलेस्या पण जेम पम्हलेस्या कही तेमज कहेथी अने ते पण जेमोने होय तेभोने कहेथी जेम अंधिफ-सामान्य पाठ कळो छे तेम यशु सूत्र कहेयु पम्हलेस्या अने शुभलेस्या जेमोने होय तेभोने साक्षात् निर्देश करे छे--'नवरं पम्हसुजलेसाभो' इत्यादि सुगम छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमा सत्तमा लेस्यापदको प्रथम उद्देशक एमास

बीओ उद्देशो ।

१२. कह णं भंते ! लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छहेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कणहलेसा, नीललेसा, काउ-लेसा, तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेस्सा ।

द्वितीय उद्देशक.

१२. हे भगवन् ! केटली लेइयाओ कही छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ कही छे. ते आ प्रमाणे-कृष्णलेइया, नीललेइया, कापोतलेइया, तेजो-लेइया, पत्रलेइया अने शुक्ललेइया.

१२. छ द्वार वगैरे अर्थनुं प्रतिपादन करनार प्रथम उद्देशक कह्यो, हवे बीजो उद्देशक कहेवाय छे, तेनुं आ प्रथम सूत्र छे—‘हे भगवन् ! केटली लेइयाओ कही छे ? आ सूत्रनो पूर्वना उद्देशकनी साथे शो संबन्ध छे ? तेनो आ उत्तर छे—प्रथम उद्देशकमां ‘हे भगवन् ! लेइयावाळा नैरयिको समानआहारवाळा छे इत्यादि कह्युं, अहीं तेज लेइयानो विचार कराय छे—‘केटली लेइयाओ छे ?’ तेमां लेइयानो शब्दार्थ पूर्व कह्यो छे. भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! छ लेइयाओ छे, ते नामथी कहे छे—‘कृष्णलेइया’ इत्यादि. कृष्ण द्रव्यरूप, अथवा कृष्णद्रव्यथी उत्पन्न थयेली लेइया ते कृष्णलेइया. ए प्रमाणे ‘नीललेइया’ इत्यादि पदने विषे पण विचार फरव्यो. ‘हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली लेइयाओ होय छे इत्यादि अल्पबहुत्वनी चकच्यतानी पहिलानुं यहुं सूत्र सुगम छे, परन्तु धैमानिक सूत्रमां जे धैमानिकोने एक तेजो-लेइया कही छे, तेमां आ कारण छे—धैमानिक देवीओ सौधर्म अने ईशानमांज छे. अने तेमां केवल तेजोलेइया छे. अहीं सामान्यतः

૧૩. નેરડયાળં મંતે ! કશ્ લેસાઓ પન્નત્તાઓ ? ગોયમા ! તિન્નિ, તંજહા-કિણ્હલેસા, નીલલેસા, કાડલેસા ! તિરિય્વજોણિયાળં મંતે ! કશ્ લેસ્સાઓ પન્નત્તાઓ ? ગોયમા ! છલ્લેસાઓ પન્નત્તાઓ, તંજહા-કણ્હલેસ્સા, જાવ્ હુલ્લેસા ! પર્ગિવિયાળં મંતે ! કશ્ લેસાઓ પન્નત્તાઓ ? ગોયમા ચત્તારિ લેસાઓ પન્નત્તાઓ, તંજહા-કણ્હલેસા, જાય તેડલેસા ! પુઢચિકાહ્યાળ મંતે ! કશ્ લેસાઓ પન્નત્તાઓ ? ગોયમા ! એવં ચેવ ! આડવળસ્સરફાહ્યાળવિ

૧૩. હે મગવન્ ! નૈરપિકોને કેટલી લેશ્યાઓ હોય છે ? ગૌતમ ! ત્રણ લેશ્યાઓ હોય છે. તે આ પ્રમાણે—કૃષ્ણલેશ્યા, નીલલેશ્યા અને કાપોતલેશ્યા. હે મગવન્ ! તિર્યંચોને કેટલી લેશ્યાઓ છે ? હે ગૌતમ ! છ લેશ્યાઓ છે. તે આ પ્રમાણે—કૃષ્ણલેશ્યા, યાવત્ શુક્લલેશ્યા. હે મગવન્ ! એકેન્દ્રિયોને કેટલી લેશ્યાઓ હોય છે ? હે ગૌતમ ! ચાર લેશ્યાઓ હોય છે. તે આ પ્રમાણે—કૃષ્ણલેશ્યા, યાવત્ તેજોલેશ્યા. હે મગવન્ ! પૃથિવીકાપિકોને કેટલી લેશ્યાઓ હોય છે ? હે ગૌતમ !

નમ્રશ્ચીત્રી ધા ગાયાઓ છે—

“ કિષ્કા નોહા કાહુ તેડલેસા ય મગર્મત્તરિયા ! જોરસષોહમ્મીસાળ તેડલેસા મુળેવ્વા ॥૧॥

કાપ્પે મણ્ણુમારે માહિદે ચેવ મમલોર ય ! એસુ પ્પહલેસા તેળ પર સુક્કલેસા ડ ॥૨॥

પુઢ્પીયાડખ્ખસરવાયપ્પેય ઠેસ ચત્તારિ ! ગમ્મયત્તિરિનોશુ છલ્લેમા તિન્નિ સેસાળ ॥૩॥ ”

કૃષ્ણ, નીલ, કાપોત અને તેજોલેશ્યા મયનપતિ અને વ્યન્તલે શ્રોય છે જ્યોતિરિક, સૌંચર્મ અને ઈશાનને તેજોલેશ્યા હોય છે સન્તપુ-
માર, માહેન્દ્ર અને પ્રલ્લોક પ કસ્પોમા પમ્લેશ્યા અને સ્યાર પઠીશુક્લલેશ્યા હોય છે શાદર પૃથિવીકાય, અકાય અને પ્રત્યેક ઘનસ્પતિ
કાપ્પેને ચાર લેશ્યાઓ, ગર્મજ તિર્યંચ અને મનુષ્યને છ લેશ્યાઓ અને યાકીના જીવોને ત્રણ લેશ્યાઓ હોય છે”

एवं चैव । तेउवाउचेइदियतेइदियचउरिंदियाणं जहा नेरइयाणं । पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! गोयमा !
छल्लेस्सा-कणहलेसा जाव सुक्कलेसा । संशुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! जहा नेरइयाणं ।
गवभवक्कंतियपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसा-कणहलेसा, जाव सुक्कलेसा । तिरिक्खजो-
णियाणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसा एयाओ चैव । मणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसा एयाओ चैव; संशुच्छिम-
मणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! जहा नेरइयाणं । गवभवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! छल्लेसाओ, तंजहा-
कणहलेसा, जाव सुक्कलेसा । मणुस्सीणं पुच्छा । गोयमा ! एवं चैव । देवाणं पुच्छा । गोयमा ! छ एयाओ चैव ।
देवीणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि-कणहलेसा, जाव तेउलेस्सा । भवणवासीणं भंते ! देवाणं पुच्छा । गोयमा एवं

ए प्रमाणे जाणवुं. अक्कायिक अने वनस्पतिकायिकोने पण एमज. समजवुं. तेजस्कायिक, वायुकायिक, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने
चउरिन्द्रियोने नैरयिकोनी जेम जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिको संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने छ लेश्याओ होय छे. कृष्णलेश्या,
यावत् शुक्कलेश्या. संमूछिम तिर्यच पंचेन्द्रिय संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो संबन्धे
पृच्छा. हे गौतम ! छ लेश्याओ होय छे. जेम के कृष्णलेश्या, यावत् शुक्कलेश्या. तिर्यचयोनिक स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज
छ लेश्याओ होय छे. मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज छ लेश्याओ होय छे. संमूछिम मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम !
नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. गर्भज मनुष्यो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! छ लेश्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्कलेश्या.
मनुष्य स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवुं. देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एज छ लेश्याओ होय छे. देवीओ संबन्धे

बेव, एष भवणवासिणीणवि । घाणमंतरदेवाणं पुच्छा । गोयमा ! एवं बेव, एवं घाणमंतरीणवि । जोइसियाणं पुच्छा । गोयमा ! एगा तेउलेसा, एवं जोइसिणीणवि । वेमाणियाणं पुच्छा । गोयमा ! तिन्नि, तंजहा-तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा । वेमाणिणीणं पुच्छा । गोयमा ! एगा तेउलेस्सा ।

१४ एतेसि णं भंते ! जीवाणं सलेस्साणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेस्साणं अलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा बहुया वा तुह्हा वा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सन्वत्थो वा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा, तेउ-

पुच्छा. हे गौतम ! चार लेख्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे-कृष्णलेख्या, यावत् तेजोलेख्या. भवनवासी देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवु. भवनवासिनी देवीओने पण एमज समजवु. व्यन्तर देवो संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! एमज जाणवु. व्यन्तर देवी संबन्धे पण एमज समजवु. ज्योतिषिक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने एक तेजोलेख्या होय छे. ए प्रमाणे ज्योतिषिक देवीओने पण समजवु. वैमानिको संबन्धे पृच्छा हे गौतम ! त्रण लेख्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे-तेजोलेख्या, पयलेख्या अने शुक्कलेख्या, वैमानिक स्त्री संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! तेओने एक तेजोलेख्या होय छे.

१४. हे भगवन् ! लेख्यावाळा, कृष्णलेख्यावाळा, यावत् शुक्कलेख्यावाळा अने लेख्यारहित जीवोमा कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक होय छे ? हे गौतम ! सौथी घोडा जीवो शुक्कलेख्यावाळा होय छे, तेथी पम्हलेख्यावाळा सख्यातगुणा छे, तेथी

१४ हये सलेख्यादि आठ पदोवु अल्पबहुत्व कहे छे—'एयसि ण भंते ! सलेस्साण' हे भगवन् ! लेख्यावाळा इत्यवि आ आठ स्थानोमा कया जीवो फोनाथी धल्प, कया जीवो फोनाथी यणा, कया जीवो फोनी तुल्य, अही माहृत होयाथी प्रीजी विमक्तिमा पण 'कयरेहितो' पयो

लेस्सा संवेज्ञगुणा, अलेस्सा अणंतगुणा, काउलेसा अणंतगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कणहलेसा विसेसाहिया, सलेस्सां विसेसाहिया ।

तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे, तेथी लेश्यारहित अनन्तगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी लेश्यावाळा विशेषाधिक छे.

पांचमी विभक्तिनो निर्देश छे, तेथी पचा प्रकारनी व्याख्यामां दोप नथी. तथा कया जीवो कोनाथी विशेषाधिक छे ? ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कर्यो पटले भगवान् उत्तर आपे छे—हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा छे, शुक्लरूप के शुक्लद्रव्यथी उत्पन्न थयेली लेश्या जेओने होय ते शुक्ललेश्यावाळा जीवो कहेवाय छे. ए प्रमाणे बाकीना स्थानेने विषे पण विग्रहनो विचार करयो. कारण के केदूलाक पंचेन्द्रिय तिर्यचो, मनुष्य अने लान्तकादि देवोमां शुक्ललेश्या होय छे. तेथी पञ्चलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे. कारण के संख्यातगुणा तिर्यच पंचेन्द्रियो, मनुष्यो, सनत्कुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोककल्पवासी देवोमां पञ्चलेश्या होय छे. (प्र०)—लान्तकादि देवोथी सनत्कुमारादि त्रण कल्पमां रहेनारा देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळा करतां पञ्चलेश्यावाळा असंख्यातगुणा थाय, तो संख्यातगुणा केम कह्या ? (उ०)—अहीं जघन्य पवे पण असंख्याता, सनत्कुमारादि त्रण कल्पवासी देवोथी पण असंख्यातगुणा पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चोने. शुक्लेश्या होय छे तेथी पञ्चलेश्याना विचारमां सनत्कुमारादि देवोने प्रक्षेप करीप तोपण असंख्यातगुणा थता नथी, परन्तु जे तिर्यञ्च पंचेन्द्रियनी अपेक्षाप संख्यातगुणपणुं छे ते ज रहे छे, ए माटे शुक्लेश्यावाळा करतां पञ्चलेश्यावाळा संख्यातगुणा छे. तेथी पण संख्यातगुणा तेजोलेश्यावाळा छे. कारण के वादर पृथिवीकाय, अक्काय अने प्रत्येक वनस्पतिकायने तथा संख्यातगुणा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय अने मनुष्योने तथा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने सौधर्म ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे. संख्यातगुणपणमां पूर्वनी पेठे अहीं पण विचार करवो. तेथी पण लेश्यारहित अनन्तगुणा छे, कारण के लेश्यारहित सिद्धो पूर्व करतां अनन्तगुणा छे.

१५. णसि णं भंते ! नेरश्याणं कण्हलेसाणं नीललेस्साणं काउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्वत्थोवा नेरश्या कण्हलेसा, नीललेसा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा। एतेसि णं भंते ! तिरि-
क्खल्लोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्खेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा सब्वत्थोवा तिरिक्ख-
ल्लोणिया सुक्खेसा, एवं जहा ओदिया, नवर अलेसवज्जा। एणसि एणिवियाणं कण्हलेस्साणं नीललेस्साणं काउ-
लेस्साणं तेउलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्वत्थोवा एणिविया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणं

१५. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा ए नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के
विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा नैरयिको कृष्णलेश्यावाळा छे, तेथी नीललेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी कापोतले-
श्यावाळा असंख्यातगुणा छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा, ए तिर्यचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य
के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तिर्यचो शुक्ललेश्यावाळा छे-इत्यादि जेम औधिक-सामान्य लेश्यावाळा जीवो संबंधे
कसुं छे तेम कहेंसुं. परतु लेश्या रहितने वर्जवा. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा अने तेजोलेश्या-

तेथी पण कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे, कारण के सिद्धो कर्त्ता अनन्तगुणा घनस्वत्तिकाधिको कापोतलेश्यावाळा छे तेथी पण
नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे कारण के क्लिष्ट, क्लिष्टतर अभ्ययसाययाळा घणा जीवो
होप छे कृष्णलेश्यावाळा कर्त्ता पण लेश्यावाळा विशेषाधिक छे कारण के तेमां नीललेश्यावाळा घगेरेलो पण प्रक्षेप थाय छे. ए
प्रमाणे सामान्यथी अल्पगुण्यनो विचार कर्यो

तगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कणहलेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! पुढविकाइयाणं कणहलेसाणं जाव तेउ लेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहिया एगिंदिया, नवरं काउलेस्सा असंखेज्जगुणा । एवं आउकाइयाणवि । एतेसि णं भंते ! तेउकाइयाणं कणहलेस्साणं नीललेस्साणं काउलेस्साणय कयरे कयरेहिंतो वाळा एकेन्द्रियोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा एकेन्द्रियो तेजोलेश्यावाळा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा अनंतगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए पृथिवीकायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम औधिक एकेन्द्रियो कहा तेम कहेवा. परन्तु कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा जाणवा. ए प्रमाणे अक्कायिकोने पण कहेवुं. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा ए तेजस्कायिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य

१५. हवे नैरयिकोमां लेश्या संयन्धे अल्पवहुत्वनो विचार करे छे—'पपसि णं भंते ! नेरइयाणं इत्यादि. नैरयिकोने त्रण लेश्याओ होय छे. जेमके कृष्ण, नील, अने कापोतलेश्या. कहं छे के—“कापोतलेश्या प्रथमनी वे नरऋपृथिवीमां, त्रीजीमां मिथ्र-कापोत अने नील ए वन्ने लेश्या, चोथीमां नीललेश्या. पांचमीमां मिथ्र-नील अने लेश्या, छट्टीमां कृष्ण अने ते पछी (सातमीमां) परम कृष्णलेश्या होय छे. तेथी अहीं त्रणे पदोनो परस्पर अल्पवहुत्वनो विचार करवामां आव्यो छे. तेमां सौथी थोडा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको छे, कारण के केटलाएक पांचमी पृथिवीना नरकावासोमां तथा छट्टी अने सातमी नरक पृथिवीमां कृष्णलेश्या होय छे. तेथी असंख्यातगुणा नीललेश्यावाळा छे, कारण के केटलाएक त्रीजी पृथिवीना नरकावासोमां, चोथी समग्र नरक पृथिवीमां तथा पांचमी नरकपृथिवीना केटलाएक नरकावासोमां पूर्वोक्तथी असंख्यातगुणा नैरयिकोने नीललेश्या होय छे. तेथी असंख्यातगुणा कापोतलेश्यावाळा छे. कारण

अप्पा या ४ ? गोथमा ! सन्वत्थोवा तेउकाइया काउलेस्सा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कणहलेस्सा विसेसाहिया, एव चाउकाइयाणवि । पत्तिसि णं भंते ! वणस्सइकाइयाणं कणहलेस्साणं जाव तेउलेस्साणं य जहा एगिदियओहि-याणं । चेइदियाणं तेइदियाणं चउरिंदियाणं जहा तेउकाइयाणं ।

के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजस्कायिको कापोतलेइयावाळा छे, तेथी नीललेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्ण-लेइयावाळा विशेषाधिक छे. ए प्रमाणे चायुक्कायिकोने पण फहेबुं. हे मगचन् ! कृष्णलेइयावाळा यावत् तेजोलेइयावाळा ए वनस्पतिका-यिकोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? जेम सामान्य एकेन्द्रियो संबन्धे फभुं छे तेम कहेबुं. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने तेजस्कायिकोनी पेटे कहेबु.

के प्रथम अने थौथी नरफपृथिवीमा तथा त्रीजी नरकपृथिवीना केटलाएक नरकायातोमा पूर्व कहेलाथी असख्यातगुणा नारकोने कापोत लेइया होय छे हवे तिर्यञ्चो सक्न्धी अल्पयद्बुत्व कहे छे—'एयसि ण भते ! तिरिस्सजोगियाणं' इत्यादि 'एव जहा ओहिया' ए प्रमाणे-पूर्व घतावेला प्रकार घटे जेम पूर्व भौयिक-सामान्य लेइयावाळा जीव फहा छे तेम अही कहेया परंतु लेइयारहितने वर्जया, कारण के तिर्यञ्चोमा लेइयारहितनो असम्भव छे ते मा प्रमाणे-सौथी थोडा शुक्ललेइयावाळा तिर्यञ्चो छे, कारण के तेमो जघन्यपदे पण असख्याता जाणया तेथी सख्यातगुणा पमलेइयावाळा छे, तेथी पण सख्यातगुणा तेजोलेइयावाळा छे, तेथी पण अनन्तगुणा कापोतलेइयावाळा छे, तेथी पण नीललेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेइयावाळा विशेषाधिक छे अने तेथी पण लेइयासहित विशेषाधिक छे हवे एकेन्द्रियोने विदो अल्पयद्बुत्व कहे छे—'एयसिण भते ! पगिदियाणं' इत्यादि सौथी थोडा तेजोलेइयावाळा एकेन्द्रियो छे, कारण के केटलाएक पाइर पृथिवी, पाणी अने धनस्पतिकायिकोने अपर्पासायस्थामां तेजोलेइया होय छे तेथी कापोतलेइयावाळा अनन्तगुणा छे,

१६. एसि णं णं भंते ! पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं कणहलेसाणं एवं जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, नवरं काउलेस्सा असंखेज्जगुणा । संसुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं जहा तेउकाइयाणं । गवभवक्कंतियपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं जहा ओहियाणं तिरिक्खजोणियाणं, नवरं काउलेस्सा संखेज्जगुणा, एवं तिरिक्खलोजोणिणीणवि । एसि णं भंते ! संसुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं गवभवक्कंतियपंचेदियतिरिक्खजोणियाण य कणहलेसाण जाव सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा

१६. हे भगवन् ! कृष्णलेइयावाळा यावत् शुक्कलेइयावाळा ए पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम सामान्य तिर्यचोने कहुं छे तेम कहेहुं. परंतु कापोतलेइयावाळा असंख्यातगुणा छे. संसूछिम पंचेन्द्रिय तिर्यचोने तेजस्कायिकोनी पेठे जाणहुं. गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचोने औधिक-सामान्य तिर्यचोनी जेम कहेहुं. परंतु कापोतलेइयावाळा संख्यातगुणा कहेवा. तिर्यच स्त्री संबन्धे पण एमज कहेहुं. हे भगवन् ! कृष्णलेइयावाळा यावत् शुक्कलेइयावाळा ए संसूछिम पंचेन्द्रिय तिर्यच अने

कारण के अनन्त सूक्ष्म अने वादर निगोदना जीवोने कापोतलेइया होय छे, तेथी पण नीललेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेइयावाळा विशेषाधिक छे. अर्हो भावना पूर्वे कही छे. हवे पृथिवीकायादि संबन्धे अल्पबहुत्व कहेवाहुं छे-तेमां पृथिवी, पाणी अने वनस्पतिकायिकोने चार लेइया होय छे, अने अग्नि अने वायुने त्रण लेइयाओ होय छे, ते प्रकारे सूत्र कहे छे-‘एप्पसिणं भंते पुढं-विकाइयाणं’ इत्यादि, ‘हे भगवन् तेजोलेइयावाळा-इत्यादि सूत्र सुगम छे. अने वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियने विज्ञे पण सुगम छे.

१६. पंचेन्द्रिय तिर्यचना सूत्रमां कापोतलेइयावाळा असंख्यातगुणा जाणवा, पण अनन्तगुणा न समजवा. कारण के पंचेन्द्रिय तिर्यचो वधा मळीने पण असंब्याता छे. संसूछिम पंचेन्द्रिय तिर्यचोने जेम तेजस्कायिकोने कहुं तेम कहेहुं. कारण के तेजस्कायिकोनी पेठे तेओने

तथोवा गर्भवक्त्रं तिर्यपंचेदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेजगुणाओ, पम्ह-
लेसा गर्भवक्त्रं तिर्यपंचेदियतिरिक्खजोणिया संखेजगुणा, पम्हलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेजगुणाओ,
तेउलेसा तिरिक्खजोणिया संखेजगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेजगुणाओ, काउलेसा संखेजगुणा, नी-
ललेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसाओ संखेजगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्ह-
लेसाओ विसेसाहियाओ । एसि णं भंते ! संमुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणियाणं गर्भवक्त्रं तिर्यपंचेदियति-

हे गौतम ! जेम पांचसुं अल्पबहुत्व कहुं तेम आ छट्ठुं अल्पबहुत्व कहेवुं. हे भगवच् ! कृष्णलेस्यावाळा यावद् शुक्कलेस्यावाळा ए
गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो अने तिर्यचस्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्क-
लेस्यावाळा गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो छे, तेथी शुक्कलेस्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेस्यावाळा गर्भज पंचेन्द्रिय
तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेस्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेस्यावाळा तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेस्या-
वाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेस्यावाळा तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी नीललेस्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णले-

हवे संमूच्छिम पंचेन्द्रिय अने गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यच स्त्री संबन्धे सूत्र कहे छे—‘एसि णं भंते ! संमुच्छिमपंचिदियतिरिक्ख-
जोणियाणं तिरिक्खजोणिणीण य’ इत्यादि. आ सूत्र सुगम छे, अने तेनो पूर्वनी पेठे विचार करवो. आ पंचेन्द्रिय तिर्यचस्त्रीना अधिकारमां
छट्ठुं सूत्र छे अने तेनी पूर्वं हमणां कहुं ते पांचसुं सूत्र छे माटे कहुं छे के—‘जहेव पञ्चमं तद्वा इमं छट्ठं भाणियन्वं’ जेम पांचसुं
सूत्र कहुं तेम छट्ठुं सूत्र पण कहेवुं. गर्भज तिर्यच स्त्री विषे सातसुं सूत्र कहे छे—‘एसि णं भंते’ इत्यादि.

रिक्त्वजोगिणीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गम्भयक्कंतिया तिरिक्त्वजोगिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ तिरि० संखेज्जगुणाओ, पण्हलेसा गम्भयक्कंतिया तिरिक्त्वजोगिया संखेज्जगुणा, पण्हलेसाओ तिरिक्त्वजोगिणीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा गम्भयक्कंतिया तिरिक्त्वजोगिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ तिरिक्त्वजोगिणीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसाओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, नीललेसा संखेज्जगुणा, काउलेसा विसेसाहिया, कण्हलेसाओ विसेसा-

श्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. हे मगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा ए समृद्धिम पंचेन्द्रियतिर्यचो, गर्भज पंचेन्द्रियतिर्यचो अने तिर्यच स्त्रीओ-मां फोण फोनाथी अल्प, बद्ध, सुख्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा गर्भज तिर्यचो छे, तेथी शुक्ललेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा गर्भज तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा गर्भज तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यच स्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा गर्भजतिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्या-

वा सूर सुगम छे, परंतु सर्व लेश्यायोगा स्त्रीओ घणी छे अने ते सर्व संख्या घटे पण तिर्यच पुरुषो फलतां तिर्यच स्त्रीओ षण्णगुणी छे कारण के "तिगुणा तिरुक्कवदिया तिरियाण इथिया मुणेयब्बा" 'षण्णगुणी अने षण्ण अधिक तिर्यचोनी स्त्रीओ जाण्ठी'—एयु शास्त्रघचन छे ते माटे संख्यातगुणी कहेली छे, गर्भज नपुसलो पोरण छे पडले पूर्वोक्त अल्पयद्दुत्तने व्याप्त करता नथी हवे समृद्धिम पंचेन्द्रिय

दियाओ, काउलेसा संमुच्छिमपंचेदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया । एएसि णं भंते ! पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणियाणं य कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेसाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा पंचेदियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा, सुक्कलेसाओ संखिज्जगुणाओ, पम्हलेसा संखिज्जगुणा, पम्हलेसाओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ संखिज्जगुणाओ, काउलेसा संखेज्जगुणा, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसा असंखेज्जगुणा, वाली तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा संमूच्छिम पंचेन्द्रियतिर्यचो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्कलेश्यावाळा पंचेन्द्रियतिर्यचो अने तिर्यचस्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्कलेश्यावाळा तिर्यचपंचेन्द्रियो छे, तेथी शुक्कलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी पद्मलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यचो संख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ संख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी तिर्यचस्त्रीओ

तिर्यञ्च, गर्भेज पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च अने तिर्यञ्च स्त्री संयन्धे आठ्ठुं, सामान्य पंचेन्द्रिय तिर्यञ्चो अने तिर्यञ्च स्त्री विषे नवमुं अने सामान्य तिर्यञ्चो अने तिर्यञ्च स्त्री विषे दशमुं अल्पयत्तुल्य कहे छे. 'एएसि णं भंते' इत्यादि. सूत्रनो विचार पूर्वें कएया प्रमाणे करवो. तिर्यञ्च संयन्धे सूत्रनी सङ्कलना कहे छे—'एवमेप दस अप्पायगुणा तिरिक्खजोणियाणं' इति. ए प्रमाणे तिर्यञ्चोना दस अल्पयत्तुल्यो

नीललेसा विसेसाहिया, कण्ढलेसाओ विसेसाहियाओ । पणसि णं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं, तिरिक्खजोणिणीण य कण्ढलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कपरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! जहेव नवमं अप्पाबहुगं तद्दा इमपि, नथर काउलेसा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । एवं एते दस अप्पाबहुगा तिरिक्खजोणियाणं ।

संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी तिर्यंच्छीओ विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंख्यातगुणा छे, तेथी नीललेश्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कृष्ण-लेश्यावाळा यावद् शुक्ललेश्यावाळा ए तिर्यंचो अने तिर्यंच स्त्रीओमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! जेम नवमं अल्पबहुत्व कसु तेम आ पण कहेयुं. परंतु कापोतलेश्यावाळा तिर्यंचो अनन्तगुणा कहेवा. ए प्रमाणे तिर्यंचोना ए दस अल्पबहुत्व कसा छे. ए प्रमाणे मनुष्योने पण अल्पबहुत्व कहेयुं. परंतु तेओने छेळुं अल्पबहुत्व नथी.

तिर्यंचो संख्ये छे परंतु अर्ही पूर्वाचार्योप बतवेळी आ वे सप्तमणी गाथाओ छे—

“ओद्विप्यणिदि १ समुच्छिमा २ य गल्ले ३ तिरिक्खरथीओ ४ । समुच्छ गन्ध तिरिया ५ मुच्छतिरिक्खो य ६ गम्ममि ७ ॥१॥

समुच्छिमागम्भत्थी ८ पर्णिदो तिरिगित्थेयाओ ९ ओद्विथी १० । दस अप्पाबहुगमेआ तिरियाणं होति नायत्था ” ॥२॥

१ ओपिक सामान्य तिर्यंच पचेन्द्रिय, २ समूच्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय, ३ गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय, ४ तिर्यंच स्त्रीओ, ५ समूच्छिम अने गर्भज तिर्यंच पचेन्द्रिय, ६ समूच्छिम पचेन्द्रिय अने तिर्यंच स्त्री, ७ गर्भज तिर्यंच अने तिर्यंच स्त्री, ८ समूच्छिम गर्भज तिर्यंच अने तिर्यंच स्त्री, ९ पचेन्द्रिय तिर्यंच अने स्त्री, १० गोघ-सामान्य तिर्यंचो अने तिर्यंच स्त्री—ए तिर्यंचोना दस अप्पाबहुत्व जाणवां जेम तिर्यंचोना अल्पबहुत्व कसां तेम मनुष्योने पण कहेयां परंतु छेळु दसमु अप्पाबहुत्व नथी, कारण के मनुष्यो अनन्त नथी अने

१७. एसि णं भंते ! देवाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाणं य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? ४ गोयमा ! सब्ब-
त्थोवा देवा सुक्कलेसा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, नील्लेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेसा
विसेसाहिया, तेउलेसा संखेज्जगुणा । एसि णं भंते ! देवीणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाणं य कयरे कयरेहिंतो
अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवाओ देवीओ काउलेसाओ, नील्लेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसा विसेसाहियाओ
तेउलेसाओ संखेज्जगुणाओ एवं । एसि णं भंते ! देवाणं देवीणं य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाणं य कयरे कयरेहिंतो

१७. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा देवोमां कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे
गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंब्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंब्यातगुणा छे,
तेथी नील्लेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा संब्यातगुणा छे. हे भगवन् !
कृष्णलेश्यावाळी यावत् तेजोलेश्यावाळी देवीओमां कोण कोनाथी अल्प ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडी कापोतलेश्यावाळी देवीओ
छे, तेथी नील्लेश्यावाळी देवीओ विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी संब्यातगुणी छे.

अनन्ता नहि होवाथी कापोतलेश्यावाळा अनन्तगुणा छे प पदनो संभव छे.

१७. ह्ये देव संबन्धे अल्पबहुत्व कहे छे—'एपसिणं भंते ! देवाणं' इत्यादि. सौथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे, कारण के
लान्तकादि देवलोकमां ज शुक्ललेश्यावाळा देवो होय छे. तेथी पद्मलेश्यावाळा असंब्यातगुणा छे, कारण के सनत्कुमार, माहेन्द्र अने
ब्रह्मलोक कल्पमां पद्मलेश्या होय छे अने तेओ लान्तकादि देवो करतां असंब्यातगुणा छे. तेथी कापोतलेश्यावाळा असंब्यातगुणा छे,

अप्पा धा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोया देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असंतेज्जगुणा, फाउलेसा असंतेज्जगुणा, नील-
लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, फाउलेसाओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ,
कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा देवा संखेज्जगुणा, तेउलेसाओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।

हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्कलेश्यावाळा देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम !
सौथी थोडा शुक्कलेश्यावाळा देवो छे, तेथी पम्हलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे, तेथी नील अने
कृष्णलेश्यावाळा अनुक्रमे विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी
कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा देवो सल्यातगुणा छे, अने तेथी तेजोलेश्यावाळी देवीओ सल्यागुणी छे.

कारण के सनत्तुभारादि देवो फरत्ता असल्यानगुणा भयनगति अने व्यन्तर देवोमां कापोतलेश्यावो सम्भय छे. तेथी पण नीललेश्या
वाळा विशेषाधिक छे, कारण के घणा भयनगति अने व्यन्तरने नीललेश्यावो सम्भय छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे,
कारण के अति घणा भयनगति अने व्यन्तरने कृष्णलेश्या होय छे तेथी पण तेजोलेश्यावाळा सल्यातगुणा छे, कारण के फेडलाक
भयनगति अने व्यन्तरने तथा सर्वे ज्योतिषिक, सौधर्म अने ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे

इहे देवी सम्यन्हे अस्पययुत्थ कहे छे—'पयसिण भते ! देवीण' इत्यादि देवीओ सौधर्म अने ईशान देवलोक सुधी ज होय छे
भागळ्ना देवलोकमा नधी माटे तेओने चार ज लेश्याओ होय छे तेथी ने सम्यन्हे ज भस्पययुत्थ कहेयाती इच्छायाळा सत्यपारे
'जाय तेउलेसाण य' यावत् 'तेजोलेश्यावाळी' पम पाठ पण फह्यो छे सौथी कोळी देवीओ कापोतलेश्यावाळी छे, कारण के फेडतीक
भयनगतिनी अने व्यन्तरनी देवीओने कापोतलेश्या होय छे तेथी नीललेश्यावाळी विशेषाधिक छे, कारण के घणी भयनगतिनी अने

१८. एएसि णं भंते ! भवणवासीणं देवाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेस्साणं य कयरे कयरेहिंतो अण्णा वा ४ ? गोयमा ! सब्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेसा, काउलेसा असंखेज्जगुणा, नील्लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा

१८. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा ए भवनवासी देवोमां कोण कोनाथी अल्प०४ छे ? हे गौतम ! सोथी थोडा तेजोलेश्यावाळा भवनवासी देवो छे, तेथी कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नील्लेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी

व्यन्तरनी देवीओने नील्लेश्यानो सम्भव छे. तेथी पण कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे, कारण के ते घणी देवीओने कृष्णलेश्या होय छे. तेथी तेजोलेश्यावाळा संख्यातगुणी छे, कारण के ज्योतिषिक, सोधर्म अने ईशान देवलोकनी वधी देवीओने तेजोलेश्या होय छे.

इवे देव अने देवीना अल्पवहुत्व सम्यन्धे सूत्र कहे छे—“एएसि णं” इत्यादि. सोथी थोडा शुक्ललेश्यावाळा देवो छे, तेथी पद्मलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी पण कापोतलेश्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी नील्लेश्यावाळा विशेषाधिक छे, तेथी पण कृष्णलेश्यावाळा विशेषाधिक छे, पटलानो पूर्वे विचार कर्यो छे. तेथी पण कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, अने ते भवनपति अने व्यन्तरनिकायनी अन्तर्गत जाणची. कारण के बीजे देवीओने कापोतलेश्यानो असम्भव छे. देवीओ देवो करतां दरेक निकायमां सामान्य रीते वचीशगुणी छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळा देवोथी कापोतलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी पण घटे छे. तेथी नील्लेश्यावाळी देवीओ विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेश्यावाळी विशेषाधिक छे. अर्हाँ पण पूर्वनी पेठे विचार करवो. तेथी पण तेजोलेश्यावाळा देवो संख्यातगुणा छे, कारण के केटलाक भवनपति, व्यन्तरो अने तथा सोधर्म अने ईशान देवोने तेजोलेश्या होय छे. तेथी पण तेजोलेश्यावाळी देवीओ संख्यातगुणी छे, कारण के देवो करतां देवीओ वचीशगुणी छे.

१८. इवे भवनवासी देवो संवंधे अल्पवहुत्व फट्टे छे—“एएसिणं भंते” इत्यादि. सोथी थोडा तेजोलेश्यावाळा छे, कारण के महद्विक

विसेसाहिया । एतेसि णं मंते ! भवणवासिणीं देवीं कण्हलेसाणं जाय तेउलेसाण य कतरे कतरेहितो अप्पा या ४ ? गोयमा ! एवं चैव । एएसि णं मंते ! भवणवासीणं देधानं देवीण य कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाण य कयरे कयरेहितो अप्पा या ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउलेसा, भवणवासिणीओ तेउलेसाओ संखेज्जगुणाओ, काउलेसा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, नील्लेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिया, काउलेसा भवणवासिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, नील्लेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ,

कण्हलेइयावाळा विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! कण्हलेइयावाळी यान् तेजोलेइयावाळी ए भवनवासिनी देवीओमा कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! एमज जाणवु. हे भगवन् ! कण्हलेइयावाळा यावत् तेजोलेइयावाळा ए भवनवासी देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा तेजोलेइयावाळा भवनवासी देवो छे, तेथी तेजोलेइयावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेइयावाळा भवनवासी देवो असंख्यातगुणा छे, तेथी नील्लेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कण्हले-

(भोटी अद्रिवाळा) देवो तेजोलेइयावाळा होय छे अने महर्दिक तो थोडा होय छे माटे सौथी थोडा छे तेथी असख्यातगुणा कापोतले इयावाळा छे कारण के अतिशय घणा भवनवासी देवोने कापोतलेइयावो समय छे तेथी नील्लेइयावाळा विशेषाधिक छे, कारण के तेथी घणा भवनवासी देवोने नील्लेइयावो समय छे तेथी पण कण्हलेइयावाळा विशेषाधिक छे कारण के तेथी पण घणा भवनवासी देवोने कण्हलेइया होय छे ए प्रमाणे भवनपतिदेवी सवये पण सूत्र जाणवु

इथे भवनपति देव अने देवी यिये अब्बयडुत्व कहे-छे 'पपसिण' इत्यादि सौथी थोडा तेजोलेइयावाळा भवनवासी देवो छे अही युक्ति पूर्व कही छे तेथी तेजोलेइयावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे कारण के सामान्य रीते देवो करतां देवीओ वरेक निकायमे

एवं वाणमंतराणं, तिन्नेव अप्पावहुया जहेव भवणवासीणं तहेव भाणियव्वा ।

૧૯. एतेसि णं भंते ! जोइसियाणं देवाणं देवीण य तेउलेसाणं कयरे कयरेहिंतो ? अप्पा वा ४ ? गोयमा !
सवत्थोवा जोइसिया देवा तेउलेस्सा, जोइसिणीओ देवीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ।

૨૦. एएसि णं भंते ? वेमाणियाणं देवाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा
श्यावाळा विशेषાધિક છે, તેથી કાપોતલેશ્યાવાલી ભવનવાસિની દેવીઓ સંખ્યાતગુણી છે, તેથી નીલલેશ્યાવાલી વિશેષાધિક છે અને તેથી કૃષ્ણલેશ્યાવાલી વિશેષાધિક છે. એ પ્રમાણે વ્યંતર દેવોને જેમ ભવનવાસીને ત્રણ અલ્પ વહુત્વો કહ્યાં તેમ કહેવાં.

૧૯. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा ए ज्योतिषिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प० ४ छे ? हे गौतम । सौथी थोडा तेजोलेश्यावाळा ज्योतिषिक देवो छे, तेथी तेजोलेश्यावाळी ज्योतिषिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

૨૦. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा पब्लेश्यावाळा अने शुक्लेश्यावाळा ए वैमानिक देवोमां कोण कोनाथी अल्प छे० ४ ? हे गौतम !

વત્રીશગુણી છે, તેથી સંખ્યાતગુણી ઘટે છે. તેથી કાપોતલેશ્યાવાळा ભવનવાસી દેવો અસંખ્યાતગુણા છે. તેથી નીલલેશ્યાવાळा વિશેષાધિક છે. તેથી પણ કૃષ્ણલેશ્યાવાळा વિશેષાધિક છે. અહીં પૂર્વે કહેલી યુક્તિતું અનુસરણ કરું. તેથી કાપોતલેશ્યાવાळી ભવનવાસિની દેવીઓ સંખ્યાતગુણી છે. ભાવના પૂર્વે કહેલી ભાવનાને અનુસારે કહેવી-પટલે તેનું કારણ પૂર્વે કહ્યા પ્રમાણે સમજાવું. તેથી નીલલેશ્યાવાळી દેવીઓ વિશેષાધિક છે. તેથી કૃષ્ણલેશ્યાવાळી દેવીઓ વિશેષાધિક છે. એ પ્રમાણે વ્યંતર સંવંધે પણ ત્રણે સૂત્રનો વિચાર કરવો.

૧૯. જ્યોતિષિક દેવો સંવંધે એક જ સૂત્ર છે, કારણ કે તે ત્રિકાયમાં તેજોલેશ્યા સિવાય બીજી લેશ્યાનો અસંભવ હોવાથી દેવ અને દેવી સંવંધે બે જુદા સૂત્રો નથી.

४ ! गोपमा ! सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेसा, पम्हलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा असंखेज्जगुणा । एतेसि णं भत्ते ! वेमाणियाण देवाणं देवीण य तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेस्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा चा ४ ? गोपमा ! सब्बत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेसाओ वेमाणिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ।

सौथी थोढा शुक्कलेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पद्दलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे. हे भगवन् ! तेजोलेश्यावाळा, पद्दलेश्यावाळा अने शुक्कलेश्यावाळा ए वैमानिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोढा शुक्कलेश्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पद्दलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेश्यावाळा असल्यातगुणा छे अने तेथी तेजोलेश्याली वैमानिक देवीओ सल्यातगुणी छे.

२० वैमानिक देव संघचे अल्पदुत्व कहे छे-‘एपसिण भत्ते’ ! वेमाणियाण इत्यादि सौथी थोढा शुक्कलेश्यावाळा वैमानिक देवो छे कारण के लातकादि देवोने ज शुक्कलेश्यालो समव छे. अने तेवो उत्कर्षधी पण श्रेणिना असख्यातमा मागना प्रवेश राक्षिप्रमाण छे तेथी पद्दलेश्यावाळा असख्यातगुणा छे, कारण के सनाकुमार, माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पवासी सयं देवोने पद्दलेश्यालो समव छे अने तेवो श्रेणिना भत्तयत मोटा असख्यातमा मागना आकाशप्रवेश प्रमाण छे लात्ताकदेयना परिमाणनुं कारण श्रेणिना असख्यातमा मागनी अपेक्षाए तेजोना परिमाणनुं हेतु श्रेणिना असख्यातमो भाग असख्यातगुण छे तेथी पण तेजोलेश्यावाळा देवो असख्यातगुणा छे तेजोलेश्या सौधर्म अने ईशानदेवोने होय छे अगुलप्रमाण क्षेत्रना प्रवेशराशिना थीजा धर्ममूलने थीजा धर्ममूलयहे गुणयाथी जेटळा प्रवेशो थाय तेडली घनीश्रत लोकनी एक प्रवेशवाळी श्रेणिओमा जेटळा आकाशप्रवेशो होय तेडला ईशाकल्पमा देववेधीओने

२१. एएसि णं भंते ! भवणवासीदेवाणं वाणमंतराणं जोइसियाणं वैमाणियाण य देवाण य कणहलेसाणं जाव सु-
क्कलेसाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा चा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा अ-
संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नील-
लेसा चिसेसाहिया, कणहलेसा चिसेसाहिया, तेउलेसा वाणमंतरा देवा असंखेज्जगुणा, काउलेसा असंखेज्जगुणा,

२१. हे भगवन् ! कृष्णलेइयावाळा यावत् शुक्लले यावाळा ए भवनवासीदेवो, व्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोमां कोण
कोनाथी अल्प० ४ छे? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेइयावाळा वैमानिकदेवो छे. तेथी पञ्चलेइयावाळा असंब्यातगुणा छे. तेथी
तेजोलेइयावाळा असंब्यातगुणा छे. तेथी तेजोलेइयावाळा भवनवासी देवो असंब्यातगुणा छे. तेथी कापोतलेइयावाळा असंब्यातगुणा
छे. तेथी नीललेइयावाळा विशेषाधिक छे. तेथी कृष्णलेइयावाळा विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेइयावाळा व्यंतरदेवो असंब्यातगुणा छे.

समुदाय छे, तेथी कंइक न्यून वत्रीशमा भाग जेटला ईशान देवो छे. तेथी पण संब्यातगुणा सौधर्म कल्पना देवो छे. तेथी पञ्चलेइया-
वाळाथी तेजोलेइयावाळा असंब्यातगुणा छे. देवीओ सौधर्म अने ईशानकल्पमां ज छे अने त्यां केवळ तेजोलेइया छे. तेथी वीजी
लेइयानो संभव नहि होवाथी ते संबधे खुं सुं सूत्र कळुं नथी. हवे धैमानिक देव अने देवीओं अल्पबहुत्व कहे छे--'एएसिणं भंते !
वैमाणियाणं देवाणं देवीण य' इत्यादि सूत्र सुगम छे, परन्तु 'तेजोलेइयावाळी धैमानिक देवीओ संब्यातगुणी छे.' कारण के देवो
करतां देवीओ वत्रीशगुणी छे.

२१. भवनपति, व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोना अल्पबहुत्व संबधे सूत्र कहे छे--'एएसिणं भंते ! भवणवासिणं'
इत्यादि. तेमां सौथी थोडा शुक्ललेइयावाळा धैमानिक देवो छे. तेथी पञ्चलेइयावाळा असंब्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेइयावाळा

નીલલેસા વિસેસાહિયા, કળહલેસા વિસેસાહિયા, તેડલેસા જોહસિયા દેવા સલેહગુણા । एषसि णं मंते । भवण-
वासिणीं वाणमंतरीं जोहसिणीं वेमाणिणीं य कणहलेसाणं जाव तेडलेसाणं य कयरे कयरेहितो अप्पा
वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेडलेसाओ, भवणवासिणीओ तेडलेसाओ असलेहगु-
णाओ, काडलेसाओ असलेहगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कणहलेसाओ विसेसाहियाओ, तेडलेसाओ
वाणमंतरीओ देवीओ असलेहगुणाओ, काडलेसाओ असलेहगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कणहले-
साओ विसेसाहियाओ, तेडलेसाओ जोहसिणीओ देवीओ संखेहगुणाओ ।

તેથી કાપોતલેશ્યાવાહા અસહ્યાતગુણા છે. તેથી નીલલેશ્યાવાહા વિશેષાધિક છે. તેથી તેજો-
લેશ્યાવાહા જ્યોત્તિપિક દેવો સહ્યાતગુણા છે હે મગવન્ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાહી યાવત્ તેજોલેશ્યાવાહી મવનવાસિની દેવી, વ્યંતર દેવી, જ્યો-
ત્તિપિક દેવી અને વૈમાનિક દેવીઓમાં કોણ કોનાથી અલ્પ ૦ ૪ છે ? હે ગૌતમ ! સૌથી થોડી તેજોલેશ્યાવાહી વૈમાનિક દેવીઓ છે.
તેથી તેજોલેશ્યાવાહી મવનવાસિની દેવીઓ અસંખ્યાતગુણી છે. તેથી કાપોતલેશ્યાવાહી અસહ્યાતગુણી છે, તેથી નીલલેશ્યાવાહી
વિશેષાધિક છે તેથી કૃષ્ણલેશ્યાવાહી વિશેષાધિક છે. તેથી તેજોલેશ્યાવાહી વ્યન્તરી દેવીઓ અસહ્યાતગુણી છે. તેથી કાપોતલેશ્યા-
વાહી અસહ્યાતગુણી છે. તેથી નીલલેશ્યાવાહી વિશેષાધિક છે. તેથી કૃષ્ણલેશ્યાવાહી વિશેષાધિક છે અને તેથી તેજોલેશ્યાવાહી જ્યો-

અસહ્યાતગુણા છે તેનો વિચાર દ્રમણા જ કરેલો છે તેથી તેજોલેશ્યાવાહા મવનવાસી દેવો અમહ્યાતગુણા છે શી રીતે છે ?
અગુલ્પમાણ દેવના પ્રવેશોના પ્રથમ ધર્મામૂલને ત્રીજા ધર્ગમૂલયદે ગુણતા એટલા પ્રવેશો આવે તેટલી ધર્મીપૂત લોકની પદ્ક પ્રવેશવાહી

२२. एणसि णं भंते ! भवणवासीणं जाव वेमाणियाणं देवाण य देवीण य कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाण य कररे कररेद्धितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ? सब्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेसा. पम्हलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसा असंखेज्जगुणा, तेउलेसाओ वेमाणियदेवीओ संखेज्जगुणाओ, तेउलेसा भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, तिथिक देवीओ संख्यातगुणी छे.

२२. हे भगवन् ! कृष्णलेख्यावाळा यावत् शुक्ललेख्यावाळा ए भगवन्वासी देवो यावत् वैमानिक देवो अने देवीओमां कोण कोनाथी अल्प ० ४ छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा शुक्ललेख्यावाळा वैमानिक देवो छे, तेथी पन्नलेख्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजो-लेख्यावाळा असंख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेख्यावाळी वैमानिक देवीओ संख्यातगुणी छे, तेथी तेजोलेख्यावाळा भवनवासी देवो असं-श्रेणिओमां जेटला आकाशप्रदेशो होय तेटला भवनपति देवदेवीनो समुदाय छे. तेथी कंडक न्यून यत्रीशमा भाग जेटला भवनपति देवो छे. अने तेथी पओ घणा होवाथी सौंधर्म ईशान देवो करतां तेजोलेख्यावाळा भवनपति देवो असंख्यातगुणा छे. तेथी कापोतेलेख्या-वाळा भवनपति देवो ज असंख्यातगुणा छे, कारण के अल्पक्रुद्धिवाळा पण घणाने कापोत लेख्यानो सम्भव छे. तेथी भवनवासी ज नीललेख्यावाळा विशेषाधिक छे. अर्ही युक्ति पूर्वं काही छे. तेथी कृष्णलेख्यावाळा विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेख्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा छे. केवी रीते छे ? अर्ही एक प्रतरमां भंख्याता कोटाकोटी योजनप्रमाण सूचीरूप लण्डो जेटला होय तेटला व्यन्तर देवदेवीओनो समुदाय छे. तेथी कंडक न्यून यत्रीशमा भाग जेटला व्यन्तरदेवो छे. तेथी तेओ भवनपति करतां पणा होय छे. माटे कृष्ण लेख्यावाळा भवनपति करतां तेजोलेख्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा घटे छे. तेथी पण कापोतेलेख्यावाळा व्यन्तरो असंख्यातगुणा छे. कारण के गल्प क्रुद्धिवाळाने पण कापोतेलेख्या होय छे. तेथी नीललेख्यावाळा व्यन्तरो विशेषाधिक छे. तेथी पण कृष्णलेख्यावाळा व्यन्तरो विशेषाधिक छे. अर्ही पण पूर्वं कहेली युक्तिउं अनुसरण करुं. तेथी तेजोलेख्यावाळा ज्योतिषिक देवो संख्यातगुणा छे,

तेउलेसाओ भवणवासिणीओ देवीओ सखेज्जगुणाओ, काउलेसा भवणवासी असखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसा-
हिया, कण्हलेसा विसेसाहिआ, काउलेसाओ भवणवासिणीओ सखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ,
कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा घाणमंतरा सखेज्जगुणा, तेउलेसाओ घाणमंतरीओ सखेज्जगुणाओ, काउ-
लेसा घाणमंतरा असखेज्जगुणा, नीललेसा विसेसाहिया, कण्हलेसा विसेसाहिआ, काउलेसाओ घाणमंतरीओ
सखेज्जगुणाओ, नीललेसाओ विसेसाहियाओ, कण्हलेसाओ विसेसाहियाओ, तेउलेसा जोइसिया सखेज्जगुणा,

ख्यातगुणा छे, तेथी तेजोलेइयावाळी भवनवासिनी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेइयावाळा भवनवासी देवो असख्यातगुणा
छे, तेथी नीललेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेइयावाळी भवनवासिनी देवीओ सं-
ख्यातगुणी छे, तेथी नीललेइयावाळी विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेइयावाळी विशेषाधिक छे. तेथी तेजोलेइयावाळा व्यतरदेवो सख्या-
तगुणा छे, तेथी तेजोलेइयावाळी व्यंतरी देवीओ सख्यातगुणी छे, तेथी कापोतलेइयावाळा व्यंतर देवो असख्यातगुणा छे, तेथी
नीललेइयावावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कृष्णलेइयावाळा विशेषाधिक छे, तेथी कापोतलेइयावाळी व्यंतरदेवीओ संख्यातगुणी छे.

कारण के एक प्रतरा बसो छप्पन अगुल प्रमाण सूचीरूप खण्डो जेटला होय जेटला ज्योतिपिक देवघेधीओनो समुवाय छे, तेथी
कंसक न्यून यत्रीयमा भाग जेटला ज्योतिपिक देवो छे तेथी कृष्णलेइयावाळा व्यन्तरोथी ज्योतिपिक देवो सख्यातगुणा अ प्रदी शके
शके छे, एण असख्यातगुणा घटता मथी कारण के सूचिरूप खण्डु प्रमाण सख्याता कोटाकोटी योजनी अपेक्षाए यसो छप्पन
अगुल सख्यातमा मागे छे इवे भयनयासिनी आदि देवी सम्बन्धे अने त्याएएछी मयवपति पगेरे देवो अने देवीओ सम्बन्धे अल्प-
पइत्व कहे छे—आ एले सूत्रो पूर्वोक्त भावनाने अनुसारे विचारवा

તેડલેસાઓ ઝોઈસિણીઓ સંઘ્વિજ્જગુણાઓ ।

૨૩. ઇપ્સિ ણં ંતે ! જીવાણં કળ્હલેસાણં જાવ સુઠ્ઠલેસાણં ચ કયરે કયરેહિંતો અપ્પહ્ધિયાં વા મહ્હિયાં વા ? ગોયમા ! કળ્હલેસેહિંતો નીલલેસા મહ્હિયા, નીલલેસેહિંતો કાડલેસા મહ્હિયા, ંવં કાડલેસેહિંતો તેડલેસા મહ્હિયા, તેડલેસેહિંતો પમ્હલેસા મહ્હિયા, પમ્હલેસેહિંતો સુઠ્ઠલેસા મહ્હિયા, સંઘ્વપ્પહ્ધિયા જીવા કળ્હલેસા, તેથી નીલલેશ્યાવાલી વિશેષાધિક છે, તેથી ક્ષણલેશ્યાવાલી વિશેષાધિક છે. તેથી તેજોલેશ્યાવાલા જ્યોતિષિક દેવો સંહ્યાતગુણા છે, તેથી તેજોલેશ્યાવાલી જ્યોતિષિક દેવીઓ સંહ્યાતગુણી છે.

૨૩. હે ભગવન્ ! ઇ ક્ષણલેશ્યાવાલા યાવત્ શુક્કલેશ્યાવાલામાં કોણ કોનાથી અલ્પક્ષદ્ધિવાલા છે કે મોટી ક્ષદ્ધિવાલા છે ? હે ગૌતમ ! ક્ષણલેશ્યાવાલા કરતાં નીલલેશ્યાવાલા મોટી ક્ષદ્ધિવાલા છે, નીલલેશ્યાવાલા કરતાં કાપોતલેશ્યાવાલા મોટી ક્ષદ્ધિવાલા છે, ઇમ કાપોતલેશ્યાવાલાથી તેજોલેશ્યાવાલા, તેજોલેશ્યાવાલાથી પદ્મલેશ્યાવાલા અને પદ્મલેશ્યાવાલાથી શુક્કલેશ્યાવાલા મહદ્ધિક છે. સૌથી

૨૩. હવે લેશ્યાવાલા જીવોં અલ્પક્ષદ્ધિકપણું અને મહદ્ધિકપણું પ્રતિપાદન કરવાનો રહ્યાવાલા સૂત્રકાર આ સૂત્ર કહે છે—'પ્પસિ ણં ંતે ! જીવાણં કળ્હલેસાણં' ઇત્યાદિ સુગમ છે. પરંતુ લેશ્યાના ક્રમથી ઉત્તરોત્તર મહદ્ધિકપણું અને પૂર્વે અલ્પક્ષદ્ધિકપણું જાણું. ઇ પ્રમાણે નારક, તિર્યંચ, મનુષ્ય અને ધૈમાનિક સમ્યન્થે પળ સૂત્રોનો વિચાર કરવો. જેઓને જેટલી લેશ્યાઓ હોય તેઓને તેટલી લેશ્યાઓનો વિચાર કરી કહેવું.

પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુવાદમાં મત્તરમા લેશ્યાપદનો ઝોજો ઉદ્દેશક સમાત.

सर्वमहट्टिया सुककलेसा ॥

२४. एणसि णं भंते ! नेरइयाणं कण्हलेसाणं नील्लेसाणं काउलेसाणं य कयरे कयरेहिंत्तो अप्पट्टिया वा महट्टिया वा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंत्तो नील्लेसा महट्टिया, नील्लेसेहिंत्तो काउलेसा महट्टिया, सर्वप्पट्टिया नेरइया कण्हलेसा, सर्वमहट्टिया नेरइया काउलेसा ॥

२५. एणसि णं भंते ! त्तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेसाणं जाव सुक्कलेसाणं य कयरे कयरेहिंत्तो अप्पट्टिया वा महट्टिया वा ? गोयमा ! जह्म जीवाणं । एणसि णं भंते ! एणिवियत्तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेसाणं जाव तेउलेसाणं य कयरे कयरेहिंत्तो अप्पट्टिया वा महट्टिया वा ? गोयमा ! कण्हलेसेहिंत्तो एणिवियत्तिरिक्खजोणिएहिंत्तो

अल्प श्रद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा जीवो छे अने सौथी महर्दिक शुक्ललेश्यावाळा छे.

२४. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा नैरयिकोमां कोण कोनाथी अल्प श्रद्धिवाळा के महर्दिक छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा कर्ता नीललेश्यावाळा महर्दिक छे अने नीललेश्यावाळाथी कापोतलेश्यावाळा महर्दिक छे. सौथी अल्प श्रद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा नैरयिको छे अने सौथी मोटी श्रद्धिवाळा कापोतलेश्यावाळा नैरयिको छे.

२५. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा तिर्यचोमां कोण कोनाथी अल्प श्रद्धिवाळा के मोटीश्रद्धिवाळा छे ! हे गौतम ! जेम जीवोने कसुंतेम कहेयु. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळा यावत् शुक्ललेश्यावाळा एकेन्द्रिय तिर्यचोमां कोण कोनाथी अल्प श्रद्धिवाळा के मोटी श्रद्धिवाळा छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा एकेन्द्रिय तिर्यचोथी नीललेश्यावाळा महर्दिक छे. नीललेश्यावाळा तिर्यचोथी

नीलेसा महद्दिया, नीलेसेसिंहितो तिरिक्खजोणिएहिंतो काउलेसा महद्दिया, काउलेसेसिंहितो तेउलेसा महद्दिया, सब्बप्पद्दिया एणंदियतिरिक्खजोणिया कण्हलेसा, सब्बमहद्दिया तेउलेसा । एवं पुढचिकाइयाणचि । एवं एएणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावियाओ तहेव नेयब्बं जाव चउरिंदिया । पंचंदियतिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं संसुच्छिमाणं गव्वकंतियाण य सब्बेसिं भाणियब्बं जाव अप्पद्दिया वेमाणिया देवा तेउलेसा, सब्बमहद्दिया वेमाणिया सुक्कलेसा । केई भणंति-चउवीसं दंडएणं इही भाणियब्बा । वीओ उदेसओ समत्तो ।

तइओ उदेसो

२६. नेरइए णं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ, अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गोयमा ! नेरइए नेरइएसु उववज्जइ,

कापोतलेश्यावाळा महद्दिक छे अने कापोतलेश्यावाळा तिर्यचोथी तेजोलेश्यावाळा महद्दिक छे. सौथी अल्पक्रद्धिवाळा कृष्णलेश्यावाळा एकैन्द्रिय तिर्यचो छे, अने सौथी महद्दिक तेजोलेश्यावाळा छे. ए प्रमाणे पृथिवीकायिकोने पण जाणवुं. एम आ पाठ वडे जेम लेश्याओनो विचार कर्यो तेम यावत् चउरिन्द्रियो सुथी जाणवुं. संसूच्छिम अने गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यचो, तिर्यच सीओ, ए वधाने ए प्रमाणे कहेवुं. यावत् अल्पक्रद्धिवाळा तेजोलेश्यावाळा वैमानिक देखो छे, अने सौथी महद्दिक शुक्कलेश्यावाळा वैमानिक देखो छे. कोइ आचार्यो कहे छे के क्रद्धि चोवीश दंडके कहेवी जोइए.

प्रज्ञापना भगवतीना अनुवादमां मत्तरमा पदो द्वितीय उद्देशक समाप्त.

नो अनेरइए नेरइएसु उबवज्जइ, एवं जाब वेमाणियाणं । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो उबवद्धइ, अनेरइए नेरइए-
हिंतो उबवद्धति ? गोयमा ! अनेरइए नेरइएहिंतो उबवद्धति, णो नेरइए नेरइएहिंतो उबवद्धइ । एवं जाब वेमा-
णिए, नवर जोइसियवेमाणिएसु 'वयणं'ति अभिलावो कायन्वो ।

तृतीय उद्देशक

२६. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय के अनैरयिक-नैरयिक सिवाय अन्य नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम !
नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, पण नैरयिक सिवाय अन्य नैरयिकोमां न उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे वैमानिको सुधी जाणवुं. हे
भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोधी उद्धतं-मरण पामे के अनैरयिक-नैरयिकोधी अन्य नैरयिको धकी उद्धतं ? हे गौतम ! अनैरयिक नैर-
यिकोधी उद्धतं पण नैरयिक नैरयिकोधी न उद्धतं ए प्रमाणे वैमानिक सुधी जाणवुं.

२७ बीजो उद्देशक फह्यो, हवे बीजा उद्देशकनो प्रारंभ थाय छे तेनु भा प्रथम सूर छे-नेरए ण मते ! नेरएसु उबवज्जइ ?
हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि भा सुवनो भा संबन्ध छे-बीजा उद्देशकमां नारकादि जीवोनें छेइयानी
संबन्धा, अत्यथदुल्य अने महदिकणु कहु अही ते ते लेइयामो उपपातकेअने प्राप्त ययेला अ नारकादि जीवोने होय छे के विप्रद-
गतिमां पण होय छे'-ए अर्थनु प्रतिपादन करवा माटे पूर्व अन्य नयनी अपेक्षाए नारकादिकए व्यवहार संबन्धे प्रश्न करे छे-हे
भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय के अनैरयिक-नैरयिक सिवाय बीजो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? आ प्रश्नसूर सुगम छे
भगवान् उत्तर आपे छे-हे गौतम ! नैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न थाय छे, पण अनैरयिक नैरयिकोमां उत्पन्न यतो नथी' शा
हेइयोधी ! कारण के नारकादि भवनो संबन्ध करयवनार आयुय ज छे, बीजु फाई नथी जेमके नारकनुं आयुय उर्यमां आवे त्यारे

નારકભવ અને મનુષ્યાયુષનો ઉદય થાય ત્યારે મનુષ્ય ભવ હોય છે વગેરે. તેથી નારકાદિના આયુષના ઉદયને પ્રથમ સમયે જ નારકાદિરૂપ વ્યવહાર થાય છે. આ ઋજુસૂત્ર નયનો મત છે. નયનોપ ઋજુસૂત્ર નયનું સ્વરૂપ નિરૂપણ કરતાં આ પ્રમાણે કહ્યું છે—

‘પલાલં ન દહલ્યગ્નિર્ભિચતે ન ઘટઃ ક્વચિત્ । નાશૂન્યે નિષ્ક્રમોઽસ્તીહ ન ચ શૂન્યં પ્રથિશ્યતે ॥ ૧ ॥

નારકઅતિરિક્તથ નરકે નોપપથતે । નરકાનારકથાસ્ય ન કશ્ચિદ્ ધિપ્રમુચ્યતે ” ॥ ૨ ॥

‘પરાલ યલ્લનું નથી, પણ અગ્નિ ચલે છે, ક્વચિત્ ઘટ ઘટતો નથી, પણ કપાલ ફુટે છે—પટલે કપાલાવસ્થામાં ઘટ ફુટે છે. અશૂન્યમાં—અશૂન્યાવસ્થામાં નિષ્ક્રમ હોતો નથી, તેમ શૂન્યમાં પ્રવેશ થતો નથી. તાત્પર્યં પ છે કે નિષ્ક્રમ સમયે અશૂન્યાવસ્થા હોતી નથી, તેમ પ્રવેશસમયે શૂન્યાવસ્થા હોતી નથી. નારક સિવાય ત્રીજો નરકમાં ઉત્પન્ન થતો નથી, તેમ કોઈ નારક આ નરકથી મુક્ત થતો નથી.’ પ પ્રમાણે નૈરયિકને કાણું છે તેમ ધૈમાનિક સંબન્ધી સૂત્ર પર્યંત કહેવું, અને તે સુગમ હોવાથી સયં વિચારવું. હવે નૈરયિકોમાં ઉદ્વર્તના સંબન્ધે સૂત્ર કહે છે—નૈરયણ ણં મંતે ! નૈરયપદ્ધિતો ઉચવદ્દૃઢ’ इत्यादि. આ સૂત્ર પણ ઋજુસૂત્ર નયના મતથી જાણવું. તે આ પ્રમાણે—જ્યારે પરમવના આયુષનો ઉદય થાય છે ત્યારે જીવ ત્યાંથી ઉદ્વર્તે છે—પટલે તે મવથી મવાન્તરમાં જાય છે. અને જે મવનું આયુષ ઉદયમાં આબું હોય તે મવરૂપે તેનો વ્યવહાર થાય છે, જેમ નારકાયુષનો ઉદય થતાં ‘આ નારક છે’ પવો વ્યવહાર થાય છે. તેથી નૈરયિકોથી અનરયિક જ ઉદ્વર્તે છે, પણ નૈરયિક ઉદ્વર્તતો નથી. જ્યાં સુધી નારકાયુષનો ઉદય હોય છે ત્યાં સુધી તે નૈરયિક જ છે અને તે નારકમવથી મુક્ત થતો નથી, પણ જ્યારે પરમવના આયુષનો ઉદય થાય છે ત્યારે તે નૈરયિક નથી, અનૈરયિક છે અને તેથી અનૈરયિક ઉદ્વર્તે છે—મરણ પામે છે. પ પ્રમાણે ત્રોવીશ મુંડકના ઋમથી ધૈમાનિકો સુધી સૂત્ર કહેવું, પરંતુ જ્યોતિષિક અને ધૈમાનિકના વિષયમાં જ્યવન સંબન્ધે પાઠ કહેવો. કારણ કે જ્યોતિષિક અને ધૈમાનિકથી જે ઉદ્વર્તન થાય છે તેને જ્યવન કહેવાય છે પ સૂત્રપ્રસિદ્ધ છે. તે પ્રમાણે સૂત્રકાર કહે છે—‘પવં જાવ ધૈમાણિપ નવરં’ इत्यादि.

२७. से नूनं भंते ! कणहलेसे नेरइए सु उववज्जति, कणहलेसे उववदइ, जह्लेसे उववज्जइ त ह्लेसे उववदइ ? हता गोयमा ! कणहलेसे नेरइए कणहलेसे सु नेरइए सु उववज्जति, कणहलेसे उववदइ, जह्लेसे उववज्जइ तह्लेसे उववदइ, एवं नीललेस्सेवि, एव काउलेस्सेवि । एवं असुरकुमाराणवि जाव यणियकुमारा, नवर लेस्सा अन्महिया । से नून भंते ! कणहलेसे पुढविकाइए सु उववज्जति, कणहलेसे उववदइ, जह्लेसे उववज्जति तह्लेसे उववदइ ? हंता गोयमा ! कणहलेसे पुढविककाइए कणहलेसे सु पुढवियकाइए सु उववज्जति,

२७. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्यावालो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने कृष्णलेश्यावालो थइ मरण पामे ? जे लेश्यावालो उत्पन्न थाय ते लेश्यावालो मरण पामे ? हा गौतम ! कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने कृष्णलेश्यावालो मरण पामे. जे लेश्यावालो उत्पन्न थाय ते लेश्यावालो मरण पामे. ए प्रमाणे नीललेश्यावाळा सवन्धे अने कापोतलेश्यावाळा सवन्धे जाणवु. एम असुखमारोथी आरभी स्तनितकुमारो सुधी जाणवु. परन्तु अहीं लेश्या अधिक कहेवी. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावालो पृथिवीकायिक कृष्णलेश्यावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्णलेश्यावालो थइ मरण पामे ?

२७ हथे उत्पत्तिमा पृष्णलेश्या सवन्धे सूत्र कहे छे—'से नून भंते ! कणहलेसे नेरइए' इत्यादि मूळमा 'से' शब्द अथ शब्दमा अर्थमा छे अने अथ शब्द प्रश्नना अर्थमां छे 'नून'-निश्चित, हे भगवन् ! आ निश्चित छे के कृष्णलेश्यावालो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय अने से कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकोपी उव्वतंतो कृष्णलेश्यावालो थइने मरण पामे ? ए ज अर्थना निश्चयने हट करवा माटे प्रकाशान्तरथी कहे छे—'यहोश्च उत्पद्यते तलेश्य उव्वतंते ?' जे लेश्यावालो उत्पन्न थाय ते अ लेश्यावालो उव्वतंते ?

सिय कण्हलेसे उववट्टइ, सिय नीललेसे उववट्टइ, सिय काउलेसे उववट्टइ, सिय जह्लेसे उववज्जति सिय तह्लेसे उववट्टइ । एवं नीलकाउलेस्सासुवि । से नूणं भंते ! तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जइ पुच्छा । हंता गोयमा ! तेउलेसे पुढविकाइण तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववट्टइ, सिय नीललेसे उववट्टइ, सिय काउलेसे उववट्टइ, तेउलेसे उववज्जइ, नो च्चैव णं तेउलेसे उववट्टइ । एवं आउकाइया वणस्सइकाइयावि । तेऊवाऊ एवं च्चैव, नवरं एतेसिं तेउलेस्सा नत्थि । वित्थियचउरिंदिया एवं च्चैव तिसु लेसासु । पंच्चदियतिरिक्खजो-

जे लेइयावालो उत्पन्न थाय ते लेइयावालो मरण पामे ? हे गौतम ! अवश्य कृष्णलेइयावालो पृथिवीकायिक कृष्णलेइयावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय, कदाचित् कृष्णलेइयावालो थइ मरण पामे, कदाचित् नीललेइयावालो थइ मरण पामे अने कदाचित् कापोतलेइयावालो थइ मरण पामे. कदाचित् जे लेइयावालो उत्पन्न थाय ते लेइयावालो थइ मरण पामे. ए प्रमाणे नीललेइया अने कापोतलेइया संबंधे जाणवुं. हे भगवन् ! अवश्य तेजोलेइयावालो पृथिवीकायिक तेजोलेइयावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि पृच्छा. हा गौतम ! अवश्य अवश्य तेजोलेइयावालो पृथिवीकायिक तेजोलेइयावाळा पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय. कदाचित्

-मरणं पामे ? बीजी लेइयाने प्राप्त थइ न उव्वतं ? भगवान् उत्तर आपे छे—'हन्ता गोयमा' ! इत्यादि. 'मत्त' अनुमत अर्थमां छे. हे गौतम ! मने ए अनुमत छे के कृष्णलेइयावालो उत्पन्न थाय अने कृष्णलेइयावालो ज मरण पामे. (प्र०) कृष्णलेइयावालो नैरयिक होय ते कृष्णलेइयावाळा नैरयिकोमां केम उत्पन्न थाय, बीजी लेइयासहित केम न उत्पन्न थाय ? (उ०)—अहीं तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के मनुज्य नारकवुं आयुष बीधेळुं होवाथी नरकमां उत्पन्न थवावालो अनुक्रमे तिर्यञ्चायुष के मनुष्यायुषनो संपूर्ण क्षय कर्यो नथी

गिया मणुस्ता य जहा पुढविककाइया आविद्धिया तिसु लेसासु भगिया तहा छसुवि लेसासु भाणियब्बा, नबर छत्पि लेस्ताओ चारेयब्बाओ। वाणमतारा जहा असुरकुमारा। से नृणं भंते! तेउलेस्से जोइसिण तेउलेस्सेसु जोइ-सिणसु उवयब्बइ? जह्वेव असुरकुमारा। एवं वेमाणियावि, नबर दोण्हपि चर्यतीति अभिलावो।

कृष्णलेखावाको उद्दत्तं, कदाचित् नीललेखावाको अने कदाचित् कायेतलेखावाको उद्दत्तं, तेजोलेखावाको उत्पन्न थाय पण तेजोलेखावाको न उद्दत्तं. ए प्रमाणे अष्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण जाणवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको एम ज समजवा. परन्तु एओने तेजोलेखा नयी. वेद्न्द्रियो, तेद्न्द्रियो अने चउरिन्द्रियो ण लेखाओमां एमज जाणवा पंचेन्द्रिय तिर्यवो अने मनुष्यो जेम पृथिवीकायिको मथमनी ण लेखाओमां कक्षां तेम छए लेखाओमां पण कहवा. परन्तु छए लेखाओनो विचार करवो. व्यन्तरो असुरकुमारीनी पेठे जाणवा. हे भगवन् ! शु तेजोलेखावाको ज्योतिषिक ज्योतिषिकोमां उत्पन्न थाय-इयादि जेम असुरकुमार संबंधे कसुं तेम कहेसुं. वैमानिको पण एमज समजवा, परन्तु वन्ने सबन्धे 'स्यवे छे' एवो पाठ कहेवो.

अने अन्तमुद्गतं बाकी होयछे त्यारे जे लेखावाका नरकोमां उत्पन्न थयानो छे ते सबन्धी लेखावदे परिणत थाय छे पटले ते लेखाना परिणामवाको थाय छे अने ते अपतित परिणाम बडे नरकनु आयुष घेवे छे तेथी एम कहेयाय छे के 'कृष्णलेखावाको कृष्णलेखा वाळा नेरयिकमां ज उत्पन्न थाय छे पण अन्य लेखाना परिणामवाको उत्पन्न थतो नयो (प्र०)—कृष्णलेखावाको ज केम उच्यते छे? (उ०)—वेव अने नारकोने लेखानो परिणाम पोताना मथना अन्त पर्यंत होय छे अने ए थात पूवे सयिस्तरणे सिद्ध करी छे, तेथी कृष्णलेखावाको ज उच्यते छे ए प्रमाणे नीललेखा अने कायेतलेखा संबन्धे म्म कहेसु पम असुरकुमारी माधीने स्तनित-कुमारो सुधी कहेसु पसु त्यां तेजोलेखा स्रज अधिक कहेसुं, कारण के तेमोने तेजोलेखा पण होय छे.

२८. से नृणं भंते ! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु नेरइएसु उचवज्जइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उचवट्ठइ, जह्लेसे उचवज्जइ तह्लेसे उचवट्ठइ ? हंता गोयमा ! कण्हनीलकाउलेसे उचवज्जइ, जह्लेसे उचवज्जइ तह्लेसे उचवट्ठइ । से नृणं भंते ! कण्हलेसे जाय तेउलेसे असुरकुमारो कण्हलेसेसु जाव तेउलेसेसु असुरकुमारोसु उचवज्जइ ? एवं जहेव नेरइए तहा असुरकुमारावि जाव थणियकुमारावि । से नृणं भंते ! कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढविककाइए कण्हलेसेसु तेउलेसेसु पुढविककाइएसु उचवज्जइ ? एवं पुच्छा जहा

२८. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा अने कापोतलेश्यावाळा नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? अने कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो अने कापोतलेश्यावाळो त्यांथी उद्धर्ते ? जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्धर्ते ? हे गौतम ! अवश्य कृष्ण, नील अने कापोतलेश्यावाळो उत्पन्न थाय. जे लेश्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेश्यावाळो उद्धर्ते. हे भगवन् ! शुं कृष्णलेश्यावाळो यावत् तेजोलेश्यावाळो असुरकुमार कृष्णलेश्यावाळा यावत् तेजोलेश्यावाळा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय—इत्यादि जेम नैरयिक संबंधे कहुं तेम असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो संबंधे कहेहुं.

२८. हये पृथिवीकायिकोमां कृष्णलेश्या संबंधे सूत्र कहे छे—‘से नृणं भंते ! कण्हलेसे पुढवीकाए’ इत्यादि. आरी तिर्यञ्च अने मनुष्योने लेश्याने परिणाम अन्तर्मुहूर्तनो होय छे. तेथी कदाचित् जे लेश्यावाळो होय ते लेश्याना परिणामवाळो उद्भवते अने कदाचित् अन्य लेश्याना परिणामवाळो ण उद्भवते, परंतु आ तो नियम छे के जे लेश्यावाळांमां उत्पन्न थाय ते अवश्य ते लेश्यावाळो उ उत्पन्न थाय, कारण के मनुष्य अने तिर्यञ्चो आगामी भवती लेश्याहुं अन्तर्मुहूर्त अतीत थया वाद् अने देव अने नारको पोताना

असुरकुमाराणं । हंता गीयमा ! कण्हलेसे जाव तेउलेसे पुढविककाइए जाव तेउलेसेसु जाव तेउलेसेसु पुढविककाइए सु उववज्जति, सिय कण्हलेसे उववदइ, सिय नीललेसे, सिय काउलेसे उववदइ, सिय जेहेसे उववज्जइ तल्लेसे उववदइ, तेउलेसे उववज्जइ, नो चेव णं तेउलेसे उववदइ । एव आउकाइया वणस्सइकाइयाचि भाणियज्जा । से नूणं भंते ! कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे तेउकाइए कण्हलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु तेउकाइएसु उववज्जइ, कण्हलेसे नीललेसे काउलेसे उववदइ, जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववदइ ? हंता गीयमा ! कण्हलेसे नीललेसे का-

हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेस्यावाळो यावत् तेजोलेस्यावाळो पृथिवीकायिक शु कृष्णलेस्यावाळा यावत् तेजोलेस्यावाळा पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय-इत्यादि जेम असुरकुमारो संभवे प्रश्न कर्यो तेम करवो. हा गौतम ! अवश्य कृष्णलेस्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेस्यावाळा यावत् तेजोलेस्यावाळा पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय. कदाच कृष्णलेस्यावाळो, कदाच नीललेस्यावाळो अने कदाच कापोतलेस्यावाळो उदतं कदाच जे लेस्यावाळो उत्पन्न थाय ते लेस्यावाळो उदतं. तेजोलेस्यावाळो उत्पन्न थाय पण तेजोलेस्यावाळो न उदतं. ए प्रमाणे अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको पण कहेया. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेस्यावाळो, नीललेस्यावाळो अने कापोतलेस्यावाळो तेजस्कायिक कृष्ण, नील अने कापोतलेस्यावाळा तेजस्कायिकोमा उत्पन्न थाय ? अने कृष्ण, नील अने कापोत

भवनी लेस्यावु अन्तमुद्गतं षाकी होय त्यारे परिणत थयेली लेस्या वडे शीवो परलोकमा जाय छे-एषु शाखनु बचन छे. ते माटे एषु छे के 'गीयमा ! कण्हलेसे पुढविककाए कण्हलेसेसु पुढविककाएसु उववज्जइ, सिय कण्हलेसे उववदइ'-कृष्णलेस्यावाळो पृथिवीकायिक कृष्णलेस्यावाळा पृथिवीकायिकोमा उत्पन्न थाय छे अने कदाचित् कृष्णलेस्यावाळो उववतं छे-इत्यादि ए प्रमाणे नीललेस्या

उलेसे तेउकाइए कणहलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु तेउकाइएसु उववज्जइ, सिय कणहलेसे उववट्टइ, सिय नील-
लेसे उववट्टति, सिय काउलेसे उववट्टइ, सिय जल्लेसे उववज्जइ तल्लेसे उववज्जइ । एवं वाउकाइयवेइदियतेइदि-
यचउरिंदियावि भाणियन्वा । से नूणं भंते ! कणहलेसे जाव सुक्कलेसे पंचंदियतिरिक्खजोणिए कणहलेसेसु
जाव सुक्कलेसेसु पंचंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जइ ? पुच्छा । हंता गोयमा ! कणहलेसे जाव सुक्कलेसे
लेइयावाळो उद्धर्ते ? जे लेइयावाळो उत्पन्न थाय ते लेइयावाळो उद्धर्ते ? हे गौतम ! अवश्य कृष्ण, नील अने कापोतलेइयावाळो
तेजस्कायिक कृष्ण, नील अने कापोतलेइयावाळा तेजस्कायिकोमां उत्पन्न थाय, कदाचित् कृष्णलेइयावाळो, कदाचित् नीललेइयावाळो
अने कदाचित् कापोतलेइयावाळो उद्धर्ते. कदाचित् जे लेइयावाळो उत्पन्न थाय ते लइयावाळो उद्धत. ए प्रमाणे वायुकायिक, वैइन्द्रिय,
तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो कहेवा. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेइयावाळो यावत् शुक्ललेइयावाळो पंचेन्द्रिय तिर्यच शुं कृष्णलेइयावाळा
यावत् शुक्ललेइयावाळा पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय—इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! अवश्य कृष्णलेइयावाळो यावत् शुक्ललेइया-
अने कापोतलेइया विषयक सूत्र कहेजुं. तथा ज्यारे तेजोलेइयावाळा भयनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशानदेवो गोताना भवथी
ज्यवी पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय छे त्यारे केटलाक काळ सुधी अपर्याप्तावस्थामां तेओने तेजोलेइया पण होय छे. त्यारपछी होती
नथी. कारण के तेवा प्रकारा भास्वभावथी तेजोलेइया योग्य द्रव्यने ग्रहण करवानी तेओनी शक्ति नथी. माटे तेजोलेइया सूत्रमां
काणं छे—'तेउल्लेसे उववज्जइ, नो चैय णं तेउल्लेसे उववट्टइ' इति. तेजोलेइयावाळो उत्पन्न थाय छे, पण तेजोलेइयावाळो उद्वर्ततो
नथी—मरण पामतो नथी. जेम पृथिवीकायिकोना चार सूत्रो काणां तेम अष्कायिक अने वनस्पतिकायिकना पण कहेवां. कारण के
तेओने पण अपर्याप्तावस्थामां तेजोलेइयानो संभव छे. तेजस्कायिक, वायु, वैइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोने प्रत्येकने णण सूत्रो

पंचदियतिरिगजोणिण कण्हलेसेसु जाय सुफकलेसेसु पंचदियतिरिफणजोणिणसु उययच्चइ, सिय कण्हलेसेसे उ-
ययच्चइ, जाय सिय सुफकलेसे उययच्चइ, सिय जंहेसे उययच्चइ तंहेसे उययच्चइ । त्वं मणूसेसि । याणमंतरा जहा
अगुरकुमारा । जोइमिगयेमाणियायि त्वं येय, नयरं जस्स जंहेसा । दोषहयि 'वयणं'ति भाणियज्जं ।

शाओ पचेन्द्रिय निपंण कण्हलेइयायाओ यायत्तु शुक्ललेइयायाओ पंचेन्द्रिय त्रियिगोमा उत्तल्ल थाय. फदाचिन् कण्हलेइयायाओ यायत्तु
फदाचिन् पुक्कलेइयायाओ उइतं. फदाचिन् जे लेइयायाओ उत्तल्ल थाय ते लेइयायाओ उइतं. ए प्रमाणे मज्जुप्य संबंधे पण जाणु.
व्यल्लो अगुरकुमारोनी पंठे जाणना. ज्योतिविक अने वेमानिको पण एम च समजया परन्तु जेओने जे लेइया होय ते कहेवी, अने
पणने पय 'स्यवे'छे' एवो पाठ कहेवो.

कहेपं. काल के तंमोव तेओलेइयाओ गसंमप छे पंचेन्द्रिय तिर्यंओ अने मज्जुओ ओम प्रमाणनी वण लेइयामां वृथिवीकाचिने कला
तंम एप इइयामां कहेया. काल के ए लेइयामांकी कोइएण लेइया पंठे तेओनी उएणिलो संमप छे अने उएणिलि सयन्धी एक एक
लेइयाला निगमो उएणंमादे विये ए प विरस्सोने संमप छे मज्जुणठ मा प्रमाणं छे—'से नृण अने ! कण्हनेसे पंचिदियतिरिगज
ओणिण कण्हलेंगेसु पंचिदियतिरिगजोणिणसु उययच्चइ, कण्हलेसे उययच्चइ, जोइसे उययच्चइ तंहेसे उययच्चइ ? इत्था गोयमा ।
कण्हलेमे पंचिदियतिरिगजोणिण कण्हलेसेसु पंचिदियतिरिगजोणिणसु उययच्चइ, सिय कण्हनेसे उययच्चइ, सिय मीकंहेसे उययच्चइ,
सिय कण्हंउ उययच्चइ, सिय कण्हनेसे उययच्चइ, सिय मुकंहेसे उययच्चइ, सिय उस्सेसे उययच्चइ तंहेसे उययच्चइ ।'—हे प्रणया ।
अउर कण्हलेइयायाओ पंचेन्द्रिय तिर्यंओ इएणंउइयायाओ पंचेन्द्रिय तिर्यंओ प्रणया थाय ? अने कण्हलेइयायाओ उइयलं ? जे
लेइयायाओ उगग थाय ते लेइयायाओ उइतं ? हा गीतम ! इएणंउइयायाओ पंचेन्द्रिय तिर्यंओ इएणंउइयायाओ पंचेन्द्रिय तिर्यंओमां

२९. कणहलेसे णं भंते ! नेरइए कणहलेसं नेरइयं पणिहाए ओहिणा सन्वओ समंता समभिलोएमाणे केव-
लियं खेतं जाणइ, केवइयं खेतं पासइ ? गोयमा ! णो बहुयं खेतं जाणइ, णो बहुयं खेतं पासइ, णो दूरं खेतं

२९. हे भगवन् ! कृष्णलेइयावाळो नैरयिक कृष्णलेइयावाळा नैरयिकनी 'प्रणिधाय' अपेक्षाए अवाधिज्ञान वडे सर्वतः-चारे दिशामां

उत्पन्न थाय, कदाच कृष्णलेइयावाळो, कदाच नीललेइयावाळो, कदाच कापोतलेइयावाळो कदाच तेजोलेइयावाळो
कदाच पद्मलेइयावाळो अने कदाच शुक्ललेइयावाळो उद्धतं, कदाच जे लेइयावाळो उत्पन्न थाय ते लेइयावाळो उद्धतं. ए प्रमाणे नील-
कापोत, तेजस् पद्म अने शुक्ललेइया संबन्धे सूत्रो कहेवां. 'धाणमंतरा जहा असुरकुमारा' व्यन्तरो असुरकुमारीने जेम कहेवा. एटले तेओ
संबन्धे जे लेइयावाळो उत्पन्न थाय ते लेइयावाळो उद्धतं-एम कहेवुं. कारण के सर्व देवोने लेइयानो परिणाम पोताना भव सुधी निरंतर होय
छे. ए प्रमाणे लेइयानी संख्यानो विचार करी ज्योतिष्क अने वैमानिक संबन्धे सूत्रो कहेवां. परल्लु 'त्रयन्ति'-व्यवे छे एवो पाठ कहेवो.
ए प्रमाणे एक एक लेइया संबन्धे चोवीश दंडकना क्रमथी नैरयिकादि संबन्धे सूत्रो कहेवां. तेमां कोइ आशंका करे के थोडा एवा एक
एक नारकादि संबन्धे आ सूत्रसमूह छे, ज्यारे घणा भिचलेइयावाळा नैरयिकादि ते गतिमां उत्पन्न थाय त्यारे वस्तुस्थिति अन्यथा पण
होय, कारण के एक एक व्यक्तिना धर्मनी अपेक्षाए समुदायानो धर्म क्वचित् अन्यथा जणाय छे. तेथी ते आशंका दूर करवा माटे
जेओने जेटली लेइयाओनो संभव छे तेओने एक साथे जेटली लेइयाओ संबन्धे एक एक सूत्र उपर कहेला अर्थ वाळुं प्रतिपादन करे
छे-“से नृणं भंते ! कणहलेसे नीललेसे काउलेसे नेरइए कणहलेसेसु नीललेसेसु काउलेसेसु नेरइएसु उवज्जइ' इत्यादि. हे भगवन् !
अवाद्य कृष्णलेइयावाळो, नीललेइयावाळो अने कापोतलेइयावाळा नैरयिक कृष्णलेइयावाळा, नीललेइयावाळा के कापोतलेइयावाळा
नैरयिकोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि समग्र सूत्र सुगम छे.

२९. हवे कृष्णाविलेइयावाळा नैरयिकना अवाधिज्ञान अने वर्शनना विषयभूत क्षेत्रना परिमाणुं तारस्य यतावे छे-“हे भगवन् !

जाणइ, णो दूर खेतं पासइ, इत्तरियमेव खित्तं जाणइ, इत्तरियमेव खेतं पासइ । से केणट्टेणं भंते ! एवं घुघइ-
'कण्हलेसे णं नेरइणं तं चेष जाव इत्तरियमेव खेतं पासइ' ? गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरम-
णिज्जसि भूमिभागंसि ठिबा सब्बजो समंता समभिलोण्जा, तए णं से पुरिसे धरणितालगंयं पुरिस पणिहाण
सब्बओ समंता समभिलोण्माणे णो यहुयं खेतं जाव पासइ, जाव इत्तरियमेव खेतं पासइ, से तेणट्टेणं गो-
यमा ! एवं घुघइ- 'कण्हलेसे णं नेरइणं जाव इत्तरियमेव खेतं पासइ' । नील्लेसे ण भंते ! नेरइणं कण्हलेस नेरइयं

अने समतात्-चारे विदिग्रामां जोतो केट्ठु क्षेत्र जाणे अने केट्ठुं क्षेत्र देखे ! हे गौतम ! ते यद्दु क्षेत्र जाणतो नथी, यद्दु क्षेत्र जोतो
नथी, दूर रहेलु क्षेत्र जाणतो नथी अने दूर रहेलु क्षेत्र देखतो नथी. थोडुं (अधिक) क्षेत्र जाणे छे अने थोडु (अधिक) क्षेत्र देखे छे. हे
भगवन् ! एम था हेतुथी कहो छो के 'कृष्णलेइयावाडो नैरियिक'-इत्यादि तेज कहेंदु, यावत् इत्तर-थोडु अधिक क्षेत्र जाणे छे ? हे
गौतम ! जेम कोइ पुरुष चरोवर सरसी अने रमणीय भूमिभाग उपर जमो रहिने चारे तरफ छुए तेथी ते पुरुष धृथिगीतलमां रहेला
पुरुषनी अपेक्षाए चोतराफ जोतो यद्दु क्षेत्रने यावत् देखतो नथी, यावत् थोडां क्षेत्रने देखे छे. ते माटे हे गौतम ! एम कद्दु छु के कृष्णलेइया-

इष्णलेइयावाडो फोइक नैरियिक कृष्णलेइयावाडा वीजा नैरियिकनी 'प्रणिघाय'-अपेक्षाए अवधिमान यहे सर्वतरा चारे विग्रामा 'ममन्तता'-
चारे विदिग्रामा 'समभिलोणमान' जोतो केट्ठु क्षेत्र जाणे अथवा अधिचरंत यहे केट्ठु क्षेत्र देखे ! मगवान् उत्तर भाए छे-हे गौतम !
यद्दु क्षेत्र न जाणे, तेम यद्दु क्षेत्र न देखे तात्पर्य प छे के यिचस्सितकृष्णलेइयावाडो नैरियिक पोतानी योग्यताने अनुसारे अतिविद्युव छतां
पण वीजा कृष्णलेइयावाडा नैरियिकनी अपेक्षाए भनि यद्दु क्षेत्र अधिमान-वर्धन यहे जाणतो अने जोतो नथी एव यावत् कहे छे-

पणिहाय ओहिणा सब्बओ समंता समभिलोएमाणे २ केवतियं खेत्तं जाणइ, केवतियं खेत्तं पासइ ? गौयमा ! बहुतरागं खेत्तं जाणइ बहुतरागं खेत्तं पासइ, दूरतरं खेत्तं जाणइ, दूरतरं खेत्तं पासइ, वित्तिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, वित्तिमिरतरागं खेत्तं पासइ, एवं बुच्चइ- 'नील्लेसे णं नेरइए कण्हल्लेसं नेरइयं पणिहाय जाव विसुद्धतरागं खेत्तं जाणइ, विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ' ? गौयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ पव्वयं दुरुहिता सब्बओ समंता सम-

वाळो नैरयिक यावत् अल्प क्षेत्रने जुए छे. हे भगवन् ! नील्लेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिज्ञान वडे चारे तरफ जोतो जोतो केटला क्षेत्रने जाणे अने देखे ? हे गौतम ! अति घणा क्षेत्रने जाणे अने अत्यंत घणा क्षेत्रने देखे. अति दूर क्षेत्रने जाणे अने अति दूर क्षेत्रने देखे. वित्तिमिरक-अत्यन्त स्पष्ट क्षेत्रने जाणे अने अत्यन्त स्पष्ट क्षेत्रने देखे, अत्यन्त विषुद्ध क्षेत्रने जाणे अने अत्यन्त विषुद्ध क्षेत्रने देखे. हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो के नील्लेश्यावाळो नैरयिक कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए यावत् विषुद्धतर क्षेत्रने जाणे अने विषुद्धतर क्षेत्रने देखे ? हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष वरोवर सरखी अने रमणीय भूमिभागाथी पर्वत उपर चढीने चारे

अतिदूरचुं क्षेत्र जाणतो नथी, तेम अति दूरचुं क्षेत्र जोतो नथी. परन्तु इत्वर-थोहुं अधिक क्षेत्र जाणे छे अने थोहुं अधिक क्षेत्र देखे छे. आ सूत्र समान नरक पृथिवीमां रहेला कृष्णलेश्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए समज्जुं, कारण के एम जो न मानीए तो व्यभिचारो संभव थाय छे. जेमके सातमी नरकपृथिवीमां रहेलो कृष्णलेश्यावाळो नैरयिक जघन्यथी अर्थ गाउ जाणे छे अने वधारेमां वधारे एक गाउ जाणे छे. छ्ठी पृथिवीमां रहेलो जघन्यथी एक गाउ अने उत्कर्षथी दोढ गाउ, पांचमी नरकमां रहेलो जघन्यथी दोढ गाउ अने उत्कर्षथी

मिलोएब्बा, तग णं से पुरिसिं घरणितलगयं पुरिस पणिहाय सव्वओ समंता समभिलोणमाणे २ बहुतरागं खेतं जाणइ, जाव विमुद्धतराग खेतं पासइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं बुद्धइ -- 'नीललेस्से नेरइण कण्हलेस जाव विमुद्धतराग खेतं पासइ' । काउलेस्से ण भत्ते ! नेरइण नीललेस्सं नेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोणमाणे २ केवतिय खेत जाणइ पासइ ? गोयमा ! बहुतरागं खेत जाणइ पासइ, जाव विमुद्धतरागं खेतं पासइ । से केणट्ठेणं भत्ते ! एवं बुद्धइ -- 'काउलेस्से ण नेरइण जाव विमुद्धतराग खेतं पासइ' ? गोयमा ! से जहा-

दिशा अने विदिशामां जुए, तेथी ते पुरुष पृथिवीतल उपर रहेला पुलनी अपेक्षाए चारे तरफ जोतो घणा क्षेत्रने जाणे, यावत् विमुद्धतर क्षेत्रने देखे, ते माटे हे गौतम ! एम कहु छु के नीललेस्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए यावत् विमुद्ध क्षेत्रने जुए हे म० कापोतलेस्यावाळो नैरयिक नीललेस्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए अवधिदानवडे चारेतरफ जोतो जोतो केटला क्षेत्रने जाणे अने देखे ? हे गौतम ! घणां क्षेत्रने जाणे अने देखे, यावत् विमुद्धतर क्षेत्रने देखे हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'कापोतलेस्यावाळो नैरयिक यावत् विमुद्ध क्षेत्रने जुए' ? हे गौतम ! जेम कांइ पुरुष घरोवर सरली अने रमणीय भूमि उपरथी पर्वत उपर चढे, अने उपर

काक न्यून वे गाउ जाणे छे अने जुए छे तेथी यमणा के श्रणगणा अधिक क्षेत्रनो समव होवाथी प्रस्तुत सूत्रमा व्यभिचार-अनियतपणु प्राप्त थाए छे जेमके अतिविमुद्ध छता पण कृष्णलेस्यावाळो नैरयिक समान नरक पृथिवीमा रहेनारा यीजा कृष्णलेस्यावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए काक अधिक जुए छे, पण यणु यथारे जोतो नथी ते प्रमाणे वृष्टान्तद्वारा सिद्ध करवाथी रन्धावाळा सूत्रकार कहे छे -- 'से केणट्ठेण भत्ते' इत्यादि हे भगवन् ! पम शा हेतुथी कहो छो -- इत्यादि अहो ना तात्पर्य छे -- जेम सरली पृथिवी उपर रहेलो क्षोर

नामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिजाओ भूमिभागाओ पन्वयं दुरुहइ, दुरुहिता दोचि पाए उच्चाविया, (वइत्ता) सन्वओ समंता समभिलोएजा, तए णं से पुरिसे पन्वयगयं धरणितलगयं च पुरिसं पणिहाय सन्वओ समंता समभिलोएमाणे बहुतरागं खेतं जाणइ बहुतरागं खेतं पासइ, जाव वितिमिरतरागं पासइ, से तेणट्टेणं गोयमा! एवं बुचइ—‘काउलेस्से णं नेरइए नील्लेस्सं नेरइयं पणिहाय तं चेव जाव वितिमिरतरागं खेतं पासइ’ ।

चढीने बन्ने पग उंचा करी चोतरफ जुए तेथी ते पर्वत उपर रहेला अने पृथिवी उपर रहेला पुरुषनी अपेक्षाए चोतरफ जोतो घणा क्षेत्रने जाणे अने जुए, यावत् स्पष्ट क्षेत्रने जुए, ते माटे हे गौतम! एम कहुं छुं के ‘कापोतलेइयावाळो नैरयिक नील्लेइयावाळा नैरयिकनी अपेक्षाए इत्यादि तेमज कहेहुं, यावत्-स्पष्ट क्षेत्रने देखे.

एकं विवक्षित पुरुष पोतानी चक्षु निर्मल होवाथी कंइक अधिक जुए छे. पण घणुं वधारे जोतो नथो, तेम कोइ एक विवक्षित कृष्ण-लेइयावाळो नैरयिक पोतानी भूमिकाने अनुसारे अतिविशुद्ध छतां समान पृथिवीमां रहेनार बीजा कृष्णलेइयावाळा नैरयिकनी अपेक्षा-ए अवधिवडे कंइक अधिक क्षेत्र जुए छे, पण घणुं वधारे क्षेत्र जोतो नथी. अहीं बरोवर सरखी पृथिवीना स्थाने समान नरक पृथिवी छे, पोतानी भूमिका समान कृष्णरूप लेइया छे अने चक्षुना स्थाने अवधिज्ञान छे, पथी आ अर्थ व्यक्त थाय छे-जेम समान भूमि उपर रहेलो पुरुष सर्व दिशाओ अने सर्व विदिशामां जोतो खाडामां रहेला पुरुषनी अपेक्षाए घणु वधारे क्षेत्र जुए छे, ते प्रमाणे पांचमी नरकपृथिवीमां रहेलो पोतानी भूमिकाने अनुसारे अतिविशुद्ध कृष्णलेइयावाळो विवक्षित नैरयिक छे ते सातमी नरकपृथिवीमां रहेला अतिमन्द सामर्थ्यवाळा अवधिज्ञानी नैरयिकनी अपेक्षाए घणु वधारे जुए छे, कारण के तेहुं अवधिज्ञान कंइक अधिक त्रणगणुं छे. हवे नील्लेइयावाळा नैरयिक संवन्धे सूत्र कहे छे—‘नील्लेसे णं भंते! नेरइए कण्हलेसं नेरइयं पणिहाए’ इत्यादि. हे भगवन्! नील्ले-

૩૦. કણ્ણલેશ્યે પં અંતે ! જીવે કશ્ચ નાણેસુ શોભા ! ગોયમા ! ઘોસુ ઘા તિસુ ઘા ચડસુ ઘા નાણેસુ શોભા,

૩૦. હે ભગવન્ ! કૃષ્ણલેશ્યાવાલો જીવ ફેટલા જ્ઞાનોમાં હોય ! હે ગૌતમ ! ઘે, ઘ્રગ અને ચાર જ્ઞાનમાં વર્તવો હોય. જો ઘે જ્ઞાનમાં

દયાવાલો નૈરયિક નીલલેશ્યાવાલ્યા નૈરયિકની અપેક્ષાપ અઘધિદાન ઘટે ફેટલા ક્ષેત્રને જાણે ! ઇત્યાદિ અક્ષરાર્થં સુગમ છે, પરન્તુ 'વિત્તિમિરતરણ લેષ જાણ' વિગત-ગણુ છે તિમિર-તિમિર અત્ય ધ્રાન્તિ જેમાં તે વિત્તિમિર-સ્પષ્ટ, આ વિત્તિમિર-સ્પષ્ટ છે, આ પળ વિત્તિમિર સ્પષ્ટ છે, પરન્તુ આ અતિશય વિત્તિમિર છે, આયા વિત્તિમિર-ધ્રાન્તિરહિત ક્ષેત્રને જાણે છે અહીં અતિશય અર્થમાં તર પ્રત્યય ઘયો છે અને પ્રાણના નિયમથી સ્વાર્થમાં ક પ્રત્યય અને દીર્ઘ ઘયો છે વ કારણથી વિગુદ્ધતર-અત્યન્ત સ્ફુટ પ્રતિમાસયાલુ જાણે છે આયાર્થં આ છે--જેમ પૃથિવી ઉપર રહેલા પુરુષની અપેક્ષાપ પર્યંત ઉપર ઘટેલો મનુષ્ય અતિવૃદ્ધતા ક્ષેત્રને જુપ છે, અને તે પળ સ્ફુટપ્રતિમાસયાલ્યા ક્ષેત્રને જાણે છે, તેમ વિપક્ષિત-નીલલેશ્યાવાલો પોતાની યોગ્યતાને મનુસારે અતિવિશુદ્ધ અયધિદાની અત્ય કૃષ્ણલેશ્યાવાલ્યા નૈરયિકની અપેક્ષાપ અતિદૂર અને સ્ફુટપ્રતિમાસયાલ્યા ક્ષેત્રને જાણે છે અહીં પર્યંતને સ્થાને ઉપરની શ્રીશ્રી નરકપૃથિવી છે, તેમોને પોતાની મૂમિકાને મનુસારે અતિવિશુદ્ધ નીલલેશ્યા છે, પૃથિવીતલને સ્થાને નીચેની કૃષ્ણલેશ્યા છે અને ઘણુને સ્થાને અઘધિદાન છે. ઇધે નીલલેશ્યાવાલ્યાની અપેક્ષાપ કાપોતલેશ્યા સંબન્ધે સૂત્ર કહે છે--'કાગલેશ્લેષ મતે ! નૈરય નીલલેશ્લેસં નૈરય પળિદાય' ઇત્યાદિ 'હે ભગવન્ ! કાપોતલેશ્યાવાલો નૈરયિક નીલલેશ્યાવાલ્યા નૈરયિકની અપેક્ષાપ --ઇત્યાદિ અક્ષરાર્થં સુગમ છે, પરન્તુ 'યન્ને પળો 'ઉષ્ઠાપરુષા-ઉચા કરીને ઘટેલે 'ઘધે પાની ઉચી કરીને' વ અર્થ સમજવો. આયાર્થં છે--જેમ પર્યંતના ઉપર ઘૃશ ઉપર ઘટેલો ઘારે તરક દિશાઓ ઘને વિચિશાઓમા ઓતો ઘણુ અને અત્યત સ્પષ્ટ જુપ છે, તેમ કાપોતલેશ્યાવાલો નૈરયિક ઘીજા નીલલેશ્યાવાલ્યા નૈરયિકની અપેક્ષાપ ઘણુ ક્ષેત્ર અઘધિદાનઘટે જાણે છે અને જુપ છે, અને તે પળ અતિસ્પષ્ટને જાણે છે, અહીં ઘૃશને સ્થાને કાપોત-લેશ્યા અને ઉપરની ગરકપૃથિવો છે, પર્યંતને સ્થાને નીલલેશ્યા અને શ્રીશ્રી નરકપૃથિવી છે અને ઘણુને સ્થાને અઘધિદાન છે

दोसु होमाणे आभिनिवोहियसुयनाणे होज्जा, तिसु होमाणे आभिनिवोहियसुयनाणओहिनाणेसु होज्जा, अह-
वा तिसु होमाणे आभिनिवोहियसुयनाणमणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिनिवोहियसुयओहिम-
णपज्जवनाणेसु होज्जा, एवं जाव पम्हलेसे । सुक्कलेसेणं भंते ! जीवे कइसु नाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा
तिसु वा चउसु वा होज्जा, दोसु होमाणे आभिनिवोहियनाण एवं जहेव कण्हलेसाणं तहेव भाणियब्बं जाव

होय तो आभिनिवोधिक अने श्रुतज्ञानमां होय. जो त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां होय. अथवा
आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय. जो चार ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्य-
वज्ञानमां होय. ए प्रमाणे यावत् पद्मलेश्यावाळो जाणवो. हे भगवन् शुक्कलेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानमां होय ? हे गौतम ! वे, त्रण
अने चार ज्ञानमां होय. जो वे ज्ञानमां होय तो 'आभिनिकवोधिकज्ञान'—इत्यादि जेम कृष्णलेश्यावाळाने कहंठुं तेमज कहंठुं, यावत् चार

३०. 'कयी लेश्याओ केटला ज्ञानोमां होय' ए निरूपण करवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—कण्हलेसे णं भंते ! जीवे कइसु
नाणेसु होज्जा ? 'हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो जीव केटला ज्ञानोमां होय'—इत्यादि प्रश्नसूत्र सुगम छे. भगवान् कहे छे—'हे गौतम !
वे, त्रण अने चार ज्ञानमां होय छे, तेमां वे ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक अने श्रुतज्ञानमां होय, त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिवोधिक,
श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां अथवा आभिनिवोधिक, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यव ज्ञानमां होय, अही अवधिज्ञान रहितने पण मनःपर्यवज्ञान
थाय छे, कारण के सिद्धप्राभृतादि ग्रन्थोमां अनेकवार तेवी रीते प्रतिपादन करेलुं छे. वळी दूरेक ज्ञाननी तेना आवरणना क्षयोपशमनी
सामग्री विचित्र होय छे. तेमां कोइक आमयौध्यादिमांनी कोइपण लब्धिसहित अप्रमत्त चारित्रवाळाने मनःपर्यायज्ञानावरणना क्षयोप-
शमना निमित्तभूत तेवा प्रकारना अध्यवसायादिरूप सामग्री प्राप्त थाय छे, परन्तु अवधिज्ञानावरणना क्षयोपशमना कारणभूत सामग्री

बडहिं । एगंमि नाणे होमाणे एगंमि केवलनाणे होजा ।

पन्वणणाए भगवदए सत्तरसे लेस्साएए तइओ उरैसओ समत्तो ।

ज्ञानमां होय. जो एक ज्ञानमां होय तो एक केवलज्ञानमां होय.

प्रज्ञापना भगवतीमा सत्तरमा लेइयाएवलो श्रीजो उदेशक समाप्त

प्राप्त घती नथी, तेथी तेने मनापर्यय ज्ञान प्राप्त घाय छे (प्र०)--मन'पर्यपकान कतिवियुद्धने घाय छे भने कृष्णलेइया सफिलए अययमायरूप छे तो कृष्णलेइयावाळाने मनःपर्यय ज्ञाननो केम समय होय ? (उ०)--अहीं प्रत्येक लेइयाला असप्यता लोकाकाए प्रवेशप्रमाण अय्ययसायस्थानो होय छे, तेमांना केटलाएक मन्व रसवाळा अभ्ययसायस्थानको प्रमत्तसंयतने पण होय छे. तेथी कृष्ण, नील भने कापोतलेइया प्रमत्तसयत गुणस्थानक सुधी अन्य कार्मप्रस्थिक शालमां कहेली छे मन'पर्ययज्ञान प्रथम अयमत्त संयतने घाय छे भने स्यार पछी प्रमत्तसंयतने पण होय छे, माटे कृष्णलेइयावाळाने पण मन'पर्ययज्ञान संभये छे चार ज्ञानमां होय तो आभिनियोधिक, धुतज्ञान, अर्वाचिज्ञान भने मन'पर्यय-ए चार ज्ञानमा होय 'पय जाय पम्हलेसे' ए प्रमाणे कृष्णलेइयावाळाने कसु तेम उपर कहेला प्रकाखटे घायत् पम्हलेइया सुधी कहेयु पठले के नीललेइयावाळो, कापोतलेइयावाळो, तेजोलेइयावाळो भने पम्हलेइयावाळो उपर कहा प्रमाणे वे, त्रण भने चार ज्ञानोमां कहेयो ते आ प्रमाणे--"हे भगवन् ! नीललेइयावाळो जीय केटला ज्ञानमां होय ! हे नीतम ! वे, त्रण के चार ज्ञानमा होय--इत्यादि पण गुरुलेइयावाळामा विशेषता छे माटे ते सबधे शुद्र सत्र कहे छे--"सुकलेसे ण भवे !" इत्यादि हे भगवन् ! शुक्रलेइयावाळो इत्यादि शुक्रलेइयावांज केवलज्ञान होय छे पण यीजी लेइयाभोमा होनु नथी, तेथी वाकीनी लेइयावाळाभोथी गुरुलेइयावाळानी विशेषता छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमा सत्तरमा लेइयाएवलो श्रीजो उदेशक समाप्त

चउत्थो उद्देशो ।

परिणामवन्नरसंगंधसुद्धअपसत्थसंक्लिद्दुण्हा । गतिपरिणामपदेसोगाहवगणठाणाणमप्पबहुं ॥१॥
 ३१. कह णं भंते ! लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हलेसा जाव सुक्क-
 लेसा । से नूणं भंते ! कण्हलेसा नील्लेसं पप्प तारूवत्ताए तावणत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए

चोथो उद्देशक

१ परिणाम, २ वर्ण, ३ रस, ४ गंध, ५ शुद्ध, ६ अग्रस्त, ७ संक्षिप्त, ८ उष्ण, ९ गति, १० परिणाम, ११ प्रदेश, १२ अंब-
 गाढ, १३ वर्गणा, १४ स्थान अने १५ अल्पबहुत्व ए प्रमाणे पंदर अधिकार चोथा उद्देशकमां छे.

३१. हे भगवन् केटली लेश्याओ छे ? हे गौतम ! छ लेश्याओ छे. ते आ प्रमाणे—कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या. हे भगवन् !
 कृष्णलेश्या नील्लेश्याने पामीने तेना रूपपणे, तेना वर्णपणे, तेना रसपणे अने तेना स्पर्शपणे चारंवार परिणमे ? हा गौतम !

त्रीजो उद्देशक कसो, हवे चोथा उद्देशकनो प्रारंभ थाय छे. तेमां आदिमां अधिकार प्रतिपादक आ गाथा छे—‘परिणामवण्ण’
 इत्यादि. १ प्रथम परिणामाधिकार, २ त्रीजो वर्णाधिकार, ३ त्रीजो रसाधिकार, ४ चोथो गन्धाधिकार, ५ पांचमो शुब्ध अने अशुब्धा-
 धिकार, ६ छट्टो प्रशस्त अने अप्रशस्ताधिकार, ७ सातमो संक्षिप्त अने असंक्षिप्तधिकार, ८ आठमो उष्ण-शीताधिकार, ९ नवमो गत्व-
 धिकार, १० दसमो परिणामाधिकार, ११ अगियारमो प्रदेश-प्रदेशरूपणाधिकार, १२ चारमो अवगाढ-अवगाहनाधिकार, १३ वर्गणा-
 धिकार, १४ स्थानरूपणाधिकार अने १५ पंदर अधिकारो आ उद्देशकमां कहेवाना छे.

३१. तेमां प्रथम परिणामाधिकार कहेवानी दच्छाद्याळा सूत्रकार जेनो परिणाम कहेवानो छे ते लेश्याओ केटली छे ते यत्तावे छे

सुज्जो २ परिणमति ? इत्ता गोयमा ! कणहलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमति । से केणट्ठेणं भंते ! एवं बुबइ—'कणहलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमति' ? गोयमा ! से जहा नामए खीरे दूत्तिं पप्प सुद्धे वा चत्थे रागं पप्प तारूवत्ताए जाव ताफासत्ताए सुज्जो २ परिणमइ, से तेणट्ठेणं कृष्णलेइया नीललेइयाने पामीने तद्रूपणे, यावत्-वारवार परिणमे छे, हे भगवत् ! एम था हेतुथी कहो छो के 'कृष्णलेइया नीललेइयाने पामीने तद्रूपणे यावत् वारवार परिणमे छे' ? हे गौतम ! जेम दूध दूय-छाशने प्राप्त करी, अथवा शुद्ध वस्त्र रगने प्राप्त करी तद्रूपणे, यावत् तत्सपर्यपणे वारवार परिणमे छे, ते कारणथी हे गौतम ! एम कहु छुं के 'कृष्णलेइया नीललेइयाने पामी तद्रूपणे यावत्

—कह न भते ! लेसाओ पञ्चत्ताओ ! हे भगवत् ! केटली लेइयाओ कही छे-इत्यादि आ एउ पूर्व एण कणु छे, परन्तु परिणामरूप अर्थाधिकारु प्रतिपादन करया मोटे फरीथी कहेयामा आब्यु छे—'से नून भते' ! इत्यादि 'से' शब्द अथशब्दना अर्थमां छे भने अथशब्द प्रश्नना अर्थमां छे हे भगवन् ! 'नूनम्' निश्चित कृष्णलेइया-तृष्णलेइयाने योग्य द्रव्यो नीललेइयाने-नीललेइयाने योग्य द्रव्योने पामीने पटले परस्पर एकथीजाना अवयवने स्पर्श प्राप्त करी 'तद्रूपतया' तद्रूपपणे-नीललेइयाकरूपणे, अर्थां रूपशब्द स्वभाषयान्थी छे पटले नीललेइयाना स्वभाषपणे 'भूयो भूया' धारंयार परिणमे ! तेनो स्वभाष तेना पणादिरूपे होय छे, सेथी कहे छे, के 'तद्वर्णतया, तद्रूपतया तद्रन्धतया, तत्स्पर्शतया'-तेना धर्णरूपे, तेना रसरूपे, तेना स्पर्शरूपे, अर्थां वधे तत् (से) शब्दवडे नीललेइया योग्य द्रव्यने प्रहण करे छे पटले नीललेइया द्रव्यना स्वभाषपणे 'भूयो भूय' अनेकधार तिर्यच अने मनुष्योने ते ते मयान्तरनी प्राप्तिमा अथवा बाकीना समये परिणमे छे ! आ हकीकत तिर्यच मनुष्योने आधपी ज्ञापनी ए प्रमाणे गौतमे प्रश्न कयों पटले पटले भगवान् उत्तर आपे छे—'इत्ता गोयमा' ! हा गौतम ! इत्यादि अर्थां मनुमत छे हे गौतम ! ए मने अनुमत छे के कृष्णलेइया नीललेइयाने

गोयमा ! एवं बुचइ—'कणह्लेसा नील्लेसं पप्प तारूवत्ताण जाव सुज्जो २ परिणमइ' । एवं एतेणं अभिलावेणं नील्लेसा काउलेसं पप्प, काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसा सुवकलेसं पप्प जाव सुज्जो २ परिणमइ ।

चारंवार परिणमे छे'. ए प्रमाणे ए पाठ वडे नील्लेइया कापोतलेइयाने पामी, कापोतलेइया तेजोलेइयाने पामी, तेजोलेइया पच्चलेइयाने पामी अने पच्चलेइया शुक्कलेइयाने पामी यावत् चारंवार परिणमे .

पामीने तद्रूपणे परिणमे छे. अहीं आ भावार्थ छे—ज्यारे कृणलेइयाना परिणामवाळो तिर्यंच के मनुज्य भवान्तरमां जवानी इच्छा-वाळो होय अने नील्लेइया योग्य द्रव्यने ग्रहण करे त्यारे नील्लेइया योग्य द्रव्यना संवधथी ते कृणलेइयाने योग्य द्रव्यो तेवा प्रकारना जीवना परिणामरूप सहकारी कारण प्राप्त करी नील्लेइया द्रव्यरूपे परिणमे छे. कारण के पुद्गलानो ते ते रूपे परिणाम पाभवानो स्वभाव छे. तेथी ते केवळ नील्लेइया योग्य द्रव्यना प्राधान्यथी नील्लेइयाना परिणामवाळो थइ काळ करी भवान्तरमां उत्पन्न थाय छे. कणुं छे के 'जल्लेसाइं वृवाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसे उववज्जइ'—जे लेइयाद्रव्योने ग्रहण करी काळ करे छे ते लेइयाना परिणामवाळो उत्पन्न थाय छे. तथा तेज तिर्यंच अने मनुज्य तेज भवमां वर्ततो ज्यारे कृणलेइयाना परिणामवाळो थइने नील्लेइयापणे परिणत थाय छे त्यारे पण कृणलेइया योग्य द्रव्यो ते काले ग्रहण करेला नील्लेइया योग्य द्रव्यना संवन्धथी नील्लेइया योग्य द्रव्यरूपे परिणत थाय छे. आज अर्थनो दृष्टान्त वडे विचार करवानी इच्छावाळा सूत्रकार प्रथम प्रश्नसूत्र फहे छे—'से कोणहुंणं भंते !' इत्यादि. हे भगवन् ! एम शायी कहो छो-इत्यादि प्रश्न सुगम छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'गोयमा ! से जट्टानामए खीरे' इत्यादि. 'यथानाम' लोकप्रसिद्ध जेमके गोक्षीर-गायनुं दूध, बकरीनुं दूध, भैंसनुं दूध-इत्यादि नामवाळुं दूध होय ते 'दूसी' देशी शब्द होवाथी द्रव्य-चलोवेली छाशने प्राप्त करी परस्पर अवयवना स्पर्श वडे एकमेक थइने, तथा शुद्ध-मैलरहित वल्ल, कारण के मलिन वल्लने

३२. से नृण भते ! कण्हलेसा नीललेसं काउलेसं तेउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेसं पप्प तारुत्ताए तावणत्ताए तांगंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए सुज्जो २ परिणमइ ! हंता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेसं पप्प जाव सुक्कलेसं पप्प तारुवत्ताए तांगंधत्ताए ताफासत्ताए सुज्जो २ परिणमइ ! से केणट्टेणं भंते ! एवं चुचइ-‘कण्हलेसा नीललेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारुवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमइ’ ? गोयमा ! से जहानामए वेकलियमणी

३२. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेस्या नीललेस्या, कापोतलेस्या, तेजिलेस्या, पद्मलेस्या अने शुक्कलेस्याने पामी तद्भूरूपणे, तद्दर्शपणे, तद्गन्धपणे, तद्द्रव्यपणे अने तत्स्पर्शपणे चारचार परिणमे ? हा गौतम ! कृष्णलेस्या नीललेस्याने पामीने, यावत् शुक्कलेस्याने पामी तद्द्रव्यपणे, तद्दर्शपणे, तद्गन्धपणे तद्द्रव्यपणे अने तत्स्पर्शपणे चारचार परिणमे छे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कइओ छो के ‘कृष्णलेस्या रंगयाथा भाधे तो पण तेया प्रकारनो रंग लागतो नथी मांटे शुद्ध वल्ल कइ छे; राग-मजीठ वगेरेनो रंग प्राप्त करीने ‘तद्भूरूपतया’ मजीठ वगेरे रंगना स्वभावकरे पटले ‘तद्दर्शतया’ इत्यादि तेना वर्णाधिकरे परिणमे छे, ते प्रमाणे कृष्णलेस्यायोग्य द्रव्यो नीललेस्या योग्य द्रव्योने प्राप्त करी ते करे परिणमे छे अही आ भावार्थ छे—जेम द्रव्यरूप कारणनी मन्त्तर रहेला वर्णादि छाशना वर्णादि भाधे परिणमे छे, अथवा शुद्ध वल्लरूप कारणमां रहेला वर्णादि मजीठ वगेरे रंगद्रव्यना वर्णादिभाधे परिणत थाय छे तेम कृष्णलेस्या योग्य द्रव्यरूप कारणमां रहेला वर्णादि नीललेस्या योग्य द्रव्यना वर्णादिपणे परिणमे छे ‘से तेणट्टेणं’ से कारणथी इत्यादि उपसंहार धाम्य सुगम छे ए प्रमाणे ‘नीललेस्या कापोतलेस्याने पामीने’ इत्यादि चारे सुओनो विचार करवो

३२-३३. एम पूर्व पूर्व लेखयानु पछी पछीनी लेखयाने भाधयो से रूपे परिणमन कहु हये एक एक लेखयानु मनुकने थाकीनी बधी केखाकरे धयासमय परिणमन कहे छे-‘से नृण भते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सं’—‘हे भगवन् ! अयइय कृष्णलेस्या नीललेस्या

सिया कणहसुत्ताए वा नीलसुत्ताए वा लोहियसुत्ताए वा हालिइसुत्ताए वा आइए समणे ता-
रुवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमइ, से तेणट्टेणं एवं बुच्चइ-‘कणहलेसा नीललेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारुवत्ताए
सुज्जो २ परिणमति ।

३३. से नूणं भंते ! नीललेसा किणहलेसं जाव सुक्कलेसं पप्प तारुवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमइ ? हंता

नीललेस्या यावत् शुक्कलेस्याने पामी तद्रूपणे यावत् चारंवार परिणमे छे ? हे गौतम ! जेम कोइ वैडूर्य मणि होय अने ते काळा सूत्रमां,
लीला सूत्रमां, राता सूत्रमां के धोळा सूत्रमां परोब्बो होय तो तद्रूपणे यावत् चारंवार परिणमे छे, ते कारणथी एम कहुं छुं के कृष्ण-
लेस्या नीललेस्या यावत् शुक्कलेस्याने पामीने तद्रूपणणे चारंवार यावत् परिणमे छे.

३३. हे भगवन् ! अवश्य नीललेस्या कृष्णलेस्या यावत् शुक्कलेस्याने पामी तद्रूपणणे यावत् चारंवार परिणमे ? हा गौतम ! एमज

अने कापोतलेस्या वगेरेने पामी ते रूपे परिणमे ? इत्यादि. अहीं वा शब्द वधे कखो नथी छतां जाणी लेवो. पटले नीललेस्या अथवा कापोत-
लेस्या यावत् शुक्कलेस्याने पामी ते रूपे परिणत थाय छे, कारण के एक लेस्याने परस्पर विरुद्धपणे एक समये अनेक लेस्यारूपे
परिणाम थवो असंभवित छे. वाकी अक्षरार्थ पूर्वनी पठे जाणवो. आ विषयमां दृष्टांत कहेवानी इच्छावाळा सूत्रकार कहे छे—‘से
केणट्टेणं भंते ! हे भगवन् ! एम शाथी कहो छो ? इत्यादि सुगम छे. परंतु जेम ‘वैडूर्यमणि एक ज छतां ते ते उपाधि (निमित्त)
रूप द्रव्यना संबन्धथी ते ते रूपणणे परिणमे छे, तेम ते कृष्णलेस्यायोग्य द्रव्य पणं ते ते नीलादिलेस्यायोग्य द्रव्यना संबन्धथी ते
ते रूपे परिणमे छे, -तेटला अंशे आ दृष्टांत छे, पणं जेम वैडूर्यमणि पोताना स्वरूपनो त्याग नद्धि करतां ते ते उपाधि-निमित्तरूप
द्रव्यना संबन्धथी ते ते आकार मात्रने धारण करवा वडे ते ते रूपे परिणमे छे, तेम आ कृष्णलेस्यायोग्य द्रव्यो पण पोताना

गोयमा ! एवं चैव, काउलेसा किण्हलेसं नीललेसं तेउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेस, एधं तेउलेसा किण्हलेसं नील-
लेसं काउलेसं पम्हलेसं सुक्कलेसं, एव पम्हलेसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेसं तेउलेसं सुक्कलेसं पप्प जाव
सुज्जो २ परिणमइ ? इन्ता गोयमा ! तं चैव । से नृणं भंते ! सुक्कलेसा किण्हलेसं नीललेसं काउलेस तेउलेसं
पम्हलेसं पप्प जाव सुज्जो २ परिणमइ ? इन्ता गोयमा ! तं चैव ।

छे. कापोतलेइया कुण्णलेइया, नीललेइया, तेजोलेइया, पपलेइया, कापोत, तेजोलेइया अने शुक्कलेइयाने पामी, ए प्रमाणे तेजोलेइया कुण्ण, नील, कापोत,
पप अने शुक्कलेइयाने पामी, एम पपलेइया कुण्ण, नील, कापोत, तेजम् अने शुक्कलेइयाने पामी यावत् वारवार परिणमे ? हा
गौतम ! तेमज छे. हे भगवन् ! शुक्कलेइया कुण्णलेइया, नीललेइया, कापोतलेइया, तेजोलेइया अने पपलेइयाने पामी यावत् वारवार
परिणमे ? हा गौतम ! तेमज छे.

स्वरूपाने नहि छोडता ते ते नीलाणिलेइयायोग्य द्रव्यता संवत्थयी तेना तेना भाफार माअन धारण करया पडे ते ते रूपे परिणमे छे-
पटला भवो इच्छन्त नथी, कारण छे तिर्यङ्ग अने मनुष्योने लेइयाद्रव्योनी सर्पथा तद्गुरुपणे परिणाय तियातसमत छे जो एम न होय
तो नारक अने देयो संगथी लेइयाद्रव्योनी पंठे तिर्यङ्ग अने मनुष्योने पण लेइयाद्रव्यो सर्पथा पोताना स्वरूपानो त्याग नहि करया
पडे तेजोने सावा फाळ सुधी रडेयानो समय घाप, जेथी एजोनी उत्कर्षधी पण अन्तशुहर्तनी स्थिति अन्य स्थळे कही छे तेनी साथे
विरोध घाप, केमके मनुष्य अने तिर्यचनी उत्कृष्ट स्थिति दण पस्तोपम होयाथी तेनी उत्कृष्ट स्थिति यावत् दण पल्लोपमनी पण
संभवे ए प्रगले ते सियावनी अन्य पाच लेइयाता परिणामने आशयी कुण्णलेइया स्वल्पे एव कस, एम नीलादि लेइया स्वल्पे पण
प्रत्येकता ते सियावनी अन्य पाच लेइयाता परिणामने आशयी पांच सूत्रो कहेयां एम तिर्येव अने मनुष्योने मयात्तर प्राप्ति
समये अने वाकीला फाळे लेइयाद्रव्योनी परिणाम कसो देव अने नारक संगथी लेइयाद्रव्यो पोताना भयपर्यन्त अथस्थित होय छे,

३४. कणह्लेसा णं भंते ! वन्नेणं केरिसिया पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए जीमूते इ वा अंजणे इ वा खंजणे इ वा कज्जले इ वा गवले इ वा गवलवए इ वा जंबूफले इ वा अवारिड्डपुप्फे इ वा परपुट्टे इ वा भमरे इ वा भमरावली इ वा गयकलभे इ वा किण्हकेसरे इ वा आगासथिग्गले इ वा किण्हासोए इ वा कण्हकणवीरए इ वा कण्हबंधुजीवए इ वा, भवे एतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्ठे, कण्हलेस्सा णं इत्तो अणिट्ठयरिया चेव अ-

३४. हे भगवन् ! कृष्णलेस्या वर्णथी केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ मेघ, अंजन, खंजन-दीवाना कोडीयानो मेल, काजळ, गवल-पाडानुं शींगडुं, गवलवलय-वलयनी आकृतिवालुं पाडानुं शींगडुं, जांडु, लीला अरीठानुं फुल, कोयल, भ्रमर, भ्रमरनी पंक्ति, हाथीनुं वच्चुं, कृष्ण केसर-कालुं वकुलनुं झाड, आकाश थिग्गल-मेघाच्छादित आकाशखंड, कृष्ण अशोक, काली कणेर अने कालो बंधुजीवक छे, शुं-एवा प्रकारनी कृष्णलेस्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-युक्त नथी. कृष्णलेस्या एथी वधारे अनिट्ट, अत्यंत अ-
तेथी अन्य लेस्याद्रव्यना संबन्धथी तेनो आकारमात्र धारण करे छे, ते अहीं कहेवामां आवशे. तेथी परिणामरूप अधिकार कह्यो.

३४. हवै वर्णाधिकार कहे छे—'कण्हलेसा णं भंते ! वण्णेणं केरिसिया पन्नत्ता'-हे भगवन् ! कृष्णलेस्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे—
इत्यादि. कृष्णद्रव्यरूप लेस्या ते कृष्णलेस्या पटले कृष्णलेस्यायोग्य द्रव्यो. कारण के तेओने ज वर्णादिनो संभव छे, परन्तु कृष्णद्रव्यथी उत्पन्न थयेल भावरूप कृष्णलेस्या न लेवी, कारण. के तेओने वर्णादिनो संभव नथी. ते कृष्णलेस्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे ? भग-
वाच कहे छे—'हे गौतम ! 'यथानामकः' लोकप्रसिद्ध 'जीमूतः' मेघ, ते अहीं वर्णाक्रतुना प्रारंभकालनो जलयथी भरेलो जाणवो, कारण के प्रायः तेनामां ज अतिशय कालाश होय छे. इति शब्द उपमानभूत वस्तुओना नामनी समाप्ति द्योतक छे. वा शब्द बीजा उपमा-
नोनी अपेक्षाए समुच्चयना अर्थमां छे. एम वधे 'इति' अने 'वा' शब्द जाणवा. अंजन-सौवीराज्जन, सुरमो, अथवा श्याम वर्णवालुं रत्नविशेष,

कंतयरिया खेय अल्पगतारिया खेय अमणामतरिया खेय बध्नेणं पन्नत्ता ।

पती, अल्पन्न अप्रिय, अतिप्रमनोष्ण, अने मनने न गमे तेगी पूर्णं वढे कहेली छे.

मत्रल-दिशाना कोशीयानो मंत्र अथया 'तेन्यारिन्नेइयुक फाडाली धमीना मत्सागरी उत्पन्न धयेन्न मेल' एव बीजा आचार्यो कहे छे 'कञ्चन' धानल प्रसिद्ध छे, गणल-याडां दुर्गिण्ड, अने ते एण उपनी ल्यवाना मागने दूर करेलु समजयु, कारण के त्यांग विदिष्ट काडाउनो एमप छे जंनु प्रसिद्ध छे, मरिष्ट-भगीळं, पाणुष्ट-कोयल, अमर-अमरो, अमराली पकि, गजकामय-भापीनु वण्यु, कृष्ण बेमा-हाडी गोरसळी, आकाशविष्णु-उरदकुमां मेवपडे आच्छादित आराउनो गड, ते एण एणोन्न काळो लगे छे माटे कजु छे. कृष्ण अगोक, कृष्ण कणपीर-कजेर, कृष्ण वयुजीरक-बगेरीओ-ए एया अनुक प्रकारा गुरो छे अओकादि गुरो आतिमेवधी पाव एवना होय छे तेगी बाळोका एवंगे निवेध करया एण्यनु प्राण कजुं छे पटानु वध पडले गौतम कहे छे—'अये एयाइया' ? हे अगएट ! कृष्णलेइया एवं पडे एया स्वरूपयाळी होय ! मगयान् उन्नर आरे छे-हे गौतम ! एया रूपयाळी कृष्णलेइया होय ए अयं समर्थ-युक मयो, एगनु ने कृष्णलेइया आ ओमूनादि-केय एगेरेयी कृष्ण एवंपयै अय्य-त अनिष्ट छे अही किचिय् अनिष्ट होया उता स्वकएगी कान्न-मनोहर होय छे माटे कान्नएणानो निवेध करया माटे कहे छे-अय्य-त अकान्न होय छे केडव्यवने करक अनिष्ट एतां अने स्वकएयी अकान्न एतां बीजाने प्रिय होय छे माटे तर्पथा प्रियएणानो निवेध करया माटे कहे छे—'अप्रियतरिका' अल्पत अप्रिय छे आप वाएणयी 'अमनोवन्नरिक्केय' प्रत्यग्न अमनाव छे, कारण के वस्तुत एयार्थ गरिवाल थयायी उरएण उयोइयकने तंभा मन्ती मयुणि धनी मयी अयत अमरोष एतां करक मज्जम होय, तेगी आयत्त मएएमा प्रकर्यविदोएनु प्रनियालन करया माटे कहे छे—'अममाएररिक्केय' आयत्त माने प्राण नदि एताए, 'मार्गि आचोति' मनने प्राण गाय, वडले मनने वय कहे ते प्राण कहेयाय, एगी न होय ते 'अमणामतरिया' अय्य-त अमरोष [अही एणाम उन्नर मनोवयान्ती कहे छे.] वडले अल्पत अमनोहर एया प्रकारानो लेइएण

૩૫. નીલલેસ્સા ણં મંતે ! કેરિસિયા વન્નેણં પન્નત્તા ? ગોયમા ! સે જહાનામણ્ ભિંગણ્ ઇ વા ઇચ્છાપત્તે ઇ વા
ચાસે ઇ વા ચાસપિચ્છણ્ ઇ વા સુણ્ ઇ વા સુયપિચ્છે ઇ વા સામા ઇ વા ચણરાઈ ઇ વા ઉચ્છંતણ્ ઇ વા પારેવયગીવા
ઇ વા મોરગીવા ઇ વા હલહરવસણે ઇ વા અયસિક્કુસુમે ઇ વા વણકુસુમે ઇ વા અંજણકેસિયાકુસુમે ઇ વા
નીહ્ણપ્પલે ઇ વા નીલાસોણ્ ઇ વા નીલકણવીરણ્ ઇ વા નીલચંધુજીવે ઇ વા, ભવેયારુવે ? ગોયમા ! ણો ઇણઠ્ઠે સમઠ્ઠે ।
ણ્ત્તો જાવ અમણામયરિયા ચેવ વન્નેણં પન્નત્તા ।

૩૫. હે ભગવન્ ! નીલલેશ્યા વર્ણ વડે કેવા પ્રકારની છે ? હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ મુંગ, મુંગની પાંચ, ચાસ, ચાસપિચ્છ, શુક,
શુકપિચ્છ, શ્યામા-પ્રિયંગુ, વનરાજિ, ઉચ્ચંતક-દાંતનો રંગ, પારેયાની ગ્રીવા, મોરની ગ્રીવા, વલદેવનું વલ્લ, અલસી પુણ્પ, વગનું કુસુમ,
અંજનકેશિકાનું કુસુમ, નીલોત્પલ, નીલાશોક, લીહું કણવીર, અને લીહું ચંધુજીવક છે, એવા પ્રકારની નીલલેશ્યા હોય ? હે ગૌતમ !
એ અર્થ સમર્થ નથી. એથી વધારે મનને ન ગમે તેવી વર્ણ વડે કહેલી છે.

વર્ણવડે કહેલી છે.

૩૫. 'નીલલેશ્યા ણં મંતે' ! હે ભગવન્ ! નીલલેશ્યા વર્ણવડે કેવા પ્રકારની છે ? જ્યાંદિ અક્ષરાર્થ પૂર્વેની પેઠે જાણવો. પરન્તુ મુંગ-
પાંચવાહું પશ્ચીવિશેષ છે, મુંગપત્ર-તે મુંગ પશ્ચિની પાંચ; ચાસ-એક જાતનું પશ્ચી, ચાસપિચ્છ-ચાસપશ્ચીની પાંચ, શુક-પોપટ, શુકપિચ્છ-
પોપટની પાંચ, શ્યામા-પ્રિયંગુલતા, વનરાજિ-વનની ઘટા પ્રસિદ્ધ છે, ઉચ્ચંતક-દાંતનો રંગ, એ સંવન્ને મૂલ ટીકાકાર કહે છે- "ઉચ્ચંતગો
દંતરાગો મદ્દઈ" ઉચ્ચંતકને દાંતનો રંગ કહેવાય છે. પારેયાની અને મોરની ગ્રીવા-હોક પ્રસિદ્ધ છે. હલધરવસન-ચલદેવનું વલ્લ, તે
લીહું હોય છે માટે મ્રહ્ણ કર્યું છે. અલસીપુણ્પ અને વણનું ફુલ પ્રસિદ્ધ છે. અંજનકેશિકા-વનસ્પતિવિશેષ, તેનું કુસુમ-પુણ્પ, નીલો-

३६. काउलेस्सा ण भते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए त्खदिरसारए इ वा कइरसारए इ वा घमाससारे इ वा तवे इ वा तयकरोडे इ वा तवच्छिवाडियाए इ वा वाइगणिकुसुमे इ वा कोइलच्छदकुसुमे इ वा जवासाकुसुमे इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इण्ठे समंठे । काउलेस्सा णं एत्तो अणिट्टयरिया जाय अमणामयरिया चैव वन्नेणं पन्नत्ता ।

३७ तेउलेस्सा णं भंते ! केरिसिया यन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामए ससरुहिरए इ वा उरम्भरुहिरए

३६. हे मगवन् ! कापोतलेइया वर्णं वडे केवा प्रकारनी कही छे ? हे गौतम ! जेम कोइ खेरसार, करीसार, धमासासार, तंब-तात्र, तंबकरोड-तात्रकरोटक, तयछेवाडिया, (तांबानी बटोरी), वेंगणीना पुष्य, कोकिलच्छद(तेलकंटक)पुष्य अने जवासाकुसुम छे. कापोतलेइया एवा प्रकारनी होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. कापोतलेइया एथी अनिएतर, यावत् मनने न गमे तेवी वर्ण वडे होय छे

३७. हे मगवन् ! तेजोलेइया वर्णं वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ ससलानु रुधिर, उरम्र-घेठानु रुधिर, इकरुं

स्यल-लीलु कमळ, नील अशोक, नील कणवीर अने नील यन्जुजीव ए यथा अमुक प्रकारना वृक्षो छे

३६ 'काउलेस्सा ण भते' ! हे मगवन् ! कापोतलेइया वर्णयडे केया प्रकारनी छे ? इयादि अहीं एण अक्षरपर्यं पूर्वनी गेठे जाणयो त्खदिरसार-खेरसार अने घमासासार लोकप्रसिद्ध छे 'तंबे इ वा तयकरोडए इ वा तयछेवाडिया इ वा' ए समवाययी जाणी लेवा 'धुन्ताकीकुसुम' रीगणीनुल्ल प्रसिद्ध छे 'कोइलच्छद-तेलकंटकनु पुष्य, ए सयथे टोकाकार कहे छे--'धर्णना

इ वा वराहरुहिरे इ वा संबररुहिरे इ वा मणुस्सरुहिरे इ वा इंदगोपे इ वा वालेंदगोपे इ वा बालदिवायरे इ वा संझारगे इ वा गुंजद्धरगे इ वा जातिहिंगुले इ वा पवालंकुरे इ वा लखारसे इ वा लोहितक्खमणी इ वा किमिरागकंचले इ वा गयतालए इ वा चीणपिट्टरासी इ वा परिजायकुसुमे इ वा जासुमणकुसुमे इ वा किंसुयपुप्फरासी इ वा रत्तुण्पले इ वा रत्तासोगे इ वा रत्तकणवीरणे इ वा रत्तबंधुयजीवणे इ वा, भवेयारूवा ? गोयमा ! णो इणंटे समंटे । तेउलेसा णं एत्तो इट्ठतरिया चैव जाव मणामतरिया चैव वन्नेणं पन्नत्ता ।

रुधिर, सावरतुं रुधिर, मनुष्यतुं रुधिर, इन्द्रगोप, नवो इन्द्रगोप, बाल दूर्य, संध्यानो रंग, अर्ध चणोठीनो रंग, जातिहिंगलो, प्रवालंकुर, लाधारस, लोहिताक्षमणि, कसमजी रंगवाळी कांबल, हाथीतुं ताळतुं, चीनपिट्टराशि (मधुरना पिष्टनो राशि ?) पारिजातकुसुम, जपाकुसुम—जासुदना फुल, केसुडानां फुलनो राशि, रक्तोत्पल, रक्तशोक, रक्त कणेर अने रक्त बन्धुजीवक छे. तेजोलेख्या एवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. तेजोलेख्या एथी वधारे इष्ट, यावत् मनने गमे एवी वर्णं वडे कहेली छे.

अधिकारमां कोकिलच्छद छे ते अहीं तैलकंटक कहेवाय छे.” अने तेतुं फुल प्रसिद्ध छे.

३७. 'तेउलेस्सा णं भंते' ! हे भगवन् ! तेजोलेख्या वर्णं वडे केवा प्रकारनी छे—इत्यादि. ससला, घेटा, सायर वराह अने मनुष्यतुं रुधिर बीजा जीवोना रुधिर करतां उत्कट रातावर्णवाळुं होय छे, तेथी एवोतुं ग्रहण करेलुं छे. 'वालेंद्रगोपकः' तत्काल जन्मेलो इन्द्रगोप, ते ज्यारे मोटो थाय छे त्यारे कंसक श्वेत-रक्तवर्णवाळो थाय छे, तेथी वालतुं ग्रहण कर्युं छे. 'इन्द्रगोपकः'—वर्णवस्तुना प्रथम समयमां थवावाळो अमुक प्रकारनो कीडो, 'वालदिवारकः'—प्रथम उगतो सूर्य, गुंजार्व—चणोठीनो अर्धभाग, चणोठीनो अर्धभाग अत्यंत रातो होय छे अने अर्धभाग अत्यन्त कालो होय छे, माटे अर्धतुं ग्रहण कर्युं छे, जाल्य-प्रधान हिंगलोक, प्रवाल-नवां पावडां, तेना

३८. पम्हलेसाणं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामण चपे इ वा चंपयछल्ली इ वा चंपयमेदे इ वा हालिघा इ वा हालिघगुलिया इ वा हालिघमेदे इ वा हरियाले इ वा हरियालुलिया इ वा हरिया-

३८. हे भगवन् ! पम्हलेश्या वर्णं वढे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ चपो, चपानी छाल, चंपकमेद-चपानो खढ हलदर, हलदरानी गौळी, हलदरानी खढ, हलताल, हढतालगुटिका, हढतालखंड, चिक्कर, चिकुराण, सुवर्णनी छीप, श्रेष्ठसुवर्णनी अकुर ते प्रयालकुट, ते प्रथम उगता होय त्वारे अत्यत राता होय छे तेथी तेनु प्रहण कर्युं छे त्याहारस-खालनो रस प्रसिद्ध छे, लोहितारुमणि-लोहितारु नामे रत्नविशेष, कीरमजी रग घंटे रंगेळी कयल ते कृमिरागकयल कहेयाय छे अही शाकयार्थिखालिनी पंठे मध्यमपद्वनो लोप थयो छे गजतालु, चिनपिष्टराधि, पारिजातकुसुम, जपाकुसुम-जामुद, किङ्गुकुसुम-पराधि, रत्नोत्पल, रत्नशोफ, रत्नकणधीर-कणेर अने रत्न कम्बुजीष प पधा लोकप्रसिद्ध छे 'भवे पयात्वा' ? पधा प्रकाली सेजोलेश्या होय ? भगवान् उत्तर आपे छे--'हे गौतम ! प अर्थ युक्त नथी' कारण के सेजोलेश्या आ ससलाना रुधिर घनोरेथी यथारे राता वर्णघंटे अत्यत इष्ट छे तेमा किंचिद् अकान्त छता पण केटलापकने इष्टतर होय छे ते माटे अत्यन्त कान्तपणु प्रतिपादन करया माटे कहे छे--'कान्ततरिकैच'-अत्यन्त कान्त होय छे केटलापकने अत्यन्त इष्ट अने स्वरूपथी अत्यन्त कान्त होय तो पण धीजाने अप्रिय होय छे तेथी अत्यन्त प्रियपणु यत्तायवा माटे कहे छे--'प्रियतरिकैच' अतिप्रिय छे आ हेतुथी 'मनोहतरिकैच' अधिक मनोह छे अधिक मनोह छता पण करक मध्यम मनोह होय ते माटे अत्यत प्रकृष्टनो प्रकर्मविशेष जणावथा माटे कहे छे--'मनापतरिकैच' मनने प्राप्त करजार-मनने यश करजार वर्णघंटे कहेली छे

३८ 'पम्हलेस्सा ण मते' ! हे भगवन् ! पम्हलेश्या वर्णघंटे केया प्रकारनी छे--इत्यादि अक्षरार्थ पूर्णनी पंठे जाणवो परन्तु चपक पटले सामान्यतः सुवर्णचपक-पीळो चपो जाणवो, चपकछल्ली-सुवर्ण चपकनी छाल, 'चम्पकमेद-सुवर्णचपकनी

लभेदे इ वा चिउरे इ वा चिउररागे इ वा सुवन्नसिष्पी इ वा चरकणगणिहसे इ वा चरपुरिसवसणे इ वा अह्मइ-
कुसुमे इ वा चंपयकुसुमे इ वा कणियाारकुसुमे इ वा कुहंडयकुसुमे इ वा सुवण्णज्हिया इ वा सुहिरिन्निया-
कुसुमे इ वा कोरिंटमल्लदामे इ वा पीतासोगे इ वा पीतकणवीरे इ वा पीतवंधुजीवए इ वा, भवेयास्वे? गोयमा!
णो इण्ठे समट्टे । पम्हलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ।

३९. सुक्कलेस्सा णं भंते ! केरिसिया वन्नेणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामाए अंके इ वा संखे इ वा चंदे

कस, वासुदेवचंद्र, अल्लकी पुष्प, चंपकपुष्प, कर्णिकार कुसुम-कणेर पुष्प, कृष्णान्दकुसुम-कोहलाना फुल, सुवर्ण जूइ, सुहिरण्यिका
कुसुम, कोरंटकनी माला, पीळो अशोक, पीत कणवीर, अने पीत वंधुजीवक छे, एवा प्रकारनी पत्रलेश्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ
समर्थ नथी. पत्रलेश्या एथी अत्यंत इष्ट, यावत् अत्यंत मनने गमे तेवी वर्ण वडे कहेली छे.

खंड, टुकडो, ज्यारे तेनो खंड कयों होय त्यारे तेना वर्णनो प्रकरणं शाय छे ते माटे भेदनुं ग्रहण करयामां आब्युं छे. हरिद्रा-पिंडहरिद्रा,
हरिद्रागुटिका-हळदरनी गोळी. हरिद्रामेव-हळदरनी रंड, हरिताल-हडनाळ, हरितालगुटिका-हडताळनी चनावेली गोळी, हरिताल
मेव-हडताळनो रंड, ककडो, चिकुर-पीळुं अमुक जातनुं द्रव्य, चिकुरराग-चिकुरनो यलादिने लागेलो रंग, 'मुवण्णसिष्पी इ वा'-सुवर्णनी
छीप, चर-प्रधान सुवर्णनो निकर-कसोटी उपरनो रेगारूप कस, चरपुरण-वासुदेवचंद्र वसन-यल, ते पीळुं होय छे माटे ग्रहण कर्युं छे.
अह्मकीकुसुम लोक्तथी जाणहुं. चंपककुसुम-सुवर्ण चंपकनुं पुष्प, कर्णिकारकुसुम-कांचनाखुं पुष्प, कृष्णान्दिकाकुसुम-पुंस्फलिकाखुं
पुष्प, मुवर्णयूथिकाकुसुम-पीळी जूइनुं कुसुम प्रसिद्ध छे. सुहिरण्यिका-अमुक प्रकारनी यनस्पतिनुं कुसुम, कोरंटकमाल्यदाम-कोरंटकना
पुष्पनी माळा, पीत अशोक, पीत कणवीर-कणेर, अने पीत वंधुजीव प्रसिद्ध छे.

इ वा कुंवे इ वा दने इ वा दगरण इ वा दधी इ वा दहिघणे इ वा खीरे इ वा खीरपूर इ वा सुक्कच्छिवाडिया इ वा पेहुणमिजिया इ वा घंतघोयरुप्पण्टे इ वा सारदयलाहए इ वा कुमुददले इ वा पौडरीयदले इ वा सालि-
पिट्टरासीति धा कुडगपुष्करासीति वा सिंदुवारमल्लवामे इ वा सेयासोए इ वा सेयकणवीरे इ वा सेतयंघुजीचण इ वा, भवेयारूवे? गोयमा! नो इण्णडे समट्ठे। सुक्कलेसा ण एत्तो इट्ठतरिया चैव मणुण्णयरिया चैव चन्नेजं पट्टत्ता।

३९. हे भगवन् ! शुक्कलेश्या वर्ण वडे केवा प्रकारनी छे ! हे गौतम ! जेम कोइ एक अंकाल, शल, चन्द्र, कुन्द-भोगरो, पाणी, दकरज-पाणीना बिन्दु, दही, दहीनो पिंड, क्षीर-दूध, क्षीरनो समूह, शुक्क छीवाडी-चाल वगेरेनी फळी, विहुणमिजा-मयूर पिच्छनो मध्यभाग, तपावेल स्वच्छ रूपानो पट्ट, शरत्कालनो मेघ, कुमुदपत्र, पुडरीक पत्र, शालिपिट्टण्णि, कुटजपुष्परश्मि, सिंदु-
वारना पुष्पनी माला, श्वेत अशोरु, श्वेत कणवीर अने श्वेत घन्घुजीचक छे, एवा प्रकारनी शुक्कलेश्या होय ! हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी शुक्कलेश्या एथी वयारे इट्ट अने अत्यंत मनोह्र वर्ण वडे कही छे.

३९. 'सुकलेसा ण मंते' ! इत्यादि हे भगवन् ! शुक्कलेश्या वर्णवडे केवा प्रकारनी छे-इत्यादि अक्षरार्थ पूरैनी वेठे समजयो परल्लु अक-यमुक प्रकारनु रत्न, शाल अने चद्र प्रसिद्ध छे, कुन्-भोगरानु पुष्प, दक-उदक, पाणी, उदकरज-पाणीना कणो, ते मायंत धोळा होय छे माटे तेनु ग्रहण करुं छे दधि-दही प्रसिद्ध छे, दधिघन-दहीनो पिंड, क्षीर-दूध प्रसिद्ध छे, क्षीरपूर-उकळतु अने भक्तिता एथी उमराए जतु दूध, 'सुकाछिवाडिया इ वा' शुक्क छीवाडी-चाल वगेरेनी र्शिनो, ते सुकायेली होय स्वारे अत्यंत धोळी होय छे माटे तेनु ग्रहण करुं छे, 'पेहुणमिजिया इ वा' पेहुण-भोरपिच्छनी मध्यवर्ती मञ्जा-गर्भ, ते अत्यन्त शुक्ल होय छे माटे तेनु ग्रहण करुं छे, 'घलघोयरुप्पण्टे इ वा' प्मान-तपावेलो, अग्निना सयग्घयी निर्मल करयेलो, घौम-भस्मयी खरडायेला हाथ घती साक करया

४०. एयाओ णं भंते ! छहेसाओ कइसु वन्नेसु साहिज्जंति ? गोयमा ! पंचसु वन्नेसु साहिज्जंति, तंजहा-
कणहलेसा कालएणं वन्नेणं साहिज्जति, नीललेस्सा नीलवन्नेणं साहिज्जति, काउलेस्सा काललोहिएणं वन्नेणं सा-
हिज्जति, तेउलेस्सा लोहिएणं वन्नेणं साहिज्जति, पम्हलेस्सा हालिइएणं वन्नेणं साहिज्जइ, सुक्कलेस्सा सुक्कि-
एणं वन्नेणं साहिज्जति ।

४०. हे भगवन् ! आ छ ए लेइयाओ कया वर्णो वडे कहेवाय छे-कया वर्णवाळी छे ? हे गौतम ! पांचे वर्ण वडे कहेवाय छे.
ते आ प्रमाणे- कृष्णलेइया काळा वर्ण वडे कहेवाय छे. नीललेइया नील-लीला वर्ण वडे कहेवाय छे, कापोतलेइया कंइक काळा अने
कंइक राता वर्ण वडे कहेवाय छे. तेजोलेइया राता वर्ण वडे कहेवाय छे, पद्मलेइया पीळा वर्ण वडे कहेवाय छे, अने शुक्कलेइया शुक्ल
वर्ण वडे कहेवाय छे.

वडे अत्यन्त खच्छ करायेलो जे रूपानो वनेलो पट्ट, 'सारइयवलाहणे इ वा' शारदिक-शरदकतुना वलाहक-मेघ, पुंडरीक-धोळुं
कमळ, तेना दल-पत्र-पांखडीओ, शालिपिट्टराशि, कुटजपुष्परशि, सिन्दुवार पुष्पनी माळा, अने श्वेत वन्धुजीव प्रसिद्ध छे.

४०. अहीं पांच वर्णो छे. ते आ प्रमाणे-कृष्ण, नील, रक्त-रातो, ह्यट्टि-पीळो अने शुक्ल. लेइयाओ छे छे, तेथी उपमान-समानपणावडे
वर्णनो निर्देश करवा छतां पण संशय थाय के 'कइ लेइया कया वर्णमां होय छे' ? तेथी पूछे छे--'एयाओ णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् !
आ हमणां कहेली छ लेइयाओ 'कइसु वन्नेसु साहिज्जंति' केटला वर्ण वडे कहेवाय छे ? [अहीं प्राकृत होवाथी तृतीया विभक्तिना अर्थमां
सप्तमी विभक्ति थाय छे. जेमेके 'तिसु तेसु अलंक्रिया पुढवी' ते त्रण वडे पृथिवी अलंकृत छे.] भगवान् कहे छे--हे गौतम ! पांच
वर्ण वडे कहेवाय छे. जे प्रमाणे कहेवाय छे ते प्रमाणे 'तं जहा' इत्यादि वडे बतावे छे. ए प्रमाणे वर्णपरिणाम कह्यो.

४१. कण्हलेस्सा णं भंते ! केरिसिया आसापणं पन्नत्ता ? गोयमा ! से जहानामाग निवे इ या नियसारे इ वा नियच्छही इ वा निषफाणिप इ वा कुडण इ वा कुडगफलण इ वा कुडगछही इ वा कुडगफाणिण इ वा कुडु-
गंतुपीइ वा कुडुगंतुपिफले इ वा खारतउसी इ वा रारतउसीफले इ वा देववालीति या देववालीपुष्के इ वा मि-
गवालुंकी इ वा मियवालुंकीफले इ वा घोसाडण इ वा घोसाडईफले इ वा कण्हकंदण इ वा पज्जकंदण इ वा, भ-
वेयारुवे ? गोयमा ! णो इण्हंते समंढे, कण्हलेसा ण तत्तो अणिट्ठतरिया चेव जाय अमणामयरिया चेव आसा-
णं पन्नत्ता ।

४१. हे भगवन् ! कृष्णलेख्या आस्ताद वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम के कोइ निप-लीयडो, निषसार-लीपडानो
सार, लीबडानी छाल, निषफाणित-लीयडानो कनाथ, कुटज (कडाछालनु वृक्ष), कुटजफल, कडाछाल, कुटजवनाथ, कडवी तुंबडी,
कडवी तुंबडीनु फल, धारणुपी-कडवी चीमडी, कडवी चीमडीनु फल, देववाली-कुकडवेल, देववालीनु पुष्प, मृगवालुंकी, मृग-
वालुंकी फल-इन्द्रवरुणुं (१), घोपातकी (कडवा तुसीयां), घोपातकी फल, कृष्णकद अने वन्नकन्द छे, तथा प्रकारनी कृष्ण लेख्या होय ?
हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. कृष्णलेख्या एथी थारै अनिट्ठ यावत् मनने गये तेवी आस्ताद-एत वडे कहेली छे.

४१ हये रसरणिणम कहे छे—'कण्हलेसा ण भंते ! केरिसिया आसापणं पन्नत्ता' ? हे भगवन् ! कृष्णलेख्या माम्याद वडे केवा
प्रकारनी छे ?—एत्यादि सय मुगम छे भगवान् उत्तर कहे छे-से 'यथानामफा' लोकप्रमिय-जेम के निप-लीयडो, निषसार-लीयडानो
सच्यवर्ती भाग, लीयडानी छाल, निषफाणिन-लीयडानो कथाथ, कुटज-इप्रययउ वृक्ष, कुटजफल-इप्रजय, कुटजाउल्ली-कडाछाल,

४२. नीललेसाए पुच्छा। गोयमा ! से जहानामए भंगीति वा भंगीरए इ वा पाढा इ वा चविया इ वा चित्ता-
मूलए इ वा पिप्पली इ वा पिप्पलीमूलए इ वा पिप्पलीचुण्णे इ वा मिरिए इ वा मिरियचुण्णए इ वा सिंगबेरे
इ वा सिंगवेरचुण्णे इ वा, भवेयारूवे ? गोयमा ! णो इण्हंटे समडे, नीललेस्सा णं एत्तो जाव अमणामतरिया
चेव आसाएणं पन्नत्ता ।

४२. नीललेश्या संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जेम कोइ भंगी-भांग, भंगीरज, पाठा, चव्यक, चित्रमूल, पीपर, पीपरीमूल, पीपर-
चूर्ण, मरी, मरीचूर्ण, भृंगवेर-सुंठ अने सुंठनुं चूर्ण छे, एवा प्रकारनी नीललेश्या होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. नीललेश्या
एथी यावत् मनने न गमे तेवी आस्वाद वडे छे.

कुटजफणित-कडाछालनो कवाथ, कडुकतुंवी-कडवी तुंबडी प्रसिद्ध छे, कडुक तुंबीफल-कडवी तुंबडीनुं फल, क्षारत्रपुपी अर्ही क्षार
शब्द कडुकवाची छे, कारण के तेवा प्रकारे आगममां प्रसिद्ध छे. पटले कडवी चीभडी, क्षारत्रपुपीफल-कडबुं चीभडुं, देवदाली-रोहिणी (कु-
कडवेळ), तेनुंज पुष्प देवदालीपुष्प, मृगवाळुंकी-इन्द्रवारुणी (?) लोकथकी जाणवी. तेनुं फळ मृगवाळुंकी फळ, घोपातकी-कडवी घीसोडी,
तेनुं फळ ते घोपातकीफल, कृष्णकन्द अने वज्रकन्द अनन्तकायिक वनस्पतिविशेष लोकथी जाणी लेवा. ए प्रमाणे कडुं पटले गौतम
पूछे छे—हे भगवन् ! कृष्णलेश्या रसथी एवा प्रकारनी छे—लीवडा वगरेना जेवी छे ? भगवान् कहे छे—हे गौतम ! ए अर्थ युक्त
नथी, कारण के कृष्णलेश्या आ लीवडा वगरेना रसनी अपेक्षाए अत्यन्त अनिष्ट छे इत्यादि पूर्वनी पेटे जाणुं.

४२. 'नीललेसाए पुच्छा' नीललेश्या संबन्धे प्रश्न इत्यादि. भंगी-वनस्पति विशेष, (भांग ?) तेनी रज ते भंगीरज, पाठा अने चित्र
मूल लोकप्रसिद्ध छे. पीपर, पीपरीमूल, पीपरचूर्ण, मरी, मरीचूर्ण, सुंठ अने सुंठनुं चूर्ण ए वधां प्रसिद्ध छे.

૪૩. 'કાંડલેસ્તાપ પુષ્પા । ગોપમા । સે જહાનામઠ અંયાણ ધા અંયાડગાણ ધા માડલિંગાણ ધા વિદ્ધાણ ધા કવિદ્ધાણ ધા મજ્ઞાણ ધા ફળસાણ ધા વાદિમાણ ધા પારિયતાણ ધા અલ્લોહધાણ ધા ચોરાણ ધા ચોરાણ ધા તિંદુયાણ ધા અપવકાણ અપરિવાગાણ વલ્લેણ અણુવેયાણં કાસેણં અણુવેયાણં, મવેયારૂવે? ગોપમા । ગો ઇણઠે સમઠે, જાચ દત્તો અમણામયરિયા ચેચ કાંડલેસ્તા અસ્તાણં પન્નસ્તા ।

૪૩. કાપોતલેશ્યા સવધે પૂષ્પા. હે ગૌતમ ! જેમ કોઈ આમ્ર, અંબાડક-આમ્રાતક, માટુલિંગ-વીજોરાં, ઘીલાં, કપિત્થ-કોઠા, મજ્જા (?), ફળસ, દાડમ, પાસપત, અલોહ, ચોર, ચોર, તિંદુક-તે ઘણાં અપવ્ચ, સર્પુર્ણ પરિપાકને નહિ પ્રાપ્ત થયેલા, વિચિષ્ટ વર્ણ, ગન્ધ અને સ્પર્શ વડે રહિત હોય, એવી કાપોતલેશ્યા છે ? હે ગૌતમ ! ૫ અર્થ સમર્થ-યુક્ત નથી, યાવત્ એથી મનને ન ગમે તેવી કાપોતલેશ્યા આસ્વાદ વડે કહેલી છે

૪૩ 'કાંડલેસ્તાપ પુષ્પાં-કાપોતલેશ્યા સવધે પ્રમ્ન ઇત્યાદિ આમ્રફલો, આમ્રાતક-ફલ્લ વિશેષ, ઘીલોયં, ઘીલાં, કોઠ, ફળસ, અને દાડમ ૫ પ્રસિદ્ધ છે પરપત ૫ ફલ્લ વિશેષ છે, અલોહવૃક્ષના ફલ્લો અલોહો, ચોર અને તિંદુક પ્રસિદ્ધ છે ૫ ફલ્લો અવક હોય, તેમાં સર્વેયા ૫ળ અવક ફલ્લ કહેવાય, માટે કહે છે--'અપરિપાકાનામ્' જેમનો પરિપાક-પરિપૂર્ણ વાક નથી થયો વધા, મર્યાત્ વંદક વાકેલા, વનેજ ઘણાંદિ વડે કહે છે-મત્તિરિચિષ્ટ વર્ણ, ઘાળેન્દ્રિયને સુગ્રાકારક ગ્રહ, વિચિષ્ટ પરિપાકન્ત લિયલ્લ સહચારી વધા સ્પર્શને નહિ પ્રાપ્ત થયેલા વધા આમ્રાવિનો જેવો રમ્લ હોય છે અર્હો ગૌતમશ્યામી પૂઠે છે--આયા પ્રકારના રસપાઠી કાપોતલેશ્યા હોય ! મગયાન્ ઉચ્ચર આંયે છે--હે ગૌતમ ! ૫ અર્થ યુક્ત નથી પરન્તુ મા અપરિપક આમ્રફલાવિધી અત્યન્ત અનિષ્ઠ રસવઠે યુક્ત છે ઇત્યાદિ પૂર્વેની વેઠે કહેયુ

इदतरिया चैव जाव मणामयरिया चैव आसाएणं पन्नत्ता ।

४६. सुक्कलेसाणं भंते ! केरिसिया अस्साएणं पन्नत्ता ? गोयसा ! से जहानामए गुले इ वा खंडे इ वा स-
होय छे. एवा प्रकारनी पब्लेश्या छे ? हे गौतम ! ए अर्थ युक्त नथी. पब्लेश्या एथी वधारे इष्ट यावत् मनने गमे तेवी
आस्वाद वडे छे.

४६. हे भगवन् ! शुक्कलेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे ? हे गौतम ! जेम कोइ गोल, खांड, साकर, मत्स्यंडिका, पर्पटभोदक,
तेनुं स्वरूप जाणहुं. तेमां श्रेष्ठ प्रसन्ना मदिराना विशेषणो कह्ने छे-‘भंसला’ उपचित रसवाळी, ‘पेशला’ मनोश, अने मनोर होवाथी
‘इपद्दओष्ठावलंविनी’ इपत्-जरा ओष्ठने विपे अवलंबन करवाना-लागवाना स्वभाववाळी अने त्यार पछी अत्यंत स्वादिष्ट होवाथी आगळ चाली
जाय एवी, तथा ‘इपद्दव्यवच्छेदकटुका’ इपत्-जरा पीघा’ पछी बंध पडतां पलची वगरे द्रव्यना संबन्धथी कटुक-तीखी, पटले जेनो
तिक स्वभाव जणाय छे एवी. इपत्-कंइक ताम्र-लाल आंख करनारी, कारण के प्रायः वधी मदिराओ पवाज स्वभावनी होय छे. ‘उक्कोसमय-
पत्ता’ उत्कृष्ट मद्द करवाना स्वभावनै प्राप्त थयेली, पंजुंज वर्णादि वडे समर्थन-प्रतिपादन करे छे-उत्कृष्ट मदनी साथे नियत रहेवावाळा प्रशस्त
वर्ण वडे, प्राणेन्द्रियने सुखकारक गन्ध वडे, परम सुख आपनार रस वडे अने मदना परिपाकनी साथे अव्यभिचारी (नियत रहेला)
स्पर्श वडे युक्त, आ हेतुथी आस्वाद करवा योग्य, विशेषतः स्वाद करवा लायक, ‘प्रीणीया’ प्रीति उत्पन्न करनारी, ए प्रमाणे दर्प
उत्पन्न करनारी, मद्द उत्पन्न करनारी, सर्व इन्द्रिय अने सर्व शरीरने सुख आपनारी एवा प्रकारनी श्रेष्ठ प्रसन्ना मदिरा छे, ए
प्रमाणे कह्युं पटले भगवान् गौतम पूछे छे-‘हे भगवन् ! आवा प्रकारना रसवाळी पब्लेश्या छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-‘आ अर्थ
युक्त नथी’. इत्यादि वहुं पूर्वनी पेटे जाणहुं.

४६. ‘सुक्कलेसा णं भंते’ ! हे भगवन् ! शुक्कलेश्या आस्वाद वडे केवा प्रकारनी छे-इत्यादि. गोल अने खांड प्रसिद्ध छे, शर्करा-

चकरा इ वा मच्छंडिया इ वा पण्डमोदए इ वा भिसकंदए इ वा पुष्कतरा इ वा पउसुतरा इ वा आवंसिया इ वा सिद्धतिया इ वा आगासफालितोवमा इ वा उवमा इ वा, अणोवमा इ वा, भवेतारूवे ? गोयमा ! जो इ-णडे समडे, सुक्कलेस्सा एत्तो इद्धतरिया चेव पियतरिया चेव मणामयरिया चेव आसाएणं पन्नत्ता ।

४७ कइ णं भत्ते ! लेस्साओ दुग्भिगंधाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तओ लेस्साओ दुग्भिगंधाओ पन्नत्ताओ, तंजहा-कणहलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा । कइ णं भत्ते ! लेस्साओ सुग्भिगंधाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! तओ

वीसफन्द, पुष्पोचरा, पपोचरा, आदर्शिका, सिद्धार्थिका, आकाशस्फटिकोपमा, उपमा अने अदुपमा होय, एवा प्रकारनी शुक्कलेरया होय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. शुक्कलेरया एथी वधारे इट, वधारे त्रिय अने अधिक मनने गमे तेथी आसाद वडे छे.

४७. हे भगवन् ! केटली लेश्याओ दुग्भिगंधवाळी छे ? हे गौतम ! त्रण लेश्याओ दुग्भिगंधवाळी छे. ते आ प्रमाणे-कृष्णलेश्या, नीललेश्या अने कापोतलेश्या. हे भगवन् ! केटली लेश्याओ सुग्भिगंधवाळी छे ? हे गौतम ! त्रण लेश्याओ सुग्भिगंधवाळी छे ते साफर काश वगैरेसी उपन्न थयेली, मत्स्यडी-खड्डकंफ-खाडकी वगैरी साफर, पर्पटमोक्क वगैरे समवायथी जाणी लेया थानी बधु सुगम छे ए प्रमाणे लेश्याद्वयोनो रस कसो

४७ हवे गथाधिकार कहे छे-‘का ण भत्ते ! लेस्साओ दुग्भिगंधाओ’ ? हे भगवन् ! केटली लेश्याओ दुग्भिगंधवाळी छे ! इत्यादि परन्तु कृष्ण, नील अने कापोतलेश्या दुग्भिगंधवाळी छे, कारण के मरी गयेल गाय वगैरेता कलेथरयो अन्तगुण दुग्भिगन्धयुक्त छे. तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्कलेश्या ए सुग्भिगंधवाळी छे, कारण के पीसवामा आवता सुगन्धी-सुवासित द्रव्यो अने सुगन्धी कुसुमादिथी-एण अन्तगुण सुग्भिगन्धसहित छे ए सबन्धे उत्तराध्ययनना लेश्याध्ययनमा कसु छे-

लेस्साओ सुभिभंगंघाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा, एवं तओ अविशुद्धाओ, तओ विसुद्धाओ, तओ अप्पसत्थाओ, तओ संकिलिद्धाओ, तओ असंकिलिद्धाओ, तओ सीतलु-
आ प्रमाणे—तेजोलेश्या, पबलेश्या अने शुक्कलेश्या. ए प्रमाणे त्रण अविशुद्ध लेश्याओ छे अने त्रण विशुद्ध लेश्याओ छे. त्रण अप्र-
शस्त लेश्याओ छे अने त्रण प्रशस्त लेश्याओ छे. त्रण संक्केशवाली लेश्याओ छे अने त्रण असंक्केशवाली लेश्याओ छे. त्रण शीत-

“जह गोमडस्स गन्धो गागमडस्स व जहा अहिमडस्स । एत्तो उ अणंतगुणो लेस्साणं अप्पसत्थाणं ॥

जह सुरभिक्षुसुमंग्घो गन्धवासाण पिस्समाणणं । एत्तो उ अणंतगुणो पसत्यलेस्साण तिण्हंपि ॥

जेम मरी गयेल गायनो, मरी गयेला हस्तीनो अने मरी गयेला सापनो गन्ध होय छे एथी अनन्तगुण दुर्गन्ध अप्रशस्त लेश्या-
ओनो जाणवो. जेम सुगन्धी पुण्पेनो गन्ध अथवा पीसाता सुवासित द्रव्योनो गन्ध होय तेथी अनन्तगुण गन्ध त्रण प्रशस्त लेश्याओनो
जाणवो. गन्धपरिणाम कह्यो. हवे शुद्धशुद्धपणुं चताववा माटे कहे छे—‘एवं तओ अविशुद्धाओ, ततो विसुद्धाओ’ ए प्रमाणे—उपर
कह्या प्रमाणे आविनी त्रण लेश्याओ अशुद्ध कहेवी, कारण के अप्रशस्त वर्ण, गन्ध अने रससहित छे. पछीनी त्रण लेश्याओ विशुद्ध
छे, कारण के प्रशस्त वर्ण, गन्ध अने रसयुक्त छे. तेथी एम कहेतुं जोएए— कइ णं भंते ! लेस्साओ अविशुद्धाओ पन्नत्ताओ ?
हे भगवन् ! केटला प्रकारनी अविशुद्ध लेश्याओ छे ? हे गौतम ! त्रण अविशुद्ध लेश्याओ छे. ते आ प्रमाणे—कृणलेश्या, नीलेश्या
अने कापोतलेश्या. हे भगवन् ! केटली विशुद्ध लेश्याओ कही छे ? हे गौतम ! त्रण विशुद्ध लेश्याओ कही छे, ते आ प्रमाणे—तेजो-
लेश्या, पबलेश्या अने शुक्कलेश्या. एम शुद्धपणुं अने अशुद्धपणुं कहुं, हवे प्रशस्तपणुं अने अप्रशस्तपणुं जणावे छे—तओ अप्पसत्थाओ
तओ पसत्थाओ’ आविनी त्रण लेश्याओ अप्रशस्त छे, कारण के लेश्या योग्य द्रव्यो अप्रशस्त होवाथी अप्रशस्त अध्यवसायनुं कारण
छे. पछीनी त्रण लेश्याओ प्रशस्त छे, केमके प्रशस्त द्रव्य होवाथी प्रशस्त अध्यवसायनुं कारण छे. सूत्रपाठ पूर्वनी पेटे जाणवो-

ફવાઓ, તઓ નિદુષ્ઠાઓ, તઓ ધુગ્ગતિગામિયાઓ, તઓ સુગ્ગતિગામિયાઓ ।

રુઘ્ લેશ્યાઓ છે અને ઋણ સ્તિગ્ધ-ઉષ્ણ લેશ્યાઓ છે. ઋણ ધુર્ગતિગામી (ધુર્ગતિમાં લડ જનારી) લેશ્યાઓ છે અને ઋણ સુગ્ગતિગામી (સુગ્ગતિમાં લડ જનારી) લેશ્યાઓ છે.

'કા ન મતે ! લેસ્સાઓ અપ્પસરથાઓ પન્નશાઓ ! હે મગધન્ ! કેટલી લેશ્યાઓ અપ્રગ્ધસ્ત છે--ત્યાવિ યમ પ્રગ્ધસ્સયણુ અને અપ્રગ્ધસ્તપણુ કશુ હવે સક્કિણ્ણપણુ અને અસક્કિણ્ણપણુ જણાવે છે--'તઓ સંકિલિદ્ધાઓ'-ઋયમની ઋણ લેશ્યાઓ સંક્રિષ્ટ છે. કારણ કે સક્કિણ્ણ પયા માતંખ્યાન અને ઠેઠ્ઠખ્યાનના અપ્યવસાયસ્થાનનો ઘેરુ છે પછીની ઋણ લેશ્યાઓ અસક્કિણ્ણ છે, કારણ કે સપ્પલેશ્યાપિત ધર્મખ્યાન અને ઠુલ્લખ્યાનના અપ્યવસાયસ્થાનનુ કારણ છે મહીં પળ સુઋપાઠ પૂર્વેની પેઠે જાણવો--'હે મગધન્ ! કેટલી લેશ્યાઓ સક્કિણ્ણ છે' ત્યાવિ હવે ઠીત અને ઉષ્ણ સ્પર્શનું પ્રતિપાદન કરવા માટે કહે છે--'તઓ સીપલુસ્સાઓ, તઓ ણિદુષ્ઠાઓ' આવીની ઋણ લેશ્યાઓ ઠીત અને રુઠ્ઠસ્પર્શ્યાલી છે અને પછીની ઋણ લેશ્યાઓ સ્તિગ્ધ અને ઉષ્ણસ્પર્શ્યાલી છે મહીં લેશ્યાધ્રવ્યોને ધીજા પળ કર્કચાવિ સ્પર્શો છે, કારણ કે લેશ્યાધ્યયનમાં કાણુ છે કે

જાઠ્ઠ ધરવસ્સ ફાસો ગોમિન્નાપ ય સાગપત્તાણ । પ્તો વિ અણત્તુણો લેસ્સાણ અપ્પસપ્પાણ ॥

જેમ કરચતનો, ગાયની ઝીમનો અને સાગના પાદડાનો સ્પર્શ હોય પથી પળ અન્તત્તુણ (કર્કચ) સ્પર્શ અપ્રગ્ધસ્ત લેશ્યાધ્રવ્યોનો છે

જાઠ્ઠ વૂસ્સ ય ફાસો નચ્ચીપ્પસ ય સિરીલકુસુમાણ । પ્તો વિ અણત્તુણો પ્પસ્યલેસ્સાણ સિ્ણ્ણપિ ॥

જેમ ઘઠ, મયનીત-માલ્લણ, અને ચિરીપના ફુલનો સ્પર્શ છે, તેથી પળ અન્તત્તુણ (મટ્ટ) સ્પર્શ ઋણે પ્રગ્ધસ્ત લેશ્યાઓનો છે તો પળ પ્રથમની ઋણ લેશ્યાઓનો ઠીત અને રુઠ્ઠ સ્પર્શ ચિત્તની અસસ્થતા ઉત્પન્ન કરવામાં અને પછીની ઋણ લેશ્યાઓનો સ્તિગ્ધ અને ઉષ્ણ સ્પર્શ પરમ સતોપ ઉત્પન્ન કરવામા અત્યત સાધક છે તેથી તે ધન્ને શુદ્ધા શુદ્ધા સાક્ષાત્ કહા છે, માટે તેમાં ધોય નથી

४८. कण्ठलेस्सा णं भंते ! कतिविहं परिणमं ? गोयमा ! त्तिविहं वा नवविहं वा सत्तावीसविहं वा एक्कासीत्तिविहं वा वेत्तेयालीसत्तविहं वा बहुयं वा बहुविहं वा परिणमं परिणमइ, एवं जाव सुक्कलेसा ।

४८. हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रकारना परिणम वडे परिणमे छे ? हे गौतम ! त्रण प्रकारना, सत्या-
वीश प्रकारना, एकाशी प्रकारना, वसो तेंतालीस प्रकारना, बहु अने बहु प्रकारना परिणम वडे परिणमे छे. ए प्रमाणे शुक्कलेश्या सुधी जाणवुं.

सूत्रपाठ पूर्वनी पेटे जाणवो-‘हे भगवन् ! केटली लेश्याओ शीतरूक्ष छे’-इत्यादि. हचे गतिद्वार कहे छे-‘तओ दुग्गइगामिणीओ, तओ सुग्गइगामिणीओ’-आदिनी त्रण लेश्याओ दुर्गतिमां लइ जवाना स्वभाववाली छे, कारण के संक्खिए अद्यवसायनो हेतु छे, पछिनी त्रण लेश्याओ सुर्गतिमां लइ जवाना स्वभाववाली छे, कारण के प्रशस्त अद्यवसायनो हेतु छे. सूत्रपाठ पूर्वनी पेटे जाणवो-‘हे भगवन् ! केटली लेश्याओ दुर्गतिगामी-दुर्गतिमां लइ जनारी छे’ इत्यादि.

४८. हचे परिणामद्वार कहे छे-‘कण्ठलेसा णं भंते ! ‘कइविहं परिणमं’-अहीं प्राकृत होवाथी तृतीयाना अर्थमां द्वितीया चिभक्ति समजवी. जेम आचारांग सूत्रमां-“अर्गणं च खलु पुट्टा” अग्नि वडे स्पर्श करायेला-ए अर्थ छे. तेथी आ अर्थ थाय छे-‘हे भगवन् ! कृष्णलेश्या केटला प्रकारना परिणम वडे परिणमे छे ? भगवान् उत्तर आपे छे-‘गोयमा ! त्तिविहं वा’-‘हे गौतम ! त्रण प्रकारना परिणम वडे इत्यादि परिणमे छे. अहीं लेश्यानो जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट भेद वडे त्रण प्रकारनो परिणम छे. ल्यारे ए जघन्यादि परिणामनी स्वस्थानना तारतम्यना विचारमां प्रत्येकने जघन्यादि त्रण वडे गुणीए त्यारे नव प्रकारनो परिणम थाय, एम फरी फरी त्रण वडे गुणतां सत्यावीश प्रकार, एकाशी-प्रकार, वसो तेंतालीश प्रकार, एम बहु अने बहु प्रकारना परिणामनो विचार करवो. अहीं वधे तृतीयाना अर्थमां द्वितीया चिभक्ति छे. तेथी त्रण प्रकारना परिणम वडे, नव प्रकारना परिणम वडे परिणमे छे एम पदोनी योजना करवी. ‘एवं जाव सुक्कलेस्सा’ ए प्रमाणे शुक्कलेश्या सुधी जाणवुं. पटले कृष्णलेश्या संवन्धी प्रकार वडे नीलादि

४९ कण्हलेस्सा ण भंते ! कतिपदेसिया पन्नत्ता ? गोयमा ! अणत्तपदेसिया पन्नत्ता, एवं जाव सुक्कलेस्सा ।
कण्हलेस्सा ण भंते ! कइप्पणसोगाढा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जपणसोगाढा पन्नत्ता । एवं जाव सुक्कलेस्सा ।
कण्हलेस्साणं भंते ! केवत्तियाओ वग्गणाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! अणत्ताओ वग्गणाओ, एवं जाव सुक्कलेस्साण ।

४९, हे भगवन् ! कृष्णलेस्या केटला प्रदेशवाली छे ! हे गौतम ! अनन्त प्रदेशवाली छे, एम शुक्कलेस्या सुधी समजंउं, हे भगवन् !
कृष्णलेस्या केटला प्रदेशनी अवगाहनावाली छे ? हे गौतम ! असंख्याता प्रदेशोनी अवगाहनावाली छे, एम शुक्कलेस्या सुधी
समजंउं, हे भगवन् ! कृष्णलेस्यानी केटली वगंगाओ छे ? हे गौतम ! अनन्त वगंगाओ छे ए प्रमाणे शुक्कलेस्या सुधी जाणयुं,

लेदयाओ पण यायन् शुक्कलेस्या सुधी कदेवी सूत्रपाठ सुगम होयाथी स्य विचारयो.

४९, हचे प्रदेशद्वार कहेयानी इच्छा वढे सूत्रकार कहे छे—'कण्हलेसा ण भंते ! कइप्पणसिया'-हे भगवन् ! 'कृष्णलेस्या केटला
प्रदेशवाली छे'-इत्यादि सुगम छे, परन्तु 'अनन्त प्रदेशवाली छे' कारण के कृष्णलेस्याने योग्य द्रव्यना प्रदेशो-सेमे योग्य परमाणुओ
अनन्तान्त संख्यावाळा छे केमेके अनन्त प्रदेशो स्थायनो कोइ पण स्कन्ध जीयने प्रहण योग्य नथी एम नीलादि लेदयाओ पण
कदेवी एम शुक्कलेस्या सुधी कहेयु हचे अवगाहनाद्वार कहे छे—'कण्हलेस्सा ण भंते ! कइप्पणसोगाढा' ? हे भगवन् ! कृष्णलेस्या
केटला प्रदेशोनी अवगाहनावाली छे ! इत्यादि अही अवगाहनाद्वारमा प्रदेशो वटले क्षेत्रना प्रदेशो प्रहण करवा, कारण के तेमा ज
अवगाहनाओ प्रविद्धि छे ते क्षेत्रप्रदेशो अनन्त वर्गणाओना आधारभूत असंख्याता ज जाणया कारण के संपूर्ण लोकना पण
असंख्याता प्रदेशो छे हचे वर्गणाद्वार कहे छे—'कण्हलेस्साण भंते ! कइप्पणसोगाढा' ? हे भगवन् ! कृष्णलेस्यानी
केटली वर्गणाओ छे-इत्यादि अही वर्गणा औदारिकादि शरीरयोग्य परमाणुओनी वर्गणाओ पेटे कृष्णलेस्याने योग्य द्रव्यना परमाणुओनी
वर्गणा प्रहण करथी अने ते वर्णादिना मेवथी समान जातियाळानी ज होयाथी अनन्त वर्गणाओ जाणथी एम नीललेस्यादि प्रत्येकनी

५०. केवतिया णं भंते ! कण्हलेस्साठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा कण्हलेस्साठाणा पन्नत्ता ।
एवं जाव सुक्कलेस्सा ।

५०. हे भगवन् ! कृष्णलेश्याना केटलां स्थानो छे ? हे गौतम ! कृष्णलेश्याना असंब्याता स्थानो छे. ए प्रमाणे शुक्कलेश्या
सुधी जाणवुं.

वर्णणाओ कहेवी. ए प्रमाणे सूत्रकार कहे छे—‘एवं जाव सुक्कलेस्साए’ इति एम शुक्कलेश्या सुधी कहेवुं.
५० हवे स्थानद्वार कहे छे—‘केवइया णं भंते कण्हलेसाठाणा पन्नत्ता’ ? हे भगवन् ! कृष्णलेश्याना केटलां स्थानो परले विशुद्धि अने
अविशुद्धिना प्रकर्ष-अधिकता अने अपकर्ष-न्यूनता वडे करायेला स्वरूपना भेदो छे ? अहीं स्थानशब्द भेदवाची छे. सूत्रमां
पुंलिगनो निर्देश प्राकृत होवाथी थयेलो छे. अहीं ज्यारे भावरूप कृष्णादि लेश्याओनो विचार करीए ल्यारे एक एक लेश्याना विशुद्धि
के अविशुद्धिना हीनाधिकपणाथी करायेला स्वरूप स्थानो काळथी असंब्याती उत्सर्पिणो अने अवसर्पिणीना समय प्रमाण छे
अने क्षेत्रथी असंब्याता लोकाकाशना प्रदेशप्रमाण छे. कहुं छे के—

“असंखेज्जाणुसप्पिणीण अवसप्पिणीण जे समया । संखाईया लोगा लेस्साणं होति ठाणाइं ॥”

असंब्याती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना जे समयो छे, अथवा असंब्याता लोकाकाशनो जेटला प्रदेशो छे तेदला लेश्याना स्थानो छे.
परन्तु अशुभलेश्याना संक्षेपरूप अने शुभलेश्याना विशुद्धरूप स्थानो छे. ए भावलेश्याना स्थानोना कारणभूत कृष्णादि द्रव्यो छे,
तेने पण स्थानोज कहेवाय छे अने तेज स्थानो अहीं ग्रहण करवा, कारण के आ उद्देशकमां कृष्णादि द्रव्यनोज विचार प्रस्तुत छे.
ते स्थानो प्रत्येक लेश्याना असंब्याता छे, कारण के तेवा प्रकारना एक परिणामना कारणभूत अनन्त द्रव्यो पण एक अध्यवसायना
हेतुभूत होवाथी एकरूप छे. ते स्थानो प्रत्येक लेश्याना बे प्रकारना छे-जघन्य अने उत्कृष्ट. जघन्य लेश्यास्थानरूप परिणामना कारण

५१. एणसि णं मत्ते ! कण्हलेस्साठाणाणं जाव सुक्कलेस्साठाणाण य जहन्नगणं दब्बट्टयाण पपसट्टयाए द-
ब्बट्टपणसट्टयाण कत्तरे कत्तरेहिंतो अप्पा चा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जहन्नगा काउलेस्साठाणा दब्बट्टयाए,
जहन्नगा नील्लेसाठाणा दब्बट्टयाए असंखेज्जगुणा, जहन्नगा कण्हलेस्साठाणा दब्बट्टयाण असंखेज्जगुणा, जहन्नगा

५१ हे प्रगवन् ! जघन्य एवा कृष्णलेक्ष्याना स्थानो यावत् शुक्ललेक्ष्याना स्थानोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-
प्रदेशार्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौधी घोडा जघन्य कापोतलेक्ष्याना स्थानो द्रव्यार्थ-
रूपे छे, तेथी जघन्य नील्लेक्ष्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे अंतर्ख्यातगुणा छे, तेथी जघन्य कृष्णलेक्ष्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असख्यात-

ते जघन्य अने उत्कृष्ट लेक्ष्यास्थानरूप परिणामना कारण ते उत्कृष्ट. जे मध्यम स्थानो छे तेमां जे जघन्यने नजीक होय तेनो जघन्यमा
समावेश थाय छे अने उत्कृष्टने नजीक होय तेनो उत्कृष्टमा समावेश थाय छे ते एक एक जघन्य स्थानो अने उत्कृष्ट स्थानो पोताना
स्थानने आधार्यी परिणामरूप गुणना मेवथी असख्याता छे अहीं वा इष्टान्त छे-जेम स्फटिकमणिनी रक्ता अळताने लीये थाय छे,
अने ते जघन्य रक्तागुणवाळा अळताथी जघन्य रक्ता थाय छे, एकगुण अधिक अळता घटे एकगुण अधिक जघन्य रक्ता होय छे,
एम एक एक गुणनी बुद्धि करवा घटे जघन्य रक्तामां असख्याता स्थानो थाय छे अने ते वधा व्यवहारथी घोडागुणवाळा होवाथी
जघन्य स्थानो कहेथाय छे ए प्रमाणे आत्माने पण जघन्य एकगुणाधिक, द्विगुणाधिकदि लेक्ष्याद्रव्यना संनिधानथी असख्याता
लेक्ष्यापरिणामो थाय छे अने ते वधाय व्यवहारथी अल्पगुणवाळा होवाथी 'जघन्य' कहेथाय छे तेना कारणभूत लेक्ष्याद्रव्येना स्थानो
पण जघन्य कहेथाय छे ए प्रमाणे उत्कृष्ट स्थानो पण असख्याता जाणवा

५१ हये अल्पबहुत्व कहे छे—'एणसिण मत्ते ! कण्हलेस्साठाणाण' इत्यादि अहीं ऋण अल्पबहुत्व छे-जघन्य स्थानविययक, उत्कृष्ट
स्थानविययक अने उमयस्थानविययक एक एकना पण ऋण प्रकार छे-द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे, अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे तेमा

તેડલેસાઠાણા દબ્બદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા પમ્હલેસાઠાણા દબ્બદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા સુવકલે-
સાઠાણા દબ્બદ્યાએ અસંલેજગુણા, પએસદ્યાએ-સવ્વોત્થોવા જહન્નગા કાડલેસાઠાણા પએસદ્યાએ, જહન્નગા
નીલેસાઠાણા પએસદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા કળહલેસાઠાણા પએસદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા તેડલે-
સસાએ ઠાણા પએસદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા પમ્હલેસાઠાણા પએસદ્યાએ અસંલેજગુણા, જહન્નગા સુવકલે-
સાઠાણા પએસદ્યાએ અસંલેજગુણા, દબ્બદપએસદ્યાએ-સવ્વત્થોવા જહન્નગા કાડલેસાઠાણા દબ્બદ્યાએ, જહ-
ન્નગા નીલેસાઠાણા દબ્બદ્યાએ અસંલેજગુણા, એવં કળહલેસસા, તેડલેસસા, પમ્હલેસસા, જહન્નગા સુવકલેસા-

ગુણા છે, તેથી જઘન્ય તેજોલેશ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી જઘન્ય પદ્મલેશ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલ્યાત-
ગુણા છે, તેથી જઘન્ય શુક્કલેશ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલ્યાતગુણા છે. પ્રદેશાર્થરૂપે-સૌથી થોડા જઘન્ય ક્રાપોતલેશ્યાના સ્થાનો
પ્રદેશાર્થરૂપે છે, તેથી જઘન્ય નીલેશ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી જઘન્ય કૃષ્ણલેશ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે
અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી જઘન્ય તેજોલેશ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે અસંલ્યાતગુણા છે. તેથી જઘન્ય પદ્મલેશ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે
અસંલ્યાતગુણા છે, તેથી જઘન્ય શુક્કલેશ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે અસંલ્યાતગુણા છે. દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થરૂપે-સૌથી થોડા જઘન્ય

જઘન્ય સ્થાનના વિષયમાં દ્રવ્યાર્થરૂપે અને પ્રદેશાર્થરૂપે ક્રાપોત, નીલ, કૃષ્ણ, તેજસ્, પદ્મ અને શુક્ક પ્રત્યેક લેશ્યાના સ્થાનો અનુક્રમે
ઉત્તરોત્તર અસંલ્યાતગુણા કહેવા. દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થરૂપે-પ્રથમ દ્રવ્યાર્થરૂપે ક્રાપોત, નીલ, કૃષ્ણ, તેજસ્, પદ્મ અને શુક્કલેશ્યાના અનુક્રમે
ઉત્તરોત્તર અસંલ્યાતગુણા સ્થાનો છે. ત્યાર બાદ શુક્કલેશ્યાના સ્થાન પછી પ્રદેશાર્થરૂપે ક્રાપોતલેશ્યાના સ્થાનો અતન્તગુણા છે. ત્યાર

ठाणा द्रव्यद्वयात् असंख्यगुणा, जटन्नर्हितो सुषुक्लेस्साठाणेहितो सुषुक्लेस्साठाणा पागसद्वयात्
असंख्यगुणा, जटन्नया नीललेसाठाणा पागसद्वयात् असंख्यगुणा, एवं जाव सुषुक्लेस्साठाणा ।

५२. एतेसि णं कण्हलेस्साठाणां जाय सुषुक्लेसाठाणाण य उक्कोसगाणं द्रव्यद्वयात् पागसद्वयात् द्रव्यद्व-
पागसद्वयात् कयरे कयरेहितो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सबत्थोवा उक्कोसगा काउलेस्साठाणा द्रव्यद्वयात्, उ-
कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे अंतल्यात्तगुणा छे. एम जयन्य कृष्णलेश्या,
तेजोलेश्या, पथलेश्याना स्थानो छे. तेथी जयन्य शुक्कलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असल्यात्तगुणा छे. द्रव्यार्थरूपे जयन्य शुक्कलेश्याना
स्थानोथी जयन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे अंतल्यात्तगुणा छे, तेथी जयन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे अमम्यात्तगुणा
छे. ए प्रमाणे शुक्कलेश्याना स्थानो सुधी जाणवु.

५२. हे भगवन् ! ए उत्कृष्ट कृष्णलेश्याना स्थानो यावत् शुक्कलेश्याना स्थानोमां द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशा-
र्थरूपे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे.

पछी नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्कलेश्याना स्थानो अनुक्रमे प्रदेशार्थरूपे उत्तरोत्तर असल्यात्तगुणा छे ए प्रमाणे उत्कृष्टस्थानो
द्रव्यार्थरूपे, प्रदेशार्थरूपे अने उपयार्थरूपे विचारया माटे करु छे के 'एवं जहेय जहन्नगा तथेय उक्कोसगि, नयरं उक्कोसति अमित्तयो'
जेम जयन्य स्थानो कळा तेम उत्कृष्ट स्थानो पण कहेथा, परन्तु त्यां अग्र्यने वदले 'उत्कृष्ट' पाठ कहेयो जयन्य अने उत्कृष्ट स्थानना
समुदायविरयक अल्पबहुत्वमा प्रथमथी द्रव्यार्थरूपे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्कलेश्याना जयन्य स्थानो अनुक्रमे

क्कोसगा नील्लेसाठाणा दब्बट्टयाए असंखेजगुणा, एवं जहेव जहन्नगा तहेव उक्कोसगाचि, नवरं उक्कोसत्ति अभिलावो ।

५३. एतेसि णं भंते ! कणह्लेस्सठाणाणं जाव सुक्कलेस्सठाणाण य जहन्नउक्कोसगाणं दब्बट्टयाए पणसट्टयाए दब्बट्टपणसट्टयाए कतरे कतरेहिंतो अप्पा वा ४ ? गोयमा ! सब्बत्थोवा जहन्नगा काउलेसठाणा दब्बट्टयाए, जहन्नया नील्लेसठाणा दब्बट्टयाए असंखेजगुणा, एवं कणह्लेतेउपम्ह्लेस्सठाणा, जहन्निया सुक्कलेसठाणा दब्बट्टयाए असंखेजगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो सुक्कलेसठाणा काउलेसठाणा दब्बट्टयाए ।

तेथी उत्कृष्ट नील्लेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे, ए प्रमाणे जेम जघन्य स्थानो कर्भां तेम उत्कृष्ट स्थानो पण कहेवां परन्तु जघन्यने स्थाने 'उत्कृष्ट' एवो पाठ कहेवो.

५३. हे भगवन् ! ए जघन्य अने उत्कृष्ट कृष्णलेश्याना स्थानो यावत् शुक्कलेश्याना स्थानोमां द्रव्यार्थपणे, प्रदेशार्थपणे अने द्रव्यार्थ-प्रदेशार्थपणे कोण कोनाथी अल्प, बहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोडा जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे छे. तेथी जघन्य नील्लेश्याना स्थानो द्रव्यार्थपणे असंख्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पद्मलेश्याना स्थानो संबंधे जाणवुं. तेथी जघन्य शुक्कलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंख्यातगुणा छे. द्रव्यार्थरूपे जघन्य शुक्कलेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे, स्यार पढी जघन्य शुक्कलेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोत, नील, कृष्ण, तेज, पद्म अने शुक्कलेश्याना स्थानो अनुक्रमे द्रव्यार्थपणे उत्तरोत्तर असंख्यातगुणा छे. एम प्रदेशार्थपणे पण जघन्य अने उत्कृष्टस्थान संबन्धे अल्पबहुत्व विजावुं. ते

અસંલેખગુણા, ઉચ્કોસા નીલલેસાઠાણા દબ્બટ્ટયાપ અસંલેખગુણા, એવં કળ્લહતેતપમ્હલેસઠાણા, ઉચ્કોસા સુચ્ક-
લેસાઠાણા દબ્બટ્ટયાપ અસંલેખગુણા । પપ્પસઠ્યાપ-સબ્બત્થોવા જહન્નગા કાઠલેસઠાણા પપ્પસઠ્યાપ, જહન્નગા
નીલલેસઠાણા પપ્પસઠ્યાપ અસંલેખગુણા, એવં જહેવ દબ્બટ્ટયાપ તહેવ પપ્પસઠ્યાપિ માણિયબ્બં, નવર પપ્પસઠ-
યાપત્તિ અભિભાયવિસેસો । દબ્બટ્ટપપ્પસઠ્યાપ-સબ્બત્થોવા જહન્નગા કાઠલેસઠાણા દબ્બટ્ટયાપ, જહન્નગા નીલ-
લેસઠાણા દબ્બટ્ટયાપ અસંલેખગુણા, ણ્વ કળ્લહતેતપમ્હલેસઠાણા, જહન્નયા સુચ્કલેસઠાણા દબ્બટ્ટયાપ અસંલેખ-
ગુણા, જહન્નગહિતો સુચ્કલેસાઠાણેહિતો દબ્બટ્ટયાપ ઉચ્કોસા કાઠલેસઠાણા દબ્બટ્ટયાપ અસંલેખગુણા, ઉચ્કોસા

દ્રવ્યાર્થપણે અસંલેખગુણા છે. તેથી ઉત્ક્રુષ્ટ નીલલેખ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલેખગુણા છે, એ પ્રમાણે ક્રુષ્ણ, તેજસ્ અને પથ્થલેખ્યા
સંબંધે કહેલું. તેથી ઉત્ક્રુષ્ટ શુક્લલેખ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલેખગુણા છે પ્રદેશાર્થપણે-સૌથી થોડા જથ્થાના કાપોતલેખ્યાના
સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે છે, તેથી જથ્થા નીલલેખ્યાના સ્થાનો પ્રદેશાર્થરૂપે અસંલેખગુણા છે, એ પ્રમાણે જેમ દ્રવ્યાર્થરૂપે કહ્યું તેમ
પ્રદેશાર્થરૂપે પણ કહેલું. પરંતુ 'પ્રદેશાર્થરૂપે' એવો પાઠ વિશેષ કહેવો. દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થરૂપે-સૌથી થોડા જથ્થાના કાપોતલેખ્યાના
સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે છે. તેથી જથ્થા નીલલેખ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલેખગુણા છે. એ પ્રમાણે ક્રુષ્ણ, તેજસ્ અને પથ્થલેખ્યા
સંબંધે જાણવું. તેથી જથ્થા શુક્લલેખ્યાના સ્થાનો દ્રવ્યાર્થરૂપે અસંલેખગુણા છે, દ્રવ્યાર્થરૂપે જથ્થા શુક્લલેખ્યાના સ્થાનોથી ઉત્ક્રુષ્ટ

પ્રમાણે મૂરુકાર કહે છે- 'પથ્થ જહેવ દબ્બટ્ટયાપિ માણિયબ્બ, નવરં 'પપ્પસઠ્યાપિ માણિયબ્બ, નવરં 'પપ્પસઠ્યાપિ' તિ અભિભાયવિસેસો-
જેમ દ્રવ્યાર્થપણે કહ્યું તેમ પ્રદેશાર્થપણે પણ કહેલું પરંતુ 'પ્રદેશાર્થપણે' એવો પાઠ કહેવો વ વિશેષ છે દ્રવ્યાર્થ-પ્રદેશાર્થ

नीललेस्सठाणा दब्बट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपमह्लेसट्टाणा, उक्कोसगा सुक्कलेसठाणा दब्बट्टयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो दब्बट्टयाए जहन्नगा काउलेसठाणा पएसट्टयाए अणंतगुणा, जहन्नगा नीललेसठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपमह्लेसट्टाणा, जहन्नगा सुक्कलेसठाणा असंखेज्जगुणा, जहन्नएहिंतो सुक्कलेसठाणेहिंतो पएसट्टयाए उक्कोसा काउलेसठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसया नीललेसठाणा पएसट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्हतेउपमह्लेसट्टाणा, उक्कोसया सुक्कलेसठाणा

कापोतलेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंब्यातगुणा छे, तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंब्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पबलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानो द्रव्यार्थरूपे असंब्यातगुणा छे. द्रव्यार्थपणे उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानोथी जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे अनन्तगुणा छे, तेथी जघन्य नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंब्यातगुणा छे. ए प्रमाणे कृष्ण, तेजस् अने पबलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंब्यातगुणा छे. प्रदेशार्थरूपे जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उत्कृष्ट कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंब्यातगुणा छे, तेथी उत्कृष्ट नीललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थरूपे असंब्यातगुणा छे. एम कृष्ण, तेजस् अने पबलेश्या संबंधे जाणवुं. तेथी उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानो प्रदेशार्थ-

पणासां-प्रथमथी द्रव्यार्थरूपे कापोत, नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने शुक्ललेश्याना जघन्य स्थानो अनुक्रमे उत्तरोत्तर असंब्यातगुणा छे. त्याएवाद् जघन्य शुक्ललेश्याना स्थानोथी उपर कहेला क्रम वडे उत्कृष्ट स्थानो द्रव्यार्थरूपे उत्तरोत्तर असंब्यातगुणा छे. त्याएवाद् उत्कृष्ट शुक्ललेश्याना स्थानोथी जघन्य कापोतलेश्याना स्थानो प्रदेशार्थपणे अनन्तगुणा छे. ते पद्मी प्रदेशार्थपणेज नील, कृष्ण, तेजस्, पद्म अने

પગસટ્યાળ અસંલેખગુણા ।

પક્ષવળાણ મગવર્દૈણ સત્તરસમસસ લેસસાપદસસ ચતુર્થઝો ઉદેસઝો સમત્તો ।

રૂપે અસંસ્પ્યાતગુણા છે.

પ્રજ્ઞાપના મગધતીમા સત્તરમાં લેશ્યાપદનો ચતુર્થ ઉદેશક સમાસ

શુક્ષ્મલેશ્યાના ઝઘન્ય સ્થાનો ઉત્તરોત્તર મસસ્પ્યાતગુણા છે ય પ્રમાણે અત્કુષ્ટ સ્થાનો પણ ઉપર કહેલા ક્રમઘટે જ ઉત્તરોત્તર મસંસ્પ્યાતગુણા છે પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુચાદમાં સત્તરમા લેશ્યા પદનો ચતુર્થ ઉદેશક સમાસ

પચ્ચમો ઉદેસો ।

૫૪. કદ ણં મંતે ! લેસસાઝો પન્નત્તાઝો ! ગોયમા ! છેલ્લેસાઝો પન્નત્તાઝો, તંજહા—કળહલેસા, જાવ સુ-

પાચમો ઉદેશક

૫૪ હે મગવન્ ! કેટલી લેશ્યાઝો કહી છે ? હે ગૌતમ ! છ લેશ્યાઝો કહી છે. તે આ પ્રમાણે—કૃષ્ણલેશ્યા, યાવત્ શુક્લલેશ્યા.

૫૪ બોધો ઉદેશક કહ્યો, હવે પાચમા ઉદેશકો પ્રારંભ થાય છે તેવું આ પ્રથમ સૂત્ર છે 'કર ણ મતે ! લેસસાઝો પન્નત્તાઝો' ? હે મગવન્ ! કેટલી લેશ્યાઝો કહી છે'—ત્યાંદિ ચતુર્થ ઉદેશકની પેઠે યાવત્ ઘૈદ્ર્યમણિના દષ્ટાત મુષી કહેલું અને તેની વ્યાખ્યા પૂર્વની પેઠે યધી કરવી પૂર્વે કહેલા આ સૂત્રનું પુનઃ કથન આગલના સૂત્રના સવગ્ધને માટે છે તેજ સૂત્ર કહે છે—'સે નૂણ મંતે ! હે મગવન્ ! અવશ્ય ઇષ્ણલેશ્યા નીલ લેશ્યાને પામીને યાંત્યાર તેરૂપે પરિણમતી નથી—ત્યાંદિ અહીં તિર્યંચ અને મનુષ્ય સવલ્ધી સૂત્ર દમણા કલ્પુ અને આ સૂત્ર ઘેવ અને નૈરુચિક સવધે જાણવું કારણ કે ઘેવ અને નારકો પૂર્વેમપના છેલ્લા મન્તમુંદર્નેથી આરંભી પર

કકલેસા ! સે નૂણં મંતે ! ક્ષણલેસા નીલલેસસં પપ્પ તારૂવત્તાણ તાવન્નત્તાણ તાગંધત્તાણ તારસત્તાણ તાપ્પાસ-
 હે ભગવન્ ! અવશ્ય ક્ષણલેશ્યા નીલલેશ્યાને પામીને તદ્દૂપણે-તેના સ્વરૂપે, તેના વર્ણપણે, તેના ગન્ધપણે, તેના રસપણે અને તેના

ભાવના પ્રથમ અન્તર્મુહર્ત છુથી અવસ્થિતલેશ્યાવાઢ્યા હોય છે. તેથી પશોને ક્ષણાદિ લેશ્યાદ્રવ્યોનો પરસ્પર સંબન્ધ હોવા છતાં પણ
 પરિણમ્ય-પરિણામકભાવ ઘટતો નથી, તેથી યયાર્થ પરિજ્ઞાન થવા માટે પ્રશ્ન કરે છે—'સે નૂણં મંતે' ! ઇત્યાદિ. સે શબ્દ અથશબ્દના અર્થમાં
 છે અને અથશબ્દ પ્રશ્ન અર્થમાં છે. હે ભગવન્ ! નૂનં નિશ્ચિત-અવશ્ય ક્ષણલેશ્યાદ્રવ્યો નીલલેશ્યા દ્રવ્યોને પ્રાપ્ત કરીને, અહીં પ્રાપ્તિનો અર્થ
 સમીપ માત્ર છે, પરન્તુ પરિણમ્ય-પરિણામકભાવઢે પરસ્પર સંબન્ધરૂપ અર્થ નથી. 'તદ્દૂપતયા'-તદ્દૂપણે-નીલલેશ્યાના સ્વભાવપણે. પની જ
 બ્યાલ્યા કરે છે—'તદ્વર્ણતયા' તદ્વર્ણણે-નીલલેશ્યાના વર્ણપણે; 'તદ્ગન્ધતયા' તદ્ગન્ધપણે-નીલલેશ્યાના ગન્ધપણે, 'તદ્રસતયા' તદ્રસપણે-
 નીલલેશ્યાના રસપણે અને 'તસ્પર્શતયા' તસ્પર્શણે-નીલલેશ્યાના સ્પર્શપણે. ચારંવાર નથી પરિણમતી ? ભગવાન્ ઉત્તર આપે છે—
 'હન્તા ગોયમા' ! હે ગૌતમ ! અવશ્ય ક્ષણલેશ્યા નીલલેશ્યાપણે પરિણમતી નથી. (પ્ર૦)—જો ક્ષણલેશ્યા તદ્દૂપણે-અન્ય લેશ્યાપણે ન
 પરિણમે તો માતમી નરકપૃથિવીમાં સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિ શી રીતે થાય ? કારણ કે સમ્યક્ત્વ તેજોલેશ્યાદિ શુભલેશ્યાનો પરિણામ હોય
 ત્યારે થાય છે, અને માતમી નરકપૃથિવીમાં ક્ષણલેશ્યા છે. તેથી 'ભાયપરાવત્તીણ પુણ સુરનેરશ્યાણં પિ છલ્લેસા' ! ભાવની પરાવૃત્તિ
 થવાથી દેવ અને નેગયિકોને પણ છ પ લેશ્યાઓ હોય છે આ વાપ્રય શી રીતે ઘટે ? કારણ કે અન્ય લેશ્યાદ્રવ્યના સંબન્ધથી તદ્દૂપણે
 પરિણામનો અસંભવ હોવાથી ભાવની પરાવૃત્તિ નહિ થઈ શકે, માટે તે સંબન્ધે પ્રશ્ન અને ઉત્તરસૂત્ર કહે છે—'સે કેણેટ્ટુણં મંતે' !-હે
 ભગવન્ ! ઇમ શા હેતુથી કલ્હો છો-ઇત્યાદિ. તેમાં પ્રશ્નસૂત્ર મુગમ છે. ઉત્તરસૂત્ર આ છે—'આગારભાવમાયાણ વા સે સિયા' ઇત્યાદિ.
 આકારભાવમાત્ર-છાયામાત્ર વડે હોય. અદિ માત્ર શબ્દ આકારભાવ સિવાયના યીજ્ઞા પરિણામનો નિષેધ કરવા માટે છે. 'સે' તે
 ક્ષણલેશ્યા નીલલેશ્યારૂપે છાયામાત્રઢે હોય છે. અથવા 'પલ્લિભાગમાયાણ વા સે સિયા' પ્રતિભાગ-પ્રતિવિચ માત્રઢે નીલલેશ્યારૂપે
 હોય છે. તેમ આરીસા વગેરેમાં પડેલું પ્રતિવિચ પ્રતિથિવને યોગ્ય વસ્તુના ઢિશિષ્ટ આકારરૂપે થાય છે. અહીં પણ માત્ર શબ્દ પ્રતિવિચ

साण सुब्बो परिणमति? इत्तो आढसं जहा चउत्थओ उदेसओ तथा भाणियन्वं जाव वेरुलियमणिदिट्ठोत्ति।
 सर्षणे वारवार परिणमे ? हे गौतम ! अहीयी आरमी जेम चोयो उदेसक कसो, तेम वैहर्यमणिना द्दष्टांत सुधी कहेयु.

मिवापना बीजा परिणामनो निवेध करवा माटे छे तेम कृष्णलेइया प्रतिवियमात्रवे नीललेइयाकरे थाय छे एण वास्तविक रीते तो ते कृष्णलेइया ज छे, नीललेइया पथी कारण के ते पोताना स्वरूपनो त्याग करती नथी आदर्श योगे अयाकुसुम वगैरेना सप्रियाथयी तेना प्रतिवियमात्रने धारण करना आदर्शवि नथी एम नथी, एण आदर्शवि ज छे, ए प्रमाणे लेइया स्वयंभे विचार करवो केवल ते कृष्णलेइया पोताना स्वरूपमां रहोने 'अव्यक्तते'-तेना आकारमाघमात्रने धारण करवायी के तेना प्रतिवियमात्रने धारण करवायी उत्सर्पण करे छे-अन्य लेइयाने प्राप्त थाय छे. कृष्णलेइयायी नीललेइया विशुद्ध छे, तेथी तेना आकारमाघने के तेना प्रतिवियमात्रने धारण करती काक विनुद्ध थाय छे माटे ते 'उत्सर्पण करे छे-प्राप्त थाय छे' एम कहु छे उपसहार वाक्य कहे छे-'से एरणद्वेण' ए कारणयी एम कहु छु--इत्यादि सुगम छे ए प्रमाणे कापोतलेइयाने प्राप्त कपी नीललेइयाना, तेजोलेइयाने आधयी कापोतलेइयाना, पद्मलेइयाने आधयी तेजोलेइयाना अने शुक्ललेइयाने आधयी पद्मलेइयाना सूत्रो विचार करवो इवे पद्मलेइयाने आधयी शुक्ललेइया संकथे सूत्र कहे छे--'से नून भते ! सुक्लेस्ता पद्मलेसं पप्य'-हे मगपन् ! शुक्ललेइया पद्मलेइयाने पामीने तद्वरूपणे न परिणमे ? इत्यादि ए सूत्रो पूर्वनी पंठे विचार करवो एतु शुक्ललेइयानी अपेक्षाए पद्मलेइया हीनपरिणामवाळी छे, तेथी शुक्ललेइया पद्मलेइयाना आकारमाघ के प्रतिविष मात्रने धारण करती काक अविनुद्ध थाय छे माटे 'अव्यक्तते' प्राप्त थाय छे-एम कहेथाय छे ए प्रमाणे तेजघ, कापोत, नील अने कृष्णलेइया विषयक एण सूत्रो विचारवा तेथी पद्मलेइयाने आधयी तेजम्, कापोत, नील अने कृष्णलेइया विषयक सूत्रो, तेजोलेइयाने आधयी कापोत, नील अने कृष्णलेइया विषयक सूत्रो, कापोतलेइयाने आधयी नील अने कृष्णलेइया संकथे सूत्रो अने नीललेइयाने आधयी कृष्णलेइया विषयक सूत्र जाणथा आ सूत्रो पुस्तकोमा साक्षात्

५५. से नृणं भंते ! कणह्लेसा नीललेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव णो ताफासत्ताए सुज्जो सुज्जो परिणमइ ? हंता गोयमा ! कणह्लेसा नीललेसं पप्प णो तारूवत्ताए, णो तागंधत्ताए, णो तारसत्ताए, णो ताफासत्ताए सुज्जो २ परिणमत्ति । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ ? गोयमा ! आगारभावमायाए वा से सिया, प-
लिभागभावमायाए वा से सिया । कणह्लेस्सा णं सा, णो खलु नीललेसा, तत्थ गया ओसक्कइ उस्सक्कइ वा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुच्चइ—‘कणह्लेसा नीललेसं पप्प णो तारूवत्ताए जाव सुज्जो २ परिणमत्ति’ । से नृणं

५५. हे भगवन् ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तेना स्वरूपणे, यावत् तेना स्पर्शपणे वारंवार परिणमती नथी ? हा गौतम ! अवश्य कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तेना स्वरूपणे, तेना वर्णपणे, तेना गन्धपणे तेना रसपणे, अने तेना स्पर्शपणे वारं-
वार परिणमती नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! ते तेना आकारभाव-छाया मात्र वडे छे, तेना प्रतिभाग-प्रति-
बिंब मात्र वडे ते नीललेश्या छे. परन्तु ते कृष्णलेश्या नीललेश्या रूपे नथी. कृष्णलेश्या त्यां स्वस्वरूपमां रहेली [नीललेश्याने]
प्राप्त थाय छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छुं के ‘कृष्णलेश्या नीललेश्याने पामीने तद्रूपणे यावत् वारंवार परिणमती नथी.’

देवातां नथी, पण केवल अर्थथी जाणवां कारण के ते प्रमाणे मूळटीकाकारे व्याख्यान कर्युं छे. ए प्रमाणे जो के देव अने नारकोने
अवस्थित लेश्याद्रव्य छे, तोपण ते ते ग्रहण करातां बीजी लेश्याद्रव्यना संवन्धथी ते पण तेना आकारभावमात्रने धारण करे छे माटे
भावनी परावृत्ति थवाथी छण लेश्या घटे छे, तेथी सातमी नरक पृथिवीमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे तेमां कंइपण दोष नथी.

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमा सत्तरमा लेश्यापदनो पंचम उद्देशक समाप्त.

भंते ! नीललेसा काउलेस पप्प णो तारूवत्ताण जाव सुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताण जाय सुज्जो २ परिणमति । से केणट्टेणं भंते ! एवं युचइ—'नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताण जाव सुज्जो २ परिणमति' ? गोयमा ! आगारभावसायाण था सिता, पलिभागभावसायाण वा सिता । नीललेसा णं मा, णो खलु सा काउलेसा तत्थगया ओसकइ उस्सफ्फति था, से णणट्टेण गोयमा ! एवं युचइ—'नीललेसा काउलेसं पप्प णो तारूवत्ताण जाव सुज्जो २ परिणमति' । एव काउलेसा तेउलेसं पप्प, तेउलेसा पम्हलेसं पप्प, पम्हलेसा सुक्कलेस पप्प । से नूनं भंते ! सुक्कलेसा पम्हलेस पप्प णो तारूवत्ताण जाव परिणमति ? हंता गोयमा ! सुक्कलेसा त चेव । से केणट्टेणं भंते ! एव युचति—'सुक्कलेसा जाव णो परिणमति' ? गोयमा !

हे भगवन् ! अवश्य नीललेस्या कापोतलेस्याने पामीने त्वरूपपणे यावत् चारवार परिणमती नथी ? हे गौतम ! अवश्य नीललेस्या कापोतलेस्याने पामीने त्वरूपपणे यावत् चारवार परिणमती नथी. हे भगवन् ! शा हेतुयी एम कदो छो के 'नीललेस्या कापोतलेस्याने पामीने त्वरूपपणे यावत् चारवार परिणमती नथी' ? हे गौतम ! ते नीललेस्या ते कापोतलेस्याना आकारभाव—छाया मात्र बडे होय, अथवा तेना प्रतिबिम्बभाव मात्र बडे होय छे. ते नीललेस्या छे, पण कापोतलेस्या नथी. ते स्वस्वरूपमा खेहली नीललेस्या [कापोतलेस्याने] प्राप्त थाय छे. ए हेतुयी एम कइ छु के 'नीललेस्या कापोतलेस्याने पामीने त्वरूपपणे यावत् चारवार परिणमती नथी.' ए प्रमाणे कापोतलेस्या तेजोलेस्याने पामीने, तेजोलेस्या पचलेस्याने पामीने अने पचलेस्या शुक्कलेस्याने पामीने [त्वरूपपणे चारवार परिणमती नथी.] हे भगवन् ! अवश्य शुक्कलेस्या पचलेस्याने पामीने त्वरूपपणे यावत् चारवार परिणमती नथी ? हा गौतम !

आगारभावमायाए वा जाव सुक्कलेस्सा णं सा, णो खलु सा पम्हलेसा, तत्थ गया ओसाक्कह, से तेणट्टेणं गोय-
मा ! एवं बुच्चइ—'जाव णो परिणमइ' ।

पणवणाए भगवईए सत्तरसमे लेसापदे पंचमुदेसो समत्तो ।

शुक्कलेइया वारंवार परिणमती नथी. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के 'शुक्कलेइया यावत् परिणमती नथी' ? हे गौतम ! ते
शुक्कलेइया पबलेइयाना आकारभावमात्र वडे होय छे. यावत् ते शुक्कलेइया छे, पण पबलेइया नथी. शुक्कलेइया पोताना स्वरूपमां
रहेली [पबलेइयाने] प्राप्त थाय छे. ते कारणथी हे गौतम ! हुं एम कहुं छुं के 'यावत् परिणमती नथी.'

सत्तरमा लेइयापदमां पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्टो उद्देशो ।

५६. कति णं भंते ! लेसा पन्नत्ता ? गोयमा ! छ लेसा पन्नत्ता, तंजहा—कणहलेसा जाव सुक्कलेसा । मणुस्साणं
भंते ! कइ लेसा पन्नत्ता ? गोयमा ! छ लेस्साओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कणहलेसा, जाव सुक्कलेसा । मणुस्सी णं भंते !

छट्टो उद्देशक

५६. हे भगवन् ! केटली लेइयाओ कही छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कणलेइया यावत् शुक्कलेइया.
हे भगवन् ! मणुप्योने केटली लेइयाओ कही छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कणलेइया, यावत् शुक्कलेइया.

५६-५७. ए प्रमाणे पांचमो उद्देशक कथो, हवे छट्टो उद्देशक कहेवाय छे. तेतुं आ प्रथम सूव छे—'कण णं भंते ! लेस्साओ

पुच्छा । गोयमा ! छल्लेस्साओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा जाव सुक्का । कम्मभूमयमणुस्साण भंते ! कइ लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा, जाव सुक्का । एवं कम्मभूमयमणुस्सीणवि । भरहेर धयमणुस्साणं भंते ! कति लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पन्नत्ताओ, तजहा—कण्हा, जाव सुक्का । एवं मणुस्सीणवि । पुब्बविदेहे अवरविदेहे कम्मभूमयमणुस्साणं कति लेस्साओ ? गो० ! छल्लेस्साओ । तंजहा—कण्हा जाव सुक्का । एवं मणुस्सीण वि । अकम्मभूमयमणुस्साणं पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि लेसाओ पन्नत्ताओ, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा, एवं अकम्मभूमगमणुस्सीणवि, एवं अंतरदीवगमणुस्साणं, एवं हेमवयणरन्नवयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणुस्सीण य कइ लेसाओ पन्नत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा । हरि

हे भगवन् ! मातुपी स्त्रीने केटली लेइयाओ होय छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ होय छे । ते आ प्रमाणे—कृष्णलेइया, यावत् शुक्ललेइया, हे भगवन् ! कर्मभूमिना मनुष्योने केटली लेइयाओ होय छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ होय छे । ते आ प्रमाणे—कृष्णलेइया, यावत् शुक्ललेइया, ए प्रमाणे कर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रीने पण जाणयुं । हे भगवन् ! मरत अने ऐरावत क्षेत्रना मनुष्योने केटली लेइयाओ होय छे ? हे गौतम ! छ लेइयाओ होय छे । ते आ प्रमाणे—कृष्ण यावत् शुक्ल, ए प्रमाणे मनुष्यस्त्रीने पण कहेइयु । एवं अने पत्रिम महाविदेहना कर्मभूमिना मनुष्योने केटली लेइया होय ? हे गौतम ! छ ए लेइया होय । ए प्रमाणे मनुष्य स्त्रीने पण कहेइयु । अकर्मभूमिना मनुष्य संघे पृच्छा । हे गौतम ! चार लेइयाओ होय छे । ते आ प्रमाणे—कृष्ण यावत् तेजोलेइया, ए प्रमाणे अकर्मभूमिनी मनुष्यस्त्रीने पण कहेइयुं । एम

पन्नत्ताओ ? हे भगवन् ! केटली लेइयाओ कही छे ? इत्यादि च्च उदेइयाकनी समाप्ति पर्यन्त मुगम छे परल्लु उत्पन्न धतो जीव धीजा

वासरम्मयअकम्मभूमयमणुस्साणं मणुस्सीण य पुच्छा । गोयमा ! चत्तारि, तंजहा—कण्हा, जाव तेउलेसा । देवकुरुउत्तरकुरुअकम्मभूमयमणुस्सा एवं चेव, एतेसिं चेव मणुस्सीणं एवं चेव, धायइसंडपुरिमद्धेवि एवं चेव, पच्छिमद्धेवि, एवं पुक्खवरदीवेवि भाणियब्बं ।

६७. कण्हलेसे णं भंते ! मणुस्से कण्हलेसं गव्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा । कण्हलेसे मणुस्से नील्लेसं गव्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, जाव सुद्धलेसं गव्भं जणेज्जा । नील्लेसे मणुस्से कण्हलेसं गव्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं नील्लेसे मणुस्से जाव सुक्कलेसं गव्भं

अन्तर्द्वीपिना मनुष्यो अने मानुषीने पण कहेवुं. हैमवत अने हैरण्यवत अकर्मभूमिना मनुष्योने तथा मनुष्यस्त्रीने केटली लेख्याओ होय छे ? हे गौतम ! चार लेख्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्ण, यावत् तेजोलेख्या. हरिद्वर्ष अने रम्यक अकर्मभूमिना मनुष्यो अने मानुषी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! चार लेख्याओ होय छे. ते आ प्रमाणे—कृष्ण, यावत् तेजोलेख्या. देवकुरु अने उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्यो एमज जाणवा. एओनी मनुष्य स्त्रीने पण एमज समजवुं. ए प्रमाणे धातकिखंडना पूर्वार्द्धिमां अने पश्चिमार्द्धिमां पण जाणवुं.

एम पुक्खवर द्वीपमां पण कहेवुं.

५७. हे भगवन् ! कृष्णलेख्यावाळो मनुष्य शुं कृष्णलेख्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे. यावत् हे भगवन् ! कृष्ण लेख्यावाळो मनुष्य नील्लेख्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे. यावत् शुक्ल-जन्ममां. लेख्याद्रव्यो लभते उत्पन्न थाय छे, ते लेख्याद्रव्यो कोइने कोइ प्रकारना होय छे. कृष्णलेख्याना परिणामवाळो पिता छतां

जणेज्जा, एवं काडलेसेणं छप्पि आलावगा भाणियब्बा। तेडलेसाणवि पम्हलेसाणवि सुक्कलेसाणवि, एवं छत्तीसं आलावगा भाणियब्बा। कण्हलेसा इत्थिया कण्हलेसं गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा ! एवं एतेवि छत्तीसं आलावगा भाणियब्बा। कण्हलेसेणं भंते ! मणुस्से कण्हलेसाण इत्थियाते कण्हलेसं गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं एते छत्तीस आलावगा। कम्मभूमगकण्हलेसे णं भंते ! मणुस्से कण्हलेसाण इत्थियायाए कण्हलेसं गब्भं जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा, एवं एते छत्तीसं आलावगा। अकम्मभूमयकण्हलेसे मणुस्से अकम्मभूमयकण्हलेसाण इत्थियाण अकम्मभूमयकण्हलेस गब्भ जणेज्जा ? हंता गोयमा ! जणेज्जा,

लेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे नीलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे. ए प्रमाणे नीलेश्यावाळो मनुष्य यावत् शुक्लेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे. एम कापोतलेश्यावाळानी साथे छ ए आलापको कहेवा एम तेजोलेश्यावाळा, पद्मलेश्यावाळा अने शुक्लेश्यावाळाने पण कहेवु. एम छत्रीश आलापको कहेवा. कृष्णलेश्यावाळी स्त्री कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे. ए प्रमाणे आ छत्रीश आलापको कहेवा. हे भगवन् ! कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळी स्त्रीमा कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! उत्पन्न करे एम ए छत्रीश आलापको कला. हे भगवन् ! कर्मभूमिनो कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य कृष्णलेश्यावाळी स्त्रीमां कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम ! अवश्य उत्पन्न करे अकर्मभूमिनो कृष्णलेश्यावाळो मनुष्य अकर्मभूमिनी कृष्णलेश्यावाळा गर्भने उत्पन्न करे ? हा गौतम !

नवरं चउसु लेसासु सोलस आलावगा, एवं अंतरदीवगाणवि ।

इति पत्रवणाए भगवईए सत्तरसमं लेस्सापदं समत्तं ॥

उत्पन्न करे. परन्तु अहीं चार लेख्याओना सोळ आलापको कहेया. ए प्रमाणे अन्तर्दीपना मनुष्योने पण जाणवुं.

प्रज्ञापना भगवतीमां सत्तरसुं लेख्यापव समाप्त.

पुत्रने विचित्र लेख्यानो संभव छे. ए प्रमाणे वाकीनी लेख्याना परिणामवाळाने पण जाणवुं.

श्रीमदाचार्य मळगिरिविचित प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां सत्तरमा पदनी छट्टो उक्शक समाप्त.

अट्टारसमं पय ।

जीवं गृहदियं काण जोए वेए कसायलेसा य । सम्मत्तंणाणंदसणे संजयं उवओगं ओहारे ॥ १ ॥
भासैगपरित्तं पज्जेत्त सुहुंम संखी भवत्थिं धरिमे य । ग्गत्तंसि तु पवाणं कायठिई होइ णायब्बा ॥ २ ॥

अट्टारसुं कायस्थिति पद.

१ जीव, २ गति, ३ इन्द्रिय, ४ काय, ५ योग, ६ वेद, ७ क्पाय, ८ लेख्या, ९ सम्यक्त्व, १० ज्ञान, ११ दर्शन, १२ संयत,
१३ उपयोग, १४ आहार, १५ भाषक, १६ परिच, १७ पर्याप्त, १८ वस्त्र, १९ संशी, २० भवसिद्धिक, २१ अस्तिक्काय अने २२
चरम ए यावीश पदोनी कायस्थिति जाणवा योग्य छे.

य प्रमाणे सत्तसु पद कणु, इवे अट्टारमा पदोने प्रारम धाय छे तेनो आ सक्क्य छे-अहीं पूर्वना पक्वमा लेखानो परिणाम कळो,
इवे परिणामना समलपणाधी कायस्थितिपरिणाम कहे छे तेमां अधिकार-विषय प्रतिपादक आ वे गाथाओ छे- 'जीवगइवियकाय'
इत्थादि १ प्रथम जीवपदने उदेयी कायस्थिति कहेवानी छे ते पछी अनुक्रमे २ गतिपद, त्यार पछी ३ इन्द्रियपद, ते पछी ४ कायपद,
त्यार याद ५ योगपद, ते पछी ६ वेदपद, ते पछी ७ क्पायपद, त्यारयाद ८ लेखयापद, ते पछी ९ सम्यक्त्वपद, ते पछी १० ज्ञानपद, ते पछी
११ दर्शनपद, त्यार याद १२ संयतपद, ते पछी १३ उपयोगपद, त्यार याद १४ आहारपद, ते पछी १५ परिचपद, ते पछी १६ भाष-
कपद, त्यारयाद १७ पर्याप्त पद, त्यारयाद १८ वस्त्रपद, ते पछी १९ संशीपद, ते पछी २० भवसिद्धिकपद, त्यारयाद २१ अस्तिकाय
अने २२ चरमपद-ए यावीश पदोनी कायस्थिति जाणवा योग्य छे जे प्रमाणे ते जाणवा योग्य छे ते प्रमाणे उदेयना क्रम प्रमाणे
निर्देश करवामां आक्खे कायस्थितिनो शब्दार्थ जो छे ? कायचण्ड अहीं पर्यायना अर्थमां प्रहण करवो, ते पर्याय काय-शरीरना

१. जीवे णं भंते ! जीवेत्ति कालतो केवचिंरं होइ ? गोयमा ! सब्बद्धं ! दारं ? ।

२. नेरइयाणं भंते ! नेरइएत्ति कालओ केवचिंरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्खोसेणं तेत्तीसं

१. हे भगवन् ! जीव 'जीव' ए स्वरूपे कालने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सर्व काल होय. ? द्वार.

२. हे भगवन् ! नैरयिकं 'नैरयिक' ए रूपे कालने आश्रयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य दस हजार वरस अने उत्कृष्ट तेत्रीश

जेवो होवाथी उपमानथी काय कहेवाय छे. ते वे प्रकारे छे-सामान्यरूप अने विशेषरूप, तेमां विशेषण रहित जीवत्व स्वरूप पर्याय ते सामान्यरूप काय अने नैरयिकत्वादि रूप पर्याय ते विशेषरूप काय. ते कायनी स्थिति-ते रूपे रहेहुं ते कायस्थिति. तात्पर्य ए छे के सामान्यरूप अने विशेषरूप पर्याय वडे विवक्षित जीवहुं निरंतरपणे रहेहुं ते कायस्थिति. तेथी प्रथम सामान्यरूप पर्याय वडे विवक्षित जीवहुं निरन्तर रहेहुं तेनो विचार करे छे-जीवेणं भंते-इत्यादि. हे भगवन् ! अहीं जीवनपर्याय सहित होय ते जीव कहेवाय छे, तेथी प्रश्न करे छे के जीव 'जीव' ए रूपे पटले जीवनपर्याय विशिष्टपणे 'कालतः' कालने आश्रयी 'कियच्चिंरं' केटया काल सुधी होय ? भगवान् कहे छे-हे गौतम ! 'सब्वद्धा'-सर्वदा-सर्वकाल पर्यन्त होय. केवी रीते होय ? अहीं प्राणोने धारण करवा ए जीवन कहेवाय छे. प्राणो वे प्रकारना छे-द्रव्यप्राणो अने भावप्राणो. तेमां पांच इन्द्रियो, मन, वचन अने कायवल ए त्रण बल, उच्छ्वास-निःश्वास अने आयुष कर्मना अनुभव करवारूप द्रव्य प्राणो कहेवाय छे अने ज्ञानादि-ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य वगेरे भावप्राणो छे. तेमां संसारी जीवोने आयुषकर्मना अनुभवरूप प्राणहुं धारण करहुं हमेशां अवस्थित छे. कारणके संसारी जीवोनी पवी कोइ अवस्था नथी के जेमां आयुषकर्मनो अनुभव न होय. मुक्त जीवोने ज्ञानादिरूप भावप्राणने धारण करहुं अवस्थित छे. कारण के मुक्तोने पण ज्ञानादिरूप प्राणो छे, जे भावप्राणो वडे मुक्त जीव पण 'जीवे छे' एम कहेवाय छे. ते ज्ञानादि प्राणो मुक्त जीवोने शाश्वत होय छे. तेथी संसारी अवस्थामां अने मुक्तावस्थामां वधे जीवन छे माटे जीवनपर्याय सर्व कालभावी छे.

सागरोपमाहं । तिरिक्त्वजोगिणं भंते । तिरिक्त्वजोगिणं कालओ केचचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं,
उक्कोसेणं अणंतं काल, अनंताओ उस्सप्पिणओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पोगग-
लपरियदा, ते ण पुग्गलपरियदा आवलियाण असम्बिज्जइभागे । तिरिक्त्वजोगिणी णं भंते ! तिरिक्त्वजोगि-
णित्ति कालओ केचचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइ पुब्बकोडिपुहुत्तम-

सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! तिर्यचयोनिकं 'तिर्यचयोनिकं' ए रूपे काळधी क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्य अन्वमुहूर्त अने उत्कृष्ट
अनन्त काळ सुधी होय. अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी पर्यन्त काळधी होय अने क्षेत्रधी अनन्त लोका-अनन्त लोकना आकाश प्रदेश प्रमाण
होय. तथा आचलिकाना असल्यातमा भाग प्रमाण असह्याता पुद्गलपरावर्त पर्यन्त होय. हे भगवन् ! तिर्यचयोनिकं द्वी 'तिर्यच त्री,
ए रूपे काळधी क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यधी अन्वमुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटि पृथक्स्य अधिक त्रण पल्योपम सुधी होय. ए

२. हये नैरयिकत्वादि पर्याय घटे विषयित तेज जीपनु ते नैरयिकायादि पर्यायो घटे केटला काळ सुधी निस्तर भवस्थान होय
ततो विचार करे छे-नैरयण ण भंते'-हे भगवन् ! नैरयिक 'नैरयिक' ए रूपे केटला काळ सुधी होय-इत्यादि सत्र सुगम छे, परन्तु
नैरयिको तेसा प्रकारना स्वभायधी पोताना भयधी व्ययी तुरतज करी नैरयिकपणे उत्पन्न घता नधी तेधी तेनु जे भवस्थितिनु परि-
माण छे तेज कायस्थितिनु पण परिमाण घटे छे माटे उपर करा प्रमाणे जघन्यधी द्रम हजार घरस्सनी अने उरकंयधी तेत्रोच साण
रोपमनी कायस्थिति छे 'तिरिक्त्वजोगिणं ण भंते'-हे भगवन् ! तिर्यचयोनिक तिर्यचपणे केटला काळ सुधी होय-इत्यादि तेसा
ज्यारे देण, मनुष्य के नैरयिक तिर्यचोमा उत्पन्न थाय अने त्या अन्वमुहूर्त रक्षीने पुनः पोतानी गतिमा के बीजी गतिमां जइ उत्पन्न

महियाईं । एवं मणुस्सेवि, मणुस्सीवि एवं चैव । देवेणं भंते ! देवत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहेव
नेरइए । देवी णं भंते ! देवत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ? जहन्नेणं दस वाससहस्साईं, उक्कोसेणं पणवन्नं
पलिओवमाईं । सिद्धं णं भंते ! सिद्धेत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! साविए अपज्जवसिणं । नेरइए णं भंते !
नेरइयअपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोसुहुत्तं, एवं जाव देवी अपज्ज-
त्तिया । नेरइयपज्जत्तए णं भंते ! नेरइयपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साईं
प्रमाणे मनुष्य संबंधे जाणुं, मनुष्य स्त्री संबंधे पण एमज समजुं, हे भगवन् ! देवं 'देव' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे
गौतम ! जेम नैरयिक संबंधे कहुं तेम कहेहुं, हे भगवन् देवी" 'देवी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य दस हजार
वर्ष अने उत्कृष्ट पंचावन पत्योपम सुधी होय, हे भगवन् ! सिद्ध 'सिद्ध' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सादि अनन्त
काळ होय, हे भगवन् ! नैरयिक अपर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तसुहुत्त
काळ होय, ए प्रमाणे यावत् अपर्याप्त देवी सुधी जाणुं, हे भगवन् ! नैरयिक पर्याप्त 'नैरयिक पर्याप्त' ए रूपे काळथी क्यां सुधी
थाय त्यारे जघन्यथी अन्तसुहुत्त प्रमाण कायस्थिति अने उत्कृष्ट अनन्त काळ सुधी होय छे, ते अनन्त काळनी प्ररूपणा
काळथी अने क्षेत्रथी एम ते प्रकारनी छे, तेमां काळथी अनन्त उत्सर्पिणी अने अघसर्पिणी छे, उत्सर्पिणी अने अघसर्पिणीं प्रमाण नन्दि-
सूत्रनी टीकाथी जाणी लेहुं, कारण के त्यां सविस्तर कहेहुं छे, क्षेत्रथी अनन्त लोक प्रमाण छे, तात्पर्य प छे के अनन्त लोकाका-
शमां प्रतिसमय एक एक प्रवेशनो अपहार करतां पटले अमत्फलनाथी एक एक आकाशप्रवेश लेतां जेटला काळे वाली थाय तेटली
अनन्त उत्सर्पिणी अघसर्पिणी सुधी तिर्यंचणे रहे छे, एज काळना परिमाणने पुद्गलपरावर्तनी संख्या बडे निरु-

અંતોચ્છુનૂનાઈ, ઉકોસેણં તેસીસ સાગરોવમાઈ અંતોચ્છુનૂનાઈ । તિરિકલ્લોણિયપ્પક્ષપ્પ ણ મંતે ! તિરિકલ્લ-
 હોપ ! હે ગૌતમ ! જયન્યયી અન્તર્ધૂર્ત ન્યૂન દસ હજાર ધર્મ અને ઉત્કટ અન્તર્ધૂર્ત ન્યૂન તેત્રીશ સાગરોપમ સુધી હોય. હે મગવન્ !

પણ કરે છે—પુદ્ગલપરાવર્તની ગણના ઘટે 'અસંખ્યાતા પુદ્ગલપરાવર્તે કાલ્લ હોય છે' 'પુદ્ગલપરાવર્તેનુ સ્વરૂપ પચ

૧ પુદ્ગલોનું પરમાણુઓનું પરમાણુ-ઔદારિકાદિ શરીરલ્લે કે વિવક્ષિત એક શરીર હવે પરિણમન જેટલા કાલે યાવ તે પુદ્ગલપરાવર્તે કહેવાય છે આ તો
 ઘટુરતિમાય છે, પરન્તુ તેના સાચ્યાર્થ તો અન્ત્ત ઉત્પત્તિર્થિ અવલપિનીસ્થ કાલ્લે પ્રમાણ છે તેથી ક્ષેત્રપુદ્ગલપરાવર્તેનિયં પુદ્ગલોનું પરાવર્ત-પરિણમન નહિ
 હાવા છતાં તેનું પ્રતિનિમિત્ત-આચ્યાર્થ અન્ત્ત ઉત્પત્તિર્થિ અવલપિનીસ્થ કાલ્લે પ્રમાણ છે તેથી ક્ષેત્રપુદ્ગલપરાવર્તેનિયં પુદ્ગલોનું પરાવર્ત-પરિણમન નહિ
 પ્રકાર છે-દ્રવ્ય પુદ્ગલપરાવર્ત, ક્ષેત્ર પુદ્ગલપરાવર્ત, કાલ્લ પુદ્ગલપરાવર્ત અને માત્ર પુદ્ગલપરાવર્ત. તે પ્રત્યક્ષના કલ્પે પ્રકાર છે—આવર અને સુખ તમા પ્રથમ
 સુખ અને આવર દ્રવ્ય પુદ્ગલ પરાવર્તેનુ સ્વરૂપ કહે છે—આ સંસારમાં પરિવ્રમણ કરતો એક જીવ સંસારવર્તી થવા પરમાણુઓન જેટલા કાલે ઔદારિકાદિ શરીરરૂપે
 પ્રદ્વય કષ્ટી મૂકે તેટલા કાલે આવર દ્રવ્યપુદ્ગલ પરાવર્તે કહેવાય છે તાત્પર્ય એ છે કે એક જીવ જેટલા કાલમાં જગદ્ધર્ત્તી સર્વે પરમાણુઓને યથાસંભવ ઔદારિક,
 યૈકિચ, તૈજસ, કર્મણ, ગાપા, કાસોપ્પુવાસ કે મન હવે પ્રદ્વય શરીરને ત્યાગ કરે તેટલા કાલને આવર દ્રવ્ય પુદ્ગલપરાવર્તે કહે છે. અને જેટલા કાલે ઔદ-
 રિકાદિ કોઈપણ એક શરીરલ્લે જગત્તમાં રહેલા સર્વે પરમાણુઓને પ્રદ્વય કરીને મૂકે તેટલા કાલને આવર દ્રવ્ય પુદ્ગલપરાવર્તે કહે છે. (આ સંબંધે નવીન શાસ્ત્રના
 ટીકાકાર દલેન્દ્રસૂરિયે ઔદારિકાદિ છાત વર્ણનામાંથી કોઈ પણ એક વર્તમાને સર્વે પરમાણુને પ્રદ્વય કરવાનું કહ્યું છે) આ સુખ દ્રવ્ય પુદ્ગલપરાવર્તમાં વિક્ષિત એક
 નીર વિવાય અન્ય શરીરલ્લે પુદ્ગલો પ્રદ્વય કરીને ત્યાગ કરે તે ગણાતાં નથી, પરન્તુ કેટલોએક કાલ થવા પછી પુન તેજ શરીરે હવે પરિણમ પામે ત્યારે
 ગણાય છે હવે આવર અને સુખ ક્ષેત્ર પુદ્ગલપરાવર્તે કહે છે—એક જીવ જેટલા કાલે સંજ્ઞાક્રમણા ઠવં પ્રવેશો અલુક્કમે કે અલુક્કમ વિવાય મરણ થયે ત્યારે
 કરે તેટલો કાલ આવર ક્ષેત્ર પુદ્ગલપરાવર્તે કહેવાય છે અને એક જીવ જેટલા કાલે સંજ્ઞાક્રમણા સર્વે પ્રવેશો અલુક્કમે મરણ થયે ત્યારે કરે તેટલા કાલને સુખ ક્ષેત્ર
 પુદ્ગલપરાવર્તે કહેવામાં આવે છે. યદપિ જીવની જપન્ય મરણાદના પણ અવેદયાતા પ્રવેશરૂપ છે, તો પણ વિવક્ષિત સંજ્ઞાક્રમણા કોઈ માગમાં મરણને પ્રાપ્ત

થાય ત્યારે એક આકાશ પ્રદેશની વિવેકા કરાય છે, તે પછી વીજા પ્રદેશોમાં મરણ પામે તેની ગણના થતી નથી, પરન્તુ અનન્ત કાલ ગયા પછી પૂર્વના પ્રદેશની અન્તર-પાસે રહેલા પ્રદેશમાં મૃત્યુ થાય ત્યારે તેની ગણના થાય છે, આ પ્રમાણે અનુક્રમે સર્વ લોકાન્તરગના પ્રદેશો મરણ વડે સ્પર્શ કરતા જેટલો કાલ થાય તે સૂક્ષ્મ ક્ષેત્ર પુણ્યપરાવર્ત. એક જીવને કાલક્રમ—ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીના સર્વ સમયો અનુક્રમે કે અનુક્રમ મિત્રાય મરણ વડે સ્પર્શ કરતા જેટલો કાલ લાગે તે વાદર ક્ષાત્ર પુણ્યપરાવર્ત અને પહેલો સમય, વીજો સમય, વીજો સમય વગેરે વાલ્કલકના સર્વ ગમ્યોને સ્પર્શ કરના જેટલો કાલ થાય તે સૂક્ષ્મ કાલ પુણ્યપરાવર્ત. એમકે આ ઉત્સર્પિણીના પ્રથમ ગમ્યે કોઈ જીવ મૃત્યુ પામ્પો, ત્યાર પછી ગમ્ય ન્યૂન વીજ કોડકોડી માત્રોપમ વ્યતીત થયા પછી પત્રી વાર તેજ ઉત્સર્પિણી વીજા સમયે મરણ પામે ત્યારે વીજો સમય મરણ વડે સ્પર્શ કરાયેલો રહેવાય, તે મિત્રાય વાકીના સમયો મરણ વડે સ્પર્શ કરવા છતાં ગણતા નથી, તટ્ટે તે ઉત્સર્પિણી વીજા સમયે મરણ ન પામતાં તે મિત્રાય અને ગમ્યોમાં મરણ પામે તે વળ ન પ્રદાન કરાય, પરન્તુ અનન્ત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણી ગયા પછી પણ ઉત્સર્પિણી વીજા ગમ્યેજ મરણ પામે ત્યારે તે ગમ્ય ગણાય. પણ ખુલ્લે મરણ વડે થયાય ઉત્સર્પિણી અને અવસર્પિણીના સમયો સ્પર્શ કરતા જેટલો કાલ થાય તે સૂક્ષ્મ કાલ પુણ્યપરાવર્ત રહેવાય છે. અનુભવવ્યવહાર કયાનોદગુણ અમત્યાતા લોકલકાન્તના પ્રવેશ પ્રમાણ અનન્યાતા અચ્ચસાય સ્થાનકો છે. તે થયા અચ્ચસાય સ્થાનકોમાં જેટલા વાલ્કલ એક જીવ ક્રમ વડે કે ક્રમ મિત્રાય વર્તતાં મરણ પામે તેટલા વાલ્કલને વાદર મા-પુણ્યપરાવર્ત કહે છે. અને તે રથા અપમણ સ્થાનોમાં અનુક્રમે મરણ પામના જેટલો કાલ લાગે તે સૂક્ષ્મ આપુણ્યપરાવર્ત કહેવાય છે. નાત્પર્ય એ છે કે કોઈ પ્રાણી ગૌથી નાપન્ય કર્યાનોદર અચ્ચમાત્રાને મરણ પામે, ત્યાર પછી તે પ્રાણી અન્ત ફાઠ ગયા પછી પણ તે પછીના વીજા અચ્ચમાત્રાસ્થાને મરણ પામે તે પ્રાણી ગૌથી નાપન્ય કર્યાનોદર અચ્ચમાત્રાને અનન્ત વાર મરણ પામે તે ન ગણાય, ત્યાર પછી વીજા અચ્ચમાત્રાસ્થાને મરણ પામે એ ક્ષમ્પૂર્તક મરણ પામતાં થયા તે ગણાય, તે વિવાયના વીજા અચ્ચમાત્રાસ્થાને અનન્ત વાર મરણ પામે તે ન ગણાય, ત્યાર પછી વીજા અચ્ચમાત્રાસ્થાને મરણ પામે એ ક્ષમ્પૂર્તક મરણ પામતાં થયા અચ્ચમાત્રા સ્થાનોને સ્પર્શ કરતા જેટલો કાલ થાય તે સૂક્ષ્મ આપુણ્ય પરાવર્ત રહેવાય છે. એથી વાદર પુણ્યપરાવર્તનો પ્રમ્પ્ણા સૂક્ષ્મ પુણ્યપરાવર્તનું સ્વરૂપ મુન-પૂર્તક સમજાવા માટે છે, પરન્તુ આગમમાં કોઈપણ સ્વકે તેનું પ્રયોજન ચતાલું નથી. અહીં ચારે પુણ્યપરાવર્તના પરમાર્થી કહેવણ વિશેષતા નથી, (કારણ કે પુણ્યપરાવર્તનો ત્થર્થ્ય અનન્ત ઉત્સર્પિણી અવસર્પિણીના નિયત વાલ છે,) તે વળ જીવમિત્રાનિ મૂલ્કયા ક્ષેત્રપુણ્યપરાવર્તનું પ્રમ્ણ સ્વરૂપ હવામાં આવ્યું છે. કારણ કે ક્ષેત્રને આશ્રયી માર્પણમાં તેનું પ્રમ્ણ છે. તે આ પ્રમાણે—“તે માદિ ગમ્યસિતિ-માંત મિત્રાયઃ છે, તે જપન્યથી અન્તર્મુહર્ત મુષી અને ઉત્કટ અનન્ત

જોગિયપજ્જત્તપ્પિ કાલતો કેવચિર હોઈ ? ગોયમા ! જાહન્નેણ અંતોમુદ્ધતં ઉક્કોસેણં તિન્નિ પલ્લિઓચમાઈં અંતો-
તિર્યચયોનિક પર્યાસં 'તિર્યચયોનિક પર્યાસં' એ રૂપે કાલથી કર્યાં સુધી હોય ? હે ગૌતમ ! જાપન્યથી અન્તમુદ્ધર્ત અને ઉત્કટ અન્તમુદ્ધર્ત-

સંપ્રદાની ટીકામાં સચિસ્વર કામુ છે ત્યાંથી આખી હોયુ અહીં પ્રન્ય ઘથી જવાના પ્રયથી કહેતા નથી મસક્થયાતા પણ કેટલા પુદ્ગલપટ-
ઘર્તો છે ? આચલિકાના મસક્થયાતમા ભાગ પ્રમાણ છે, પટલે આચલિકાના મસક્થયાતમા ભાગના જેટલા સમયો યાપ તેટલા પ્રમાણ અસ
ચયાતા પુદ્ગલપરાયતો છે આ કાયસ્થિતિતુ પરિમાણ ધનસ્પતિની અપેક્ષાપ સમજયુ, પણ યાકીના તિર્યચની અપેક્ષાપ ન સમજયુ કારણ
કે ધનસ્પતિ સિધાય ઘાકીના તિર્યચોને પટલી કાયસ્થિતિનો સમય નથી 'તિરિક્ખજોણિણી પ મતે' !-હે મગલ્લ ! તિર્યચ સ્ત્રી
તિર્યચસ્ત્રીયને કેટલા કાલ સુધી હોય-હત્યાદિ અહીં અને પછીના સૂચમાં અન્ય અન્તમુદ્ધર્તનો ચિત્તાર પૂર્વે કહેલ અન્તમુદ્ધર્તની માય
માને અનુસારે સ્વય કરવો ઉત્કટ પૂર્વકોટીપૃથક્કય અધિક યજીના સૂચમાં અન્ય અન્તમુદ્ધર્તનો ચિત્તાર પૂર્વે કહેલ અન્તમુદ્ધર્તની માય
તિર્યચ અને મનુવ્યોને ઉત્કર્ષથી પણ માઠ પ્રયની કાયસ્થિતિ છે કારણ કે "નરતિરિયાણ સત્ત-દુ મય" -મનુવ્ય અને તિર્યચોને
સાત માઠ પ્રયની કાયસ્થિતિ છે-પયુ શાસ્ત્ર યજન છે તેમા ઉત્કટ કાયસ્થિતિનો ચિત્તાર હોયાથી માઠે મયો યથાસમય ઉત્કટ
સ્થિતિપાઠા પ્રહણ કરવા, અસત્યાતા ધરલના આયુષ્યાઠો મરીને મવશ્ય વેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય છે, પણ તિર્યચમાં ઉત્પન્ન થતો
નથી માટે પૂર્વકોટીના આયુષ્યાઠા સાત મયો અને છેલ્લો આઠમો મય વેવકુચ ઘગેરેનો જાણવો યમ પૂર્વકોટીપૃથક્કય અધિક યજ
પત્યોપમ થાય છે 'પય મણુસ્સે યિ, મણુસ્સી યિ'-જેમ તિર્યચસ્ત્રીને જે પ્રમાણે કામુ છે તે પ્રમાણે મનુવ્ય અને માનુષી સ્ત્રી સંવન્ધે
કહેયુ તાત્પર્ય પ છે કે-મનુવ્યસૂચમાં અને માનુષીના સૂચમા જાપન્યથી અન્તમુદ્ધર્ત અને ઉત્કટ પૂર્વકોટીપૃથક્કય અધિક યજ પણ પલ્લો

માઠ, કાલથી અન્ત ઉત્કર્ષિણી અવલર્ષિણી પર્યન્ત અને સેત્રથી મૈક ન્યૂન અથ પુદ્ગલપરાતં પર્યન્ત હોય છે." તેથી અહીં પણ સેત્રપુદ્ગલપરાતં પ્રહણ કરવું
ચુઓ વંચસંમદ માયા ૧૮-૪૧ ની ટીકા

सुदुत्तूणाइं । एवं तिरिक्खजोणिपज्जत्तिथावि, एवं मणुस्सेवि, एवं मणुस्सीवि एवं चेव । देवपज्जत्तए जहा नेरइय-
पज्जत्तए । देवीपज्जत्तिया णं भंते ! देवीपज्जत्तियत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससह-
हूर्तं न्यून त्रण पल्योपम सुधी होय. ए प्रमाणे पर्याप्त तिर्यचस्त्री संबंधे षण जाणवुं. मनुष्य अने मानुषी संबंधे षण एमज समजवुं. जेम
पर्याप्त नैरयिकने कहुं तेम पर्याप्ता देवने जाणवुं. हे भगवन् ! पर्याप्त देवी 'पर्याप्त देवी' ए रूपे कालथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम !

पमनी कायस्थिति कहेवी. सूत्रपाठ आ प्रमाणे छे'-मणुस्से णं भंते ! मणुस्स त्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अन्तो-
सुदुत्तं, उक्कोसेणं त्तिनि पल्लिओवमाइं पुब्बकोडिपुडुत्तमभहियाइं । मणुस्सी णं भंते ! मणुस्सित्ति कालओ केवचिरं होइ'—इत्यादि.
हे भगवन् ! मनुष्य 'मनुष्य' ए रूपे कालथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्यथी अन्तमुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक
त्रण पल्योपम होय. हे भगवन् ! मानुषी स्त्री 'मानुषी' ए रूपे कालथी क्यां सुधी होय ? जयन्य अन्तमुहूर्त अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व
अधिक त्रण पल्योपम होय. देव सूत्रमां 'जहेव नेरइए'-जेम नैरयिक संबंधे पूर्वं कहुं तेम देवसंबन्धे षण कहेवुं. देवने षण जयन्यथी
दस हजार वरस अने उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी कायस्थिति कहेवी. कारण के देवो पोताना भवथी व्यवीने पुनः तरतज देवपणे
उत्पन्न थता नथी. 'न देवो देवेसु उवज्जइ'-देव देवमां उत्पन्न थता नथी-एवुं शाखवचन छे. तेथी देवोनी षण जे भवस्थितित्तुं
परिमाण छे तेज कायस्थितित्तुं षण छे. देवीसूत्रमां उत्कृष्ट पंचायन पल्योपमनी कायस्थिति छे, कारण के देवीओनी उत्कृष्ट भवस्थिति
षण पटलीज छे. आ कथन ईशान देवीनी अपेक्षाए समजवुं. ए सिवाय बीजे देवीनी पटली स्थितिनो संभव नथी. सिद्धसूत्रमां
सादि अनन्त कायस्थिति छे, कारण के सिद्धत्व-पर्यायना क्षयनो संभव नथी. सिद्धपणाथी दूर करवाने रागादि समर्थ छे, अने ते
भगवान् सिद्धने नथी, केमके रागादिना निमित्तभूत कर्मपरमाणुओनो अभाव छे अने तेना अभाववुं कारण तेनो मूलथी नाश कर्यो छे.

हवे पटला नैरयिकादिनो पर्याप्त अने अपर्याप्त विशेषणद्वारा विचार करे छे—'नेरइए णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! अपर्याप्त-

स्साइं अंतोमुहुचूणाइं, उक्कोसिणं पणपन्नं पलिओवमाइं अंतोमुहुचूणाइं । वार २ ।

अधन्य अन्तर्मुहूर्तं न्यून दस हजार वर्षं अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तं न्यून पंचावन पत्योपम सुधी होय. द्वार २.

अपर्याप्तपणांना पर्याप्तसहित नैरयिक काळने आश्रयी निरंतर केडला फाळ सुधी होय ? भगवान् उत्तर आपे छे-‘हे गौतम’ इत्यादि माहीं अपर्याप्तापस्या अग्रन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं प्रमाण छे त्वार एही नैरयिकोने अपश्य पर्याप्तापस्या प्राप्त थाय छे ते माटे कसु छे के ‘अद्वनेण यि अतोमुद्रुत्त, उज्जोसिणयि अन्तोमुद्रुत्त’-अग्रन्यथी पण अतर्मुहूर्तं छे अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तं छे ए प्रमाणे—नैरयिकोने काया प्रमाणे अपर्याप्ता तिर्यक्थी आरंभी भग्यास देवीसूत्र सुधी कहेसु तेमां तिर्ययो अने मनुव्यो जो के अपर्याप्ता अ मरीने धारंवार अपर्याप्तपणे उरपन्न थाय छे तो पण तेभोनी अपर्याप्तापस्या निरंतर पधारंमां पधारं अन्तर्मुहूर्तं प्रमाण अ होय छे ते मयन्ने भागळ कहेयामां आयरो के ‘अपञ्जसप ण भत्ते ! ‘अपञ्जसप’सि कालभो केयचिरं होइ ? गोयमा ! अद्वनेण अतोमुद्रुत्त, उज्जोसिणयि अतोमुद्रुत्त’-हे भगयन् ! अपर्याप्त ‘अपर्याप्त’ ए रूपे काळथी प्या सुधी होय ? हे गौतम ! अग्रन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तं होय देय अने देवीना मूत्रमां अन्तर्मुहूर्तंनो विचार नैरयिकनी पठे करवो ‘नैरयपञ्जसप ण भत्ते’ ! इत्यादि हे भगयन् ! पर्याप्त नैरयिक पर्याप्त नैरयिकपणे निरंतर काळने आश्रयी केडला फाळ सुधी होय ! भगयान् ! उत्तर आपे छे-हे गौतम ! अग्रन्यथी अन्तर्मुहूर्तं न्यून दरद्वजार धरल सुधी होय, कारण के प्रयमनु अन्तर्मुहूर्तं अपर्याप्तापस्यामा गयेसु छे अने आज कारणथी उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तं न्यून तेनीच सागरोपम सुधी होय तिर्यक्थी अन्तर्मुहूर्तंनो विचार पूर्यनी पठे जाणयो अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं न्यून अण पत्योपम जाणया आ उत्कृष्ट आयुषयाळा देयकुण आदि क्षेत्रमा उत्पन्न थनार तिर्यक्चोने आश्रयी जाणसु ते सिधाय धीजाने पटला फाळपर्यन्त पर्याप्तापस्या निरंतर होती नथी भहीं पण प्रथम अन्तर्मुहूर्तं अपर्याप्तापस्यामा गयेसु होयाथी अन्तर्मुहूर्तं न्यून समजसु ए प्रमाणे तिर्यक्चो, मनुप्य अने मानुसीसूत्र सयन्ने पण जाणसु देय अने देवीना सूत्रमां अग्रन्यथी अने उत्कर्षथी कार्यस्थितिनु परिमाण पूर्ये कहेसु अपर्याप्तापस्याना अन्तर्मुहूर्तं हीन जाणसु गतिद्वार समाप्त

३. सइंदिए णं भंते! सइंदिएत्ति कालतो केवचिंरं होइ? गोयमा! सइंदिए डुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए। एगिंदिए णं भंते! एगिंदिएत्ति कालतो केवचिंरं होइ? गोयमा! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं वणस्सइकालो। वेइंदिए णं भंते! वेइंदिएत्ति कालतो केवचिंरं होइ?

३. हे भगवन्! सेन्द्रिय (इन्द्रिय सहित) जीव 'सेन्द्रिय' ए रूपे काळ्थी क्यां सुधी होय? हे गौतम! सेन्द्रिय वे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. हे भगवन्! एकेन्द्रिय 'एकेन्द्रिय' ए रूपे काळ्थी क्यां सुधी होय? हे गौतम! ज-घन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काल—वनस्पति काळ सुधी होय. हे भगवन्! वेइन्द्रिय 'वेइन्द्रिय' ए रूपे काळ्थी क्यां सुधी होय?

३. 'सइंदिए णं भंते'! इत्यादि. इन्द्रिय सहित होय ते सेन्द्रिय. इन्द्रियो वे प्रकारनी छे—द्रव्येन्द्रिय अने भावेन्द्रिय. भावेन्द्रियना पण वे प्रकार छे—लब्धीन्द्रिय अने उपयोगेन्द्रिय. तेमां लब्धिरूप इन्द्रिय लेवी, कारण के ते विग्रहरगतिमां पण होय छे अने इन्द्रियपर्याप्ताने पण होय छे. तेथी उत्तरसूत्र घटी शकै छे, नहि तो ते न घटी शकै. उत्तरसूत्र कहे छे—'हे गौतम'! इत्यादि. अहीं जे संसारी छे ते अवश्य सेन्द्रिय होय छे. अने संसार अनादि छे, माटे सेन्द्रिय अनादि छे. तेमां पण जे कोइ पण काले सिद्ध नहि थाय ते अनादि अनन्त छे, कारण के तेने सेन्द्रियपणाना पर्यायनो कदापि अभाव थतो नथी. जे सिद्ध थसे तेनी अपेक्षाए अनादि सान्त छे, कारण के मुक्ति अवस्थामां सेन्द्रियपणाना पर्यायनो अभाव थाय छे. एकेन्द्रिय सूत्रमां जे कहां छे के 'उक्कोसेणं अणंतं कालं'—उत्कृष्ट अनन्त काल छे, ते अनन्तकालतुं विशेषणो निरूपण करे छे—'वणस्सइकालो'—जेटलो वनस्पतिनो काल होय छे, जे अणल कहेवामां आवशे तेटला काल सुधी एकेन्द्रियपणे रहे. कारण के वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय छे, माटे एकेन्द्रिय पदमां तेनुं पण ग्रहण थाय छे. ते वनस्पतिकाल 'आ प्रमाणे छे—'काळ्थी अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, क्षत्रथी अनन्त लोक, अथवा असंख्याता पुद्गल-

गोयमा ! जहन्नेणं अतोमुहुचं, उक्कोसेणं संखेजं फालं । एवं तेइंदियचउरिदिणवि । पंचिदिण णं मंते ! पंचिदि-
 प्पत्ति फालतो केयचिर होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुचं, उक्कोसेणं सागरोचमसहस्सं साइरेणं । अण्णिदिए
 णं पुच्छा । गोयमा ! साइए अपच्चवसिण । सइदियअपच्चत्तएणं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतो-

हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सख्यातो फाल होय. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने षडरिन्द्रिय सचथे जाणयु. हे भगवन् !
 पचेन्द्रिय 'पचेन्द्रिय' ए रूपे कालथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी फाईक अधिक हजार साग-
 रोपम सुधी होय. अनिन्द्रिय संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त फाल होय. हे भगवन् ! सेन्द्रिय अपर्याप्ता सेन्द्रिय अपर्याप्ता
 रूपे कालने आश्रथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय. ए प्रमाणे पंचेन्द्रिय अपर्याप्ता सुधी

परयत्तं जाणया' अने ते असख्याता पुद्गलपययोँ भावलिकाना भसख्यातमा भाग प्रमाण छे वेइन्द्रियसूत्रमां सख्यातो फाल पटले
 सख्याता हजार परतो जाणया कारण के 'विगल्लिद्वियाण य धामसहस्सा संयिज्जा'-विकलेन्द्रियोने सख्याता हजार परतो होय छे'
 एतु उल्लुनु यचन छे ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने षडरिन्द्रिय सचथे मूत्र फहेसु त्या पण जघन्यथी भन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सख्यातो
 फाल फहेसो ए मापार्थ छे अने सख्यातो फाल सख्याता हजार धरस रूप जाणयो पचेन्द्रियसूत्रमा उत्कर्षथी कइक अधिक हजार
 सागरोपम प्रमाण छे अने ते नारक, तिर्यच पचेन्द्रिय, मनुष्य अने देवमयमा भ्रमण करया घडे जाणवो, तेथी अधिक फाल होतो नथी,
 कारण के पटलोज फाल केयळवानीए जाणेलो छे अनिन्द्रिय पटले द्रव्येन्द्रिय अने सावेन्द्रिय रहिन, ते सिखाज छे अने सिख
 नादि अनन्त फाल पर्यन्त छे, तेथी 'साए अपग्गयसिप'-सादि अनन्त फाल फतो छे 'मादियअपग्गत्तए ण'-इत्यादि अही मप-
 योता लस्सिध अने करणली मपेशयए जाणया कारण के एहे प्रकारे भययोस पर्याय जघन्यथी के उत्कर्षथी भन्तर्मुहूर्तं प्रमाण छे. ए

सुहृत् । एवं जाव पंचिदियअपज्जत्तए । सइंदियपज्जत्तए णं भंते ! सइंदियपज्जत्तएत्ति कालतो केवचिंरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसत्पुहृत्तं सातिरेणं । एग्गिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं । वेइंदियपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं न्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जवासाइं । ते दियपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहृत्तं, उक्कोसेणं जाणवुं, हे भगवन् ! सेन्द्रिय पर्याप्तं 'सेन्द्रिय पर्याप्तं' ए रूपे काल्थी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तमुहृत्तं अने उत्कर्षथी काइक अधिक शतपृथक्त्व (वसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय, हे भगवन् ! पर्याप्त एकेन्द्रिय संबंधे प्रश्न, हे गौतम ! जघन्यथी अन्तमुहृत्तं अने उत्कर्षथी सुधी होय, वेइन्द्रिय पर्याप्ता संबंधे पृच्छा, हे गौतम ! जघन्य अन्तमुहृत्तं अने उत्कृष्ट सहायाता वरसो सुधी होय, तेइन्द्रिय पर्याप्त संबंधे पृच्छा, हे गौतम ! जघन्यथी अन्तमुहृत्तं अने उत्कर्षथी प्रमाणे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त सुधी कहेवुं, अने ते सुगम होवाथी स्वयं विचारवुं, अहीं अनिन्द्रिय संबंधे न कहेवुं, कारण के ते पर्याप्त अने अपर्याप्त रूप विशेषण रहित छे, 'सइंदियपज्जत्तए णं भंते' ! इत्यादि, अहीं पर्याप्त लब्धिनी अपेक्षाए जाणवो अने ते पर्याप्तपणुं विग्रह गतिमां पण करण अपर्याप्ताने पण संबंधे छे, तेथी 'उत्कर्षथी कंश्च अधिक वसोथी नवसो सागरोपम सुधीनो फाल होय छे' ए उत्तर घटे छे, अन्यथा करणपर्याप्तपणानो फाल उत्कर्षथी पण अन्तमुहृत्तं न्यून तेचीश सागरोपम प्रमाण होवाथी पूर्वोक्त उत्तर घटी शकतो नथी, ए प्रमाणे उत्तर सूत्रमां पर्याप्तपणुं लब्धिनी अपेक्षाए जाणवुं, एकेन्द्रिय पर्याप्तसूत्रमां संख्याता हजार वरस जाणवा, कारण के एकेन्द्रिय पृथिवीकायनी उत्कर्षथी यावीश हजार वरसनी भवस्थिति छे, अफ्फायनी सात हजार वर्ष, वायुकायनी त्रण हजार वर्ष अने वनस्पतिकायनी वस हजार वरसनी छे, तेथो केटलाएक निरन्तर पर्याप्त भवोनी संकलना घटे संख्याता हजार वरसो घटे

संवेजाई राईदियाईं । चउरिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संवेजा
मासा । पंचिंदियपज्जत्तए णं भंते ! पंचिंदियपज्जत्तए कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेणं सागरोपमसपमुहुत्तं ।

४. सकाइए ण भंते ! सकाइएत्ति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविहे पसत्ते, तंजहा—अणा-
सहयाता दियसो होय. हे भगवन् ! चउरिन्दिय पर्याप्त संचये पृच्छा. हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सहयाता मास
पर्यन्त होय. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय पर्याप्त 'पंचेन्द्रिय पर्याप्त' ए रूपे काळथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्य अन्तर्मुहूर्त अने
उत्कर्षथी द्यतपृथक्त्व (यसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. द्वार ३.

४. हे भगवन् ! सकायिक (सशरीरी) जीव 'सकायिक' ए रूपे काळथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! सकायिक जीव वे प्रकारना
छे वेन्द्रिय पर्याप्त सूत्रमां सख्याता यत्तो होय छे, कारण के वेन्द्रियनु उत्कर्षथी भवस्थितित्तु परिमाण यार यत्स छे, पण न्ये
मवेमां उत्पृ न्थितित्तो समय नथी, तेथी केटलापक निरंतर पर्याप्ताना मयोनी सकलना यडे पण मख्याता यत्सोज होय छे, पण
मख्याता संकरो के मख्याता हजार यत्सो होता नथी वेन्द्रिय पर्याप्ताना सूत्रमा सख्याता वियसो छे, कारण के तेनी भवस्थिति
उत्कर्षथी पण ओगण पवास विषस प्रमाण होयाथी केटलाक निरंतर पर्याप्ताना मयोनी सकलना यडे मख्याता वियसो ज थाय छे
चउरिन्दियपर्याप्ताना सूत्रमां मख्याता मास छे, कारण के तेओनी भवस्थिति उत्कर्षथी छ मास प्रमाण होयाथी केटलापक निरंतर
पर्याप्ताना मयना काळनी सकलना यत्ता पण मख्याता महोनाओ ज थाय छे पंचेन्द्रियस्य सुगम छे ३ इन्द्रियद्वार समाप्त
४ हये कायद्वार कहे छे—'हेमगयन् ! सकायिक' इत्यादि कायपडे सहित होय ते सकाय भधी भायं होयाथी स्यार्थमा इक

इए वा अपज्ववसिए, अणाइए वा सपज्ववसिए, जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उद्धोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्ज-
वाससमभहियाइं । अकाइए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! अकाइए सादिए अपज्ववसिए । सकाइयअपज्वत्ताए
णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणचि उद्धोसेणचि अंतोसुहुत्तं, एवं जाव तसकाइयअपज्वत्ताए पुच्छा । गोयमा ! जह-
छे. ते आ प्रमाणे-अनादि अनन्त अने अनादि सान्त छे, अने तेमां जे अनादि सान्त छे, तेनी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कर्षथी संख्याता वर्प
अधिकवे हजार सागरोपमनी कायस्थिति छे. हे भगवन् ! अकायिक (शरीर रहित) संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अकायिक सादि अनन्त छे. स-
कायिक अपर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्त छे. ए प्रमाणे त्रसकायिक अपर्याप्ता सुधी जाणवुं, स-

प्रत्यय थयो छे, तेथी सकायिक थाय छे. काय-शरीर, तेना औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मणना मेदथी पांच
प्रकार छे. तेमां अहीं तेजस अथवा कार्मण शरीर समजवुं, कारण के ते संसार पर्यन्त निरंतर होय छे. जो एम न मानीए तो
विग्रहगतिमां चर्तता अने शरीर पर्याप्ति चउे अपर्याप्ताने याकीना शरीरनो असंभव होवायी तेओने अकायिक कहेवाय. अने जो एम थाय
तो उत्तर सूत्रमां कहेला तेना वे प्रकार न घटी शके. हवे उत्तर सूत्र कहे छे—'सकाइए लुधिहे पन्नत्ते' 'सकायिक वे प्रकारना छे'-
इत्यादि. तेमां जे संसारनो पार नहि पामे, अन्त नहि करे ते अनादि अतल, कारण के तेनी काय-तेजस-कार्मणशरीर निरंतर
होवाथी तेनो कदि व्यवच्छेद नहि थाय. जे मोक्षने प्राप्त करौते ते अनादि सान्त, कारण के मोक्ष अवस्थामां तेना शरीरनो सर्वथा
परित्याग थरो. पृथिवी, अप, तेजस, वायु अने वनस्पति सूत्रो सुगम छे, कारण के बीजे स्थले पण तेनो अर्थ प्रसिद्ध छे.
ए संबंधे काहुं छे के—

अमंखोसधिणिओसिष्णीओो पुंमिदियाण उ चउण्हं । ता नंग उ अणंता णस्सइए उ बोदला ॥

न्नेणं अंतोमुद्रुत्तं, उफोसेणं सागरोवमसयपुद्रुत्तं सातिरेगं । पुदविकाइए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतो-
मुद्रुत्तं, उफोसेणं असंलेखं कालं, असलेखाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, लेत्ततो असलेखा लोगा ।

क्राधिक पर्याप्तो सबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी कइक अधिक शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपम
समजवा. पृथिवीकायिक संबन्धे पृच्छा. हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट असल्यातो काळ, काळथी असल्याती उत्सर्पि-
णी-अवसर्पिणी, अने क्षेत्रथी अमल्याता लोक जाणया ए प्रमाणे अफ्कायिक अने वायुकायिक पण समजवा. चन-

पृथिवीकायिकादि चारे पक्षेन्द्रियोनी असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी कायस्थिति छे अने घनस्पतिनी घनन्त उत्सर्पिणी-
अवसर्पिणी कायस्थिति जाणथी

(प्र०)—ओ घनस्पतिनी कायस्थिति असंख्याता पुद्गलपर्याप्तं छे, तो सिद्धान्तमा जे कहेषाय छे के-‘मरुदेयानो जीव जीवमकाळ
पर्यन्त घनस्पतिकरूपे इतो ते केम घटी शके ? अथवा घनस्पतिनु अनादिपणु पण शी रीते होए शके ? कारण के घनस्पतिपणानो
काळ भक्तिनियत प्रमाण होयाथी अनादिपणानी साथे तेनो विरोध छे ते या प्रमाणे—असख्याता पुद्गलपर्याप्ततो तेजोनी कायस्थितिनु
प्रमाण छे तेथी पटने काळ गया पछा अवश्य घथा घनस्पतिना जीवो पोतानी कायनु पर्याप्तंन करे, जेम देव वगैरे पोतयोताना
स्थितिकाळने अन्ते देयादि कायनु पर्याप्तंन करे छे ए सत्यन्धे वस्तु छे के—

जइ पुग्गळपरिय्या मत्थाइया वणत्समईकाळी । तो अप्पचनवणत्सइणमणाइयत्तमईऊओ ॥
न य मरुदेयानीवो णयज्जोरं वणत्समई आसी । जममलेखजा पुग्गळपरिय्या तत्थइयथाण ॥
वात्थेणेवएण जम्हा दुब्बंति कायपन्टइ । खन्ने णि वणत्समणो टिइकाळते जइ सुराई ॥ [निशेषणत्तो गा ४६-४८.]

एवं आउतेउवाउकाइयावि । वणस्सइकाइयाणं पुच्छ । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणिओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा, असंखेज्जा पुग्गलपरियद्दा, तेणं पुग्गलपरियद्दा आवलियाए असंखेज्जइभागो । पुढविकाइए पज्जत्तए पुच्छ । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं स्पत्तिकायिको संबंधे पृच्छ । हे गौतम ! जघन्यथी अन्तमुहूर्तं अने उत्कर्षथी अनंत काल, कालथी अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी अने क्षेत्रथी अनन्त लोक, असंख्याता पुद्गलपरावर्तं अने ते आवलिकाना असंख्यातमा भागे समजवा. पृथिवीकायिक पर्याप्ता संबंधे पृच्छ ।

जो असंख्याता पुद्गलपरावर्तो वनस्पतिनो काल छे, तो अत्यन्त-अनादि वनस्पतिओनुं अनादिपणुं निहँतुक छे. पटले तेना अनादिपणामां काइपण हेतु नथी. मरुदेवानो जीव जीवनपर्यन्त वनस्पति हतो एम घटतुं नथी. कारण के असंख्याता पुद्गलपरावर्तं काल त्यां तेनी स्थिति छे. तेथी पटला काले वधा वनस्पति जीवो देव वगैरेनी पेठे पोतानी कायनुं परावर्तन करे. वळी वनस्पतिनुं निर्लेप-तहन खाली थवानुं आगममां निपेभ्युं छे तेनो पण अत्यारे प्रसंग थशे. केवी रीते थशे ? अहीं वनस्पतिथी प्रतिसमय असंख्याता जीवो उद्धतं छे, अने वनस्पतिनुं कायस्थितिनुं परिमाण असंख्याता पुद्गलपरावर्तो छे, तेथी असंख्याता पुद्गलपरावर्ताना जेटला समयो थाय ते वडे एक समये नीकळेला जीवोने गुणीए अने जेटला थाय तेडलुं परिमाण वनस्पति जीवोनुं छे. अने तेथी तेओनुं प्रतिनियत परिमाण होवाथी तेनुं निर्लेपन (तहन खाली थनुं) सिद्ध थाय छे. वळी प्रतिनियत परिमाण होवाथी जता काले वधा भव्योनी सिद्धिनो प्रसंग प्राप्त थाय छे. अने तेम थतां मोक्षमार्गं वंध पडवानो प्रसंग उपस्थित थाय छे, कारण के सर्व भव्यो सिद्धिने प्राप्त थया पळी बीजानुं सिद्धिगमन नहिं थाय. ए संबंधे कहुं छे के—

कायट्टइकालेणं तेसिमसंखेज्जयावहारोणं । निल्लेवणमावन्नं सिद्धी वि य सब्बभव्याणं ॥

पइसमयमसंखेज्जा जेणुब्बट्ठंति तो तदभत्या । कायट्टिइए समया वणस्सईणं च परिमाणं ॥ [विशेष० गा. ४९-५०]

सखेज्जाइं याससहस्साइं, एवं आऊवि । तेउकाइए पज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं सखेज्जाइं राइंयियाइं । वाउकाइयपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वास-
हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वरसो जाणवा. ए ममाणे अफ्कायिक पण जाणवा. तेजस्कायिक सबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी संख्याता दिवसो होय छे. चायुक्कायिक पर्यासा सबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वर्षो होय छे. वनस्पतिकायिक पर्यासा सबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्त-

कायस्थितिना फाल घरे तेओमा असख्यातानो अपहार करता निलेपणु अने सपे भव्योनी सिद्धि प्राप्त थाय छे कारण के प्रतिसमय धर्मख्याता नीकले छे तेथी तेनाथी कायस्थितिना समयोवडे गुणीए एट्टु घनस्पति जीवोनु परित्माण छे एट्टु एम नथी, कारण के घनस्पतिओनु अनादिपणु, तेनु खालो न थडु, सपे भव्योनी सिद्धिनो निषेघ अने मोक्षमार्गनु निलतरपणुं ते ते स्थले सिद्धान्तमा फहेलु छे (३०)—अहीं ये प्रकारना जीवो छे—साव्यवहारिक अने असाव्यवहारिक तेमा जेओ निगोवायस्थायी नीकळी पृथिवीकायि काविमा उत्पन्न थाय छे ते लोफोमा दृष्टिपथमा आवेला पृथिवीकायिकादि व्यवहारने प्राप्त थाय छे माटे तेओ साव्यवहारिक अथवा व्यवहार राधिना फहेचाय छे जो के तेओ फरीथी पण निगोवायस्थाने प्राप्त थाय छे तो पण तेओ व्यवहारमां पढेला होयाथी साव्यवहारिक ज फहेचाय छे जेओ अनादि फाल्थी आरंभी निगोवायस्थाने प्राप्त थयेला छे, तेओ व्यवहारमार्गमा नहि आवेला होयाथी असाव्यवहारिक फहेचाय छे एम शायी जाणी शक्या के 'साव्यवहारिक अने असाव्यवहारिक ये प्रकारना जीवो छे ? युक्तिथी जाणी शक्या छे कारण के मत्तुत्पन्न (वर्तमानकले विद्यमान) घनस्पतिना जीवोनु पण निलेपन (शून्यपणु) आगममा निषेघु छे, तो पछी थधी घनस्पतिओना निलेपननी तो शी यात करवी ? तेमज वधा भव्यो पण निलेप थता नथी जो असाव्यव्यवहारिक राशिमा रहेला अत्यन्त अनादि घनस्पति जीवो न होय तो ते केम घटी शकै ? तेथी जाणी शक्या छे के—असाव्यवहारिक राशि पण

सहस्साईं । वणस्सइकाइयपज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाईं वाससहस्साईं । तसकाइयपज्जत्तए पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेणं । दारं ४ ॥
 सुहूर्तं अने उत्कर्षथी संख्याता हजार वर्षो होय छे. त्रसकायिक पर्यासा संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तसुहूर्तं अने उत्कर्षथी कंइक अधिक वसोथी नवसो सागरोपम सुधी होय छे. (द्वार ४).

छे, के जेमां रहेला वनस्पतिना जीवो अनादि छे. वळी आ गाथा पण गुरुपरंपराथी आवेली सिद्धान्तमां प्रसिद्ध छे—

अथि अर्णता जीवा जेहिं न पत्तो तसाइपरिणामो । ते वि अर्णताणता निगोयवानं अणुवसंति ॥

अनन्ता जीवो छे के जेओए त्रसादिपणुं प्राप्त कर्युं नथी. ते पण अनन्तानन्त जीवो निगोदवासमां रहे छे. ते मटे आ हेतुथी पण असांब्यवहारिकराशि सिद्ध थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के—

“न य पच्चुण्णवचणस्सईणं निल्लेचणं न भव्याणं । सुत्तं होइ न तं जइ अच्चन्तवणस्सईं नरिथि ॥

एवं अणादिचणस्सईणं अरिथत्तमथओ निद्धं । भणइ य इमावि गाहा गुरुवणसाऽऽगया समये” ॥ (चि० ५०-५१) ‘अरिथि अर्णता जीवां० इत्यादि. जो अत्यन्त वनस्पति न होय तो प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) वनस्पति जीवो अने भव्योनुं निर्लेपन (अभाव, खाली थरुं) युक्त नथी पम नथी. अर्थात् युक्तिसिद्ध छे. ए प्रमाणे अनादि वनस्पतिकायनुं अस्तित्व अर्थात् सिद्ध थाय छे. गुरुना उपदेशथी आ पण गाथा सिद्धान्तमां आवेली छे. तेथी आ सूत्र सांब्यवहारिक जीवोने आश्रयी जाणवुं, पण असांब्यवहारिक जीवोनी अपेक्षाए न समजवुं. कारण के आ सूत्र विशेष विषयक, छे पण सामान्य विषयक नथी. आ स्वमतिकल्पित नथी. कारण के ए संबन्धे पूज्यपाद जिनभद्र गणिसमाश्रमण कह्ने छे—“तद्ध काल्पडिईकाल्पादओ विसैसे पडुच किर जीवे । नाणाईचणस्सइणो जे संववतारव्याप्तिरिया” ॥ (विशेषण गा० ५१)

तेमज कायस्थितिओ काल वगैरे विशेष जीवोने आश्रयी कायुं छे, परन्तु सांब्यवहारराशिथी बदराना अनादि वनस्पतिने आश्रयी

५. सुहुमे णं भंते ! सुहुमेत्ति कालतो केवचिरं होति ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं काल, असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा । सुहुमपुढचिकाइते सुहुमआउकाइते, सुहुमतेउकाइते, सुहुमवाउकाइते, सुहुमवणफइकाइते सुहुमनिगोदेवि जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, असंखिज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा । सुहुमे णं भंते ! अपज्जत्तगत्ति

५. हे भगवन् ! दूरमकायिक 'दूरम' ए रूपे काळधी क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यधी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षधी असंख्यतो काळ होय काळने आश्रयी असंख्यती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी अने क्षेत्रने आश्रयी असद्वयाता लोक होय. दूरम पृथिवीकायिक, दूरम अप्कायिक, दूरम तेजस्कायिक, दूरम वायुकायिक, दूरम वनस्पतिकायिक अने दूरम निगोद पण जघन्यधी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कर्ष नयी महीं भादि शश्रयी सर्व जीवोप अनन्तवार भुततो स्पर्श क्यों छे-इत्यादि जे भा प्रज्ञापना दूरमा कहेयामा आश्रये अने पूर्व कथु छे तेनु ग्रहण कएयु तेथी कथो दोप नयी त्रसकायनु सूर स्पष्ट छे इवे ए पर्याप्त अने अपर्याप्त विशेषण सन्नि त्रसकायिकादिनो विचार करे छे - 'तमकाइयअपज्जत्त ए भंते' ! -हे भगवन् ! त्रसकायिक अपर्याप्त ए काळने आश्रयी पर्याप्त सुधी होय-इत्यादि परन्तु तेजकायग्रहणां उत्कर्षधी कायस्थिति सख्याता रात्रि-दिवसनी होय छे, कारण के तेज कायनी उत्कर्षधी पण भवस्थिति त्रण रात्रि-दिवसनी छे, तेथी निरंतर केटलाएक पर्याप्ताना भयना कालनी गणना करया छातां पण संख्याता दिवसो ज थाय छे, पण भेकडो परसो के हजारो घरसो धत्ता नथी

५. इवे कायदारली अदर समावेश धतो होयाथी दूरमकायिकादि जीवोनु निरूपण करयानी इच्छयाळा सूचकार कहे छे-- 'सुहुमे ण भंते'-इत्यादि हे भगवन् ! दूरमकायिक 'दूरम' इति-दूरमत्व पर्याप्तसहित निरंतर काळनी अपेक्षाय पया सुधी दोय !

यादर० पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेजं कालं जाय खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं । पत्तेयसरीरयादरवक्फहाइए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीतो । निगोदे णं भंते ! निगोत्ति कालओ केवचिरं होति ! गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेणं अणंतं काल, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो अट्टाइज्जा पोगलपरियहा । यादरनिगोदे णं भंते ! यादरनिगोदेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सत्तरि सागरोवमकोडाकोडीतो । यादरत्तसकाइए णं

यादर अष्कायिक, यादर तेजस्कायिक अने यादर वायुकायिक संबधे जाणवुं. यादर वनस्पतिकायिक 'यादर वनस्पतिकायिक' रूपे इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी असह्यथातो काळ, यावत् क्षेत्रथी अंगुलना असह्यथातमा भाग प्रमाण काळ जाणवो हे भगवन् ! प्रत्येकशरीरयादर वनस्पतिकायिक संबधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी सित्तेर कोटाकोटी सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! निगोद 'निगोद' ए रूपे केटला काळ सुधी होय ! हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काल-अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी काळथी, तथा क्षेत्रथी अढी पुद्गलपरिवर्त सुधी होय. हे भगवन् ! यादर निगोद 'यादर

प्रतिसमय एक एक प्रवेशने प्रवृत्त करता जेटली उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी धाय जेटली असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण होय छे सूक्ष्म वनस्पतिकाय सूत्र पण पूर्वोक्त युक्तिथी साव्यवहारिक जीव सबन्धे जाणवु तथा पर्याप्त अने अपर्याप्त सामान्यता अने पृथिवी कायिकादि विशेषण सहित सूक्ष्म जीवो निरन्तर होय तो जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त काळ पर्यन्त होय, पण ते पछी न होय ते माटे ते चिययना सूत्र समुदायमां वधे जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त फणु छे यादर सामान्य सूत्रमा असख्यातो काळ फणो छे तेनी विशेष्यता जणावे छे—'असख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी सुधी होय छे' आ काळने आश्रयी परिमाण फणु हचे क्षेत्रने आश्रयी

भंते ! बादरतसकाइएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोचमसह-
स्साइं संखेज्जावासमभहियाइं । एतेसिं चेव अपज्जत्तगा सव्वेवि जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरपज्जत्तए
णं भंते ! बादरपज्जत्तएत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोचमसत्पुहुत्तं सातिरेगं । बा-
दरपुढविकाइयपज्जत्तए णं भंते ! बादर० पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखिजाइं वासस-
हस्साइं । एवं आउकाइएवि । तेउकाइयपज्जत्तए णं भंते ! तेउकाइयपज्जत्तएत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतो-
मुहुत्तं, उक्कोसेणं संखिजाइं राइंदियाइं । वाउकाइयवणस्सइकाइयपत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइते पुच्छा । गो-

निगोद' रूपे इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सिचेर कोटाकोटी सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् !
बादर त्रसकायिक बादर त्रसकायिक रूपे कालथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता वर्ष
अधिक वे हजार सागरोपम सुधी होय. एओना ज अपर्याप्ता वधा जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय. हे भगवन् ! बादर
पर्याप्त 'बादर पर्याप्त' ए रूपे कयां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी कंडक अधिक वसोथी नवसो साग-
रोपम सुधी होय. हे भगवन् ! बादर पृथिवीकायिक पर्याप्ता संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता
परिमाण वतावे छे—'अंगुलस्स असंखेज्जइमागो' अंगुलनो असंख्यातमो भाग होय छे. पटले अंगुलना असंख्यातमा भाने जेटला
आकाश प्रदेशो होय, तेमांथी प्रतिसमय एक एक प्रदेशने ग्रहण करतां जेटली असंख्याती उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी थाय तेटली होय
छे. (प्र०)—अंगुलनो असंख्यातमो भागमात्र छतां तेमांथी प्रतिसमय एक एक प्रदेश ग्रहण करवामां आवे तो इती रीते असंख्याती
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी थाय ? (उ०)—क्षेत्रं सुहमणुं होवाथी थाय छे. कांहुं छे के—'सुहोमो य होइ कालो तत्तो सुहमयरं हवइ खित्तं' ।

यमा ! जहन्नेण अतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहरसाइं । निगोयपज्जत्तते यादरनिगोयपज्जत्तण पुच्छा । गोयमा ! दोण्हवि जहन्नेणं अन्तोसुहुत्तं, उक्कोसेण अंतोसुहुत्तं । यादरतसकाइयपज्जत्तणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सा-
तिरेणं । दार ४ ।

६. सजोगी णं भंते ! सजोगिगित्ति कालओ केवचिर होति ? गोयमा ! सजोगी दुविहे पन्नत्ते, तजह्हा—अणा-
हजार वरस सुधी होय ए प्रमाणे अष्कायिक सबधे पण जाणयुं. हे भगवन् ! तेजस्कायिक पर्याप्त 'तेजस्कायिक पर्याप्त' ए रूपे ष्यां सुधी होय ! हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता रात्रिदिवस सुधी होय. वायुकायिक, वनस्पति अने प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकायिक संबधे पृच्छा. हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी सङ्ख्याता हजार वरसो सुधी होय निगोद पर्याप्त अने बादर निगोद पर्याप्त सबधे पृच्छा. हे गौतम ! वनेने जयन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय. हे भगवन् ! बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त 'बादर वनस्पतिकायिक पर्याप्त' ए रूपे कालथी क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्यथी अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी कंडक अधिक वसोथी नवसो सागरोपम सुधी होय. ४ द्वार.

६. हे भगवन् ! सयोगी-योगसहित 'सयोगी' ए रूपे कालथी क्या सुधी होय ? हे गौतम ! सयोगी वे प्रकारना छे. ते आ-
-सख्ख काल छे मने तेथी क्षेत्र यधारे सख्ख छे आ सत्र यादर वनस्पतिकायनी अपेक्षाए समज्जु कारण के ते त्तिवाय अन्य यादरानी पटला कालनी स्थितिनो असमव छे वाकीला वधा सत्रो द्वारानी समाप्ति सुधी सुगम छे ४ कायद्वार समाप्त

दीए वा अपज्ववसिते, अणादीए वा सपज्ववसिते । मणजोगिणि कालतो केवचिंरं होति ? गो-
यमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोसुहुत्तं । एवं वइजोगीवि । कायजोगी णं भंते ! काययोगी० ? गोयमा !

प्रमाणे-अनादि अपर्यवसित (अनन्त) अने अनादि सपर्यवसित (सान्त). हे भगवन् ! मनयोगी-मनयोगवालो 'मनयोगी' ए रूपे काळधी
क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त. ए प्रमाणे वचनयोगवालो पण जाणवो. हे भगवन् !

६. हवे योगद्वार कहे छे- 'सयोगी णं भंते' ! इत्यादि. योग-मन, वचन अने कायानो व्यापार, ते जेओने छे ते योगी-व्यापार-
वाळा मन, वचन अने काय कहेवाय छे. ते वडे सहित होय ते सयोगी-मन, वचन अने काययोग युक्त आत्मा केटला काळ सुधी
होय ? अहीं उत्तर आपे छे- 'सयोगी दुविहे पन्नत्ते' इत्यादि. सयोगी वे प्रकारना छे. अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. जेओ कदि मोक्षे
जवाना नथी ते हमेशां अवश्य कोइ पण योग वडे सयोगी छे, माटे अनादि अनन्त छे. जेओ मोक्षे जशे ते अनादि सान्त छे. कारण
के सुक्तिपर्यायनो प्रादुर्भाव थतां योग पर्यायनो सर्वथा अभाव थाय छे. मनयोगवाळा सूत्रमां जघन्यथी एक समय होय छे. ज्यारे
कोइक जीव औदारिक काययोग वडे प्रथम समये मनने योग्य पुद्गलो ग्रहण करी, बीजा समये मनपणे परिणमावीने मूके अने त्रीजा
समये बंध पडे के मरे त्यारे एक समय मनयोगवाळो होय छे. कारण के प्रथम ग्रहण समये औदारिक योगवाळो होय छे, बीजा
समये मनयोगवावाळो होय छे अने त्रीजा समये बंध पडे छे के मृत्यु पामे छे. उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे. कारण के मनने
योग्य पुद्गलेने निरंतर ग्रहण करतो अने मूकतो अन्तर्मुहूर्त पछी अवश्य तेवा प्रकारना जीवना स्वभावथीज बंध पडे छे. त्यार पछी
फरीथी ग्रहण करे छे अने मूके छे, परन्तु वच्चे सूक्ष्मकाळ होवाथी कदाचित् तेतुं संवेदन थतुं नथी, तेथी उत्कर्षथी पण मनयोगी
अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. 'एवं वइजोगीवि' ए प्रमाणे-मनयोगवाळानी पेठे वचनयोगवाळो पण कहेवो. ते आ प्रमाणे-वइयोगी णं
भंते ! वइजोगिणि कालओ केवचिंरं होइ ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोसुहुत्तमिति' । हे भगवन् ! वचनयोगवाळो

जहन्नेणं अंतोमुद्भुतं, उक्कोसिण वणप्फइकालो । अजोगी णं भंते ! अजोगिति कालओ केवचिर होति ? गोयमा !
सादीप अपज्जवसिते । दार ५ ।

‘काययोगी’ रूपेकाळधी कया सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यधी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षधी वनस्पतिकाल पर्यन्त होय. हे
भगवन् ! अयोगी ‘अयोगी’ ए रूपे काळधी कया सुधी होय ? हे गौतम ! सादि अनन्त काळ सुधी होय. ५ द्वार.

‘वचनयोगी’ ए रूपे काळधी कया सुधी होय ! हे गौतम ! जघन्यधी एक समय अने उत्कर्षधी अन्तर्मुहूर्त होय तेव्हा जे प्रथम समये
काययोग वढे भाषायोग्य द्रव्य ग्रहण करे छे ते वीजे समये तेने भाषापणे परिणमावीने मूके छे अने पछी बीजा समये धध पढे छे
अथवा मरे छे माटे एक समय वचनयोगयाळो होय छे आ सत्ये मूळटीकाकार कहे छे-“पढमसमये काययोगेणं गहियाण भासा
द्वयाण विषयसमये वसोरोणेण नित्तण काऊण उवरमतस्स धा एग समओ लभ्भा” इति-प्रथम समये काययोग वढे ग्रहण करेळा
भाषाद्रव्येने बीजा समये वचन योग वढे मूकीने धध पढनार के मरनारने एक समय वचन योग होय छे, अने उत्पट अन्तर्मुहूर्त
सुधी भाषाद्रव्येने निरंतर ग्रहण करतो अने मूकतो पछी धध पढे छे, कारण के तेवो बीयनो स्वभाव छे, माटे उत्कर्षधी अन्तर्मुहूर्त
पर्यन्त होय छे काययोगी जघन्यधी अन्तर्मुहूर्त होय छे अही वेचन्द्रियादिने वचनयोग पण होय छे अने सक्की पचेन्द्रियने मनोयोग
पण होय छे तेथी ज्यारे वचनयोग के मनयोग होय छे त्यारे काययोगतु प्रधानपणु नधी, कारण के ते यन्ने योगो सादि सान्त छे
जघन्यधी अन्तर्मुहूर्त सुधी काययोगी होय छे, अने उत्कर्षधी वनस्पतिकाल पर्यन्त होय छे ते पूरें काळु छे, कारण के वनस्पतिका
यमां केवळ काययोग होय छे, वचनयोग के मनोयोग होतो नधी तेथी याकीना योगनो असमव होयाथी तेनी कायस्थिति पर्यन्त निर-
न्तर काययोग होय छे अयोगी-योगपरिहित सिद्ध छे, अने ते सादि अनन्त छे माटे अयोगीने सादि अनन्त काळ कहलेले छे ६ योगद्वार.

७. सवेदए णं भंते ! सवेदएत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! सवेदए त्तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसित्ते, अणादीए वा सपज्जवसिए, सादीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीतो कालतो, खेत्ततो अवहुं पो-ग्गलपरियदं देसूणं । इत्थिवेदे णं भंते ! इत्थिवेदेत्ति कालओ केवचिरं होति ? गोयमा ! एणेणं आदेसेणं जहन्ने-

७. हे भगवन् ! सवेदी 'सवेदी' ए रूपे कयां सुधी होय ? हे गौतम ! सवेदक त्रण प्रकारना छे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे तें जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काळ-अनन्त उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी सुधी काळथी होय छे. क्षेत्रथी कंडक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त पर्यन्त होय छे. हे भगवन् ! स्त्रीवेदी 'स्त्रीवेदी' ए रूपे काळथी कयां सुधी होय ? हे गौतम ! १ एक आदेश-प्रकारथी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एकसो दस पल्योपम. २ बीजा

७. योगद्वार समाप्त थयुं, हवे वेदद्वार कहे छे—'सवेदए णं भंते' ! वेद सहित होय ते सवेद. ते त्रण प्रकारे छे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, ३ अने सादि सान्त. तेमां जे उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिने कदि नहि प्राप्त करे ते अनादि अनन्त, कारण के कदि पण तेना वेदना उदयनो विच्छेद थवानो नथी. जे उपशमश्रेणि के क्षपकश्रेणिने प्राप्त करशें ते अनादि सान्त. कारण के उपश्रेणि के क्षपकश्रेणिनी प्राप्तियां वेदोदयनो 'विच्छेद थाय छे. जे उपशमश्रेणि प्राप्त करी त्यां वेदना उदय रहित थइने पुनः उपशमश्रेणिथी पडतो वेदना उदयवालो थाय छे ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. ते आ प्रमाणे-अहीं ज्यारे कोइ पण उपशम-श्रेणिने प्राप्त करी त्रणे प्रकारना वेदने उपशमावी वेदोदयरहित थइने पुनः श्रेणिथी पडतो सवेदपणुं प्राप्त करी जलदी उपशमश्रेणि

१. उपशमश्रेणिमां के क्षपकश्रेणिमां नवमा गुणस्थानकना संबधता भाग गया-पछी वेदना उदयनो विच्छेद थाय छे.

णं ऋकं समयं, उक्कोसिणं वसुत्तर पलिओवमसतं पुन्वकोडिपुष्टमन्महिगं १, एगेणं आवेसेणं जहन्नेणं ऋगं समयं, उक्कोसिणं अट्टारसपलितोवमाइं पुन्वकोडिपुष्टमन्महिगाइं ३, एगेण आवेसेणं जहन्नेणं ऋगं समय, उक्कोसिणं चउवस पलिओवमाइं पुन्वकोडिपुष्टमन्महिगाइं ३, एगेणं आवेसेणं जहन्नेणं ऋगं समय, उक्कोसि-

एक आदेश्ययी जपन्ययी एक समय अने उत्कर्षयी पूर्वकोटी पृथक्त्व वर्यं अधिक अदार पल्योपम. ३ त्रीजा एक आदेश्ययी जपन्ययी एक समय अने उत्कर्षयी पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक चौद पल्योपम. ४ चौथा एक आदेश्ययी जपन्ययी एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी अने फार्मप्रधिक्त आचार्यना अग्निप्रात्ययी सपक्थेणि प्राप्त धाय अने प्राप्त धाद् भन्तमुंहुतमा ऋणे वेदने उपशाम करे के क्षय करे त्वारे जपन्ययी भन्तमुंहुतं सुयी वेदसहित होय छे अने उत्कर्षयी अपार्थ—कइक न्यून अर्थं पुत्रलपरार्थनं काल सुयी होय छे कारण के उपशामधेणिधी पढेले यधारेमां यधारे पढला काल सुयी तत्सारमां रखे छे माटे उत्कर्षयी सादि सान्त मवेर्येने उपर पढेला कालनु प्रमाण घटे छे

स्त्री वेदना विगपमां पांच आवेशो छे ते मनुकमे अणाये छे—'एगेण आवेसेण' इत्यादि तेमा यथे जपन्ययी समय मात्रनो विचार भा प्रमाणे छे—कैइक स्त्री उपशामधेणिमा ऋण वेदने उपशाम करी वेदरहित थाले ते अेणिधी पढती स्त्रीवेदने उदय एक समय अनुमयी धीजे समये काल करी वेदोमा उत्पन्न धाय त्या तेने पुठयणु प्राप्त धाय, एण स्त्रीणु न होय, तेथी ए प्रमाणे जपन्ययी समयमात्र स्त्रीवेद होय छे उकृष्टना दिचारमा प्रथमादेशनी मायना वा प्रमाणे छे—कोइ जीय पूर्वकोटी आयुष्याळी मनुष्य स्त्री के तिवेध स्त्रीमा पांच छ मयो मनुमयी ईशान कल्पमा पचायन पर्योपमनी उत्कृष्ट स्थितियाळी अपरिगृहीता वेयीपणे उत्पन्न धाय अने पोताना आयुषनो क्षय थवाथी त्पयी मरण पामी करीधी पूर्वकोटी आयुष्याळी मनुष्य स्त्रीमां के तिवेध स्त्रीमां स्त्रीपणे उत्पन्न धाय, करीधी यीजीधार ईशान वेपलोकमां पचायन पर्योपमना उत्कृष्ट आयुष्याळी अपरिगृहीता वेयीपणे उत्पन्न धाय, त्यार पछी

पुणं पलिओवमसतं पुण्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ४, एगेणं आदेसेणं जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं पलितोवमपुहुत्तं पुण्वकोडिपुहुत्तमब्भहियं ५ । पुरिसवेदे णं भंते ! पुरिसवेदेत्ति० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं सा-
पृथक्त्व अधिक सो पल्योपम, ५ अने पांचमा एक आदेशथी जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक पल्योपमपृथ-
क्त्व होय. हे भगवन् ! पुरुषवेदी 'पुरुषवेदी' ए रूपे केटला काल सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य अन्तर्बुहूर्त अने उत्कर्षथी कंडक

स्त्रीवेद सिवाय बीजो वेद पामे. ५ प्रमाणे पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक एकसो दस पल्योपम थाय. अहीं अन्य शंका करे छे के "जो देवकुरु, उत्तरकुरु वगेरेमां त्रण पल्योपमना आयुपवाळी स्त्रीओमां स्त्रीपणे उत्पन्न थाय तो स्त्री वेदनी तेथी अधिक स्थिति पण संभवे तो पटली ज स्थिति केम कही ? (३०)—ते अयुक्त छे, कारण के अभिप्रायनुं ज्ञान नथी, ते आ प्रमाणे—देवीथी व्यचीने असंख्यात वरसना आयुपवाळी स्त्रीमां उत्पन्न थती नथी. कारण के देवयोनिथी व्यवेलाने असंख्यात वरसना आयुपवाळामां उत्पत्तिनो निषेध करेलो छे. वळी असंख्यात वरसनी आयुपवाळी स्त्री उत्कृष्ट स्थितिवाळी देवीओमां उत्पन्न थती नथी. जेथी मूळ टीककारे कहुं छे के " जत्तो असंखेज्जावासाउया उक्कोसिद्धिं न पावति" इति—जे हेतुथी असंख्यात वरसना आयुपवाळी स्त्री देवोमां उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त करती नथी. मोटे उपर कटेली ज उत्कृष्ट स्थिति स्त्रीवेदनी होय छे. बीजा आदेशवादी आ प्रमाणे कहे छे—पूर्वकोटीना आयुपवाळी मनुष्यस्त्री के तिर्यचस्त्रीमां पांच छ भवो करीने पूर्वं कह्या प्रमाणे ईशान देवलोकमां त्रे वार उत्कृष्ट स्थितिवाळी देवीमां उत्पन्न थती अवश्य परिगृहीता देवीओमां ज उत्पन्न थाय, पण अपरिगृहीता देवीओमां न उत्पन्न थाय. तेथी तेना मते स्त्रीवेदनी उत्कृष्ट स्थिति पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक अठार पल्योपमनी होय. बीजा आदेशवादी आ प्रमाणे कहे छे—सौधर्म देवलोकमां सात पल्योपमना उत्कृष्ट आयुपवाळी परिगृहीता देवीमां त्रे वार उत्पन्न थाय तेथी तेना मते पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक चौद पल्योपमनी स्त्रीवेदनी स्थिति होय छे. चोथा आदेशवादीना मते—सौधर्म देवलोकमां पचास पल्योपमना उत्कृष्ट आयुपवाळी अपरिगृहीता देवीमां

गरोचमसतपुष्टुत्तं सातिरेगं । नपुंसगवेग णं भंते ! नपुंसगवेदंति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं णं समयं, उक्को
सेणं वणस्सइकालो । अवेदए णं भंते ! अवेदएत्ति पुच्छा । गोयमा ! अवेदे दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-सावीण वा
अधिक शवपुयक्त्व सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! नपुंसकवेदी 'नपुंसकवेदी' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जपन्य एक
समय अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाल पर्यन्त होय. हे भगवन् ! अवेदक (वेदरहित) 'अवेदक' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अवेदक

एण पूर्वै फहा प्रमाणे वे धार देवीपणे उत्पन्न थाय तेथी तेना मते पूर्वकोटीपृथक्त्व अधिक सो पत्योपमनी स्थिति थाय छे
पांचमा आदेशवाची आ प्रमाणे कहे छे—अनेक भवमा भ्रमण करवा वडे स्त्रीवेदनी उत्कृष्ट स्थितिनो विचार करीप तो पूर्वकोटी
पुथक्त्व अधिक पत्योपमपृथक्त्वनी स्थिति होय, एण अधिक न होय, ते आ प्रमाणे-पूर्वकोटी वर्पना आयुषवाळी माजुयी के तिर्येच
स्त्रीमां सल भयो करीने आठमा भवे वेवकुट घगेरेमां वण पत्योपमवाळी स्त्रीमा स्त्रीपणे उत्पन्न थाय, त्याथी मरीने सौधर्म देवलो
कमा जपन्य स्थितियाळी देवीमा देवीपणे उत्पन्न थाय अने स्यार एडी ते अयश्य धीजो वेद पामे आ पांच आदेशमाना कोर एण
आदेशना यथार्थपणानो निर्णय अतिशय छानी के सर्वोत्कृष्ट शुतलब्धि सपन्न पुरुषो करी शके अने तेजो भगवान् आर्य दयाम सूरिना
समयमा नहोता, केवल ते फाळनी अपेक्षाप जे तेमनाथी पूर्वार्थायों हता अने तेजोप ते फाळमा विद्यमान प्रन्थोनो पूर्वापर विचार
करी पोतानी मति प्रमाणे स्त्रीवेदनी स्थितिनो प्ररूपणा करी हती ते वधा एण प्रवचनता हाता आचार्योना मतोनो आय दयामन्वरिय
निर्देश कर्यो छे ते प्राचर्चनिक सूरिजो एण पोताना मतथी सूत्रनो पाठ करता गौतमना प्रश्न अने भगवान्ना उत्तररूपे कहेता हता
तेथी ते प्रमाणे ज सूत्रनी रचना करता आर्यश्यामाचार्यो गौतमने उद्देशी ए प्रमाणे कशु छे जो एम न होय तो गौतमनो निर्देश
करीने कहेनार भगवतने विशेषे सशय पूर्वक कथन घटी शके नहि, कारण के भगवान् सर्व प्रकाला सशयथी रक्षित छे

पुष्टयवेद सूत्रमां अध्वन्यथी मन्तुर्मुहूर्तनी स्थिति छे ज्यारे फोर जीव अन्य वेदवाळा जीवोथी नीकळी पुरुषवेदमा उत्पन्न थार

અપજ્જવસિણ સાહ્યે વા સપજ્જવસિતે । તત્થ ણં જે સે સાહ્યે સપજ્જવસિતે સે જહણેણં ણં સમયં, ઉવ્વકોસેણં અંતોસુહત્તં । દારં ૬ ।

બે પ્રકારના છે-સાદિ અનન્ત અને સાદિ સાન્ત છે તે જઘન્ય એક સમય અને ઉત્કૃષ્ટ અન્તમુહૂર્ત સુધી હોય. (દ્વાર ૬)

ત્યાં અન્તમુહૂર્ત પર્યન્ત પોતાનું સર્વાયુપ પુરું કરી વીજી ગતિમાં અન્ય વેદવાલામાં ઉન્પન્ન થાય, ત્યારે પુરુષવેદની અન્તમુહૂર્ત જઘન્ય સ્થિતિ ઘટે છે. ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ તો સ્પષ્ટ છે. નપુંસકવેદ સૂત્રમાં જઘન્યથી એક સમય સ્ત્રીવેદની પેઠે જાણવો. ઉત્કર્ષથી ઘનસ્પતિનો કાઠ સમજવો અને તે પૂર્વે કહ્યો છે. આ સૂત્ર સાંબ્યવહારિક જીવોને આશ્રયી જ્યારે વિચાર કરીપ ત્યારે ઘટી શકે છે. જ્યારે અસાં-વ્યવહારિક જીવોને આશ્રયી વિચાર કરીપ ત્યારે બે પ્રકારનો નપુંસકવેદનો કાઠ છે. કેટલાપક્કને આશ્રયી અનાદિ અનન્ત કાઠ છે, કે જેઓ કદિ પણ સાંબ્યવહારિક રાશિમાં આવશે નહિ, પણ જેઓ અસાંબ્યવહારિક રાશિથી નીકળી સાંબ્યવહારિક રાશિમાં આવશે પવા કેટલા એક જીવોને આશ્રયી અનાદિ સાન્ત કાઠ જાણવો. (પ્ર૦)-શું અસાંબ્યવહારિક રાશિથી પણ નીકળી સાંબ્યવહારિક રાશિમાં આવે છે, જેથી આવી પ્રરૂપણા કરો છો ? (ઉ૦)—આવે છે, એ રીતે જાણી શકાય ? પૂર્વાચાર્યના ઉપવેશથી જાણી શકાય છે. એ સંબન્ધે દુઃપમ કાઠ રૂપી અંધકારમાં નિમગ્ન થયેલા જિનપ્રવચનના પ્રદીપ સમાન ભગવાન્ જિનમદ્ર ગણિ ક્ષમાશ્રમણ કહે છે—

“સિજ્જંતિ જતિયા વિરે ઇહ સંઘવહારજીવરાસીઓ । ણંતિ અણાહ્વણસ્સહરાસીઓ તતિયા તમ્મિ” ॥ (વિશેષણ૦ ગા. ૬૦)

“જેટલા વ્યવહારરાશિથી સિદ્ધ થાય છે તેટલા અનાદિ ઘનસ્પતિરાશિથી આ સંબ્યવહાર રાશિમાં આવે છે.” વેદરહિત જીવ બે પ્રકારના છે- સાદિ અનન્ત અને સાદિ સાન્ત. તેમાં જે ક્ષપકથ્રેણિ પ્રાપ્ત કરી વેદરહિત થાય તે સાદિ સાન્ત છે, કારણ ક્ષપકથ્રેણિથી નીચે પહ્લાવું હોતું નથી. પણ જે ઉપશમથ્રેણિને પ્રાપ્ત થઈ વેદોવયરહિત થાય છે તે સાદિ સાન્ત છે અને તે જઘન્યથી એક સમય પર્યન્ત હોય છે. કેવી રીતે એક સમય સુધી છે ? જ્યારે એક સમય વેદના ઉદય રહિત થઈને વીજે સમયે મરણ પામે ત્યારે તે મરણ સમયે વેદોમાં ઉત્પન્ન

८. सकसाई णं भते ! सकसायित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! सकसाती त्तिविधे पन्नत्ते, तंजहा—
अणादीण वा अपज्जवसित्ते, अणादीण वा सपज्जवसित्ते, सादीए वा सपज्जवसित्ते, जाव अबहुं पोगलपरियंइं दे-
सूणं । कोहकसाई णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, एवं जाव माणमायाकसाती ।
लोमकसाई ण भंते ! लोमकसाइत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समय, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । अकसाई

८. हे भगवन् सकपायी (कपाय सहित) 'सकपायी' ए रूपे कालयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सकपायी त्रण प्रकाल्ना छे.
ते आ प्रभाये—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त. ते यावत् कंइक न्यून अर्धं पुद्गलपरावर्तं सुधी होय छे. हे
भगवन् ! क्रोधकपायी—इत्यादि पृच्छा. हे गौतम ! जयन्य अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय. ए प्रमाणे मानकपायी अने मायाक-
पाय अने त्या पुरुगवेदना उदय वडे वेदसहित होय छे माटे जयन्यथी एक समय अवेदक होय छे उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्तं छे, कारण
के त्थार पछी अवश्य धेणिथी पडता वेदने उदय होय छे वेदद्वार समाप्त.

८. वेदद्वार कहु, हवे कपायद्वार कहे छे-तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'सकसाई ण भते' ! इत्यादि सह-विद्यमान छे कपाय जेओने ते
सकपाय—जीवना परिणाम विक्षेप, तेवा परिणाम जेओने छे ते सकपायी—कपायसहित परिणामघाळा जीयो. आ यधु सूत्र पण
सवेद सूत्रनी पेठे सामान्यणो विचारु कारण के ते समान भावना वडे कहेलु छे 'कोहकसाई ण भते' ! इत्यादि क्रोधकपायी जय
न्यथी पण अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षथी पण अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय छे कारण के क्रोधकपायनो उपयोग जयन्यथी अने उत्कर्षथी पण
अन्तर्मुहूर्तं प्रमाण छे कारण के तेवा प्रकारनो जीवस्यभाव छे आ चारे सूत्र पण क्रोधविना विच्छिष्ट उपयोगनी अयेसाए छे लोम-
कपायी जयन्यथी एक समय पर्यन्त होय छे ज्यारे कोइ उपशमक-उपशमावनाए उपशमभ्रेणिना अन्ते उपशान्त वीतरण धरने धेणिथी

णं भंते ! अकसायित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! अकसायी डुविहे पन्नत्ते, तंजहा—सादीए वा अपज्ज-
वसित्ते, सादीए वा सपज्जवसित्ते । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसित्ते से जहन्नेणं एणं समयं, उक्कोसेणं अं-
तोमुहुत्तं । दारं ७ ।

९. सलेसे णं भंते ! सलेसेत्ति पुब्बञ्ज । गोयमा ! सलेसे डुविधे पत्तत्ते, तंजहा—अणादीए वा अपज्जवसित्ते,
पायी जाणवा. हे भगवन् ! लोभकपायी 'लोभकपायी' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय, अने उत्कृष्ट अन्त-
र्बुहूर्त सुधी होय. हे भगवन् ! अकपायी (कपाय रहित) 'अकपायी' ए रूपे काल्धी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अकपायी वे प्रकारना छे,
ते आ प्रमाणे—सादि अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्बुहूर्त सुधी होय. (द्वार ७)

९. हे भगवन् ! सलेश्य (लेश्या सहित) 'सलेश्य' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सलेश्य वे प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—
पडतो लोभना अणुओने प्रथम समये वेदतो काल करिने देवलोकमां उत्पन्न थाय अने त्यां उत्पन्न थतो क्रोधकपायी, मानकपायी के
मायाकपायी होय त्वारे एक समय पर्यन्त. लोभकपायी होय छे. जो पम छे तो क्रोधादिने पण काल एक समय केम न होय ? तेमां
प्रकारना जीवस्वभावधी न होय. ते आ प्रमाणे—श्रेणिधी पडतो मायाना अणुओने वेदवाना प्रथम समये, मानता अणुओना वेदवाना
प्रथम समये क्रोधना अणुओना वेदवाना प्रथम समये जो काल करे अने काल करिने देवलोकमां उत्पन्न थाय तो पण तेवा प्रका-
रना स्वभावधी जे कपायोदय वडे काल कर्यो हतो ते कपायोदयने त्यां पण प्राप्त थइ अन्तर्बुहूर्त सुधी वेदे. अने ए आ सूत्रना प्रामा-
ण्यधी जणाय छे, माटे क्रोधादिने विषे अनेक समयो होय छे. अकपाय सूत्र अवेव सूत्रनी जेम जाणुं. कपायद्वार समाप्त थयुं.

९. हवे लेश्याद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'सलेसे णं भंते ! इत्यादि. सलेश्य—लेश्यासहित. ते वे प्रकारना छे—१ अनादि अनन्त

अणादीण या सपञ्चयसिते । कणहलेसे णं भंते ! कणहलेसेत्ति काल्तो केवचिर होद ? गोयमा ! जहन्नेणं अतो-
मुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं अतोमुहुत्तमभहियाइं । नीललेसे णं भंते ! नीललेसेत्ति पुच्छा । गोय-
मा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलितोयमासखिज्जइमागमभहियाइ । काउलेसे णं

अनादि अनन्त अने अनादि सान्त. हे भगवन् ! कृष्णलेदयावाळो 'कृष्णलेदयावाळो' ए रूपे काळधी क्यां सुधी होय ? हे गौतम !
जयन्य अन्तर्मुहूर्त अने उरुहट अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीय सागरोपम सुधी होय. हे भगवन् ! नीललेदयावाळो 'नीललेदयावाळो' ए
रूपे केटला काळ सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्य अन्तर्मुहूर्त अने उरुहट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक दस सागरोपम सुधी

अने अनादि सान्त तेमा जे वदि पण सत्तालो भन्त करयानो मधी ते अनादि अनन्त अने जे सत्तालो पार पामदो ते अनादि
सान्त 'कणहलेसे ण भंते' इत्यादि हे भगवन् ! कृष्णलेदयावाळो काळने माधवी क्यां सुधी होय ? इत्यादि अर्धी निर्येच अने मज्ज्योने
लेदयाद्रव्यो अन्तर्मुहूर्तधी आरंभी पर मयना प्रथम अन्तर्मुहूर्त सुधी रहेला होय हे, तेथी वधे जयन्य अन्तर्मुहूर्तनी स्थिति तिःष
अने मज्ज्यनी भयेसाप अने उरुहट स्थिति वेच अने नारकनी भयेसाप जाणवी ते विविध प्रकारनी होपाथी अर्धी तेनो विचार
करयामां आयें हे—हेमां जे अन्तर्मुहूर्त अधिक तेत्रीय सागरोपमनी स्थिति कही हे ते सत्तमी नरपृथिवीनी भयेसाप जाणवी
कारण के तेमा रहेला 'गयिको' कृष्णलेदयावाळा हे अने तेमोनी उरुहट स्थिति तेत्रीय सागरोपमनी हे जे पूर्वं भयजुं छेळंतुं अने
परमपणु पहेलु पम ये अन्तर्मुहूर्त हे, ते यन्नेने पण एक अन्तर्मुहूर्त कहेयामां आयुं हे, कारण के अन्तर्मुहूर्तना भयण्याला भयो हे
ते प्रमाणे धीजे स्थले पण कहेयामां आयु हे—'मुद्रुसय सु जहन्ना नितीम सागत मुद्रुसदिया । उक्कोसा होर विं नायव्या कण-
लेसाप' ॥ कृष्णलेदयानी अन्तर्मुहूर्त जयन्य स्थिति अने मुद्रुसदिया अधिक तेत्रीय सागरोपमनी उरुहट स्थिति जाणवी. अर्धी

पुच्छ। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं तिणिण सागरोवमाइं पलितोवमासंखिज्जतिभागमब्भहियाइं।
तेउलेसे णं पुच्छ। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलितोवमासंखिज्जतिभागमब्भ-
हियाइं ! पम्हलेसे णं पुच्छ। गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोसुहुत्तमब्भहि-
होय. कापोतलेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघ्न्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक त्रण सागरोपम
सुधी होय. तेजोलेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघ्न्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक वे साग-
रोपम सुधी होय. पब्लेश्यावाळा संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघ्न्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्तं अधिक दस सागरोपम सुधी

'सुहुत्तहिया' अन्तर्मुहूर्ताधिक एवी चूर्णिकारे व्याख्या करी છે. नील्लેશ્યા સૂત્રમાં જે પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ અધિક દસ સાગરો-
પમની સ્થિતિ કહી છે તે પાંચમી નરકપૃથિવીની અપેક્ષાપ સમજવી. કારણ કે ત્યાં પ્રથમ પ્રસ્તરમાં નીલ્લેશ્યા હોય છે, કારણ કે 'પંચમીપ
મીસા' પાંચમી નરક પૃથિવીમાં મિશ્ર-કૃષ્ણ અને નીલ્લેશ્યા હોય છે. એવું કથન છે. તેના પહેલા પ્રસ્તર-પાથડામાં ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ
પટલી જ છે. જે પૂર્વભવનું ચરમ અને પરમવનું આઠ અન્તર્મુહૂર્ત અધિક છે તે પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગમાં અન્તર્ગત છે માટે
તેની જુદી વિવક્ષા કરી નથી. ૫ પ્રમાણે પછીના સૂત્રમાં પણ જાણવું. કાપોતલેશ્યા સૂત્રમાં પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ અધિક ત્રણ
સાગરોપમની સ્થિતિ ત્રીજી નરકપૃથિવીની અપેક્ષાપ સમજવી. કારણ કે ત્રીજી નરકપૃથિવીના પળ પ્રથમ પ્રસ્તરમાં કાપોતલેશ્યા હોય
છે. કારણ કે 'તર્કયાપ મીસિયા' ત્રીજી નરકમાં મિશ્ર-કાપોત અને નીલ્લેશ્યા હોય છે એવું કથન છે. અને તેમાં પટલીજ ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિનો સંભવ
છે. તેજોલેશ્યાસૂત્રમાં પલ્યોપમના અસંખ્યાતમા ભાગ અધિક વે સાગરોપમની સ્થિતિ કહી છે તે ઈશાન દેવલોકના દેવોની અપેક્ષાપ જાણવી,
કારણ કે તેઓ તેજોલેશ્યાવાळा છે અને ઉત્કર્ષથી પટલી સ્થિતિવાळा છે. પબ્લેશ્યાસૂત્રમાં અન્તર્મુહૂર્ત અધિક દસ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

याईं । सुबकलेसे णं पुच्छा । गोपमा । जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोबमाईं अंतोसुहुत्तमन्महि-
याईं । अलेसं णं पुच्छा । गोपमा । सादीए अपज्जवसिते । वार ८ ।

१०. सम्मविट्ठी णं अंते ! सम्मविट्ठिच्चि कालओ केवचिर होइ ? गोपमा ! सम्मविट्ठी बुविहे पन्नत्ते, तंजहा-
होय. शुक्कलेइयावाळा सबधे पुच्छा. हे गौतम ! जयन्य अन्तमुहुत्तं अने उरुट्ट अन्तमुहुत्तं अधिक तेत्तीस सागरोपम सुधी होय.
लेइयाएदित संवधे प्रश्न. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ होय. ९ द्वार.

१०. हे भगवन् ! सम्यग्दष्टि 'सम्यग्दष्टि' ए रूपे काळयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सम्यग्दष्टि वे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-
ते प्राळ्लोकनी अपेक्षाए समजवी कारण के ायां देवोनी उरुट्ट रिणति इस सागरोपमनो छे अने एगलेइया छे जे पूर्व मय अने एर भयला
वे अन्तमुहुत्तं छे तेने एक अन्तमुहुत्तनी विपक्षा करी अन्तमुहुत्तं अधिक वसु छे शुक्कलेइयाएव्रमां अन्तमुहुत्तं अधिक तेत्तीस सागरोपमनी
स्थिति कही छे ते अतुसट देवनी अपेक्षाए जाणवी कारण के तेओनी उरुट्ट स्थिति तेत्तीस सागरोपम प्रमाण छे अने अन्तमुहुत्तं
अधिकरूपमानो विचार पूर्वनी घंटे जाणयो लेइयाएदित अयोगी ऐयली अने सिद्ध छे, तेथी ते अयस्थानां एण लेइयाएदितपणानो प्रतिवेध
नथी माटे माग्नि अन्त छे ८ लेइयाद्वार समान

१० इये सम्यक्कवद्वार फहे छे, तेमा मा प्रथम सूत्र छे 'सम्मविट्ठी ण अंते' ! इयादि सम्यक्क-वधार्थ, भविपरित दष्टि-जिन
प्रणीत वस्तुतयनो बोध जेओने छे ते सम्यग्दष्टि ते अतरकरणना फाळने विषे धयावाळा औपशमिक सम्यक्क, सास्यावन सम्य-
कत्त, विगुद दर्शनओहनीयपुजना उदयथी उत्पन्न थयेला क्षायोपशमिक सम्यक्क अथवा संपूर्ण दर्शन ओहनीयना शयथी उपन्न
थयेला क्षायिक सम्यक्कत्तयपडे सदित होय छे, 'ते सम्यग्दष्टि केटला फाळ सुधी होय' ? उतर-सम्यग्दष्टि वे-प्रकारे छे ते आ प्रमाणे-

સાદીએ વા અપજ્જવસિતે, સાદીએ વા સપજ્જવસિતે । તત્થ ણં જે સે સાદીએ સપજ્જવસિતે સે જહન્નેણં અંતોસુહંતં, ઉક્કોસેણં છાવઠ્ઠિં સાગરોવમાહં સાહરેગાહં । મિચ્છાદિટ્ઠી ણં મંતે ! પુચ્છા । ગોયમા ! મિચ્છાદિટ્ઠી તિવિધે પ-
સાદિ અનન્ત અને સાદિ સાન્ત છે. તેમાં જે સાદિ સાન્ત છે તે જઘન્યથી અન્તર્મુહૂર્ત અને ઉત્કૃષ્ટ કાંઈક અધિક છાસઠ સાગરોપમ સુધી હોય છે. હે ભગવન્ ! મિથ્યાદષ્ટિ સંબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! મિથ્યાદષ્ટિ ત્રણ પ્રકારે છે, તે આ પ્રમાણે—૧ અનાદિ અનન્ત, ૨ અનાદિ

૧ સાદિ અનન્ત અને ૨ સાદિ સાન્ત. તેમાં સાદિ અનન્ત જ્યારે ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વ ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે જાણવો. કારણ કે ક્ષાયિક સમ્યક્ત્વનો નાશ થતો નથી. જે સાદિ સાન્ત છે તે ક્ષાયોપશમિક સમ્યક્ત્વની અપેક્ષાપ જાણવો. તેમાં જે સાદિ સાન્ત સમ્ય-
ગ્દષ્ટિ છે તે જઘન્યથી અન્તર્મુહૂર્ત સુધી હોય છે, કારણ કે ત્યાર પછી તેને મિથ્યાત્વને વિષે જવાનો સંભવ છે. ઉત્કૃષ્ટ કંઈક અધિક છાસઠ સાગરોપમ સુધી છે. તેમાં જો વિજયાદિ ચાર અનુત્તર દેવોમાં બે વાર સમ્યક્ત્વ સહિત ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળો દેવ ઉત્પન્ન થાય, અથવા ત્રણવાર અચ્યુત દેવલોકમાં ઉત્પન્ન થાય તો દેવભવો વડે જ છાસઠ સાગરોપમ પરિપૂર્ણ થાય છે. અને જે સમ્યક્ત્વસ-
હિત મનુષ્યના ભવો છે તે વડે અધિક હોય છે તેથી અધિક કાળું છે. ૫ સંવન્ધે કાળું છે કે “ દો વારે વિજયાહસુ ગયસ્સ તિન્ન ચ્ચુપ્પ અહવ તાહં । અરેગં નરભવિયં ”—બે વાર વિજયાદિમાં અને ત્રણ વાર અચ્યુતમાં ગયેલાને (છાસઠ સાગરોપમ) કાલ થાય છે અને તેથી અધિક મનુષ્યના ભવો જાણવા. ‘મિચ્છાદિટ્ઠાણં મંતે’ ! इत्यादि. જેમ ધતુરો જાનાર પુરુષને ધોળી વસ્તુમાં પીઠી વસ્તુનો વોધ થાય છે તેમ મિથ્યા-વિપરીત, દષ્ટિ—જીવાદિ વસ્તુતત્ત્વનો વોધ જેને છે તે મિથ્યાદષ્ટિ. (પ્ર૦)—કોઈ મિથ્યાદષ્ટિ પળ મધ્યને મધ્યરૂપે અને પેયને (પીવા લાયકને) પેય તરીકે, મનુષ્યને મનુષ્ય તરીકે અને પશુને પશુ તરીકે જાણે છે, તો તે મિથ્યાદષ્ટિ કેમ કહેવાય ? (ઉ૦)— સર્વજ્ઞ તીર્થંકરમાં શ્રદ્ધા નહિ હોવાથી તે મિથ્યાદષ્ટિ કહેવાય છે. અહીં અરિહંત ભગવન્તે કહેલા સંપૂર્ણ પ્રવચનના અર્થની રુચિ કરવા છતાં જો તેમાંના એક અક્ષરની પણ શ્રદ્ધા ન કરે તો પણ ૫ મિથ્યાદષ્ટિ જ કહેવાય છે. કારણ કે સર્વજ્ઞ તીર્થંકરમાં તેને શ્રદ્ધા-વિશ્વાસ

नन्ते, तंजहा—अणाइए अपज्जवसिए वा, अणावीए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से सावीए सपज्जवसिते से जहन्नेणं अतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ का-

सान्त, अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जयन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षथी अनन्त काळ. अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काळथी अने क्षेत्रथी कइक न्यून अर्धपुद्गलपरावर्त सुधी होय छे. सम्यग्मिथ्यादृष्टि सबधे पृच्छा. हे गौतम । जयन्यथी अन्तर्मुहूर्त

नथी प सपन्धे कह्यु छे के “सूत्रमा कहेला एक अक्षरली पण अरुचि करवाथी मिथ्यादृष्टि थाय छे, कारण के तेने जिनेअरे कहेल्लु सूत्र प्रमाण नथी” तो पछी अरिहत भगवते कहेला यथार्थ जीवाजीवादि वस्तुतत्त्वना बोधरहित आत्मा मिथ्यादृष्टि होय तेमा शु कहेल्लु ? (प्र०)—सपूर्ण प्रवचनना अर्थनी रुचि करवाथी, अने तेमांना कोइ अर्थनी रुचि नहि करवाथी आ न्यायथी ते सम्यग्मिथ्यादृष्टि अ योग्य छे ? तो मिथ्यादृष्टि केम कहेयाय ? (उ०)—ते धरोबर नथी, कारण के वस्तुतत्त्वनु अज्ञान छे अहीं तो ज्यारे जिने कहेली होवाथी सकल वस्तुतत्त्वनी सम्यक् श्रद्धा करे स्यारे आ सम्यग्दृष्टि छे, अने ज्यारे एक पण वस्तुमा के तेना पर्यायमा पुच्छिनी मन्वता यगेरे कारणथी एकान्त सम्यक् ज्ञान के मिथ्याज्ञानना अभावथी सम्यक् श्रद्धा करतो नथी, तेम एकान्तथी अश्रद्धा पण करतो नथी स्यारे सम्यग्मिथ्यादृष्टि कहेयाय छे प सपन्धे शतकनी पृहचूर्णिमा कह्यु छे—“जहा नालिकेरीचवासिस्स गुहारायस्स चि पत्थ सम्यायस्स ओयणाए अणेगयिहे दोएण, तस्स आहारस्स उचरिं न रुईं न य निदा, लेण सो ओयणाएवाहारे न य कयाचि दिट्ठो नाचि सुओ, पय सम्मामिच्छविट्ठिस्स वि जीवाएपयाथाण उचरिं न य रुईं नाचि निदा” इति । धुधाथी पीडित यथा छत्ता पण अहीं आवेला नालिकेर द्वीपवासी मनुय्यने तेनी पासे मूखेला ओदनादि अनेक प्रकारना आहारना उपर रुचि के अरुचि न होय, कारण के ते ओदनादि आहार तेगे कदि पण दीडो के सामढयो नथी प प्रमाणे सम्यग्मिथ्यादृष्टिने पण जीवादि पदार्थना उपर

लतो, खेत्ततो अवहुं पोगलपरियदं देखुणं । सम्मामिच्छादिही णं पुच्छा । गोयमा । जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्को-
सेणं अंतोसुहुत्तं । दारं ९ ।

११. णाणी णं भंते ! णाणित्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! णाणी दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—सातीते वा
अने उत्कृष्ट पण अन्तमुहूर्त होय छे.

११. हे भगवच् ! ज्ञानी 'ज्ञानी' ए रूपे कालथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! ज्ञानी त्रे प्रकारना छे, ते आ प्रमाणे—सादि
रुचि के अरुचि न होय. ज्यारे एक पण वस्तु के पर्यायमां एकान्तथी विरुद्ध मान्यतावालो होय त्यारे पण ते मिथ्यादृष्टि छे एम
कहेचामां कांइ पण दोष नथी. ते मिथ्यादृष्टि त्रण प्रकारना छे—अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त. तेमां जे कोइ काले
पण सम्यक्त्व पामधानो नथी ते अनादिअनन्त, जे पामझे ते अनादि सान्त. अने जे सम्यक्त्व पामी फरीथी पण मिथ्यात्व पामझे
ते सादि सान्त. ते जघन्यथी अन्तमुहूर्त सुधी होय छे, कारण के त्यार पछी कोइने फरीथी सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. उत्कृष्ट अनन्त
काल सुधी होय छे. तेनी कालथी अने क्षेत्रथी वग्ने प्रकारे प्ररूपणा करे छे—कालथी अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी होय छे अने क्षेत्रथी
कंश्क न्यून अर्धपुद्गलपरावर्त छे. अहीं 'क्षेत्रथी' एम काणं छे माटे क्षेत्रपुद्गलपरावर्त ग्रहण करहुं. पण द्रव्यपुद्गलपरावर्तादि न समजवा,
एम पूर्व अने पछी पण जाणी लेहुं. 'सम्मामिच्छादिहीणं' इत्यादि. सम्यग्-यथार्थ अने मिथ्या-विपरीत दृष्टि जेनी छे ते सम्यग्मि-
थ्यादृष्टि. ते जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तमुहूर्त सुधी होय छे, त्यार पछी स्वभावधीज तेचा परिणामनो नाश थाय छे. ९ सम्यक्त्वद्वार समाप्त.
११. हवे ज्ञानद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'नाणी णं भंते' ! इत्यादि. जेनामां ज्ञान छे ते ज्ञानी कहेवाय छे. ते बे
प्रकारे छे—सादि सान्त अने सादि अनन्त. तेमां केवलज्ञाननी अपेक्षाए सादि अनन्त छे, कारण के ते प्राप्त थया पछी जंतुं नथी,
अने वाकीना ज्ञाननी अपेक्षाए सादि सान्त छे, कारण के वाकीना ज्ञानो अमुक काल सुधीज होय छे. ते जघन्यथी अन्तमुहूर्त सुधी

अपञ्चयसिते, सादृश्या सपञ्चयसिते । तत्त्वं ज्ञेयं सादीप्तं सपञ्चयसिते से जहण्णेणं अंतोमुद्रुत्तं, उक्कोसेणं छावट्टिं सागरोपमाई सादरेगाइ । आभिनियोहियणाणी णं पुच्छा । गोयमा ! एवं चेष, एवं सुयणाणीचि, ओहिनानीचि एवं चेष, नवर जहण्णेणं णं समय । मणपञ्चवणाणिं कालतो केचचिर

अनन्त अने सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जयन्यथी अन्तर्मुद्रुत्तं अने उत्कृष्ट काइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी होय छे. आभिनियोधिकर ज्ञानी सबधे पुच्छा. हे गौतम ! एम ज जाणयु. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी सबधे जाणयु. अवधिज्ञानी सबधे पण एमज ममजयुं. परन्तु ते जयन्यथी एक समय छे. हे भगवन् ! मनःपर्यवज्ञानी 'मनःपर्यवज्ञानी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे

होय छे, कारण के तयार पछी मिथ्यात्वनी भासि घटे धानना परिणामनो नाश थाय छे उत्कृष्ट काइक अधिक छासठ सागरोपम प्रोय छे अने ते सस्पन्दस्थिनी पठे जाणयो, कारण के सम्यग्स्थिने ज्ञानीपणु होय छे आभिनियोधिकर ज्ञान सूत्रमा 'एय वेय' ति-एमज जाणयु, जेम सामान्यथी सादि सान्त शानी जयन्यथी अने उत्कर्षथी कसो छे तेम आभिनियोधिकरज्ञानी पण कहेयो, ते आ प्रमाणे- 'जहण्णेण अन्तोमुद्रुत्त, उक्कोसेण छावट्टी सागरोपमाई सातिरेगाइ'-जयन्यथी अन्तर्मुद्रुत्तं अने उत्कर्षथी फइक अधिक छासठ सागरोपम जाणयो एम श्रुतज्ञानी पण जाणयो, अवधिज्ञानी सबधे पण एमज ममजयु परन्तु ते जयन्यथी एक समय छे अवधिज्ञान एक समय शी रीते होय ? अर्ही अवधिज्ञानी तिर्यच पचेन्द्रिय, मनुष्य के देय सम्यक्पय प्राप्त करे अने तेने सम्यक्पयमि ममयेज सम्यक्पय होणाथी विमग्नात्ता अवधिज्ञान रूपे थाय छे, अने ते ज्यारे देचना व्ययन पठे अने शीजाने मरण घटे के धीजी रीते पछीना ममये पठे छे तयारे अवधिज्ञाननो एक समय होय छे उत्कर्षथी फइक अधिक छासठ सागरोपम होय छे अने ते आपतित अवधिज्ञानमहित ये थार विजयादिमां जया घटे अथवा जण थार अच्युत देयलोकमा जया घटे जाणयो 'मनःपर्यवज्ञानी जयन्यथी एक

णं जे से सादीग सपञ्चयसिते से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालतो, खेत्तओ अवहुपोगलपरियट्ठं देसूण । विभंगणाणी ण भत्ते ! पुच्छा । गोयमा ! जहण्णेणं णं समं, उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोयमाइं देसूणाते पुब्बकोडीते अब्भत्तिताइं । वार १० ।

१२. चरपुदंसणी णं भत्ते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण सागरोयमसास्सं सातिरेगं ।

अने उत्कर्षी अनन्त काल-अनन्त उत्सर्पिणी अने अवमर्पिणी काळी होय छे अने क्षेत्री कंडक न्यून अर्ध पुद्गलपर्यंत सुधी होय छे. हे भगवन् ! विभंगज्ञानी 'विभंगज्ञानी' ए रूपे क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जपन्य एक समय अने उत्कृष्ट कंडक न्यून पूर्वकोटी अर्ध अधिक तेत्रीय सागरोपम सुधी होय छे. (वार १०)

१३ हे भगवन् ! चक्षुदर्शनी 'चक्षुदर्शनी' ए रूपे क्या सुधी होय ? हे गौतम ! जपन्ययी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कर्षी कंडक

विभंगज्ञान रूपे थाय छे, कारण कं "आद्ययमज्ञानमपि भवति मिथ्यात्वसयुक्तम्"—आदिना प्रण ज्ञान मिथ्यात्व सदिल अज्ञान रूपे थाय छे-एतु ज्ञाननु वान छे ते पछीना समये रचना व्ययन घडे अने अल्पने मरण घडे के धीमी रीते ते विभंगज्ञान पडे छे तेथी विभंगज्ञानो काल एक समय होय छे उत्कर्षी परक न्यून पूर्वकोटी अर्ध अधिक तेत्रीय सागरोपम प्रमाण होय छे ते आ प्रमाणे-ज्यारे कोर मिथ्यादृष्टि तिर्यच पचेन्द्रिय के मनुष्य पूर्वकोटी घरमना आयुषवाळो होय अने ते केटलाफ अर्ध गया पछी विभंगज्ञानी थाय अने अणतित विभंगज्ञानमदित्त अ अशु गति घडे ज्ञानमी नाएक पृथिवीमा तेत्रीय सागरोपमनी स्थितिवाळो नाएक थाय त्यारे पूर्वोक्त उत्कृष्ट कालंनुं प्रमाण होय छे त्यार पछी मस्यस्स्यनी प्राप्ति प्राप्त अथविज्ञान अथाधी के सर्वथा नाश अथाधी विभंग ज्ञान छे ज्ञानठार समाप्त

अचक्खुदंसणी णं भंते ! अचक्खुदंसणित्ति कालओ० ? गोयमा ! अचक्खुदंसणी डुविहे पन्नत्ते, तंजहा-अणादी-
ए वा अपज्जवसित्ते, अणादीए वा सपज्जवसिए । ओहिदंसणी णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्को-
अधिक हजार सागरोपम सुधी होय, हे भगवन् ! अक्षुदर्शनी 'अचक्षुदर्शनी' ए रूपे काळथी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अचक्षुद-
र्शनी वे प्रकारे छे ते आ प्रमाणे-अनादि अनन्त, अने अनादि सान्त. अत्रधिदर्शनी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्य एक समय

१२. हवे दर्शनद्वार कहे छे—तेमां आ प्रथम मूत्र छे—'चम्बुदंसणी णं भंते' ! इत्यादि. हे भगवन् ! चक्षुदर्शनी क्यां सुधी होय ?
अहीं तेइन्द्रियादि जीव चउरिन्द्रियादिमां उत्पन्न थइ अने त्यां अन्तर्मुहूर्त रह्तीने फरीथी पण तेइन्द्रियादिमां उत्पन्न थाय त्यारे चक्षु-
दर्शनी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय, अने 'उत्कर्षथी कंश्क अधिक हजार सागरोपम सुधी होय'. अने ते चउरिन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय अने
नैरयिकादिना भवभ्रमण वडे जाणवुं. अचक्षुदर्शनी अनादि अनन्त छे के जे कदि पण मोक्षने प्राप्त करवानो नथी. जे मोक्षने प्राप्त
करशे ते अनादि सान्त. तथा तिर्यंच पंचेन्द्रिय के मनुष्य तेवा प्रकारना अत्यवसायथी अनधिदर्शन उत्पन्न करीने पछीना समये जो
काळ करे तो अवधिदर्शन पडे त्यारे अवधिदर्शनी एक समय सुधी होय. उत्कर्षथी अवधिदर्शनी कांश्क अधिक पकसो वत्रीश साग-
रोपम पर्यन्त होय. केवी रीते होय ? अहीं विभंगाना तिर्यंच पंचेन्द्रिय के मनुष्य अपतित विभंगान सद्दित ज कजुगति वडे सातमी
नरक पृथिवीमां तेत्रीश सागरोपमना आयुष्याळो नैरयिक थाय. अने ते नर्जाक मरण होय त्यारे समयन्च पामी तेथी भ्राष्ट थर पुनः
अगतित विभंगान वडे पूर्वकोटी आयुष्याळा तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय अने त्यां परिपूर्ण पोतानुं आयुष पाळीने फरी अप-
तित विभंगान सद्दित ज सातमी नरक पृथिवीमां तेत्रीश सागरोपमनी स्थितियाळो नैरयिक थाय, त्यां पण मरणना नर्जाक समये
समयक्त्व पामीने तेनो त्याग करे तेथी फरीथी पण विभंग गानमद्दित ज पूर्वकोटी आयुष्याळा तिर्यंच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थाय
त्यारे ए प्रमाणे एक छासठ सागरोपम थया, अने यथे तिर्यंचमां उत्पन्न थतो कजु गति वडे उपजे छे. कारण के विग्रह-चक्र गति

सेणं दो छावटीओ सागरोवमाणं साइरेगाओ। केवलदंसणीणं पुच्छा। गोयमा। सातीए अपब्बवसिते। वार ११।
अने उच्छट्ट कंडक अधिक बे वार छासठ (एकसो वत्रीश) सागरोपम सुधी होय. केवलदर्शनी 'केवलदर्शनी' ए रूपे क्यां सुधी होय?
हे गौतम ! सादि अनन्त होय (वार ११)

यदे तिर्यच अने मनुष्यमां उत्पन्न धनारने विभग ज्ञानो निवेध कर्यो छे ते माटे कहेशे के—“विभगनाणी पचेवियतिरिपखल्लोणिया मणुस्सा आहारगा, नो अणाहारगा” इति—विभग ज्ञानी पचेन्द्रिय तिरिच्छो अने मनुष्यो आहारक होय छे, पण अनाहारक होता नथी' अने विप्रहगतिमां तो अनाहारक होय छे माटे वक्र गतिमा विभग ज्ञान होनु नथी (प्र०)—आ माटे वच्चे सम्यक्फलयु प्रतिपादन कर्यो छे ! (उ०)—अही विभग ज्ञाननी स्थिति उकर्पथी पण करक न्यून पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपमनी छे, अने ते प्रमाणे पूर्व कथु छे के “विभगनाणी जहग्गेण एक समय उफोसेण तेत्तीस सागरोवमाहं वेमूणाए पुव्वकोटीए अम्महिंयाहं” इति। विभगज्ञानी अवन्यथी एक समय अने उच्छट्ट कारक यून पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम सुधी होय छे तेथी पटलाकाल सुधी निरंतर विभग ज्ञान नाहि रहैनु होवाथी वच्चे सम्यक्फलय प्राप्त करे छे त्यार पछी अपतित विमङ्गलान सहित अ मनुष्यपणु पामो संयमने पाट्टी बे घाट विजयादिमा उत्पन्न धाय त्यारे बीजा छालठ सागरोपम सम्यग्दण्डिने होय छे ए प्रमाणे अधिदर्शनतो काल बे छामठ—एकसो वत्रीश सागरोपम छे (प्र०)—विभग ज्ञाननी अपस्थामा अधिदर्शनतो कर्ममृति वगेरे प्रणयोमा निवेध कर्यो छे तो विभगज्ञानता मव्मावम अधिदर्शन केम होय ? (उ०)—एम मानयामा दोष नथी, कारण के सूत्रमा विभग अवस्थांमां पण अधिदर्शन प्रतिपादन करैनु छे ते आ प्रमाणे—आ सूत्रनो अभिप्राय छे के विशेष विषयक विभग ज्ञान अने सामान्य विषयक अधिदर्शन होय छे जेम सम्यग्दण्डिने विशेष विषयक अधिज्ञान अने सामान्य विषयक अधिदर्शन होय छे वेवळ विभगज्ञानीने पण अधिदर्शन होय छे, ते अनाकारमात्र-सामान्यमात्र विषयक होवाथी अधिमानिना अधिदर्शन जेथु छे, माटे ते पण अधिदर्शन कहैयाय छे पण

विभंगदर्शन कहेवातुं नथी. मूलटीकाकार प विचार संबंधे कहे छे-“दंसणं च विभंगोहीणं जत्तो तुल्लमेव अतो दो छावट्ठीओ साहरेगा ओ” इति । जेथी दर्शन विभंग अने अवधिज्ञानने तुल्य छे माटे काँईक अधिक बे छासठ सागरोपस काल थाय छे”. तेथी असे पण विभंगज्ञानमां अवधि दर्शनतो विचार कर्यो छे. कर्मप्रस्थिको कहे छे के यद्यपि साकार अने अनाकार रूप विशेषता होवाथी विभंगज्ञान अने अवधिदर्शन जुहुं छे, तो पण विभंगज्ञान वडे यथार्थ निश्चय थतो नथी, कारण के ते मिथ्यात्वरूप छे, तेम अवधिदर्शन वडे सम्यग्-निर्णय थतो नथी, कारण के ते अनाकारमात्र छे माटे विभंगज्ञानथी अवधिदर्शननी जुदी विवक्षा करवातुं कइपण प्रयोजन नथी. तेना अभिप्रायथी विभंग अवस्थामां अवधिदर्शन होतुं नथी. आ स्वमतिकल्पित नथी, पूर्वाचार्योप पण एवा प्रकारना मतविभागनी व्यवस्था करी छे. विशेषणवतीमां पूज्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणे कहुं छे के-

“सुत्ते विभंगस्स वि परुवियं ओहिदंसणं बहुसो । कीस पुणो पडिसिद्धं कम्मपगडीपरणम्मि ॥

विभंगेवि दरिसणं सामन्नविसेसविसयओ सुत्ते । तंचडविसिद्धमणागारमेत्तताऽवहिविभंगाणं ॥

कम्मपगडीमयं पुण सागारेयरविसेसभावेवि । न विभंगनाणदंसणविसेसणमणिच्छयत्तणओ ॥” (विशेषण. गा. १०४-१०६)

सूत्रमां विभंगने पण अवधिदर्शन बहुवार जणावुं छे, तो कर्मप्रकृति प्रकरणमां शा माटे तेनो निषेध कर्यो छे ? सूत्रमां सामान्य अने विशेषरूप विषयवडे विभंगने पण दर्शन होय छे अने ते दर्शन अनाकारमात्र होवाथी अवधि अने विभंगने अवधिदर्शन अविशिष्ट (विशेषता सिवाय) होय छे. कर्मप्रकृतिनो मत आ छे के साकार अने अनाकारनी विशेषता छतां पण अनिश्चयपणाथी विभंगज्ञान अने दर्शननी विशेषता नथी. बीजा आचार्यो व्याख्या करे छे के-सातमी नरकपृथिवीना निवासी नारकोनी करूपना करवातुं शुं प्रयोजन छे ? सामान्य रीते नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देव भवमां पर्यटन करता अवधिज्ञान अने विभंगज्ञान पटला काल सुधी होय छे. त्यार पछी मोक्ष प्राप्त थाय छे. केवलदर्शनीहुं सूत्र केवलज्ञानीना सूत्रनी पेठे विचारहुं. दर्शनद्वार समाप्त.

१३. सजप णं भंते ! संजतेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एणं समयं, उक्कोसिणं देसूणं पुब्बकोट्ठिं । असं-
जते णं भंते ! असजणत्ति पुच्छा । गोयमा ! असजते तिविधे पन्नत्ते, तंजहा-अणादिए वा अपज्जवसिते, अणा-
ए वा सपज्जवसिते, सातीए वा सपज्जवसिते । तत्थ णं जे से सातीए सपज्जवसिते से जहन्नेण अंतोमुत्तुत्तं,
उक्कोसिणं अणंतं कालं, अणंताओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ कालओ, खेत्ततो अचहं पोग्गलपरियट्ठं देसूण ।

१३. हे भगवन् ! सयत् 'सयत्' ए रूपे कालने आथयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्य एक समय अने उत्कृष्ट फंडक
न्यून पूर्वकोटी वर्ष पर्यन्त होय. हे भगवन् ! असयत् 'असयत्' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! असयत् त्रण प्रकारना छे. ते
आ प्रमाणे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त, अने ३ सादि सान्त छे ते जयन्यथी अन्तमुहूर्त अने
उत्कृष्ट अनन्त काल-अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालथी अने क्षेत्रथी कइक न्यून अर्ध पुद्गलपरायंत काल सुधी होय. सयतांसयत्

१३ इधे सयत्तद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे—'सजप ण भंते' ! इयादि कोर चारित्रना परिणाम समयेज काल करे
तेथी सयतने सयत्तपणु जयन्यथी एक समय होय छे असयत्त त्रण प्रपारे छे—अनादि अनन्त, अनादि सान्त अने सादि सान्त तेमा जे
सयमने कोर पण काले पामवानो नथी ते अनादि अनन्त, जे सयमने प्राप्त करसे ते अनादि सान्त, जे सयमने प्राप्त करी
तेथी छष्ट थाय ते सादि सात्त ते जयन्यथी अन्तमुहूर्त सुधी होय छे कारण के अन्तमुहूर्त पछी कोरने सयमनी प्राप्ति थाय छे
उत्कर्षथी अनन्तकाल-इयादि यधु पूर्वनी पंठे जाणणु ।यार थाव अवदय सयमनी प्राप्ति थाय छे सयतांसयत्त-देशविरतियाळो, ते
जयन्यथी अन्तमुहूर्त होय छे, कारण के देशविरतिनी प्राप्तिनो उपयोग जयन्यथी पण अन्तमुहूर्त पर्यंत होय छे देशविरतिना द्विविध
-त्रिविध-वे प्रकारे, त्रण प्रकारे-इयादि घणा भागा थाय छे, माटे तेनी प्राप्तिमा-जयन्यथी पण अन्तमुहूर्त लागे छे सयं विरति तो

संजतासंजते णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणं पुब्बक्कोडिं । नोसंजते-नोअसंजते-नो-
संजतासंजते णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते । दारं १२ ।

१४. सागारोवओगोवउत्ते णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अणागारोवउ-
त्तेवि एवं चेव । दारं १३ ।

१५. आहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! आहारए दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-छउमत्थआहारए य केवलिआहा-
(देशविरति) क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जघन्यथी अन्तमुहूर्तं अने उत्कृष्ट कंइक न्यून क्रोड पूर्व वर्ष सुधी होय. नोसंयत-नोअ-
संयत-नोसंयतासंयत (सिद्ध) क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार १२)

१४. हे भगवन् ! साकार उपयोगवालो क्यां सुधी होय ए प्रश्न. हे गौतम ! जघन्य अने उत्कृष्ट अन्तमुहूर्तं सुधी होय. अनाकार
उपयोगवाळा संबंधे पण एसज जाणवुं. (द्वार १२)

१५. हे भगवन् ! आहारक 'आहारक ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! आहारक वे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-छब्रस्य आहा-
सर्व सावद्यनो हुं त्याग कं हुं-इत्यादि रूप छे माटे तेनी प्राप्तिनो उपयोग एक समयनो पण होय छे, माटे पूर्वं संयतनो काळ एक
समय कह्यो छे. परन्तु जे संयत नथी, असंयत नथी अने संयतासंयत पण नथी ते सिद्ध छे. अने ते सादि अन्त छे. संयतद्वार समाप्त.

१४. द्वैवे उपयोगद्वार कहे छे, तेमां आ प्रथम सूत्र छे-सागारोवउत्ते णं भंते' ! इत्यादि. अहीं संसारीने साकार अने अनाकार
उपयोग होय छे अने ते जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तमुहूर्तं सुधी होय छे, तेथी यन्ने सूत्रोमां जघन्यथी अने उत्कर्षथी अन्तमुहूर्तनो
उपयोग कह्यो छे. केवलीने जे एक समयनो उपयोग कह्यो छे ते अहीं विवक्षित नथी. उपयोगद्वार समाप्त.

रण य । छउमत्थाहारण णं भते । छउमत्थाहारणत्ति कालओ केवच्चिर होति ? गोयमा ? जहन्नेणं खुद्दुगमभ-
वगगहणं दुसमयऊणं, उक्कोसेणं असखेज्जं काल-असखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीतो कालतो, खेततो अंगु-
लस्स असखेज्जतिमागं । केवलिआहारण णं भते ! केवलिआहारणत्ति कालतो केवच्चिरं होइ ? गोयमा !
जहन्नेणं अंतोसुहुत्त, उक्कोसेण देसुण पुब्बकोट्ठि । अणाहारण णं भते ! अणाहारणत्ति कालओकेवच्चिर
होइ ? गोयमा ! अणाहारण वुविहे पन्नत्तं, तंजहा-छउमत्थअणाहारण य केवलिअणाहारण य । छउमत्थअ-
रक अने केवली आहारक. हे भगवन् ! छपस्य आहारक' ए रूपे कालयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्यथी
वे समय न्यून झुल्लक भव (धस्रो छप्पन आगलिका) सुधी अने उत्कृष्ट असंख्यातो काळ एटले काळयी असंख्याती उत्सर्पिणी अय-
सर्पिणी अने क्षेत्रयी अंगुलना असख्यातमा भाग प्रमाण काळ सुधी होय छे. हे भगवन् ! केवली आहारक 'केवली आहारक' ए रूपे
काळयी क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्यथी अन्तमुर्ध्वं अने उत्कृष्ट कक्क न्यून पूर्वकोटी वर्ष सुधी होय. हे भगवन् ! अनाहारक
'अनाहारक' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! अनाहारक वे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-छपस्य अनाहारक अने केवली अनाहारक. हे
भगवन् ! छपस्य अनाहारक क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! जयन्य एक समय अने उत्कृष्ट वे समय सुधी होय. हे भगवन् ! केवली

१५. इवे आहारकदारकहे छे, तेमा भा प्रथम सूत्र छे-'आहारण ण भते'!-हे भगवन् ! आहारक केटल काळसुधी होय-त्यादि
सूत्र सुगम छे, परन्तु 'अहण्णेण खुद्दुगमयगहण दुस्समऊण' इति-जयन्यथी वे समय न्यून धूलक भय सुधी होय छे, काही यद्यपि
चार समयनी अने पाच समयनी विग्रहगति होय छे प सत्ये कसु छे के-

णाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जह्वेणं एगं समयं, उक्कोणं दो समयया । केवलिअणाहारए णं भंते ! केवलि० ? गोयमा ! केवलिअणाहारए दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-सिद्धकेवलिअणाहारए य भवत्थकेवलिअणाहारए य । सिद्धकेवलिअणाहारए णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए । भवत्थकेवलिअणाहारए णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! भवत्थकेवलिअणाहारए दुविधे पन्नत्ते, तंजहा-सजोगि भवत्थकेवलिअणाहारए य अजोगि भवत्थकेवलि-

अनाहारक 'केवली अनाहारक' ए रूपे क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! केवली अनाहारक वे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-सिद्ध केवली अनाहारक अने भवत्थ केवली अनाहारक. सिद्ध केवली अनाहारक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काल होय. हे भगवन् ! भवत्थ केवली अनाहारक क्यां सुधी होय ? हे गौतम ! भवत्थ केवली अनाहारक वे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे-सयोगी भवत्थ केवली अनाहारक अने अयोगी भवत्थ केवली अनाहारक. हे भगवन् ! सयोगी भवत्थ केवली अनाहारक क्यां सुधी होय ? हे गौतम !

“उडुया य एगवंका दुहतोवंका गतो विणिदिट्ठा । जुञ्जइ तिचउवंकाधि नाम चउपंचसमयाओ ॥”

ऋजु गति, एक समयनी वक्रगति अने वे समयनी वक्रगति कहेली छे. तथा त्रण चार समयनी वक्रगति अने चार, पांच समयनी पण वक्रगति घटी शके छे. तो पण बहुधा वे समयनी के त्रण समयनी वक्रगति होय छे, पण चार, पांच समयनी वक्रगति होती नथी माटे तेनी विवक्षा करी नथी. तेमां उत्कर्षथी त्रण समयनी वक्रगतिमां आदिना वे समय अनाहारक होय छे. तेथी आहारकपणाना विचारमां वे समय न्यून शुद्धकभवजुं ग्रहण कर्तुं छे. ऋजुगति अने एक समयनी वक्रगतिनी विवक्षा करी नथी, केम के अहीं सौथी जघन्यनो विचार छे. 'उत्कर्षथी असेंथातो काल छे'-इत्यादि वधुं सुगम छे, परन्तु एटला काल पछी अवश्य

અનાહારણ ય । સજોગિમ્બત્થકેવલિઅણાહારણ ણં મંતે ! પુચ્છા । ગોયમા ! અજહણમણુક્કોસેણં તિણિણ સ-
મયા । અજોગિમ્બત્થકેવલિઅણાહારણ ણ પુચ્છા । ગોયમા ! જહ્નેનેણવિ ઉવ્કોસેણવિ અતોસુહુત્તં । વારં ૧૪ ।

જયન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ સિવાય ત્રણ સમય સુધી હોય. અયોગી મ્બત્થ કેવલી અનાહારક સમયે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! જયન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ
સિવાય અન્તર્મુહર્તે સુધી હોય (દ્વાર ૧૪)

વિપ્રહગતિ થાય છે અને તેમા અનાહારકપણુ હોય છે માટે 'અન્ત ફાલ્લ' ન કહ્યો કેવલીસૂત્ર સુગમ છે. છમ્મસ્થ અનાહારક સૂત્રમાં
'ઉક્કોસેણ ધો સમયા' ઉત્કૃષ્ટ એ સમયો ત્રણ સમયની વિપ્રહગતિને આધારી કહ્યા છે ચાર સમયની અને પાંચ સમયની વિપ્રહગતિનો
વિવક્ષા કરી નથી-પ હમણાજ કહ્યુ. સયોગી મ્બત્થ કેવલી અનાહારક સૂત્રમાં આઠ સમયના કેવલી સસુવ્વપાતનો ત્રીજો, ચોથો અને
પાંચમો-પ ત્રણ સમયો અનાહારક હોય છે કહ્યુ છે કે-

"દ્વપ્પ પ્રથમે સમયે કમ્પાટ્થમ્મ ચોત્તરે તથા સમયે । મ્બ્યાનમ્મ તૃતીયે લોષલ્લ્યાપી ચ્તુર્થે તુ ॥
સહરતિ પઞ્ચમે ત્વન્તરાણિ મ્બ્યાનમ્મ તથા પટે । સસમેકે તુ ધમ્પાટં સહરતિ તતોડપ્પમે દપ્પહ્મ ॥
ઓદારિકમ્પયોક્ત્તા પ્રથમાટ્થસમયોરસાશિલ્લ । મિત્ત્રીદારિકમ્પયોક્ત્તા સસમપ્પટ્ઠિતીયેત્ત ॥

કાર્મણશરીરયોગી ચ્તુર્થકે પઞ્ચમે તૃતીયે ચ । સમ્પત્તયેડપિ તસ્મિન્ મ્બત્થનાહારકો નિયમાત્" ॥

પ્રથમ સમયે વડ, યીજા સમયે કપાટ, ત્રીજા સમયે મયાન અને ચોથે સમયે લોષધ્યાપી થાય છે પાચમા સમયે આતરામોનો
મદ્દાર કરે છે, છદ્દા સમયે મયાન સહરે છે, સાતમે સમયે કપાટ અને ત્યાર પછી આઠમા સમયે વડ સહરે છે પ્રથમ અને આઠમા સમયમા
ઓદારિકકાપયોગી હોય છે સાતમા, છદ્દા અને યીજા સમયમા ઔદારિકમિત્રયોગવાલ્લો અને ચોથા, પાચમા અને ત્રીજા પ ત્રણ
સમયમાં કાર્મણકાપયોગી હોય છે અને તે ઘણે અધ્ધ અનાહારક હોય છે આદારપ્રાર સમાસ

१६. भासए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं, उक्कोसेणं अंतोसुहुत्तं । अभासए णं पुच्छा । गोय-
मा ! अभासए त्तिविधे पन्नत्ते, तंजहा-अणाइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए, साइए वा अपज्जव-
सिए । तत्थ णं जे से साइए वा सपज्जवसिते से जहणणेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं वणफ्फइकालो । दारं १५ ।
१७. परित्तए णं पुच्छा । गोयमा ! परित्ते दुविधे पन्नत्ते, तंजहा—कायपरित्ते य संसारपरित्ते य । कायपरित्ते

१६. भापक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य एक समय अने उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुधी होय. अभापक संबंधे पृच्छा. हे गौतम !
अभापक त्रण प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—१ अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त अने ३ सादि सान्त. तेमां जे सादि सान्त छे ते जघन्यथी
अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाल सुधी होय छे. (द्वार १५)

१७. परित्त (प्रत्येक) संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! परित्त त्रे प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—कायपरित्त अने संसारपरित्त. कायपरित्त संबंधे

१६. हवे भापककार कहे छे—‘भासए णं भंते’ ! इत्यादि. भापक-बोलनार जघन्य एक समय अने उत्कर्षथी अन्तर्मुहूर्त सुधी
वचनयोगिनी पेटे जाणयो. अभापक त्रण प्रकारे छे—? अनादि अनन्त, २ अनादि सान्त अने ३ सादि सान्त. तेमां जे कोइ पण समये
भापकणुं पामशे नहि ते अनादि अनन्त. जे पामशे ते अनादि सान्त. अने जे भापक थरने फरीथी पण अभापक थाय ते सादि
सान्त. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे. कारण के बोलीने थोड़ी वार रलीने फरीथी पण भापकणुं जणाय छे. अथवा भापक-
बोलनार वेइन्द्रियादि एकेन्द्रियादि अभापक जीवोमां उत्पन्न थरने अने त्यां अन्तर्मुहूर्तुं जायुए पुंरुं करी फरीथी पण ज्यारे वेइन्द्रि-
यादिपणे उपजे छे त्यारे जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी अभापक होय छे. अने उत्कृष्ट वनस्पतिकाल सुधी होय छे अने ते पूर्व कथो छे.
माटे अहीं वतावना नथी. भापककार समाप्त.

નં પુચ્છા । ગોયમા ! જહન્નેનં અંતોમુદ્ધતં, ઉક્ષોસેનં પુઠ્ઠવિકાલો-અસંલેખાઓ ઉસ્સપ્પિણિઓસપ્પિણી-
તો । સસારપરિત્તે નં પુચ્છા । ગોયમા ! જહન્નેનં અંતોમુદ્ધતં, ઉક્ષોસેન અણત-કાલં જાવ અવઘ્ઠ પોગ્ગલપરિયદં
દેસૂણં । અપરિત્તે નં પુચ્છા । ગોયમા ! અપરિત્તે પુવિદ્દે પન્નત્તે, તંજહ્ઠા-કાયઅપરિત્તે ય સસારઅપરિત્તે ય । કાય-
અપરિત્તે નં પુચ્છા । ગોયમા ! જહન્નેનં અંતોમુદ્ધતં, ઉક્ષોસેનં યણસ્સહકાલો । સસારઅપરિત્તેનં પુચ્છા । ગોય-
પુચ્છા. હે ગૌતમ ! જપન્ય અન્તમુદ્ધર્ત અને ઉત્કટ અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી-અવસર્પિણીરૂપ અસંલ્યાતા પૃથિવીકાલ સુધી હોય.
સસારપરિત્ત સંબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! જપન્યથી અન્તમુદ્ધર્ત ઉત્કટ અનન્ત કાલ, યાઘવ કંઠક ન્યૂન અર્ધ પુદ્ગલપરાવર્ત સુધી હોય.
અપરિત્ત સબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! અપરિત્ત વે પ્રકારે છે. તે આ પ્રમાણે-કાયઅપરિત્ત અને સંસારઅપરિત્ત. કાયઅપરિત્ત સંબંધે પૃચ્છા. હે
ગૌતમ ! જપન્ય અન્તમુદ્ધર્ત અને ઉત્કટ વનસ્પતિકાલ પર્યન્ત હોય. સસારઅપરિત્ત સંબંધે પૃચ્છા. હે ગૌતમ ! સસારઅપરિત્ત વે પ્રકારે

૧૭. હવે પરિત્તદ્વાર કહે છે--પરિત્ત વે પ્રકારે છે--કાયપરિત્ત અને સંસારપરિત્ત તેમાં જેને પરિત્ત-પરિમિત કાય-ઉપીટ છે તે
કાયપરિત્ત-પ્રત્યેકશરીરો અને જેને સમ્યક્ત્વાદિ પદે પરિત્ત-પરિમિત સત્માર કર્યો છે તે સસારપરિત્ત કાયપરિત્ત અધન્યથી અન્તમુદ્ધર્ત
સુધી હોય છે અને તે જ્યારે કોઈ જીવ નિર્ગોત્રથી નીકળી પ્રત્યેક શરીરચાલ્યામાં ઉત્પન્ન થઈને અને ત્યાં અન્તમુદ્ધર્ત રહીને ફરીથી પણ
નિર્ગોત્રમાં ઉત્પન્ન થાય ત્યારે હોય છે. ઉત્કર્ષથી અસંલ્યાતો કાલ હોય છે અને તે અસંલ્યાતો કાલ પૃથિવીકાલ-એટલો પૃથ્વીકા-
ચિક્રનો કાયસ્થિતિનો કાલ છે તેટલો જાણવો તેનું કાલને આધારી નિરૂપણ કરે છે--તે અસંલ્યાતી ઉત્સર્પિણી અથવાસર્પિણી રૂપ છે'
સંસારપરિત્ત અધન્યથી અન્તમુદ્ધર્ત પર્યન્ત હોય છે, ત્યાર પછી તે અન્તરૂત્ત કેવલી યાને મુક્તિને પ્રાપ્ત થાય છે. ઉત્કટ અનન્ત કાલપર્યન્ત
હોય છે તેનું ય નિરૂપણ કરે છે--'ધજ્ઞતાઓ' ઇત્યાદિ અનન્ત ઉત્સર્પિણી અથવાસર્પિણીરૂપ અનન્ત કાલ હોય છે--ઇત્યાદિ પુર્વેની યેઠે

मा ! संसारअपरित्ते दुविहे पन्नत्ते, तंजहा—अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिते । नोपरित्ते नोअपरित्ते णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते ॥ दारं १६ ॥

१८. पज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसतपुहुत्तं सातिरेणं । अपज्जत्तए णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोसुहत्तं । नोपज्जत्तए नोअपरित्त संबंधे पुच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ पर्यन्त होय. (द्वार १६)

१८. पर्याप्ता संबंधे पुच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट कंडक न्यून शतपृथक्त्व (बसोथी नवसो) सागरोपस सुधी जाणवुं. त्सार पछी ते अवश्य मोक्षने प्राप्त थाय छे. कायअपरित्त अनन्तकायिक जाणवो. अने जेणे सम्यक्त्वादि वडे परिमित संसार कर्मां नथी ते संसारअपरित्त समजवो. कायअपरित्त जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय छे अने ते ज्यारे कोई जीव प्रत्येक शरीरीथी नीकळी निगोदां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्तं रहीने फरीथी प्रत्येकशरीरीमां उत्पन्न थाय त्त्यारे जाणवो. उत्कर्षथी वनस्पतिकाल जाणवो अने ते पूर्वे वतावेलो छे. त्त्यार पछी अवश्य त्त्यांथी नीकळे छे. संसारअपरित्तं वे प्रकारे छे—अणादि अनन्त अने अणादि नोपरित्त-नोअपरित्त सिद्ध छे अने ते आदि अनन्त काळ सुधी होय छे.

१८. पर्याप्तद्वारमां पर्याप्तो जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय छे. त्त्यार पछी अपर्याप्तपणुं पांमे छे. उत्कर्षथी कांडक अधिक वसोथी

अपञ्चवसिए ॥ द्वार १७ ॥

१९. सुहुने णं भंते ! सुहुमेत्ति पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं पुढविकालो । पादरे णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं-जाव खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिमागं । नोसुहुमनो-पादरे णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपञ्चवसिते । द्वारं १८ ।

२०. सण्णी णं भंते ! पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्कोसेणं सागरोवमसत्तपुहुत्तं सातिरेगं । असण्णी सादि अनन्त काळ होय. (द्वार १७)

१९. हे भगवन् ! सुह्म 'सुह्म' ए रूपे क्वां सुधी होय ? हे गौतम ! जवन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट पृथिवीकाळ पर्यन्त होय. पादर संबंधे पुच्छा हे गौतम ! जवन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट असंख्याता काळ पर्यन्त यावत् क्षेत्रधी अगुलना असख्यातमा भाग प्रमाण होय. नोसुह्म-नोवादर संबंधे पुच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काळ सुधी होय. (द्वार १८)

२०. हे भगवन् ! संज्ञी 'संज्ञी' ए रूपे केटला काळ सुधी होय ? हे गौतम ! जवन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कर्षधी कंडक अधिक श्रुत-नवसो सागरोपम सुधी होय हे पटला काळ सुधी लब्धिपर्याप्तनी स्थितिनो समव हे अपर्याप्त जवन्यधी अने उत्कर्षधी अन्तर्मुहूर्तं सुधी होय हे त्वार पळी पर्याप्त लब्धिनी प्राप्ति घाय हे नोपर्याप्त-नोअपर्याप्त स्थिर हे अने ते सादि अनन्त हे, कारण के सिद्धत्वनो नाश यतो नथी

१९. सुह्मद्वार धिये सुह्मसूत्रमां उत्कर्षधी पृथिवीकाळ-पटले जेटलो पृथिवीकायिकनी कामस्थितिनो काळ हे तेटलो जाणवो पादरसूत्र सुगम हे, अने ए यत्न सूत्रनो विचार पूर्वे करेलो हे नोसुह्म-नोवादर सिद्ध हे तेधी ते सादि अनन्त हे

णं पुच्छा । गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उद्धोसेणं वणस्सइकालो । नोसण्णीनोअसण्णीणं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते । दारं २० ।

२१. भवसिद्धिए णं पुच्छा । गोयमा ! अणादीए सपज्जवसिते । अभवसिद्धिए णं पुच्छा । गोयमा ! अणादीए अपज्जवसिते । नोअभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए णं पुच्छा । गोयमा ! सादीए अपज्जवसिते । दारं २१ ।

पृथक्त्व (वसोथी नवसो) सागरोपम सुधी होय. असंज्ञी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्तं अने उत्कृष्ट वनस्पति काल सुधी होय. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काल सुधी होय. (द्वार १९)

२१. भवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अनादि सान्त होय. अभवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अनादि अनन्त काल पर्यन्त होय. नोभवसिद्धिक-नोअभवसिद्धिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! सादि अनन्त काल सुधी होय. (द्वार २०)

२०. संज्ञीद्वारने विद्ये संज्ञीसूत्रमां जघन्यथी अन्तर्मुहूर्तं छे. अने ते ज्यारे कोइ जीव असंज्ञीथी नीकळी संज्ञीमां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्तं आयुग भोगवी फरीथी असंज्ञीमां उत्पन्न थाय त्यारे होय छे. उत्कृष्ट काल सुगम छे. असंज्ञी जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त होय छे. ते आ प्रमाणे—ज्यारे कोइ जीव संज्ञीथी नीकळी असंज्ञीमां उत्पन्न थाय अने त्यां अन्तर्मुहूर्तं रहीं फरीथी संज्ञीमां आवे त्यारे होय छे. उत्कर्षथी वनस्पतिकाल समजचो, कारण के अमंज्ञीना प्रहणथी वनस्पतिकार्यं पण प्रहण थाय छे. नोसंज्ञी-नोअसंज्ञी सिद्ध छे अने ते सादि अनन्त छे.

२१. भवसिद्धिकद्वारने विद्ये भवमां जेओने सिद्धि छे ते भवसिद्धिक-भव्य. ते अनादि सान्त छे. अन्यथा भव्यपणानो अभाव थाय. तेथी अन्य अभवसिद्धिक-अभव्य जाणचो. ते अनादि भवन्त छे. अन्यथा अभव्यपणानो अभाव थाय. नोभव्य-नोअभव्य सिद्ध छे

૨૨ ધર્મસ્થિતિયાપુ ણં પુચ્છા ! ગોયમા ! સચ્ચદ્ધં, ઇવં જાવ અદ્ધાસમાપ ! ઘાર ૨૨ ।

૨૩. ચરિમે ણ પુચ્છા ! ગોયમા ! અણાવીળ સપજ્જવસિતે । અચરિમે ણ પુચ્છા । ગોયમા ! અચરિમે હુવિચે પદ્ધત્તે, તંજઠ્ઠા— અણાવીળ ઘા અપજ્જવસિતે, સાવીતે ઘા અપજ્જવસિતે । ઘાર ૨૩ ।

પણાવણાદ મગવર્ણદ અદ્ધારસમ કાયદ્ધિરનામપય સમત્તે ।

૨૨. ધર્માસ્તિકાય સવંથે પુચ્છા. હે ગૌતમ ! સર્વ કાલ હોય. ઇ પ્રમાણે અદ્ધાસમય સુધી જાણવું. (ઘાર ૨૨)

૨૩. ચરમ સવંથે પુચ્છા. હે ગૌતમ ! અનાદિ સાન્ત હોય. અચરમ સવંથે પુચ્છા. હે ગૌતમ ! અચરમ વે પ્રકારે છે. તે આ પ્રમાણે- અનાદિ અવન્ત અને સાદિ અન્ત હોય. (ઘાર ૨૨)

પ્રજ્ઞાપના મગવર્ણીમા અદ્ધારસુ કાયસ્થિતિ પદ સમાપ્ત

અને તે સ્વદિ પ્રવન્ત છે

૨૨. ઘાંચે અસ્તિકાયો સર્વ કાલને ઘિયે હોય છે, અદ્ધાસમય પળ પ્રવાહની અપેક્ષાપ સર્વકાલમાયી છે માટે કહ્યું છે કે 'પળ જાવ અદ્ધાસમપ્'—'પ પ્રમાણે અદ્ધાસમય સુધી જાણવું'

૨૩. જેને ચરમ મથ ઘણે તે અનેવધી ચરમ-મથ કહેવાય છે, તેનાથી વિપરીત અચરમ-અમથ્ય કહેવાય છે કારણ કે તેને ચરમ-છેહો મથ નથી અને તે સિયાપ ઘીજા સિદ્ધ છે, કારણ કે તેને પળ ચરમપણુ નથી તેમાં ચરમ અનાદિ સાન્ત છે, અન્યથા ચરમપણુ નાંપિ ઘટે અચરમ વે પ્રકારે છે—અનાદિ અન્ત અને સાદિ અન્ત તેમાં ઘનાદિ અન્ત અમથ્ય છે અને સાદિ અન્ત સિદ્ધ છે

પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુવાદમાં અદ્ધારસુ કાયસ્થિતિ પદ સમાપ્ત.

१. जीवा णं भंते ! किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! जीवा सम्मदिट्ठीचि, मिच्छादिट्ठीचि, सम्मामिच्छादिट्ठीचि । एवं नेरइयाचि । असुरकुमाराचि एवं चैव जाव थणियकुमारा । पुढवीकाइया णं पुच्छा । गोयमा ! पुढवीकाइया णो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी, एवं जाव वणस्सइकाइया । वेइंदियाणं पुच्छा । गोयमा ! वेइंदिया सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी । एवं जाव चउरिंदिया ।

ओगणीशसुं सम्यक्त्वपद.

१. हे भगवन् ! जीवो शुं सम्यग्दृष्टिं छे, मिथ्यादृष्टिं छे के सम्यग्मिथ्यादृष्टिं छे ? हे गौतम ! जीवो सम्यग्दृष्टिं पण छे, मिथ्यादृष्टिं पण छे अने सम्यग्मिथ्यादृष्टिं पण छे. ए प्रमाणे नैरयिको पण जाणवा. असुरकुमारो यावत् स्तनितकुमारो एम ज जाणवा. पृथिवीकायिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! पृथिवीकायिको सम्यग्दृष्टिं छे, मिथ्यादृष्टिं नथी. ए प्रमाणे वन-

१. ए प्रमाणे अद्वारमा पदनी ब्याख्या करी, हवे ओगणीशमा पदो प्रांभ कराय छे. तेनो आ संबन्ध छे-अहीं पूर्वना पदमां कायस्थिति कही, अहीं कयी कायस्थितिमां सम्यग्दृष्टिं आदि भेद वडे केटला प्रकारना जीवो होय ? ते विचाराय छे. तेमां आ सूत्र छे—'जीवा णं भंते ! किं सम्मदिट्ठी-हे भगवन् ! जीवो सम्यग्दृष्टिं छे' इत्यादि पदनी समाप्ति सुधी सुगम छे, परन्तु सास्वादन सम्यक्त्वसहित पण सूत्रना अभिप्रायथी पृथिव्यादिमां उत्पन्न थतो नथी, कारण के 'उभयाभावो पुढवाइपसु' पृथिव्यादिमां-उभयनो सम्यक्त्व अने सम्यक्त्वसहित जीवनी उत्पत्तिनो अभाव छे-पहुं शास्त्र चचन छे. वेइन्द्रियादिमां सास्वादन सम्यक्त्व सहित उत्पन्न थाय

पंचदियतिरिक्त्वजोगिया मणुस्सा षाणमंतरजोइसियवेमाणिया य सम्मविट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि य सम्मा-
मिच्छादिट्ठीवि । सिद्धा णं पुच्छा । गोयमा ! सिद्धा सम्मविट्ठी, णो मिच्छादिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी ।

पञ्चवणाए भगवईए एगूणविसइमं सम्मचपदं समच ॥ १९ ॥

स्वविकल्पिको सुधी समजनु. वेइन्द्रियो संबधे पृच्छा. हे गौतम ! वेइन्द्रियो सम्यग्दष्टि अने मिध्यादष्टि होय छे पण सम्यग्मिध्या-
दष्टि नथी होवा. ए प्रमाणे चवरिन्द्रियो सुधी जाणवुं. पचेन्द्रिय तिर्यचो, मनुस्यो, व्यंतर, ज्योतिषिको अने वैमानिको सम्यग्दष्टि,
मिध्यादष्टि अने सम्यग्मिध्यादष्टि पण होय छे. सिद्धो सबधे पृच्छा. हे गौतम ! सिद्धो सम्यग्दष्टि छे, मिध्यादष्टि नथी अने
सम्यग्मिध्यादष्टि पण नथी.

प्रज्ञापना भगवतीमा ओगणीशसु सम्यक्त्व पद समाप्त

छे, माटे पृथिव्यादिमां सम्यग्दष्टिनो निवेच कयों छे अने वेइन्द्रियादि सम्यग्दष्टि कहेला छे सम्यग्मिध्यादष्टिनो परिणाम तेया प्रकारना
स्यमापयी संबधी पचेन्द्रियोने होय छे, बाकीनाने होतो नथी माटे पकेन्द्रिय अने वेइन्द्रियादि यन्नेने सम्यग्मिध्यादष्टिनो निवेच कयों छे

प्रज्ञापना टीकाना अनुवादमां ओगणीशसु सम्यक्त्व पद समाप्त

વીસડમ્ અંતકિરિયાપદં ।

નેરઇય અંતકિરિયા અણન્તરં ઇગસમય ઉચ્ચદા । તિત્થગરચક્કિલવાસુદેવમંડલિયરયણા ય ॥ વારગાહા ।

વીશમું અન્તક્રિયા પદ.

૧ નૈરયિક-નૈરયિકાદિ સંબંધે અન્તક્રિયા, ૨ અનન્તર-અનન્તર અને પરંપરા આવેલાની અન્તક્રિયા, ૩ એક સમયની અન્તક્રિયા, ૪ ઉદ્ધૃત-વ્યવીને ક્યાં જાય ? અને ૬ ક્યાંથી નીકળી તીર્થક્કર, ચક્રવર્તી, લલદેવ, વાસુદેવ માંડલિક અને રત્ન-સેનાપતિ વગેરે થાય ? એ સંબંધે આ દ્વારા ગાથા કહેવામાં આવી છે.

ઓગણીશમા પદની વ્યાખ્યા કરી, હવે વીશમા પદનો આરંભ કરાય છે. પનો આ સંબંધ છે—પૂર્વના પદમાં સમ્યક્ત્વનો પરિણામ કહ્યો, અહીં પરિણામના સમાનપણાથી ગતિનો પરિણામ વિશેષ અન્તક્રિયા કહેવાય છે. તેમાં પ્રારંભમાં અધિકારપ્રતિપાદક આ દ્વારાગાથા કહે છે—'નેરઇય અંતકિરિયા'—इत्यादि. પ્રથમ અધિકારમાં નૈરયિક વહે ઉપલક્ષિત-સૂચિત ચોવીશ દંડકોમાં અન્તક્રિયાનો વિચાર કરવાનો છે, ત્યાર પછી અન્તર-પોતપોતાના નૈરયિકાદિ ભવથી પછીના મહુષ્યભવમાં આવેલા અન્તક્રિયા કરે કે પરંપરા આવેલા અન્તક્રિયા કરે ? એ પ્રમાણે અન્તરનો વિચાર કરવાનો છે. ત્યાર પછી નૈરયિકાદિ ભવોથી તુરત આવેલા એક સમયમાં કેટલા અન્તક્રિયા કરે ? એ વિચાર કરવાનો છે, ૪ ઉદ્ધૃત-નૈરયિકાદિ ભવોથી નીકળેલા કદ્દ યોનિમાં ઉત્પન્ન થાય-એ કહેવાયું છે. તથા જ્યાંથી નીકળી તીર્થકરો, ચક્રવર્તી, લલદેવ, વાસુદેવ, માંડલિક રાજાઓ અને ચક્રવર્તીના સેનાપતિ વગેરે રત્નો થાય તે અનુક્રમે કહેવાનાં છે. એ પ્રમાણે દ્વારાગાથાનો સંક્ષેપાર્થ કહ્યો. અને સચિસ્તર અર્થે સુતકાર જ કહેશે.

१. जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेब्बा ! गोयमा ! अत्येगइए करेब्बा, अत्येगतिए णो करेब्बा । एव नेरइए जाव वेमाणिए । नेरइए णं भंते ! नेरइएसु अंतकिरियं करेब्बा ? गोयमा ! नो इण्ठे समंठे । नेरइया णं भंते ! असुरकुमारसु अंतकिरियं करेब्बा ? गोयमा ! नो इण्ठे समंठे । एवं जाव वेमाणिएसु । नवर मणुसेसु अंतकिरियं करेब्बन्ति पुब्बा । गोयमा ! अत्येगतिए करेब्बा, अत्येगतिए णो करेब्बा । एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिए । एवमेव चउयीस २ दण्डगा भवन्ति ।

१, हे भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोइ करे अने कोइ न करे. ए प्रमाणे नैरयिकयी आरंभी वैमानिक सुधी जाणयु. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोमां अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ-यथार्थ नधी. हे भगवन् ! नैरयिको असुर-कुमारोमां आवी अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नधी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमा जाणयुं. परतु मनुष्योमां आवी अन्तक्रिया करे ? ए प्रश्न करवो. हे गौतम ! कोइ अन्तक्रिया करे अने कोइ न करे. ए प्रमाणे असुरकुमारोने यावत् वैमानिकोमां कहेयुं. एम चोवीथ चोवीथ वार दंडको थाय छे.

१-२. तेमा प्रथम अन्तक्रियाने कहेवालौ एच्छयाब्बा सूत्रकार कहे छे- 'जीवे ण भंते !' इत्यादि अन्त-भवसान, नाश, अही प्रसंगयी कर्मनो नाश जाणवो, तेनु क्रिया-कृत्य कर्मनो नाश करयो ते अन्तक्रिया अन्य भागममा अन्तक्रियाशब्द मोक्ष अर्थमां कूट-प्रसिद्ध छे कारण छे "कृत्स्नकर्मसयाद् मोक्ष" (तत्त्वार्थ श० सू०) एषु शास्त्रवचन छे हे भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करे ? भगवान् उत्तर आपे छे- हे गौतम ! 'अस्त्येकको यं कुर्यात्-कोइ जीव छे जे करे, 'अस्त्येकको यो न कुर्यात्-कोइ जीव छे जे करतो नयी, भयात्

२. नेरइया णं भंते ! किं अणंतरागया अंतकिरियं करंति ? गोयमा ! अणंत-
रागयावि अंतकिरियं करंति, परंपरागया वि अंतकिरियं करंति । एवं रयणप्पभापुढविनेरइयावि जाव पंकप्प-
भापुढवीनेरइया । धूमप्पभापुढवीनेरइया णं पुच्छा । गोयमा ! णो अणंतरागया अंतकिरियं पकरंति, परंपरागया
अंतकिरियं पकरंति, एवं जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइया । असुरकुमारा जाव थणियकुमारा पुढवीआउवणस्सइका-

२. हे भगवन् ! नैरयिको अनन्तर—तरत पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया करे के परंपराए आवेला अन्तक्रिया करे ?
हे गौतम ! अनन्तर—पछीना भवमां आवेला पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे रत्नप्रभा-
पृथिवीना नैरयिको यावत् पंकप्रभाना नैरयिको अन्तक्रिया करे. धूमप्रभा पृथिवीना नैरयिको संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! अन-
न्तर-तरत पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया न करे, पण परंपराए आवेला अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे नीचेनी सातमी पृथिवीना
कोइ करे छे अने कोइ करतो नथी. तात्पर्य ए छे के जे तथाविध भव्यत्वना परिपाक थवाथी मनुष्य भव वगैरे पूर्ण सामग्री पामने
अने ते सामग्रीना सामर्थ्यथी उत्पन्न थयेल अतिप्रबल वीर्योल्लास वडे क्षपकश्रेणि उपर आरूढ थइ केवल ज्ञान पामी अघाती कर्मों
नो पण क्षय करे छे ते अन्तक्रिया करे, बीजा तेथी विपरीत होवाथी न करे. ए प्रमाणे नैरयिकादि चोवीश दंडकना क्रमथी वैमानिक
सुधी विचारहुं. सूत्रयाठ आ प्रमाणे छे-नेरइए णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ? गोयमा ! अत्येगइए करेज्जा, अत्येगइए नो करेज्जा'
इत्यादि. हे भगवन् ! नैरयिक अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! कोइ करे अने कोइ न करे वगैरे. हवे नैरयिकेमां चर्ततो अन्तक्रिया करे
के न करे ? ए संबंधे प्रश्न करवानी इच्छावाळा सूत्रकार आ सूत्र कहे छे—'नेरइए णं भंते-इत्यादि. भगवान् आ उत्तर कहे छे-हे
गौतम ! ए अर्थ समर्थ—युक्तियुक्त नथी. कारण के अहीं सर्व कर्मनो क्षय प्रकर्मने प्राप्त थयेला सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्र्यना

इया च अणन्तरागयाचि अंतकिरियं पकरंति, परंपरागयाचि अंतकिरियं पकरंति । तेउवाउबेइवियतेइवियचउरिं-
विया णो अणतरागया अंतकिरिय पकरंति, परंपरागया अंतकिरिय पकरंति । सेसा अणंतरागयाचि अंतकि-
रियंपकरंति, परंपरागयाचि अंतकिरियं पकरंति ।

नैरयिको सुधी जाणवु. असुरकुमारो यावत् लुनित कुमारो, अष्कायिको अने वनस्पतिकायिको तुरत पछीना मवमा
आवेला पण अन्तक्रिया करे अने परपराधी आवेला पण अन्तक्रिया करे. तेजस्काय, वायुकाय, वैइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो
पछीना मवमा आवेला अन्तक्रिया न करे, पण परपराए आवेला अन्तक्रिया करे. बाकीना जीवो पछीना मवमा आवेला पण अन्तक्रिया
करे अने परपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे.

समुद्रापथी थाय छे. परन्तु नैरयिकायस्थामा तथा प्रकाला मयस्वमाषधी चारित्रनो परिणाम होतो नथी प प्रमाणे असुरकुमारथी
मांडी धैर्यानिष्ठ सुधीमां प्रतिषेध कख्यो परन्तु मनुष्योमा आवेलो फोर अन्तक्रिया करे के जेने चारित्राविनी सामग्री परिपूर्ण प्राप्त
थाइ होय अने जे तेनाथी रहित होय ते न करे. प प्रमाणे असुरकुमारथी मांडी वैमानिक सुधीना प्रत्येक नैरयिकाचि खोवीश दड
कना अनुक्रमथी कहेवा प प्रमाणे प खोवीश थाइ खोवीश दडको थाय छे इवे प नैरयिकाचि पोतपोताना मय पछीना मनुष्यमवमा
आधी अन्तक्रिया करे के तिर्येषाविना मवोना अन्तर यडे परंपराए आवेला पण अन्तक्रिया करे—प निरूपण करवानी इच्छायावा
सूत्रकार कहे छे—निरपया ण मते ! इत्यादि प्रससूत्र सुगम छे भगवान् उत्तर आपे छे—'हे गौतम ! तुरत पछीना मवमा आवीने
पण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवीने पण अन्तक्रिया करे तेमा रत्नप्रसा, शर्कणप्रसा, धातुकप्रसा अने एकप्रसाथी तुरत आवीने
पण करे अने परंपराए आवीने पण करे. अने धूमप्रसापृथिवीथी तथा प्रकाला मयस्वमाषथी परंपराए आवेला अ अन्तक्रिया करे पज

३. अणंतरागया नेरइया एगसमये केवइया अंतकिरियं पकरंति ? गोयसा ! जहन्नेणं एगो वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं दस । रयणप्पभापुढवीनेरइयावि एवं चैव, जाव वालुयप्पभापुढवीनेरइया । अणंतरागया णं भंते ! पंकपभापुढवीनेरइया एगसमयेणं केवतिया अंतकिरियं पकरंति ? गोयसा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा,

३. नरयिको तुस्त पछीना भवमां आवेला एक समयमां केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जषम्य एक वे अने त्रण अने उत्कर्षथी दस अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको यावत् चालुकाप्रमाना नैरयिको एण जाणवा. हे भगवत् ! पंकप्रभापृथिवीना नैरयिको तुस्त पछीना भवमां आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे

विशेषने प्रतिपाद्यत करयानी इच्छायाला स्रप्रकार सात सूत्रो कहे छे—'ए प्रमाणे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिको एण जाणवा' इत्यादि सूत्र सुगम छे. असुरकुमारथी मांडी स्नानितकुमार सुधीना भगनागति देवो, पृथिवी, पाणी अने वनस्पति तुस्त-पछीना भवमां आवीने एण अन्तक्रिया करे अने परंपराए आवीने एण अन्तक्रिया करे. वने प्रकारे आवेला तेओने अन्तक्रिया करवामां काइएण विरोध नथी. कारण के केवथीजानीए तेया प्रकारे जाणुं छे. तेजस्काय, वायु, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय परंपराए आवीला ज अन्तक्रिया करे छे, एण पछीना भवमां आवेला अन्तक्रिया करना नथी. तेमां तेजस्काय अने वायुकायने पछीना भवमां मनुष्यपणुंज प्राप्त थतुं नथी. अने वेइन्द्रियादिकुने प्राप्त थरा छनां तेवा प्रकारना भवस्वभावथी अन्तक्रिया थनी नथी चानीना तिर्यच पचेन्द्रियथी मांडी धैमानिक सुधीना जीवो तुस्त आवेला अने परंपराए आवेला एण अन्तक्रिया करे छे.

३. 'नैरयिकादि भयोथी अनन्तर-व्ययधान विचाय पछीना भवमां आवेला केटला अन्तक्रिया करे, ए प्रकारे श्रींउं द्वार कहे छे- 'अनन्तरागया णं भंते' इत्यादि. नैरयिक भवथी अनन्तर-रञ्चे फोइ एण भयना अनन्तर विचाय मनुष्यभवमां आवेला एक समये केटला

उक्कोसेणं चत्तारि । अणन्तरागया णं भंते ! असुरकुमारा ण्गसमये केवत्तिया अंतकिरियं पकरंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं दस । अणंतरागया ण भंते असुरकुमारीओ ण्गसमये केवइया अत्तकिरिय पकरंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं पंच । एवं जहा असुरकुमारा सवेवीया तथा जाव थणियकुमारा । अणंतरागया ण भंते ! पुढविकाइया ण्गसमये केवइया अंतकिरियं पकरंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं चत्तारि । एव आउक्काइयाचि चत्तारि, वणस्सइक्काइया छव, पंचिवियत्तिरिक्खजोणिगया दस, तिरिक्खजोणिणीओ दस, मणुस्सा दस, मणुस्सीओ वीस, वाणमंतरा दस, गौतम ! जघन्यवी एक, वे अने त्रण अने उत्कर्षथी चार अन्तक्रिया करे. हे भगवन् ! असुरकुमारो तुस्त पछीना भवमां आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्यथी एक, वे अने त्रण अने उत्कर्षथी दस अन्तक्रिया करे. हे भगवन् ! असुरकुमारीओ तुस्त पछीना भवमां आवी एक समये केटली अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्य एक, वे अने त्रण अने उत्कर्षथी पाच अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे जेम देवीसहित असुरकुमारो कहा तेम यावत् स्तानितकुमारो जाणवा. हे भगवन् ! पृथिवीकायिको पछीना भवमां आवी एक समये केटला अन्तक्रिया करे ? हे गौतम ! जघन्य एक, वे अने त्रण अने उत्कर्षथी चार अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे अप्फायिको पण चार, वनस्सत्तिकायिको छ, पचेन्द्रिय तिर्यचयोनिओ दस, तिर्यचलीओ दस, मनुष्यो दस, मनुष्यलीओ वीस,

मोक्षे जाय ? अही 'शैरयिको' ए पूर्व भयना पर्यायनो व्यथहार ते देवादि पूर्वमयना पर्यायनी प्रतिपत्ति-बोधना निषेधने माटे छे ए प्रमाणे पछीना सूत्रमा पण ते ते पूर्वमयना पर्यायना व्यवहारत्ता प्रयोजन समज्जु यानी यधु स्पष्ट छे

वाणमंतरीओ पंच, जोइसिया दस, जोइसिणीओ वीसं, वेमाणिआ अट्टसयं वेमाणिणीओ वीसं ।

४. नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उच्चट्ठिता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उच्चट्ठिता असुरकुमाररेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । एवं निरंतरं जाव चउरिंदिएसु पुच्छा । गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइए णं भंते ! नेरइएहिंतो अणंतरं उच्चट्ठिता

व्यन्तरो दस, व्यंतरीओ पांच, ज्योतिषिको दस, ज्योतिषिक ह्यीओ वीश, वैमानिको एकसो आठ अने वैमानिक ह्यीओ वीश अन्तक्रिया करे.

४. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे निरंतर यावत् चउरिन्दियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना

४-६. 'नेरइए णं भंते' ! इत्यादि सूत्र सुगम छे. परन्तु 'केवलिपन्नत्तं घम्मं लभेज्जा सवणयाए' केवलशानीए उपदेशेला श्रुतधर्म अने चारित्ररूप धर्मने श्रवणरूप प्राप्त करे पटले तेचुं श्रवण करे ? अहीं 'श्रवणता' श्रवणशब्दनो भाव-प्रवृत्तिनिमित्त श्रवण ज समज्जुं. "भावे त्वतलो" ए सूत्रमां ते शब्दस्वरूपनो भाव-प्रवृत्तिनिमित्त ण्ठुं एण व्याख्यान करेलुं छे. भगवान् उत्तर आपे छे—'अत्थगतिप' इत्यादि. कोइ श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. पुनः प्रश्न करे छे-हे भगवन् ! जे केवलशानीए उपदेशेला धर्मचुं श्रवण करे 'से णं केवलं योहिं बुज्जेज्जा' इति. ते केवली ए कहेला योधिने जाणे ? अहीं नोधि पटले धर्मनी प्राप्ति, तेना कारणभूत जे शब्दरचना, ते एण कारणमां कार्यनो उपचार करवाथी नोधि कहेवाय छे. तेने केवलशानीए साक्षात् अथवा परंपराए उपदेश करेलो होवाथी केवलशानी संबन्धी कहेवाय

पंचिदियतिरिखलजोगिणसु उववज्जेज्जा, अत्येगतिण उववज्जेज्जा, अत्येगइए णो उववज्जेज्जा । जे णं भंते ! नेरइण्हितो अणंतर पंचिदियतिरिखलजोगिणसु उववज्जेज्जा से णं भंते ! केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्येगतिण लभेज्जा, अत्येगतिण णो लभेज्जा । जे णं भंते ! केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं योहिं बुज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्येगतिण बुज्जेज्जा, अत्येगतिण णो बुज्जेज्जा । जे णं भंते ! केवलं योहिं बुज्जेज्जा, से णं सइहेज्जा पत्तिणज्जा रोणज्जा ? गोयमा ! सइहेज्जा, पत्तिणज्जा, रोणज्जा । जे णं भंते !

भवमा पचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय, हे भगवन् ! जे नैरयिकोयी नीकळी पछीना भवमां पचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेश करेला धर्मने श्रवणरूपे प्राप्त करे-सार्भले ? हे गौतम ! कोइ प्राप्त करे अने कोइ न प्राप्त करे-एटले कोइ सार्भले अने कोइ न सार्भले, हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने श्रवण रूपे प्राप्त करे ते केवलीए कहेला बोधि-धर्मने जाणे ? हे गौतम ! कोइ जाणे अने कोइ न जाणे, हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे ते तेनी श्रद्धा करे, प्रतीति करे, अने रुचि करे ? हे गौतम ! ते श्रद्धा करे प्रतीति करे अने रुचि

के अर्थात् केवलज्ञानीए उपदेशेला बोधि-धर्मने श्रवण करनार केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने समझे पटले तेनो अर्थ जाणे ! भगवान् उत्तर आपे छे-‘अत्येगतिण’ इत्यादि कोइ जाणे अने कोइ न जाणे पुनः प्रश्न करे छे-‘हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए कहेला धर्मने अर्थयी जाणे ते अर्थयी ‘श्रद्धाधीत’ तेनी श्रद्धा करे, ‘प्राययेत्’ तेनी प्रतीति करे, ‘रोचयेत्’ रुचि करे-‘हु ते करया इच्छु तु’ एवो विचार करे ? भगवान् उत्तर आपे छे-‘अत्येगइए’ इत्यादि कोइ रुचि करे अने कोइ न करे पुनः प्रश्न करे छे के हे भगवन् ! जे

સદ્દેજ્ઞા પત્તિજ્ઞા રોજ્ઞા સે ણં આભિનિયોહિયનાણસુચનાણાં ઉપ્પાડેજ્ઞા ? હંતા ગોયમા ! ઉપ્પાડેજ્ઞા !
 જે ણં મંતે ! આભિનિયોહિયનાણસુચનાણાં ઉપ્પાડેજ્ઞા સે ણં સંચાણ્જ્ઞા સીલં વા વયં વા ગુણં વા વેરમણં વા
 પચ્ચક્કલાણં વા પોસહોવવાસં વા પડિવજ્જિત્તણં ? ગોયમા ! અત્થેગતિણં સંચાણ્જ્ઞા, અત્થેગતિણં સંચાણ્જ્ઞા !
 જે ણં મંતે ! સંચાણ્જ્ઞા સીલં વા જાવ પોસહોવવાસં વા પડિવજ્જિત્તણં સે ણં ઓહિનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા ? ગોયમા !
 અત્થેગતિણં ઉપ્પાડેજ્ઞા, અત્થેગતિણં ણો ઉપ્પાડેજ્ઞા । જે ણં મંતે ! ઓહિનાણં ઉપ્પાડેજ્ઞા સે ણં સંચાણ્જ્ઞા સુણ્ઠે

કરે. હે ભગવન્ ! જે શ્રદ્ધા કરે, પ્રતીતિ કરે, અને સ્મરણ કરે તે આભિનિયોધિક અને શ્રુતજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે ? હા ગૌતમ ! ઉત્પન્ન
 કરે. હે ભગવન્ ! જે આભિનિયોધિક જ્ઞાન અને શ્રુતજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે તે શીલ, વ્રત, ગુણ, વિરમણ, પ્રત્યાલ્યાન અને પોષધોપવાસ
 અંગીકાર કરવાને સમર્થ થાય ? હે ગૌતમ ! કોઈ સમર્થ થાય અને કોઈ સમર્થ ન થાય. હે ભગવન્ ! જે શીલ યાવત્ પોષધોપવાસ
 અંગીકાર કરવાને સમર્થ થાય તે અવધિજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે ? હે ગૌતમ ! કોઈ ઉત્પન્ન કરે અને કોઈ ન ઉત્પન્ન કરે. હે ભગવન્ ! જે
 અવધિજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે તે મુંડ થઈ અગારથી-ગૃહસ્થાવાસથી અનગારપણું-સાધુપણું અંગીકાર કરવાને સમર્થ થાય ? હે ગૌતમ ! એ

શ્રદ્ધા કરે, પ્રતીતિ કરે અને સ્મરણ કરે તે આભિનિયોધિક અને શ્રુતજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે ? ભગવાન્ કહે છે—હે ગૌતમ ! ઉત્પન્ન કરે.
 અહીં હન્ત અનુમતિના અર્થમાં છે. કેવલજ્ઞાનીય કહેલા ધર્મના શ્રવણ અને શ્રદ્ધા કરવાથી આભિનિયોધિક અને શ્રુતજ્ઞાન અવશ્ય થાય
 છે. ફરીથી પ્રશ્ન કરે છે—હે ભગવન્ ! જે આભિનિયોધિક અને શ્રુતજ્ઞાન ઉત્પન્ન કરે છે તે 'મંચાણ્જ્ઞા' શીલ-વ્રતસચ્ચ, વ્રત-દ્રવ્ય્યાદિ
 સંબન્ધી વિચિત્ર નિયમો, ગુણ-ભાવનાદિરૂપ ઉચ્ચર ગુણ, વિરમણ-અતીત કાલના સ્થૂલ પ્રાણતિપાત વગેરે દોષોની ચિરતિ-નિવૃત્તિ,

भविता आगाराओ अणगारियं पन्वइत्ता ? गोयमा ! नो इण्टे समंटे ।

५ नेरइण ण भते ! नेरइण्हितो अणंतर उव्वइत्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिण उववज्जेज्जा, अत्थेगतिण णो उयवज्जेज्जा । जे ण भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवल्लिपत्त धम्म लमेज्जा सवणयाण ? गोयमा ! जहा पंचिवियतिरिक्खजोणिएसु जाध-जे ण भते ! ओहिनाणं उप्पादेज्जा से णं सचाणज्जा सुण्ढे भविता आगा-

अयं समयं नयी.

५. हे भगवन् ! नैरयिक नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां मनुष्योमा उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! जे उत्पन्न थाय ते केवल्लज्जानीए उपदेथेला घमने श्रवण रूपे प्राप्त करे ? हे गौतम ! जेम पचेन्द्रिय तियेचो सवधे क्कुं तेम कदेवु यावत् 'जे अवधिज्ञानने उत्पन्न करे' ते सुट-त्यागी थइने अगावासथी अनगारीपणुं-साधुपणु स्वीकारवाने समर्थ थाय ?

प्रत्याख्यान-अनागत-भविष्यकालना स्थूल प्राणतिपातादि दोषेनो त्याग, पोप-धर्मनी पुष्टि करे ते पोपध-वाढम घरोरे पर्यं, तेमा उपवास करयो ते पोपघोपवास, तेने भगीकाट करथा समर्थ थाय ? भगवाच्च उत्तर आपे छे--'अथेगाए' इत्यादि कोइ समर्थ थाय अने कोइ न थाय अही निर्बचो अने मनुष्योने भवनिमित्तक अवधिज्ञान थतु नथी, पण गुणथी थाय छे अने शीलमतादि गुणो तो आ पचेन्द्रिय तिर्यचोने पण होय छे तो ते गुणोथी आने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय के न थाय ए प्रश्न करे छे, 'जेण भते ! इत्यादि जेने शील अने प्रतादि सबधे चिसुद्ध परिणाम थयाथी अवधिज्ञानावरण कर्मनो शयोपशम थाय ते अवधिज्ञान उत्पन्न करे अने तेथी अन्य न उत्पन्न करे. अवधिज्ञान पछी मन-पर्यव शान जाणवु मन-पर्यवज्ञान भनगारने होय छे, कारण के 'त सअयस्स सव्यपमाएरुडियस्स विधिहरिद्धिमतो'—ते (मन-पर्यव शान) सर्व प्रमादरहित अने विविध इच्छियाळा सयतने होय छे-एवु शाखवचन

राओ अणगारियं पन्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा, अत्थेगतिए णो संचाएज्जा । जे णं भंते ! संचा-
एज्जा मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पन्वइत्तए से णं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा अत्थेगतिए उ-
प्पाडेज्जा, अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलनाणं उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! केवलनाणं उप्पाडेज्जा से णं सिज्जेज्जा
हे गौतम ! कोइ समर्थ थाय अने कोइ न थाय. हे भगवन् ! जे मुंड थइने अगावासथी अनगारीपणुं स्वीकारवाने समर्थ थाय ते
मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न करे अने कोइ न उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे ते
केवलज्ञान उत्पन्न करे ? हे गौतम ! कोइ उत्पन्न करे अने कोइ न उत्पन्न करे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञान उत्पन्न करे ते सिद्ध थाय,
बुद्ध थाय, मुक्त थाय अने सर्व दुःखनी अन्त करे ? हे गौतम ! सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनी अन्त करे. हे भगवन् ! नैरयिक
छे. तेथी अनगारपणा संबन्धे प्रश्न करे छे—जे णं भंते ! इत्यादि. जे अवधिज्ञान उत्पन्न करे ते मुंड थइ अगावासतो त्याग करी
अनगारीपणुं ग्रहण करे ? अहाँ मुंड त्रे प्रकारे छे—द्रव्यथी अने भावथी. तेमां केशादिने दूर करवा वडे द्रव्यथी मुंड अने
सर्वसंगना त्याग करवाथी भावथी मुंड होय छे. तेमां अहीं तिर्यचोने द्रव्यमुंडपणानो असंभव होवाथी भाव मुंडनुं ग्रहण करखुं. तेवा
प्रकारनो भावमुंड थइने पोताना आश्रयरूप अगार-घरथी नीकळी, जेने द्रव्यथी अने भावथी अगार-घर नथी ते अनगार, तेवा अन-
गारपणाने स्वीकारवा समर्थ थाय ? भगवान् उत्तर आपे छे—आ अर्थ समर्थ नथी, कारण के तिर्यचोने भवना स्वभावथी तेवा
प्रकारना सर्वधिरति परिणामनो संभव नथी. अने अनगारपणाना अभावमां मनःपर्यवज्ञाननो अभाव सिद्ध ज छे. जेम तिर्यच-पंचेन्द्रिय
अंशन्धे सूत्रनो समूह कह्यो तेम मनुष्य संबन्धे पण कह्यो. परन्तु मनुष्यमां सर्वभावनो संभव होवाथी मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान

बुज्जेज्जा सुब्बेज्जा सब्बदुक्खवाणं अंतं करेज्जा ? गोयमा ! सिज्जेज्जा जाव सब्बदुक्खवाणमंतं करेज्जा । नेरइण णं भंते ! नेरइण्हित्तो अणंतर उब्बहिच्चा वाणमंतरजोइसियवेमाणिणसु उवयज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणण्टे समट्ठे ।

३. असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उब्बहिच्चा नेरइणसु उवयज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणण्टे समट्ठे । असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उब्बहिच्चा उवयज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इणण्टे समट्ठे । एवं जाव धणियकुमारेसु । असुरकुमारे ण भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतर उब्बहिच्चा पुट्टविकाराइणसु

नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमा व्यन्तर, ज्योत्तिपिक अने वैमानिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ए अर्थ समर्थ नथी.

४. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पछीना भवमा असुरकुमारोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए

सबन्धी हे सज्जे अधिक फट्टे छे 'जेण भते ! सचापज्जा मुठे भविच्चा' इत्यादि सुगम छे परन्तु 'सिज्जेज्जा'-इत्यादि त्विद थाय पट्टे मर्यादकारना अणिमा सामर्थ्य घरेरेनी सिद्धियाळो थाय 'सुद्धपेत'-सुद्ध थाय-समस्त लोफालोकना स्वरूपने जाणे 'सुब्बेत' मयोपप्रादी कर्मथो पण सुक थाय, तत्पर्यं ए छे के दुःखोने अन्त करे ज्योत्तिपिक अने वैमानिकमां प्रतिषेध करखो, कारण के नैरयिकने भवत्यभावथी नारक अने देयभयने योग्य आयुवना बन्धनो असमय छे ए प्रमाणे नैरयिकोने नैरयिकादि जोषीच ईडकना क्रमथी विचार कर्यो

६ इवे असुरकुमारोने नैरयिकादि चोयांच दडकना क्रमथी विचार करे' छे--असुरकुमारे ण भते' ! इत्यादि सत्र पूर्वमी पेटे जाणयु परन्तु तेओ धुपिथी, पाणी अने यनस्पतिमां उत्पन्न थाय छे कारण के ईयाव देवलोक सुधीना देयोने तेओमा उत्पन्न थयामां

उववज्जेज्जा ? हन्ता गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा ! जे णं भंते ! उववज्जेज्जा से णं केवल्लिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! नो इण्णहे सम्महे । एवं आउवणस्सइसुवि । असुरकुमारे णं भंते ! असुरकुमारेहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता तेउवाउवेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इण्णहे सम्महे । अवसेसेसु पंचसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियाइसु असुरकुमारेसु जहा नेरइओ, एवं जाव थणियकुमार ।

७. पुढवीकाइए णं भंते ! पुढवीकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! नो इण्णहे प्रमाणे यावद् स्तानित्तकुमारोमां कहेवुं. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पळीना भवमां पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ? हा गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय. हे भगवन् ! जे उत्पन्न थाय ते केवल्लज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे अथाय अने वनस्पतिकायिक संबंधे जाणवुं. हे भगवन् ! असुरकुमार असुरकुमारोथी नीकळी पळीना भवमां तेजस्काय, वायुकाय, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. वाकीना पंचेन्द्रिय तिर्यचादि पांच दंडकमां जेम नैरयिक कळो तेम असुरकुमार कहेवो. ए प्रमाणे यावत् स्तानित्तकुमारो कहेवा.

७. हे भगवन् ! पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकोथी नीकळी पळीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ विरोध नथी. तेओमां उत्पन्न थयेला केवल्लज्ञानीए कहेला धर्मनुं श्रवण न करे, कारण के तेओने श्रवणेन्द्रिय नथी. वाकी वधुं नैरयिकनी पेठे जाणवुं. जे प्रकारे असुरकुमार संबंधे कळुं छे ते प्रकारे यावत् स्तानित्तकुमार सुधी कहेवुं.

समंढे । एवं असुरकुमारसुवि, जाय थणियकुमारसुवि । पुढवीकाइएहिंती अणंतर उव्व
दित्ता पुढवीकाइणसु उवयज्जेब्बा ? गोयमा ! अत्येगतिण उवयज्जेब्बा, अत्येगतिण णो उवयज्जेब्बा । जे णं
भंते ! उवयज्जेब्बा से ण केवल्लिपन्नत्तं धम्मं लभेब्बा सवणयाण ? गोयमा ! नो इण्ढे समंढे । एवं आउफ्फाइआ-
दिसु निरतर भाणियन्वं जाव चउरिंदिणसु । पच्चिदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु जह्वा नेरइण । वाणमंतरजोइ-
सियवेमाणिणसु पडिसेहो । एवं जह्वा पुढवीकाइओवि, जाव वणस्सइफ्फाइओवि
भाणियन्वो ।

समर्थ नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारोमां यावत् स्तनितकुमारोमां पण जाणवु. हे भगवन् ! पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकोथी नीकळी
पछीना भवमां पृथिवीकायिकोमां उत्पन्न थाय ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. जे उत्पन्न थाय ते
केवल्लज्जानीए उपदेइला धर्मसु भ्रण करे ? हे गौतम ! ए अर्थं ममर्थं नथी. ए प्रमाणे अफ्फायिकथी माडी चउरिन्द्रिय सुधीमा
निरन्तर कहेवु. पचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यमां जेम नैरयिक सबवे कसुं तेम कहेवु. व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमां
प्रतिपेय करवो. ए प्रमाणे जेम पृथिवीकायिक वसो तेम अफ्फायिक पण कहेवो. यावत् वनस्पतिकायिक पण कहेवो.

७-८ पृथिवीकायिकोने नैरयिको अने वेयोमा प्रतिपेय करवो पडले तेओ नैरयिको अने वेयोमा उत्पन्न यता नथी, एरण के
तेओने विधिष्ट-स्पष्ट चिन्तन रूप मनोव्रत्येनो अस्समय होवाथी तीव्र सम्प्लेष्ट अने विशुद्ध अच्यवसायनो अमाप छे बाकीना यथा
स्थानोमां उत्पन्न थाय छे कारण के तेने योग्य माध्यवसायनो समय छे तेमा पण तिर्यंच पचेन्द्रिय अने मनुष्योमा नैरयिकनी चेडे

८. तेउक्काइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता नेरइएसु उव्वज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इण्णहे समहे । एवं असुरकुमारोसुवि, जाव थणियकुमारोसु । पुढवीकाइअआउतेउवाउवणबेइंदियतेइंदियचउरिंदिएसु अत्थेगतिए उव्वज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो उव्वज्जेज्जा । जे णं भंते ! उव्वज्जेज्जा से णं केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! नो इण्णहे समहे । तेउक्काइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता पंचिदियतिरिक्ख-

८. हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! ए अर्थं समर्थं नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारोमां यावत् स्तनितकुमारोमां जाणहुं. पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियोमां कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ न उत्पन्न थाय. हे भगवन् ! जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने श्रवण वडे प्राप्त करे-अर्थात् धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! ए अर्थं समर्थं नथी. हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां पंचेन्द्रिय तिर्यचोमां उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय.

कहेहुं. ए प्रमाणे अप्कायिको अने वनस्पतिकायिको कहेवा. तेजस्कायिको अने वायुकायिको मनुष्योमां पण प्रतिपेध करवो. केमके तेओ पछीना भवमां मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी, कारण के तेओने क्लिष्ट परिणाम होवाथी मनुष्यानुपूर्वी अने मनुष्यानुपुन वन्थनो असंभव छे. तिर्यच पंचेन्द्रियोमां उत्पन्न थयेला केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे, कारण के तेओने श्रवणेन्द्रिय होय छे, पण संक्लिष्ट परिणाम होवाथी केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मने न जाणे.

जोगिणस्तु उवचञ्जेज्जा ? गोपमा ! अत्येगइए उवचञ्जेज्जा, अत्येगइए णो उवचञ्जेज्जा । से णं केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सबणयाणं ? गोपमा ! अत्येगइए लभेज्जा, अत्येगइए णो लभेज्जा । जे णं भंते ! केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सबणयाणं से णं केवलं बोहिं बुज्जेज्जा ? गोपमा ! णो इण्हं सम्हं । मणुस्सवाणंमंतरजोइसियवेमा-
णिण्णु पुच्छा । गोपमा ! णो इण्हं सम्हं । एवं जहेव तेवकाइए निरतरं एवं धाउकाइण्वि ।

९. वेइंविणं णं भते ! वेइंविणं हितो अणंतर उव्वट्ठित्ता नेरइण्णु उवचञ्जेज्जा ? गोपमा ! जहा पुढवीकाइया । नवर मणुस्सेसु जाच मणपज्जवनणं उप्पाडेज्जा । एवं तेइविया चउरिंदियावि जाच मणपज्जवनणं उप्पाडेज्जा ।

जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण वडे प्राप्त करे-अर्थात् धर्मनु श्रवण करे ? हे गौतम ! कोइ श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनु श्रवण करे ते केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकमा उत्पत्ति सबधे पृच्छा हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. जेम तेज-
स्कायिक फलो तेम वायुकायिक पण निंतर कहेवो

९. हे भगवन् ! वेइन्द्रिय वेइन्द्रियोधी नीकळी अनन्तर-पछीना मवमा नैरयिकोमा उत्पन्न थाय ? हे गौतम ! जेम पृथिवीका-
यिको संपधे कसु छे तेम कहेवु. परन्तु मनुष्योमां उत्पन्न थाय अने यावत् मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे. ए प्रमाणे तेइन्द्रियो अने

९. वेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियो पृथिवीकायिकनी पेटे वेव अने नैट्यिक सिद्धाय यथाय स्थानोमां उत्पन्न थाय छे, पण पृथिवीकायिको मनुष्योमां थाधी अन्तक्रिया पण करे छे अने तेजो तेवा प्रकारना मवस्वभावधी मनुष्यमा थाधीने पण प्रकृतक्रिया करता

जे णं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा से णं केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! नो इण्डे समट्ठे । पंचिदियतिरिक्ख-
जोगिए णं भंते ! पंचिदियतिरिक्खजोगिएहिंतो अणंतरं उच्चट्ठित्ता नेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगइए
उववज्जेज्जा, अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा । से णं केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगइए
लभेज्जा, अत्थेगइए णो लभेज्जा । जे णं केवलपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए से णं केवलं वोहिं बुज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बुज्जेज्जा, अत्थेगतिए णो बुज्जेज्जा । जे णं भंते ! केवलं वोहिं बुज्जेज्जा से णं सइहेज्जा
पत्तिएज्जा रोएज्जा ? हंता गोयमा ! जाव रोएज्जा । जे णं भंते ! सइहेज्जा ३ से णं आभिणिबोहियनाणसुयनाण-

चउरिन्द्रियो पण यावत् मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न करे. जे मनःपर्यव ज्ञानने उत्पन्न करे ते केवलज्ञानने उत्पन्न करे ? हे गौतम ! ए
अर्थं समर्थं नथी. हे भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यचयोनिक पंचेन्द्रिय तिर्यचोथी नीकळी पछीना भवमां नैरयिकोमां उत्पन्न थाय ? हे
गौतम ! कोइ उत्पन्न थाय अने कोइ उत्पन्न न थाय. जे उत्पन्न थाय ते केवलज्ञानीए प्ररूपेला धर्मनुं श्रवण करे ? हे गौतम ! कोइ
श्रवण करे अने कोइ श्रवण न करे. जे केवली प्ररूपित धर्मनुं श्रवण करे ते केवलीए प्ररूपेला धर्मने जाणे ? हे गौतम ! कोइ जाणे
अने कोइ न जाणे. हे भगवन् ! जे केवलज्ञानी प्ररूपित धर्मने जाणे ते तेनी श्रद्धा करे, प्रतीति करे अने रुचि करे ? हा गौतम !
यावत् रुचि करे. हे भगवन् ! जे श्रद्धा करे प्रतीति करे अने रुचि करे ते आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान उत्पन्न
नथी, पण मनःपर्यवज्ञान तो उत्पन्न करे छे. तिर्यच पंचेन्द्रियो अने मनुष्यो वधाय स्थानोमां उत्पन्न थाय छे. अने तेनी व्यक्तव्यता
पाठ सिद्ध छे. व्यन्तर, ज्योतिषिको अने वैमानिको असुरकुमारली पेठे जाणवा. चतुर्थं द्वार समाप्त.

ओद्धिनाणां उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! जाव उप्पाडेज्जा । जे णं भंते ! आभिणियोद्धियनाणसुयनाणओहिना-
णाइ उप्पाडेज्जा से णं सचाएज्जा सीलं वा जाव पडिवज्जित्तणं ? गोयमा ! गो इण्ठे समंठे । एव असुरकुमारं सु-
वि, जाव थणियकुमारं सु । एगिदियविगल्लिदिपसु जहा पुढवीकाइण । पंचिदियतिरिक्खजोणिणसु मणुस्सेसु य
जहा नेरइण । वाणमतरजोइसियवेमाणिणसु जहा नेरइणसु उववज्जेज्जा पुच्छा भणिया, एयं मणुस्सेवि । वाण-
मंतरजोइसियेमाणिण जहा असुरकुमारं ।

१०. रयणप्पभापुढवीनेरइण णं भंते ! रयणप्पभापुढवीनेरइणहिंती अणंतर उच्चदित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ?
करे ? हा गौतम ! यावत् उत्पन्न करे. हे मगवन् ! जे आभिनियोधिक ज्ञान श्रुतज्ञान उत्पन्न करे ते शील-ब्रह्मवयं
व्रत यावत् स्वीकारवाने समर्थ थाय ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे असुरकुमारमां यावत् खनितकुमारमां कहेहु. एके-
न्द्रिय अने विकलेन्द्रियोमा श्रुथिवीकायिक कथी तेम कहेयो पचेन्द्रिय तिर्यंचोमा अने मनुष्योमा नैरयिकनी पंठे जाणवुं. व्यन्तर
ज्योतिषिक अने वैमानिकोमा जेम नैरयिकोमा प्रश्न कर्यो तेम कहेहु. ए प्रमाणे तिर्यंच पचेन्द्रियनी पंठे मनुष्य संबंधे पण कहेहु.
व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिक असुरकुमाली पंठे कहेवा.

१० हे मगवन् ! रत्नप्रभा श्रुथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभा श्रुथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमा तीर्थंकरणु पामे ? हे
१० इवे तीर्थंकरपणाना धक्कणरूप पटले 'क्याथी नीकळी तीर्थंकरणु पामे' ए सबन्धे पांचसु द्वार कहे छे—'रयणप्पभा
पुढवीनेरइण ण भंते' ! इत्यादि सूत्र सुगम छे परंतु जेने तीर्थंदूर नाम गोत्र कर्म 'वद्वानि' खलर वडे मोयना समुदायनी पंठे प्रथम

गोयमा ! अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए लभेज्जा । से केणट्टेणं भंते ! एवं बुच्चइ—‘अत्थेगइए लभेज्जा, अत्थेगइए लभेज्जा’ ? गोयमा ! जस्स णं रयणप्पभापुढवीनेरइअस्स तित्थगरनामगोयाइं कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं निघत्ताइं कडाइं पट्टवियाइं निविट्ठाइं अभिनिविट्ठाइं उदिन्नाइं, णो उवसंताइं हवंति, से णं रयणप्पभापुढवीनेरइए रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्ठित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा, जस्स णं रयणप्पभापुढवीनेरइयस्स तित्थगरनामगोयाइं णो बद्धाइं जाव णो उदिन्नाइं, उवसंताइं हवंति, से णं रयणप्पभापुढवीनेरइए

गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के ‘कोइ पामे अने कोइ न पामे’ ? हे गौतम ! जे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिके तीर्थकर नाम गोत्र कर्म बांध्युं छे, निघत्त कर्मुं छे, कृत-निकाचित कर्मुं छे, प्रस्थापित कर्मुं छे, निविट्ट, अभिनिविट्ट, अभिसमन्वागत-उदयाभिमुख अने उदयमां आणेळुं छे, पण उपशान्त कर्मुं नथी ते रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थकरणुं पामे छे. जे रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिके तीर्थकर नामगोत्र कर्म बांध्युं नथी, यावत् उदयमां आणेळुं नथी, उपशान्त थयेंळुं छे, ते रत्नप्रभा पृथिवीनो नैरयिक रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोथी नीकळी पछीना

मात्र बांधेलां होय, त्याख्याद् अन्तिमां तपाव्या पछी दण वडे टीपेला सोयना जत्थानी पेठे ‘स्पृष्टानि’ स्पर्श्यां होय, ‘निघत्तानि’ निघत्तरूपे कर्मां होय-पट्टले उद्वर्तना अने अपवर्तना सिवाय चाकीना करणेने अयोग्य कर्मां होय, ‘कृतानि’ निकाचित-मर्ग करणेने अयोग्य कर्मां होय, ‘प्रस्थापितानि’-मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजानि, ब्रह्म, वादर, पर्याप्त, सुभग, आदेय, यशःकीर्ति नाम कर्मनी साथे उदयरूपे व्यवस्थित कर्मां होय, ‘निविष्टानि’-तीव्र रसना उत्पादकरणे करेलां होय-तीव्र विपाकने आपवावाळां कर्मां होय,

रयण्यभापुढवीनेरइएहिंतो अणंतर उन्वटिस्ता तित्थगरत्तं णो लमेब्जा, से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुधइ-‘अत्ये-
गतिण लमेब्जा, अत्येगतिणं णो लमेब्जा’। एवं सक्करप्पभा जाच वालुयप्पभापुढवीनेरइएहिंतो तित्थगरत्तं लमेब्जा।
पंकप्पभापुढवीनेरइए णं भंते ! पंकप्पभानेरइएहिंतो अणंतर उन्वटिस्ता तित्थगरत्तं लमेब्जा ? गोयमा ! णो इ-
णट्टे समट्ठे, अंतकिरिय पुण करेब्जा । धूमप्पभापुढवीनेरइए पुब्बा । गोयमा ! णो इणट्टे समट्ठे, सन्वविरइं पुण

भवमां तीर्थंकरणु पामतो नथी, ते माटे हे गौतम ! एम कहुं छु के कोइ तीर्थंकरणु पामे अने कोइ न पामे. ए प्रमाणे उर्कसप्रभायी
यानद् वालुकाप्रभाना नैरयिकोथी नीकळी तीर्थंकरणु पामे. एकप्रभा पृथिवीयी नीकळी पछीना भवमां तीर्थंकरणुं पामे ? हे गौतम !
ए अर्थं समर्थं नथी, पण अन्तक्रिया करे. धूमप्रभा पृथिवी सवधे पृब्बा. एटले त्याथी नीकळी तीर्थंकरणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थं
समर्थं नथी, परंतु ते सर्वविरति प्राप्त करे. तमप्रभा पृथिवी सवधे पृब्बा. हे गौतम ! ए अर्थं समर्थं नथी, परन्तु त्याथी नीकळी

‘अभिनविष्टानि’-विशुद्ध, विशुद्धतर अप्यपसाय यथाथी अति तीव्र रसना उरपात्कपणे करेलां होय-अति तीव्र विपाकने आपनारा कयां
होय, ‘अमित्तमन्यसगतानि’-उदयाभिसुख करेला होय, ‘उधीणानि’-उदयमा आणेलां होय, विपाकोदयने प्राप्त करेलां होय, परंतु ‘भोप-
शान्तानि’-संयथा भवायने प्राप्त करेला न होय, अथवा निकाचित्तादि अयस्थानी अधिकता रहित करेला न होय, ते तीर्थंकरणु पामे थाफी
बहु स्पष्ट छे ए प्रमाणे उर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा संयधे पण भे सूत्रो कहेया पद्मप्रभा पृथिवीनो नैरयिक त्यांथी नीकळी पछीना भवमां
तीर्थंकरणु पामतो नथी, पण अन्तक्रिया करे छे धूमप्रभा पृथिवीनो नैरयिक अन्तक्रिया पण करतो नथी, पण सर्वं विरति प्राप्त करे
छे तमप्रभा पृथिवीनो नैरयिक सर्वं विरति पण पामतो नथी, परंतु देशविरति पामे छे अथ-सतम पृथिवीनो नैरयिक ते देशविरतिने
पण पामतो नथी, पण सम्यक्य पामे छे अनुसुखमारथी माडी पनस्यतिकायिक सुधीना नीवो त्याथी नीकळी पछीना भयमा तीर्थ-

लभेजा । तमप्पभापुढवी-पुच्छा । चिरयाचिरिं पुण लभेजा । अहेसत्तमपुढवी-पुच्छा । गोयमा ! गो इण्ढे सम्ढे, सम्मत्तं पुण लभेजा । असुरकुमारस्स पुच्छा । गोयमा ! गो इण्ढे सम्ढे, अंतकिरियं पुण करेजा । एवं निरंतरं जाव आउकाइए । तेउकाइए णं भंते ! तेउक्काइएहिंतो अणंतरं उव्वट्ठिता उव्वलेजा (तित्थगरत्तं लभेजा) ? गोयमा ! गो तिण्ढे सम्ढे, केवलपन्नत्तं धम्मं लभेजा सवणयाते । एवं वाउकाइएवि । वणस्सइकाइए णं पुच्छा । गोयमा ! गो तिण्ढे सम्ढे, अंतकिरियं पुण करेजा । वेइंदियतेइंदियचउरिंदिए णं पुच्छा । गोयमा ! गो तिण्ढे

देशविरति प्राप्त करे. अधः सप्तम पृथिवी-संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, परन्तु त्यांथी नीकलेलो सम्यक्त्व प्राप्त करे. असुरकुमार संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण अन्तक्रिया करे. ए प्रमाणे निरन्तर यावत् अच्चायिक सुधी जाणवुं हे भगवन् ! तेजस्कायिक तेजस्कायिकोथी नीकळी पछीना भवमां तीर्थङ्करपणुं पाभे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण केवल-ज्ञानीए कहेला धर्मनुं श्रवण करे. ए प्रमाणे वायुकायिक संबंधे जाणवुं. वनस्पतिकायिक संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी, पण अन्तक्रिया करे. वेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय संबंधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. पण मनःपर्यव ज्ञान

दूरपणुं पामता नथी, पण अन्तक्रिया करे छे. वसुदेव चरित्रमां नागकुमारथी पण नीकळी पछोना भवमां घेरावत क्षत्रते विशे आ अवसापिणीमां चोवीशमा तीर्थङ्कर थयेला वतावेल् छे. तेथी अही तत्त्व कैयल्लगानी जाणे. तेजस्कायिक अने वायुकायिको नीकळी पछीना भवमां अन्तक्रिया पण करता नथी, कारण के तेओ पछीना भवमां मनुयमां उत्तन्न थता नथी. पण तिर्यञ्जमां उत्पन्न थाय छे अने केवलज्ञानीए उपदेशेला धर्मनुं श्रवण करे छे, पण जाणता नथी. प चात पूर्व कही छे. वनस्पतिकायिको नीकळी पछीना भवमां

समष्टे, मणपञ्चवनाणं उप्पादेज्जा । पंचिवियतिरिक्खजोणियमपूसवाणमंतरजोइसिए ण पुब्बा । गोयमा ! गो-
तिणंठे समष्टे, अंतकिरियं पुण करेज्जा । सोहम्मगदेवे ण भते !, अणतर चय चइत्ता तित्थगरसं लभेज्जा ? गो-
यमा ! अत्येगतिण लभेज्जा, अत्येगतिण नो लभेज्जा, एवं जहा रयणप्पभापुढविनेरइण, एवं जाव सव्वट्टसिद्धगदेवे ।

११. रयणप्पभापुढविनेरइण णं भते ! अणंतर उव्वट्टित्ता चक्कवट्टित्त लभेज्जा ? गोयमा ! अत्येगतिण लभे-
ज्जा, अत्येगतिण नो लभेज्जा । से केणट्टेणं भते ! एवं बुचइ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभापुढविनेरइयस्स तित्थग-

उत्तन्न करे. पचेन्द्रिय तिर्यंच, मनुष्य, व्यन्तर अने ज्योतिषिक सबधे पृच्छा. हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नयी, एण अन्तक्रिया करे.
हे भगवन् ! सोधर्म देव व्ययी पछीना भवमा तीर्थङ्करणुं पामे ? हे गौतम ! कोइ पामे बने कोइ न पामे. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा
नैरयिक सबधे कथु तेम सर्वार्थसिद्ध देव सुधी कहेयु.

११. हे भगवन् ! रत्नप्रभा पृथिवीनी नैरयिक रत्नप्रभाना नैरयिकोथी नीकळी पछीना भवमां चक्रवर्तिणुं पामे ? हे गौतम !
कोइ पामे अने कोइ न पामे. हे भगवन् ! एम द्वा हेतुथी कहो छो ? हे गौतम ! जेम रत्नप्रभा पृथिवीना नैरयिकोना तीर्थङ्करणा

तीर्थङ्करणु पामता नथी एण अन्तक्रिया करे छे वेण्डिय, तेहदिय, अने चउरिद्रियो पछीना भवमा अन्तक्रिया एण कएता नथी,
एण मन-पर्यवसान उत्पन्न करे छे तिर्यंच पचेन्द्रिय, मनुष्य, व्यन्तर अने ज्योतिषिको नीकळी पछीना भवमा तीर्थङ्करणु पामता
नथी, एण अन्तक्रिया करे छे सोधर्मथी आरम्भी स्वार्थ सिद्ध सुधीना देवो नैरयिकोनी पेटे कहेया तीर्थङ्करार समाप्त

११ हवे ज्याथी नीकळी चमत्तत्त्वादि-चक्रवर्ती चगेरे थाय ते सबधे दाणे कहे छे—तेमा रत्नप्रभा नैरयिक, भयनपत्ति,

रत्तं । सक्करप्पभानेरइए अणंतरं उच्चवट्ठित्तं लभेज्जा ? गोयमा ! नो तिण्ढे समट्ठे । एवं जाव अ-
धेसत्तमापुहविनेरइए । तिरियमणुएहिंतो पुच्छा । गोयमा ! णो तिण्ढे समट्ठे । भवणपतिवाणमंतरजोतिसिय-
वेमाणिएहिंतो पुच्छा । गोयमा ! अत्थेगतिए लभेज्जा, अत्थेगतिए नो लभेज्जा । एवं बलदेवत्तंपि, णवरं सक्करप्प-
भापुहविनेरइएवि लभेज्जा । एवं वासुदेवत्तं दोहिंतो पुहवीहिंतो वेमाणिएहिंतो य अणुत्तरोववाइयवज्जेहिंतो, सेसेसु
नो तिण्ढे समट्ठे । मंडलियत्तं अधेसत्तमातेउवाऊवज्जेहिंतो । सेणावइरयणत्तं गाहावइरयणत्तं वड्डित्तिरयणत्तं पुरो-
हियरयणत्तं इत्थिरयणत्तं च एवं चेव, णवरं अणुत्तरोववाइयवज्जेहिंतो । आसरयणत्तं हत्थिरयणत्तं रयणप्पभाओ

संबंधे कहें छे तेम चक्रवर्तिपणा संबन्धे कहेबुं. हे भगवन् ! शर्कराप्रभानो नैरयिक नीकळी पळीना भवमां चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे
गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. ए प्रमाणे नीचे सातमी प्रथिवीना नैरयिक सुधी कहेबुं. तिर्यच अने मनुष्य संबधे पृच्छा. एटले त्यांथी
नीकळी चक्रवर्तिपणुं पामे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ नथी. भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिक नीकळी चक्रवर्ति-
पणुं पामे ? हे गौतम ! कोइ पामे अने कोइ न पामे. ए प्रमाणे बलदेवपणुं पण जाणबुं. परन्तु एटली विदेषता छे के शर्कराप्र-
भानो नैरयिक पण बलदेवपणुं पामे. ए प्रमाणे वासुदेवपणुं वे प्रथिवीथी अने अनुत्तरोपपातिक सिवायना वैमानिकोथी नीकळी प्राप्त
करे, वाकीना स्थानोथी आधी न प्राप्त करे. मांडलिकपणुं नीचेनी सातमी नरकप्रथिवी, तेजस्काय अने वायुकाय सिवायना वाकीना
व्यन्तर, ज्योतिपिक अने वैमानिकोथी नीकळी चक्रवर्तीपणुं प्राप्त करे, पण वाकीना स्थानोथी नीकळी न पामे. बलदेव अने
वासुदेवपणुं शर्कराप्रभाथी नीकळीने पण पामे. परंतु वासुदेवपणुं अनुत्तरोपपातिक सिवायना वैमानिकोथी नीकळी पामे. मांडलिकपणुं

णिरंतरं जाव सहस्वारो अत्येगतिण लभेज्जा, अत्येगतिण नो लभेज्जा । चक्रपरयणत्तं छत्तरयणत्तं चम्मरयणत्तं वंदरयणत्तं असिरयणत्तं मणिरयणत्तं कागिणिरयणत्तं एतेसिणं असुरकुमारोहितो आरद्ध निरतर जाय ईसाणाओ उययाओ, सेसेहितो नो तिण्ठे सम्भे ।

१२. अद् भते ! असंजयभवियव्यवेधाणं, अचिराहियसंजमाणं, अचिराहियसंजमाणं, अचिराहियसंजमासंज-
स्थानोथी आवी प्राप्त करे. चक्रवर्तीना सेनापतिरत्न, गाथापतिरत्न, वर्षकित्त्ल, पुरोहितरत्न अने स्त्रीरत्न संबंधे एमज समज्जु.
परत्तु ते अनुत्तरोपपातिक सिंघायना चाकीना स्थानोथी आवीने थाय. अधरत्नपणुं अने हस्तीरत्नपणुं रत्नप्रमाथी आरमी निरतर
सहस्रार सुधीना स्थानोथी आवी कोइ प्राप्त करे अने कोइ न प्राप्त करे. चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, दंडरत्न, असिरत्न, मणिरत्न, अने
काकणीरत्न एओनो असुरकुमारथी आरमी निरत्तर ईशान सुधीना स्थानोथी आवीने उपपात समज्जो. चाकीना स्थानोथी 'ए अर्थ
समर्थ नथी' एम प्रतियेध करवो.

सातमी नरकपृथिवी, तेजस्काय अने पायु सिंघायना चाकीना सर्व स्थानोथी भावो प्राप्त करे. सेनापतिरत्न, वर्षकित्त्ल, पुरोहितरत्न
अने स्त्रीरत्न साममी नरकपृथिवी, तेजस्काय, पायु अने अनुत्तरोपपातिक देय सिंघायना चाकीना स्थानोथी आवी थाय अथरत्न अने
हस्तिरत्न रत्नप्रमाथी आरंभी निरतर सहस्रार सुधीना स्थानोथी आवी थाय चक्ररत्न, छत्ररत्न, चर्मरत्न, दण्डरत्न अने काकणिज्ज
असुरकुमारथी आरंभी निरतर ईशान वेयलोक सुधीना स्थानोथी आवी थाय एथे चिधि पाप्पमा 'अतिगए लभेज्जा, आये-
गए नो लभेज्जा'-कोइ पाये अने फोइ न पांमे'-एम फदेजु अने निपेध करयामा 'जो इण्ठे सम्भे' ए अर्थ समर्थ नथी-एम फदेजु
ए प्रमाणे यथा प्राये कखा

माणं, विराहियसंजमांसंजमाणं, असण्णीणं, तात्रसाणं, कंदप्पियाणं, चरगपरिन्वायाणां, किंविस्सियाणं, तिरि-
च्छियाणं, आजीवियाणं, आभिओगियाणं, सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं
उववाओ पणत्तो ? गोयमा ! असंजयभविद्यद्ववदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जाएसु,
अधिराहियसंजमाणं जहन्नेणं सोहम्ममे कप्पे, उक्कोसेणं सब्वट्टसिद्धे, विराहियसंजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु,

१२. हे भगवन् ! देवलोकमां उत्पन्न यथा असंयत भव्य-देवलोकमां उत्पन्न थवाने योग्य द्रव्यदेवो, अविराधित संयमवाळा-
जेमणे संयमनी विराधना करी नथी एवा, विराधित संयमवाळा-जेणे संयमनी विराधना करी छे एवा, अविराधित देशविरतिवाळा-
जेणे देशविरतिनी विराधना करी नथी एवा, विराधित देशविरतिवाळा-जेणे देशविरतिनी विराधना करी छे एवा, असंजी, तापसो,
कांदर्पिको, चरक-परित्राजको, किंविपिको, तिर्यचो, आजीविको, आभियोगिको अने दर्शनअट थयेला-सम्यग्दर्शनरहित खलिंगी-
ओमां कोनो क्यां उपपात कळो छे ? हे गौतम ! असंयत भव्य द्रव्यदेवो नो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कृष्ट उपरना त्रैवेयकोमां

१२. हवे उपपात संवन्धे कांश्च विशेष कहेवानुं छे ते सूत्रकार कहे छे—'अह भंते !' इत्यादि. 'अथ' शब्द प्रश्न
अर्थमां छे. 'असंजयभविद्यद्ववदेवाणं' इति—असंयत-चारित्र्या परिणाम रहित, भव्य-देवपणाने योग्य अने ए ज हेतुथी
द्रव्यदेवो-एटले चारित्र्या परिणामरहित, मिथ्यादृष्टि देवोमां उत्पन्न थवाने योग्य ते असंयत भव्य द्रव्यदेवो. तेमां केटलाणक
आचार्यो कहे छे के-एओ अविरति सम्यग्दृष्टि ग्रहण करवा, कारण के तेओनी देवोमां उत्पत्ति थाय छे. ए संवन्धे आगममां
काणं छे के—'अणुव्ययमहव्वपहि य बालतवोऽकामनिज्जराण य । देवाउयं निबंधइ सम्मदिट्ठी य जो जीवो ॥' जे सम्यग्दृष्टि
जीव छे ते अणुवत् अने महावत् वडे तथा बाल तप अने अकामनिज्जरा वडे देवतुं आयुप बांधे छे.' ते अयुक्त

उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे, अविराहियसंजमासंजमाणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं अचुण कप्पे, विराहि-
तसज्जमासजमाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोतिसिण्डु, असत्तीणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्को-
सेण वाणमत्तरेसु, (१) तावसाण जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु, कंदप्पियाणं जहन्नेणं भवणवासी-
सु, उक्कोसेण सोहम्मे कप्पे, चरगपरिव्यापगाण जहन्नेण भवणवासीसु, उक्कोसेण थंमलोण कप्पे, किब्बिसि-

अविपधित सयमवाळानो जघन्यथी सोघर्म कल्पमा अने उत्कर्षथी सर्वार्थसिद्धयां, विराधित सयमवाळानो जघन्यथी भवनवासीमां
अने उत्कर्षथी सोघर्म कल्पमां, अविराधित देशविरतिवाळानो जघन्यथी सोघर्म कल्पमां अने उत्कर्षथी अच्युत फल्पमा, विराधित
देशविरतिवाळानो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ज्योतिपिकोमा, असत्तीओनो जघन्यथी ह्यन्तरोमां अने उत्कर्षथी भवनवा-
सीमां, तापसोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ज्योतिपिकोमां, कांदपिकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी सोघर्म

छे, कारण के असपत्तम्यद्रव्य देयोनो उपपात उत्कर्षथी उपरला प्रवेयकमा इमणां कदेशे अने सम्यग्दृष्टि देशविरति होय
तो पण पओनी त्या उत्पत्ति यती नथी, कारण के देशविरति थावको पण अच्युत देवलोकथी उपर उपजता नथी प निहवो
पण न समजया, कारण के तेओने अहीं बुदा कहेला छे मांटे मिध्यादृष्टि अथव्य 'के मध्य श्रमणना गुणने धारण करनाप
सर्व सामाचारी अने क्रिया युक्त द्रव्य लिंग-बाह्य देपने धारण करनाप असयत मव्य द्रव्य देवो जाणवा तेओ पण केवल
क्रियाना प्रभावथी उपरला प्रवेयकमा उत्पन्न धाय छे घळी तेओ असयत छे कारण के अनुष्ठान-क्रियानु पालन करवा छता पण
चारित्र्या परिणाम दृश्य छे, तेओनो! 'अविपधियसजमाणं'-वीहाना समयथी आरंभी जैनो चारित्र्यपरिणाम अभन--दयत्पिडित छे पयाओनो,
संज्वलन करायना सामर्थ्यथी के प्रमत्त गुणस्थानकथी स्वल्प मायादि दोपनो संभव होया छतां पण ओओप सर्वथा चारित्र्यनो घात

याणं जहन्नेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं लंतए कप्पे, तिरिच्छियाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सहस्सारे कप्पे, आजीवियाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं अच्चुए कप्पे, एवं आभिओगाणवि, सलिंगीणं दंसण-वावणगाणं जहन्नेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जाएसु ।

कल्पमां, चरक-परित्राजकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी ब्रह्मदेवलोकां, किल्बिकोनो जघन्यथी सौधर्म कल्पमां अने उत्कर्षथी लांतक कल्पमां, तिर्यचोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी सहस्रार कल्पमां, आजीवकोनो जघन्यथी भवनवासीमां अने उत्कर्षथी अच्चुत कल्पमां अने ए प्रमाणे आभियोगिकोनो पण जाणवो. दर्शनथी अष्ट थयेला-सम्यग्दर्शन रहित खलिंगीओनो जघन्यथी भवनवासीओमां अने उत्कर्षथी उपरना त्रैवेयकोमां उपपात कखो छे.

कयो नथी पवाओनो. तथा 'विराहियसंजमाणं'—विराधित संयमवाळा—विराधित-सर्वथा खंडित थयेला, पण प्रायश्चित्तना स्वीकार वडे फरीथी संयमनुं अनुसंधान जेओप कर्तुं नथी पवाओनो, 'अविराधितसंजमासंजमाणं'—अहण समयथी आरंभी जेओनो देशविरतिनो परिणाम अखंडित छे पवा श्रावकोनो, 'विराधितसंजमासंजमाणं'—विराधितदेशविरतिवाळा-विराधित-सर्वथा खंडित थयेलो पण प्रायश्चित्त वडे फरीथी नवीन नहि करायेलो संयमासंयम-देशविरति परिणाम जेओनो छे पवा. एटले देशविरतिनुं विराधन करनाराओनो, 'असंक्षिनाम्' मनोलब्धि रहित अकाम निर्जरावाळाओनो, 'तावसाणं' खरी पडेला पांडवा वगेरेनो उपभोग करनारा वाल तपस्वीओनो, 'कंदप्पियाणं'—कांदर्पिको-कंदर्प-परिहास जेओने छे एटले परिहास करनारा, व्यवहारथी चारित्रवाळा छतां कंदर्प-हास, कौकुच्य शारीरिक कुचेष्टा करनारा कांदर्पिको जाणवा. ए संवन्धे कहुं छे के—

कंदप्पे कुम्भुइए दवसीले यावि हासणक्के य । विम्हावित्तो य परं कंदप्पं भावणं कुणइ ॥ १ ॥

વેસવયળેહિ હાસં જણવંતો અપ્પનો પેરેસિ ચ । અહ હાસળો સિ મન્નહ ઘયળોબ્વ હલે નિયહંતો ॥

‘ઘયળો બ્વ’ માંડની પેઠે ળીજાના છલ-વેપ અને માપા સંબંધે છિદ્ર જોતો વેપ અને વચન વડે પોતાને અને ળીજાને દાસ્ય ઉત્પન્ન કરનાર હાસન-હસાવનાર કહેવાય છે. ળીજાને વિસ્મય ઉત્પન્ન કરવા સંબંધે કહે છે--

સુરજાલમાહરહિં ળુ વિન્દ્યં કુળહ તલ્લિહજળસ્સ । તેસુ ન વિન્દ્યહ સયં પહેલિયુહેહરહિં ચ ॥

સુરજાલ-હન્દ્રજાલાવિ પ્રસુળ કુલ્હલ વડે તથા પ્રહેલિકા અને કુહેડક-આમાળક વગેરેથી તેવા પ્રકારના ગ્રામ્ય જનને વિસ્મય પમાડે છે અને સ્વયં વિસ્મય પામતો નથી.

જો સંવઓવિ યયાસુ અપ્પસરયાસુ ભાવળં કુળહ । સં તલ્લિહેસુ ગચ્છહ સુરેસુ મહઓ ચરળહાળો ॥

જે સંયત છતાં પણ આ અપ્રશસ્ત-સંક્ષિપ્ત ભાવના માવે છે. ‘વઢ્ઠહ કહ્લિંચિ’ પવો પણ અત્ય સ્થલે પાઠ છે-તેથી આ અપ્રશસ્ત ભાવના માં કથંચિત્-ભાવની મન્દતાથી વર્તે છે તે (ચારિત્રના લેશથી) તેવા પ્રકારના-કંદર્પોદિ પ્રકારવાલા દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે, પરન્તુ જે ‘ચર-ળહીત-ચારિત્ર રહિત છે તે મત્ત-મજનાપ-વિક્રમે જાળવો પડલે કદાચિત્ તેવા પ્રકારના દેવોમાં ઉત્પન્ન થાય છે અને કદાચિત્ નારક, તિર્યંચ અને મનુષ્યગતિમાં ઉત્પન્ન થાય છે.

‘ચરળપરિલ્લાયગા ણં’ તિ-ચરકપરિયાજક--ટોલા વડે મિદ્ધા માળી આજીવિકા ચલાવનાર ત્રિવંડી, અથવા ચરક-કચ્છ, લંગોટો પહેરનાર અને પરિયાજક-કપિલમુનિના શિષ્યો, તેઓનો; ‘કિચ્ચિસિયાણં’ તિ. કિલિય-પાપ, તે જેઓમાં છે તેઓ કિલિયવિકો કહેવાય છે. તે ચારિત્રવાલા છતાં પ્રાનાદિનો અવર્ણવાદ ચોલનારા હોય છે. ૫ સંવન્ધે કણં છે કે--

નાળસ્સ કેવલીણં ધમ્માયરિયાણ સલ્લસાહ્ણં । માઈ અવન્નઘાઈ કિચ્ચિસિયં ભાવળં કુળહ ॥

શ્રુતજ્ઞાન, કેવલ્લયાની, ધર્માચાર્ય-ધર્મોપદેશક, અને સર્વ સાધુઓનો, ળીજે સ્થલે ‘સંઘસાહ્ણં’ પવો પણ પાઠ મલે છે, તેથી ચતુર્વિધ સંઘ અને સાધુઓની અવર્ણવાદ ચોલનાર કિલિયવિક ભાવના કરે છે. અવર્ણ-નિન્દા, તોટા ળોનો પ્રગટ કરવા. તેમા પ્રથમ શ્રુતજ્ઞાનના

अवर्णयावतु वर्णन करते हैं—

काया यथा य ते श्चिय ते चेद्य पमायअप्यमाया य । मोक्षत्वादिगारियाण जोइसजोणीहि किं कञ्ज ॥

तेज पृथिव्यादि कायो, प्राणतिपात विरमणादि प्रतो, तेज मद्यादि प्रमाद्यो अने तेना विपक्षरूप अग्रमाद्यो ते ते सूत्रमा धारंवार कहेघाय छे, थीनु विद्येय काइ पण नथी माटे पुनरुक्त दोष छे बळी मोक्षना अधिकादीने सूर्यप्रसक्ति-योगेरे ज्योति शाल्बनु अने योनि-योनिप्राप्त यगेरे शाल्बोनु शु काम छे ? कारण के तेभो मयनु कारण छे केवलज्ञानीना अवर्णयाव सवग्ने कहे छे—

एवंतनुप्याप अण्णोष्णावरणया दुवेण्हपि । केवलवसणणाणमिगकाले य एगत्ते ॥

केवलज्ञानीने केवलज्ञान अने केवलवर्णननो उपयोग एकान्तर-मनुकमे उत्पन्न थाय तो यन्ने उपयोगना पण यन्ने परस्पर आपरण रूप थाय छे षटले ज्ञानोपयोगनो प्रतिबन्धक वर्धनोपयोग थाय अने वर्धनोपयोगनो प्रतिबन्धक ज्ञानोपयोग थाय अने जो यन्ने उपयोग एक काले होय तो यन्नेनो एकत्व-अमेव थाय धर्माचार्यना अवर्णयाव संघे कहे छे—

जडाईहि अयन्न विमासइ यइइ नयाचि उचवाप(यारे) । अदिओ छिइपेही पगासयाई अण्णुक्खलो ॥

जात्यादि घटे अवर्णवाव बोले, जेम के आ उच्च जातिना नथी, लोकव्यवहारमा कुशल नथी, औचित्य जाणता नथी एम विविध रीते गुकने कहे, गुकना उपचार-विनयमां न घटें, अहितकारक, छिद्रमेही-छिद्रोने जोनाइ, प्रकाशयावी-सर्वसमस्त गुकना अछता दोषो कहे, तथा सर्वदा अनुकूल न होय साधुओनो अवर्णवाव आ प्रमाणे बोले—

अविस्सहणानुत्तियगई अण्णपुव्थी य अचि गुरुणपि । रणमेत्तपीररेसा निद्वियच्छलगा य सचइया ॥

आ साधुओ असहनशील छे, कारण के तेभो एक धीजाने सहन करता नथी, तेथी एक धीजानी स्पर्धाथी वैशान्तरमां भ्रमण करे छे, नहि तो एक स्थले यथा भेगा मळीने केम न रहे ? तथा अवर्तित गतिधाळा-इमेया कपटवडे लोकोने साकपित इरया माटे मन्वगतिए चाले छे गुरु-मोटाओने अनुस्रता नथी, कारण के स्वभावथी निन्दुर छे, बळी क्षणमात्रमा रूप अने तुष्ट थाय छे गृही-

गृहस्थो उपर वात्सल्य-प्रेम राखनार अने 'संचयिकाः' सर्व वस्तुओनो संचय करनार छे. मायावी संवन्धे कहे छे.

गृहइ आयसभावं छापर गुणे परस्स संते वि । चोरोव्य सव्यसंकी गृहायारो वितहभाली ॥

गोताना स्वभावने (दुष्ट स्वभावने) ढांकि छे, अने बीजाना छता गुणोनु आच्छादन करे छे, चोरनी पेठे सर्वनी शंका राखनार, गूढ आचारवाळो अने वितथभायी- असत्य बोलनार होय छे.

'तिरच्छ्रयाणं' देशविरतीवाळा गाय, बळद वगेरे पंचेन्द्रिय तिर्यचोनो, 'आजीवियाणं' आजीवक-पालंड विशेष-मतविशेष, गोशा-लकना मतने अनुसरनार, अथवा आजीवन्ति-लेओ अविवेकथी लज्धि, पूजा, अने त्याति इत्यादि वडे चारित्र्यादिनो आश्रय करे ते आजीवको कहेवाय छे. तेओनो: 'आभियोगियाणं' आभियोगिको-अभियोग-विद्यामन्त्रादि वडे बीजाने वशीकरणादि करुं. तेना ने प्रकार छे. ए संवन्धे कायं छे के—

दुविहो मलु अभियोगो वृध्वे भावे य होर नायव्वो । दवंमि ह्येति जोगा विज्जा मंता य भावमि
द्रव्य अने भाव एम वे प्रकारनो अभियोग जाणवो. द्रव्य अभियोगमां ओपधिना योग-प्रयोगो, अने भाव अभियोगमां विद्या अने मन्त्रो जाणवा. ते अभियोग लेओने छे, अथवा अभियोग वडे व्यवहार करनार आभियोगिको कहेवाय छे. तेओ व्यवहारथी चारित्र्याळा छतां मन्त्रादिनो प्रयोग करनार होय छे. ए संवन्धे कायं छे के—

कोउयभूकस्मे पणिणपसिणे निमित्तमाजीधी । इन्द्रमन्त्रायगरुओ अभिओगं भावणं कुणर ॥
१ कौतुक, २ भूतिकर्म, ३ प्रश्नाप्रश्न, अने ४ निमित्तकार आजीविका चलावनार, ५ ऋद्धि, रस अने साताना गौरव-अभिमानवाळो ए पांच प्रकारे अभियोग भाचना करे छे. कौतुक पडले सौभाग्यादिने माटे स्नान करायहुं, भूतिकर्म-ज्वराळा वगेरेने भस्म चोपडवी. प्रश्नाप्रश्न-स्नानविद्या, पवा आभियोगिकोनो; 'सर्लिगीणं' 'स्वर्लिगी'—रजोहरणादि साधुना लिगवाळा, तेओ केया होय? वंसणवाचनगाणं 'दशनव्यापन्नकानाम्'-दर्शन-सम्यग्दर्शन व्यापन्न-अप्र थयुं छे जेओनुं पया अर्थात् निह्वयोनो, वळी 'देवलोगेसु उववज्जमाणणं' 'देवलो

१३ कतिविहे णं भंते ! असणियाउण पणत्ते ? गोयमा ! षडन्विधे असणियाउण पणत्ते, तंजहा—नेर-
इयअसणियाउण, जाव देवअसणियाउण । असणी णं भंते ! जीवे किं नेरइयाउयं पकरेति, जाव देवाउय
पकरेति ? गोयमा ! नेरइयाउयं पकरेति, जाव देवाउयं पकरेति । नेरइयाउं पकरेमाणे जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ।

१३. हे भगवन् ! केटला प्रकारु असद्धी आयुष कहुं छे ? हे गौतम ! चार प्रकारु असद्धी आयुष कहुं छे. ते आ प्रमाणे—१
नैरयिक असद्धी आयुष, यावत् ४ देवअसद्धी आयुष. हे भगवन् ! असद्धी जीव शुं नैरयिकहुं आयुष बांधे ? यावत् देवहु
हे गौतम ! नैरयिकहुं पण आयुष बांधे, यावत् देवहुं आयुष पण बांधे. नैरयिकहुं आयुष बांधतो जगन्पथी दस हजार वरस अने

कमां उत्पन्न थया थाळा, आथी पम जणाब्बु के देवपणाथी बीजे पण अच्ययसायमे अनुसारे पथोली उत्पत्ति थाय छे

जेणे संयमनी विराधना करी छे पथोनी जगन्पथी भवनवासीमा अने उत्कृष्टथी सौधर्मं देवलोकमा उत्पत्ति थाय छे (प्र०)—अर्द्धी
कोर प्रश्न करे छे के विराधितसयमवाळांनी सौधर्मं कस्यमा उत्पत्ति थाय पम जे कहु ते केय घटे ? कारण के सुकुमलिकाना भवमा
विराधित सयमवाळी द्रौपदीनी पण ईशान देवलोकमा उत्पत्ति थयेली समत्वाय छे (उ०)—पमा कार पण बोप नथी, कारण के तेनी
(द्रौपदीनी) सयमविराधना उत्तरगुणविययक भाद्र धकुशपणने करनारी छे, पण मूलगुणनी विराधना नथी सयमनी पणी विराधना
होय तो सौधर्मं कस्यमां उत्पत्ति थाय जो सयमनी विराधना मात्र पण सौधर्मं देवलोकमां उत्पत्तिं कारण थाय तो उत्तरगुण यगेरेमा
विराधना कराना धकुशादिनी भव्युतादि देवलोकमां उत्पत्ति केम घटे ? कारण के तेबो पण कथचित्—उत्तरगुणनी अपेक्षाए विराधक छे

१३ भसडी देवोमा उत्पन्न थाय छे पम कहेयामा आब्बु छे अने ते देवोमा आयुष घटे उण्जे छे माटे असद्धी आयुषहुं निरूपण
करे छे—‘कतिविहे ण मते’ ! इत्यादि भसडी छता परमपन योग्य आयुष थाने ते भसद्धी आयुष कहेयाय छे ‘नेरय असद्धिआउय’

उक्थोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति । [तिरिक्खज्जोणियाउयं पकरे-
माणे जहन्नेणं अंतोसुहुत्तं, उक्थोसेणं पलितोवमस्स असंखेज्जइभागं पकरेति । एवं मणुस्साउयंपि । देवाउयं जहा
नेरइयाउयं । एयस्स णं भंते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स जाव देवअसण्णिआउयस्स कतरे कतरेहिंतो अप्पा
वा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णियाउए, मणूसअसण्णिआउए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खज्जोणियाअसण्णि-
उत्कृष्ट पल्योपमना असह्यथातमा भागत्तुं आयुप बांधे. तिर्यचत्तुं आयुप बांधतो जघन्य अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमा
भागत्तुं आयुप बांधे. ए प्रमाणे मनुष्यायुप संबंधे पण जाणत्तुं. देवायुप नैरयिकना आयुपनी पेठे जाणत्तुं. हे भगवन् ! ए नैरयिक
असंज्ञी आयुप, यावत् देवअसंज्ञी आयुपमां कोण कोनाथी अल्प, चहु, तुल्य के विशेषाधिक छे ? हे गौतम ! सौथी थोइं देवअसंज्ञी
नैरयिकने योग्य असंज्ञीप बांधेलुं आयुप नैरयिक असंज्ञी आयुप कहेवाय छे. पम वीजा आयुप पण जाणवां. अर्ही असंज्ञीआयुप
असंज्ञीअवस्थामां अनुभवत्तुं आयुप पण कहेवाय, परन्तु अर्ही तेनो प्रसंग नथी, माटे असंज्ञीप करेलुं-बांधेलु आयुप ते असंज्ञीआयुप-
एवा प्रकारना संबन्धविशेषने जणाववा माटे कहे छे—'असंज्ञीणं' इत्यादि. असंज्ञी आयुप बांधतो रत्तप्रभाना प्रथम प्रस्तटने आश्रयी
दस हजार वर्षत्तुं आयुप 'पकरेइ' बांधे छे. अने 'उत्कृष्ट पल्योपमनो असंख्यातमो भाग बांधे'. आ रत्तप्रभाना चोया प्रतरमां मध्यम
स्थितिवाळा नारकने आश्रयी जाणत्तुं. प्रथम प्रस्तटमां जघन्य स्थिति दसाहजार वरस, अने उत्कृष्ट नेत्तुं हजार, वीजा प्रतरमां जघन्य
स्थिति दस लाख अने उत्कृष्ट नेत्तुं लाख, एज वीजा प्रतरनी जघन्य स्थिति अने उत्कृष्ट पूर्वकोटी वरस, एज चोया प्रतरमां जघन्य स्थिति
अने उत्कृष्ट सागरोपमनो दसमो भाग, तेथी अर्ही पल्योपमनो असंख्यातमो भाग मध्यम स्थिति समजवी. तिर्यच सूत्रमां पल्योपमनो
असंख्यातमो भाग युगलिक तिर्यचोने आश्रयी जाणवो. 'एवं मणुआउयंपि' पम मनुष्यायुप पण जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट

આડળ અસલેહ્મગુણે, નેરશ્યઅસણિઆડળ અસલેહ્મગુણે ।

પણવણાણ મગવઈદ વીસઈમં અવકિરિયાપદં સમત્ત ॥ ૨૦ ॥

આડળ છે, તેથી મનુષ્યઅસહી આડળ અસલ્યાતગુણ છે, તેથી તિર્યંચ અસહી આડળ અસલ્યાતગુણ છે, અને તેથી નૈરયિક અસહી આડળ અસલ્યાતગુણ છે.

પ્રજ્ઞાપના મગવત્તીમા વીરશુ અન્તકિરિયાપદ સમાસ

પલ્યોપમનો અસલ્યાત્તમો માણ સમજયો અહિં પણ પલ્યોપમનો અસલ્યાત્તમો માણ યુગલિક મનુષ્યને આશયી જાણયો વેધાયુવ નૈરયિકાયુવની પંઠે જાણવું એમ નૈરયિકાસહીઆડળ જઘન્યયી વલહજાર વટસ અને વલ્કરંયી પલ્યોપમના અસલ્યાતમા માણ પ્રમાણ કાટુ છે તેમ વેધાસહીઆડળ કષ્ટેહું અહીં અસહી આડળવું અલ્પવહુત્વ કહેવામા આવ્યું છે તે આડળના ડુંકાપણા અને વીર્યંયણાને આશયી સમજવું

પ્રજ્ઞાપના ટીકાના અનુવાદમાં વીરશું અન્તકિરિયાપદ સમાસ

પ્રજ્ઞાપના
સાનુવાદ

॥૧૨૧૧॥

૨૦ અન્ત-
ક્રિયા પદ.

॥૧૨૧૧॥

प्रज्ञापनासूत्र

द्वितीय खंड

समाप्त

